

आधुनिक यूरोप का इतिहास

(१७८९ से आज तक)

(Modern Europe Since 1789)

लेखक

विद्याधर महाजन एम० ए० (आनर्ज) पी-एच० डी०

भूतपूर्व प्राध्यापक, इतिहास विभाग, पंजाब यूनिवर्सिटी कालज, नई दिल्ली तथा
*Author of India Since 1526 British Rule in India Ancient India, The
Delhi Sultanate Muslim Rule in India England Since 1688
Constitutional History of India Modern Europe
Since 1789 etc*

तथा

सावित्री महाजन एम० ए०

१९७०

एस० चन्द एण्ड कम्पनी

दिल्ली नई दिल्ली बाल्वाकर गमनाड
बम्बई बाल्वाकरा मद्रास हैदराबाद दटना

एस० चन्द एण्ड कम्पनी

गामनगर नई दिल्ली १५

गामनगर

फर्रुखाबाद जिल्ला	मान शौरा गज्जालापर
जमानावाट पाक लखनऊ	१० समिगटन राड बम्बई ७
२ गणगचन्द्र एकेड कलकता १०	३ माउण्ट राड मंगल २
मुन्तान राजाग हैदराबाद	गज्जालावाटन गज्जाला परना

पहला सस्करण 1961

दूसरा सस्करण 1965

तीसरा सस्करण 1970

(सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन हैं)

मूल्य १४ ००

आदरणीय ~
श्री श्यामलाल जी गुप्ता *
को
सस्नेह समर्पित

तीसरे संस्करण की प्रस्तावना

यूरोप के इतिहास का अध्ययन प्रत्येक भारतवासी के लिये आवश्यक है क्योंकि उससे अध्ययन में हम अनुमान लगा सकते हैं कि किस प्रकार देश उन्नति करते हैं। संसार की वर्तमान स्थिति का ठीक ठीक पता भी यूरोप के इतिहास से मिल सकता है। वर्तमान युग में कृषमण्डूक बन कर न कोई प्राणी और न कोई देश जी सकता है। प्रत्येक देश को दूसरे देशों की शक्ति का पूर्ण ज्ञान होना चाहिये अन्यथा सवनाश होने का डर ही रहेगा।

इस पुस्तक के नये संस्करण में बहुत कम संशोधन किये गये हैं परन्तु पिछले कुछ वर्षों में संसार में हुई घटनाओं का वर्णन कर दिया गया है।

III M १०
साजपल नगर
नई दिल्ली
२६ १ ७०

विद्याधर महाजन
सावित्री महाजन

पहले सस्करण की प्रस्तावना

साग कहते हैं कि इतिहास के अध्ययन का कोई लाभ नहीं परन्तु हम इससे सहमत नहीं हैं। हमारी अपनी धारणा है कि अपने देश के इतिहास के पठन-पाठन से अपने देश की कमजोरियों का पता लगता है और भविष्य में उनसे बचने के लिए प्रेरणा मिलती है। दूसरे देशों के उज्ज्वल इतिहास को पढ़ कर उत्साह पैदा होता है और काम करने के लिए शक्ति मिलती है। यह एक बहुत बड़ा लाभ है जिसके साथ किसी और चीज की तुलना नहीं की जा सकती।

शताब्दियों के बाद हमारा देश स्वतंत्र हुआ है। देश को स्वतंत्र कराने के लिए हमारे पूर्वजों ने बहुत कष्ट सहे और अब हमारा यह कर्तव्य है कि हम उस स्वतंत्रता को काममें रखने के लिए अपने जीवन की बलि लगा दें। यह तभी हो सकता है यदि हम अपने तथा दूसरे देशों के इतिहास का अध्ययन करें। ऐसा करने से हम किसी देश को घबरा जायेंगे और हमारा देश दिन प्रतिदिन उन्नति की ओर भाग बढ़ेगा।

हमारा विचार है कि आधुनिक यूरोप का इतिहास समस्त संसार के लिए बहुत शिक्षाप्रद है और संसार के जिन देशों में उन्नति आजकल की है उन सबमें यूरोप से ही प्रेरणा तथा प्रोत्साहन प्राप्त किया है। इसी उद्देश्य को ध्यान रखकर यह पुस्तक हिन्दी में प्रकाशित की जा रहा है। हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है और इस पुस्तक का हिन्दी में प्रकाशन अनिवार्य था। हम आभारणीय श्री श्यामलाल जी गुप्ता के बहुत धन्यारी हैं। उन्होंने इस पुस्तक का छापन में हमारी बहुत सहायता की है यह पुस्तक उन्हीं का नेत्र की गई है।

यह पुस्तक भारत के विद्यार्थियों का यूरोप के इतिहास का पर्याप्त ज्ञान देने के लिए लिखी गई है। पुस्तक का सय प्रकार में उपयोग बनाने के लिए भरमभक्त यत्न किया गया है परन्तु यदि कोई मन्त्रालय किंवा वृत्ति अधिकारी काय की ओर निर्देश करेंगे तो अधिक लाभ के साथ उनका शुभानुभव का स्वाकार किया जायगा और आगामी संस्करण में मन्त्रालय के लिए किया जायगा।

१६ मार्च १९६१

III एम०

२०. लक्ष्मीनारायण नरसिंह

विद्याधर महाजन

सावित्री महाजन

विषय-सूची

(CONTENT)

अध्याय

विषय

पृष्ठ

पहला भाग (Part I)

- १ फ्रांस क्रांति से पूर्व का यूरोप (Europe on the Eve of the French Revolution) १—१३
जमना (३), प्रशिया (३४), आस्ट्रिया-इटली (४६), स्पेन (६७) ब्रिटेन (७८), पोर्चुगल (८१), इटली (१११) स्वेन (१२), पुल्गान (१२)।
- २ फ्रांस क्रांति के कारण (Causes of the French Revolution) १४—३६
सामाजिक कारण (१४-१८), दूषित शासन प्रणाली (१८-२१), लुई चौदहवें के उपराधिकार (२१-२३), मेरा एन्टान्टि (२३-२४), फ्रांस का दारानिक (२४-२६), आर्थिक स्थिति (२६-२८), फ्रांस का क्रांति के सचच निमात्रा (३४), क्रांति प्रान में ही क्या? (२४-३६), फ्रांस का क्रांति का इ ग्लैश्ट की क्रांतियों में तुलना (३६-३६)।
- ३ राष्ट्रीय सभा का काम (१७८९-९१) (Work of the National Assembly—1789-91) ४०—५६
भूमिका (४०-४५) राष्ट्रीय सभा का काम (४५-५४) राष्ट्रीय-सभा के काम का पयवसण (५४-५५), सभ्यता का पलायन (जून १७९१) (५५)।
- ४ विधान-सभा और राष्ट्रीय सम्मेलन (Legislative Assembly and National Convention) ५७—७०
विधान सभा (५७) फ्रांस के कानून (५७) विधान सभा में राजनैतिक बग (५७-५८) सम्राट द्वारा निषेध किए गए कानून (५८-५९), युद्ध की ओर से जाने वाले सैन्य (५९-६१), राष्ट्रीय सम्मेलन (६१), विदेश नीति (६१-६३) गृह नीति (६३-६५) ग्राफिक का राज्य (६५-७०)।
- ५ गिराण्डिस्ट और जैकोबिन्स (The Girondists and the Jacobins) ७१—७७
गिराण्डिस्ट (७१-७५), जैकोबिन्स (७५-७७)।
- ६ क्रांति के अग्रान व्यक्तित्व (Great Personalities of the Revolution) ७८—९३
मिराबो (७८-८०), सभ्यता (८०-८३), डेस्टन (८३-८६), रोसबुलार्ड (८६-९२) सेवट बरट (९२), कार्लोट (९२-९३)।

अध्याय	विषय	पृष्ठ
७	संचालक-पंचायत (१७६५-६६) (The Directory 1795-99)	६५—६६
	एक-दूसरे की दृष्टि (६५-६५) क्रान्ति की आर्थिक स्थिति (६५-६६), विदेश नीति (६६-६७), संचालक पंचायत का अन्तर्गत होना (६७-६६) ।	
८	राष्ट्रों के संगठन (The Coalitions)	१००-१०६
	प्रथम संगठन (१००-१०१), प्रथम संगठन की असफलता के कारण (१०१-१०२) द्वितीय संगठन (१०३-१०४), तृतीय संगठन (१०४-१०६), चतुर्थ संगठन (१०६) ।	
९	नेपोलियन बोनापार्ट (१७६६-१८२१) (Napoleon Bonaparte 1769-1821)	१०७-१६२
	प्रथम भ्रान्ति-कार के रूप में नेपोलियन (११२-११४) प्रमुख सन्धि-कार के रूप में नेपोलियन का भाव (११४-११७) कोनकोर्डट (the Concordat) (११७-११८) सन्धि-कार (१२१-१२३) कना (१२३), औद्योगिक साम्राज्य (१२३-१२४), विदेश नीति (१२४-१२६) सन्धि के रूप में नेपोलियन (१२६-१३०), जनता (१३०-१३२), महा-नीच की व्यवस्था (The Continental system) (१३२-१४), नेपोलियन का असफलता के कारण (१४०-१४६) नेपोलियन का चरित्र (१४६-१४७) नेपोलियन का मृत्यु-कारण (१४७-१४८), नेपोलियन व हिटलर के बीच तुलना (१४८-१४९) नेपोलियन की नीति-कारण के बाद के रूप में (१४९-१५६) जेम्स-फोन (१५६-१५७) प्रामाण्य-कारण के परिणाम (१५७-१६२) ।	
१०	विशाना-सन्धि-कारण (१८१५) (Vienna Settlement 1815)	१६३-१७२
	सन्धि-कारण (१६५-१७०) पवित्र गठबंधन (Holy Alliance) (१७१-१७२) ।	
११	कमलरे और कनिंग (Castlereagh and Canning)	१७३-१८६
	कमलरे (१७३-१७४) कनिंग (१७६-१८१) सन्धि (१८१-१८३) पुनर्गठन (१८३-१८४) सन्धि का स्वतन्त्रता युद्ध (१८४-१८६) ।	
१२	यूरोप का सन्धि (१८१५-२२) (Congress of Europe) (1815-22)	१८७-१९८
	कमलरे-कनिंग का सम्मेलन (१८०-१८०) टोर्नो सम्मेलन (१८०-१८१) सन्धि सम्मेलन (१८१-१८३) विन्ना सम्मेलन (१८१) सन्धि-कारण व सन्धि (१८३-१८६) कनिंग (१८६-१८८) ।	
१३	लुई अष्टादश से नेपोलियन तृतीय तक (Louis XVIII to Napoleon III)	१९९-२३६
	लुई अष्टादश (१८१) लुई अष्टादश का चरित्र (१९९-२००) लुई अष्टादश (२००-२०१) लुई अष्टादश (२०१) सन्धि-कारण (White	

- Terror) (२०१-२०२), उदार दल सत्ताधीन (२०२-२०३), चार्ल्स दरान (२०३) विलेमी (२०३-२०४), मॉन्टेनिगो (२०४) पोलिगनक (२०४-२०५) जुलाई का क्रान्ति का महत्त्व (२०५-२०६), छुई क्रिपि (२०६-२०६), विदेरा नाति (२०६-२१०), क्रान्ति की भेरे (२११-२१३), १८३० और १८४८ का क्रान्तियों की तुलना (२१३-२१५), सामयिक सरकार (२१५-२१८) छुई नेपोलियन (२१८-२२०), राष्ट्रपति नेपोलियन (२२०-२२१), नवन सविधान (२२१-२२२) सुभाद् नेपोलियन तर्तीय (२२२-२२३), गृह-नीति (२२३-२२५), नेपोलियन तर्तीय की विदेरा नाति (२२५-२२६) रोम (२२६), मीमिया का युद्ध (२२६-२२७), इटली (२२७-२२८) रूमानिया (२२८-२२९) पोलेण्ड क निवासी (२२९), मेक्सिको (२२९-२३०), आस्ट्रिया प्रशिया युद्ध (२३०), फ्रांस प्रशिया युद्ध (२३०-२३६) ।
- २४ बेल्जियम की स्वतन्त्रता (Independence of Belgium) २३७-२४०
हान्नेवर्क और बेल्जियम संध (२३७), कठिनाइयाँ (२३७-२३८), विद्रोह (२३८-२४०) ।
- २५ १८१५ से १९१८ तक आस्ट्रिया-हंगरी (Austria Hungary from 1815 to 1918) २४१-२६०
मेटरनिक प्रणाली (२४१-२४४), मेटरनिक और जर्मनी (२४४), मेटरनिक और इंग्लैंड (२४४-२४५), मेटरनिक और स्पेन (२४५), मेटरनिक और रूस (२४५), मेटरनिक व पूर्वी प्रश्न (२४५) मेटरनिक व फ्रांस (२४६), मेटरनिक और ग्रेट ब्रिटेन (२४६), मेटरनिक और आस्ट्रिया (२४६-२४८), मेटरनिक का मूल्यांकन (२४८-२५०) १८४८-४९ की क्रान्तियाँ (२५०-२५३), आस्ट्रिया और इटली (२५३-२५४), १८६७ का समझौता (Ausgleich of 1867) (२५४-२५८) आस्ट्रिया-हंगरी और बल्कान (२५८-२६०) ।
- २६ इटली का एकीकरण (Unification of Italy) २६१-२७८
१८१५ का व्यवस्था (Settlement of 1815) (२६१-२६३), नेपोलियन का विद्रोह (२६३-२६४), पीन्मोरेट का विद्रोह (२६४), लोमबार्डी (२६४-२६५) रिस्तेवियेण्डो (२६५) मेक्सिको (२६५-२७०) केनूर (२७०-२७१), मीमिया में हन्तवेन (२७१) नेपोलियन और इटली (२७१-२७३), मिस्ली और नेपोलियन (२७३-७५) गैरीबान्डी (२७५-२७६), विन्सिया (२७६) रोम (२७६-२७७) ।
- २७ जर्मनी का एकीकरण (Unification of Germany) २७९-२९६
कार्ल्सबाद आश्रितिया (Carlsbad Decrees) (२८१), चार्ल्स-दरान (२८२-२८३), जुलियन क्रान्ति और जर्मनी (२८३) श्रेटिक विनियमसंयुक्त, १८४०-६१ (२८३-२८६), विनियम प्रथम (२८६-२८८) श्लेसविग-होल्स्टीन प्रश्न (Schleswig-Holstein Question), (२८८-२९०), आस्ट्रिया का एकाकीकरण रूम (Isolation of Austria Russia) (२९०), फ्रांस (२९०-२९१), इटली (२९१),

आस्ट्रिया और प्रशिया का युद्ध (१८६६) (१८६१-१८६७) युद्ध के परिणाम (१८६२), फ्रांस और प्रशिया का युद्ध (१८६७-१८६९)।

१८ रुस १७६६ से १८७० तक (Russia 1796 to 1870) २६७ ३०७

कार पाल प्रथम (१७६६-१८०१) (१८७०-००) एलेक्जेंडर प्रथम (१८०१-१८२५) (१८००-३०९) निकलस प्रथम (१८२५-५५) (३०१-३०५), एलेक्जेंडर द्वितीय (१८२५-६१) (३०५), मुजारेदारी की समाप्ति (३०५-३०५), न्यायिक सुधार (३०५-३०६), जर्मनोस (३०६) पोलैण्ड का विद्रोह (१८६३) (३०६), विदेश नीति (३०७)।

१९ पूर्व का प्रश्न (The Eastern Question) ३०८ ३३०

सर्बिया (३०८-३०९), ग्रीक स्वातंत्र्य युद्ध (३०९-३१३), मेहमत अली और पेट्रे (३१३-३१५), अन्वयार रूसेलेसी की संधि (३१५-३१८) रोमिया युद्ध (३१८-३२३), क्वा मारिया का युद्ध न्यायोचित था (३२३-३२७), रोमिया युद्ध के परिणाम (३२७-३२९)।

दूसरा भाग (Part II)

बिस्मार्क (१८१५-९८) (Bismarck 1815-98) ३३३ ३५५

आंतरिक नीति (३३५-३३६) सभ्यता के लिए मध्य (३३६-३३८), समाजवादियों के विरुद्ध कार्यवाही (३३८-३३९) सामाजिक कानून (३३९), सुरक्षा की नीति (३३९), साम्राज्यवाद (३३९-३४०) पोलो, डेनो और ग्लुसिओ के प्रति नीति (३४०-३४१) बिस्मार्क की विदेश नीति (३४१-३४२), तीन सम्राटों की सभा (The Three Emperors League) (३४२) आस्ट्रिया जर्मनी के साथ (३४३), ड्रीकैसरबुण्ड (Dreikaiserbund) (३४३-३४५) प्रमुखी संधि (३४६) रूमनिया (३४६) इन्वैण्ड (३४६-६६), बिस्मार्क का पतन (३४६-३४७), बिस्मार्क का मृत्यु (३४७-३४८)।

जर्मनी १८६० से १९१४ तक (Germany 1890-1914) ३५६ ३६६

विश्वियन लीग (३५६-५७) उदयगण (३५७-५८) चामलर केन्द्र (१८६०-१८६४) (३५८), चामलर हाइनली (१८६४-१८६०), (३५८-३५९) दुना (३५९-६०) बैथनेन्स डोवग (१८६०-७७) (३६०) इन्वैण्ड और जर्मनी के साथ (३६०-३६३), ब्रुगर का तार (३६३-३६५)।

फ्रांस १८७० से १९१४ तक (France 1870 to 1914) ३६७ ३९७

परिम बन्धन (३६८-३७१) राष्ट्रिय सभा का कार्य (१८७०-१८७५), (३७१-३७३) संविधान (१८७५) (३७३-३७६) तत्पश्चात् प्रजातन्त्र के अन्त (३७६-७७) बैलान्द (३७७-७८), डचम (३७८-३७९) चर्च विदेशी नीति (३७९-३८०) अन्त बन्धन (१८८३) उदयगण नीति (३८३) विदेश नीति (३८३-८६) डेनकासा (३८४) इन्वैण्ड के साथ समझौता (१८८६-८७) इटली (३८७) मोरक्को (३८७-८९) १८९१ का मरक्को का मुद्दा (१८९१-९२) वेल्डनका का अगड़ा (३९२) आगदिर का मुद्दा (१९११) (The Agadir Crisis) (३९३-३९६)।

संख्या		पृष्ठ
३२	थीयर्स (Thiers)	३६७
३३	ड्रेफस (Dreyfus)	३७७
३४	डेलकासी (Delcasse)	३८४
३५	निकलस द्वितीय (Nicholas II)	४११
३६	लेनिन (Lenin)	४२२
३७	बर्लिन की कांफ्रेंस, १८७८ (Berlin Conference, 1878)	४२६
३८	अब्दुल हमीद द्वितीय (Abdul Hamid II)	४३६
३९	ग्लैडस्टोन (Gladstone)	५०४
४०	सर एडवर्ड ग्रे (Sir Edward Grey)	५०९
४१	सातसबरी (Salisbury)	५३६
४२	क्लेमान्तो (Clemenceau)	५६२
४३	हिटलर (Hitler)	५९५
४४	हिटलर मुसोलिनी का स्वागत कर रहा है	६०७

मानचित्रों की सूची

(LIST OF MAPS)

सहया	पृष्ठ
१ नेपोलियन की सहाइयाँ	१२७
२ १८१० में यूरोप	१३२
३ आस्ट्रिया का साम्राज्य	२४३
४ इटली का एकीकरण	२६२
५ विघ्नाना सम्मेलन के पश्चात् मध्य यूरोप	२८०
६ बलकान प्रदेश	३०६
७ मोराक्को का विभाजन	३८८
८ अरीका का विभाजन	४६०
९ चीन का बेसिन	४६४
१० जापान का विस्तार	४७३
११ चीन तथा उसके पड़ोसी	४८६
१२ सेटिन अमेरिका	४९२
१३ इंग्लैंड-रूस ममझौता (१९०७)	५४३

फ्रांस-क्रान्ति से पूर्व का यूरोप

(Europe on the Eve of the French Revolution)

सन् १७८६ में दा ऐसी घटनाएँ घटीं, जिनका सत्सार में महत्त्वपूर्ण स्थान है। पहली घटना थी फ्रांस में क्रान्ति का फूटना और दूसरी थी संयुक्तराज्य अमेरिका में संविधान का प्रचलित होना। जहाँ दूसरी घटना से सत्सार में संगठन और विस्तार की भावना, के युग का आरम्भ हुआ वहाँ पहली घटना न विद्रोह का अव्यवस्था के गत में फेंक दिया।

फ्रांस की क्रान्ति के फूटने के साथ-ही-साथ 'यूरोप का इतिहास एक राष्ट्र, एक घटना और एक व्यक्ति का इतिहास बन गया। वह राष्ट्र फ्रांस वह घटना फ्रांस की क्रान्ति और वह व्यक्ति नेपोलियन है।' इससे पूर्व कि फ्रांस की क्रान्ति का विषय में कुछ कहा जाय, यूरोप की महत्त्वपूर्ण घटना से पूर्व के यूरोप की स्थिति का उल्लेख आवश्यक प्रतीत होता है।

साधारणतः यह कहा जा सकता है कि तत्कालीन यूरोप की वागडोर रईमों के हाथ में थी। यह बात केवल उन देशों पर ही लागू नहीं होती जहाँ राजाओं की शासन प्रणाली थी, अपितु उन पर भी लागू होती है जहाँ प्रजातन्त्रात्मक शासन चलता था। वेनिम का प्रजातन्त्र एक विशिष्ट बग द्वारा शासित था। यही प्रणाली स्विट्जरलण्ड में भी चालू थी। इंग्लैंड में भी जहाँ संसद् शक्तिशाली थी, सत्ता जनता की प्रपक्षा बड़े जमींदारों के हाथों में थी। जनसाधारण का तो कोई मूल्य ही न था। यहाँ दंगा अथवा यूरोपीय दशा यथा फ्रांसिस्टिया, हंगरी प्रशिया, रूस, फ्रांस स्पेन और पालण्ड आदि की भी थी। अधिकांश यूरोपीय देशों के शासक स्वच्छाचारी थे। यद्यपि अंगरेजी मदी में उन्हें उदार स्वच्छाचारी नामक कहा जाता था। जनता का प्रपन्न दंग का शासन में कोई अधिकार प्राप्त न था। उन्हें व्यक्तिगत स्वतन्त्रता न थी। उनकी प्रत्येक इच्छा शासकों की इच्छा पर निर्भर रहा करती थी। तदनुसार यूरोप भर में मुजारा की प्रथा का बीजवाला था।

उम युग में यूरोप के शासक दगाबाज और आचारहीन थे। अंगरेजों की गतानी में अन्तर्राष्ट्रीय चरित्र काफी सीमा तक गिर चुका था। फ्रेंड्रिक महान नामा व्यक्ति भी मेरिया पिग्मा के पिता चान्स पण्डित का बचन दन पर भी मिलमिया का प्रदंग दृष्टपने में नहीं हिचका था। रूस प्रशिया और फ्रांसिस्टिया न सामूहिक रूप में पालण्ड के अस्तित्व का समाप्त करने का पण्डित रचा था। यह वह समय था जब अंगरेज-पडोस के निबल राष्ट्रों को समाप्त करने प्रपन्न दंग की सीमाओं का बरतन का पाण्डित प्रायः सभी राजा लोगों में पनप रहा था। 'जाति और राष्ट्रों की सीमाओं

का काय मूल्य नष्ट रह गया था। प्रो० हीलण्ड रोज के अनुसार 'वशाधिकार और सन्धि प्रतिष्ठा को इमाइयत फलने के समय जो पवित्रता प्राप्त थी वह नष्ट हो गई और 'नव स्वान पर राज्य-कूटनीति को मायता दी गई जिसका मुख्य उद्देश्य राज्य का नामा का विस्तार और सन्धियों को हथियाना था। प्रो० हजन के अनुसार प्राचीन यूरोप की व्यवस्था जिन सिद्धांतों पर आधारित थी उन्हीं के प्रति विद्रोह उठ गया हुआ। व्यवस्था कानून और सन्धियों के प्रति श्रद्धा इसके मूल आधार थे।

लगभग यूरोप भर में विशेष अधिकार प्राप्त वर्ग समाप्त थे। इनमें से कुछ लोगों का ता कर देना ही न होता था और कुछ नाममात्र का कर देकर छुटकारा पा लते थे। इस प्रकार टक्स का सारा भार विशेष अधिकारों से हीन लोगों पर आ पड़ता था। इस प्रकार कहा जा सकता है कि यूरोप का सम्पूर्ण समाज सामंतशाही प्रणाली पर आधारित था और जागीरदार अपने क्षेत्रों में एक छोटे सम्राट की तरह शासन करते थे। मुजारा की दंगा देनी थी। उन्हें खेती का काय सौंप दिया जाता था और उपज से प्राप्त धन का बहुत बड़ा भाग जागीरदारों की जेबों में पहुँचता था। किसी कानून में यूरोपीय समाज के ढाँचे का निचला भाग दुखद दासता की शृङ्खलाओं में जकड़ा था। या था वहाँ कि वह अरक्षित और अविक्सित मानवों का एक वर्ग था जिसके लिए विकास और प्रगति के सभी माग बन्द थे। कतिपय राज्यों का ही विशेषाधिकार प्राप्त थे। गैर समाज असमानता और अव्यवस्था से परिचित था। यूरोप के जनसाधारण में जास्रति लेना मात्र को न थी। यही स्थिति एक साथ धर्मों तक बना रही।

धार्मिक दृष्टि में पश्चिमी यूरोप और मध्य यूरोप मुख्य रूप से अत्यवस्थित था। उत्तर में प्रोटेस्टेंट और दक्षिण में रोमन कथालिक थे। मध्य में स्विट्जरलण्ड और मकाय की जनता प्रोटेस्टेंट थी। फालण्ड के लोग कथोलिक थे। पूर्वी यूरोप में यूनानियों के धर्म और बलवान् राज्यों पर अपना प्रभाव जमा रखा था। यहूदी यूरोप भर में फैले हुए थे। बर्ना-कहाता उनमें अच्छा व्यवहार होता था किन्तु प्रायः उन्हें दाननाएँ पेशवाईं जानी थीं।

यूरोप धार्मिक सन्धय में अछूता न था। विभिन्न धर्मों के अनुयायी भी राष्ट्र-भक्त हो सकते हैं यह भावना उन दिनों जार पकड़ रही थी। मनुष्य मात्र की चिन्ता की जाना चाहिए यह भावना भी पर जमा रही थी। बर्णानिक राज की लगन न थी इस भावना का बन्द किया। धर्मापना प्रमाण घट रहा था।

रामन कथालिक धर्मों पर आक्रमण हुआ था। इस प्रकार इनकी सक्ति क्षीण हो गया था। १५६३ में एक रोमन कथालिक धर्माधिकारी द्वारा लिखित— *On the Present State of Church and the Lawful Authority of the Roman Pontiff* नामक एक पुस्तक प्रकाशित हुई। इस पुस्तक में धर्माधिकारियों (Bishops) का धर्म का अधिकार का विरोध किया गया। जाइफ दिनाय पर इस पुस्तक का बर्ण प्रभाव था और उसमें धर्म का धर्म अधिकार में कर लिया।

१५६३ में एक धर्म-परिवर्तकों के विरुद्ध बहिष्कार घोषणा (Bull) का

वापस लेने के लिए बाध्य होना पड़ा। १७५६ में जेसुइट्स (Jesuits) को पुतगाल से निकाल दिया गया। १७६४ में उनके मत का फ्रांस में दमन किया गया। १७६७ में उन्हें स्पेन, सिलेसी और पारमा से निकाल दिया गया। १७७३ में पाप ने जेसुइट्स का मत का समाप्त कर दिया। केवल रूस और प्रशिया में ही इन लोगों का दायण मिली।

जर्मनी (Germany)—राजनतिक दृष्टि से यूरोप के बहुत से देश अपनी राज्य-सीमाओं का विस्तार करने तथा सत्ता हथियाने में लीन थे। जर्मनी असंगठित तथा निबल था। यूरोप में ३६० से भी अधिक सर्वाधिकार-सम्पन्न राष्ट्र थे और उन्हें परस्पर जोड़ने वाली कड़ी उनका पवित्र रोम साम्राज्य (Holy Rome Empire) का सदस्य होना था। पवित्र रोम साम्राज्य का सम्राट कई शताब्दियों में आस्ट्रिया-हंगरी देश का सम्राट ही होता रहा था। पवित्र रोम साम्राज्य के अंतिम प्रबंध के लिए एक शाही राज्य परिषद् थी किंतु यह किसी भी काम के कर सकने में समर्थ नहीं थी। काल्तेयर ने कहा है कि यह पवित्र रोम साम्राज्य न तो पवित्र है और न ही रोम का है और न यह कोई साम्राज्य ही है। जर्मनी का सम्पूर्ण शासन आस्ट्रिया और प्रशिया के हाथ में था और दाना ही परस्पर घार दागु थे।

प्रशिया (Prussia)—फ्रेड्रिक महान् के शासन काल १७४० से १७८६ तक प्रशिया की प्रतिष्ठा बहुत बढ़ी। इसी सम्राट ने ही साइलेसिया (Silesia) पर अधिकार किया था। आस्ट्रिया के राज्याराहण युद्ध (War of Succession) तथा सप्तवर्षीय युद्ध के समय मेरिया थिरसा के प्रयत्न करने पर भी और घोर कठिनाइयों के विपरीत फ्रेड्रिक इस प्रदेश पर अधिकार बनाय रहा। यद्यपि सम्राज्ञी कैथरिन महान् सार पानण्ड पर अधिकार करना चाहता थी। फ्रेड्रिक ने आस्ट्रिया को अपने साथ मिला कर रूस का पालण्ड का कुछ भाग देने के लिए बाध्य कर दिया। परिणामतः १७७२ में जब पहली बार पालण्ड का विभाजन हुआ तो फ्रेड्रिक ने पश्चिमी प्रशिया का प्रदण अपने हिस्से के रूप में प्राप्त किया। पश्चिमी प्रशिया की महायत्ना से फ्रेड्रिक ने पूर्वी प्रशिया पर अधिकार कर लिया और इस प्रकार अपने अग्र्य प्रदण से मिलाकर प्रशिया की प्रादेशिक एकरता की स्थापना की। फ्रेड्रिक ने आस्ट्रिया का बवर्गिया पर अधिकार करने से रोक्कर रूस के बरदल बल्जियम पर अधिकार कर लिया। उसने जर्मन-सामन्त सघ (Frustrerband or League of German Princes) की स्थापना इस उद्देश्य से की कि जर्मनी में आस्ट्रिया की शक्ति की प्रगति का रोक जा सक। अग्र्य देना से ब्यवहार करने में फ्रेड्रिक नितान्त सिद्धान्त हीन था। वह निजी स्वाध की नीति का समर्थक था और उसने अपनी नीति के विषय में कहा है 'जा कुछ तुम प्राप्त कर सके हो कर। तुम उम समय तक गलती पर नही जा जब तक तुम्हें प्राप्त वस्तु नौटानी न पड़े।

यदि हम ईमानदार बन रहने से कुछ प्राप्त होता है तो हम ईमानदार ही बन रहेंगे किन्तु यदि धोखा देना ही आवश्यक हो तो हम विश्वासघाती बन जाना चाहिए।" साइलेसिया की विजय के विषय में उसने कहा है 'मेरे सैनिक तयार थे

घौर मेरा बहुभा भरा था। साइलेसिया वह प्रदेश था जो ब्राण्डेनबर्ग वंग (House of Brandenburg) के लिए अत्यन्त लाभदायक था।

गृह-नीति के दृष्टिकोण से फ्रेड्रिक ने अपने देश की आर्थिक स्थिति में उन्नति की। उसने दलदल से भरे प्रदेशों में से पानी निकलवाकर भेती की वृद्धि की। उमर नई नहरें बनवाई। आर्थिक सहायता देकर उद्योग को बढ़ावा दिया। अपने देश की आर्थिक उन्नति के लिए दिन रात अथक परिश्रम किया। वह धार्मिक सहिष्णुता की नीति का मानता था और वह तुर्कों का भी यदि वे उसके देश की उन्नति में साधक हो सकने लगे तो मान देने को तैयार था।

७४ वर्ष की आयु में जब फ्रेड्रिक की मृत्यु हुई तो उसने एक दुगुने क्षत्र वाला घौर दुगुनी में अधिक जनसंख्या वाला राज्य छोड़ा। वह अपने को राष्ट्र का प्रथम सेवक मानता था किन्तु उस समस्त जर्मनी की अपेक्षा प्रशिया के हित का अधिक ध्यान था। वह जर्मन भाषा को एक सही बड़बड़ाहट मानता था। इतना कुछ होने पर भी वह सारे जर्मनी में एक महान् राष्ट्रीय नेता माना जाता था। जनता उसका उतना ही सम्मान करता थी जितना कि उससे पूर्व उसने लूथर का किया था।

यद्यपि फ्रेड्रिक ने यूरोप अथवा समस्त पर शासन नहीं किया किन्तु फिर भी वह अपने युग का सबसे महान् सम्राट माना जाता था। उसके सिद्धांत और उदार स्व-शासक शासन के युग का उगम अर्थात् तत्कालीन शासन का आधार संहिता १३५६ में उसने मृत्यु के बाद ही किमान नये शासन के अर्थ में— अथवा समस्त पर को शासन किया।

१३५६ में फ्रेड्रिक मरान् का मृत्यु के पश्चात् फ्रेड्रिक विलियम गिन्ताय वंग पर बना। वह एक युव बुद्धि और अमूर्त प्रवृत्ति का व्यक्ति तथा रुम और आम्स्ट्रिया दाना का विगम था। १३५८ में जब फ्रांस में क्रांति हुई तो वह फ्रांस के मामलों का ध्यान पारितोषिक के मामलों में अतिरिक्त निरवस्थित बना था।

आम्स्ट्रिया-हंगरी (Austria Hungary)—आम्स्ट्रिया-हंगरी में हैगनग वंग का शासन था। उनका सम्राट ना पवित्र रोम साम्राज्य का सम्राट था। किन्तु रोम राज्य का सामान्य विगम शासन तथा साम्राज्य में अन्तर्गत जानिया के हान के कारण यह अस्थिरता बना था। जति धर्म और भाषा में के कारण उनमें अलग नहीं था। आम्स्ट्रिया हंगरी नास्तरुम मित्रान और आम्स्ट्रिया के लोग के मध्य शासन का मध्य निरवस्थित था।

१३५६ में १३८० तक मारदा अथवा आम्स्ट्रिया पर शासन करता लो। वह एक अर्थिक के शासन में था। वह आम्स्ट्रिया के शासन का मरिना शासन में सबसे पहले था और उसका जर्मन शासन का शासन विकारिया में की जा सकता है। उसका शासन था किन्तु आम्स्ट्रिया शासन वह मध्य थी। वह शासन शासन और शासन में। उस जर्मन शासन और शासन जानिया शासन के दृष्टि से शासन था। नदरथ शासन के समाप्त पर उसका प्रजा उसका हाथ लूमन के लिए शासन है शासन था। वह एक मध्य शासन और उन्हाही सुधारक थी।

इसके ही शासन-काल में पहली बार आस्ट्रिया की सेना ने कदम मिलाकर चलना सीखा था। फ्रेड्रिक नहानू ने भी इस बात का माना कि उसके द्वारा किया गया कार्य पुण्य के योग्य था। यह सच है कि सैरोमिया का प्रशिया न छोड़ लिया, किन्तु उसने हम पुन प्राप्त करने के लिय प्रयत्न में कसर नहीं छोड़ी। पालण्ड के बंटवारे के समय उस भी हिस्सा मिला।

जोसफ द्वितीय इसका उत्तराधिकारी बना जा १७६५ में अपने पिता के दण्ड के बाद पवित्र रोम-साम्राज्य का सम्राट बना। १७८० में यह अपना माता की मृत्यु के पञ्चान आस्ट्रिया के प्रदेशों का स्वामी बना। वह एक उदार स्वैच्छाचारी राजा था। वह उद्यमी और समनदार था। वह अपनी प्रजा की उन्नति के लिए दिन रात प्रयत्न करता था।

उसका ध्येय जाति धर्म और भाषा के भेदों में मुक्त आस्ट्रिया के सार प्रदेशों का एक सूत्र में बाँध देना था। साम्राज्य की भिन्न भिन्न जातियों का संगठित करके एक आस्ट्रियन राष्ट्र के रूप में बाधन का उसका उद्देश्य था। उसने साम्राज्य के भागों की प्राचीन सीमाओं का ताड़ कर मार साम्राज्य का तरह प्रदेशों में बाँटकर प्रत्येक प्रदेश का शासन एक सनापति को सौंप दिया। प्रदेशों का जिलों और नगरों में बाँटकर सभी प्रदेशों में एक जमीन शासन-व्यवस्था स्थापित की। जमन भाषा सार साम्राज्य की राज्य भाषा घोषित की गई। 'याप प्रणाली' का नये निरस संगठन किया गया। मार देश के लिए एक ही 'याप विधान लागू कर दिया गया और जनता का 'याप के समान समानता, लेख की स्वतंत्रता तथा धार्मिक सहिष्णुता प्रदान की गई। उनमें बड़ी सन्तुष्टि में खुश बनवाय। उसने जागीरदारों और घमाधिकारियों के विशेषाधिकार समाप्त करके भवन मनी की आय का १३ प्रतिशत कर लेना आरम्भ कर दिया। उसने सब का अपने अधिकार में लेकर उस पर सब पाप के नियंत्रण का काम कर दिया। शिक्षा के क्षेत्र में घमाधिकारियों का नियंत्रण कम कर दिया। अपने साम्राज्य में उसने मुजार की प्रथा (serfdom) समाप्त कर ली।

उसके सुधार बिना 'योगों की भावना तथा परिपातियों का ध्यान किये गोत्रता में लागू किये गये। प्रजा इन सुधारों के लिए तैयार नहीं थी। जोसफ द्वितीय ने यह योग्य भागी कि उसने दागनिकता का अपने साम्राज्य का निर्माता बनाया है। किन्तु ऐसा बरके उसने बर्हो भारी भूल की। उसे यह जानना चाहिए था कि दागनिक विचार जन-साधारण के क्रियाशील जीवन में बहुत ही कम स्थान पाते हैं। जात्य शिष्य द्वारा स्थापित बुद्धिमत्तापूर्ण महान् विद्वान्ता के स्तर तक ऊँचा उठना जनसाधारण के लिए बिल्कुल असम्भव काय था। परिणामतः उसका सार सुधार असफल रहा। साम्राज्य का संगठित करने के उसने प्रयत्न के कारण साम्राज्य लगभग छिन्न-भिन्न हो गया। आस्ट्रिया-हंगरी साम्राज्य एक बहुमुखी साम्राज्य था और इसका एकत्रित साम्राज्य बनाना असम्भव काय था। जोसफ द्वितीय ने असम्भव काय करना चाहा। ध्याय नहीं कि वह इस काय में असफल रहा किन्तु अपनी मृत्यु के पश्चात् उसने बड़े माहम से सुधार-सम्बन्धी अपने सम्पूर्ण धारणा छोड़ा दिया। क्रितीने

हा है कि इस सुरारक के जीवन का सबसे साहसपूर्ण काय यह था कि उसने अपना सम्पूर्ण काय उल्टा लौटा लिया ।

जोर्जफ द्वितीय के विषय में कहा गया है कि "उसे खाना पीना या मनोरंजन करना भी नहीं आता । वह सरकारी सूचना-पत्रों के प्रतिरिक्त कुछ पढ़ता भी नहीं ।" तना करने पर भी वह असफल रहा क्योंकि जसा फेड्रिक महान ने कहा 'उमने पहले कदम क बजाय दूसरा कदम पहले उठाया । स्वयं जोर्जफ ने अपनी कत्र पर लखने क लिए यह कहा कि यहाँ वह राजा साया है जो सब प्रकार की सद्भावनाओं को हाने पर भी प्रत्येक काय में जो भी उसने किया असफल रहा ।

जोर्जफ द्वितीय की परराष्ट्र-नीति का भी उल्लेख करना चाहिये । उसकी परराष्ट्र-नीति का मुख्य ध्येय हैम्बुर्ग वंश की जमनी में सर्वोच्च सत्ता स्थापित करना था । जोर्जफ द्वितीय ने रूस को पारे पोलण्ड पर अधिकार करने से रोकने के लिए पोलण्ड के प्रथम विभाजन के समय प्रशिया का साथ दिया । इसे रूस और प्रशिया के साथ इस लूट का माल भी मिला । यह तुर्कों में बुकोविना लेने में भी सफल रहा । १७१३ की संधि के अनुसार रोमण सोमाल के दुर्गों में सेना रक्षता था किन्तु जोर्जफ ने होलण्ड को इन दुर्गों का अधिकार छोड़ने पर बाध्य किया । प्रशिया के बढ़ते हुए प्रभाव को रोकने के लिए उसने रूस में गठबंधन किया । उसने आस्ट्रियन-नीदरलण्ड को वावेरिया से बंदन का स्थल भी किया किन्तु प्रशिया के विरोध के कारण वह ऐसा करने में असफल रहा । उसने तुर्कों को छिन मिल करने के विचार से तुर्कों के विरुद्ध युद्ध छेड़ा । किन्तु प्रशिया के विरोध के कारण वह अपने काय में सफल न हो सका । प्रशिया इंग्लैंड और हार्नेण्ड में तुर्कों की महापता के लिए त्रिभुज संधि की । ल्युपाल्ड (Leopold) प्रशिया को आस्ट्रिया के मित्रमन पर १७६० में बटा १७६१ में युद्ध से हट गया ।

फ्रांस जर्मनी के पूर्व आस्ट्रिया के साम्राज्य में अत्यन्त बचनी थी । यह केवल फ्रांस की जर्मनी में ही नहीं अपितु रूस और प्रशिया के पोलैंड सम्बन्धी पड़ोसियों में भी अतिशय रक्षनी थी । फ्रांस जर्मनी के लिए यह द्विविधा सामंजस्य थी ।

रूस (Russia)—१७६२ में १७६६ तक कैथरीन महान् रूस पर शासन करती रहीं । वह एक धनुर और बूटनानि महिला थी और पीटर महान् के पत्नीवत्ता पर चल रही थी । वह एक उत्तर स्वच्छाचारी शासिका थी । वह यूरोप के विज्ञानों को रूस में प्रमत्त रन्ती थी और डिडरोट (Diderot) जैसे साहित्यिकों की सरणिवा थी । उसने एक दृष्ट शासन-प्रणाली की स्थापना की किन्तु जनमाधारण की शक्ति के विषय में वह परवाह नहीं करती थी । जनमाधारण का किमा भी क्षेत्र में स्वरूप नहीं था । उसका शासन ही मात्र बानूत था ।

उसका विचार-शक्ति पत्राण और तुर्कों के विरुद्ध था । १७६८ में रूस ने तुर्कों के विरुद्ध युद्ध आरम्भ किया । कुछ समय हुए और उन्हें मायदाविया और वाता मिलने का दृष्ट संकट पडा । १७७१ में क्यूचुक—कनारजी (Kutchuk—Kanarji) का सन्धि होने पर यह युद्ध समाप्त हुआ । इस संधि के कारण रूस को

अज़ोफ़ और अय बहुत से स्थान प्राप्त हुए जिन्हके कारण केयरीन को काला सागर (Black Sea) के उत्तरी तट और अज़ोफ़ सागर (Sea of Azoff) पर अधिकार प्राप्त हुआ। काला सागर रूसियों की जहाज़रानी के लिए खुला था। क्रीमिया की स्वतंत्रता का मायता दी गई। रूस ने तुर्की में अपना राजदूत नियुक्त किया। रूसी प्रजा का फिलिस्तीन के तीर्थ स्थानों पर यात्रा करने की छूट मिल गई। तुर्की में वसे हुए ग्रीक ईसाइयों की रक्षा के लिए रूस को तुर्की के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने का अधिकार प्राप्त हुआ। रूस और तुर्की को यह संधि अधिक समय तक नहीं चल सकी। १७८७ में पुनः युद्ध आरम्भ हो गया। इस अवसर पर केयरीन न जाज़फ़ द्वितीय से तुर्की को समाप्त करने के लिए मेल कर लिया। १७९१ में आस्ट्रिया को इंग्लैंड प्रशिया और पवित्र दश (होलैलैंड Holyland) के त्रिमुखी गठजोड़ के कारण इस युद्ध से अलग होना पड़ा। रूस किसी प्रकार अकेला ही इस युद्ध का लड़ता रहा जा १७९२ में जेस्सी (Jassy) की संधि होने पर समाप्त हुआ। इस संधि के द्वारा तुर्की को क्रीमिया पर रूस का अधिकार मानना पड़ा। डेनिस्टर नदी तक के काला सागर के उत्तरी तट के प्रदेश पर तुर्की का अधिकार समाप्त हो गया।

केयरीन का पोलैंड के १७७२ १७९३ और १७९५ के तीनों विभाजन में बड़ा हाथ था। उसकी प्रथम योजना सारे पोलैंड का अधिकार में रखने की थी किन्तु उसे आस्ट्रिया और प्रशिया को १७७२ के विभाजन में पोलैंड का कुछ भाग देना ही पड़ा। १७९३ के विभाजन में आस्ट्रिया का कुछ नहीं मिला किन्तु प्रशिया को थोड़ा-सा भाग मिला। १७९५ के विभाजन में यद्यपि आस्ट्रिया और प्रशिया को थोड़ा-सा प्रदेश मिला किन्तु रूस का भाग सबसे अधिक था। इस बात को मानने से इनकार नहीं किया जा सकता कि केयरीन ने यूरोप में रूस की प्रतिष्ठा बहुत ऊँची कर दी। उसकी सफलताएँ उसके ही शब्दों में सक्षिप्त रूप से इस प्रकार कही जा सकती हैं— 'मैं रूस में एक गराव लड़की के रूप में आई रूस ने मुझे बहुत दहेज दिया, किन्तु मैंने उमका यह श्रेण गज़ोव (Azov), क्रीमिया और यूक्रेन देकर उतार दिया है।'

ब्रिटेन (Great Britain)—हैनोवर वंश इंग्लैंड पर राज्य करता था। स्थापन-कानून (Act of Settlement) के अनुसार, साझानी ऐनी की मृत्यु के पश्चात् १७१४ में जाज़ प्रथम इंग्लैंड के सिंहासन पर बैठा। १७२७ में उसका पुत्र जाज़ द्वितीय गद्दी पर बैठा और उसने १७६० तक राज्य किया। जाज़ प्रथम और द्वितीय के शासन-काल में ही विंग सामन्तगोही का इंग्लैंड में राज्य था। इसी अवधि में मंत्रिमण्डल प्रणाली की एक ठोम आधार पर स्थापना हुई। बालकाल के समय में प्रधान मंत्री का पद अस्तित्व में आया। इंग्लैंड को जेनकिन्ग युद्ध, आस्ट्रिया का उत्तराधिकार-युद्ध और सप्तवर्षीय युद्ध लड़ना पड़ा। १७६० में जब जाज़ तृतीय गद्दी पर बैठा उस समय सप्तवर्षीय युद्ध जारी था। वह १८२० तक राज्य करता रहा। वह अपने पिता और दादा दोनों से मिला था। उसका जन्म और लालन-पालन इंग्लैंड में हुआ था, और यह इसे बड़ा सम्मान और महत्त्व देना था।

वहा है कि इस सुधारक के जीवन का सबसे माहसपूर्ण काय यह था कि उसने अपना सम्पूर्ण काय उल्टा लौटा लिया ।

जोर्जफ द्वितीय के विषय में कहा गया है कि "उसे खाना पीना या मनोरंजन करना भी नहीं आता । वह सरकारी सूचना-पत्रों के प्रतिरिक्त कुछ पढ़ता भी नहा ।" इतना करने पर भी वह असफल रहा क्योंकि जसा फ्रेड्रिक महान् ने कहा 'उमने पहले बंदम के बजाय दूसरा बंदम पहले उठाया ।' स्वयं जोर्जफ ने अपनी बत्र पर लिखने के लिए यह कहा कि 'यहां वह राजा सोया है जो सब प्रकार की सदभावनाओं के होने पर भी प्रत्येक काय में जो भी उसने किया असफल रहा ।

जोर्जफ द्वितीय की परराष्ट्र-नीति का भी उल्लेख करना चाहिये । उसकी परराष्ट्र-नीति का मुख्य ध्येय हैम्बुर्ग वंश की जमनी में सर्वोच्च सत्ता स्थापित करना तथा अपने साम्राज्य की सीमाओं का पुनर्गठन करना था । जोर्जफ द्वितीय ने रूस को सारे पोलण्ड पर अधिकार करने से रोकने के लिए पोलण्ड के प्रथम विभाजन के समय प्रशिया का साथ दिया । इसे रूस और प्रशिया के साथ इस लूट का माल भी मिला । वह तुर्कों से बुकोविना लेने में भी सफल रहा । १७१३ की संधि के अनुसार होलण्ड सीमान्त के दुर्गों में सेना रखता था किन्तु जोर्जफ ने होलैण्ड को इन दुर्गों का अधिकार छोड़ने पर बाध्य किया । प्रशिया के बढ़ते हुए प्रभाव को रोकने के लिए उमने रूस से गठबंधन किया । उसने एस्टोन-नीदरलैण्ड को ब्रावेरिया से बदलने का प्रयत्न भी किया किन्तु प्रशिया के विरोध के कारण वह ऐसा करने में असफल रहा । उसने तुर्कों को छिन्न भिन्न करने के विचार से तुर्कों के विरुद्ध युद्ध छेड़ा । किन्तु प्रशिया के विरोध के कारण वह अपने काय में सफल न हो सका । प्रशिया इंग्लैण्ड और होलैण्ड ने तुर्कों की सहायता के लिए त्रिमुख संधि की । ल्युपॉल्ड (Leopold) द्वितीय जो एस्ट्रिया के सिंहासन पर १७६० में बठा १७६१ में युद्ध से हट गया ।

फ्रांस क्रान्ति के पूर्व एस्ट्रिया के साम्राज्य में अत्यन्त बेचैनी थी । यह केवल फ्रांस की क्रान्ति में ही नहीं अपितु रूस और प्रशिया के पोलैण्ड सम्बन्धी पडयंत्रों में भी दिलचस्पी रखती थी । फ्रांस क्रान्ति के लिए यह द्विविधा लाभदायक थी ।

रूस (Russia)—१७६२ से १७६६ तक कैथरीन महान् रूस पर शासन करती रही । यह एक चतुर और कूटनीतिज्ञ महिला थी और पीटर महान् के पट्टिह्वो पर चली गयी थी । वह एक उदार स्वेच्छाचारी शासिका थी । वह यूरोप के विद्वानों की सगति में प्रमत्त रहती थी और डिडरोट (Diderot) जैसे साहित्यिकों की सरसिका थी । उमने एक दम शासन प्रणाली की स्थापना की किन्तु जनसाधारण की स्थिति के विषय में वह परवाह नहीं करती थी । जनसाधारण को किसी भी क्षेत्र में स्वतंत्रता नहीं थी । उसके आदेश ही सबत्र कानून थे ।

उसकी विदेश-नीति पोलण्ड और तुर्कों के विरुद्ध थी । १७६८ में रूस ने तुर्कों के विरुद्ध युद्ध आरम्भ किया । तुर्क परास्त हुए और उन्हें मोलडाविया और वालाखिया का प्रदेश छोड़ना पड़ा । १७७५ में कुचुक—नेनाइजी (Kutcheruk—Kaisardji) की संधि होने पर यह युद्ध समाप्त हुआ । इस संधि के कारण रूस की

अजोपफ और अय बहुत से स्थान प्राप्त हुए जिसके कारण केथरीन को काग सागर (Black Sea) के उत्तरी तट और अजापफ सागर (Sea of Azoff) पर अधिकार प्राप्त हुआ। वाला सागर रूमिया की जहाजरानी के लिए खुला था। रूमिया की स्वतंत्रता को मायता दी गई। रूम ने तुर्की में अपना राजदूत नियुक्त किया। रूमि प्रजा का फिनस्तोन के तीय-स्थाना पर यात्रा करने की छूट मिल गई। तुर्की में वम हुए यूनानी इमाइया की रक्षा के लिए रूम का तुर्की के आंतरिक मामला में हस्तक्षेप करने का अधिकार प्राप्त हुआ। रूम और तुर्की की यह सन्धि अधिक समय तक नहीं चल सकी। १७८७ में पुन युद्ध आरम्भ हो गया। इस अवसर पर केथरीन ने लाइफ द्वितीय में तुर्की का समाप्त करने के लिए मेहनत कर ली। १७९१ में आम्बिया को इगनण्ड प्रणिया और पवित्र देग (हॉलीलैण्ड Holyland) के त्रिमुखी गठजाड के नारण इस युद्ध से प्रलभ होना पडा। रूम किसी प्रकार अकेला ही इस युद्ध को लड़ता रहा जा १७८२ में जस्मी (Jassy) की सन्धि होने पर समाप्त हुआ। इस सन्धि के द्वारा तुर्की का रूमिया पर रूम का अधिकार मानना पडा। डेनिस्टर नदी तक के वाला सागर के उत्तरी तट के प्रदेश पर तुर्की का अधिकार समाप्त हो गया।

केथरीन का पालण्ड के १७७२ १७९३ और १७९५ के तीना विभाजना में बड़ा हाथ था। उसकी प्रथम योजना सारे पालण्ड का अधिकार में रखने की थी किन्तु रूम आस्ट्रिया और प्रसिया को १७७२ के विभाजन में पालण्ड का कुछ भाग देना ही पडा। १७९३ के विभाजन में आस्ट्रिया का कुछ नहीं मिला किन्तु प्रसिया को बाढा-ना भाग मिला। १७९५ के विभाजन में यद्यपि आस्ट्रिया और प्रसिया को थोडा-ना प्रदेश मिला किन्तु रूम का भाग सबसे अधिक था। इन बातों को मानने से इनकार नहीं किया जा सकता कि केथरीन ने यूरोप में रूम की प्रतिष्ठा बहुत ऊँची कर दी। उसकी सफलताएँ उसके ही शत्रुओं में सक्षिप्त रूप से इन प्रकार बही जा सकती हैं— मैं रूम में एक गरीब लडकी के रूप में आई रूस ने मुझे बहुत दहज दिया, किन्तु मैं उसका यह श्रृण एजोव (Azov) रूमिया और यूक्रेन देकर उतार दिया है।

ब्रिटेन (Great Britain)—रूसोवर का इगलण्ड पर राज्य करता था। स्थापन-नानून (Act of Settlement) के अनुसार माम्रानी ऐनी की मृत्यु के पश्चात् १७१४ में जाज प्रथम इगलण्ड के मिहासन पर बैठा। १७२७ में उसका पुत्र जाज द्वितीय गद्दी पर बैठा और उसने १७६० तक राज्य किया। जाज प्रथम और द्वितीय के शासन-काल में ही विंग सामन्तगद्दी का इगलैण्ड में राज्य था। इसी अवधि में मन्त्रिमण्डल प्रणाली की एक ठाम आधार पर स्थापना हुई। वानफोल के समय में 'प्रधान मन्त्री' का पद अस्तित्व में आया। इगलैण्ड को जेनकिज युद्ध, आस्ट्रिया का उत्तराधिकार-युद्ध और सप्तवर्षीय युद्ध लड़ना पडा। १७६० में जब जाज तृतीय गद्दी पर बैठा उस समय सप्तवर्षीय युद्ध जारी था। वह १८२० तक राज्य करता रहा। वह अपने पिता और दादा दोनों से भिन्न था। उसका जन्म और लालन-पालन इगलैण्ड में हुआ था, और वह इसे बड़ा सम्मान और महत्व देता था।

आरम्भ से ही वह अपना व्यक्तिगत शासन स्थापित करना चाहता था। १७६१ में पिट ने त्याग पत्र दे दिया और १७६१ से १७६३ तक जाज का गिण्ट लाड बुटे (Lord Bute) प्रधान मंत्री रहा। १७६३ से १७७० तक उसने विंग-वंग के लागू में मतभेद पदा करने की नीति अपनायी और साथ-साथ अपने विश्वस्त मित्रों को शासन की शिक्षा भी देता रहा। अपने ध्येय में सफल होने पर १७७० में उमन लाड नाथ को अपना प्रधान मंत्री नियुक्त किया और वह इस पद पर १७८२ तक बना रहा। इस अवधि में उत्तरी अमेरिका के उपनिवेशों में अंग्रेजों के सम्बन्ध जटिल हो गये और अमेरिका में स्वतंत्र युद्ध आरम्भ हो गया। इंग्लण्ड परास्त हुआ और १७८३ में वरसाई (Versailles) की संधि के अनुसार अमेरिका के उपनिवेशों की स्वतंत्रता का मान्यता दी गई। दिसम्बर १७८३ में युवा पिट (Pitt the Younger) को प्रधान मंत्री नियुक्त किया गया और उसने यह पद छोड़ी अवधि छोड़कर १८०६ तक सभाला। १७८६ में जब फ्रांस क्रांति शुरू हुई युवा पिट इंग्लण्ड में सवाधिकार सम्पन्न था। औद्योगिक तथा कृषि क्रांति का इंग्लण्ड में प्रगति कर रही थी जिनके कारण इंग्लण्ड उद्योग और कृषि की पदावार में यूरोप का नेतृत्व कर रहा था। फ्रांस का नियति के विधान के अनुसार इंग्लण्ड से घोर विरोध प्राप्त होना था।

पोलण्ड (Poland)— सोलहवीं शताब्दी में पोलण्ड एक शक्तिशाली राष्ट्र था और १६८३ में तुर्कों से वियाना का उद्धार करने का श्रेय पोलण्ड का ही है। उसने केवल जर्मनी को ही नहीं अपितु सारे यूरोप को तुर्कों के प्रभुत्व से बचाया। अठारहवीं शताब्दी में उसका पतन आरम्भ हुआ और इस शताब्दी के अन्त तक यूरोप का मान चित्र में उसका नाम मिट गया। इसके अनेक कारण थे।

पोलण्ड में राजा का चुनाव जाता था परिणामतः प्रत्येक राजा की मृत्यु के पश्चात् बहुत पड़ोसियों होते और पड़ोसी देशों को पोलण्ड के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने का अवसर प्राप्त होता रहता था। महान् शक्तियों के पोलण्ड में अपने गुट थे जिनके हितों का वे प्रतिपादन करते थे। इन गुटों की स्वामि भक्ति अपने देश के हितों की अपेक्षा अपने विदेशी सरक्षकों के प्रति रहती थी। प्रत्येक राजा का चुनाव के समय पोलण्ड के सामंतों का विरोध सुविधाएँ प्राप्त हो जाता और यह चक्र प्रत्येक बार राजा के चुनाव के समय चलता था। गिण्ट वंग का बहुत बड़ी महत्या में सुविधाएँ और विरोधाधिकार मिल जाते थे परिणामतः राजा की स्थिति बड़ी दुबल हो जाती थी। पुनःच विदेशी राजकुमारों का पोलण्ड का राजा चुना जाना पोलण्ड का विनाश बड़ा सुमीलित था। चुने हुए राजा लोग अपने साथ अपने प्रजा का स्वामित्व मानते और अनेक कारण पोलण्ड का व्यय में ही यूरोप की कूटनीति में घिसटता पड़ता था।

पोलण्ड में एक और दुर्भाग्यपूर्ण परिपाटी थी जिसे स्वतंत्र मत (Liberum Veto) कहते थे। इस परिपाटी के अनुसार पोलण्ड के मंत्रिमण्डल के प्रत्येक सदस्य का रसद के बिना भा प्रस्ताव का रद्द कर देने का अधिकार प्राप्त था। परिणामतः पोलण्ड की प्रजातन्त्र मन्त्रिमण्डल के बिना पारित नहीं हो सकता था। सर्वसम्मति

प्राप्त करना इसलिए असम्भव था क्योंकि विदेशी राष्ट्र सरनता से कुछ सामन्ता का अपन माय मिलाकर किसी भी प्रगतिशील कानून को रद्द करा सकते थे। यह परिपाटी अत्यन्त मूर्खतापूर्ण थी और पोलैण्ड के लिए घातक सिद्ध हुई। किन्तु सामन्त लोग अपनी शान, घमण्ड और परिणामो पर विचार न करने के कारण इस वनाय ग्वना चाहते थे।

पोलण्ड में धार असमानता थी। एक ओर सामन्ता का सब प्रकार की सुविधाएँ और विशेषाधिकार प्राप्त थे, दूसरी ओर गरीब किसानों की दशा अत्यन्त दयनीय थी। परिणामतः समाज में धार बढ़ता फली थी। इन परिस्थितियों में पोलण्ड में एकता नहीं थी अतः देश की शक्ति क्षीण होती गई। धार्मिक मतभेदा के कारण भी पोलैण्ड के देशभक्तों की कठिनाइयाँ बढ़ीं। पोलण्ड के कैथोलिक प्राटैन्टैण्ट पर बड़ा अत्याचार करते थे। जाति भेद भी पोलैण्ड के समाज में एकता की बमों का एक कारण था। पोलैण्ड में बहुत-से ऐसे तत्व थे जो अपनी स्वतंत्रता के लिए विदेशों का सहारा और सहायता ढूँढते थे। दुर्भाग्य से पोलैण्ड की सीमा में भौतिक एकता नहीं थी और इसके अनेक प्रदेशों अपना-अपना देश का भाग नहीं मानते थे। पोलैण्ड की सीमा निर्धारित करने के लिए कोई पर्वत अथवा नदी नहीं थी। इस कारण उसके लिए विदेशी आक्रमणकारियों से अपनी रक्षा करना बड़ा कठिन था। पोलैण्ड के दुर्भाग्य से अठारहवीं शताब्दी में उसके पड़ोसी देशों के 'गामक' सिद्धान्तहीन व्यक्ति थे। फ्रेड्रिक महान् और कैथरीन महान् दोनों ही अपने व्यवहार में पूर्णतः सिद्धान्तहीन थे। इस कारण इसमें अशक्य नहीं कि इन दोनों के हाथों पोलैण्ड का नाश हुआ।

फ्रेड्रिक महान् और कैथरीन महान् दोनों की आँखें पोलैण्ड पर गड़ी थीं। आरम्भ के तौर पर उन्होंने सेक्साने देश को पोलैण्ड के सिद्धान्त पर बटन के अधिकार में बर्चिन करने का प्रयत्न किया। १७६३ में जब पोलैण्ड के राजा आगस्टस तृतीय का शासन समाप्त हुआ तो यह अवसर प्राप्त हुआ। दाना ने ही पोलैण्ड के सामन्ता पर अपने मनमाने व्यक्तियों का राजा चुनने के लिए जोर डाला। पोलैण्ड का नया राजा स्तानिस्लाव पानियाटावस्की (Stanislaus Poniatowsky) कैथरीन का बड़ा कृपा पात्र था। पोलैण्ड के सिद्धान्त पर अपना मनोनीत व्यक्ति बठाकर पोलैण्ड के विभाजन की नयारियाँ शुरू हुईं। पोलैण्ड के देशभक्तों का रूस का प्रभाव अस्वर्ग और जहन्नम उभरी राह के लिए एक सगठन किया। रूस और पोलैण्ड में युद्ध छिड़ गया और रूस पोलैण्ड की शक्ति तोड़ने में सफल रहा। फ्रेड्रिक ने पोलैण्ड के विभाजन का प्रस्ताव रखा, किन्तु कैथरीन सारे पोलैण्ड को अपने पास रखना चाहती थी, इसलिए उसने यह प्रस्ताव ठुकरा दिया। किन्तु जब रूस और तुर्की का युद्ध छिड़ा तो समय फ्रेड्रिक को अवसर प्राप्त हुआ। जब आस्ट्रिया और प्रुशिया ने गटजोड किया तो रूस पोलैण्ड के विभाजन का मान गया। १७७२ में प्रथम विभाजन हुआ। इस विभाजन में रूस का लिबानिया तथा लियोनिया का कुछ भाग मिला जिसमें रूस की सीमा का और डेनीपर नदी तक विस्तार हुआ। प्रुशिया को पश्चिमी प्रुशिया तथा आस्ट्रिया का जिप्स तथा लाल रूस (गैलेमिया) का प्रदेश प्राप्त हुआ। मैरिया

थिरेसा के व्यवहार के विषय में फ्रेड्रिक ने व्यथित से कहा था कि वह रानी ता है किन्तु अपना भाग ले ही लेती है।

१७७२ के विभाजन के पश्चात् पोलण्ड रूस पर निर्भर हो गया और पालण्ड के देगभवन कुछ समय तक रूस और प्रशिया के मेल के कारण कुछ नहीं कर सका। १७८१ में प्रशिया और आस्ट्रिया में मेल होने के कारण जा कि पोलण्ड का विना प्रशिया की अपेक्षा अधिक मित्रतापूर्ण था हालत कुछ सुधरी। १७८७ में रूस और तुर्की में युद्ध हुआ। १७८८ में रूस और आस्ट्रिया की महन्वाजा साम्राज्य को रोवन के लिए त्रिमूर्ती संधि (Triple Alliance) हुई। १७८८ में पोलण्ड की ससद की बैठक हुई जिसमें कुछ सुधार करने का निश्चय किया गया। दुर्भाग्य से सुधार-नायक में इस कारण देर हुई कि पोलण्ड का राजा रूस से डरता था तथा सामन्त सुधारों का विरोधी था। प्रशिया ने भी विरोध किया। १७९१ के सुधार के अनुसार पोलण्ड के राजा का पद सेक्साने (Saxony) वगैरे में वगैरे मान्यता होना था। पालण्ड के राजा को शासन और सेना का नियंत्रण करना था। स्वतंत्रता (Liberum Veto) की प्रणाली का समाप्त कर देना सबको धार्मिक सहिष्णुता प्रदान करना इत्यादि था। रूस इन सुधारों से अप्रसन्न था और इसलिए पालण्ड का विरुद्ध अभियान की तयारी शुरू की। रूस ने आस्ट्रिया और प्रशिया को फ्रांस की क्रांति में दिलचस्पी लेने के लिए उत्साहित किया जिससे कि पोलण्ड में मनमानी की जा सके। प्रशिया ने भी पोलण्ड के प्रति मित्र भाव त्याग दिया। इससे पालण्ड को बड़ा बुरा लगा। आस्ट्रिया का रुव मन्त्रीपूर्ण था। इस वातावरण में रूस ने पोलण्ड पर आक्रमण किया और उसे परास्त किया। पोलण्ड को अपनी सुधार-योजना समाप्त करना पड़ी। उसे आस्ट्रिया और प्रशिया से कोई सहायता नहीं मिली इसलिए उसका रक्षा का युद्ध समाप्त हो गया। १७९३ में दूसरी बार पोलण्ड का विभाजन हुआ। आस्ट्रिया को कुछ नहीं मिला। रूस को पूर्वी पोलण्ड जिसमें मिन्स्क, पोडोलिया, वाहीनिया छोटा रूस था मिला तथा प्रशिया को डेजिग थान, रोजन जेनीजन और कनिस्क मिले। रूस को प्रशिया से दुगुना प्रदेश और चार गुनी प्रजा प्राप्त हुई। इस विभाजन में इन शक्तियों की लज्जाजनक स्वायत्तरता और परस्पर अविश्वास नग्न रूप में प्रकट हो गया। आस्ट्रिया ने इस विभाजन पर घोर नाराजगी प्रकट की जो उसकी सम्मति के बिना हुआ और जिसके कारण रूस की सीमाएँ आस्ट्रिया के प्रदेशों तक फैल गईं। आस्ट्रिया और प्रशिया के सम्बन्धों में तनाव था गया।

रूस ने पालण्ड में अपनी शक्ति का बढ़ाया और पालण्ड का राजा वारसा में स्थित रूस के राजदूत का एजेण्ट हो गया। पोलण्ड का प्रजा का यह विभाजन बहुत बुरा लगा और गुप्त समझौते की स्थापना हुई जिसमें पुनः स्वतंत्रता प्राप्त करके सुधार किये जायें। घनक स्थानों पर विद्रोह हुआ और अनेक स्थानों से रूसियों का निष्काशन किया गया। १७९४ में रूस ने माँग की कि पालण्ड की सेना नष्ट कर दी जाए किन्तु इस माँग का टूटारा दिया गया। बहुत स्थानों पर विद्रोह हुआ और रूसियों का निष्काशन किया गया। रूस ने पालण्ड पर आक्रमण किया और परास्त किया। सब विरोधी शक्तियों का दमन कर दिया गया। इस प्रकार १७९५ में पालण्ड

का तीसरा विभाजन हुआ। इस विभाजन में रूस का गैरीसिया और इता का वूराई के बीच लगभग २००० वर्गमील का क्षेत्र प्राप्त हुआ। आस्ट्रिया का गैरीसिया का नेप प्रदेश तथा फ्रेडो का लगभग १००० वर्गमील का क्षेत्र प्राप्त हुआ। प्रशा का वारसा तथा बग और डेनीपर नदी के बीच का लगभग ७०० वर्गमील का प्रदेश मिला। जनवरी १७९७ की एक संधि के अनुसार रूस, आस्ट्रिया और प्रशिया ने मिलकर यह घोषणा की कि "पोलण्ड के राज्य का पाद दिलाने वाली सब वस्तुओं का नष्ट कर देना आवश्यक है।

गूडाला (Guedalla) के मतानुसार पोलण्ड का विभाजन यूरोप की कूटनाति का एक घोर उज्जाजनक नगा बाध था। यह उज्जाजनक इसलिए था क्योंकि यह अन्तर्राष्ट्रीय सदाचार और न्याय के विरुद्ध था। यह नगा इसलिए था क्योंकि जिन देशों ने इस लूट में भाग लिया उह इमसे कोई बल प्राप्त नहीं हुआ। पार्लण्ड की जनता ने कभी भी विभाजन को स्वीकार नहीं किया और बीसवीं शताब्दी में जब तक उहें स्वतंत्रता नहीं मिली व निरंतर घोर सघप करते ही रहे। रूस, प्रशिया और आस्ट्रिया तीनों के पदा में पोलण्ड के टुकड़े बिना हजम हुए स्वतंत्र धन रहे। पालण्ड का विभाजन एक घोर पापाचार का उदाहरण है। किंतु इन महान शक्तिशा द्वारा पालण्ड में हस्तभय के कारण फ्रांस की क्रांति का सहायता मिली। फ्रांस अपनी स्वतंत्रता का रक्षा करने में इसलिए सफल रहा, क्योंकि उनके शत्रु पालण्ड के मामले में परस्पर विरोधी होने के कारण उनके विरुद्ध कोई समुचित कदम नहीं उठा सकते थे।

इटली (Italy)—इटली इस काल में एक भौगोलिक शब्द था और यह बहुमूल्यक राज्या में बटा हुआ था। उत्तर में सवॉय और सारडीनिया के सामन्त-गाही राज्य जिनाघा और वेनिस के दो गणतंत्र और मिलान परमा माटना (Modena) और लुक्का की चार जागारें थी। दक्षिण में टुस्कने की जागीर राम नेपल्स मिसली का मिनाकर पाप का राज्य था। १७९९ में कैमिका फ्रांस ने ले लिया था।

स्पेन के उत्तराधिकार के पदचान् इटली में स्पेन के स्थान पर आस्ट्रिया ने एक प्रभावशाली शक्ति का स्थान प्राप्त कर लिया। आस्ट्रिया का मिलान पर सर्वो-धिकार सम्पन्न गामन था। सम्राट फ्रांसिस ने टुस्कने हथिया रखा था। परमा मोडना और लुक्का पर आस्ट्रिया का बहुतन्ना नियंत्रण था। आस्ट्रिया की भूखी प्रांतें वेनिस पर भी लगी थी। यह मत्य है कि इटली के राज्य स्वतंत्र थे किंतु इनका बाइ महत्त्व नहीं था। वेनिस और जिनाघा की शान समाप्त हो चुकी थी। पोप की जागीरें मारे यूरोप में सबसे बुरी शासित थी। नेपल्स बहुत ही पिछटा हुआ था। किंतु टुस्कने समस्त यूरोप में सबसे श्रेष्ठ शासित राज्य था। १७३७ में मरिया थिरेसा के पति फ्रांसिस का यह उत्तराधिकार में मिला। उसका काय उनके पुत्र लियोपोल्ड (१७६५-१७९०) ने जारी रखा। मुजारे की प्रथा सम्प्राप्त कर दी गई और सामन्ता के अधिकार सीमित कर दिये गए। धार्मिक न्यायालय प्रथा

(Inquisition) का समाप्त कर दिया गया। चर्च के अन्तर्गत अदालतों के अधिकार कम कर दिये गये। यातनाएँ देना बन्द कर दिया गया। वार्षिक आय लक्षा प्रकाशित किया जाना लगा। इस प्रकार दुम्बने इटली और यूरोप के लिए प्रकाश-स्तम्भ बन गया।

इटली की स्थिति में सबसे महत्वपूर्ण बात सवाय वर्ग की सतत वृद्धि थी। यह सत्य है कि सवाय या सारडीनिया इटली में किसी प्रगति का नतीजा नहीं बन सकना था किन्तु उसने अपनी सामरिक और भौगोलिक स्थिति से लाभ उठाना सीख लिया था। कभी वह एक तो कभी दूसरी शक्तियों से गठजाड करता और इसलिए कभी कभी स्वयं नष्ट होने की स्थिति में फँस जाता था। किन्तु किसी-न किसी प्रकार यह अपने प्रयोगों का इकट्ठा करके उज्ज्वल भविष्य की आशा करने लगा।

किसी फ्रांसीसी दूत ने कहा है कि 'इटली में सात या आठ सभ्यता के केन्द्र हैं। एक अत्यन्त साधारण-सा काय ट्युरीन वेनिस मिलान जिनोआ बालोग्ना फ्लोरेंस रोम या नपल्स में भिन्न भिन्न प्रकार से किया जाता है। वेनिस स्पष्ट और विनासी है किन्तु ट्युरीन बुरी तरह आडम्बर लिप्त है। मिलान का विनोद जिनोआ का नीचता से टकराता है। बालोग्ना वाले उत्तेजना लयन उदारतायुक्त और कभी कभी डीठ होते हैं। नपल्स वाले क्षणिक मौज के दाम हैं।

स्पेन (Spain)—मोलूवा शताब्दी में चार्ल्स पंचम और फिलिप द्वितीय के शासन-काल में स्पेन एक महान देश था। सत्रहवाँ शताब्दी के काल में वह एक द्वितीय श्रेणी का शक्ति राष्ट्र रह गई। प्रतिस्पर्धाशील शक्तियाँ देश की भाग्य विधाता बन गई। स्पेन के उत्तराधिकार के युद्ध के पश्चात् फ्रांस के लुई चौदहवें के प्रपौत्र को स्पेन का शासक माना गया। १७६१ के सप्तवर्षीय युद्ध में स्पेन ने फ्रांस का साथ दिया। अन्तर्वर्नाई और पटिना जम मंत्रियों ने बहुत से सुधार किए। चार्ल्स तृतीय के शासन काल में और सुधार हुए जिनके अनुसार 'याय प्रणाली' में सुधार हुए डाक डालने वाला का दमन किया गया। धार्मिक दण्ड विधान को बड़ाई को हल्का कर दिया गया ज्युस्टिस का दण्ड निवाला किया गया और दण्ड की आर्थिक उन्नति हुई। दण्ड के बौद्धिक जीवन का प्रत्याह्वन दिया गया। नया राजा चार्ल्स एक दुबल और अस्थिर व्यक्ति था।

पुर्तगाल (Portugal)—जाजफ प्रथम के मंत्री पाम्बल ने बहुत से सुधार किए जिनके अनुसार उद्योग में उन्नति हुई जिसका प्रोत्साहन मिला और उस धर्म निरपेक्ष (Secular) बनाया पाप के अधिकारों का कम कर दिया गया और धर्म दण्ड प्रदाय के रूप का कम किया गया।

Suggested Readings

Bourne H G

Brown G

Fisher H A L

Gottschalk L R.

Goldsmith M

The Revolutionary Period in Europe 1763—1815

The Enlightened Despots

A History of Europe

The Era of the French Revolution 1715—1815

Frederick the Great

क्रास आन्ति से पूब का यूरोप

Grant and Temperley	<i>Europe in the Nineteenth and Twentieth Centuries</i>
Hayes C J H	<i>A Political and Cultural History of Modern Europe Vols I & II</i>
Johnson A	<i>The Age of the Enlightened Despots</i>
Ketelbey C. D M	<i>A History of Modern Times</i>
Lowell	<i>Eve of the French Revolution</i>
Macaulay (Lord)	<i>Essay on Frederic the Great</i>
Marriott J A R & Robertson C G	<i>The Evolution of Prussia</i>
Phillips W A	<i>Modern Europe</i>
Robinson & Beard	<i>Readings in Modern European History</i>

किमान को जागीरदार धर्माधिकारी तथा सम्राट के प्रति बहुत सन्तुष्टान देन होते थे। साधारणतः उसे जागीरदार के खेतों में सप्ताह में तीन दिन काम करना पड़ता था। फसल को कटाई के समय सप्ताह में पाँच दिन काम करना पड़ता था। किमान की मृत्यु पर उसके परिवार को दुगुना राजस्व देना पड़ता था। मृत के बिकने पर प्राप्त धन का पंचमांश जागीरदार को जाता था। किसान को चर्च के लिए भी अपनी आय का दशमांश देना पड़ता था जो वष में लगभग उसकी कुल वार्षिक आय के बारहवें भाग से पंद्रहवें भाग तक होता था। सम्राट को दिया जाने वाला कर इन सबसे अधिक था। खेती-कर (Land tax or Taille) इन सबसे अधिक महत्वपूर्ण था। यह कर निर्धारित नहीं था किन्तु किसान के खेती और घर की कीमत के अनुसार लगाया जाता था। वास्तव में कर उगाहने वाले पदाधिकारी अधिक-से अधिक जितना उनका हाथ लगता छीन ले जाया करते। खेती का धरती पर लगाई गई कर प्रणाली के कारण किसानों की हालत बड़ी खराब हो गई। उगाही करने का काय सबसे ऊँची बोली लगाने वाले का मिलता था जो नीलामी का दाम राज्य में जमा कर देता और फिर किसानों को तग करके अपने को मालामाल करने का प्रयत्न करता। किमानों की चमड़ी उतार ली जाती थी। सारा राजस्व किसानों का ही देना पड़ता था क्योंकि जागीरदार और धर्माचार्य राज्य का कुछ नहीं देते थे। किमानों का धायकर (Vingtieme) भी देना पड़ता था। यह लगभग सब प्रकार की आय का पंचमांश होता था। जागीरदार बहुत घाड़ा देते थे और धर्माचार्यों का बिल्कुल घुट था। एक अन्य कर नमक-कर (Gabelle) था। यह कर सब प्रकार के वस्तुओं पर निवृष्ट था। सरकार के पास नमक के सर्वाधिकार थे। और सात वष का आयु में बड़े सब लागा का नमक की निर्धारित मात्रा खरीदनी पड़ती थी जो लगभग सात पाण्ड हानी थी। नमक असली कीमत से दस गुनी कीमत पर मिलता था। किमानों भी यकित्त का नमक के भरना पर पानी पीने तथा समुद्र-जल से खाना बनाने का अधिकार नहीं था। फिर नमक का मूल्य सब स्थानों पर भिन्न था जितने प्रजा का उनी कठिनाई होती थी। एक और कर सड़क-कर था। सड़के बनाना किमानों का कर्तव्य था और उन्हें वष में कई सप्ताह अपने पड़ोस के प्रदेशों में सड़के बनाने और मरम्मत करनी पड़ती थी।

सन्तुष्टान किया जाता है कि इन सब करों का भुगतान करने के बाद प्राप्त की किमानों के पास उमका कमाई का क्वच बीस प्रतिशत भाग जीवन-यापन के लिए भेष रहता था। प्राप्त के वस्तु घाड़ प्रदान के किसान इन सब करों को देकर सुख सह सकते थे किन्तु बाका मात्र देना में उनकी हालत इतनी दुःखमय थी कि उसका वजन नहीं किया जा सकता। मृत्यु अच्छी फसल होने पर भी उन्हें राटियों के लाल पड़े रहते थे। मूत्रा गरमा या लम्बी मरदा होने पर वे समाप्त हो जाते थे। भूमे किसान अपनी नून मित्रान के लिए पास और जठें खात और हजारों भूख से मर जाया करते। कोई भी उनका देना पर विचार करता प्रतीत नहीं होता था। किमानों की कहना था कि प्राप्त की जनसंख्या के दस भागों में नौ भाग भूख में और दसवाँ भाग अजीब से मरता है।

किमान बड़ी मुमीवत मे थ । धरती के बँटवार की फ्रांस की मामतगाही प्रणाली अत्यंत दमनपूर्ण थी और उन सब चाना वा, जिनके द्वारा उनके सामारण अत्रिहार छीन जात किसान विराध करने थे । उन्हाने विरोध बाड लगान लगा गावा की गामूदिन धरती के बँटवार का विराध किया । इनक द्वारा बडे तामीरदारा का नाम था । अटारहवी शताब्दी मे महँगाई के कारण भी उह बडा कष्ट हुआ । सामारण दैनिक आवश्यकताया की वस्तुया के दाम १७२६ से १७४१ के काल की अग्रभा १७८५ मे १७८६ मे कही अधिक थे । दामा के चढन से उन लाग वा सब मे अधिक कठिनाई हुई, जो मुक्ति से गुजारा कर पाते थे । किसाना द्वारा खाय जान वाले अन्न के दाम उच्च वग द्वारा खाय जान वाले गहूँ से भी ऊचे चढ गय ।

बुजुआ शयात मध्य श्रेणी के लोग भी फ्रांस के अधिकार-हीन वग मे ही थे । इस वग मे शिक्षक, वकील डाक्टर साहूकार और व्यापारी थे । अधिक व्यापार और उद्योग के क्षेत्र मे यह वग बडा शक्तिशाली था । इसी वग से राज्य का मंत्री आयाधीश, कर लगाहन वाले और अन्य धंधे वाले प्राप्त होत थे । इनके पास धन और बुद्धि दानो ही थी । इसी वग के लोग मसार के विभिन्न भागा मे जाया करत और सब प्रकार से जागरूक थे । उन पर फ्रांस के दासनिका का गहरा प्रभाव था और परिणामत से प्राचीन परिपाटी द्वारा दिय गय निम्न स्थान का अपमान के लिए विल्कुल तयार नही थे । पुरानी राज्य शासन प्रणाली के विरुद्ध विद्रोह मे इस वग के लोग ही जनता के नेता बने ।

प्रा० साल्वेमिनी के अनुमार अटारहवी शताब्दी के द्वितीय भाग मे फ्रांस का समाज एक प्राचीन नगर के समान था जा कि किसी रूपरेखा या नियम के बिना उन्नत हुआ और भिन्न भिन्न युगा के तरीका द्वारा अनेक प्रकार की वस्तुया मे बना हुआ था । प्राचीन और अप्रचलित भवन नय और गरित ढाँचा मे परस्पर मिल गए थे । प्राय नमी निवासी धनी मध्य-वर्गीय और विरोधाधिकारी भी अस्तित्व मे थे ।

सम्राज्यी कमचारी जस्ट और खगव नीति के गिकार हा गए थे, जिसके विरुद्ध रंग का विद्रोह करना आवश्यक था यदि उस सामतगाही अधकार मे पुन बचाना जा । विरोधाधिकारिया न खजान का लूटा शासन व्यवस्था न रंग का अधिक स्थिति का उन्मत्त पुन्मत्त कर दिया । वे बिना दण्ड शासन के किनार तक पहुँच गए और परस्पर कलह करत हुए इवने काते थे ।

बौद्धिक जाकि उनके स्वयं के विनाश और सामतगाही के प्रत्येक काय को नष्ट करने के लिए मजबूर थे आया करने थे कि राजा परम्परानुगत सामतगाही विराधी नीति का अपनायगा जाकि प्राचीन समय मे उसने वग का गारव थी । अन्न मे बकार प्रतीक्षा ने एककर उहान सामतगाही के अन्तिम अवस्था आगे गीगानी जोकि उनकी समर्थक थी, उगाड फँका और आधुनिक समाज पर एक नया कमान्य स्थापित किया ।

नेपोलियन बानापाट के शब्दा मे फ्रांस का ज्ञानि समूचे राष्ट्र द्वारा विगत अधिकार प्राप्त वर्गों के विरुद्ध एक सामूहिक विद्रोह था । फ्रांस का सामान्य वग

यूरोप के अग्र सामन्तों की तरह उन पर बबर आक्रमणों के काल से चना आ रहा था जिन्होंने रोम का साम्राज्य छिन भिन कर दिया था। फ्रांस में सामन्त लोग प्राचीन फ्रेंक और बरगण्डियन जिरगा के प्रतिनिधि थे और अग्र प्रजाजना का गॉल (Gaul) कबीले से विकास था। सामन्तशाही प्रणाली से सिद्धांत रूप से यह बात सवमायने गई कि अचन सम्पत्ति का अग्र भू-स्वामी का होना आवश्यक है। देण के सार राजनातिक अधिकारों का सामन्त और धर्माचार्य ही प्रयोग करते थे। किमाना का धरती बमाने पर लगाकर दाम बना दिया गया था।

“ज्ञान और सम्पत्ता के विकास से जनसाधारण मुक्त हो गए। नवीन परिस्थितियों से उद्योग और व्यापार की उत्पत्ति हुई। अठारहवीं शताब्दी में धरती राष्ट्र धन और सम्पत्ता के बरदानों का उपभोग जनसाधारण के अधिकार में था। इन समय भी सामन्त और जागीरदार विशेषाधिकार भोगी बग था। उच्च और माध्यमिक न्यायालय उनके अधिकार में थे। वे विभिन्न नामों और प्रकारों की आड में अनेक विशेषाधिकारों का उपभोग करते थे। राष्ट्र द्वारा लगाम करो से उन्हें छूट प्राप्त थी तथा देण के सर्वोच्च पदा पर उनका एकाधिकार था।

इन सब बुराइयों ने जनसाधारण को विद्रोह के लिए प्रोत्साहन दिया। न्यायिक अधिकारों का मुख्य उद्देश्य सब प्रकार की विशेषाधिकारों और अधिकारों की समाप्ति जागीरदारों की अदालतों की समाप्ति जनसाधारण को पूर्व दासता की याद दिलाने वाले नार सामन्तशाही अधिकारों को नष्ट करना बिना किसी प्रकार के भेदभाव के सब सम्पत्तियों और सब नागरिकों पर एक समान राष्ट्र के कर्तव्यों का लगाना और प्राप्त करना था। ममस्त नागरिकों को अपनी योग्यता पर भरोसा और अवसर के अनुसार राज्य के सब पदों को प्राप्त करने का अधिकार देना था। (Mind of Napoleon p 65)।

(२) दूषित शासन प्रणाली (Rotten Administrative System)—फ्रांस का न्यायिक अधिकार दूसरा कारण देण की दूषित शासन प्रणाली थी। सत्राट दश का स्वामी था और वह स्वच्छानुसार राज्य करता था। लुई चौदहवें के अनुसार सम्पूर्ण प्रभुत्व का अधिकार मुझ निहित है कानून बनाने की शक्ति बवल मुझ में है मेरी प्रजा केवल मेरे साथ है मेरे राष्ट्रीय अधिकार और राष्ट्रीय हित सिद्धान्त रूप से मेरे द्वारा मरहीत हैं तथा मेरे ही हाथों में हैं। इस प्रकार की प्रणाली जिस प्रकार दश हो सकती थी! आश्चर्य नहीं कि जनसाधारण का जीवन उस समय दुःसमय था। सत्राट दश के विभिन्न प्रदेशों का दौरा करने नहीं जाता था। परिणामतः उसका प्रजा से सम्पर्क टूट गया था। उसे लागू के दुःख और आकाशात्मा का कोई ज्ञान नहीं था। सत्राट का मारा ध्यान राजधानी पर केंद्रित रहता था जहाँ राज दरबार की चहल-पहल में नागरिकों के लिए सामन्तों का भाव जुड़ी रहती थी। लुई चौदहवें के शासन में राज्य का नाश पर उमका रखना (mistresses) का प्रभाव था। लुई सत्राट के शासनकाल में सत्राट मेरा एनगर्इनिट राजकाज में सम्मिलित करता था। कहा जाता था कि राजदरबार राष्ट्र की बन्न बन गया है।

वर्साइ के दवाब में एक हजार व्यक्तिगता का अमना था जिनमें से १६ हजार मन्त्रालयों और उनके परिवार की सेवा में रहते थे। यह दा हजार दरबारी थे जो निरन्तर विनामिता में खड़े रहते थे और मन्त्रालय से कृपा प्राप्त करके अपने घरों को आनामाद करने में व्यस्त रहते रहते थे। महत्वा के निवासी अपने दा दवताओं के प्रिय मममन थे। मन्त्रालय मन्त्रालयों गाड़ी बालक भाद आर वहिन तथा मन्त्रालय के अय मन्दापिया के अना अदग नोतर चाकर थे। कहा जाता है कि महारानी के निजी ५०० सेवक थे। उन्नीस सौ घाटा और दा भी गाडियों से भी अधिक गाडियाँ शाही सुहसाद में थीं जिनका वार्षिक खर्च लगभग चार करोड़ उत्तर था। राज्य की मज की कीमत ही ११ लाख डालर से अधिक थी। फ्रान्स की क्रांति के पूर्व इस महान् अपव्यय का अनुमान २० करोड़ डालर प्रतिवर्ष लगाया जाता है।^१

दश की शासन प्रणाली धार अमतापजनक थी। प्रशासन के अनेक विभागा का कार्य अथवा अधिकार-क्षेत्र निधारित नहीं था। विभिन्न अवसरों पर फ्रांस का जिलों में बाँटा गया और अधिकारी नियुक्त किये गए। ये अधिकारी नाममात्र के थे। राज्यपालों के अधिकार में सूबे भी थे, जिन्हें उन्होंने जाय-क्षेत्र गिना-अन तथा धार्मिक क्षेत्रों में बाँटे रखा था। इस प्रकार काय और अधिकार-क्षेत्रों के परस्पर उल्लंघन के कारण भी लोगों का कष्ट अधिक हुआ था।

याय प्रणाली भी बड़ी मय्यदस्थित थी। समस्त देश में एक समान कानून नहीं था। देश के भिन्न-भिन्न भागों में अलग-अलग कानून लागू थे। यदि एक स्थान पर जर्मन कानून लागू था तो दूसरे स्थान पर रोमन कानून का प्रचलन था। अनुमान है कि देश में लगभग चार-सौ याय प्रणालियाँ प्रचलित थीं। याय-महिता लेटिन भाषा (Latin) में लिखी हुई थीं इसलिए उन साधारण उस समझ ही नहीं सकते थे। कानून निदय यायहीन थे और साधारण से अपराध पर कठोर से कठोर दण्ड दिया जाता था। शारीरिक यातना दण्ड का मुख्य अंग था। चक्र के नीचे

१ प्रो० साल्वेदिना के मतानुसार 'उन्नीस सौ वर्षों का यह एक ऐसा नहीं था कि उनका कितना कार्य था और कितने लोगों की सेवा में रहते थे। एक दशक में यह अपना शान्त विच्छेद समझता था कि यह उसे विपदा पर विचार करने का वस्तु था कि वह कृपा की दृष्टि व्यक्त था। इससे किट से समझना एक ही शक्ति व नीति का वान था, जबकि धन व्यय करना उनका अपना। सूर्य सालहवेन के मतानुसार किट से कहा, मरने पर दण्ड मानी, यह बताया जाता है कि आगे उपर वह मारा गया है।' इस पर सुनान ने एक व्यक्त का उत्तर दिया 'मैं अपने एक में पूरुणाद करूँगा और उसका हिस्सा बनकर अपने मरने पर दण्ड करूँगा।'

"सामयिकी है कि व फ्रांस में अतः य। उन्नीस सौ वर्षों का अनुमान है कि उनका कार्य १००००० मन्त्रालयों का कार्य था। उन्नीस सौ वर्षों का अनुमान है कि उनका कार्य १००००० मन्त्रालयों का कार्य था। उन्नीस सौ वर्षों का अनुमान है कि उनका कार्य १००००० मन्त्रालयों का कार्य था। उन्नीस सौ वर्षों का अनुमान है कि उनका कार्य १००००० मन्त्रालयों का कार्य था। उन्नीस सौ वर्षों का अनुमान है कि उनका कार्य १००००० मन्त्रालयों का कार्य था। (The French Revolution, pp 20-21)

पीस कर हड़िया तो देना अर्थात् या या बान कटवा दना भी दण्ड थे। दुग म कोई निभमित दण्ड विधान नहीं था। प्रभावशाली व्यक्ति के इगार पर किसी भी व्यक्ति को कदम डाल दिया जाता था। इसके लिए एक आना पत्र (Lettre de Cachet) ही किसी को अनन्त काल तक बिना मुकदमा चलाय कदवान म डाल रखने के लिय पर्याप्त था। वही प्रत्यक्षीकरण आना का कोई विधान नहा था। बोलटयर और मिराबा उस महान् व्यक्तियों को भी अथ साधारण व्यक्तियों के समान कद कर दिया गया था। अथवस्था बवल याय प्रणाली म ही नहा अपितु यायालयो म भी थी। फ्रांस म शाहा कचहरी सनिय कचहरी, आधिक कचहरी तथा धर्मन्यायालय थ। इन अनेक प्रकार के यायालयो के काय और अधिकार-क्षेत्र के उलभे हान के कारण भी प्रजा का अवस्य ही कष्ट रहा होगा। फ्रांस म एक और अन्धुन परिपाटी थी जिस Noblesse de la robe अथान् चागे वाले सामन्त कहा जाता था। ये लोग जावन भर के लिए यायागीग होने थे। इनके पद बेच और खराद जाने थे। क्याकि ये नाम अथन पत्र खरीदत थ ये बडे बड जुमान करके अथनी जवे भरत थ। इनकी सभ्या तगभा पचाम हजार थी। यह वग निदिचत रूप से समाज के लिय अभिगाप था। मूलत यह याय के मिद्धाता का भुटला देता था। भिन्न-भिन्न प्रदगा म भार और माप के अलग अलग नाम और दाम थ। इनके मानदण्ड का अंतर एक गात्र म दूनर गांव जान पर ही लग जाता था।

अथ प्रातिन के समग फ्रांस की सना म ३५ ००० अफसर थे जिसम ११७१ जन्म थ और १२५ ००० तिपाही। अफसरो पर ८ मिलियन बापिय का खच हाता था यद्यपि बवल १ ००० ही सचष्ट मूषी पर थ। भारी सना का अथ कुल ६६ मिलियन के बराबर था।

नाथन और नाथने या चागा के विभिन्न प्रांता म विभिन्न नाम और विभिन्न मूल्य थ। कभी कभी यथ अममानता अथन म तथ था आती ना जवकि कोई एन ग्राम म अथ नाम का जाना था।

फ्रांस म Parlements अथ जान वाले यायालय बडे प्राचीन यायालय थे और ये छाट यायालयो के निगम पर पुनर्विचार करत थ। अठारहवीं शताब्दी के सन्तानि नाथ म फ्रांस म ६६ प्रशासक १ यायालय थ। प्रत्येक न्यायालय मानागर याथागाता का सथ म जितर वगायिकास धीरे धागे वगानुगत उत्तराधिकारी हाने थ थ।

प्रातिनैट यायालयो का कुछ राजननिक अधिकार भा दिय हुए थे। इहे गाही अथान् मी अतिरिक्ता का तथबड करन के अधिकार प्राप्त थ। वे इन आनाओ का तथबड करन म अर करके मअ्राण पर दवान डाल सकत थ। एक अवितागाली नाथ उनम गीर प्रकार नियत सकता था किन्तु दुभाग्य से लुई चौदहवें के याद फ्रांस म काय याय मअ्राण ना हुआ। १७७१ म लुई पन्धहवें ने इन न्यायालयो का ममअण कर दिया किन्तु १७७६ म लुई यायन्वें इहे पुन खानू कर दिया। ये यायालय म प्रशासक दूनरी बाय स्थापित हाके गाहा मन्त्रियों को तग करन की तथा

आर्थिक सुधारों में हेरफेर करने की स्थिति में हो गया तथा साधन-साधन के अपने आपकी जनता के अधिकारों और स्वतंत्रता के रक्षक घोषित करने में।

फ्रांस के कुछ राज्यों में प्रतिनिधि प्रादेशिक सभाओं में जिनकी बैठकें नियत समय के पश्चात् हुआ करती थी। ये सभाओं न्यायिक प्रशासन के उत्तरदायित्व का कर्तव्य सन्धार के प्रतिनिधियों में भिन्न-भिन्न निवाहती थी। यह कुछ आर्थिक सुविधाओं प्राप्त थीं कि वह सुधारवादी अथवा मध्यम के विस्तृत सफलता में वचाय रखते थे। यह नये करों की अदायगी करने में यह छूट थी कि वे एक नियत राशि वार्षिक अनुमान के रूप में दे सकते थे। परिणामतः वे पूर्ण कर देने में बच जाते थे। राज्य के करों का अनुमान तथा वसूली का कार्य उन प्रादेशिक सभाओं के पदाधिकारियों का सौंपा हुआ था। स्थानीय व्यय के लिए विनोद कर लगाय जाते थे। ये सभाएं जागीरदारों अथवा धर्माचार्यों के नियंत्रण में थीं और इनका रुढ़िवादी तथा प्रति-क्रियावादी होना स्वाभाविक था। वे एक किन्हीं सुधारों का जिम्मा उनके विनोद अधिकारों का चाहे पड़े पर नहीं करते थे।

करों की उगाही का प्रबंध अत्यन्त दुरुष्ण था। राज्य अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से राजस्व का वसूली नहीं करता था यह अधिकार सबसे ऊँची बानी देने वाले का दिया जाता था। परिणामतः टैक्सदार राज्य को एक नियत राशि देकर प्रजा से जितना धन वे छेड़ सकते वसूल करते थे। यद्यपि प्रजा का शासन होता था ता भी सन्धार का कोई लाभ नहीं था। कर लगान की प्रणाली बहुत गदी थी। इससे देश में अत्याचार और दमन बढ़ गया। सामन्त जागीरदारों और धर्माचार्यों द्वारा कर न देने के कारण मार्ग भार गरीब सवहाग-वग पर ही पड़ता जिन्के कारण जनता में बढ़ा असन्तोष था। फ्रांस के समूचे शासन-यंत्र की सफाई की बड़ी आवश्यकता थी।

(३) लुई चौदहवें के उत्तराधिकारी (Successors of Louis XIV)—



लुई चौदहवें

क्रान्ति का एक कारण युद्ध चौहवें व उत्तराधिकारिया का अयाग्य हाना भी था । इस विनासी सम्राट न अपने उत्तराधिकारिया के लिए आर्थिक विवाहियापन की स्थिति विरामत में छोटी । कहा जाता है कि मृत्यु गव्या पर पड़े हुए लुई न अपने प्रपौत्र लुई पंद्रहवें का यह उपदेश दिया कि मेरे वरुच अपने पडोमिया व साथ गान्ति से रहने का प्रयत्न करना मर युद्ध करा व गोक की अथवा मर अपव्यय की नकल मत करना । प्रजा का गीध्रान्तिगीत्र छुटकारा देने का प्रयत्न वरुके वह काय कर लिखाना जा में पूरा करने में अममथ रहा । यह प्रसिद्ध है कि यह विल्कुल व्यय रहा और उमन जागा को सुख न की अपभा उन पर युद्ध और विलासिता के कारण अधिक कठिनाय्या जा दा । वह कहा करता था मेरे बाद प्रलय हागी ।

लुई पंद्रहव व शासन क विषय में परिस में आस्ट्रिया के राजतूत वाम्टे डे



लुई पंद्रहवा

भर्मी ने मन्त्रानी मेरिया थेरसा को लिखा ' दरवार में आयाय गन्वड और दुप्यायों के अतिशय और कुछ नहीं है। प्रशासन के अच्छे मिद्वान्ता का पालन करन का कोई प्रयत्न नहीं किया जा रहा है। प्रत्येक चीज भाग्य पर छोटी हुई है। राष्ट्रीय विषयों की अपमानजनक दशा ने अत्रणनीय घणा और इतोत्साहिता का फल दिया है जबकि उन नागा की चानबाजिया जा मौजूद रहते ह, कबल अव्यवस्था फरानी है। पवित्र कार्यों का त्रिमात्मकता नहीं मिलती जबकि अपमानपूर्ण आचरण का महान किया जाता है। '

10 जी० पी० गृच व मतानुमार लुई पंद्रहवें ने अपन दंगवामिया को एक कुणामित अमृतुष्ट और निराशाग्रस्त फ्रांस बसीयन म दिया। दूर में देखन पर प्राचीन गामन-व्यवस्था एसी ठोम मालूम होती थी जमे वम्टाइल, किन्तु भरममत न हाने के कारण हमन्नी दीवारें गिर रही थी और नीवें हटत जान के चिह्न छोड रही थी। निरकुण राजतत्र विनोपाधिकारी मामतवग, अहिष्णु चच कलाज कारपा-रेगन, पार्लियामेटम ननी अनाकप्रिय हा चुकी थी और सना, जो कभी फ्रांस की गान थी भी रामवाग क पतन स पतिन हा चुकी थी। यद्यपि गणराज्यवाद का तनिक विचार था, राजतत्र की मर्यादा लगभग उड चुकी थी।

(Louis XV The Monarchy in Decline, p 244)

लुई मालहर्वा (१७७४ ६३) बीस बप की आयु मे मन्नाट बना। परिस्थितियों का संभालने मे उसकी असमयता और विवशता का अनुमान उसके ही शब्दों स लगाया जा सकता है कि, ' एसा प्रतीत हाता है कि दुनिया मेरे ऊपर गिर रही है। हे भगवान् ' मुझ पर कितना बोझ है और इहोंने मुझे कोई भी गिफ्त नहीं दी। ' गर्मीला और भेपू होने के कारण वह मसद की बठको की अध्यक्षता भी नहीं कर सकता था। वह आलसी और कम शकन था। ताले बनाना आर महल की खिडकी से हिरना का शिबार करना उसके मनारजन के साधन थ। भले ही वह एक अच्छा नागरिक होता किन्तु उस समय जब उसके देग क सामने गम्भीर कठिनाइयां थी, वह राजा हाने के विल्वुल अयाग्य था। एक ममकानोन लेखक का लेख है कि "कोई भी उन पर विश्वास नहीं करता क्याकि उसम आत्म विश्वास है ही नहीं। उसे शासन-बला से तनिक भी दिलचस्पी नहीं थी। यह तथ्य मनिगवम (Malesherbes) का त्यागपत्र स्वीकार करते समय लुई के शब्दों स प्रकट होता है कि "तुम बडे भाग्य-शाली हा। बाग में भी त्यागपत्र दे सकता ! ' -

मेरी एनटाईनिट (Marie Antoinette) (१७५५ ६३)—मेरी एनटाईनिट फ्रांसिस्का-हर्बरी की महारानी मेरिया थिरेसा की पुत्री थी। लुई सलहर्ब्रे मे एकवा विवाह करने का उद्देश्य फ्रांसिस्का और फ्रांस म मन्त्री करा दना था। वह सुन्दर उन्नर और खचल थी। वह कुणामबुद्धि, गीघ्र निगव करन वाली तथा बटार इच्छाशक्ति वाली थी। किन्तु उममे गम्भीरता स विचार करने की तथा गुण परखने की शक्ति नहीं थी। उमने फ्रांस की प्रजा के स्वभाव का तथा समय की प्रगति का नहीं

समझा। गांधी परिवार में पदा हाने के कारण वह सवहारा-वर्ग के दृष्टिकोण को नहीं समझ पाई। वह अपव्ययी घमण्डी जिद्दी भ्रमयमी तथा विलास प्रिय थी। उसने वस्तु-मी गलतियाँ की जिसके कारण फ्रांस की प्रजा उसमें घृणा करने लगी। सप्त वर्षीय युद्ध में वह फ्रांस के अपमान का जीवित प्रतीक थी। वह लोगों की व्यक्तियों का चित्र थी जो सब प्रकार के सुधारों के विरोधी थे।

उसके सगे भ्राता सम्राट जोर्ज द्वितीय ने मेरी एनटाईनिट के विषय में कहा है 'मेरी प्रिय बहिन मैं निस्मवाचता के साथ कहता हूँ जिसके लिए मैं तुम्हारे प्रति अपने स्नेह तथा तुम्हारे कल्याण में अपनी रुचि के लिए अधिकारी हूँ। जा मैंने सुना है तुम अपने बड़ी समस्याओं में अपने को ग्रस्त कर रही हो जिनसे तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं है और जिनके बारे में तुम्हें कोई ज्ञान नहीं। चानवाज और चापलूस व्यक्तियों से घिरी हो जो तुम्हारे हृदय में केवल अहंकार और घमकने की इच्छा ही का नष्ट जाग्रत करते हैं वरत उनसे ईर्ष्या और दुर्भावना उत्पन्न होती है। ऐसा आचरण तुम्हारी प्रसन्नता पर बुरा प्रभाव डाल सकता है और आगे या पीछे तुम्हारे और राजा के बीच गम्भीर परेशानी उत्पन्न कर सकता है जिससे उसका तुम्हारे प्रति मान व प्यार घटेगा और जनता के प्रति प्रेम को भी कम करेगा। मेरी प्रिय बहिन तुम मंत्रियों को उनके पदा से हटाने में एक को निजालने और उसकी जगह दूसरे का नेम में यह देखने में कि तुम्हारा मित्र किसी मुकद्दमे में जीते या कोट की ओर से कोई नयी और अपव्ययी नियुक्ति कराने में सन्धि में विषयों पर इस तरह विवाद करने में जो तुम्हारी स्थिति के अनुकूल नहीं अपना प्रयोग क्या करती हो? क्या तुमने कभी यह भी सोचा कि फ्रांस की सरकार या राजतंत्र के विषयों में हस्तक्षेप करने का तुम्हें क्या अधिकार है? तुमने क्या अध्ययन किया है तुमने क्या ज्ञान प्राप्त किया है जिससे तुम अपनी राय का महत्त्व देती हो विशेषकर ऐसे मामलों में जिनके लिए विनाश अनुभव की आवश्यकता है। एक आवश्यक युवा स्त्री की तरह तुम केवल अपव्ययिता के विषय में अपने शृङ्गार के विषय में अपने मनोरंजन के विषय में मोचनी हो जो न पुस्तकें पढ़ें न एक मिनट में दस मिनट से ज्यादा किसी गम्भीर बात का सुने जो कभी सोच विचार न करे न कभी यह सोचे कि किये हुए काम का क्या हुआ है या क्या परिणाम होगा? तुम केवल शक्ति के आदेशों के साथ काम करती हो जिसे तुम्हारा विश्वसनीय परामर्श नहीं करके रहने है। एक मित्र के परामर्श का सुनो यह सारी बातें वास्तविकताओं का दो मावजनिक विषयों में करने का हटा लो और केवल राजा के स्नेह और विवाह पान के चोप्य हान की आशा ध्यान करा। आप के हनु कुछ अध्ययन किया करो अपने मस्तिष्क का ऊंचा बना। सबसे बड़ी बात यह है कि प्रत्येक स्त्री का अपने निजी घर में यही काम होता है।

(४) फ्रांस के दार्शनिक (French Philosophers)—फ्रांस की प्रगति का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण दार्शनिकों का उत्पन्न भाष्य। मॉण्टेस्क्यू, वॉल्टेयर और

उसका उम्र काल के बौद्धिक महामानव थे, माण्टेस्क्यू (१६८९-१७५५) एक सिप्ट और प्रसिद्ध वकील था। यह इतिहास का विद्वान् गम्भीर तीव्र मानव-समाज का गम्भीर विद्यार्थी था। उसकी लेखन-शैली तीखी और चुभन वाली थी। उसके लेख केवल काल्पनिक नहीं अपितु गम्भीर और युक्ति युक्त विचारों का परिणाम थे। इनमें गम्भीरता, उच्च विचार, वैज्ञानिक विश्लेषण तथा नम्र भाषा होती थी। उसने एक दार्शनिकता का आन्दान चलाया तथा व्यय और आलोचना का सहारा लेकर प्राचीन शासन प्रणाली (Ancien Regime) पर इतनी तीव्रता से आक्रमण किया कि शासन की नींव हिल गई। वह वैज्ञानिक प्रणाली की सत्कार का समर्थक था और कानून की सर्वसत्ता में विश्वास रखता था। उसका मत था कि मनुष्य के विभाजन के बिना स्वतंत्रता असम्भव है। वैज्ञानिक याचिका तथा क्रियात्मक अधिकार आवश्यक रूप से



माण्टेस्क्यू

भिन्न भिन्न शक्तियों में बँटे होने चाहिए तभी जनता को स्वतंत्रता प्राप्त होगी। इन तीनों प्रकार के अधिकारों में किसी दो अथवा तीनों का एक ही शक्ति के हाथ में होना एक परिणामस्वरूप असाधारण बड़का अपराध है। माण्टेस्क्यू ने शासन यंत्र का नियंत्रण करने वाले सिद्धांतों का विश्लेषण करके फ्रांस की शासन प्रणाली के प्रति आवश्यक पूर्ण प्रतिष्ठा का समर्थन कर दिया।

उसका महाद्वय विधि की श्रारता (Spirit of the Laws) जो बीस वर्ष के परिश्रम का परिणाम था १७४८ में प्रकाशित हुआ। कहा जाता है कि अठारहवीं शताब्दी में इसके बार्डम मस्तरण निश्चये। यह राजनीति शास्त्र का अध्ययन था जिसमें भिन्न प्रकार की शासन की प्रणालियों की विवेचना थी। प्रचलित प्रणालियों और परिस्थितियों में दैनिक आचरण का उद्धार कर उनमें नया बनस्पति साम्प्रदाय की तरफ विचारण किया।

श्री० माण्टेस्क्यू के मतानुसार, 'रिपब्लिक ऑफ दि लॉ' में निश्चित जनता में वधानिक और राजनीतिक अध्ययन के विषय में एक अभिरुचि उत्पन्न करने की समस्त विधियाँ का माहियत क्षेत्र में समान शक्ति और अन्तर्गत शक्ति शक्तियों की अथवा समान वैज्ञानिक व दार्शनिक माहियत प्रथम का एक ऐसा वातावरण उत्पन्न करने में सहायता प्रदान का विद्यमान अठारहवीं शताब्दी में शक्तिकारी सिद्धांतों का जनत-जनन के योग्य बनना। (The French Revolution, p. 11)

हमारा महापुरुष वाग्नेर (१६६४-१७७८) था। गद्य पद्य इतिहास नाटक, उपयोग का माध्यम से उसने दंग का परिपाटिया विद्वत्ता और अनाचारा की



वाल्टेयर

श्रुतिया और बेवकूफिया में फेंके हुए हैं इसलिए हम एक-दूसरे का अपनी बेवकूफियों के लिए क्षमा कर देना चाहिये। भगवान् की पूजा करो और अच्छे आदमी बनो। इन साहित्यिक गुणों के कारण वाग्नेर के ग्रंथों और लेखों का बहुत लोग पढ़ते थे और इसमें आश्चर्य नहीं कि अपने युग में उनका फ़ास में बड़ा प्रभाव था।

वाग्नेर यूरोप के इतिहास का महारत्न था और उसके नाम से उस युग का याद किया जाता है। हम वाग्नेर युग के विषय में उसी प्रकार चर्चा करते हैं जिस प्रकार मूरर और इगम्मस के युग का याद करते हैं। उस बादशाह वाग्नेर के नाम से पुरारा जाता था। किन्तु वाग्नेर प्राणवश वह विश्व के इतिहास में नाम ले गया। वह मर जावन भर एक यादों रहा। वह जिन में बदल की तरह मरता और जिन में अज्ञानियों का तरह दमना। वह कभी धकता नहीं था। वह बड़ा शिष्ट और मना हा अज्ञान मनाह दन वाला रहा। वह अत्याचार को किसी भी रूप में प्रचार में मरना नया करना था। वह दरिद्रों की खातिर सघन के लिए सबदा तनार रहा था। वह अज्ञान-नामनाहा नामन का समयक था तथा प्रजातन्त्र से उस

आलाचना की। उसने निदयता से इनकी श्रुतिया का नगा कर दिया। वह इनकी मूलताओं का उपहास करता था। 'उसकी दुःख और बहुमुनी हाजिर जनायी सूक्ष्म व्यंग्य बिना हिचक आलाचना उनके जीवन के गूने अध्ययन का देगामिया के मस्तिष्क पर बहुत गहरा प्रभाव था। उसने दार्शनिक आन्दोलन का जन-साधारण तक पहुँचाया। उसमें स्वयं कई कमियाँ थी और उसकी रुचियों में भी दाप थ फिर भी उसने अपने देशवासियों को मूल्यता से पृष्ठा करना और बुरा श्या में बचना सिखाया। फ्रांस का चर्च उसके खण्डन का मुख्य लक्ष्य था। उसने ईसाइया की धमाधता और रुढ़िवाद पर कठोर आक्रमण किया और धार्मिक सहिष्णुता का समयन किया। क्योंकि हम सब

फ्रांस क्रांति के कारण

कोई जगाव नहा था। वन बहा करता था 'मुझे एक मित्र का नामन अनन्त बूढ़ो व राज्य मे अन्धता लगता है।

फ्रांस के जिम दार्मिन्क का प्रभाव सबसे अधिक था वह था रूसो (१७१२-१७७८)। उमे भूतकान का अध्ययन और विद्वलेपण पमद नहीं था। उमे विद्या और

बला के प्रचार म आई र्विच नहीं थी। उमके मनानुमार अघ्ययन नान और मस्ठनि मनुष्य को गिरा देती हैं। सब समाज बनावटी ह। राजनीति के मय प्रकार अत्याचारी और बुर हैं। मनुष्य स्वतन्त्र पैदा हाकर भी सबत्र दासता में जकडा दिवाई पहना है। समाज का बानावरण मनुष्य की प्राकृतिक स्वच्छता को नष्ट कर देता है। उसके गुणा का मया बरके उमक माने पापा और दुखा का उत्तरदायी है। आदर्य नहा कि रमान जन-साधारण म धूपील की, 'समाज के बनावनी बाँचे का, गदी इच्छायी और यातना-



रूसो

पूण धन मे भर समार को व्यवस्था के नाम म पुवारे जाने वाले अत्याचार का नाम बहे जान वाने धनान को, उलाह पेंका। इसके नाम को समाल कर दा और रूसकी कर दो इसके धनान का विरोध करो, इसके नाम को मादि बाल को मादगी धनानले दो जय नामना की वैदियाँ तोड डालो। मनुष्या को मादि बाल को मादगी धनानी से, जमा प्राकृतिक स्वभाव ही उन पर शासन करते थे, जब वे धनोय और धनानी से, जमा प्रकृति ने उन्हें बनाया था, और उन्हें धनर दविक मादगी द्वारा प्रेरित तक के गहरा जीवन के उच्च मादशा को प्राप्त करने दो।"

धामे, क्या हमारे समाज म सारे नाम केवन धनी और सत्ताधारी के लिए मुरात नहा है? क्या सारी चित्ताकषय मेमार्थे केवल उही के लिए नहा है? क्या मारे लोक अधिकाारी केवन उही की सवा-तु नहीं है? यदि एक प्रभावशाली व्यक्ति धन साहूकारा को धोना देता है या धन दुष्टतापूण काम करता है तो क्या उसे बानून के सम्मूय विरोध उमुकिन नहीं मिल सवनी? यदि वह हिमा या हया का दापी है तो क्या माग मामना गान नहीं कर दिया जाता और छ महीना व बाद कोई त्रिभ तक नहीं होना? लेकिन जय हमी व्यक्ति का तू लिया जाता है, वों मारी

पुनिम चल पडतीं हे और उस निर्दोष का सताया जाता है जिस पर सग्य किया जाता है। यदि हम धनी व्यक्ति का किसी भयानक स्थान से गुजरना पडे ता उन विंगल मरक्षण दल लिया जाता है। यदि उसकी गाडी का घुटा टूट जाव ता सारे लोग उसका सहायता के लिए भाग पडते है। यदि उसके द्वार पर शोर हा ता उमके एक गेट पर सनाटा छा जाता है। यदि उसके द्वार पर कोई गाडीचालक रव जाव तो उमके नौकर उस पर भार की वर्षा करते है। इन सुविधाया का उसे कुछ दना नही पता क्योकि धनी लोगा को इन छोटी-मोटी चीजो का प्रयोग करने के लिए अपने धन को व्यय करने की आवश्यकता नही। सकिन गरीब व्यक्ति का दृश्य कितना भिन्न है। समाज जितनी अधिक दया उसे देता है उसे वह उतना ही कम पाता है। उमके लिए सारे द्वार बन्द रहते है जबकि उहे खुला रखना उसके अधिकार म है। यदि माग म एक वार भी वाय लेने की आवश्यकता पडे तो भय लोगा की अपेक्षा इस कृपा को पा की उसे बहुत ज्यादा कोशिश करनी पडती है। यदि किराय की गाडी मगाना हा या सनिक टक्स वसूल करना हो तो सबसे पहले उसे ही लिया जाता है। उम केवल अपने ही भार नही उठाने पडते वरन् वे भी उठाने पडते है जो उमके पडोसी उमकी पीठ पर लाद देते है। यदि वह किसी दुषटना का शिकार हो जाव ता सभी उसे उसके भाग्य पर छोड देते है। यदि उसकी गाडी उलट जाव तो वह सामंत के नौकरो के उस अपमान से नही बच सकता जो जल्दी से पास से निकलना चाहते है। आवश्यकता के समय सारी नि शुल्क सहायता स वह वचित रहता है क्योकि उमम उसे भ्रदा करने की क्षमता नही। और उस पर और भी अधिक दुःख पडता है यदि दुभाग्यवत उसकी भारमा शुद्ध है उमके पास एक सुंदर पुत्री या मनापारी पडामो है उसे हानि उठानी पडती है। कुछ शब्दो मे हम दोना वर्गो के बीच सामाजिक सम्बन्धा को इस प्रकार रख सकते है तुम्हें मेरी आवश्यकता है क्योकि तुम धनी हा और मैं निम्न हूँ इसलिए हम आपस मे एक समझौता करे मैं मे तुम्हें अपनी सेवा करन की आना दूंगा यदि तुम्हें आजाए देने म मुझे जो कष्ट हांग उमके वल्ल म तुम मुझे वह सब दोने ता तुम्हार पास है।

हमो न उम प्राकृतिक राज्य की कल्पना की है जिसम लोग सदाचारी मन्तन घोर स्वतन्त्र थे। उमन इम वात का विवचना की है कि सामाजिक समझौते (Social Contract) म किस प्रकार राज्य का उत्पत्ति होती है और प्रकृति का राज्य समाप्त हो जाता है। उमन जनता का सर्वाधिकार-सम्पन्ना व मिद्वान्त का प्रतिपादन किया प्र उके दर्शन उम सम्पन्ना का अधिराग था। क्योकि मवाधिकार जनता म निहित है काइ नो सरकार अथवा राजा जन इम अधिकार का नही छीन सकता है। प्रजा का सरकार व विच्छ विच्छ करन का अधिनार है। ह्या वतमान का भारत मायनामा का विरोधा था और हम प्रकार हन्का नाव पर आघात करता था। उमके मन्त्र न मार्गो पर वग म्पायी प्रभाव हावा। उमन म्पान्ना व प्रति लाग म उरला नो दंग किया। उमके सामाजिक समझौता (Social Contract) मिद्वान्त न प्रति का ह्पार किया घोर हमका भाग का मुमताया। यह मिद्वान्त जकारिन (Jean-Jacques Rousseau) दल का मूनमत्र बना और हम मन का मुख्य प्रचारक रावस्परी (Robes

pierre) बना। साठ मारले ने रूसी के प्रभाव का अनुमान इन गानों में बताया है 'प्रथम उमन शब्द कह जिह वापन नहीं लोटाया जा सकता, तथा इनसे वह आशा का दीप जलाया गया जिसे कभी भी बुझाया नहीं जा सकता। पहले उमने जन माधारण का तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था की बुराइयों का ज्ञान कराया, सभ्यता की महानता का मानव समाज के एक वस्तुतः बड़ अग्र क लिए नगण्य बना दिया। दूसर अपनी प्रभावशाली वाणी और तेजस्वी धारणाओं से अमर्य मनुष्या के हृदय में व भाव जगाय और फ्रांस में इतनी शक्ति फूँक दी और निद्रित अवस्था से जगाया जा मृत्यु की तरह मारे देण के जीवन पर छाई जा रही थी।'

प्रो० हेज़न (Hazen) के शब्दों में, 'प्राप्ति दासनिता के कारण नहीं हुई अपितु राष्ट्रीय जीवन की बुराइयाँ परिस्थितियों तथा सरकार की भ्रष्टियाँ के कारण हुईं। कुछ भी हाँ य विद्वान् प्राप्ति का एक निमित्त थे, क्योंकि उन्होंने प्राप्ति के नेताओं के एक गुट को शिक्षित किया, उनमें कुछ गहन मिद्वान्तों को जमाया, उन्हें वाक्याँ मिद्वान्ता और तर्कों का दिया उन्हें कुछ शक्तिशाली विचार प्रदान किए और इस प्रकार की आशा दिखलाई जो इस सार अर्थ से प्रकट है। यद्यपि उन्होंने प्राप्ति नहीं की किन्तु उन्होंने इसके कारणों का विद्वत्तापूर्ण रूप में नगा कर दिया उनका सारा ध्यान उन पर आकर्षित किया, इन पर विवाद करने पर बाध्य किया और उनकी धना को जगाया।'

एन तीन महापुरुषों के अतिरिक्त अग्र छोटे-छोटे विचारक भी थे और क्योंकि उनके लेखों ने भी लोगों के विचारों को प्रभावित किया उनका उल्लेख भी आवश्यक है। डिडेरोट (Diderot) उस विश्व ज्ञान काप (Encyclopaedia) का सम्पादक था, जिसमें अनेक लेखकों ने लेख दिए थे। उसके विचार मौलिक थे। वह चतुर वादक में मवाचहीन और महान विचारक तथा अदभुत और कल्पनाशील व्यक्ति था। उसमें लोगों का अपने विचारों का समर्थन बनाने की महान् आकर्षण शक्ति अग्र अग्रगण्य गणनी थी। मानव समाज की उत्थिति करने की उसे बड़ी तीव्र लगन थी।

हेल्वेत्सियस (Helvetius) ने इस मिद्वान्त का प्रतिपादन किया कि स्वायत्त हाँ मनुष्यों के विचारों और चरित्रों का बनाना है और आनन्द की प्राप्ति ही उनका अन्तम उद्देश्य है।

१) प्रो० सल्लेविना के मतानुसार, 'रूसी को अराजक प्राप्तिकारी नहीं था। यदि वह प्राप्ति के समय तक जाचित रहता, तो वह अपना शिक्षणों को लागू किये जाने का रास्ता दरकर या ठो दिना का भवका खाकर मर जाता या अपना गुना घोट लता। फिर भी उस अत्याचारपूर्ण और पतनशाल मन्त्र में, जहाँ सभी अमनुष्ट थे और विद्रोह को मिद्व करने के लिए अत्यन्त प्रयत्न का जा सकती थी, यह स्वाभाविक था कि साक्षरों के विषय में रूसी की राय गुप्त रूप से निरूपण जाता और एक उद्यम सभार के लिए उनको शब्दात्मक व धन के विभाषिकारों के विरुद्ध उनका कड़ा विरोध और समानता के लिए प्रेम तथा समानता पर प्रणामक श्रेण में भरपूर उम्के पृष्ठ अधिक अग्र में प्रशमित होने चाहिए। ज्यों ही लोगों का अपना अराजकता अस्थाओं में विश्वास समाप्त हो गया और नागरिक विरोधकारमल बनों तथा राजा के विरुद्ध अत्याचारपूर्ण मय के लिए तैयार हो गए, तो रूसी का लोकराज्य सत्ता का मन्व प्राप्ति में सभार का नारा बन गया।' (The French Revolution pp 78—79)

हालबच (Holbach) ने राजाशा का दुर्बलत्व और जनता का दाम्पत्य का श्लाघा। उनके विचारानुसार नास्तिकता और भौतिकवाद ही जीवन के दो आधुनिक मिथ्यात्व हैं। उनके शब्दों में धर्म और राजनतिक श्रुतियाँ न मात्र ब्रह्माण्ड को एक अनुशासक के घाटी बना डालती हैं।

क्वैसनाय (Quesnai) और टुर्गोट (Turgot) जन्म व्यक्ति सुधार के समय के और इतिहास के अध्ययन का एक समय के थे। वे स्वतंत्रता के प्रतिपादक तथा व्यक्ति के अधिकारों का जन-साधारण के हितों के समक्ष पौष्टिक मानते थे। वे राष्ट्रीय शिक्षा का राष्ट्र के उत्थान के लिए प्रमुख आवश्यक वस्तु मानते थे। उनके विचारों के सार के अनुसार पर ही लगाने चाहिये क्योंकि यह राष्ट्र धन का मुख्य आधार है। वे स्वतंत्र व्यापार स्वतंत्र खेती और स्वतंत्र उद्योग के समर्थक थे किन्तु स्वतंत्रता के नियम उनके हृदय में कोई प्रथम नहीं था।

विद्रोहियों के सम्पादकों की प्रमुख दो गृह थी कि वे श्रमियों से घृणा करते थे दाम्पत्य के लगाने में श्रममानता काय प्रणाली में भ्रष्टाचार और युद्ध की उप-यागिता के धार विरोधी थे। वे सामाजिक प्रगति तथा श्रौथानिक विकास के स्वप्न-लगा करते थे।

मल्लेट (Mallet) के मतानुसार इन तान प्रतिभाशाली व्यक्तियों द्वारा बाये गये दोष उपजाऊ धरती पर पड़। फ्रांस की शक्ति के तुरन्त पहिले जा व्यवस्था थी वह पक्षि स्पष्ट नहीं थी ता भी वह धार असंतोष की छोटक थी। मानव का जन्म-जान महानता और तत्कालीन समाज के प्रति धार घणा उस युग के विचारों में ध्यान-प्रदान थी। तदनुसार यूरोपीय देशों में श्रम-सुधारों का न भावी परिवर्तन के लक्षण-रूप—वह परिवर्तन जिसका मानव-समाज के कल्याण के लिये वे स्वागत करने के लिए तैयार थे। विचारक और कर्ता दोनों ही कल्पना, उत्सुकता वि-स्वाभ-परता और श्रम-साधना में भर हुए थे। (The French Revolution)

आपाठक के विचारों में धरतः-रूपी गता-नी के विचारक उस समय की शिक्षा के व्यवस्थापक समाज का नावा का काफी समय से रक्त ही रहे थे जिसमें राज-नतिक मत्ता और धन का विनाश भाग कुलान लोगों के पादरिपा के पास था जबकि जनता नामक लोगों की लक्ष्य में भार उठाने वाले पशुओं का तरह था। विचार की प्रधान मत्ता धारित कर मानवीय स्वभाव में विश्वास का उपदेश देकर उहाँने उन सम्स्याओं के भ्रष्टाचार धारित कर दिया जिन्होंने मनुष्य के नाशका पर उलार दिया था लेकिन फिर भी वे विचारक के साथ कि यदि उन्हे स्वतंत्रता फिर से मिल गई तो वे मात्र गुण प्रदान कर लेंगे—उहाँने मानव जाति के लिये नए क्षम खाल दिए। जन्म के समर्थक के न मानकर मनुष्य के वाच-समानता का धारणा पर चाह राजा-नी का विमान प्र-दक नागरिकों में कानून के प्रति श्रान्ता-पावन का भाग के उहाँने राष्ट्र का उच्छा के अनिच्छित करने का कारण का जबकि उसका मूल-जनता के प्रतिनिधित्व न किया था अन्त में स्वतंत्र व्यक्तियों के वाच-प्रमविषय के स्वतंत्रता-रूप के और सम्पत्ता-समाज के उत्थान के उन्मूलन का मांग कर एक बार दाव

मामुन रग्य कर और उह प्रच चिन्तन की विरोधनाप्रा पद्धति व प्रणाली के नाश सम्बद्ध कर विचारका न निस्मृद्ध कम-सु-रम मनुष्यो के दिमाग म पुरान नास व पतन का तैयार कर दी थी ।

(The Great French Revolution pp 12)

प्रो० वॉमनन के अनुसार फ्रांस क दानिकी और १७८६ म हूद क्रांति के वाच बनी दूर का और परोप का सम्बन्ध ह । उहान क्रांति का उपदान नही दिया । व नाग किमी भी एम राजा की महायता करन व लिए नयार थे जा इनका मरक्षण करन और इनकी गिना मानन के लिए तयार हाता । पुन उनके समयक भी क्रांति के लिए प्रयत्नशील श्रमवा चाहन बाल नहीं थ । स्वय उनम बहुत से पूजीपति, वकील, व्यापारी स्थानीय सम्माननीय व्यक्ति थ जिनकी स्थिति श्रम लागे से कही अच्छी थी । दासनिक्ता के सिद्धान्त का प्रयोग क्रांति के समय म ही हुआ और इसका प्रयोग भी इस प्रकार क कार्यों क लिए किया गया जिह स्वय इस सिद्धांत के जन्मदाता घणा करते । उनकी शिक्षाप्रा का वात् म महत्त्व प्राप्त हुआ । यदि क्रांति के प्रारम्भ म उनका कुछ प्रभाव था ता कवन इस कारण कि उहाने तत्कालीन सारी सामाजिक व्यवस्था के प्रति एक आनाचनात्मक और खण्डनपूर्ण विचार धारा का जन्म दिया । उहाने आवश्यकता पडने पर प्राचीन व्यवस्था का गिराने क लिए जनता का तयार किया था । १७८६ म फ्रांस की जनता का जिना इच्छा व क्रांतिकारी बना देने क लिय सबसे बडा कारण उम समय की क्रांतिपूर्ण परिस्थिति थी । इस परिस्थिति का जाने क लिए दानिक सिद्धान्त का काठ महत्त्वपूर्ण भाग नही था ।

(५) आर्थिक स्थिति (Financial Condition) — फ्रांस की क्रांति का कारण तत्कालीन सरकार की आर्थिक स्थिति भी थी । यह सत्य है कि क्रांति का मूल आधार आर्थिक था और दानिकता न जा प्रवाह प्रवाहित किया उनकी मुख्य शक्ति आर्थिक थी । आर्थिक कारण ही क्रांति की वास्तविक नींव थ । हुई चौदहवें के युद्ध न फ्रांस की आर्थिक व्यवस्था का जिगाट किया था और उसकी मत्सु के समय दग की आर्थिक स्थिति श्रमत्त नाच गीय थी । यद्यपि उसने हुई पद्धत का आर्थिक स्थिति का सुधारन और युद्ध स बच रहने का उपगन दिया पर उनम इसकी उपगना की । उनने अपने महत्ता और रखना पर ही धन का अपव्यय नही किया अपितु धनेक युद्ध म भाग लेने का दुस्साहस किया । उनम पात्रण के उत्तराधिकार क युद्ध म भाग लिया । उनम आम्द्रिया क उत्तराधिकार के युद्ध म भाग लिया । सप्त-वर्षीय युद्ध म भी उसे बहुत व्यय करना पना । जिना समय युद्ध मालहवां राजसिंहामन पर बँटा फ्रांस की हालत दिवालिया हा गरी किन्तु शतन पर भा फ्रांस न अमेरिका के स्यान्थ-युद्ध म भाग लिया । यह सत्य है कि फ्रांस न १७९३-९४ के अफगान का बदना इन्ड म लिया किन्तु इस युद्ध न नागने न ग्ना की आर्थिक स्थिति बुरी तरह शनममा गई । इस वान का नही सुटगाया जा सकता कि फ्रांस द्वारा अमेरिका के स्वतंत्रता के युद्ध मे भाग लेने म उत्पन्न हुई जटिल आर्थिक स्थिति न ही फ्रांस म क्रांति उत्पन्न थी ।

गास की आर्थिक प्रणालि बनी दुर्भाग्यपूर्ण थी। देश की चालीस प्रतिशत सम्पत्ति के स्वामी जाओरगर और धमाधिकारी देग के कोप म कुछ भी नहा न्ने थे। परिणामत राजस्व का सारा भार गवहारा-बग पर ही पडता था। कमस बडी बडुता उत्पन्न हुई। राष्ट्र पर ऋण का भार बहुत ही बड गमा और यह अनुमान किया जाता है कि उस समय यह ४ ८६७४७८००० तीवर था। १-८८ म ४७२४१५५४६ के सम्म म म देग का २३६ ६६६ ६६८ तीवर वार्षिक मूँ क रूप म देना पडता था।

अनुमान किया जाता है कि पुरान गासन (Ancien Regime) का समाप्ति पर राजस्व का तीन चौथाई भाग सुरक्षा पर तथा पहल युद्ध के ऋणा का निपटान म रूच हाता था। राष्ट्र ५ वय का न्न भागी मदा को बिना देग की सुरक्षा और राष्ट्र की राजा निपटान की प्रतिष्ठा की चाट पहुँचाए घगता असम्भव था। वय म बडोती बवल नागरिक गच म हा का जा सकती थी जो १७८८ म राष्ट्र व्यय का केवल २३ प्रतिशत था। सम्राट के लर्चे म भी जो राष्ट्र-व्यय का ६ प्रतिशत था बडोता करन म काट सहायता नही मिलती थी। केवल आमूलचल परिवर्तन ही देग की स्थिति का सुधार सकता था।

१७७४ म लुई मानहर्वे न देग के वित्त मन्त्रा नियुक्त किया। दुगट प्राम के एक निरन पंग का प्रतिनिधि था। उसने प्रगतिशील अर्थशास्त्रियों के सिद्धांता का प्रयोग करन उस प्रदग को घावान बना लिया था। उसने अनुभव किया कि यदि केन्द्रीय शासन के तग की वार्षिक कमी का चलन दिया गया तो इसका परिणाम न्न को त्वात्रिया बना देगा। उसने अपने प्राप्ताम का न्न गंगे म बताया अर्थिक बजा बर अधिक कर बर और दिया-नियामन बर। उस मित-यगिता और राष्ट्र धन का बर्ण करने देग की आर्थिक स्थिति का सुधारन की आशा थी। यह बवल मेना उद्योग और वापार म स्वतन्त्रता बर हा हा सकता था। दुगट वास्तव म न्न क रूच का न्न कर का न्न की बचत करने म सफल हुआ। किन्तु इस प्रयत्न म सया कम व्यय के तग मे नान उगान वाता की गतुता मिला। उगाने मरा गनटा गित म मित कर सम्राट पर स्याव जाता कि दुगट का निवान द। यद्यपि सम्राट न यत घावपा का रि म और दुगट ही दा व्यक्ति प्रजा म प्रेम करत है फिर भी उसने वित्त मन्त्रा का १-७ ने पञ्च्युत करक अपने निण कठिनाइया का निमन्त्रण किया।

१७७६ म त्रिनका के पर गान्नार नकर (Necker) को दुगट का उत्तराधिकारी नियुक्त किया गया। नकर न सराजा म उठ कर गक्ति प्राप्त की थी। मित व्ययिता करन समय उन वरत बिगार का सामना करना पया। यह पहला व्यक्ति था किमन देग के आम-व्यय का त्वा प्रकाशित किया। इसम पूर्व यह त्वा गुप्त रखा जाता था। दरबारा गमात्र म कम समय के प्रकाशित हान के कारण बरा शाम हुआ क्योंकि इसम दन देता उग गया कि दरबारिया की वगन और न्न पर किमना व्यय हाता है। १७८१ म नकर का पञ्च्युत कर किया गया।

नकर के बाद उसका उत्तराधिकारी कैलाने (Calonne) बना। वह एक नम्र व्यक्ति था। उसका उद्देश्य सबका प्रमत्न करना था। दरबार के सदस्यों का बल अपनी इच्छा ही प्रकट करनी हाती थी और कैलान उसे पूरा कर देता। कलान का आश्चयजनक ऋण लेन का सिद्धान्त था। उसके शब्दा में 'जो व्यक्ति उधार लेना चाहे उसे धनी दिमाई देना चाहिए और धनी प्रतीत होने के लिए उस खर्च खर्च करके दूसरा की आँखें चौंधिया देनी चाहियें। उसके सिद्धांत के परिणामस्वरूप धन पानी की तरह बहाया गया। तीन वर्ष में वह ३० करोड़ डालर का ऋण प्राप्त कर मका। उसकी भूला और कार्यों का परिणाम यह हुआ कि अगस्त १७८६ तक शाही बाप बिल्कुल खाली हो गया और देश में कोई भी ऐसा मूल नहीं था जो राज्य का ऋण देता। जब कलान ने विशेषाधिकार प्राप्त और महाराज-जग दाना पर समान कर लगाने का प्रस्ताव रखा तो उसे पदच्युत कर दिया गया। सम्राट ने एक और व्यक्ति को भी कोषाध्यक्ष बना कर परखा, किन्तु वह भी आर्थिक स्थिति का दृढ़ नहीं कर पाया।

१७८७ में आर्थिक समस्या का मुलभूतने के उद्देश्य से लुई सानह्वे ने प्रमुख व्यक्तियों की एक सभा बुलाई। उसे आशा थी कि य लाग विशेषाधिकारी वर्गों पर कर लगाए जाने के लिए सहमत हो जायेंगे। किन्तु जागीरदार लोग सम्राट पर यह कृपा करने के लिए तयार नहीं थे और इसलिये यह सभा भंग कर दी गई। सम्राट ने नय ऋण उठाने का प्रयत्न किया किन्तु परिम की समद न नय ऋण व्यवस्था कर लगाने से मना कर दिया। समद न एक अधिकार घापणा तयार की जिम्मे अनुसार वधानिक रूप से आर्थिक अनुदान कचन जनता के प्रतिनिधि (Estates General) ही द मकत थ। सरकार न परिम का समद के विरुद्ध कारवाय करके इस भंग कर दिया। बड़ा गुनगपाडा मका और सनिवा न यायाधीना का कद करने से मना कर दिया। जनता की भीड़ न समद का बहाल कान का मांग की। (१६१४ १७८६) इन परिस्थितिया में सम्राट का भुक्ना पडा और १७९१ वर्ष तक समद का चुनाव करने की आशा दी। यह आशा १७८६ के फ्रांस का अग्रदूत थी।

प्रा० गुडविन के अनुसार '१७८६ की फ्रांस की शक्ति के कारण, किसानों की दुर्गति में नही, मध्यमवर्ग के राजनैतिक समताप में नही अपितु फ्रांस के प्रति-क्रियाशील सामंतवर्ग की महत्वाकांक्षाओं में लडने का कारण। यद्यपि शक्ति में राजनैतिक सत्ता की स्थापना और मध्यम वर्ग को आर्थिक व्यवस्था में सुधार देना किन्तु १७८७ से १७८८ के काल में सामंतवर्ग के बुर्बान (Bourbon) राजा राजाओं की सुधारवादी नीति का विरोध करके जिम्मे द्वारा उनके विशेषाधिकारों पर आघात होता था क्रांति की गति का बत प्रदान किया। फ्रांस १७८८ में लुई सानह्वे द्वारा १६१४ में निष्क्रिय समद के चुनाव का आशा देना सम वान का परिचायक था कि सम्राट धमाचार्यों और यायाधीना के सामूहिक निरन्तर दबाव के तत्पश्चात् मुक्त गया। विशेषाधिकार प्राप्त वर्गों का आशा थी कि समद के चुनाव प्रक्रिया परिपार्त के अनुसार वर्गों के आधार पर होने मन-मनस्था के आधार पर नहीं होगी।

श्रीर के प्रत्याशित सुधारों को राखने में सफल हो जायेंगे तथा सम्राट पर बगबल का दबाव डालकर अपनी विजय का स्थायी बना लेंगे। इस भ्रमपूर्ण अनुमान ने श्राति का सम्भावना का श्रीर भी दृढ़ बना दिया। यदि सामन्तवग सब वर्गों की श्राविक तथा राजनतिक अधिकारों की एकता का मान लेते तो उम समय श्राति सरलता से टन जाती।

फ्रांस की श्राति के सच्चे निर्माता (Real Makers of the French Revolution)—यह सवमाय है कि फ्रांस की श्राति तीसरे बग से आरम्भ हुई किन्तु इस विषय में कि इस किसानों अथवा मध्यमवग ने आरम्भ किया मत भेद है। कुछ इतिहासकारों का मत है कि फ्रांस के किसान अत्याचार से उब कर विद्रोह करने पर उताह हो गये। किन्तु प्रो० हिरेशा (Hearnshaw) इस मत से सहमत नहीं हैं। उनके मतानुसार फ्रांस के किसानों की अवस्था जर्मनी स्पन रूस और पालण्ड के किसानों से कहीं अच्छी थी। उनके दुखा का मून कारण राजनतिक अधिकारों से वंचित होना नहीं अपितु उन पर लादे गये करों का असहनीय भार था। उनमें श्राति करने के लिए बुद्धि ही नहीं वरन् शक्ति भी न थी। प्रगतिशाल मध्यमवग ही वसका वणधार था। किसान केवल इसके अनुगामी थे। मध्यमवर्गों लागा पर फ्रांस के दानिकों की विचारधारा का गहरा प्रभाव था। इसमें कोई संशय नहीं कि फ्रांस का मध्यमवग ही इस श्राति का निर्माता था।

श्राति फ्रांस में ही क्यों? (Why Revolution broke out in France?)—यह तथ्य उल्लेखनीय है कि पश्चिमी यूरोप के अधिकांश देशों में किमाना पर राजाओं की सवगिक्रमिता और अत्याचारों का प्रहार होता था। फ्रांस की जनता ही कुछ विरोध रूप से पीड़ित नहीं थी। किन्तु फिर भी श्राति पश्चिमी यूरोप के किसी अन्य देश में न होकर फ्रांस में ही हुई। इसके अनेक कारण हैं। अन्य देशों के जागीरदारों का अधिकारों के साथ कुछ कर्तव्य भी पूरे करने होते थे। वे राजा का सना में नौकरी करते तथा अपने अधिकृत प्रशासन में शांति व व्यवस्था बनाए रखते थे। फ्रांस का सामन्तवग बुरी तरह विगडा हुआ था। एक ओर उन्हें बुरा में घुट थी और दूसरी ओर उनके सार कर्तव्य सम्राट न ले रहे थे। परिणामतः अन्य देशों में सामन्तशाही एक वास्तविकता थी और फ्रांस में इसकी शक्ति पूर्ण तथा नष्ट हो गई थी। इन परिस्थितियों में राजा को उनके विरोधाधिकार चुभते थे। यह प्रणाली अव्यवस्था बन गई और इसी कारण इसका नाश हुआ। १७८६ का श्राति इनके विरुद्ध अमान्य रूप में फूट पड़ा।

दूसरे कारण फ्रांस में प्रगतिशाल मध्यमवग की स्थिति थी जो यूरोप के अन्य देशों में नहीं थी। इस बग के मध्यमवग श्राविक रूप से सबल थे किन्तु यह बग श्राविक नहीं था। इनके पास धन और बुद्धि दोनों थे और इस कारण ये राज्य में सवमाय अमान्यता का मानने के लिए तैयार नहीं थे। उनके विचारों पर राजा का अत्यंत और मान्यता का दानिकता का प्रभाव था अतएव वे इन मान्यताओं के उल्लंघनों का दृढ़ता से अमान्यता के पक्ष में अपनी श्राति का

मन्त्र-वर्ग के लिए तैयार नहीं थे। उन्हें अपनी अपमानजनक स्थिति में कोई पाय नहीं दीख पड़ता था। ह्मा का 'सामाजिक समझौता' (Social Contract) का सिद्धान्त क्रांति का मूलमंत्र और पवित्र ग्रन्थ माना गया। फ्रांस के दासनिदो ने जनता के सम्मुख वह आदेश रखा, जिसके लिए वह अपना सबस्व बलिदान कर सकन थे। इस प्रकार का वातावरण रूस के सिवा अन्य किसी भी देश में नहीं था। यद्यपि यूरोप के अन्य देशों में अधिकारहीन वर्ग दुखी थे किन्तु उनके सम्मुख न कोई आदेश था और न कोई नेता था जो वर्तमान व्यवस्था का चुनौती दे सकते। परिणामतः यूरोप के अन्य किसी भी देश में क्रांति नहीं हुई।

एक अन्य कारण भी था जिसके कारण यूरोप के किसी अन्य देश में क्रांति न होकर फ्रांस में ही हुई। यह सत्य है कि क्रांति का लान का मुख्य कारण आर्थिक या सत्ता दासनिदोता द्वारा सञ्चालित गाड़ी में आर्थिक दुख्यवस्था का इधन भरा गया। राज्य की वार्षिक आय राज्य द्वारा लिये जाने वाले ऋण के व्याज से भी कम थी। इस अवस्था में राजकाज चलाना असम्भव था। धन प्राप्त करने के उद्देश्य से मसद् बुलानी पड़ी और इसके कारण क्रांति हुई। यूरोप के अन्य किसी भाग में ऐसा स्थिति नहीं थी। यद्यपि प्रजा दुखी थी वह अत्याचार सहन करती रही, उत्तम विद्रोह करने का साहस नहीं था।

प्रो० साल्वेमिनी के अनुसार चाहे पहल-पहल यह तथ्य कितना ही विचित्र प्रतीत हो फ्रांस अथवा की अपेक्षा काफी अच्छी स्थिति में था। मुख्यतः यह फ्रांस के सामाजिक जीवन में प्रचलित अधिकपक्षीय दशाओं के कारण था कि यूरोप में अन्य स्वानो की अपेक्षा फ्रांस में क्रांति फैल गई। फ्रांस के मध्य वर्ग—अथ यूरोपीय राष्ट्रों की अपेक्षा अधिक धनी व अधिक शिक्षित और समाज के उच्च वर्गों से अधिक निकट सम्पर्कयुक्त तथा अपनी जीवन शैली में सामान्यता वर्ग से बहुत कम भिन्न और भिन्नताओं में बहुत कम भ्रमण—उन अयाया से बड़ी तीव्रता से परिचित थे जिनमें उन्हें राजनीतिक प्रभावों और सम्मानों से वंचित कर रखा था और भौतिक व नैतिक शक्ति से भरपूर जिसका अभाव तक दूसरों में अभाव था उन्हें मात्र जनिव जीवन में वह स्थान पहल मिलना चाहिए था जिनके व अधिकारी थे। इसके अतिरिक्त अन्य देशों में जैसे रूस, जर्मनी, टर्माक या हंगरी जहाँ कि कृषि या सामन्ती दासताओं ने बुरा तरह दबा रखा था, व मजदूर समानता व स्वतंत्रता के विचारों का ग्रहण करने में बहुत पीछे थे। इसके विपरीत फ्रांस में प्रचलित भूमि धारी कृषक अपने का उम्र धरती का स्वामी समझता था जिनमें वह अपनी नाथ का पत्नीना गिरावर प्राप्त करता था और अपने का उम्र सामान्य अथवा न दवान और अपना सम्पत्ति का निदया कर-व्यवस्था से मुक्त वर्ग के लिए ही उम्र क्रांति का महान्त लाना पड़ा। इसके अतिरिक्त फ्रांस में अनाथों व धर्मसत्तापारण नामक प्रान्तों का धार श्रितना उपसाधुष व्यवहार करते व इतना अक्षय कहा नहीं था और अनाथ शाही कृपाओं को पान की लूट-मार में केंद्रीय सत्ता के अन्दर घुसना शुरू कर दिया था किन्हीं और जगह विभिन्न सामाजिक वर्गों के बीच ऐसा गहरी साह नहीं था

जिसे फ्रांस के राजतंत्र न अपने केंद्रीयकृत नियंत्रण से सामंती हाथा में स्थानीय शासन को छीनकर बनाया था। अन्य देशों में पारंपरिक अर्द्धसम्य सामंत तंत्रों को जागीर पर निर्वाह करते थे अपनी राजनीतिक क्रियाएँ सम्पन्न करते थे। याय का प्रबंध करते थे और जनसाधारण पर शान्त वाली आपत्तियों का दखल भी करते थे। मंत्रियों को पर अत्याचार किया जाता था तो अपने सामंत के कटार नियमों का उद्देश्य भी सुरक्षा प्राप्त होता था और उसके विभागाधिकार भी इतने उत्तरदायित्वों के कारण उचित समझे जाते थे। अतः फ्रांस में केवल राजधानी ही ने इतना अधिक महत्व प्राप्त कर लिया था कि वह राष्ट्र के सारे राजनीतिक व प्रशासकीय जीवन का केंद्र बन गयी थी। इसलिए जब क्रान्तिकारी सनाभ्रा ने पेरिस पर अधिकार जमा लिया, तो सारा राज्य उनके हाथ लग गया। अन्य राष्ट्रों में प्रशासकीय केंद्रीकरण अभी तक या तो बिल्कुल नहीं था या प्रारम्भिक स्तर पर था और प्रतीय जीवन लगभग स्वाधीनतापूर्ण था। एक क्षेत्र में उठने वाली बेचनी गैप देग का परमाणु नहीं कर सकती थी और मुख्य केंद्र में होने वाली अवस्था का प्रभाव पर बहुत कम प्रभाव पड़ता था और वहाँ जा प्रशासन का संचालन करते थे उन्हें राजधानी से आने वाले सारे आदेशों सह्यताओं या अन्य सहायकों की प्रतीक्षा करने पर बाध्य नहीं होना पड़ता था। फ्रांस में प्रान्तों में फर्नी महान् गडबड का राजधानी पर लगभग आणिक प्रभाव पड़ता था जबकि पेरिस में वह सारे राजनीतिक ढाँचे पर घातक चोट करती थी और उसका घका सारे राज्य पर पड़ता था। (The French Revolution pp 188-89)

पुनः प्रो० साल्वेमिनो के शोध में पेरिस अपने पाँच लाख से अधिक लोगों के साथ सबसे अधिक खतरनाक नगर था। केंद्रकृत प्रशासन व विकास के साथ राजधानी में घना और निधन दाना ही प्रकार के लोगों का अपनी छाया छाड़ते कर लिया था जो अपना भाग्य आप्रमाना चाहते थे। इन सब लोगों का तरह-तरह की जरूरतें पूरी करने के लिए नई-नई इमारतें व कारखाने बने जिनमें प्रान्तों से आने वाले मजदूरों और कृषकों की बाढ़ का स्थान मिल गया। जनसंख्या की ऐसी वृद्धि से खुश होकर किन्तु पबडा कर (इसमें चिन्तित हाकर कि इतने बड़े नगर का प्रबंध करना है किन्तु आय के घटित्विन साधना की क्षमता पर प्रसन्न हाकर) सरकार एक भार कृपाओं व विशेषाधिकारों के बाँटने और दूसरी ओर इस बाढ़ का रोकने के लिए ऊटपटांग ख्वाबटें लगाने में टाबागत हा गइ। लेकिन राजा की अनुमति से या उसके बिना यह दानव बढ़ता ही गया त्रिमक भीतर क्रान्तिकारियों की एक सना फरती फूनती गई जा पुराने फ्रांस का नष्ट करने में एक अत्यधिक प्रभावकारा यंत्र मिडि हुई। क्रान्ति के समय फ्रांस के स्वामी यह निराश्रय कर रहे थे कि अतिक्रमण का आदेश दे रहे हैं और विरोध करने व विनाश करने बना रहे हैं अपने निरन्कारपूर्ण व्याख्याता तथा अपमानजनक पत्रों से एसा मालूम होता है कि व गायन है जम कि प्रत्येक वस्तु की उद्देश्य अनुमति प्राप्त है। (The French Revolution p 37)

प्राचीन क्रान्तियों की इंग्लैंड का क्रान्तियों से तुलना (French Revolution compared with English Revolutions)—फ्रांस की क्रान्ति की १६४२-४६

की प्यूरिटन क्रान्ति (Puritan Revolution) तथा स्वर्ण क्रांति (Glorious Revolution) य तुलना की जा सकती है। यह ध्यान रखने योग्य बात है कि इंग्लैंड की इन क्रांतियों के लक्ष्य मुख्यतः राजनतिक थे। इनका उद्देश्य राजा की स्वेच्छाचारी शक्ति पर नियंत्रण करके मारे अधिकार जनता की प्रतिनिधि मानी जाने वाली ब्रिटिश संसद का सौंप देना था। दूसरी ओर, फ्रांस की क्रांति का उद्देश्य राजनतिक नहीं, अपितु सामाजिक था। यह सत्य है कि फ्रांस की जनता को भी राजनतिक अधिकार नहीं थे किन्तु उह इनकी परवाह नहीं थी। फ्रांस की जनता युग युगान्तर से सामन्तशाही प्रणाली की शम्भस्त थी इसलिए वह केन्द्रित स्वेच्छाचारी शासन के प्रति उदासीन थी। जनता देश की असमानता के कारण दुखी थी। इसी लिए फ्रांस की क्रांति का मुख्य उद्देश्य असमानता को नष्ट कर देना था और यही उमकी मुख्य सफलता भी थी।

१६८८ में हुई इंग्लैंड की क्रांति का रूप प्राचीन और सुरक्षात्मक था। 'अधिकार घोषणा (Bill of Rights) के द्वारा स्वर्ण क्रांति (Glorious Revolution) में जा प्रजा का प्राप्ति हुई वह कोई नई वस्तु नहीं थी। अतीत के सघर्षों से प्राप्त रूप विशेष प्रकार में भिन्न नहीं था। राजा की स्वेच्छाचारी व्यवहार की शम्भता देश में प्रचलित कानूनों के अनुसार व्यवहार करने का बाध्य कर दिया गया था। किन्तु फ्रांस की क्रांति मूलतः क्रांतिकारी और बिध्वसात्मक थी। इसने प्राचीन शासन प्रणाली का जड़ में नष्ट कर दिया।

प्रापोटकिन के मतानुसार, 'सामन्ती अधिकारों के उन्मूलन करने और सामुदायिक भूमियाँ का वापस लेने का कारण जिहें सत्रहवीं शताब्दी से स्वामियों, श्रमिकों व शम्भाना श्रामीण शम्भुना से प्राप्त कर लिया था, किसानों का विद्रोह ही उस महान् क्रांति का मारक बीज है। इसी के ऊपर अपने राजनतिक अधिकारों के लिए मध्यमवर्ग का सघर्ष विकसित हुआ। इनके बिना क्रांति कभी इतनी परिपूर्ण नहीं होती जितनी कि फ्रांस में हुई। श्रामीण जिला के विनाल विद्रोह ने, जो जनवरी १७८६ के बाद गुरू हुए, और जा १७८८ में भी थे और पाँच वर्षों तक चलते रहे ही क्रांति को इस योग्य बना दिया कि वह नाश का महान् काय पूरा कर सके जिसके लिए हम उमके श्रुणी हैं। इसी न क्रांति को इतना निश्चिन्त कर दिया कि वह समानता की प्रणाली के प्रथम लक्षण स्थापित करे, फ्रांस में गणतन्त्रीय भावना उत्पन्न करे जिसे तब से अब तक कोई भी न दबा सारा, श्रामीण साम्यवाद का महान् मिद्वान्ता की घोषणा करे जिहें हम १७६३ में प्रकाश में आता देखते हैं। निम्नन्देह यह विद्रोह ही वह वस्तु है जा फ्रेंच क्रांति को सच्चा चरित्र प्रदान करती है और इसे इंग्लैंड की १६४८-४७ की क्रांति से पूण अलग में भिन्न बनाती है।

'तीनों वर्षों के काल में, वहाँ भी मध्यवर्गों ने राजतन्त्र की सर्वोच्च सत्ता व दरबारा पार्टी के राजनीतिक विरोधियों को तोड़ डाला। किन्तु उससे आगे, इंग्लैंड की क्रांति का विशेष लक्षण यह था कि प्रत्येक व्यक्ति के अधिकार के लिए सघर्ष हुआ, जिससे वह अपने मतानुसार किसी भी धर्म का पालन करे, अपने व्यक्तिगत

विचार के अनुसार वाइबिल की व्याख्या करे अपने निजी पुरोहित चुने—सक्षेप में, व्यक्ति को यह अधिकार मिले कि वह अपनी सबश्रेष्ठ सुविधानुसार मानसिक व धार्मिक विकास कर सके। इसके अतिरिक्त इसने प्रत्येक ग्राम और उसी के फलस्वरूप प्रत्येक नगर, के स्वाधीनता के अधिकार को मायता दी। लेकिन जहाँ तक सामन्ती श्रृणा और पदवियों के उन्मूलन या सामुदायिक भूमियों को पुनः लेने का सबंध है इंग्लैंड में कृषकों के विद्रोह ने उतना सामान्य ध्येय नहीं बनाया जितना कि फ्रांस में हुआ। और यदि ग्रामवल के अनुचर ने कुछ दुर्गों को गिरा दिया जो सामन्तवाद के सच्चे गढ़ थे तो दुभाग्यवश इन अनुचर ने न तो उन गेखियों को आघात पहुँचाया जो स्वामी अपने सामन्ती भू-भाग पर दिखाया करते थे और न सामन्ती याग करने के अधिकार पर कोई चोट की जा स्वामी अपने सबका पर प्रयोग कर सकते थे। इंग्लैंड में शान्ति न केवल यही किया कि उसने 'यदि क कुछ कीमती अधिकारों को जोना किन्तु इसने स्वामी की सामन्ती सत्ता का नाश नहीं किया इसने केवल उसे सशान्ति किया जबकि भूमि व ऊपर इसके वही अधिकार बन रहने दिए जो आज तक चला आ रहे हैं।

निस्सन्देह इंग्लैंड में शान्ति न मध्यमवर्गों को राजनीतिक सत्ता बनी रहने दी किन्तु यह सत्ता भी भूमि पर जमी सामन्ती जनसंख्या का भाग देकर प्राप्त हुई थी। यदि शान्ति न इंग्लैंड के मध्यम वर्गों का उनका व्यापार व वाणिज्य के लिए एक समझौता युग प्रदान किया तो यह समझौता भी इस गत पर प्राप्त हुई थी कि हमें मध्यमवर्ग इतना लाभ न कमा सकें कि वह भूमि पर जमे सामन्त वर्ग के विनाशकारियों पर आघात कर सकें। इसके विपरीत मध्यम वर्गों ने, कम-से-कम मूल्य का दृष्टि से इन विनाशकारियों को बचाने का काम किया। बंधनकारक नियमों (Enclosure Acts) के साधना में उन्होंने इस सामन्त वर्ग का इतनी सहायता पहुँचाई कि वे सामुदायिक भूमियों का बंधनकारक अधिकार में न सकें। इन्हीं बान्दनों ने कृषक जनसंख्या का नियंत्रण में उतारा था भूमि व स्वामियों की कृपा पर उस नियंत्रण था और उनकी विनाशकारी सत्ता का नगरों में जान पर विचार कर लिया था जहाँ श्रमिक वर्ग के रूप में वह मध्यमवर्गीय उत्पादकों का कृपा पर आश्रित हो चुकी थी। इंग्लैंड में मध्यमवर्गों ने सामन्त वर्ग का इस याग में बना लिया था कि वह अपनी भूमिगत श्रावण व मारना का बन्धन विनाश करना चाहते थे। केवल असह्य मानवतंत्रों द्वारा ही नया वर्ग अपनी राजनीतिक और स्थानीय याग संबंध बना दूरों में त्रिभुजा स्थापना वह अपने सामन्तों याग व श्रमिकों के नियंत्रण में आना कर सकें। उन्होंने यह भी सहायता पहुँचाई कि वे भूमि व नियमों द्वारा अपना मानवतंत्रों का नियंत्रण बना सकें। एक कानून बनाया जा संपत्ति का नियंत्रण रात भूमि पर एकाधिकार में जे त्रिभुजा श्रावण व मारना अधिकारों के उन्मूलन का ही रहा था। त्रिभुजा श्रावण व मारना वाणिज्य तंत्रों में बढ़ रहा था।

पर हम जानते हैं कि केवल मध्यमवर्गों विनाशकार उन्मूलन मध्यमवर्गों का व्यापार व श्रमिकों में सहाय न अपने शान्ति में इंग्लैंड में मध्यमवर्गों की नकल करना चाही। वे उनका नियंत्रण व श्रमिकों के मानवतंत्रों के माध्यम में अपनी इच्छा से कर

बैठते, किंतु वे इसमें सफल न हुए क्योंकि भाग्यश इंग्लंड की त्रांति की अपेक्षा फ्रांस की त्रांति का आधार वही अधिक व्यापक था। फ्रांस में त्रांति का उद्देश्य केवल यह नहीं था कि धार्मिक स्वतंत्रता, या व्यक्ति के लिए कोई व्यापारिक या औद्योगिक स्वतंत्रता या कुछ मध्यमवर्गीय लोगों के हाथ स्थानीय स्वशासन की बागडोर देने के लिए विद्रोह किया जावे। सबसे अधिक, यह तो कृषकों का विद्रोह था लोगों का भूमि पर पुन अधिकार जमाने के लिए और उसे उन सामन्ती भारों से मुक्त करने के लिए आंदोलन या जिन्होंने इसे दबा रखा था और जबकि इसमें आर-पार एक व्यक्ति वादी लहर मौजूद थी—व्यक्तिगत रूप से भूमि पर अधिकार जमाने की इच्छा—इसमें साम्यवादी तत्व भी निहित था—सार राष्ट्र का भूमि पर अधिकार—एक ऐसा अधिकार जो १७६३ में निम्न वर्गों की ओर की घोषणा में प्रकट हुआ।" (The Great French Revolution pp 957)

Suggested Readings

Acton	<i>Lectures on the French Revolution</i>
Aldington	<i>Voltaire</i>
Aulard A	<i>Political History of the French Revolution</i>
Bello H	<i>The French Revolution</i>
Brinton C C.	1 <i>A Decade of Revolution 1789-99</i>
Cobban A	<i>The Debate on the French Revolution (1789-99) 1945</i>
Cobban A	<i>Rousseau and the Modern State 1934</i>
Dickens	<i>A Tale of Two Cities</i>
Duros L	<i>French Society in the Eighteenth Century</i>
Goodwin	<i>The French Revolution 1953</i>
Goo h G P	<i>Maria Theresa and Other Studies 1951</i>
Gootschalk Louis	<i>The Era of the French Revolution (1715-1815) 1929</i>
Lowell E. J	<i>The Eve of the French Revolution</i>
Made in	<i>The French Revolution</i>
Mathews	<i>The French Revolution</i>
Mathiez A	<i>The French Revolution 19 8</i>
Kropotkin	<i>The Great French Revolution</i>
Lefebvre G	<i>The French Revolution</i>
Salvemini C	<i>The French Revolution 1954</i>
Shackleton Robert,	<i>Montesquieu</i>

राष्ट्रीय-सभा का कार्य (१७८६-६१)

(Work of the National Assembly—1789-91)

भूमिका (Introductory)—जब लुई सोलहवाँ (१७७४-६३) फ्रांस की आर्थिक समस्या को नहीं सुलझा सका तो उसने ससद् बुलान का निणय किया। १७८६ की गण्ड कृतु में चुनाव हुए और प्राचीन परिपाटी और शाही आदेशों के अनुसार प्रतिनिधियाँ न अपने प्रदेशों की अवस्था के विषय में सूचना-पत्र (Reports) तय करके तथा अपने प्रतिनिधियों और सरकार को उस विषय में सिफारिशें भी कीं। इन सूचना-पत्रों का काहियर (Cahiers) कहा जाता था और इनकी भाषा क्रान्तिकारी नहीं थी। ये सम्राट के प्रति स्वामि भक्ति तथा विश्वास प्रकट करते थे। किसी एक सूचना-पत्र में भी सघष का लेशमात्र वर्णन नहीं था। मूल रूप में इन पत्रों में उम्र युग की नवीन राजनतिक विचारधारा भरी थी और सामन्त-पद्धति तथा समाज में गहरे सुधारों की माँग की गई थी। तीसरे वर्ग के सूचना-पत्रों में देश में प्रचलित सामाजिक असमानताओं को हटाने पर बहुत जोर दिया। देश में राष्ट्रीय एकता और मंगल पर भी बहुत जोर दिया गया था।

यह उल्लेखनीय है कि समस्त के तीन विभाग थे। पहला विभाग सामन्त-वर्ग दूसरा धर्माचार्य-वर्ग और तीसरा विभाग अधिकारहीन मध्यमवर्गीय कारीगरों और किसानों का प्रतिनिधित्व करता था। पहले तीनों विभागों की बैठकें अलग-अलग जाती थीं और प्रत्येक के प्रतिनिधि एक-मात्र सभा के थे। किन्तु १७८६ में तीसरे विभाग का सामन्त-वर्ग और धर्माचार्य-वर्ग दोनों का सहयोग द्वारा प्रतिक्रिया प्रकट की गई। भविष्य में जो महत्वपूर्ण काम इस विभाग का करना था वह इस बात से सिद्ध हो गया।



सैयस

तीसरे विभाग की मतांशुता का पादरी सैयस (Abbe Sieyes) द्वारा लिखित एक लेख से ज्ञात की जाती है कि मूल में प्रकट होता है।

मन्त्र न प्रदन किया— तीसरे विभाग क्या है ?

उत्तर— सब कुछ ।

प्रश्न— गजनीति में अब तक कौनकी क्या स्थिति रही ?

उत्तर— 'कुछ भी नहीं ।'

प्रश्न— 'इनकी क्या दृष्टा है ?'

उत्तर— 'कुछ बनने की ।'

समूह का अधिवेशन ५ मई १७८६ को हुआ और तीनों विभागों के अधिवेशन अलग अलग हुए । किन्तु तीसरे विभाग के सदस्यों ने यह घोषणा की कि १७८६ की समझ एक मामूली-सी सभा नहीं बल्कि फ्रान्स की जनता का प्रतिनिधित्व करने वाली सभा है । यह माँग की गई कि अधिवेशन में तीनों विभाग एक साथ बैठें और मतदान वगैरे अनुसंग हान की अपेक्षा सदस्यों की मध्याह्न प्रणुनाएँ होना चाहिए । मामूली और अमान्यतापूर्ण माँग के विरोधी थे । परिणामतः काय रूक गया । १७ जून, १७८६ का तीसरे विभाग ने अपने का राष्ट्रीय सभा घोषित कर दिया ।

२० जून १७८६ का तीसरे विभाग के सदस्य अपने भवन में जाने लगे किन्तु सभा में निकाय का माँग रोक दिया गया । पूछताछ करने पर उन्हें बताया गया कि भवन में अब विशेष गरीब अधिवेशन होने वाला है और उसके प्रबन्ध के लिए भवन को बन्द कर दिया गया है । कुछ समय तक सदस्य समझ न पाये कि क्या किया जाये । किन्तु कुछ समय के पश्चात् वे एक निक्ट के भवन में, जहाँ टेनिस खेली जाती थी, चले गये और वहाँ इतिहास प्रसिद्ध अधिवेशन किया । बैल (Bailey) की अध्यक्षता में सभने प्रसिद्ध टेनिस-कोर्ट (Tennis Court) गण्य ग्रहण की । एक सदस्य को छाटकर गण्य सभी सदस्यों ने यह गण्य की 'हम सभी अलग नहीं होंगे और जब तक देश में विधान की स्थापना नहीं हो जाती तब तक जहाँ भी परिस्थितियों में आवश्यक होगा धार-धार बैठेंगे होने लगे ।

२३ जून १७८६ को गरीब अधिवेशन हुआ । सभा ने तीसरे विभाग के प्रस्ताव का प्रबंध और गण्य-कानूनी घोषित किया । यह भी माना हुई कि तीनों विभागों के अधिवेशन अलग अलग हों । सभा ने मामूली और अमान्यतापूर्ण ने वही प्रस्ताव प्रकट की । किन्तु तीसरे विभाग के सदस्य भवन में बाहर नहीं गए । अधिवेशन अधिकारी (Master of Ceremonies) ने उन सदस्यों से कहा "आपने सभा की आज्ञा सुन ली है । सभा की आज्ञा है कि तीसरे विभाग के सदस्य भवन में चले जायें ।" भवन के द्वार पर कुछ सैनिक भी दिखाई पड़े । तीसरे विभाग के सदस्यों को भवन में निकाल देने का प्रबंध किया गया था । उस समय तीसरे विभाग के एक सदस्य मिराबो (Mirabeau) ने भी अधिवेशन अधिकारी से सामन जाकर गरज कर कहा "आप और अपने स्वामी को जाकर कह दो कि हम यहाँ जनता की दृष्टि में आये हैं और जब तक सुरी की नोक से हमको नहीं हटाया जायगा हम यहाँ से नहीं जायेंगे । मिराबो के प्रस्ताव पर सब सदस्यों ने यह घोषणा

प्राप्त करने का मकल्प किया। ११ जुलाई १७८८ का बरसाई आग पश्चिम में बहुत सी मना बुनाई गई। मुन्ना के समयक नकर शोर उमक उन मायिया को जा सुधारा क पत्र म व पदच्युत कर दिया गया। नकर का तुरत दस छाड जाने को आता हूँ।

पश्चिम क नागरिक अपन प्रिय मन्त्री नकर के निकाल जाने म महमत नही हूँ। पत्र भी भय था कि मन्नाट राष्ट्रीय सभा का दमन करन क लिए गक्ति का प्रयाग करगा। इन परिस्थितिया म बस्टाइल (Bastille) म बडा दगा हुआ जिम गामन क विरुद्ध विद्रोह का प्रताक माना गया। इस १४ जुलाई १७८९ का जातकर भूमिच्य कर दिया गया। एग म बस्टाइल का पतन स्वतंत्रता की विजय माना गई।

प्रा० गुडविन क मतानुसार मार शक्ति-काल म बस्टाइल क पतन जमी बन्मुना शोर बन् गहर परिणामा वाली अय कार्द महत्त्वपूर्ण घटना नहीं हुई। इसन प्रथम म गाना स्वच्छाचारिता का अत राजनतिक सत्ता क राष्ट्रीय सविधान का अन्तर्गत करन तथा जिनाता का विद्रोह करन क लिए भटकाकर सामंतशाही क पतन का ज्ञान प्राप्त किया। अमन दग का समाचार पत्रा तथा लखा पर लग प्रति ब ग म मुक्त कर लिया और इन प्रचार जनमन-ममत्रक पत्रकारिता का प्रात्माहन मिला जिमका राजनतिक परिणाम आगामी शकटवर की शक्ति-याना म पूणता स प्रकट हुआ। एम घटना स पश्चिम क नागरिक गामन म बडी महत्त्वपूर्ण शक्ति हुई जिसस बरा गानना स मार गामन-अत्र का विक्रीकरण हा गया। काउण्ट-द आरतोइस (Count d Artois) क नरत्व म प्रतिश्रियावाणी सामंत दग छाडकर भागन उग और परिणामस्वरूप एत गक्तिया का बल मिला जिनक कारण विन्ना हस्तभेप और दूगन क दगा म बुद्ध का युग आरम्भ हुआ था। थोड समय क लिए पश्चिम क नमागाना म विन्ना म ब। अच्चा प्रतिश्रिया हूँ। द लानि (de Launay) और द फ्लेसल्लेस (de Flesselles) पर लिया गया प्रतिपाध तथा जन-ममूह की वीरता का बूना प्रगमा हुई तदा नाभूतिक लूटपाट क न हान का मभी न आत्र किया। इस दुग क पतन का कवन फाम म ही नया अपितु मार समार म स्वतंत्रता क नव-जन्म का परिचापक माना गया।

प्रा० मावमिना क मतानुसार बस्टाईल (Bastille) पर अधिकार न मार समार क अत्र मन्त्रिक बान गाना म महान उमाह उपनकर किया। गामय छाटा दुग अन्ना अन्ना मन्त्रा क माध—अत्र अत्र अत्रिक राजनतिक बणी एक दूण पडे थ और अत्र म एक मन्त्रालय सरकार पश्चिम क नागरिका क विद्रोह क प्रयाजेन को दगा मन्त्रा भी—पुगन मवसतावाण फाम का प्रतीय मानूम जाना था। क सब जिह अत्र म अन्ना थी अत्रि इनक पतन म स्वतंत्रता का अव्यम्भावा उद्यान दसा। (The French Revolution p 129)

पश्चिम मन्नाट न गाना मना वापस बुना ना विद्रोहिया की मना को मायता क अत्र नकर का पुन अन्मान कर लिया ता ना नागा का मनाप नहीं हुआ।

दहाता म विमानों ने विद्रोह किया, सामंता के दुर्गों का लूट कर उनके मय उपांग चिह्न का विग्न रूप स नष्ट कर दिया। सामंता को मार दिया गया उनक दुर्गों का नष्ट कर दिया गया। अक्टूबर १७८६ म बरमाइ म पश्चिम ममाचार पदचा कि कुछ छोट सन्निक दुर्गदियो को, जिह बहा बुलाया गया था दावत दी गई। "म अक्टूबर पर तिरग ध्वज का परा-तले रौंदा गया राष्ट्रीय सभा के प्रति घमकियां दी गट। सम्राणी न अपनी उपस्थिति द्वारा इन नीचतापूण कार्यों का अनुमादन किया। पेरिस की म्त्रियो न तापें ले जाकर बरमाई पर चढाई कर दा श्रीर सम्राट सम्राणी तथा राजकुमार को अपन साथ ले रास्त भर चिलनाती रही कि हमन नानवाई, नानवाई का बीवी श्रीर छोट रसाई बनाने बाल छाकरे को पकड लिया है। अब हम रोटी मिलेगी" (We have the baker and the baker's wife and the little cook boy—now we shall have bread)। इस प्रकार के तनावपूण उपद्रवा श्रीर सघर्षों से पूण वातावरण मे १७८६ स १७६२ तक राष्ट्रीय सभा न अपना काय किया।



स्त्रियो का बरसाई पर प्रयाण

राष्ट्रीय सभा का काय (Work of the National Assembly)—(१)

राष्ट्रीय सभा का मयम महत्वपूण काय सामंताही मुजागदारी तथा कम विग्नया पितारा को समाप्त करना था। ४ अगस्त १७८६ का लफाण्ट (Lafayette) न मन्वी धन एन जागीरदार न सभा म बहा कि विमाना द्वारा जागीरदारों श्रीर उनकी सम्पत्ति पर आक्रमण करने का एक वाग्ण अमाय पर आधागिन अममानता था। उगन महा कि इनका निराकरण विमाना का दमन करने न नहा, अपितु अममानताओं का जागीरदारों जड हैं दूर करने स हागा। एक प्रस्ताव पारित हुआ, जिसक अट्टमार मय पर एक जग कर लगाया जाना था। जागीरदारों श्रीर जागीरदारों म तथा धर्माचार्यों श्रीर धर्माचार्यों म अपने अपने विशेषाधिकारों श्रीर मुनिधायें त्यागन व लिए हाह लग गई। इस प्रकार न वातावरण म निवार-वातून श्रीर जागीरदारों की

अंगलता का समाप्त कर दिया गया और मुजारदारी समाप्त हुई। धर्माचार्यों ने दणमास छोड़ दिया। पना का विक्रय बन्द हो गया। सूक्ष्म रूप से बगों नगरा और प्रयोगों के सब विधेपाधिकार एक ही लहर में बह कर नष्ट हो गये। यह सब स्वतः ४ अगस्त १७८९ की रात्रि को हुआ। सब बिलखे हुए सूत्र इकट्ठे कर दिए गए और पना में सामन्तशाही समाप्त कर दी गई। जो काय दुगट और नकर नही कर सब उक्त राष्ट्रीय सभा ने किया। आलाचक कहते हैं कि विधेपाधिकार प्राप्त बगों ने अपने अधिकारों का समर्पण करने में कोई बलिदान की भावना नहीं दिखाई। जनता ने इनके विधेपाधिकार और उपाधि-सम्बन्धी सार पत्र इत्यादि नष्ट करके अपना माग साफ कर लिया था। विधेपाधिकार प्राप्त बग किसानों के विद्रोह के कारण अपने सार अधिकार स्वतः ही खो चुका था। पेरिस के महा धर्माचार्य (Archbishop of Paris) के सुभाव पर राष्ट्रीय सभा ने लुई सोलहवें का फ्रांस की स्वतंत्रता का पुनःस्थापक (Restorer of French Liberty) घोषित किया।

प्रो० गुडविन के मतानुसार अपने सामन्तशाही अधिकारों तथा आर्थिक दृष्टि का जागीरदारों और धर्माचार्यों द्वारा चार अगस्त की रात्रि का त्याग करना कोई स्वतः उत्पत्ता के कारण नहीं था। भय चला और सदेह न ही बहुत से सम्झना का इस बात के लिए प्रेरित किया। वह प्रसिद्ध अधिवक्ता एक सप्तमीय भाषावादी था जिसकी याजना एक दिन पहिले ब्रिटन क्लब (Breton Club) में एक प्रातिकारों गुट ने तयार की थी। याजना इस प्रकार थी कि उन सध्या की उत्पत्त जागीरदार गुट आर्थिक रूप से सामन्तशाही अधिकारों के समर्पण का प्रस्ताव करेगा तथा उस समय आगा की गई कि इस प्रस्ताव के विरोधी अनुपस्थित होंगे। इस प्रस्ताव का स्वतः का काय ड्यूक द अईगुलिया (Duke de Aiguillon) पर छाया गया और यह आगा का गई कि दस के सबसे बड़े भूस्वामी होने कारण उनका आह्वान अथ मन्त्रिणा प्राणिक जमादारा का अपना समयक बना लेगा। बान्तव में ड्यूक का हम चाल का वादवाउण्ट डी नालिस (Viscount de Noailles) समझ गया और उसने यह प्रस्ताव रखा कि सभा का पूरा आर्थिक समानता और जागरणों के सार कर पूरे दिन की आना पनी चाहिए। बवल व्यक्तिगत सेवा इत्यादि के समझौता का छाडकर। व्यक्तिगत सेवा के समझौता के विषय में विस्कोउण्ट ने प्रस्ताव किया कि उसे पूरा समाप्त कर देना चाहिए। ड्यूक के प्रस्ताव की अपेक्षा विस्कोउण्ट का प्रस्ताव ही सभा ने स्वीकार किया और फिर अभूतपूर्व बलिदानों की शर्तों का गढ़। पना भक्ति के उमाह का चन्ती भावना में विधेपाधिकारों के प्रतिनिधियों ने अगुआ बन कर प्रस्ताव रखा कि दण के सार पदा का प्राप्त करने का अधिकार सभा नागरिकों के लिए समाप्त होना चाहिए। जमादारा के सार अधिकारों के विधेपाधिकारों का समाप्त तथा अथ विनामा के पना का विक्रय समाप्त हो। इस दण के आगा ड्यूक ने स्वतः ना अधिन प्रभावशाली और नाटकीय प्रस्तावों का बन्द किया है कि दौफिन (Dauphine) के प्रतिनिधियों ने अपने सार क्षेत्रीय

(Municipal) मधीय (Corporate) तथा प्रादेशिक (Provincial) अधिकारों का प्राग दिया था। "अधिकारों की वायवाही सम्राट के प्रति स्वामिभक्ति-पूर्ण अभिप्रेत तथा फ्रांस की स्वतंत्रता का पुन मन्थापक की उपाधि देकर समाप्त हुई।

अपनी उत्तेजना व कारण राष्ट्रीय सभा व मन्थन लक्ष्य न वही प्राग जा पहुँचे प्राग प्राति व विचार करन पर विरोधाधिकार-व्यग का बाद म प्रपन प्रतिदाना का भीमा का वम आर वही-वही इनके लिए मघप करन के लिए तैयार जाना पडा। परिणाम यह हुआ कि जब ५ अगस्त से ११ अगस्त के बीच मदान्तिक निणया का वैधानिक रूप दिया जान लगा मध्यमवर्गी हितवाद और वानुनी सुरक्षा व रूप म सामन्तगामी व वहुन न एम अग मुक्ति हो गय जिह चार अगस्त की रात्रि का गीततापत्रक समाप्त कर दिया गया था। इस प्रकार विरोधाधिकारों का जनाजा एक नम धावा मिद्ध हुआ (St Bartholomew of privilege came to be a misnomer)। यन्त्रि प्राचीन राज्य छिन भिन कर दिया गया किन्तु सभा की यह घोषणा कि सामन्तगामी शासन पुनत न कर दिया गया व एक धावा था। अन्तिम मसविदा म धमाचार्यों का दण्डमाग समाप्त हुआ किन्तु सामन्तगामी के मव स वसर करन म जा परम्पर व ममभीत (Contactual) म सम्बन्धन व उह पूरा करन की गन रखा गइ थी। जय तक आपन क विचार विनिमय द्वारा जनक निपटान की गने तय नहा हाती उम समय तक ये घोषणा दिय जान थ। निम्नाना का भ्रम दूर हो गया और जय सम्राट न म अपूण सामाजिक प्राति का अपनी स्वोक्ति दन मे मना कर दिया ता मभी न अपन का प्रती वटिन मिथि म पाया।

(२) राष्ट्रीय सभा का दूसरा महान् काय था मानव के अधिकारों की घोषणा (Declaration of the Rights of Man)। म घोषणा पत्र न समा की दानिवता म छाप थी तथा इंग्लड और अमरिका के धानिक विधायकों की धाराएँ थी। यह फ्रांस की प्राति की आधारगिता बना और उनीमधी सत्रा बीमकी शतावदी की राजनैतिक विचारधारा पर मका प्रभाव रहा। उमम कहा गया था कि फ्रांस की जनता व प्रतिनिधि, जिनम राष्ट्रीय सभा वनी है यह विद्वान करत हुए कि अनानता, भूल या मानव अधिकारों की उपाधा ही जनमाधारण के दुनाम्य तथा शासन म अष्टाचार व भूल कारण है इस बात का निश्चय करत है कि एक पवित्र घोषणा-पत्र म मानव के पवित्र और असुण्य अधिकारों का लिख दिया जाय किमम कि यह घोषणा-पत्र मवदा सामाजिक सम्या व मय सदम्या के सम्मुख रहन के कारण देह जनक अधिकारों और वन्या का ध्यान दिनाता रह, तथा मवधानिक और कायकारिणी सत्ताओं व कायों की सवदा व राजनीतिक धाराओं व उद्देश्या म गुपना का जा मकनी है। इस कारण इनका सत्र अधिक सम्मान हो तथा नागरिका का मी भव सरल, निर्विवाद मिदाना पर आधारित हो गई है और ये मय से मविधान की रक्षा तथा सवमाधारण के वन्याण के लिए प्रयाग म लाइ जाएँ।

राष्ट्रीय सभा ने निम्नलिखित मानव अधिकारों तथा नागरिकों के अधिकारों

का घोषणा की—

- १ मनु मानव स्वतंत्र उपन हुए तथा रहत है और उनके अधिकार समान हैं। सामाजिक सम्मान बनन मनुसाधारण की उपयोगिता पर ही आधारित किया जा सकता है।
- २ प्रत्येक राजनतिक संगठन का उद्देश्य मानव के प्राकृतिक तथा अत्य अधिकारों की रक्षा करना है। ये अधिकार स्वतंत्रता सम्पत्ति सुरक्षा और दमन का विरोध हैं।
- ३ स्वतंत्रता उन मनु कार्यों क करन म है जिनक करन म अन्य नागा का हानि न पहुँच।
- ४ स्वतंत्र रूप स विचार और सम्पत्ति का आदान प्रदान मनुष्य क सभी अधिकारों म श्रेष्ठ है।
- ५ कोई भी व्यक्ति दासो बन्दी या पकड़ा नहा जायगा सिवाय उन तराका के कि जिनका कानून म उल्लंघ है।
- ६ क्योंकि सम्पत्ति अमूल्य और पवित्र अधिकार है किसी को भी सम्पत्ति स उम समय तक बचित न किया जाय जब तक कि कानून द्वारा सब साधारण का आवश्यकता स्पष्ट रूप स न बताद गई हा और वह ना इम अनुबन्ध पर कि सम्पत्ति क स्वामी का पहल सूचना दी जा चुकी हा तथा उचित रूप स उमका क्षतिपूर्ति कर दी गई हा।
- ७ कानून मनुसाधारण का इच्छा की अभिव्यक्ति है। प्रत्येक व्यक्ति का स्वय अथवा अपन प्रतिनिधि क द्वारा हसक बनान म भाग लेना आवश्यक है।
- ८ मनु अधिकार-सम्पन्नता राष्ट्र म निहित है और कोई सत्ता अथवा व्यक्ति एम सत्ता का प्रयोग नहीं कर सकता यदि यह अधिकार उम राष्ट्र न रहा गया है।
- ९ जनता का राष्ट्र-बाध क नियंत्रण का अधिकार है।
- १० राष्ट्र क मार पनाधिकारों जनता क प्रति उत्तरदायी हैं।

प्रा० थाम्पसन क मतानुसार प्रथम यह एक घोषणा एक उद्घोषण और सामान्य सिद्धान्तों की व्याख्या था जिसके आधार पर फ्रांस का नानुल अमम्यता न फ्रांस की प्रशासन-व्यवस्था का सुधारण का आगवा। दूसरे यह एक अधिकारों का घोषणा था कनड्या का नहीं। यह नये दावा का एक समथन और राजनतिक, सामाजिक क वधानिक अधिकारों का बक्तव्य था जिस इमके निमाताया न एक उच्च सम्पन्न निमाता क लिए अतिवाय मनसा। तामर एम व्यक्ति क अधिकारों की घोषणा कहा गया—एमा बक्तव्य जिसका आगव मनुष्याया प्रयोग था और जिसके निचित रूप म बक्त दूर क अभिप्राय थे। इमका निमाण बवल फ्रांस क ही लिए नहीं हुआ अन्तिम मना मनुष्यों क हित क लिए हुआ था जा स्वतंत्र हाना चाहत थे क अपन

को सामन्ती विरोधाधिकारो तथा निरबुद्ध राजतंत्र के तुलनात्मक भारा से मुक्त करना चाहत थे। मौलिक फ्रेंच क्रांति का सबव्याप्यवाद महान महत्त्व की चीज थी। अन्तिम व पूण अर्थ में, यह व्यक्ति व नागरिक व अधिकारा की घोषणा थी और यद्यपि इनके सापेक्ष व अन्तिम तीन शब्दा का त्याग दिया जाता है किंतु व इनके अत्यंत महत्त्वपूर्ण अंग म स हैं। इन सबिनय अधिकारा का सावधानी के साथ स्पष्ट किया गया था जिहान अर्थ अमम्बनी म प्रधान मन्त्रमवर्गों के तत्कालीन उद्देश्या को अत्यधिक पक्क रूप स पुष्ट किया—मव व लिए कानून की दृष्टि म समानता लाक-सेवाया म मव नागरिकों के लिए समानता स्वच्छाचारी दण्ड व निरोध से व्यक्तिगत स्वतंत्रता, भाषण व प्रकाशन की स्वतंत्रता और मवसे ज्यादा राष्ट्रीय करा के भारा का समान वितरण और व्यक्तिगत सम्पत्ति की सुरक्षा। इन दावा का इसने दा सामाय सिद्धान्तो पर आधारित किया— यह कि मव की राज्यसत्ता का सिद्धान्त राष्ट्र ही म अनिवाय रूप से आधारित है। और यह कि कानून सामाय इच्छा की प्रतिव्यक्ति है। यही सिद्धान्त—जिनका आशय सबव्यापी आचरण था—यदि स्वीकार हो जायें तो माफ तौर से समाज की पुरानी व्यवस्था की नींव का ही नष्ट कर देंगे और यूरोप में सभी जगह राज्य का अव्यवस्थित कर देंगे। फ्रांस म अपने प्रत्येक पड़ोसी के लिए (ब्रिटेन की भी मिलाकर) यह घटनाया की आभ्यन्तरिक चुनौती थी। फ्रांस के एक इतिहासकार ने इन घोषणा का पुरान शासन का प्रमाण पत्र कहा है। वस्तुतः सारी उन्नीसवीं शताब्दी म यह उदारवाद का घोषणा-पत्र बना रहा।

‘इस पर भी यह घोषणा जैसे कि यह ऊपर से देखने में प्रतीत हा उसकी अपेक्षा कम वास्तविक और अधिक वास्तविकतावादी है। उदारवाद का एक उद्देश्य-पत्र होने के नाते इनके छूटे हुए भाग महत्त्वपूर्ण हैं। इनमें आर्थिक जोखिम या व्यापार की स्वतंत्रता का कोई बरण नहीं किया जा इसके पूँजीवादी निर्माताया का इतना प्रिय था, क्योंकि पिछनी व्यवस्था न हाल के वर्षों म पहले ही में गिरावा का दमन किया था और अनाज के व्यापार पर से नियंत्रण हटा दिए थे। इसने मिला मम्बनी सुरक्षा सामाजिक सुरक्षा या मभा और मस्याया के अधिकारा व विषय में कुछ भी नहीं कहा यद्यपि बहुतों का यह हांग था कि इनका कितना अधिक महत्त्व है क्योंकि यह विषय पुरानी शासन-व्यवस्था के ताल व तत्कालीन उद्देश्यों की दृष्टि म कम महत्त्वपूर्ण थे। यद्यपि इनमें सबव्यापी ज्ञान का प्रयत्न किया, इनके व्यापक होने की चेष्टा नही की। इनमें जान-भूक कर वस्तुया की घोषणा का हटा दिया और वह त्रुटि १७६५ तक न सुपर सकी। इसमें अत्यधिक उदारवादी सिद्धान्त का बड़ी सावधानी के साथ विवरण दिया गया था। प्राकृतिक अधिकारा का प्रयोग इन भावदमकता से सीमित है कि दूसरा का भी उही अधिकारो के आनन्द का विनाश दिलाया जाव। उचित रूप में कानून केवल उही कारणों पर प्रतिबंध उगा सकता है जो समाज के लिए हानिकारक हैं। मत का स्वतंत्रता इस उपबंध म शामिल है कि इसमें कानून द्वारा स्थापित लाकव्यवस्था म गड़बड़ नही पटना चाहिए और इसका दुर्प्रयोग भी नही होना चाहिए। सम्पत्ति तक का परिवर्तता लाक भावव्यवस्था की स्पष्ट प्रतिवायता के अधीन है। (Europe Since Napoleon pp 10-11)

इस घोषणा पत्र को प्रजातन्त्रीय तथा गणतन्त्रीय विचारों के विकास के इतिहास में एक अनाखा तथ्य तथा आधुनिक काल का धर्म ग्रन्थ कहा गया है।

प्रा० हजन क अनुसार इस घोषणा पत्र के लेखकों की यह आशा कि यह विद्वदों के लिए एक गार्ति दूत होगा कभी अतिशयोक्ति नहीं थी। जहाँ कहीं भी मनुष्य मानव अधिकारों की चर्चा करता है उसके मन में फ्रांस का यह घोषणा-पत्र हाता है। बहुत समय बीता यह घोषणा फ्रांस देश की सीमा का लाभ चुकी है। विद्वदों के लगभग प्रत्येक कानों में इसका गन्धघन नकल और आलोचना ही चुकी है। यह आधुनिक मनुष्य के राजनितिक और सामाजिक परिवर्तन में एक निर्विवाद तथ्य रहा है। पिछले गतागत में स्वतन्त्रता के इच्छुक अनेकों राष्ट्रों ने अपने भौतिक सिद्धांतों का प्रथम ही इस घोषणा में पाया है।

प्रा० साल्वमिना के विचारों में यदि किसी अर्भौतिक रचना से हमारा आशय किमा एमा वस्तु से है जिस केवल सिद्धांत तक ही सीमित रखा जा सकता है और यह वास्तविकता के साथ नहीं चल सकती तो अधिकारों की घोषणा भी अपेक्षा अथवा अर्भौतिक वस्तु नहीं हो सकती जिसे फ्रांस के यूरोप के इतिहास में वाद में व्यापक रूप दिया है। निस्सन्देह १७८९ के अधिकार इस अर्थ में नैसर्गिक नहीं थे क्योंकि उनके आशय के अनुसार वह सारी मानव जाति जो उन्हें अनुकूल नहीं मानती नैसर्गिक नहीं लेकिन आधुनिक अर्थ में वे हमारे लिए नैसर्गिक हैं क्योंकि उनके बिना हमारा सम्बन्ध जीवित ही नहीं रह सकती और हम लोग स्वयं भी जीवित नहीं रह सकते। १७८९ के बाद से फ्रांस में प्रत्येक शासन का इस घोषणा के सिद्धांतों को प्रतिभूति के मायता दनी पड़ी। उन लोगों की प्रेरणा ही थी जिन्होंने उनीसवादी शताब्दी में निरंकुशवाद के विरुद्ध आवाज उठाई और अपने स्वभाविक शासन स्थापित किए। १७८९ के अधिकारों ही में से हमारा सारा सविनय के दण्ड सम्बंधी विधानन विकसित हुआ है। अपना स्वतन्त्रता प्राप्त करने में पीड़ित राष्ट्रों ने इन्हीं के भाँतर अपने प्रथमों का नैतिक औचित्य पाया है। आज भी जनसाधारण स्वतन्त्रता के सम्मानना के उन्हीं सिद्धांतों की दुहाई देते हैं जिन्होंने मद्रास में हथियारों का काम किया और उनमें सामन्तवाद का अन्त किया जो अब दूसरे के हाथों में जा चुके हैं और अन्तिम विचार परिवर्तन के यंत्र बन गए हैं।

यह मानना नहीं चाहिए कि आज के सामाजिक सभ्यों का १७८९ का घोषणा पत्र का ही अर्थ है। अथवा बहुत से तत्त्वज्ञान भी उनमें घोषणा के विषय है—यह महान् कारणाने के अर्थों में अधिक बल का निष्ठा मिलती है सामान्य काय के निवृत्त सभ्यों के रक्त के कारण और जिसमें वह अपने निजी सामाजिक कृत्यों और सामाजिक जीवन का पान पाता है हमारे आधुनिक अधिकारों की विदमता के योग्यता का शेष मनुष्य के सर्वोत्तम करने के लिए एक बिन्दु पर एकदम उत्पन्न करता है। अन्त में यह भी मिलने और अन्तिम विचारों के अर्थों का घोषणा पत्रों के पीछे मजबूत कारण जिसके द्वारा सम्पत्तिज्ञान के अपने शासन पर निष्ठा के अर्थों में हैं—उनमें स्वतन्त्र आधुनिक जीवन में मनुष्यता का कर्म पर प्रकाश

जाना = और व्यक्तिगत स्वायत्तता की परम्परागत व्यवस्था व विच्छिन्न प्रतिक्रिया उठाने की प्रेरणा दी है। लेकिन आज थर्मिक बग का अपन मसाम में उही मिद्धाता की महायता मिलता है जिहाने १७८६ के पूँजीवादी बग की रक्षा की और जिनका उहाने मनुष्या व लिए प्राचीन सर्वोच्च व सवमाय वताया और अब पूँजीवादी बग उह वभी भी नहीं हटा सकना जब तक कि वह यह नहीं चाहता कि सामाजिक व्यवस्था की क्रिया विच्छुल ठप्प ही न हा जाय और जब तक कि वह मात के डर से आमन्या ही करन पर नहीं उतरता। जमा कि फेग्वे (Fagvet) न ठीक ही कहा है बग युद्ध ता नानि म पहल भी मौजूद था, लेकिन उस समय जनमाधारण के पाम एना मामाय आन्य या किसी प्रकार का विचार नहीं था जा सघप को उचित ठहराये या पवित्र बनाय, जा उनक पाम गकिन व विरुद्ध शक्ति का प्रतीक बन या बमजारा में ऐसे प्रयत्न कराए जा एक-दूसरे की गकिनगाली के विरुद्ध रक्षा करे। आज एना बिलकुल नहा है। क्रांति न एकता का मिद्धात घापित करके बग-सघप का मत्ता का कारण इतना नहीं दिया जितना यह घापित करन का कारण कि नम अधिवाक व साथ जीवित रहन की क्षमता प्राप्त है और अधिकार को अपन साथ रखन का कारण भी प्राप्त है।

'उन्नासवीं शताब्दी की अत्यन्त बड़ी गण्टाय, मवधानिक तथा विधायिनी सफर-ताम्रा के विषय में भी यही कहा जा सकता है। वे प्रत्यन्त अधिकारों की घोषणा में उदित नहीं हुए हैं क्योंकि वे आधुनिक सामाजिक व्यवस्था में सुअनिवायत उत्पन्न हुए हैं। लेकिन १७८६ व अधिकांश में उहाने अपना सद्धानिक औचित्य पाया है उहाने समय से सम्मानित विचारों का प्रणाली प्राप्त की है जिनके भीतर उह भी स्थान लिया जा सक। यदि यह सब अधीनिकवाद है ना सारा इतिहास ही अधीनिकवाद (metaphysics) है। (The French Revolution, pp 147-48)

(३) राष्ट्रीय सभा ने मार देश में एक जैसी सामान-व्यवस्था प्रचलित की। पुगन प्रदेश प्रशासन तथा इंटेंडन्सी (Intendancies) पड़ दी प्यट (pays d'etat) पड़ दी इनकान (pays d' election) पारलमटम (Parlements) और बरजिज (Bailliages) समाप्त कर लिये। देश का नये सिंघ में विभाग (Departments) में विभक्त किया गया। ये विभाग क्षत्रपद गार जन्मन्स में समान थे तथा इनका नामकरण प्राकृतिक चिह्नों तथा नदियों और पर्वतों के नाम पर किया गया। प्रत्येक विभाग का कण्टन (Canton) गार कम्यूनो (Communes) में विभक्त किया गया। स्थानाय गणना व प्रमुख राज्य गार निरुक्त गान को बरक्षा चुन गान ग। जाना गार चुनी गार स्थ नाम सभाका व्यवस्था नी को गई। देश में गार नवीन न्याय प्रणाली प्रचलित की ग। इन न्यायालयों के न्यायाधीश जनता गार चुन जान थे। देश का न्याय प्रणाली का मरम्भ और संगठित करने के लिए ना प्रयत्न किया ग किन्तु यह कार्य जय नपाटियन प्रथम कांसुल (Consul) बना तब तक नहा हा पाया।

इस घोषणापत्र को प्रजातन्त्रीय तथा गणतन्त्राय विचारों के विकास के इतिहास में एक अनायास तथ्य तथा आधुनिक काल का धर्म ग्रन्थ कहा गया है।

प्रो० हेज़न के अनुसार इस घोषणापत्र के सारों की यह धारणा कि यह विश्व के लिए एक मार्गदर्शक दस्तावेज़ की ओर अग्रगण्योक्ति नहीं थी। जहाँ कहीं भी मनुष्य मानव अधिकारों का चर्चा करता है उसका मन में फ्रांस का यह घोषणापत्र हाता है। बहुत समय बाद यह घोषणा फ्रांस देश का सामान्य लक्ष्य चुनी है। विश्व के लगभग प्रत्येक बान में इसका अध्ययन नवल और आलानना हो चुका है। यह आधुनिक संसार के राजनैतिक और सामाजिक परिवर्तन में एक निर्विवाद तथ्य रहा है। पिछली शताब्दी में स्वतंत्रता के इच्छुक अनेकों राष्ट्रों ने अपने भौतिक सिद्धांतों का फ्रांस की इस घोषणा में खोजा है।

प्रो० साल्वमिना के विचारों में यदि किसी अभौतिक रचना से हमारा आशय किसी ऐसी वस्तु से है जिसकेवल सिद्धांत तक ही सीमित रखा जा सकता है और वह वास्तविकता के साथ नहीं चल सकती तो अधिकारों की घोषणा की घोषणा अथवा कोई अभौतिक वस्तु नहीं हो सकती जिसका फ्रांस के इतिहास में बाद में स्थापक रूप दिया है। निरस्त वह १७८९ के अधिकारों इस अर्थ में नसगिक नहीं था क्योंकि उनके आशय के अनुसार वह सारी मानव-जाति को उन्हीं अधिकारों नहीं मानता नसगिक नहीं लेकिन आधुनिक अर्थ में वे हमारे लिए नसगिक हैं क्योंकि उनका बिना हमारा सम्पत्ता गारंटी ही नहीं रह सकता और हमें लागू स्वयं भी जीवित नहीं रह सकता। १७८९ के बाद से फ्रांस में प्रत्येक शासन को इस घोषणा के सिद्धांतों को प्रतिभूति के साथ ही देनी पड़ी। उन लोगों की प्रेरणा ही थी जिन्होंने अनासवा शताब्दी में निरंकुशवाद के विरुद्ध आवाज़ उठाई और अपने सवधानिक शासन स्थापित किए। १७८९ के अधिकारों ही में से हमारा सारा सविनय के दण्ड सम्बंधा विधायन विकसित हुआ है। अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करने में पीड़ित राष्ट्रों ने इन्हीं के भीतर अपने प्रयत्नों का नैतिक औचित्य पाया है। आज भी जनसाधारण स्वतंत्रता के समानता के उन्हीं सिद्धांतों की दुहाई देते हैं जिन्होंने सशान्त में अधिकारों का काम किया और उनसे सामन्तवाद का अन्त किया जो अब दूसरे के हाथों में जा चुके हैं और अन्तिम विचार परिवर्तन के यंत्र बन गए हैं।

यह साचना नहीं चाहिए कि आज के सामाजिक संधियों को १७८९ की घोषणा ने जन्म दिया है। अथवा बहुत से तत्त्वों में उनमें योगदान किया है—व महान् कारगराने के उद्योग जहाँ धर्मिक वर्गों का शिक्षा मिलती है सामान्य कार्य के निकट सम्पर्क के रहने के कारण और जिससे वह अपने निजी सामाजिक कृत्य और सामाजिक जीवन का जान पाता है हमारे आधुनिक अधिकारों के विपरीतता के अभाव में जो शेष सबका अर्थव्यवस्था करने के लिए एक बिन्दु पर सबके उत्पन्न करती है शिखा के द्वारा जाननी मिलकर और अधिक विस्तृत धर्मों में विचारों का गहरता पाने के और मताधिकार जिसके द्वारा सम्पत्तिदान वर्ग अपने शासन पर नियंत्रण रख सकते हैं—इन सबके आधुनिक जीवन में सभारता की कमी पर प्रकाश

जाना है और व्यक्तिगत को व्यक्तिगत स्वामित्व की परम्परागत व्यवस्था के विरुद्ध प्रतिक्रिया उठाने की प्रेरणा दी है। लेकिन आज थर्मिक बग का अपने मसाम में उन्हीं सिद्धांतों की सहायता मिलती है जिन्होंने १७८६ के पूंजीवादी बग की रक्षा की और जिनका उद्देश्य मनुष्यों के लिए प्राचीन सर्वोच्च व सर्वमान्य बताया और अब पूंजीवादी बग उन्हें भी नहीं छोड़ सकता जब तक कि वह यह नहीं चाहता कि सामाजिक व्यवस्था की क्रिया बिल्कुल ठप्प ही न हो जाय और जब तक कि वह मात के डर से आत्महत्या ही करने पर नहीं उतरना। जसा कि फेव (Fagvet) ने ठीक ही कहा है बग युद्ध तो क्रांति में पहले भी मौजूद था लेकिन उस समय जनसाधारण के पास एका सामान्य आदेश या किसी प्रकार का विचार नहीं था जो सधप का उचित ठहराया या पवित्र बनाया जा उनका पाम शक्ति के विरुद्ध शक्ति का प्रतीक बन या कमजोरी में एस प्रयत्न कराए जा एक दूसरे की शक्तिशाली के विरुद्ध रखा कर। आज एका बिलकुल नहीं है। क्रांति न एकता का सिद्धान्त घोषित करके बग-सधप का मत्ता का कारण बतना नहीं दिया जितना यह घोषित करने का कारण कि उस अधिकार के साथ जीवित रहने की क्षमता प्राप्त है और अधिकार को अपने साथ रखने का कारण भी प्राप्त है।

'उन्नीसवीं शताब्दी की श्रम बड़ी गण्टाय सर्वधानिक तथा विधायिनी सफलताओं के विषय में भी यही कहा जा सकता है। वे प्रत्यक्ष अधिकारों की घोषणा में स उत्पन्न नहीं हुए हैं बल्कि वे आधुनिक सामाजिक व्यवस्था में स अनिवायत उत्पन्न हुए हैं। लेकिन १७८६ के अधिकारों में उन्हीं अपने सद्घातितक औचित्य पाया है उन्हीं समय से सम्मानित विचारों की प्रणाली प्राप्त की है जिनके भीतर उन्हें भी स्थान दिया जा सके। यदि यह सब अधीनिकवाद है तो सारा इतिहास ही अधीनिकवाद (metaphysics) है। (The French Revolution pp 147-48)

(३) राष्ट्रीय सभा ने मार दश में एक जसों शासन-व्यवस्था प्रचलित की। पुगन प्रण प्रशासन तथा इंटेंडेंसी (Intendancies) पड़ दी इट (pays d'etat) पड़ दी ईर्वेगन (pays d'election) पार्लमेट (Parlements) और बनेजिड (Bailliages) समाप्त कर दिए। दश का नय मिन स ८० विभागों (Departments) में विभक्त किया गया। ये विभाग क्षेत्रफल और जनसंख्या में समान थे तथा इनका नामकरण प्राकृतिक चिह्नों तथा नदियों और पर्वतों के नाम पर किया गया। प्रत्येक विभाग का कंटन (Canton) और कम्यून (Communes) में विभक्त किया गया। स्थानात्मक प्रणाली के प्रमुख राज्य द्वारा नियुक्त ज्ञान का अन्तः चून ज्ञान बग। उनका द्वारा चुनी हुए सधप सभाओं की व्यवस्था की जा गई। दश में एक नवीन नय प्रणाली प्रचलित की गई। इन विभागों के विभागाध्यक्ष ज्ञान द्वारा चुन जाते थे। दश की सधप प्रणाली का मरल और सगटिन करने के लिए भी प्रयत्न किया गया किन्तु यह काय, जय नयागियन प्रथम कांसुल (Consul) बना तब तक नहीं हो पाया।

(४) राष्ट्रीय सभा ने आर्थिक समस्या का गुनभान का भा प्रयत्न किया। देश का कोष बिल्कुल खाली था। इस परिस्थिति का ममानन के लिए सभा का अत्यन्त बड़ा काम उगान पड़ा। नवम्बर १७८९ में फाम के चर्चों की सम्पत्ति का जन्म कर लिया गया। इस सम्पत्ति का मुख्य कर्द ही कराइ हाय घोषा जाता है। चर्च सम्पत्ति को आश्रय धन (Security) मानकर राष्ट्रीय सभा ने कागज के नाट जिहे एज़िगनाटन (Assignats) कहा गया प्रचलित किया। कागज का मिक्का उस समय तक ठीक चलता है जब तक इसे अधिक न लाया जाय। कागज के मिक्का को उचित सीमा में ही प्रचलित करना आवश्यक है। किन्तु अधिक नाट चलाने पर इस प्रकार राज्य की आय का बढान के प्राकृतिक जालघ का राष्ट्रीय सभा राक नहा सकी और परिणामतः १७९१ में ही काफी महगाई दड गई थी। यह क्रम प्रतिक्रम चलता ही रहा और डायरेक्टरी (Directory) के समय दंग में कागज का मिक्का बढ करना पडा। यह मय है कि कागज का मिक्का प्रचलित करने में उस समय का आर्थिक संकट टन गया किन्तु अन्ततः इन नाटा (Assignats) का चलाना फामाना शक्ति का एक अत्यन्त दुखद अध्याय है।

प्रा० साल्वेमिनी के मतानुसार अमम्बली के सार प्रयोजना में मुद्रा का विषय ऐसा था जिसमें नई गामन-व्यवस्था का जमाने और किसी प्रकार की शान्तिकारी प्रतिक्रिया को राकने में सबसे अधिक यागदान किया। वास्तव में यह नाट (Assignats) कागजा मुद्रा थी जो स्वण पर नहीं बल्कि चर्च की भूमिया की जमानत पर आधारित थे। यदि शान्तिकार प्रतिक्रिया पादरा को इस योग्य बना दे कि वह अपनी चीजों का पुन वापस पा ले तो इन नोटा की गारण्टी समाप्त हो जायगी इसलिए उनका भाग्य शान्ति पर आश्रित था। जो कोई इस नाट को स्वीकार करता था—और प्रयत्न को उह स्वाकार करना पडता था क्योंकि वे वानूनी ग्राह्य थे—वह शान्तिकारी काय के हेतु उचल हो जाता था यदि वह यह इच्छा नहा रखता कि उनका धन सामन्ती और धार्मिक प्रतिक्रिया के साथ अथही हा जायगा। (The French Revolution p 169)

(५) राष्ट्रीय सभा ने चर्च से भी निपटारा किया। नवम्बर १७८९ में चर्च की मारी सम्पत्ति जन्म कर ली गई। फरवरी १७९० में मास्टराज (Monasteries) और अन्य धार्मिक सम्थाका का दवा दिया गया। अप्रैल १७९० में पूण धार्मिक महिष्णुदा का घापणा हुइ। जुलाई १७९० में धर्माचार्यों का विधान (Civil Constitution of the Clergy) का कानून बना। बिगपा और पादरियों की सख्या कम कर दा गइ और उनका राज्य के नियंत्रण में कर दिया गया। इह जनता चुना करने और राज्य बनन देना। पाप के माथ इनका सम्बंध केवल नाममात्र का ही रह गया। न्मिम्बर १७९० में एक घापणा हुई जिसके अनुसार सभी कयातिक धमाचार्यों का दंग के मविधान के प्रति भक्ति का गपय लेना थी। जसी आशका था पाप न मविधान की निन्ता की और फाम के धमाचार्यों का आशना दिया कि वे सविधान के प्रति भक्ति की गपय न लें। परिणामतः फाम के धमाचार्य दा गुटा में बँट

यस जिज्ञान यह शपथ ग्रहण की उह यायिक धर्माचार्य (Juring clergy) और जिज्ञानि गपय नहीं ली उहें वियायिक धर्माचार्य (non jurung clergy) कहा गया । अत्र तक निम्न श्रेणी के धर्माचार्य फ्रांसीसी शान्ति के प्रति महानुभूति रखते थे किन्तु म धोषणा के पश्चात् वे इसके विराधी हो गये । सविधान के प्रति शपथ ग्रहण करने वाले धर्माचार्यों की संख्या बहुत ही घाटी थी ।

(६) राष्ट्रीय सभा न फ्रांस के लिए एक नया सविधान तैयार किया इसलिए इस सविधान-सभा भी कहा जाता था । सविधान १७६१ में तैयार हुआ और सम्राट का स्वीकृति के पश्चात् देश में लागू हो गया । यह काम का प्रथम लिखित सविधान था । यह माण्डेस्क्यू द्वारा प्रतिपादित अधिकारों का पयवता (Separation of Powers) के सिद्धांत पर आधारित था जिसे १७८७ के अमेरिका के सविधान में निहित किया गया था । विधान-मण्डल याय-मण्डल और प्रशासन-मण्डल एक-दूसरे से अलग कर दिए गये और प्रत्येक के लिए अलग अलग विभाग स्थापित किये गये । वित्त-निष्ठा एक भवन वाली विधान सभा में निहित कर दी गई । इसके ७४५ सदस्यों को परोक्ष प्रणाली (Indirect) से दो वय के लिए चुना गया । मतदान का अधिकार केवल 'कायशील' (active) नागरिकों, अर्थात् जा नागरिक कर देते थे उह प्रदान किया गया । केवल उही सदस्यों को चुना जाता था जिनके पास कुछ सम्पत्ति थी । सम्पत्ति-योग्यता का अनुबन्ध इस बात के लिए शोतक है कि राष्ट्रीय सभा में बुजुर्ग अर्थात् मध्यमवय का आधिपत्य था ।

माधारणतः राज्य की प्रशासन-निष्ठा सम्राट के हाथ में छाड दी गई थी और उनका पद वशासमानुगत था । सम्राट को विलम्ब निषेधाधिकार (Suspensive Veto) प्राप्त था जिसके अनुसार वह विधान-सभा द्वारा पारित कानून का लागू होना स्थगित कर सकता था । किन्तु स्थानीय प्रशासन, न्याय, समुद्री सेना और थल सेना के अधिकारों से उसे वंचित कर दिया गया । उसके मंत्री का विधान सभा में कोई स्थान नहीं था ।

याय प्रणाली का पूणत बदल दिया गया । पहल यायाधीन अपने पद खरीदा करते थे और उह कुछ उपाधियाँ तथा सुविधाएँ भी प्राप्त थी । उह अपने पुत्रों को पुणत पद हस्तान्तरित करने का भी अधिकार था । किन्तु यह सब समाप्त कर दिया गया । भविष्य में सारे यायाधीन चुन जाने लगे । उनके पद की अवधि दो वय में चार वय तक होनी थी । फौजदारी मुकदमों के लिए ज्यूरी प्रणाली प्रचलित की गई ।

प्रो० हेन्रि के अनुसार, ' १७६१ का सविधान फ्रांस के शासन में उन्नति का चानक था । किन्तु यह चल नहीं पाया और दीपजीवी नहीं हुआ । शासन-निष्ठा प यवत शासन का प्रथम प्रयाग होने के नाते इसका अपने महत्व था, किन्तु इससे अन्व बाता में अनुभवहीनता और पून कायबुशालता प्रकट हुई जिसके कारण भविष्य में होने वाली कठिनताओं की भूमिका बनी । काय-मण्डल और विधान-मण्डल दोनों सम्पत्ता से पूषक कर दिये गये थे कि इनके बीच सम्पक बनाय रखना

जगाना, फिर भी एक महान् काय था। केवल इतना याद रहना चाहिए जना लुई एनक न कहा है कि अमेम्बली में वह अग्नियुक्त भाजना बनाए रखना और चमकाना 'वह वायु जो सड़क' से चन रही थी आवश्यक थी। वह कहता है कि उन अद्वितीय निम्न म इस गटवड में उत्पन्न दगवाजी ने भी कई विद्वत्तापूर्ण प्रेरणाएँ पदा कीं। प्रत्येक विद्रोह अनकों विचारा स भरपूर था। दूसरे गटन में केवल जनमाधारण न अमेम्बली का हर बार पुनर्निर्माण का काय करने पर बाध्य रखा। एक क्रान्तिकारी अमेम्बली भी था कोई वह जितने अपने को राजतंत्र के ऊपर क्रान्तिकारी रीति से थापा जैसा कि मविधान मभा न किया वह भी बूढ़ न कर पाती, यदि जनमाधारण उस आंग बटान पर बाध्य न करत और यदि उन्होंने अपनी हिमात्मक क्रान्तियों से क्रान्ति के विरुद्ध विरोध का कुचल न डाना होता। (The Great French Revolution p 173)

सम्राट का पलायन (जून १७९१)—३० मितम्बर १७९१ को राष्ट्रीय सभा का काय समाप्त होने में पहले फ्रांस में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना घटी और वह सम्राट का देश में पलायन करने का प्रयत्न था। लुई सान्तेवें का भीड़ बरसाई से पत्थि घसीट कर लाई थी। ट्युलिरीज (Tuileries) में वह लगभग अवकाश प्राप्त व्यक्ति की तरह रह रहा था और राष्ट्रीय सभा में वह कुछ विशेष अवसरों पर आता था। सम्राट न अनुभव किया कि वह वस्तुतः परिषद की भीड़ का बन्दी है। मिर्बो (Mirabeau) की मृत्यु के पञ्चान उमका मारत आशय समाप्त हो गया। राष्ट्रीय सभा द्वारा उनाय गये नये मविधान ने ता उमक मार अधिकार छीन लिया। उसे अनुभव हुआ कि इन परिस्थितियों में अधिक समय तक रहना उसके लिए असम्भव है। उस यह कहते हुए मुना गया कि मैं इस अवस्था में फ्रांस का सम्राट रहने की अपनी मद्रुत का राजा होना अधिक पसन्द करूँगा किन्तु यह गीत ही समाप्त हो जायगी।' फ्रांस में आस्ट्रिया भाग जाने की योजना बनाई गई। राज-परिवार के मध्यम वेप बन्त कर मुन्य न म अनन निवास-स्थान में निकल गये। यदि राज-परिवार मावधान रहा होता और अमुत्रिवासा पर ध्यान न देकर भीमान्त पर गीत्राति-गीत्र पदचन का प्रयत्न करना ता उसके बच निकलने की पूरा सम्भावना थी। किन्तु राज-परिवार का गीमान्त न वान भील दूर ही पकड़ लिया गया। उन बन्दी अग्रमान-जनक अवस्था में परिषद लाया गया। सम्राट के अग्रपत्र पलायन के बड़े गभीर परिणाम हुए। इसमें स्पष्टन प्रकट हो गया कि सम्राट क्रान्ति का हृदय स समर्थक नहीं था और वह मविधान का गनु था। राजपायर (Robespierre) और दण्टन (Danton) जैसे व्यक्तियों ने मीठा की कि सम्राट-पद समाप्त करके उनके स्थान पर प्रजातंत्र की स्थापना कर ली जाय। किन्तु राष्ट्रीय सभा में सबैधानिक राज-पत्र के समर्थन का बहुरूप या परिणामत सम्राट के विरुद्ध कोई कारवाई नहीं हुई। सम्राट न मविधान का समर्थन करने की गणय ली और यह मामला यन् दबा दिया गया। इस प्रकार की परिस्थितियों में ३० मितम्बर १७९१ का राष्ट्रीय सभा का काय पूरा हुआ और इस भग कर किया गया।

Suggested Readings

Acton	1	<i>Lectures on the French Revolution</i>
Bourne	1	<i>The Revolutionary Period in Europe</i>
Lowell	1	<i>The Eve of the French Revolution</i>
MacLehose	1	<i>From the Monarchy to the Republic</i>
Mathews	1	<i>The French Revolution</i>
Robinson & Beard		<i>Readings in Modern European History</i>
Thompson E		<i>Popular Sovereignty and the French Constituent Assembly (1789-1791) 1952</i>
Thomson		<i>Europe Since Napoleon</i>

विधान-सभा और राष्ट्रीय सम्मेलन

(Legislative Assembly and National Convention)

विधान-सभा (The Legislative Assembly) (१७९१-९२)—१७९१

राष्ट्रीय सभा द्वारा बनाय गये सविधान के अनुसार चुनाव हुए और प्रथम अक्टूबर, १७९१ को विधान-सभा का अधिवेशन हुआ। सभा में ७४५ सदस्य थे और दुर्भाग्यवश सभा ने ही मर्यादा अपने काय क लिए नये थे। मूलतः से राष्ट्रीय सभा ने निस्वायत्तता का एक कानून बना दिया जिसके अनुसार राष्ट्रीय सभा के सदस्यों को नये सविधान द्वारा स्थापित विधान-सभा के सदस्य बनने पर राक लगा दी। यह काय कानून दुर्भाग्यपूर्ण रहा और इसके कारण देश को हानि उठानी पड़ी। विधान-सभा के सदस्यों में बहुत स उग्रवादी थे और यह भागामी विपत्ति का चिह्न था।

फ्रांस के क्लब (Clubs in France)—उस समय कुछ राजनैतिक क्लबों की स्थापना हुई जिनमें सबसे प्रमुख जैकोबिन (Jacobin) और कोरडिलियर क्लब थे। जैकोबिन क्लब आरम्भ में नरम नीति का समर्थक था किन्तु कालान्तर में यह क्रमशः उग्रतर जाता गया। विरोध मिराबो और लफाइट के क्लब छोड़ने के पश्चात् उनके सदस्य उग्र हो गये। परिणामतः रोबेस्पियर (Robespierre) एक उग्र प्रजातन्त्रवादी के रूप में प्रकाश में आया। उसके नेतृत्व में देश के उग्र नागरिकों का संगठन किया गया और देश भर में इसकी बहुत-सी शाखाएँ खोल दी गईं। कुछ समय पश्चात् जैकोबिन क्लब विधान-सभा का प्रतिद्वन्दी बन गया। कोरडिलियर क्लब आरम्भ में ही उग्र विचारधारा का समर्थक था। इसका नेता डेम्पेन था। इसके सदस्य समाज की निम्न श्रेणी के लोग थे और प्रजातन्त्र के आरम्भ से ही प्रबल समर्थक थे। यह उल्लेखनीय बात है कि इन क्लबों का जनता पर बड़ा भारी प्रभाव था।

विधान सभा में राजनैतिक वर्ग (Political groups in the Assembly)

—विधान-सभा के राजनैतिक वर्गों का उल्लेख किया जाना चाहिए। जहाँ तक सविधानवादियों का प्रश्न है वे १७९१ के सविधान के समर्थक थे, इसलिए देश में बंधनपूर्ण शासन प्रणाली को चाहते थे। वे सीमित अधिकार वाले सम्राट् को मानने के लिए तैयार थे। प्रजातन्त्रवादी दो मुख्य गुटों में बँटे हुए थे गिराण्डिस्ट और जैकोबिज। जैकोबिज ही विधान-सभा में उनके ऊँचे आसनों के कारण पहाड़ (Mountain) भी कहा जाता था। गिराण्डिस्ट नरम विचारों के थे, किन्तु वे प्रजातन्त्रवादी शासन के समर्थक थे। वे अपने दम से क्रियारहित नहीं थे। उनका दृष्टिकोण विपरीत होने की अपेक्षा गिराण्डिस्ट अधिक था। वे कानूनी दलों और तरीकों का

विशेष ध्यान रखते थे और पशुबल के प्रयोग के विरुद्ध थे। प्रा० हेज़न (Haz n) के मतानुसार कवि लामार्तिन (Lamartine) की गम्भीर लखना ग जिग पमय म क्रांति का काल्पनिक इतिहास लिखा जाने लगा गिराण्टिस्टा का कविबन्धन अमरता मिल गई। कवि न इनका उच्च विचारों वाला और दुष्ट मगर के भय म फम दंगभक्ता के रूप म बणन किया है। उसका बणन ठीक नहा था। व गुणानन के लिए चलितान करने वाल निस्वार्थ दंगभक्त नहा व। यह राजनातिना का गुण वा जिमके काय उसकी महत्वाका तात्मा के समान प्रयत्न नहा व। जगा कि र्ग्य प्रसार की अवस्था म बहुधा होता है उन्नि अपनी उदात्त भावना (vaulting emotion) का दाम भी चुकाया। उह वीरता और उत्साह स अपन जीवन के दुःखान दनन का स्वागत करना ता आता था किन्तु उह मृत्यु स भी कठिन काय करना तथा जीवन का ऊँचा उठाकर विश्व-कल्याण के कार्यों म लगा टना नहा गाता था। उनका एक भावन युवती के नेतृत्व म चलन जाने नवयुवका का दन था। इनका पर पणक और अशुभ मितारा श्रीमती रोला (Madame Roland) की जिगा बनना जगा देर चमक कर पद प्रदर्शन किया तथा जा इनकी वास्तविक नना बनकर र्गमच पर धाडी दर गरजी लेजिन शान्ति के उतरप के समय उमरी वह घनघोर मनना पग्मि म फिर मुनाई नही पडी। इन लागा का मसार के प्रति कितारी दृष्टिकान था। उनका मुख्य बौद्धिक भाजन प्लुटार्क (Plutarch) के रूप व। प्राचिन यूनाना और गम के विद्वाना के प्रति उनकी श्रद्धा अमीम थी। व प्रजातंत्रवादी इस कारण व क्याकि प्राचीन युग के महापुरुष प्रजातंत्रवादी थे। उह यह भी आगा की कि प्रजातंत्रीय प्रणाली म उह दंग प्राप्त करने तथा चमकने के अधिक अवसर प्राप्त नाग। व अपन पूर्व आदर्शों के दश से चकाचौध ध और ईर्ष्या की भावना म दहका करत व। जेकाविज कट्टर प्रजातंत्रवादी थे। व देग म प्रजातंत्र प्रणाली की गानन व्यवस्था स्थापित करने के तथा इसकी रक्षा के लिए सब प्रकार के साधन प्रयुक्त करन के लिए प्रस्तुत थे। यह सत्य है कि आरम्भ म गिराण्टिस्ट (Girondists) मदस्या का विधान-मभा म बहुमत था किन्तु जेकाविन बलव के समयन के कारण जगातिना का प्रभाव दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा था।

सम्राट द्वारा निषेध किये गये कानून (Laws Vetoed by the King)—
विधान-मभा ने दो विधेयक पारित किये। एक विधेयक के अनुसार सारे धर्माचार्यों का धर्माचार्यों के सविधान (Civil Constitution of the Clergy) के अनुसार अपना काय सम्पादन करना था। इसकी व्यवस्था के अनुसार जा धर्माचार्य किनी विधेयक तिये तक इस सविधान को न मानें उनका अवकाण वनन (Pension) रान किया जाता और उह सदेहात्मक दृष्टि स देखा जाता था। काई भी गडबड हान पर उह पदच्युत कर दिया जाता। दूसरे विधेयक म प्राप्त के उन नागरिका के लिए व्यवस्था थी जो देग स भाग गय थे और विदेशी नाकिया स मिलकर हस्तक्षेप करके फ्रांस की शान्ति को कूचलने का पडयत्र रच रहे थे। उह भगोडे (Emigres) कहा गया। कानून के अनुसार उह एक विधेयक तिये तक स्वदेश लौट आने की आगा दी गई। एमा न करने की अवस्था म उनकी सम्पत्ति को जप्त कर लेने तथा मृत्यु-दण्ड

दन की व्यवस्था थी। लुई सोलहवा इन दाना कानून म मे किसी को भी स्वीकार नहीं करना चाहता था। परिणामतः उसने इन दोनों को निपेवाधिकार से हटा कर दिया। 'धर्माचार्य-संविधान' को न मानने वाले धर्माचार्यों के विरुद्ध कानून स्वयं उसकी आत्मा का बचोदता था तथा देग स भागे हुए लोग के साथ भी मझाट को महानुभूति थी। परिम व नागरिक मझाट के इस ढंग का महन करने के लिए तयार नहीं थे परिणामतः उहान २० जून, १७६२ को मझाट के महल पर आक्रमण कर दिया। उहान मझाट को एक कमरे मे तथा सम्राज्ञी और राजकुमार टुपिन का दूसरा कमरे मे पाया। वहाँ घण्टे तक मझाट का भँभाटा गया उसका अपमान किया गया और उसे घूरा गया। जब भीड़ जा लगी तो उनम मे एक न कहा हम दूसरी बार आयेंगे और जा हम चाहते हैं लकर रहग। यह एक भयानक घटना थी।

नीच दूसरी बार फिर आई। २१० अगस्त १७९२ की आधी रात का राजधानी के चर्चों मे घण्टे वजन तक और डण्टन (Danton) के मतत्व मे एक सिमा पर उनाह नीच न परिम की नियमित सरकार को निरन्धित कर दिया। मन्त्र के रखवा का हटा दिया गया था। व भाग गया। उनके नायक की हत्या कर दी गई। परिन्धित मन्त्री भयानक था गत कि राजपरिवार ने सुबह आठ बजे महान मन्त्रर दही कटिनाड मे मन्त्री के भवन मे आश्रय लिया। लुई सोलहवें न भवन मे घूमन हुए कहा— मैं एक भयानक अपराध का रासन के लिए आया हूँ। महल के म्बिम रखा और नीच मे डट कर रक्नपात हुआ। ६०० के लगभग रदाव मारे गये भीड़ न महन मे घम कर पूर मार आरम्भ कर दी। राज-परिवार सभा भवन मे तीन दिन रहा और मन्त्र पदचान उह उनके मन्त्र तक एक टैम्पल (Temple) की कमान जनी अंग्रेग मीनारा मे फट कर लिया गया।

त्रिदाह का उद्देश्य सफल हुआ। मझाट का निरन्धित कर दिया गया। डण्टन को 'सामय-श्री वनाशन एक अस्थायी (Provisional) सरकार की स्थापना कर दी गई' सिन्नु वामनविष मत्ता परिम की कम्पून और नेकाजिन कनर के हाथ मे थी।

● युद्ध की ओर ले जाने वाले तत्व (Factors leading to War)—फ्रांस धीरे धीरे युद्ध की ओर बढ़ रहा था और मन्त्र अनेक कारण व। फ्रांस के साम्तिकारी अपन विचारों का बचन देग मे प्रचार जाना हा पर्याप्त नहीं समझन थे यदि व अपन विचारों का पूराप व अर्थ म्पा मे भा फनान के लिए दह-सकल्प थे। पूराप के अर्थ म्पा के सामक फ्रांस के नागरिका की इन गतिविधिया के विरुद्ध थे और म्गमे कर्ता म्पन म्। अगाडे (Emigres) पूराप के अर्थ देगा मे फ्रांस के विरुद्ध प्रचार कर रहे थे और विरुद्धी महापता मे उनके द्वारा फ्रांस पर आक्रमण जान की पूगे सम्भावना थी। फ्रांस मे जागीरदारा के कर तथा धर्माचार्यों के दशमाण कर (Tithes) समाप्त कर लिये गए थे। यह व्यवस्था अल्ससी (Alsace) तथा अर्थ सोमाना प्रदेश पर जा पहन जमन साम्राज्य के अंग थे, लाहू जाती थी। १६४८ की

वस्टफेलिया (Westphalia) की संधि के अनुसार जमन सामन्ता का कुछ अधिकार और मुविधाएँ देना स्वीकार किया गया था और फ्रांस सरकार की इस व्यवस्था से उन्हें चोट पहुँची। यह सत्य है कि फ्रांस सरकार ने इन जमन सामन्ता का हरजाना (Compensation) दना चाहा किन्तु सामन्ता ने इस ठुकरा दिया और जमन ससद ने प्रपील की। फ्रांस ने ऐविग्ना (Avignon) का अपनी सीमा में मिला लिया। यह क्षेत्र चौदहवीं शताब्दी से निरन्तर पाप के अधिकार में था। यह काय अन्तर्राष्ट्रीय कानून को भंग करना समझा गया। फार्मीसी आस्ट्रिया के विशेषतः विरुद्ध यह कयाकि हमने फ्रांस को भगाड़े सामन्ता को जमनी की धरती से नहीं हटाया था। आस्ट्रिया पर यह सदेह किया जाता था कि वह उन्हें मदद देता है। २७ अगस्त १७६१ को आस्ट्रिया और प्रशिया दोनों ने पिलनिटज (Pilnitz) घोषणा की। इसमें घोषित किया गया कि फ्रांस की सरकार का काय समूचे यूरोप के राजाघ्रा का काय है। प्रशिया और आस्ट्रिया दोनों फ्रांस में हस्तक्षेप करने को तयार हैं यदि और देगो के शासक भी उनका साथ देने को तयार हों। फ्रांस की जनता ने विदेशी हस्तक्षेप की धमकी को बहुत बुरा माना और इससे युद्ध के समयक और फ्रांस में राजशाही शासन समाप्त करने के इच्छुक गिराण्डिस्टो के हाथ और भी मजबूत हो गये। फ्रांस सरकार ने आस्ट्रिया को चुनौती दी और अप्रैल १७६२ में युद्ध आरम्भ हो गया।

यद्यपि गिराण्डिस्ट युद्ध की माँग कर रहे थे तथा इन्होंने युद्ध आरम्भ कर भी दिया था किन्तु वे इस सफलतापूर्वक चला नहीं सके। यह लोग क्रियाहीन राजनीतिगण थे। परिणामतः फ्रांस सब मोर्चों पर परास्त हुआ। बेल्जियम पर इनका आक्रमण असफल रहा। आस्ट्रिया और प्रशिया की सामूहिक सेना ने इन्हें हरा लिया। फ्रांसियों ने अपनी पराजय का कारण अपनी अनुभवहीनता मानने की अपेक्षा सम्राट की गतिविधि का माना। यह आक्षेप लगाया गया कि फ्रांस के सैनिकों ने राजपरिवार के शत्रुओं का गुप्त भेद बता दिये और परिणामतः फ्रांस की पराजय हुई है। फ्रांस की पराजय का मूल दोष सम्राट पर थोपा गया। जिस समय सब और स सम्राट की निंदा की जा रही थी उसी समय सयुक्त शक्तियाँ (Allied Forces) का प्रधान सेनापति ब्रुन्सविक के ड्यूक (Duke of Brunswick) ने जुलाई १७६२ में फ्रांस की जनता का नाम एक घोषणापत्र प्रकाशित किया जिसमें उसने बुरबोन्स (Bourbons) का को फ्रांस में उसके गायधूषण स्थान पर पुनः स्थापित करने की घोषणा की गई थी। इस घोषणा का उत्तर फ्रांस ने अगस्त १७६२ में पेरिस में विद्रोह करके दिया। इस विद्रोह का परिणाम डेप्टन की तानाशाही (Dictatorship) की स्थापना में हुआ। १० अगस्त १७६२ को सम्राट को निलम्बित करके देश के लिए नयसंसविधान बनाने के उद्देश्य से राष्ट्रीय सम्मेलन के लिए चुनाव कराने का आदेश दिया गया।

डण्टन (Danton) की नीति को उसने ही गान्धी में व्यक्त किया जा सकता है। मरे मतानुसार गणु को रोक्ने का एक ही साधन है और वह यह कि सम्राट का समर्थन का भयभीत कर दिया जाय। दुस्साहस अधिक दुस्साहस और

विधान-सभा और राष्ट्रीय सम्मेलन

सबदा बढता हुआ दुम्नाहस ही हमारा रक्षक है ।' (Audacity, more audacity and always greater audacity)। उसकी नीति का परिणाम परिस म सम्राट के समयकी की सामूहिक हत्याएँ हुआ। पुरुष स्त्रिया और बालक मामत और यायाधोग पुजारी और धमाचाय और अय लाग दिन पर सम्राट के समयका से महानुमति रखन का म-देह था अत्यन्त निदयता म मौत के घाट उतार दिये गये। जम-जमे मयुक्त गक्तिया की मनाएँ फाम म धुमती जाती थी वमे-वम ही भय बढ कर अगजकता म परिवर्तित हाता जाता था। देश की सर्वोच्च मत्ता डेण्टन (Danton) और उनके माधिया के हाया म चली गई। २० सितम्बर १७९२ का मयुक्त शक्तिनया की बालमी नामक स्थान पर पराजय हुई और उनकी प्रगति म्क गई। फाम की तन्वासीन आपत्ति से रक्षा हा गई। इम विजय न फाम की सेनाया का आत्मविदवाम प्रदान किया और इसके पदचात उह मफयता पर-मफलता प्राप्त हाती गई। इम प्रकार की परिस्थितिया म २१ सितम्बर, १७९२ का राष्ट्रीय सम्मेलन आरम्भ हुआ।

राष्ट्रीय सम्मेलन (National Convention) (१७९२ ९५)—प्रो० हज (Hayes) के गदो म सम्मरत इतिहास मे किमी भी देश के विधानमण्डल का इम प्रकार की उतमी हुई समस्याया का सुलभाने का काय नहीं मीपा गया जसा कि राष्ट्रीय सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन का सीपा गया।' अपदस्थ (Deposed) सम्राट् का भी कुठ करना था। देश को विदेशी आक्रमण से बचाना था। आन्तरिक विद्रोह समाप्त कराना था। देश मे शासन-व्यवस्था म्थापित करनी थी। सामाजिक सुधार पूरे करके मजबूत करने थे। देश के लिए सविधान तयार करना था। इन सब महान् समस्याया को सफलतापूर्वक हल करने का श्रेय राष्ट्रीय सम्मेलन को ही है।

सम्राट पर मुकदमा चलाया गया और उसे सबसम्मति से देश द्राह का अपराधी पाया गया। थोडे बहुमत से उसे तुरन्त मृत्युदण्ड देने का निषय हुआ। गिराण्टिस्टा न दया की अपाल की किन्तु जेकोबिना न उमकी तत्काल मृत्यु की मांग की। अन्त म २१ जनवरी १७९३ रविवार के दिन सम्राट को मृत्यु-दण्ड (Guillotined) दे दिया गया। उमके अन्तिम शब्द थे 'मजबूत' जिस अपराध का दोषी मुझे ठहगया गया है उमम में निर्दोष हूँ। मर रक्त मे फाम की खुशी किरजीवी हा।

विदेश नीति (Foreign Policy)—राष्ट्रीय सम्मेलन की नीति का दा पीपका म वधान किया जा सकता है—विदेश-नीति और आन्तरिक नीति। विदेश नीति के विषय म एव कठिन परिस्थिति मंभालनी थी। दिसम्बर १७९२ मे राष्ट्रीय सम्मेलन न यह घाना (Decree) प्रचलित की— फाम राष्ट्र यह घोषणा करना है कि वह उम प्रथम व्यक्ति का अपना गनु मानगा जा स्वतंत्रता और ममानता का नहीं मानगा अथवा इनकी निन्हा करत हुए राजपरिवार और विनोपाधिकार प्राप्त वर्गों मे अपन मन्बध बनाय रखने मित्रता करन अथवा उन्हें बुनान की इच्छा करगा। जनवरी १७९० मे लुई मानहवें का इस आधार पर मृत्यु-दण्ड दिया गया कि उनन राष्ट्रीय सविधान सभा के सदस्या का घूम दी तथा अपन साथी राजाधों को महाबला

व लिए पत्र लिखे। फ्रांस द्वारा यूरोप के सत्र राजाओं के विरुद्ध युद्ध घोषणा करने और लुडोविक गोल्ट्ज़ के मृत्यु-दण्ड देने के कारण आस्ट्रिया प्रणिया के ग्रेट ब्रिटन हान्ज़े स्पेन और मारडीनिया ने फ्रांसीसी शक्ति के कुचनन के लिए सगठन किया। याह्नर स आन वाली इस शक्ति का सामना करना फ्रांस के शक्तिकारियों के लिए सरल कार्य नहीं था किन्तु सम्मेलन ने बड़ी शक्ति से परिश्रमिता का सामना किया। कार्नट (Carnot) के नेतृत्व और नियंत्रण में फ्रांसीसी से बाग़्ना का भावना भर गई। जनवरी ३१ १७९३ के श्रेण्डन ने घोषणा की हमारे प्रजातंत्र की सामान्य स्वयं प्रकृति न नियत की है और हम इन सीमाओं का भित्तिज के चारों ओर राइन, एल्पस पारिनीस और मसुद्र तक प्राप्त करेग। हमारे प्रजातंत्र की नागरिक सामान्य हानी चाहिए और पृथ्वी का कोई शक्ति हम इन तक पहुँचने में राक नहीं सकती। फरवरी १७९३ में ५ लाख व्यक्तियों की बलात् भरती का घोषणा हुई। अगस्त १७९३ में आजा प्रसारित हुई कि अठारह और पच्छिम वप की आयु के सब नागरिकों का सैनिक सेवा करनी पन्गी। कार्नट ने जवानों का भर्ती किया दापा रायण का समाप्त किया विशेष स्वयंसेवक संगठित किया सना का प्रशिक्षित (Trained) करके उन्हें शीघ्रनापूर्वक फ्रांस पर हानि हुए आक्रमण को रोकने के लिये मार्चों पर भेज दिया। उसी मार्चों की याजनाएँ बनाई विश्वस्त अधि कारियों का नियुक्त किया और उनमें फ्रांस का शक्ति की रक्षा के लिए एक नई भावना का फूँका। १७९३ ई० के समाप्त होते ही उनके पास सात लाख सत्तर हजार सगठन जवान थे जिनमें से अधिकांश शक्ति के बड़े अधविश्वासा भक्त थे। बुजुर्ग नागरिक कारीगर और किसानों ने सरकार का समर्थन किया। उनका मुख्य मान मारमिलीज का शक्ति-मान था और वे स्वतंत्रता समानता और मित्रता के ध्वज का लहराते थे।

फ्रांस का सैनिकवाद सगठन राष्ट्र के सिद्धांत पर टिका था। शीघ्र ही दश में विदेशी सेनाओं का सफाया ही नहीं हुआ, अपितु युद्ध नीदरलैंड पर दबाव डालता हुआ राइन (Rhine) के किनारे सवाय (Savoy) में तथा पारिनीस (Pyreneese) को पार कर गया। फ्रांस की सेनाएँ इतनी सफल हुई कि कार्नट का जिस पहले सुरक्षा प्रबंधन की उपाधि प्राप्त थी अब विजय प्रबंधन पुकारा जान लगा। १७९४ ई० के अदभुत और आश्चर्यजनक अभियानों की सफलताओं का वर्णन करने का प्रयत्न करना असम्भव है। संक्षिप्त रूप से इतना ही कहना आवश्यक है कि १७९५ में जब राष्ट्रीय सम्मेलन की अवधि समाप्त हुई तब फ्रांस के विरुद्ध प्रथम गठन का पूर्णतः नष्ट कर दिया गया था। स्पेन को प्रजातंत्रवादी फ्रांस से समझौता करके मुह की लानी पड़ी। १७९५ ई० की बसल (Basle) की संधि के अनुसार प्रणिया के राजा ने फ्रांस का राइन के बाएँ तट पर अधिकार दे दिया था। हान्ड का विलियम पंचम राज्यभुक्त (Deposed) कर लिया गया और उसका राज्य बटाविया प्रजातंत्र में बदल दिया गया तथा इस प्रजातंत्र ने फ्रांस से मित्रता कर ली। फ्रांस की सेना का आस्ट्रिया नीदरलैंड और राइन (Rhine) के क्षेत्रों पर

प्रतिकार मिल गया। फ्रांस के प्रजातंत्र के विरुद्ध केवल ग्रेट ब्रिटेन, आस्ट्रिया और साय्बेरिया ही गस्त्र उठाये रहे।

गृह-नीति (Home Policy)—गृह-नीति के विषय में भी फ्रांस का बड़ी बड़ियाँ विपत्ति का सामना करना था। जनता में मौनिक भावना जागृत हो चुकी थी परिणामतः बहूत स्थानों पर बस लायन्स (Lyons) मारमिलेज (Marsailles) और बार्सा (Bordeaux) में दंग फनाद हुए। ला वेंदा (La Vende) के किसानों ने राज प्रणाली तथा बथानिक चर्च की स्थापना के लिए विद्रोह किया। किन्तु सब विद्रोह दृढ़तापूर्वक कुचल दिये गए और किमी प्रकार का विरोध सह नहीं किया गया।

(१) १७९३ में सम्मेलन दस के सर्वोच्च कायमण्डल की मत्ता एक जन सुरक्षा समिति (Public Safety Committee) का सौंप दी। इस समिति में रायस्पियर (Robespierre) कान्ट और सण्ट जस्ट जैसे प्रभावशाली व्यक्ति थे। १७९३ में १७९४ तक फ्रांस में वस्तुतः आतंक का राज्य (Reign of Terror) था। जन सुरक्षा समिति के दो प्रमुख विभाग सवसाधारण सुरक्षा समिति और क्रांतिकारी न्यायालय (Revolutionary Tribunal) थे। सन्तुह-युक्त कानून (Law of Suspects) के अनुसार कोई भी व्यक्ति, जो जन्म से सामान्य परिवार का है या जो क्रांति के पहले पदाधिकारी रहा है या जिसका किमी भगोड़े से सम्बन्ध रहा है अथवा जो नागरिकता का लिखित प्रमाण पत्र प्रस्तुत न कर सके मृत्युदण्ड का भागी था। इस अवधि में ग्युलाटिनी (Guillotine) न बड़ा काय किया। अनुमान किया जाता है कि केवल पश्चिम में ही आतंक काल में पाँच हजार व्यक्तियों का मृत्यु-दण्ड दिया गया। जिनकी हत्या की गई, उनमें मर्यानी मेरी एण्टायनट (Antoinette) और थोमस रोलैंड (Rolland) भी थे। यद्यपि आतंक पेरिस में ही आरम्भ हुआ था किन्तु यह शीघ्र ही दहाना में भी फैल गया। सब जगह स्थानीय न्यायालयों का स्थापना का गई जिसमें सन्तुह युक्त व्यक्तियों की खोज करके उन्हें मार दिया जाय। लायन्स (Lyons) में सबड़ा व्यक्ति मार डाले गए। कान्टस में कैरियर प्रपगण्डिया का लोयरे (Loire) में ले गया और वहाँ उह दुबोकर मार डाला। अनुमान लगाया जाता है कि प्रदेशों में लगभग १५००० व्यक्तियों का मार डाला गया। इस मौनिक भावना ने अपराध करने वाले व्यक्तियों के ही प्राण नहीं बलि अदितु किन्तु व्यक्तियों का भी नहीं छोड़ा गया। आतंक राज्य डेण्टन (Danton), रा सापियर और सण्ट जस्ट के हटन पर समाप्त हुआ।

(२) राष्ट्रीय सम्मेलन की सबसे बड़ा उपलब्धि थी देश में राष्ट्रीय धर्म की निष्ठा और प्रचार। एक सच्चा राष्ट्रीय मत्ता तयार करने के हेतु १७९८ में एक आर्गनलि प्रचारित की गई जिसके अनुसार मंत्र सार्वभौमिकता का मत्ता में नवीं शान्त अनिवाय घोषित हुआ। आर्गनलि में आदेश दिया गया कि युवक युद्ध में सार्वभौमिकता के लिए धर्म बनायें और युद्ध-मामलों का माथों पर पट्टाये नियोक्तों और कपड़े तैयार करें और अस्पतालों में परिचर्या करें बालक कपड़े की पहिना

और पत्नीता तयार करें वयावृद्ध युद्ध में सगे युवका के माहृम का बगाने गत्रभा क प्रति पणा जगान तथा प्रजातन्त्र में एवता स्थापित करन क लिए मावर्जनिक स्थाना में प्रचार काय सभालें । इस प्रकार यूरोप में बहुत बड़ स्तर पर धार्मिक रूप में अनिश्चयवाद का प्रारम्भ हुआ ।

(३) राष्ट्रीय सम्मेलन ने यह भी कानून बनाया कि समूच देग में एक भाषा ही शिक्षा का माध्यम हो ।

(४) देग के राष्ट्रीय कानूना का संग्रह करके माहिता (Code) बनाने का काय को भी शुरू किया गया । अतः इस ओर भी पर्याप्त प्रगति हुई । यह ध्यवस्या भी की गई कि ऋण के कारण किसी का कैद की सजा न दी जाय । फ्रांस में उप-निवेशों में दासता अन्वय हो गई । ज्येष्ठ सन्तान का उत्तराधिकार कानून का सम्मान कर दिया गया जिसका अनुसार केवल ज्येष्ठ पुत्र ही सम्पत्ति का स्वामा होता था और अन्य बालकों को कुछ नहीं मिलता था । सब बालका को सम्पत्ति में बराबर भाग का अधिकारी माना गया । दशमलव प्रणाली (Metric System) का बज्रन और माप प्रचलित किये गए ।

(५) धर्म के क्षेत्र में भी कुछ प्रयाग किये गए । राष्ट्रीय सम्मेलन रुचिवाग ईसाईयत का प्रति विरोध भाव रखता था । पादरिया को सदेह-युक्त व्यक्ति सम्माना जाता था । फ्रांस से ईसाई धर्म का प्रभाव कम करन का प्रयत्न किया गया । पेरिस को कम्यून के तत्त्वावधान में नवम्बर १७९३ में पेरिस के महान गिरजाघर कथड्रल डे नाट्रे डाम (Cathedral de Notre Dame) में आस्तिक तक का धर्म की स्थापना हुई किन्तु १७९४ में रोक्सपायर के पतन के पश्चात् राष्ट्रीय सम्मेलन का विचार बदल गया और यह नीति अपनाई गई कि धर्म एक व्यक्तिगत वस्तु है और किसी धर्म की स्थापना अथवा समर्थन करना राष्ट्र का काय नहीं है । परिणामतः सबको धार्मिक स्वतन्त्रता प्रदान की गई और १७९५ में बहुत से गिरजाघर ईसाई धर्म की पूजा के लिए लौटा दिये गए ।

(६) राष्ट्रीय सम्मेलन ने देग के पचाग (Calendar) में भी परिवर्तन किये । वर्ष को बारह महीनों में विभक्त किया और प्रत्येक महीने में दस-दस दिन का तीन सप्ताह बनाया । हर दसवाँ दिन अवकाश होता था । इस प्रकार ३६५ या ३६६ दिन से वर्ष के अन्त के पाँच या छ दिन राष्ट्रीय पर्व का नाम से अवकाश का हान थे । महीना का नाम भी बदल दिये गए तथा २२ सितम्बर १७९२ से वर्ष का आरम्भ होता था ।

१ अगस्त से सितम्बर तक महीनों के नाम, वेस्टिमेयर बुमेयर फिमियर त्रिवाय पत्रकोष्ठ, क्रिटोय जर्मिनल, प्लोरियल, प्रेरियल, मेसाटोर, यर्मिदोर और फ्रुवितदोर थे । अन्य समकालीन अगरेजी पयायवाची महीने, न्यूजी रनाजी, फ्राडा रिलपा ट्रिपा, निष्पी, रोवरी, प्लवारा, बोवरा, न्यूटी हाटी और स्वाटी थे ।

(७) राष्ट्रीय सम्मेलन ने सामाजिक क्षेत्र में भी कुछ प्रयोग किये। भादों की सम्पत्ति जप्त कर ली गई। धनवान् घमासान सामन्त सबका मन्दहयुवत व्यक्ति समझा जाता था। उनी-बन्धो जागीरा का टुकड़े करके छोट-छोट जमीन के टुकड़े में सरस शर्तों पर बच दिया गया जिसमें साधारण जनता भी अपनी धरती प्राप्त कर सके। इस प्रकार बहुत से किसान जमींदार हो गए। तिन जागा की धरती उबल की गई उह हरजाना नहीं दिया गया। मारट (Marat) का मन था कि धनवाना न इतने समय तक लोगों की हडिडिया निचाडी है कि अब उनसे इसका प्रतिराध चुकाया जायगा। महगाई की गेऊन क लिए अनिवाय ऋण उगाह गय। अधिकतम कानून बनन तथा अन्न और दनिक जीवन की आवश्यक वस्तुओं के दाम निर्धारित करन के लिए लागू किया गया। यह भा आना दी गद कि प्रत्येक व्यक्ति परम्पर नागरिक' (Citizen) कह कर सम्बाधन करे और समाज में किसी भी प्रकार का अंधे नीच का भेद न हो।

(८) जुलाई १७९४ में राज्यपायर क पतन क पश्चात् मन्धि व्यक्तिता के विरुद्ध कानून तथा अधिकतम कानून वापस ले लिय गय। कान्तिवारी 'यामानय बंद कर दिय गय। १७९५ के आरम्भ में फ्रान प्रजातंत्र प्रणाली के नामन क लिए तयार हो चुका था। गिराण्डिस्टा (Girondists) द्वारा १७९२ में तैयार किए गए संविधान को रद्द करके १७९५ में नया संविधान बनाया गया। नय संविधान में फ्रान में दो भवनों वाली समष्टि का व्यवस्था की गई। निम्न भवन में ५०० सदस्य तथा उच्च-भवन (Council of Ancients) में २५० सदस्य थे। इन दो भवनों का एक कानून बनान और पटनाल करन का काय सौंपा गया। काय-मण्डल की सत्ता पांच डायरेक्टरों की सभा को जिसे डायरेक्टरी कहा गया सौंपी गई। इन डायरेक्टरों का विधान मण्डल चुनता था और ये राज्य के मंत्रा नियुक्त करत थे जिनका काय दण में कानून लागू करना और शान्ति का व्यवस्था बनाय रखना था।

(९) राष्ट्रीय सम्मेलन की एक अन्य महत्वपूर्ण सफलता थी दण में न्यमल मूल पालितवनीक स्तुन 'गवर्नर का अजायबघर राष्ट्रीय पुस्तकालय और इन्स्टीट्यूट दि फ्रान' की स्थापना करना।

आतंक का राज्य (Reign of Terror) (१७९३-९४)—९ मार्च १७९३ को कान्तिकारी 'यामानय की स्थापना के साथ नियमानुसार आरम्भ हुए आतंक-राज्य क विषय में लिखना अत्यावश्यक है। यह राज्य राज्यपायर (Robespierre) की हत्या हान पर २९ जुलाई १७९४ में समाप्त हुआ। कुछ लोगो की दृष्टि में आतंक-राज्य लक्ष्यहीन रक्तपात घुणित धार अनावश्यक था। दूसरे लोगो का दृष्टि में यह अत्यावश्यक था। कहा जाता है कि 'बठार अनुशासन सामूहिक वाग्दता उत्पन्न कर सक्ता है। गिराण्डिस्टा क कुशासन के पश्चात् फ्रान का बठार नियंत्रण की आवश्यकता थी। दण में हजारों विद्रोही और बापर थे जिन्हें ठीक करन क लिए आतंक-राज्य आवश्यक था। फ्रान का आन्तरिक कठिनाइया और बाहर क आक्रमणों से बचान के लिए यह आवश्यक समझा गया कि गार फ्रान का एक छावना में बदल

दिया जाए। आवश्यकता तुरत थी और परिणामत इसे पूरा करने के साधन बठोर और तीव्र हुए।

भ्रातक राज्य को पागल दृष्या मागल लों (Martial Law) कहा जाता है। भय और क्रान्ति के विराधियों के विरुद्ध क्रोध नएक सनिक व्यवस्था का रूप ल लिया था। परिस्थितिया की पुकार थी कि फ्रांसिसियों के माचों पर लडने को प्रस्तुत करने के लिए गीम्र हा कोई व्यवस्था की जाए और यह काय भ्रातक राज्य से सम्भव हो गया। इस भ्रातक राज्य ने डेप्टन वानट और सण्ट जस्ट को इस योग्य बना दिया कि वे परिस्थिति का सामना कर सकें। डेप्टन न तो सडू का प्यासा था और न ही वह भ्रष्ट था। वह दंग के मल्याण के लिए देगभक्ति से प्ररित था। उसन अपनी गम्भीर वाणी और विशाल शरीर का दश की सेवा म लगा दिया। वानट एक जमजात शासक योद्धा और युद्ध विद्या का पडित था। जा भी काय उसन किया पूण दक्षता से किया। कहा जाता है कि उमन ही नेपालियन की विजलियों का निर्माण किया था और उसके बिना भ्रातक राज्य अत्यंत घणित हो गया होता। उसन तेरह सनाया का सगठित किया उनका सब आवश्यकताए पूरी की और उन्हें विजय प्राप्त कराइ। सेंट जस्ट का नाम सुस्त और दक्षता हीन व्यक्तियों के लिए भयप्रद हो गया था। उसन हृदय में दंगभक्ति ठाठें मारा करती वह युद्ध के माचों और परिस के वाच बडी तजी से बक्कर लगा कर इस मार अभियान में जीवन फूँका करता था।

१७६४ की आजप्ति के अनुसार सारे सशक्त शरीर वाले व्यक्तियों को सेना में भर्ती कर लिया गया। जन सुरक्षा के लिए समूचे देश में सुरक्षा और व्यवस्था बनाये रखने के लिए पुलिस को अधिकार सौंप दिए गए। क्रान्तिकारी न्यायालयों को अधिकार दिया गया था कि वे किसी भी व्यक्ति को जिस पर प्रजातंत्र के प्रति भक्ति हीन होने का सदेह हो मत्यु दण्ड दे सकते थे। सदिग्ध व्यक्तियों के कानून न सरकार को किसी भी व्यक्ति का कद करके मत्यु-दण्ड देने की छूट दे दी।

इस बात से इकार नही किया जा सकता कि भ्रातक राज्य अपने उद्देश्य में सफल हा गया। फ्रांसीसी सेनाएं नीदरलण्ड में विजयी हुई। वे रक्षात्मक युद्ध से विजय की ओर अग्रसर हुई। दिसम्बर १७६३ में उन्होंने टयुलोन को प्राप्त करके लाविण्डों को कुचला। एल्प्स और पारिनीस पर उनका अधिकार हो गया। सयुक्त राष्ट्रों का पीछे धकेल दिया गया। उन्हें डक्क मोयूज ट्रुकोइंग और ए स पर से घरे हटाने पर बाध्य कर दिया। अनुशासन इतना बठोर था कि प्रत्येक सेनापति और सनिक को अपना पूण शक्ति से काय करना पडता था। मोयूज के दुग रक्षक को कह दिया गया था कि दुग का मूल्य उसे अपने सिर से चुकाना पडेगा। यद्यपि हाउकाड न डक्क के घेरा डालने वाली को पीछे धकेल दिया किंतु उसे मत्यु-दण्ड इसलिए दिया गया कि उसने गनु के पीछे हटने (retreat) को भगण्ड (rout) में बयो नहीं बदला।

फ्रांस की सेनाओं की सफलता का कुछ श्रेय समय-संचालन के सगठन उद्देश्य के लिए उनकी धर्माधना तथा बठोर अनुशासन को है तथा कुछ श्रेय सगठित राष्ट्रों

की कमजोरी को भी है। उनमें याजना अथवा सच-संचालन का संगठन नहीं था। प्रत्येक राष्ट्र का अपनी अपनी पक्षी थी। आस्ट्रिया, प्रशिया और रूस पोलैण्ड के विभाजन की योजना में अपना अपना भाग प्राप्त करने में व्यस्त थे। परिणामतः वे फ्रांस के साथ युद्ध पर पूरा ध्यान नहीं दे सके। यह सत्य है कि छोटे पिट (Pitt, the Younger) ने अपनी सेनाशाही की नीदरलैण्ड्स पर दृक्कृत करण का प्रयत्न किया किन्तु वह भी इधर उधर की बातों में लगे जाता था। ड्यूक ऑफ याक (Duke of York), जो नीदरलैण्ड्स में ब्रिटिश सेनापति था नितांत अकुशल था जैसा कि निम्नलिखित पद से प्रकट है—

“बिचारा बूढ़ा ड्यूक ऑफ याक,
दस हजार थी सेना पास।
कभी चढ़ाता उन्हें चौटो पर,
फिर उतार ले आता पास।”

संगठित राष्ट्रों के पास बंबल दो ही रास्तें थीं। प्रथम माग था कि वे रास्तें के सार दुर्गों और फ्रांस की रक्षा का परास्त करते हुए सीधे पेरिस की ओर बढ़ जाते। दूसरा माग था कि पहले वे फ्रांस के सार दुर्गों को जीत कर फिर पेरिस की ओर बढ़ें। वास्तव में संगठित राष्ट्रों ने दूसरा माग ही अपनाया। उनकी धारणा थी कि पहले, माग के रोकने वाले दुर्गों का एक-एक करके जीतने पर पेरिस में अव्यवस्था का फलान में सहायता मिलेगी और यदि तुरंत ही पेरिस की ओर बढ़ा गया तो सम्भव है सारी जनता अपने देश की रक्षा के लिए एकदम तैयार हो जाय। वास्तव में हुआ यह कि संयुक्त राष्ट्रों ने माग को रोकने वाले दुर्गों का जीतने में बहुमूल्य समय गवा दिया और फ्रांस का इनसे टक्कर लेने और परास्त करने के लिए अपनी सेनाओं का तैयार करण का श्रवण मिल गया।

यह बिल्कुल सत्य है कि जिस युद्ध-यंत्र ने फ्रांस की रक्षा की, उसे मानव-रक्त से चिबना किया गया था। फ्रांस में प्रत्येक बात का बेदर स नियंत्रण होता था। जन-सुरक्षा समिति के प्रतिनिधियों को जिलों का अधिकार सौंपा गया और किसी भी प्रकार या रूप में उनके बाय का बिलापन सहन नहीं किया जाता था। लायन्स नगर के जिराण्डिस्टों का समर्थन किया। इस विद्रोह को दबाने में ४१ महीने लगे। जब यह हुआ तो राष्ट्रीय सम्मेलन ने अज्ञात प्रसारित की लायन्स नगर का उजाड़ दिया जाय। वह प्रत्येक घर जिसमें अमीर रहते हैं, गिरा दिया जाय, वहाँ केवल गरीबों, देग भवता तथा मावजनिक प्रयोग की इमारतें शिक्षा के स्थान तथा उद्योगों के प्रयोग में आने वाली इमारतें छोड़कर, सबको गिरा दिया जाय। इस नगर का नाम ही मिटा दिया जाय और भविष्य में स्वतंत्र नगर (Liberated City) के नाम से पुकारा जाय। इस नगर के ३५०० व्यक्तिता का बंदी बनाया गया और लगभग आधे व्यक्तिता की मौत के घाट उतार दिया गया। जो व्यक्ति इस विध्वंस का प्रबंधक था उम बहत मुना गया ‘आह! स्वतंत्रता का उपद्रव कितना प्यारा दृश्य है! कितने धान-द का समय है!’

विप्लव जिते न प्रजातत्र क विरुद्ध विद्रोह किया। यहाँ क लाग पादरिया क विरुद्ध कानूना म सट्टमते नयी थ। उहाँन प्रजातत्र का मनाषा म भनी ज्ञान म इन्वार कर दिया। सरकार इम विद्रोह का दवान म पूगत जायमुक्त था, किन्तु एत दवाते समय जो अत्याचार हुए व परिस्थिति क अनुसार अनुचित थ। राष्ट्राय मम्म लन ने इस णाय के लिए करियर का नियुक्त किया और उमन बबरला का मान्ड स्थापित कर दिया। उमकी दृष्टि म त्रातिकारी जायालय की काय प्रणाला धामी थी अत उमने कदिया का मुट बचा कर गाली मरवा दा। उमने कदिया का बधवा कर नावा म बठा कर नाव-अहित लापर नदा म डुवा दिया। उमक कायी म स्वय जन-भुरशा ममिति का नी दोन हुआ। करियर का उत्तर था मग यह अपराध है कि नाथे अपनी मजित्र पर नहीं पडैच पाइ। नदी म ताणें इतनी अधिक् सख्या म थी कि उमका जल भी विपाकन हा गया। करियर का पदच्युत कर दिया गया किन्तु उमके विरुद्ध कोई पारवाई रही की गई।

बन्दीगृहा म खूब भोड थी। कान्तिकारी जायालय के मम्मूल निरन्तर पुरुष और स्त्रिया लाई जानी थी। क्षमा-दान कभी भूले भटके ही दिया जाता था साधारणत म्युनोतिनी का दण्ड ही दिया जाता था। अक्टूबर १७६३ म मेरी एष्टायनट को मत्यु-दण्ड दिया गया। गिराण्डिस्टा को बडी सख्या म मत्यु-दण्ड दिया गया। ३ नवम्बर १७६३ को डयूव आफ आरलियन्स फिलिप का जिसन त्राति का मुत्र समयन किया सम्राट का मत्यु-दण्ड देने क पत्र म अपना मतदान दिया तथा त्राति कारियो को अपना महल सौंपा उम मौन क घाट उतार दिया गया। १० नवम्बर को श्रीमती रोला को मत्यु-दण्ड मिला। जमे ही वह मच पर चडी, उसन कहा हे स्वतंत्रता। तेरे नाम पर कितन घोर अपराध किए जान हैं। १२ नवम्बर को राष्ट्रीय सभा के प्रथम प्रवान बले का मार डाला गया। कास्टाइन और बिरान जम सनापतिया को इसलिए मत्यु-दण्ड मिला कि उहाने पडयत्र किया अथवा शत्रु का पीछा करन मे सुस्ती दिलाई थी।

१७६४ के वमन्त तक लोग का आतक राज्य का अधिक् दिन चलाना व्यय लगने लगा विरोधत जबकि लक्षुमा को मारकर पीछे हटा दिया जा चुका था। जनता की इच्छा थी कि ये भयप्रद जायालय म्युलाटिनी डुवाना और गाली मारन के भयानक काय बंद हा जाने चाहिएँ। अप्रैल १७६४ म डण्टन ने अपनी इच्छा प्रकट की और उने इमका मूल्य अपना जीवन दनर चुकाना पडा। राम्सायर अपना तानाशाही बनाय रचन के लिए दंड मकल्प था। उसकी महत्वाकाशा रूसा (Rousseau) के लेषा का तानाशाही नायक बनन की थी। उसन जवत्ता के व्यक्तियत्र आचार और धारणा म ह्मन्पेन करन का प्रयत्न किया कयाकि उसक विचारानुसार मन्त्राचार का पालन क्रम म नही जाना था। उमका इच्छा सबसे पहले फ्रांस को ही गुड सदाचारी बनान की थी। उसन कम्म्यूना क प्रमुख सदस्या का उनके धार्मिक विचारा के कारण मरवा डाना। कहा जाता है यदि रा मपायर के जीवन का अत न कर दिया जाता ता अनवरत रूप स जागा क मिर छत की स्लटा की तरह धूल म कटक मिरन हो रहन। इमने मारी मत्ता अपन हाया म प्राप्त करने का प्रयत्न

किया। फाउच (Fouch) ने पराक्ष रूप में राष्ट्रीय सम्मेलन के भय का बढ़ावा देकर उन्हें रोन्सपायर का विरोध करने के लिए साहम प्रदान किया। रोन्सपायर का स्वतंत्रता का नीचा गिराने का अपराधी घोषित किया गया। उमन राष्ट्रीय सम्मेलन के विरुद्ध पेरिस की कन्वून का लक्ष्य का प्रयत्न किया। उसका प्रयत्न अमफल हुआ। उसे पकड़ लिया गया और २८ जुलाई, १७९४ को उसका सिर काट दिया गया। आतंक का राज्य उसकी मृत्यु के साथ ही समाप्त हो गया।

ग्राण्ट और टेम्परले के अनुसार 'रोन्सपायर का पतन, आतंक-राज्य में होने वाली अनेक घटनाओं में से एक मामूली घटना होती, सम्भवतः इसकी बागडार किन्हीं और भी उग्र और आचार-हीन आतंककारियों के हाथ में चली जाती, किन्तु यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि रोन्सपायर की मृत्यु के क्षण से ही आतंक-राज्य गीघ्रता से लुप्त होने लगा। इसके बहुत-से कारण हैं। अठारहवीं शताब्दी के फ्रांस में ग्युलादिनी का राज्य स्वामी नहीं हो सकता था। पेरिस में जनमत स्पष्ट रूप से और अत्यन्त शीघ्रता से इसका विरुद्ध होता जा रहा था। किन्तु दो कारण अग्रम कारणों से अधिक महत्त्वपूर्ण थे जिनके कारण आतंक-राज्य का उस समय लुप्त होना अनिवार्य हो गया। पहला कारण था कि विदेशी आक्रमण का भय गीघ्रता से समाप्त हो रहा था। पल्युरस के युद्ध के पश्चात् फ्रांस स्वयं एक आक्रान्ता (aggressive) शक्ति बन गया था और पूव उत्तर और दक्षिण में उसके सीमान्त पर आक्रमण पूर्णतः विफल रहे। देश में सशक्त प्रति आत्म-विश्वास और गौरव की भावना का उदय हो रहा था जिसके समुक्त क्रान्तिकारी 'पामालय और ग्युलादिनी से निरन्तर काटे जान वाले लोगों के समूह, दोनों ही जघन्य अपराध और भ्रूणतापूर्ण प्रतीत होते थे। आतंक राज्य मूलतः एक सैनिक व्यवस्था थी और जैसे ही मैना में भय समाप्त हुआ, इसका भी अन्त हो गया। यह बात कितनी ही कम महत्त्वपूर्ण क्यों न हो किन्तु राज्यपायर का अन्त दूसरे शब्दा में सम्मेलन की विजय थी। सम्मेलन और कन्वून उस फ्रांस की प्रतिनिधि सभा और पेरिस की प्रतिनिधि सभा में रोन्सपायर के मामले में सीधी टक्कर थी। अन्त में सम्मेलन की और फ्रांस की ही विजय हुई। क्रान्ति के इतिहास में प्रथम बार एक प्रतिद्वन्द्व व्यक्ति की शक्ति द्वारा प्राप्त के चुन हुए प्रतिनिधिमता की शक्ति का कुचलन का प्रयत्न अमफल हुआ तथा उम की पराजय हुई। सम्मेलन का पहलू की अपेक्षा अधिक आत्म-विश्वास हुआ और इतनी कठिनाई से प्राप्त की गई शक्ति को संगठित करने में लिए उचित कदम उठाए गए।

इस बात में इनकार नहीं किया जा सकता कि 'आतंक राज्य' एक आवश्य-कता थी। देश-द्रोहिता और कायरता से निवृत्त का अग्रम कार्य ही नहीं था। किन्तु आतंक राज्य में बहुत-सा खनपात व्यय ही हुआ। यदि राज्यपायर न टेण्टन की सम्मति मानी होती और नरमपे बन्द कर दिया जाता तो इतना लहू न बहता।

यॉममन न लिसा है कि आतंक राज्य प्राचीन प्रणाली की सरकार के अन्त और आन्तरिक शान्ति तथा बाहर से आक्रमण के डर के कारण पनपा किन्तु

इसके इतना भयकर बन जाने और इतनी देर तक चलने के अत्यन्त कारण हैं। मग्रेब से सबहारा बग की हिंसा, अत्यधिक अत्याचार की भावना को, नगरनिवासियों के जोश और निर्यात की भडका देना इसके कारणों में से थे। यह अत्यन्त केवल अत्याचारी सामान्य बग धर्माचार्यों और विश्वासघाती मध्यम बग के लिए ही नहीं, अपितु साधारण फ्रांसीसी स्त्रियाँ और पुरुषों के लिए भी था जो दल-बन्दी के जाड़ तोड़ में फँस कर दुभाग्य के शिकार हुए। बहुत से लोग पर केवल इस लिए देशद्रोह का अपराध लगाया गया कि अपनी जान बचाने का एकमात्र यहाँ साधन था। यह हत्याकाण्ड बग युद्ध का साधन नहीं था क्योंकि इसके ७० प्रतिशत शिकार किसान मजदूर और प्राचीन गामन प्रणाली के विरुद्ध विद्रोह करने वाले लोग थे। पेरिस के क्रांतिकारी 'यापान' ने २६३६ व्यक्तियों को मृत-मुदण्ड दिया। मारे क्रांतिकारी 'यापान' ने १७ १०० व्यक्तियों को मृत-मुदण्ड दिया। इसके अनिश्चित ४० ००० व्यक्ति ला विण्डी और लायन्स जैसे नगरों में सम्मेलन के विरुद्ध विद्रोह करने के कारण नामूर्च्छित हत्याकाण्डों के शिकार हुए। यद्यपि यह महान् अत्याचाररूप का बग किन्तु आधुनिक तानाशाही द्वारा किए जाने वाले अत्याचारों में यदि इनकी तुलना की जाय तो यह मानव राज्य बन और विचारण था। (Europ Since Napoleon, p 21)

Suggested Readings

Acton	<i>Lectures on the French Revolution</i>
Boyrne	<i>The Revolutionary Period in Europe</i>
Carlyle	<i>The French Revolution</i>
Clapham J H	<i>The Causes of the War of 1792</i>
Fyffe	<i>History of Modern Europe</i>
Gardiner B M	<i>The French Revolution</i>
Greer D	<i>The Incidence of the Terror 1793</i>
Mathews	<i>The French Revolution</i>
Stephens	<i>The French Revolution</i>
Thomson	<i>Europe Since Napoleon</i>

गिराण्डिस्ट और जैकोबिन्ज़

(The Girondists and the Jacobins)

गिराण्डिस्ट (The Girondists)—१७९२ की विधान सभा में गिराण्डिस्ट और जैकोबिन्ज़ नाम के दो प्रमुख राजनीतिक दल थे। गिराण्डिस्टों का बहुमत और जैकोबिन्ज़ का अल्पमत था। गिराण्डिस्ट दल के बहुत से नेता फ्रांस के गिरोण्डे नामक प्रदेश के रहने वाले थे। इसलिए इस दल का नाम भी गिराण्डिस्ट पड़ गया था। ये लोग ईमानदार और सभ्य थे। उनकी इच्छाएँ निस्वार्थ थीं। ये लोग उच्चबौद्धिक स्तर, शिक्षा और दीक्षा वाले थे। वे लक्ष्य प्राप्ति में आचारहीन नहीं थे। उनकी नीति नम्र थी। उन्हें व्यवस्था से प्रेम था और स्वयं भी सयत थे। वे प्राचीन रुढ़िया से समझौते के समर्थक नहीं थे। इसका उद्देश्य था फ्रांस में अपनी कल्पना की आदर्श व्यवस्था स्थापित करना। वे प्रजातंत्र प्रणाली की गामन-व्यवस्था के समर्थक थे। उनका विश्वास था कि युद्ध घोषित होने की अवस्था में राजशाही की निन्दा होने की बहुत सम्भावना थी तथा उच्च प्रजातंत्र की स्थापना की आशा थी। अप्रैल, १७९२ में आस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध आरम्भ करने में इनका बड़ा हाथ था। इन लोगों के त्रियाहान आदर्शवादी होने के कारण फ्रांस युद्ध में अग्रगण्य रहा। फ्रांस की सेनाओं की प्रत्येक मोर्चे पर पराजय हुई। अपनी आन्तरिक स्थिति को सुधार कर क्षुब्ध से लोहा लेने की अपेक्षा अपनी पराजय का मारा दोष सम्राट के सिर मढ़ा गया। इस दोषारोपण का परिणाम यह हुआ कि सम्राट के निवास-स्थान पर आक्रमण किया गया। उनके स्वयं प्रहरक्षकों की हत्या कर दी गई और उसे स्वयं विधान-सभा के भवन में शरण लेनी पड़ी। परिण की भीड़ ही सर्वोच्च सत्ता बन गई। इस प्रकार की परिस्थितियों में १७९२ में राष्ट्रीय सम्मेलन का अधिवेशन हुआ।

जैसे ही राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन हुआ, फ्रांस में प्रजातंत्र की घोषणा हुई, गिराण्डिस्टों और जैकोबिन्ज़ के बीच सत्ता प्राप्त करने का मध्य आरम्भ हो गया। आरम्भ में गिराण्डिस्ट प्रबल थे और वे परिण की कम्प्यू के सदस्यों का दमन करने तथा उन्हें दण्ड देने के लिए दृढ़-मन्थ प्रतीत होते थे। वे कम्प्यूना का भग करने में सफल हुए। राष्ट्रीय सम्मेलन के लिए राष्ट्रीय सना (National Guard) तयार करने की योजना को स्वीकार नहीं किया गया। मितम्बर के हत्याकाण्ड के उत्तरदायी व्यक्तियों को दण्ड देने की माँग भी अस्वीकार कर दी गई। दलक द्वारा रोम्बपायर, मारट और अन्य नेताओं की आलाचना के कारण परस्पर कटुता बढ़ गई। सत्ता पर उनके एकाधिकार को जैकोबिन्ज़ की ओर से भय हा गया। अक्टूबर, १७९२ में युद्ध-मन्त्री पाके (Pache) गिराण्डिस्ट दल को छोड़कर जैकोबिन्ज़ों के साथ मिला गया।

युद्ध मन्त्रालय जकारिना का सम्भारन-मन्त्र बन गया और पांच (Pache) ने अपना मन और प्रभाव जकारिना के हाथों में मोड़ दिया।

जनवरी १७६३ में गिराण्डिस्ट गम्माट के अभियोग और हत्या में सुनने लाया गया। जकारिना ने गम्माट का मृत्यु दण्ड देने की माँग कर रहा था किन्तु गिराण्डिस्ट ने गम्माट को यह अपने विशेषाधिकार छोड़कर एक बधानिक प्रपुम की स्थिति में रहना स्वीकार कर लेता उससे सम्भौता करने की तयार था। गम्माट को मृत्यु दण्ड देने का प्रस्ताव बहुत बड़ स्तर पर धमकियाँ देने का साधन बनाकर स्वीकार किया गया।

१७६३ के आरम्भ से ही गिराण्डिस्ट ने मन्त्र छोड़ना शुरू किया। रोलान्ड (Roland) ने जा गिराण्डिस्ट के बड़ी सक्रिय मन्त्रियाँ थी जनवरी १७६३ में त्याग पत्र दे दिया। गराट (Garat) का गृह मन्त्रालय सौंपा गया। वह एक उत्तम विचार वाला तथा अल्प उम्र वाला व्यक्ति था किन्तु अपने पक्ष के लिए पूर्ण अयोग्य था। उसने अपने दिल के हितों की रक्षा नहीं की क्योंकि उस जकारिना के गिराण्डिस्ट के उत्तर देने की याचना और तयारियाँ का पता लग चुका था। अतः उसने न तो अपने दिल का ही सूचित किया और न स्वयं कोई कारवाही की। मूलतः उसने न तो गतिविधियों का कोई महत्त्व ही नहीं दिया।

पांचे के जकारिना दिल में जाते ही उस युद्ध मन्त्रालय से हटा दिया गया किन्तु वह परिम का महापौर (Mayor) चुना गया और इस प्रकार जकारिना दिल का पेरिस का बम्बून पर अधिकार प्राप्त हुआ। वही दिन गिराण्डिस्ट दिल के नये सचिवान के त्रिण प्रस्ताव प्रकाशित हुए। ये प्रस्ताव अत्यावहारिक थे तथा किनी को भी स्वीकार नहीं हुए। जकोदिन दिल का गिराण्डिस्ट दिल पर इस बहाने से आक्रमण करने का अवसर मिल गया कि ये लोग प्राणशिर नामना को अधिक अधिकार देकर परिम के प्रभाव को कम करना और प्रजातन्त्र की एकता को तात्ना चाहते हैं। गिराण्डिस्ट दिल ने एक प्रकार में परिम बम्बून पर युद्ध की घोषणा कर दी। उन्होंने पेरिस निवासियों द्वारा पदा की गई आयुक्तों की धार निराला की। उन्होंने मूलतः से यह भी प्रचार किया कि देश के अर्थ प्रदक्ष सम्भव है किन्तु परिम की बम्बून नहीं है। उन्होंने उन सब का दण्ड देने की चेष्टा की जो लोग इन्हें भय दिखाने हैं। किन्तु वास्तव में उन्होंने अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए कोई कारवाही नहीं की। डेण्टन ने आपस में सम्भौता करने का प्रयत्न किया किन्तु इन्होंने उनकी भी निन्दा की। वास्तव में क्वन डेण्टन ही वह व्यक्ति था जो इनका उद्धार कर सकता था और योग्य था। डेण्टन ने अपनी निन्दा के उत्तर में गिराण्डिस्टों का वेदल इतना ही कहा, 'तुम लोग क्षमा करना ही नहीं मील।'

राज्य की आर्थिक स्थिति बिगड़नी आरम्भ हुई और इसका सुधार करने के लिए अधिक सख्ती में नोट (Assignats) जारी करने पड़े। महँगाई के कारण इन नोटों की कीमत गिर गई और वस्तुओं की कीमतें बढ़ गई। जनता को बड़ी हानि हुई और इन सब कठिनाइयों के लिए गिराण्डिस्ट दिल को उत्तरदायी ठहराया गया।

गिराण्डिस्ट दल के कुछ सदस्यों ने पेरिस के लिए सस्ती रोटी देने के लिए धन व अनुदान का विरोध किया। इससे इस दल का विरोध और भी बढ़ गया और १० मई १७६३ को गिराण्डिस्ट दल का गठन प्रयोग द्वारा हटाने की योजना बनी। जैकोबिन दल के नेताओं ने इन यानतों का समर्थन नहीं किया। अतएव यह प्रयाग असफल हुआ।

निरम समय गिराण्डिस्ट टगमगा रहे थे और निरंतर जनता का विश्वास खा रहे थे उन दिनों जैकोबिन इनके विरुद्ध सभ्य की तैयारी कर रहे थे। इनके पीछे पेरिस कम्यून की मारी शक्ति थी जैकोबिन नेताओं का आदर तथा जैकोबिन कदवा की शक्ति थी। उनके पास सैन्य शक्ति भी थी। राष्ट्रीय रक्षक सेना (National Guard) का अलग से संगठन भी हुआ। जिस समय उनके शत्रु अन्तिम सभ्य के लिए तैयारी कर रहे थे गिराण्डिस्टों ने अपने बचाव के लिए कुछ भी नहीं किया। पेरिस कम्यून पर वे इसलिए विश्वास नहीं कर सके थे क्योंकि इन्होंने अपने वक्त्रव्या और कार्यों से इसका अपना शत्रु बना दिया था। इन्होंने लोगों ने कहा था कि पेरिस को जला कर राख कर दिया जाय जिससे आगामी सन्तान यह पूछे कि पेरिस मीन नदी के किनारे बसा हुआ था। गिराण्डिस्ट राष्ट्रीय रक्षक सेना पर इसलिए विश्वास नहीं कर सके थे क्योंकि वह जैकोबिनो के नियंत्रण में थी। उनके पास एसी कोई संस्था नहीं थी जो इनके समय में हथियार उठा सके। उन्हें मध्यमवर्ग अथवा सामन्तवर्ग दाना में से किसी का भी नेता नहीं माना जाता था। वे प्रतिभाशाली व धार्मिक दार्शनिक दार्शनिकों में सब सकते थे किन्तु वे जैकोबिनो की गैरकानूनी शक्ति व प्रयाग से अपनी रक्षा करने में असमर्थ थे।

अप्रैल १७६३ के हत्याकांड के लिए उत्तरदायी भारत पर गिराण्डिस्टों ने अभियोग लगाया किन्तु उसे क्रांतिकारी मजालय ने मुक्त कर दिया। गिराण्डिस्टों ने पेरिस के विभिन्न भागों में होने वाले पडयंत्रों की निन्दा की किन्तु निन्दा होने पर भी ये पडयंत्र हानि ही रहे। इससे फसला करने की अपेक्षा गिराण्डिस्टों ने पेरिस के विरुद्ध दंग भी महायत्ना माँगी। उन्होंने राष्ट्रीय सम्मेलन का पेरिस से मारसिले में जान का प्रस्ताव पास किया। उन्होंने पेरिस कम्यून को भग करने की चेष्टा भी की। मई, १७६३ में उन्होंने राष्ट्रीय सम्मेलन के विरुद्ध पडयंत्रों की जाँच के लिए एक विशेष समिति की स्थापना की। समिति ने पडयंत्रों के नेता हार्वट का कंड करने की आज्ञा दी। इसमें परिस्थिति और भी जटिल हो गई। जैकोबिनो और पेरिस कम्यून ने गिराण्डिस्टों के विरुद्ध कदम उठाने का निणय किया। ३१ मई, १७६३ को इस समिति का भग कर दिया और २ जून १७६३ को राष्ट्रीय सम्मेलन को धमकाकर गिराण्डिस्ट दल के २२ नेताओं को कंड करने की स्वीकृति ले ली। इन लोगों को पकड़ कर फाँसी दे दी गयी। जब उन्हें फाँसी के लिए ले जाया जा रहा था वे क्रांति-गीत गाते रहे और उनका गीत मृत्यु ने ही बन्द किया। श्रीमती रोलाँ ने कहा, "ओ स्वतंत्रता! तेरे नाम पर कितने अपराध किये जाते हैं।" गिराण्डिस्ट नेताओं के दुःखद अन्त से सारे देश में शोक फैल गया। मायन्स, मारसिले व दुमुलोन और बेरिन्स ने पेरिस की सरकार के विरोध की घोषणा की। अन्त में

अनेक प्रदेशों ने विद्रोह का भण्डा उठाने की तयारी की। गगणित राष्ट्र परिग की ओर सब ओर से बढ़े भा रह थे। इंग्लैण्ड का समुद्री बड़ा फ्रांस व कई बन्दरगाहों को रोके खड़ा था। कुछ गिराण्डिस्ट परिग से बच निकल कर उत्तर में जाकर विद्रोह की तयारियाँ करने लगे। किन्तु जकोबिना ने सारी परिस्थिति को बड़ी मजबूती से संभाला। विद्रोहों को कुचल दिया गया और गणतन्त्र को मारकर पीछे खदेड़ दिया गया। देश को आन्तरिक परगानियाँ स ओर विदेशी आक्रमण से बचा लिया गया।

गिराण्डिस्टों का पतन हुआ किन्तु इस तथ्य का मानने से कौन मना कर सकता है कि उनके आदर्शों से सहानुभूति तथा उनकी उद्गम आशाएँ और साहस सर्वदा सम्मान का पात्र रह्या। किन्तु ये लोग सबदा अयोग्य नामक माने जायेंगे।

जकोबिन्स^१ (The Jacobins)—गिराण्डिस्टों का तुलना में जकारिन्स असंस्कृत लगभग अशिक्षित असभ्य और आचारहीन व्यक्ति थे। कभी-कभी वे अत्यन्त निन्द्य हो जाते थे। वे बहुधा भ्रष्टाचारी थे। किन्तु वे त्रियाणील जागरूक राजनीतिज्ञ थे और अक्सर पढ़ने पर अधिक-से अधिक खतरे का मुकाबला करने को तयार रहते थे। वे अपने शत्रुओं के प्रति निन्द्य थे किन्तु परास्त होने पर अत्यन्त घोर कष्ट सहन करने के लिए भी तयार रहते थे।

जकोबिनो का सिद्धान्त था कि सारे अधिकार और सारी सत्ता जनता में निहित है और सारे कानून और सरकार को उसकी इच्छानुसार चलना चाहिए। जनता का कार्य अपने शासकों की निगरानी ध्यान में उनके चरित्र का नियंत्रण और उन्हें सदा यह ध्यान दिलाना है कि वे उनके प्रतिनिधि मात्र हैं। जनता की आज्ञा मानना सरकार का कर्तव्य है भले ही यह आज्ञा किसी प्रकार की हो। जनसाधारण के आन्दोलन ही कानूनों का सर्वोच्च स्पष्टीकरण है। दण्ड और हत्याएँ भी सर्वाधिकार-सम्पन्न शक्ति के कार्य हैं तथा बंध हैं। जो भी लोग जनता की इच्छा में बाधा डालते हैं वे देशद्रोही हैं और जो जनता को दण्ड देता है वह अपराधी है।

इस प्रकार की विचारधारा का परिणाम यह हुआ कि प्रत्येक व्यक्ति अपने को छोटा शासक मानने लगा। वह सरकार से अपनी मनचाही बात कराने की इच्छा करने लगा। देश में फूट की मनोवृत्ति घर करने लगी। छोटी छोटी नगरपालिकाएँ भी अपनी स्वतंत्रता जताने लगी तथा उच्च सत्ता की आज्ञा को मानना छोड़ दिया। कहा जाता है कि एक छोटे से नगर के पादरी ने उम स्यान पर अपनी तानाशाही स्थापित कर ली। शासन को चलाने के लिए पूरा नियम प्रसारित किये कर लगाये अपने विरोधियों को कद कर लिया उनकी सम्पत्ति जब्त कर ली और सारे अधिकारों का प्रयोग किया। यह समझा जाने लगा कि यदि जनता सबसत्ता की स्वामी है तो इसका यह अर्थ है कि जनता का कुछ भाग भी उतनी ही रत्ता का स्वामी है। इस प्रकार की नीति से निश्चित रूप से भ्रष्टाचारिता बढ़नी ही थी।

१ नेपोलियन के मतानुसार जैकोबिन पाण्ड और बुद्धिहीन लोग थे।

मजदूरी ने भी अपने अधिकार जताने शुरू किये। उन्होंने किराया, कर, दशमाश और भ्रय घनराशियाँ देने से इन्कार कर दिया। किसानों ने भी यही किया। उन्होंने लगाये गए नए करों को देने से इन्कार कर दिया। उन्होंने राज्य की सम्पत्ति को गैरकानूनी रूप से हथियाकर अपनी सहायता करनी आरम्भ कर दी। राज्य की धरती से पेड़ों को काट लिया गया और चूब की सम्पत्ति का भी नहीं छोड़ा गया। करों की उगाही रोकने के लिए सशस्त्र समितियाँ बना ली गई। चुंगी के कार्यालयों पर आक्रमण करके वहाँ के कर्मचारियों को निकाल दिया गया।

उपरोक्त घटनाओं में स्पष्ट हो गया कि जकोबिना के इस सिद्धांत से दशम अराजकता फल गई। स्थान स्थान पर दंगे, हत्याएँ और डकतियाँ होने लगी। देश में एक प्रकार का गृह युद्ध आरम्भ हो गया। शान्ति और व्यवस्था टूट गई। कोई भी किसी की हत्या बिना भय के कर देता था। भीड़ के नेता कानून बनाने लगे। विरोधियों को प्रति कोई दया नहीं दिखाई जाती थी तथा जहाँ-तहाँ हत्याएँ होती थी। इस प्रकार की परिस्थिति में जकोबिन दल आगे आया और गिराण्डिस्टों से मत्ता छीनने के लिए बिगड़ी हुई परिस्थिति का पूरा-पूरा लाभ उठाया।

जकोबिन दल की संगठन-व्यवस्था के विषय में भी लिखा जाता आवश्यक है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि जकोबिन दल इस बात का प्रथम आधुनिक उदाहरण है कि सुप्रबल राजनीति में कितना सफल रहता है। मन्चे जैकोबिनो की संख्या अधिक नहीं थी। सम्भवतः जब जकोबिन शक्ति के शिखर पर थे पेरिस में उनकी संख्या दस या ग्यारह हजार में अधिक नहीं थी। देश में उनकी संख्या तीन या चार लाख आँकी जाती थी। जकोबिन दल के लगभग सारे नेता मध्यम वर्ग के थे। वे वकील, व्यवहारी, लेखक और सम्पादकीय कार्य करने वाले थे। जकोबिन दल के सबसे बड़े नेता डेण्टन, रोम्पायर सेट जस्ट, डिस्मोल्लिस, फ्रीरोन, राबट, च्युमेट, मारट, कोलोट, प्रिगारी इत्यादि थे। ये लोग दार्शनिक भावुक उच्चाकांक्षी, धर्माचार्य तथा नाटका में काम करने वाले फलाकार थे।

जकोबिन दल का मुख्य कार्यालय पेरिस में था। किन्तु देश में इसकी शाखाओं की बहुत बड़ी संख्या थी। १७९० के अन्त में देश में दल के १२० से अधिक क्लब थे। १७९१ के अन्त में इनकी संख्या ४०० थी। जून, १७९२ में १,२०० और अगस्त १७९२ में फ्रांस में इन क्लबों की संख्या २६००० थी। इन क्लबों के द्वारा ही जकोबिन दल फ्रांस के राजनीतिक क्षेत्र पर अपना आधिपत्य बनाये रहा। संदस्या में विश्वास, उत्साह, दुस्साहम और महत्वाकांक्षाएँ थी।

जकोबिनो ने पेरिस कम्यून पर अधिकार जमाकर अपनी शक्ति और बढ़ा ली। ऐसा करने में राष्ट्रीय रक्षक सेना पर इनका अधिकार हो गया। राजधानी के सारे साधन इनके हाथों में आ गए। जैकोबिन दल का पेरिस के कम्यून पर, पेरिस कम्यून का पेरिस की राजधानी पर तथा पेरिस की राजनीति का फ्रांस पर अधिकार था। अपने अछड़े साधनों, अपनी अछड़ी संगठन-व्यवस्था, अपनी संक्षय की प्राप्ति के लिए मतापता, और संक्षय की प्राप्ति के लिए आचार विचार की हीनता से, जैकोबिन

गिराण्डिस्टो स सरकार छीन लेा म समय हुए । इसक परनात् गहान दग म प्रातक राज्य की स्थापना की किन्तु जब प्रातक राज्य का लक्ष्य पूण हुमा दग म विरोध को बुचल दिया गया तथा अनुष्ठा को निगान दिया गया जकाबिन दन क नेनापों म परस्पर मतभेद उत्पन्न हो गया । आरम्भ म उग्रन्तीय हवरण्डिस्टा (Herbertists) का ठिकान लगामा गया । उनके बाद डेप्टन के अनुगामिया की वारी आई । उसे और उसके समथका का रोगपायर न ठिकाने लगवा गिया । २८ जुलाई १७९४ का रोगपायर और उसके मित्र सेंट जस्ट का मृत्यु-शण्ड गिया गया । प्रातक राज्य को समाप्त करन क पदचात् दग म धीरे धीरे शान्ति की स्थापना हुई । पेरिस की कम्पून भग कर दी गई । प्रातिकारी च्यामालया का समाप्त कर दिया गया । जकाबिन क्लबो को बंद कर दिया गया तथा जन-सुरक्षा समिति पर नियंत्रण लगा गिया गया । इस प्रकार घार विध्वंस करके जकाबिन प्रान्ति क रगमच स लुप्त हो गय किन्तु अपनी समाप्ति होने से पहल उहोने देग को विदगी आश्रमणा म बचा लिया और मानुभूमि के सम्मान का पुन स्थापना कर दी गई ।

क्रोपाटकिन के मतानुसार उनक अधिकारवादी प्रविधण का श्रद्धाजति देते हुए बहुत से इतिहासकार यह मानते हैं कि जकोबिन क्लब परिम और उसके प्रान्तो म ममस्त क्रातिकारी आन्दोलनो का प्रारम्भकर्ता तथा अध्यक्ष था तथा दो पीढियो से सभी को इस तत्व म विश्वास है । लेकिन अब हम जात होता है कि स्थिति ऐसी नहीं थी । २० जून व १० अगस्त का आरम्भ जकोबिन्स से नहीं हुआ । इसके विपरीत पूरे वष तक उनम स बहुत से क्रान्तिकारी तक लागे से पुन अपनी करने के विपक्ष म थे । केवल जब उन्होने यह देखा कि उह लोकप्रिय आन्दोलन ने हटा दिया है तभी उहोने निणय किया और फिर उनम से भी केवल एक वग ने उनका अनुकरण किया ।

किन्तु किस कायरता के साथ । वे यह चाहते थ कि लोग बाहर सड़को पर निकल कर लडें और राजत-प्रवाणियो से टक्कर लें । किन्तु उहोने उसके परिणाम भोगन का साहस नहीं किया । क्या अब भी लोग राजसी सत्ता को उखाड फेंकने के पक्ष म नहीं थे ? यदि लोगो का क्रोध धनवाना सत्तावानो और चालाका के विरुद्ध घूम जावे जिहे क्रान्ति म अपने को धनी बनाने के साधन की अपेक्षा और कुछ नहीं गिवाया ? यदि ट्युलरीज के बाद जनता भी नेशनल असेम्बली को एक तरफ समेट दे ? यदि पेरिस की कम्पून उग्रवादी अराजकतावादी—वे जिहे स्वयं रोगपायर न अपने आक्षेपो से स्वत-प्रतापुवक लाद रता था—के गणत-प्रवादी जिहोने 'दशमो को समानता पर उपदेश दिए थे—क्या उह ऊारी हाथ मिलना चाहिए ?

'यही कारण है कि उन सारे सम्मेलना म जो २० जून से पूव हुए हम प्रातिकारियो के ऊपर इतना अधिक सकोच देखने का मिलता है । यही कारण है कि जकोबवादियो का दूसरी लोकप्रिय प्रान्ति की आवश्यकता स्वीकार करने पर इतनी अनिच्छा थी । केवल जुलाई ही मे ऐसा हुआ जबकि लोगो ने सवधानिक विधियो को हटाकर विभागो का स्थायित्व घोषित किया, सामान्य शस्त्रीकरण का आदेश दिया

और यह घापणा करन पर बाध्य किया कि दस सक्क म ३—केवल तभी राज्यपायरवादिया, दातोवादिया, और विल्कुल अतिम समय पर गिराण्डिस्टा न लागे के पयप्रदान का अनुकरण करने का निश्चय किया और अपने का लगभग शानि के साथ सम्बद्ध घोषित कर दिया । (The Great French Revolution PP 257 58)

Suggested Readings

- | | |
|------------|------------------------------|
| Brinton C. | <i>The Jacobins 1930</i> |
| Goodwin A. | <i>The French Revolution</i> |

क्रान्ति के महान् व्यक्ति

(Great Personalities of the Revolution)

मिराबो (Mirabeau)—नेपालियन व उत्थान स पहल फ्रांसीसी क्रान्ति व महान् व्यक्तियुग का उत्थानकारी है और इन महान् व्यक्तियुग की सूची में मिराबो



मिराबो

का नाम सर्वप्रथम आता है। एक निरदय पिता का पुत्र जीवन में अनक सपप, ऊच-नाच दरतन व पश्चात् कवल बया नाम वप की अवस्था में अपना जीवन लीला समाप्त कर गया। वह अत्यन्त मूर्खदर्शी और दूरदर्शी व्यक्ति था। उसका पाम बुद्धि और ज्वाला स भरा हृदय था। वह अस्थिर उग्र महत्वा काक्षा आचारहीन और सनकी था। वह बदसूरत था और कहा जाता है कि उसकी असुदरता भी उसकी शक्ति थी। उसने अनक दृढ़-युद्ध लडे। उसके पिता ने उसे कद में डाल दिया। वह दुराचारी था और कई रोगो स पीडित था। किंतु वह एक क्रियाशील, तीव्र-बुद्धि और दूरदर्शी शासक था। वह सिद्धान्तवादी नहीं था। वह फ्रांसीसी क्रान्ति का सर्वथप्रथम व्यक्ति था। उसे क्षणिक होते हुए समाज में दुस्साहसिक कार्य करने वाल बुद्धिमान् कहा जाता था। “इसी व्यक्ति ने वूडे फ्रांस की जडो को पकडकर हिला दिया और मानो अनेक ही इस गिरते हुए भवन को उगमगाता हुआ धामे रहा गिरने नहीं दिया। कहा जाता है १७६१ में इसकी अर्थी के पीछे सम्राट के प्रतिनिधिया और जकाबिन क्लब के सदस्या का ६ मील लम्बा जलूस था। पेरिस में तीन दिन तक शोक मनाया गया। इन बातो से उसके व्यक्तित्व की महानता का पता लगता है।

मिराबो ने अपनी युवावस्था में बहुत पयटन किया और इस प्रकार बडा अनुभव प्राप्त किया। कार्लायल (Carlyle) ने इस विषय में लिखा है इन अद्भुत यात्राया में उसने क्या नहीं देखा और क्या नहीं आजमाया? द्विल शिक्षक स प्रधान मंत्री विदेशियो स लेकर दंग के पुस्तक बेचने वाले सभी प्रकार के व्यक्ति उसने

देखे। मिराबो ने इंग्लैण्ड की यात्रा की और वहाँ की संसदीय प्रणाली से बड़ा प्रभावित हुआ, जिस प्रणाली से सम्राट और उत्तरदायी मंत्री मिल-जुल कर काम करते थे।

यद्यपि मिराबो सामंतवर्ग का था, किंतु १७८६ में जब संसद के चुनाव हुए तो वहाँ तीसरे विभाग का सदस्य चुना गया। उसके महान् व्यक्तित्व ने उस शीघ्र ही प्रकाश में ला खड़ा किया। जब यह प्रश्न उठा कि संसद के तीनों विभाग एक साथ अथवा अलग बँटें तो मिराबो ने तीसरे विभाग का नेतृत्व करने यह माँगा कि तीनों विभाग एक ही स्थान पर बँटें। जब तीसरे विभाग के सदस्यों ने टनिम-काट में प्रतिज्ञा की तो मिराबो ने ही घोषणा की कि मैं और मेरे अनुयायी तब तक नहीं जायेंगे जब तक हमारी माँगें पूरी नहीं हो जातीं। इन परिस्थितियों में लुई सोलहवें का भुवना पड़ा और तीन विभागों वाली संसद को राष्ट्रीय सभा के रूप में बदलने के लिए राजी हुआ। मिराबो राष्ट्रीय सभा का नेता तथा प्रधान था।

मिराबो नम्र विचारों का था और जैकोबिन दल की उग्र विचारधारा से सम्मत न होने के कारण उसने दल का परित्याग कर दिया। वह इंग्लैण्ड की संसदीय प्रणाली का फ़ारम में प्रचलित करना चाहता था। इस लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए उसने सम्राट से एक वैधानिक प्रमुख की स्थिति स्वीकार करने की माँग की तथा राष्ट्रीय सभा का सम्राट के साथ महायोग करने का मुभाव दिया। उसकी यह योजना अमफल हुई क्योंकि दाना और से अपने अपने बायों का नहीं किया गया था। फ़ारस के वैधानिक ढाँचे के विषय में उसके विचार थे कि 'सम्राट सभा की सलाह माने जा उससे सहायता करने की अत्यन्त इच्छुक है और सभा का नेता अर्थात् स्वयं मिगदा, प्रधानमंत्री बने। उस समय लुई सोलहवाँ मिराबो और राष्ट्रीय सभा फ़ारस की ओर के तट पर जार्ज, पिट और हाउस ऑफ़ कामन्स जैसी शानदार व्यवस्था स्थापित कर देंगे।'

यह बात उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय सभा ने मिराबो का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया, क्योंकि उस पर सन्देह किया जाता था। जकाबिना ने उसको दशद्वारी कह कर निंदा की। सभा का मिराबो का सम्राट से हिल मिल कर काम करना अच्छा नहीं लगा। सभा ने सम्राट के प्रतिभियावादी सम्बन्धियों तथा मित्रों को हटाया और खेतना पसन्द नहीं किया। इसी कारण सभा ने यह राजान्त प्रसारित की कि सभा के सदस्य सम्राट के मंत्री नहीं बन सकेंगे। इस प्रकार राष्ट्रीय सभा ने मिराबो की योजना का बिना परने रद्द कर दिया। यदि राष्ट्रीय सभा का यह रूप था, तो मिराबो के साथ सम्राट ने भी कुछ अच्छा व्यवहार नहीं किया। दिलाव के रूप में सम्राट उसका प्रस्ताव का स्वागत करता तथा उसकी योजनाओं के लिए धन भी देता था किन्तु वह अतृप्त से उसका सम्बन्ध नहीं था। वह मिराबो की इच्छानुसार राजनतिक रण-मंच पर अपना पाठ खेलने को तैयार न था। सम्राट का वैधानिक प्रमुख बनाने का विचार से ही वह घृणा करता था। मिराबो ने सम्राट का यह सलाह दी कि वह परिम राजपानी से दरबार का हटा कर राउन (Rouen) से

समूचे राष्ट्र को विनाश की ओर ले जा रहे हैं। नभा आत्मघात करने के साथ हमें अपने साथ भार डाल रही है। २ अप्रैल, १७६१ का उसकी मृत्यु हुई। वह अत्यन्त दुःखी होकर मरा, किन्तु उसने यह भविष्यवाणी की 'मैं अपने हृदय में राजशाही का मृत्यु-मान लेकर मर रहा हूँ जिसके भत अवशेषों का लूटने के लिए दण्ड म फूट पड़ेगा।' नवीन फ्रांस ने एक मागदशक खा दिया। यह ध्यान देने योग्य है कि 'मिराबो के साथ क्रान्तिकारी युग का सबसे महान व्यक्ति समाप्त हो गया। वह व्यक्ति जो फ्रांस में राजशाही की रक्षा की अन्तिम आशा थी।' यदि वह अधिक जीवित रहा होता, तो सम्भवतः उसकी मृत्यु के पश्चात् फ्रांस में हुमा महान विध्वंस न होता। वह ही एक व्यक्ति था जो राष्ट्रीय सभा के जगलो गधो और दरवार के 'शाही घाड़ो' में समझौता कर सकता था। मदाम दे काम्पेन (Madame de Campan) के अनुसार, 'मिराबो अपने का विद्वत् का मानचित्र (Atlas) मानता था। इसमें क्या आश्चर्य है कि उसकी मृत्यु के पश्चात् देश में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं रहा जो उसके उत्तरदायित्व को संभाल सकता और सम्राट तथा जनता दोनों का पथप्रदर्शन कर सकता। मिराबो का सबसे बड़ा दुःख यह था कि 'मैं यह सोच कर दुःख में डूबा जाता हूँ कि जितना भी काय मैंने किया वह एक महान् विध्वंस में सहायक होगा।' यदि ४२ वर्ष की छोटी अवस्था में उसकी मृत्यु न होती तो उसने देश को अराजकता से बचा लिया होता।

जब मिराबो सदन का सदस्य बना, वह ऋण में डूबा हुआ था। उसने अपने ऋण का उतारने के लिए सम्राट से एक बहुत बड़ी धनराशि ली। उसे २५० पीण्ड मासिक वेतन मिलता था। यदि मिराबो ने यह गुप्त रखा होता तो वह जायद राष्ट्रीय सभा का सहयोग प्राप्त कर सकता। किन्तु उसके छिछोरपन और दिवाले के मोह ने उसे यह गुप्त नहीं रखने दिया। परिणामतः राष्ट्रीय सभा को उसमें विल्कुल विश्वास नहीं रहा। यदि मिराबो ने अपने जीवन में अधिक समय स काम लिया होता तो घटनाचक्र किसी और ही दिशा में चला होता।

प्रो० साल्वेमिनी के मतानुसार, "मिराबो की क्या दगा हुई हाती—जबकि उसका नामना स देह व लाखों और उम अपमानजनक मृत्यु से था जिसके विषय में उससे अधिक कौन जानता था—यदि उसकी उत्तेजना, उसका क्रोधयुक्त व उपभोग-युक्त काय और पाशविक मुख जिनमें उसने अपने दण्ड व हानामाह का दुवान का प्रयास किया, उन्होंने उसे उसके तूफानी जीवन व पुत्राकाण्ड में दगा दगा दिया होता उदाहरणार्थ, यदि वह तब तक जीवित रहता जब तक कि परिम में राजनीति वश के निवृत्त भागने पर उसके विचारा व राजा के विचारा के बीच सार्ई का उम पता चल जाना? वस्तुतः अपने व्यक्तिगत जीवन की अनिबना, जिगम उसने राजनीति का महान लोक को छोड़ दिया, उसने चालबाजी के टूटे रास्तों में फँकर अपना माग छोड़ दिया, तब उसकी स्थिति क्या होती उम दरवार में जिगमने उमे ममभ बिना उसका प्रयोग करने का बहाना किया और क्रान्ति के चलाने वाला के बीच में जिहाने उसकी वास्तविक नीयत पहचाने बिना उसका अनुकरण किया था। वह

सक्षिप्त व हिमात्मक रोग जा २ अप्रैल १७९१ को उम दूर ले गए उहाने उन सारे सपनों व सपटा का धन कर लिया जिनम धीरे धीरे वह पैंग चुका था। वह उस सप्तर व दुःखी मन्त्रिम उधणा म अदृश्य हा गया जो अपने को स्वय भी नही बचा पाता और उसका मारा जीवन महानता व नीचना यग व अपयग के बीच गाथा बनकर रग गया। (The French Revolution p 187)

मरात (१७४२ ९३)—यदि मरात (Marat) न राजनीति म अभिरुचि न ली तानी तो इतिहास म वह एक विद्वान् व बमानिक के रूप म प्रसिद्ध हाना। वह एक चिचित्मक था और अपने धमे म रतना निपुण था कि स्वाटान् व सेंट ऐंड्र्यू विश्वविद्यालय न उम एक सम्मान की डिग्री प्रदान का दी। कुछ समय तक वह काउण्ट आफ आरटियाज की सेवा म भी रह।



मरात

एक कुनीन वग करता हे। उसने स्वय वास्तविक सुधार का समर्थन किया जिसम काम के लोगो की आवाज होगी और जिससे उनको लाभ भी पहुँचेगा। १७८९ स १७९२ तक उसन एक समाचार पत्र का सम्पादन किया जिसका नाम लागो का मित्र (Ami Du Peuple) था। उस समाचार पत्र म उसन दरबार का आलोचना की और गदरियो कुनीन सामन्तो व नेशनल असम्बली तक पर आघात किया। उस पर किसी भी पार्टी ने आघात नही किया और अपने लक्ष्य के लिए उसन सब कुछ बलिदान कर दिया। दरिद्रता सकट व अत्याचार तक उसको गात न रख सक। वह गणो कोठरियो व नालियो मे रहन पर विवश हो गया जिससे उसे एक भयानक चरम राग लग गया।

मरात लागो से प्यार करता था और लोग उससे प्रेम करते थे। लोगो के काय क हतु वह काइ भा बलिदान करन पर उद्यत रहता था। वह रक्तपात क लिए भी तयार था यदि उसम जनता क ध्येय को लाभ पहुँचे। ३१ मई १७९३ के विद्रोह सम्मेलना म जिराडिस्ट सदस्या के बहिष्कार और अन्त म उनकी हत्या का

उमी पर उत्तरदायित्व है। वही एमा व्यक्ति था जिससे अधिकारी बग डरता था और इसलिए उससे घृणा करता था, किन्तु जिसका जननाधारण सम्मान करता था व उससे स्नेह रखता था। जुलाई १७६३ में एक युवती काई (Corday) ने उसका वध कर दिया जो कट्टरता के साथ जिराण्डिस्ट ग्रुप से सम्बद्ध थी।

मराठ की हत्या में लागा का एक अत्यधिक प्रिय मित्र जाता रहा। यह सब है कि जिराण्डिस्ट लागा ने उमर खान का प्यासा पागल व्यक्ति माना, जिसे यह भी पता नहीं था कि उमर क्या चाहिए। फिर भी इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि उमर १७६० और १७६१ में लागा की मारी बीरता राजसी सत्ता का तोड़ने में अग्रणी रहे। तब मराठ न ही यह निणय लिया था कि क्रान्ति का सफल बनाने के लिए कुछ हजार कुलीन जना के अथवा का बलिदान कर देना चाहिए। उसने जो कुछ भी किया वह सब क्रान्ति को सफल बनाने लिए ही किया था। यह कहा जाता है कि लागा का पदप्रदर्शन करने के लिए जनता का सच्चा हितपी और प्रेमी मराठ ही एमा क्रान्तिकारी नभा था जिस घटनाओं का सच्चा जान था और उसी को यह समझने की शक्ति प्राप्त थी कि उनका पक्षी प्रभाव एक-दूसरे पर कैसे पड़ेगा। उसने अपने सब समकालीन नेताओं की अपेक्षा यह उत्तम रूप से समझ लिया था कि आगे क्या जान वाला है।

डण्टन (Danton)—डण्टन एक विमान का पुत्र था। क्रान्ति आरम्भ होने में पहले वह एक उदार व्यक्ति तथा प्रतिभाशाली युवक वकील के रूप में प्रसिद्ध हो चुका था। उस पुस्तका से प्रेम था तथा उसका पारिवारिक जीवन सुखमय था। वह विशालकाय और शक्तिशाली था। उसकी आवाज में गम्भीर गजना थी। वह एक कुशल ताकिक और प्रभावशाली वक्ता था। मिराबो के स्वभाव के विपरीत जब आता उत्तेजना के वेग में बहते तो वह स्वयं शांत और स्थिर बना रहता। मिराबो की तरह वह भी अपने वेग से नीचे के वेग के लाभ के लिए उत्सुक था। जहाँ सामन्तव्य का मिराबो, बुजुर्ग मध्यमवर्ग के लिए था, वहाँ मध्यमवर्गी डण्टन परिस की जनता के लिए था।

फ्रांस की क्रान्ति के प्रथम चरम में मिराबो की कृपा से डण्टन प्रकाश में आया। उसने बाड़े ही समय में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। १७६० में डण्टन ने मराठ और डिसमोलिस की सहायता से कार्टिलियर बनने की स्थापना की और १७६१ और १७६२ में दाही परिवार के विरुद्ध इस बनने के कार्य का संचालन किया। वह पेरिस कम्यून का प्रभावशाली सदस्य था और कम्यून को प्रजातन्त्रवाद की ओर नुरा देने का बहुत-सा उत्तरदायित्व डण्टन का ही था। यह मत है कि डण्टन अत्यन्त और साहसा था किन्तु वह खान पिपामु नहीं था। वह एक कामकुशल शासक था जिने अपने कार्यों का अथवा के अनुयाय दाल लेना आता था।

१७६२ में जय फ्रांस का गणित गणना में चारा घण्टे में कर लिया था और डण्टन और श्रुतविक ने घोषणा की कि फ्रांस की जनता आममपण कर दे तथा धर्मवी दी कि यदि दाही परिवार का विना भा प्रचार की शक्ति पहुँचाई गई तो

उहे घोर परिणाम भुगतन पड़मे । परिग म हम घोषणा क उत्तर म रिगेट हुआ और डैण्टन इसका नेता बना । गाही महन पर घातम्ण हुआ । महल क रक्षका का हत्या



डैण्टन

कर दी गया, स्वय मन्त्र का निरन्तरित कर लिया गया । डैण्टन की तात्कालिक न घातक तथा बाह्य गन्तुमा क हृद्य म भय का संचार कर लिया । उम द्रवन् पर डैण्टन न अपनी नाति का उष्टा करण इन शक्त म किया कि मेरा सम्मति म गन्तु का गकन का एतमाव यही तराका है कि मन्त्र क ममयका का भयभात कर लिया जाय । दुस्माहस अधिक दुस्माहस और सबदा दुस्माहम ही हमारा नारा हाना चाहिए । इम नाति के परिणामस्वरूप ह्वारा स्त्री पुरुष और बालक भीत क घाट उतार लि गण । जिन यायाधीना पुजारिया और वमा चार्यों पर सम्मट के प्रति महानुभूति रखने का मदह था उह भा निदयता म मार डाला गया । डैण्टन न प्राप्त का सनाघो

म नया रक्त और स्फूर्ति फूँक दी । उन मनामा न ही सगठित गन्टा को फ्रांस की सीमामा से पीछे सदट दिया और खाण इए प्रत्या पर पुन अधिकार जमाया । उनन घातक राय के काल म रामपावर क शा मत्याग किया । किन्तु १७२४ के मारम्भ मे उनन यह अनुभव किया कि घातक गय का अरि क चलान से बाइ लाभ नहा है और सहिष्णुता का नीति गपनान की नागह ना । इस सम्मति का रामपावर मण्ट जट जम व्यक्तियो ने पम नही किया । परिणामत उष्टा और उसके मित्र डिस्मोनि स का मत्यु-दण्ड दिया गया । समका मृत्यु क साव-माथ फ्रांस न एक ऐसा शासन-कुशल नेता खो लिया जा घटनाचा क प्रमात का वदन मवता था ।

एक सच्चे गामक की स-ह उष्टन न नारे प्रजातत्र क ममयका को फ्रांस क हित के लिए सामूहिक रूप स मघष के ति जकाविनी और गिराण्डिस्टा क मतभेा को मिटाकर समभौता बरान का प्रयन किया । किन्तु गिराण्डिस्टा क विराध के कारण डैण्टन अपन इन प्रयत्न की असफलता पर वडा दुःखी हुआ । इमका परिणाम यह हुआ कि गिराण्डिस्टा न ही समाप्त हा गया ।

घाट घाट टम्पल के अनुसार क्रांति के इतिहास म डैण्टन का व्यवहार अद्भुत प्रकार का है । वतुना उम जकाविनी म सबसे अधिक खनपिपासु मानत है । उसने मगत १७९२ क विद्राह का समयन किया । किन्तु जितना अधिक हम उनक राजनानिक जीवन का तिलेक्षण करने ह उतना ही हम स्पष्ट रूप से दृष्टिगार

होना है कि यद्यपि वह समय की पुकार व अनुसार घात हिसा के काय करन का समय था, किंतु उसने, जमा भविष्य म पता लगा शक्ति को अव्यवस्था और रक्तापात के गहन गत म गिरन से राकने का भी निरन्तर प्रयत्न किया। बहुत-से विपयो ने वह दंग की प्राचीन परिपाटी का अपनाना चाहता था। उसने उस वातावरण म दया, व्यवस्था और शासन के प्रति आदर का सन्देश दिया जब कि एसी सम्मति न्ना उसके लिए अत्यन्त भयानक था। यद्यपि वह जकाबिन था, किंतु उसका ध्येय गिराण्डिस्ट दल के साथ मिलकर काय करने का था और इस दिशा मे उसने अनेक नार अपनी सामर्थ्य स बढ़कर भी उनकी मित्रता पान का प्रयत्न किया।'

फिलनती के अनुसार, डण्टन और रोम्पायर सब प्रकार स परस्पर इतने निरोधी स्वभाव के थे कि वे पत्र का नाग करन अथवा आपत्ति के समय के अतिरिक्त उनका मिलकर काय करना असम्भव था। यद्यपि म दाना व्यक्ति मध्यमवर्ग के थे, दाना बकील, प्रजातन्त्रवादी जकाबिन और हत्या के समयक थे, किन्तु विंगालकाय, उगार बेफिकर हेंमाड गम्भीर गजना जैसी वाणी वाले डण्टन की छोटे, दुबले श्थानु और उग्र रामपायर जिनके भाषणा का बुद्धि भले ही मान ले किन्तु जिनका हृदय पर प्रभाव नहीं होता था, तुलना करन पर दाना व्यक्तियों की समानता समाप्त हो जाती है। डण्टन का चरित्र अपन समकालीन मिराबा और अपन वाद के गेम्बेटा (Gambetta) के चरित्र स अधिक मिलता है। उसम मिराबा जसी विंगाल हृदयता और मन का भय दन वाली भाषण शक्ति और गेम्बेटा जसी उग्र प्रदम्प दंग भक्ति थी। मिराबा की तरह उसम दुगुण भी थे। उस पर भ्रष्टाचार का लालन लगाया जाता है और सम्भवत वह वही शीघ्रता स किसी को भी मित्र बना लेता था। पुन उसके जीवन पर सितम्बर १७६२ के हत्याकांड का दाग है। १७६३ म अत्यन्त प्रभावशाली हान पर भी राजनीति स दंग की सुरक्षा को छोड़कर, उसका मन-हट सा गया था। अब वह दलबन्दी की भावना का शान करना चाहता था वह कहन लगा था, 'मुझे अब घृणा म क्या प्रयोजन?' उनकी पत्नी का देहान्त हो गया और दूसरा विवाह करके वह अपन जमस्थान आरसिस-सुर एब (Aucis-sur Aube) नामक करव के एवात म चला गया और थोड़े थोड़े समय परचात कभी परिन आया करता था। यह व्यवहार उसका सुरक्षा के लिए अच्छा नहीं था, क्योंकि रामपायर मत्ता को हथियाना चाहता था।

उा विपान्न वायुमण्डल म सन्देश के बीज गता गत पनप कर वक्ष बन जाया गया था। वह पटा करता, गुलाटिनी पर किमी का मि काटन स अच्छा है कि अपना ही गिर बटा लिया जाय। उस पर आक्रमण किया गया और बंद कर लिया गया। वह अपना रक्षा करने के लिए बहुत दूर बाद जागा और जब जागा ता इतनी शक्ति म शक्तिकारी यायालय के समक्ष अपना बचाव दंग किया कि यायालय की दीवारों उसकी धार गजना स बाँटनी प्रतीत होती थी। मुकदमा रोक दिया गया और उम मृत्यु-दण्ड दितान के लिए एक नया पड्यत्र रचा गया और ५ अप्रैल, १७६४ का मृत्यु-दण्ड म समय जकाबिन दल के सदस्येष्ट महान नता न पाडे साक्षिणी

के साथ पेरिस की जानी पहिचानी गतिमा म स गुजर कर अपनी महा-यात्रा समाप्त की ।

रोम्सपायर (Robespierre) (१७५८-९४)—रोम्सपायर एक मध्यमवर्गीय परिवार म पन्ना हुआ और पेरिस विश्वविद्यालय की विधि मवाय (Law Faculty)



रोम्सपायर (१७५८-९४)

म विसमोलिन्स का सहपाठी था। वह अपने जन्म-स्थान अर्रास (Arras) में काफी अच्छी बकालत करता था। यद्यपि उसे पौजदारी यायालय में यायाधीश नियुक्त कर दिया गया था, किन्तु अपराधियों को मृत्यु-दण्ड देने के विरुद्ध हाने के कारण उमने पद से त्याग पत्र दे दिया। उसने वक्ता और लेखन के रूप में ख्याति प्राप्त की। साधारण वक्ताओं की तरह वह अनगल बालन वाला नहीं था। वह मूलतः मुमस्कन व्यक्ति था। वह लगन वाला और सच्चा व्यक्ति था। वह रसा का बट्टर अनुयायी था और उसकी दाशनिक्ता का वाय रूप में परिणत कर देना चाहता था। ऐसा करने हुए उसे जनता की पीडा की कोई परवाह नहीं थी। यद्यपि उसने सबहाराबम के लिए घोर परिश्रम किया किन्तु वह इनका स्वभाव का नहीं अपना सका। कहा जाता है कि जीवन के अन्तिम दिन तक वह घुटन तक की बिजिम और रक्षणी माजे पहनता रहा और अपने बाला में पाउडर लगाता रहा।

१७८६ में वह ससद के तीमरे विभाग का सदस्य चुना गया। उमने अपना स्थान अत्यन्त उग्र विचारा के सदस्या में चुना, जिह मिखावा व्यग से 'तीस आवाजें (The Thirty Voices) कहा करता था, क्योंकि सभा में उसके समयका की सख्या कम थी और मिखावो का प्रभुत्व था। रोमपायर राष्ट्रीय सभा में अधिक नहीं चल सका। इस परिस्थिति में उसने पेरिम निवासियों की सहायता प्राप्त करने का निणय किया। वह जकोबिन क्लब का सदस्य तो था ही अत उदार मदस्या के चले जाने के बाद वह क्लब का नेता बन बठा। इसके पदचात् वह जकोबिन क्लब को समाजवाद के प्रसार का साधन बना कर स्वयं उसका मुख्य प्रतिपादक बन बठा।

उसने फ्रातक-राज्य के काल में डेण्टन के साथ सहयोग किया और जब डेण्टन की शक्ति का ह्रास होने लगा तो वह सर्वेसर्वा बन बठा। वह जैकाबिन का नेता था इस कारण राष्ट्रीय सम्मेलन, पेरिम कम्मून और सुरक्षा समिति पर उसका बहुत दबाव था। उसने 'तक' की उपासना को बन्द करा दिया और इसके स्थान पर 'गवगक्तिमान्' की उपासना प्रचलित की और स्वयं इसका मुख्य गुरु बन गया। इस नये मत के उद्घाटन के लिए एन' विशेष उत्सव हुआ। रोमपायर के नेतृत्व में राष्ट्रीय सम्मेलन के सदस्या का एक जलूस निकाला गया और ट्युलरीज (Tuileries) के बाग में बहुत-सी मूर्तियाँ जलाई गईं। अन्त में यह गमारात् बहुत मे भाषणा के पश्चात् समाप्त हुआ। यह नया मत प्राग की जनता को अक्म्या के अनुसार नहीं था, परिणामत यह रोमपायर की मृत्यु के साथ ही समाप्त हा गया।

१० जून १७९४ में एक वागून पारित हुआ जिसका अनुगार फ्रांसिस्की यायालयों की वाय प्रणाली में परिवर्तन हुआ और इनका वाय गीघ्रता से चलन लगा। प्राग की जनता को देगद्रोहिया के विरुद्ध प्रभियोग लगान के लिए कहा गया और राष्ट्रीय सम्मेलन के सदस्य भी वहे से नहीं बच सकते थे। फ्रांसिस्की यायालय कोई नियम बठोरता से पालन नहीं करते थे। परिणामत १० जून में २७ जुनाई की प्रवधि में केवल पेरिम में ही १३७६ व्यक्तिया का मौत के घाट उतार

दिया गया। इस प्रकार रामपायर ने अपने विराधियों को सीधी चुनौती दी। वह स्वयं ही फ्रांस का तानाशाह बनने का दृढ़ संकल्प कर चुका था। उमरू कामा म सण्ट जस्ट सहायक था।

२६ जुलाई १७९४ को राष्ट्रीय सम्मेलन में रामपायर ने एक भाषण दिया जिसमें उन्होंने अपने कार्यों का समयन और अपने विरोधियों के रक्त की निंदा की। यद्यपि उसने अपने विराधियों का नाम नहीं लिया किन्तु मन्त्रेण प्रवश्य द निया। यह उल्लेखनीय है कि यदि उमरू दिन रामपायर ने राष्ट्रीय सम्मेलन के सम्मुख अपने विराधियों की सूची कद करने के विचार से प्रस्तुत कर दी होती तो राष्ट्रीय सम्मेलन न उमरूकी मांग स्वीकार कर लेती। किन्तु अपने भाषण की स्पष्टता के कारण वह बाजी खो बैठा। इस प्रकार सांकेतिक आक्रमण करने के कारण राष्ट्रीय सम्मेलन के सदस्यों में बेचनी पैदा हो गई और प्रत्येक को अपने जीवन का भय होने लगा। इस प्रकार के वातावरण में राष्ट्रीय सम्मेलन के सन्धान साहम करके रामपायर के भाषण को स्वीकार कर दिया। इस दिशा में फाउच (Fouche) से जो पराक्षम अपना कार्य कर रहा था सम्मेलन के सदस्यों को बड़ा आत्माहत मिला। रामपायर इस भांड के लिए तयार नहीं था। वह इतना अपमान अनुभव करता था कि वह जकोबिन बन गया और उसने अपने भाषण को पुनः दोहराया तो उसे सब ओर से प्रशंसा प्राप्त हुई। इस प्रकार प्रोत्साहन पाकर उसने दुबारा चोट करने का निणय किया।

२७ जुलाई, १७९४ को वह राष्ट्रीय सम्मेलन में गया और सदस्यों का सम्बोधित करके भाषण देने लगा किन्तु उसके विरोधियों ने इतना शोर मचाया कि वह भाषण नहीं दे सका। सभा भवन में बड़ी अस्थवस्था शोध और हिंसा भड़की। अंत में यह प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ तथा स्वीकार भी हुआ कि रामपायर सण्ट जस्ट और उसके निकट-समयकों को कद कर लिया जाय। उन्हें पकड़ कर सम्मेलन के अधिकारियों का नीप दिया जाय और कप्तानों में ले जाया जाय। किन्तु जल्ले पेरिस की कम्पून के अधिकार में थी जो रामपायर और उसके मित्रों के अधिकार में थी। परिणाम यह हुआ कि रामपायर और उसके साथी छोड़ दिए गए और उन्हें नगर भवन में ले आया गया। जब राष्ट्रीय सम्मेलन को पता लगा कि शत्रु छूट गया तो इसने एक विनक्ति प्रमाणित की जिसमें रामपायर का अपराधी घोषित कर दिया। २७ जुलाई १७९४ का ताना और सगन्ध तयारियां होने लगा। हाटल-डे विल जहाँ रामपायर और उमरूकी साथी छिप हुए व के स्थान को पेर लिया गया और थोड़ा समय के पश्चान सुग्भा पविन टूट गई। जब रामपायर पकटा गया तो उमरूकी साथी बुरी तरह घायल पाया गया। अंत में यह है कि यह आघात उमरू स्वयं ही कर लिया है। वह मंत्र पर घायल अस्थवस्था में पड़ा था। क्योंकि उस अपराधी घोषित किया जा चुका था इसलिए उमरू पर मुकदमा चलायान की आशय्यता भी नहीं रहा। अतएव २८ जुलाई १७९४ का उक्त ग्युनाटिना के नीचे काट दिया गया।

यह बात उल्लेखनीय है कि यद्यपि रोम्सपायर आतंक राज्य का निर्माता नहीं था तथापि वह इसका अत्यन्त क्रियाशील विकास करने वाला था। उसने आतंक राज्य को अपने स्वायत्त के लिए नहीं, अपितु अपने आदर्शों को काय-रूप में परिणत करने के उद्देश्य से अपनाया। उसकी सबसे बड़ी आकांक्षा सदाचार राज्य स्थापित करना थी और ऐसा केवल आतंक-राज्य के माध्यम से ही हो सकता था।^१ अपने सम्पूर्ण श्रेष्ठ काल्पनिक राज्य की स्थापना के लिए वह रक्तशक्तिहीन रूसों की दासनिक्ता का काय में परिणत करने का प्रयास कर रहा था।

ग्राट और टम्परले के अनुसार 'रोम्सपायर निस्सन्देह परिम में अत्यन्त प्रसिद्ध व्यक्ति था, जिसके प्रयासों और भवना की बहुत बड़ी सख्या थी। उसके जीवन की अमफलता और अत्यन्त दुःखद अन्त का कारण यह था कि उसने फ्रांस का पुनर्गठन और नवजीवन देने का प्रयत्न युद्ध और हिंसा के वातावरण में किया। यद्यपि उसकी अमफलता अन्ततः होती ही, किंतु तत्कालीन परिस्थितियों में उसका पतन गीघ्र और उसके लिए घातक सिद्ध हुआ। हमें अध्ययन से पता लगता है कि उसका विजय कुछ ही क्षणों की थी और उनके बीतते ही उसका पतन हो गया। उसके गुणों के कारण हम उसके अद्भुत गुणों की ओर से आँवें बंद नहीं कर लेनी चाहिएँ। वह अत्यन्त डरपोक व्यक्ति था और डरपोक व्यक्तियों के स्वभावानुसार वह शीघ्र ही निन्द्यतापूर्ण कार्यों का करने पर उतारू हो जाता था। वह घमण्डी था और मित्रों की सराहना के कारण उसका घमण्ड और भी बढ़ गया। इस मवस हम इस निष्पत्ति पर पहुँचते हैं कि जिस काल में भागवता के अवतार और दासनिक् रूसों का अनुगामी रोम्सपायर फ्रांस में उन्नति के शिलर पर था, वही काल रूस में आतंक राज्य और अत्यन्त विध्वंस की चरम पराकाष्ठा पर पहुँचा हुआ था।'

क्रोपाटकिन के विचार में, 'रोम्सपायर का बहुधा एक तानाशाह बताया गया है क्योंकि उसने अपने शत्रुओं को अतृप्ततायी कहते थे और यह सच है कि जिस-जिस शान्ति का अन्त निकट आया, उसने इतना प्रभाव प्राप्त कर लिया कि उसे फ्रांस में फ्रांस-प्राप्त के अन्त में गणतन्त्र का सबसे अधिक महत्वपूर्ण व्यक्ति माना जाने लगा।

लेकिन उस एक तानाशाह बताया गया कि यद्यपि निस्सन्देह उसके बहुत से प्रयासों ने उसका ऐसा ही बनाए रखने की इच्छा की। वास्तव में हम पाते हैं कि कम्बो न अपने निष्पक्ष अन्तर्निवारण (कमेटो ऑफ फ्राइनेम) के भीतर काफी मत्ता का प्रयोग किया। शान्ति के अन्त में युद्ध सम्बन्धी विषयों में विस्तृत शक्तियों धारण की। यद्यपि रोम्सपायर ने सेंट जस्ट के साथ उसका काफी मनमुटाव था। लेकिन तानाशाहों का कम्बो का उगकी एक निष्पत्ति-आत्मक शक्ति उन्नति इच्छा थी कि वह

१ रोम्सपायर के हस्तों में "शान्ति-काल में शासन-व्यवस्था का मुख्य स्रोत सदाचार होता है, शान्ति के समय वह स्रोत सदाचार और धर्मका देना है। बिना सदाचार के सब दिखाना बिनाशाका है, और सदाचार बिना शान्ति के भय के नपु सक्त है।"

हिंसा व वातावरण म यनाना पडा । किसी भी दशा म उनकी प्रमफलता निरिचन था उन परिस्थितिया म यह नीघ्र थी, लगभग तत्कालीन भा और उसक अपन निग धातक भी । जसा कि हम दक्के उसे विजय का बहुत थाडा-ना समय मिला और तुरत बाद उसका पतन हा गया । उसके गुणा का दतकर उमक दापा से मुक्त नहा मोटना चाहिए । वह अनिवायत एक डरपोक व्यक्ति था और बहुत स भय डरपान यकितया की भाति सुगमता से निदयता व प्रयत्न करन का तात्पारित हा जाना था । वह घमण्णी था और उसके घमण्ड का उमक मित्रा की प्रगमा शक्ति वदावा नी थी । घत यह बात होता है कि जिस काल म मानव जाति क इम पगम्दर और ह्मो के गिप्य न फास पर आधिपत्य रखा वह एना नी समय है जबकि प्रानक का युग अपन सबसे बुरे और सबसे अधिक विनाशकारी चोटी पर पहुँच चुका था ।

सेण्ट जस्ट (St Just)—सेण्ट जस्ट रोसपायर का मित्र और सहकारी था तदा उस उसके साथ एक ही दिन मर्यु दण्ड दिया गया । उसन प्रानक राज्य के काल म अयन महत्त्वपूर्ण भाग लिया । यदि कानॉट का विजय प्रबधक कहा जा सकता है तो सेण्ट जस्ट का भी योग दान किसी से कम नहा था । उसन ही फास की जनता म स्वतंत्रता समानता और मित्रता के लिए कट्टर भावना भर कर उसके लिए जीवन उत्सग करने के लिए प्ररणा दी । वह निरन्तर पेरिम से युद्ध के मार्चों पर जाता और सेनाप्रा को मात भूमि की रक्षा के लिए वीरता से युद्ध करने के लिए उत्साहित करता । उसने दश भक्ता को प्रोत्साहित और देगद्गोहिया तथा कायरा का भयभीत किया । फ्रान को मशस्त्र राष्ट्र म परिणत करने का बहुत-सा श्रेय सेण्ट जस्ट का ही दिया जाता है ।

कानॉट (Carnot) (१७५३ १८२३)—राष्ट्रीय सम्मेलन के काल म कानॉट फ्रान क सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्तियो म से था । इस व्यक्ति के दृढमकल्प-पूर्ण नेतृत्व म हा राष्ट्रीय सम्मेलन न ममार के इतिहास मे सबसे प्रनाथी सयवाद की प्रणाली का सूत्रपान किया । फरवरी १७९३ म ५ लाख जवाना की आवश्यक सामबन्दी की मात्रा निवाली । अस्त १७९३ म १० और २५ वष के सारे फ्रासीसी नागरिको क लिए अनिवाय स य मवा की आज्ञा हुई । कानॉट १ इन दोना मात्राप्रा को कायरूप कन क लिए दिन रात अनथक परिश्रम किया । उमक परिश्रम क परिणामस्वरूप १७९३ के अन्त तक ७७०००० व्यक्ति सशस्त्र सेना म व । इन मन्िका म अधिकांश अपन ध्यय के प्रति कट्टर भक्ति रखत थे और दंग के लिए जान दन क लिए तयार थे । मजबूत बुजुआ लागान भी उसके सनिक अभियान का समर्थन किया । कागिर और किमान बहुत बडी सख्या म सना म भरता हुए और स्वतंत्रता समानता और मित्रता क ध्वज फहरात और शान्तिगान गाते हुए मार्च पर जा डटे ।

कानॉट न सेना म बहुत स सुधार किये । उसन सना म डिवीजन (Division) का सना की इकाई माना । उसन रमद पहुँचाने की व्यवस्था को सुधारा और इस प्रकार अपनी सेनाप्रा को गनु की सेनाप्रा मे अधिक नीघ्रगामी बनाया । उसन

सरकारी पदाधिकारियों का सेनापतिया और मन्त्रियों की गतिविधि पर निगरानी रखने के लिए मार्चों पर विशेषाधिकारी' (Deputies on Mission) बना कर भेजा। किसी भी व्यक्ति के ऊपर अभियोग होने की स्थिति में उसे बिना सफाई के मृत्यु-दण्ड दे दिया जाता था।

डान्टो का 'सैन्यवाद' (Militarism) सम्पूर्ण राष्ट्र के क्रान्तिकारी सिद्धान्त पर आधारित था। सैनिक केवल वतन भागी (Mercenaries) नहीं अपितु अपने लक्ष्य के सेवक (Missionaries) बन कर लड़ते थे। इस प्रकार की भावना का उदय होने पर हमसे क्या आश्चर्य है कि आक्रमणकारियों का काम की धरती से भगा दिया गया और युद्ध प्राप्त से हटकर नीदरलैंड्स, रूस के विनाश के विचारों से भरी धरती के पार पहुँच गया। डान्टो अपने कार्य में इतना सफल हुआ कि उनकी प्रसिद्ध उपाधि सुरक्षा का प्रबंधक' से विजय का प्रबंधक' बन गई।

Suggested Readings

Beesly	<i>Life of Danton</i>
Belloc H	<i>Life of Robespierre</i>
Belloc H	<i>Danton A Study</i>
Bradly E. D	<i>A Short History of the French Revolution</i>
Carlyle Thomas	<i>The French Revolution</i>
Chevallier J J	<i>Mirabeau 1947</i>
Madelin L.	<i>Danton</i>
Mme Roland	<i>Memoirs</i>
Stern A	<i>Mirabeau</i>
Thompson J M	<i>Leaders of the French Revolution 1932</i>
Thompson J M	<i>Robespierre 1935</i>
Welch O J G	<i>Mirabeau 1951</i>

संचालक-पचायत (१७६५-६६)

(The Directory, 1795-99)

राष्ट्रीय सम्मेलन द्वारा बनाये गये १७६५ के संविधान के अनुसार देश के प्रबंध की सत्ता संचालक-पचायत (Directory) के हाथ में निहित कर दी गई जिसके पांच सदस्य थे। संचालक-पचायत ने चार वर्ष (१७६५-६६) तक देश का कार्यभार संभाला किंतु सेनापति नेपोलियन ने इसे भंग कर दिया। पंच लाग मध्य श्रेणी के लोग थे और वे भ्रूसखारी और भ्रष्टाचार करने से सक्ताच नहीं करते थे। वे लाग समय की भांग के अनुसार न तो अपने आप को हा ऊंचा उठा सकते और न ही उस समय देश की जटिल समस्याओं को सुलभ कर सकते।

संचालक-पचायत के प्रथम संचालक कार्नोट (Carnot) विजय का प्रबंधक लेटूरनियर (Lefebvre) एक इजीनियर लारेविलेरी (Larevellier) एक गिराण्टिस्ट रयुबल (Roubeil) एक जर्कोविन और बार्रास (Barras) थे। वाराम दक्षिण का रहने वाला था। १७८६ में उसे ससद के तीसरे विभाग का सदस्य चुना गया था। कालान्तर में वह एक अच्छा जर्कोविन बन गया। इसने साहम करके रोन्मपायर का विरोध किया। १७६५ में इसने नेपोलियन बोनापाट को नियुक्त करके राष्ट्रीय सम्मेलन की रक्षा की। परिणामतः उसे संचालक बना दिया गया। वह एक चतुर राजनीतिज्ञ सनकी नितान्त आचारहीन और पदलोलुप तथा सबदा ऋण में डूबा रहने वाला व्यक्ति था। उसका व्यक्तित्व प्रभावशाली तथा सुसम्पन्न था। वह पेरिस के विलासी समाज का अग्रणी था।

पडयत्र और कूटनीति (Plots and Intrigues)—संचालक-पचायत का काल देश में पडयत्रा और कूटनीति का काल है। राजशाही के समयक और प्रतिक्रियावादी लोग बहुत बड़ी संख्या में ससद के लिए चुने गए और ये लाग सरकार का असफल बनाने के लिए ताड़ फोड़ करने में तनिक भी संकोच नहीं करते थे। सरकार केवल शक्ति प्रयाग के द्वारा ही उन्हें नियंत्रण में रखती थी।

१७६६ के वेबुफ पडयत्र का उल्लस इस प्रकार है कि अक्टूबर १७६५ में पथियन सोसायटी (Society of the Pantheon) के नाम में एक राजनीतिक क्लब की स्थापना हुई। इसमें पुराने जर्कोविन क्लब से बहुत से सदस्य आ गए और इसकी बैठकें मंगाली की रोगनी में हुआ करता था। यह एक ट्रिबून (Tribun) नाम की पत्रिका भी निकाला करते थे और इसका सम्पादन वेबुफ नाम का कट्टर विचारवादी

आन्दोलनकर्ता करता था। सचालक-पंचायत ने फरवरी, १७६६ में इस सभा के विरुद्ध कारवाई की और सेनापति बोनापाट ने स्वयं इसके सम्मेलन-स्थान का बंद करके सभा को भंग कर दिया। किन्तु सदस्यों ने इसका बदला ६ सदस्यों की एक गुप्त सचालन समिति की स्थापना करके विद्रोह की तयारियां करके दिया। इसका अर्थ १७६३ में जैकोबिन दल द्वारा बनाय गए मन्विधान का जिस स्वीकार करने भी लागू नहीं किया गया था, देग पर लागू करना था। उसका उद्देश्य क्रांति आन्दानन को पूर्वकालीन सिद्धान्तवाद और स्वच्छता तथा लक्ष्य के प्रति लगन के आधार पर पुनर्जीवित करना था। उनका ध्येय देश में समान-अधिकार गणतंत्र (Republic of Equals) की स्थापना करना था। इसका दूसरा महत्त्वपूर्ण उद्देश्य गरीब और शरीर का भेद भाव समाप्त कर देना था। इनका प्रोग्राम अपने सदस्यों का सना पुलिम और शासन यंत्र में घुसड़ कर प्रचार करना था। अस्त्र शस्त्र इकट्ठे किये गए। यह निणय हुआ कि पेरिस के जिला के नागरिक सना विद्रोहिया का समर्थन करने के लिए ध्वज के पीछे चलें। सत्ता का हस्तगत करने के पश्चात् गुप्त सचालन समिति देग की बागडोर उस समय तक सभाल रह जब तक देश में पूण बधानिक सरकार की स्थापना न हो जाय। किन्तु इस आन्दालन में पुलिम के गुप्तचर आरम्भ से ही काम कर रहे थे। परिणामतः विद्रोह हाने के ठीक पहले ही नेताओं का पकड़ लिया गया और लागे को शक्ति प्रयाग द्वारा भगा दिया गया। १७६७ में विद्रोहिया पर एक विशेष 'यायालय में मुकदमा चलाया गया। मुकदमा तीन महीने तक चला और इस अवसर पर वेबुफ ने सचालक-पंचायत के शासन की बड़े कठोर शब्दा में पार निंदा की। वेबुफ का मृत्यु-दण्ड दिया गया किन्तु ध्येय की लगन के कारण लोग ने उसकी प्रशंसा की। यह ध्यान देन योग्य बात है कि आधुनिक साम्यवाद वेबुफ के सिद्धान्तों का अनेक वाता में श्रेणी है।

फ्रांस की आर्थिक स्थिति (Finances of France)—सचालक-पंचायत के शासन काल में देग की आर्थिक स्थिति बिगड़ने लगी। चारा और आचारहीनता फैली हुई थी। देग के व्यय में घोर अपव्यय होता था। दस लाख सैनिकों की सेना की पूर्ति के लिए महान् धनराशि की आवश्यकता थी। पेरिस की जनता को देग के खर्च पर रोटी दी जाती थी। राष्ट्रीय सम्मेलन द्वारा प्रचलित नाटों की स्थिति पहले ही असतोपजनक थी। मुद्राप्रसार (Inflation) की नीति के कारण परिस्थिति और भी खराब हो गई। इतनी अधिक समस्या में नोट छाप गए कि इनका मूल्य गिर गया और हालत इतनी खराब हो गई कि ३०० लिबर के नाटा के बदले केवल एक पिथरा लिबर मिलता था। १७६७ में सरकार को आंशिक रूप से दिवानियापन घोषित करना पड़ा। राष्ट्रीय ऋणा पर सूद देना रोक दिया गया और अन्ततः नोटा का पूण अवध घोषित करना पड़ा। स्पष्ट है कि ऐसी परिस्थिति में सरकार का और ऋण मिलना असम्भव था, इसलिए सचालक-पंचायत द्वारा देग की आर्थिक अवस्था संभालने में असमर्थ रहने के कारण जनता का धार कष्ट सहता पड़ा और पंचायत की बढी निन्दा हुई।

सचालक और मसद के दाना भवनो में परस्पर मज नहा था। मभाभा के एक तिहाई और पचास से एक पच प्रत्येक वष धनकाग प्राप्त करते थे। सचालक-पचायत की न तो विधान मभाभा से और न मतदाताओं से कोई सहानुभूति थी।

धम की परिस्थिति भी विचारणीय थी। त्रान्तिवात में स्थापित हुए वधानिक चच पूणन सुप्त हा चुके थे। थियोफिलेयोपी नाम की एक नई धार्मिक विचारधारा थी किन्तु इसका भी बहुत अनुयायी नहीं थ। लोग धन भी बड़ी श्रद्धा न रोमन कैथोलिक धम में आस्था रखते थे।

तीन लाख से अधिक लाग देण छोड कर भाग गये थे। उनकी सम्पत्ति जन्त कर ली गई थी। बहुत से लोगो को भगोडा घोषित किया गया ताकि उनकी सम्पत्ति जन्त की जा सके। क्या आश्चर्य है कि उनके सम्बन्धियों ने इस प्रकार के अत्यायपूर्ण कार्यों के विरुद्ध आवाज उठाकर अगान्ति का उत्पन्न किया हा।

माघ १७६७ में विधान-सभाभा के एक तिहाई सदस्यों के रिक्त स्थानों का भरने के लिए चुनाव हुए। चुनाव क परिणामों से उदार और जकोबिन दल के विरोधियों की जीत स्पष्ट हो गई। सचालक भुक्ते को तयार नहीं थ। उहान हुच (Hoche) से हस्तक्षेप करने की अपील की किन्तु उसने ऐसा करने से मना कर दिया। उहाने नेपोलियन से कहा। उसने अपने अधिकारी आगरयू (Ajgercau) का आदेश पूर्ति के लिए भेजा। शक्ति प्रदान भी काफी हुआ और बार्नॉट को सचालक-पचायत से हटा दिया गया। अनेक सदस्यों का कद कर लिया गया। उसका पचात् १५४ सदस्यों के चुनाव का रद्द कर दिया गया।

विदेश नीति (Foreign Policy)—जिस समय सचालक-पचायत न काय-भार सभाला उस समय भी फ्रांस आस्ट्रिया सारडीनिया और ब्रिटेन के साथ युद्ध करने में सलग्न था। युद्ध की मूल योजना यह थी कि फ्रांस की एक सना रहायन नदी के पार जमनी में स हाली हुई आस्ट्रिया पहुँचे और दूसरी सेना आल्प्स पर्वत का पार करके उत्तरी इटला से होती हुई विमाना पहुँचे। रहायन नदी वाली सना मोरा जुआरडन और पिचुगरम जैसे महान् सनानिया के नेतृत्व में थी। नेपोलियन को इटली की ओर जान वाली सना का नियन्त्रण सौंपा गया। रहायन नदी की धार भंजी गई सना ने कुछ विरोध काय नहीं किया किन्तु नेपोलियन न आश्चर्यजनक सफलताएँ प्राप्त की। नेपोलियन न विद्युत्गति में व्यक्तिगत वीरता द्वारा आल्प्स का पार किया। एक वष में हा उमने पाच आस्ट्रियन सेनाओं को परास्त करके उत्तरी इटला के सारे दुर्गों पर अधिकार कर लिया। सारडीनिया वाले परास्त हुए और उहर्नार्स और सवाय फ्रान को देने पडे। १७६७ में कम्पो फोर्मिया की संधि करके आस्ट्रिया न नेपोलियन से संधि कर ली। इस संधि के अनुसार फ्रांस का आस्ट्रिया से आस्ट्रियन नीन्डरलण्डज अर्थात् बेल्जियम और इयोनिनय द्वीपसमूह प्राप्त हुआ। आस्ट्रिया को वेनिस का गणतन्त्र सौंप दिया गया और उसने यह स्वीकार किया कि वह इटली के अन्ध प्रदेशों में हस्तक्षेप नहा करेगा। यह समझौता हुआ कि जिन जमन सामन्तों के रहायन नदी के बायें तट के प्रदेश फ्रांस ने छीन लिये हैं उनकी क्षति-

पति करत के उद्देश्य से पवित्र रामन साम्राज्य व मानचित्र का पुनर्गठित किया जाण और इसके लिए एक सम्मेलन किया जाय। नेपालियन की इटली पर विजय का तुरन्त परिणाम यह हुआ कि फ्रांस के विरुद्ध प्रथम सगठन टूट गया। आस्ट्रिया और मारडोनिया दाना ने सगठन छोड़ दिया और ग्रेट ब्रिटन अकेला रह गया। दूसरा परिणाम यह हुआ कि नेपालियन का बड़ी शीघ्रता से प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। वह फ्रांस की जनता की चर्चा का विषय बन गया और जब कि जनता उसकी प्रशंसा करती थी मरकार ऊपर से उसकी क्षुण्ण मद करती किन्तु आन्तरिक रूप से वह उसमें भयभीत हो गई थी।

सचालक-पंचायत द्वारा दशवासिया के प्रति एक घोषणा प्रसारित हुई जिसमें हीरो मारी गई कि 'आप लागा को यह जानकर प्रसन्नता होगा कि लाखा मनुष्या का स्वतंत्र कर दिया गया है और फ्रांस राष्ट्र मानवता का उपकार करने वाला है। यूरोप महाद्वीप में घटल आधार पर शांति की स्थापना होगी। अब हम दबल लन्दन के विद्वानों के साथ ही दण्ड देना बाकी रह गया है। वहाँ यूरोप भर के मार मनाचार पनप रहे हैं और इन्हें समाप्त करना ही होगा।

१७६७ में नेपालियन का इंग्लैंड पर आक्रमण करने के लिए बनाई गई 'इंग्लैंड की सेना (Army of England) का स्थापित नियुक्त किया गया। १७६८ के आरम्भ में उसने फ्रांस के तट का निरीक्षण किया और इस निष्पत्ति पर पहुँचा कि फ्रांस और इंग्लैंड की बीच की समुद्री गली का उम समय तक पार करना असम्भव है जब तक फ्रांस व पाम अकिन्नाली समुद्री बड़ा नहीं होगा। किन्तु उसने ब्रिटिश साम्राज्य पर अग्र्य दिग्ग म आक्रमण करने का निश्चय किया। उसने अरबमहासागर (Mediterranean Sea) का अग्रम सम्मुख खुला पाया और परिणामतः १७६८ में वह फ्रांस की एक सेना का मित्र (Egypt) ले गया। उसने ध्येय ब्रिटन के समुद्री बेड का ध्यान अरबमहासागर की ओर आकृष्ट करके सुप्रबल पावर इम्पियर खाटी को पार करके इंग्लैंड पर आक्रमण करना था। उस दिग्ग से भारतवर्ष जाकर वहाँ मराठा और मुलतान टीपू की सहायता में भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का अन्त कर देने की भी योजना थी। वहाँ से उम ओरामान साम्राज्य पर आक्रमण करके उन समाप्त कर देने की भी सम्भावना प्रतीत हुई। नेपालियन व दुर्भाग्य में उसकी मारी याजनाएँ रची रह गई। १७६८ में समुद्री मनापति नरमन ने उसका मित्र तब पीछा किया और नील नदी के मुहाने परास्त किया। मित्र की प्रजा ने भी उक्त विरुद्ध विद्रोह कर लिया। उसकी मना धानी थी और वह अकेला रह गया। नेपालियन किसी प्रकार मित्र में नागवर्ण फ्रांस पहुँचा। समुद्र-तट पर जहाँ वह उतरा वहाँ से उबर करि तब जनता ने उसकी धुव सगठना की। जनता ने नेपालियन की सफलताओं का सचालक पंचायत का सफलताओं में नुनना की ओर पराधन की ओर निर्यात का।

सचालक-पंचायत का अन्त (Overthrow of the Directory)—
पेरिस आन व पंचायत नेपालियन एक नम्र अग्र्यमनापीय नातिक बन गया। एक

वार उगने मिस्र पुरातत्त्व अध्ययन संस्था (Egyptian Archaeological Institute) के सम्मुख एक अनुगमन तल पड़ा। वह साधारण नागरिकों का भौति परिम को गलिया में घूमा करता था। इस प्रकार के व्यवहार से उमका लक्ष्य स्वयं का साम्राज्य के दीर्घ पर खेनन वाले व्यक्ति के रूप में नहीं अपितु एक जिज्ञानु तथा शांति-यवस्था के प्रचारक के रूप में अपना प्रचार करना था। कई मप्ताह तक नेपालियन ने देग में विगेषत परिम में प्रचलित राजनीतिक प्रवाहा का गहन अध्ययन करके ही सन्नाप किया। अध्ययन करते समय वह किसी दल में नहीं मिला।

बहुत साध विचार करने के पश्चात् उसने पचायत का उलटने के लिए एम्ब साइमन के साथ पडयत्र रचा। ये दानो पडयत्रकारी विचारो में एक-दूसरे से पूणत भिन्न थे। नेपोलियन बानापाट मूलतः क्रियाशील तथा तलवार के शासन में विश्वास रखन वाला व्यक्ति था। किन्तु ऐबे साईयस सत्ता को सन्तुलित रखने में विश्वास करने वाला दार्शनिक था। किन्तु सचालक-पचायत को उखाडने के ध्यय में दाना महमत थे यह काय निश्चित रूप से अत्यन्त कठिन काय था क्योंकि गणतंत्रवाद देग में एक महान राजनीतिक शक्ति थी। जुआरडन (Jourdan) और मारयु (Moreau) जैसे सनानायको तथा पाँच में से दो सचालको की विचारधारा यही थी। विधानमण्डल के सदस्यों की बहुत बड़ी संख्या भी गणतंत्रवाद की समर्थक थी। गणतंत्र शासन प्रणाली को हटाने के उद्देश्य से होने वाली किसी भी शान्ति के सफल होने की बहुत कम आशा थी। यह सत्य है कि अग्रगण्य कठिनाइयाँ थी किन्तु नेपालियन अपनी यात्रना का पूण करने के लिए कटिबद्ध था। ६ और १० नवम्बर १७९९ का यह योजना पूरी की गई। पूवज सभा (Council of Ancients) ने ६ नवम्बर को एक आज्ञाप्रति प्रसारित की कि पडयत्र के कारण विधान मण्डल सण्ट बनाउड ले जाया जाय। नेपालियन एक शानदार घुडसवार सेना का मचालन करता हुआ दुर्लखिस पहुँचा और वहा गणतंत्र की रक्षा की शपथ ग्रहण की। उसके बाद उमन मचालक-पचायत के सचिव से कहा जिस फ्रांस का मैंने इतना चमकता हुआ छोटा था उसको तुमने क्या कर डाला? मैंने तुम्हारे लिए शान्ति की स्थापना का किन्तु मुझे युद्ध मिला। मैंने तुम्हें विजयी छाडा था किन्तु अब मुझ पराजय मिल रही है। मैंने तुम्हारे लिए इटली से आई हुई अस्त्र धनराशि छोडी थी किन्तु मुझ अब घाटा और निधनता प्राप्त हुई। नेपोलियन के ये शब्द देस के कोने कोने में गूँजन लगे।

१० नवम्बर का सण्ट बनाउड के महल में ससद का अधिवेशन हुआ। उन्होंने अपने का नोधित सना से घिरा हुआ पाया। जब नेपोलियन प्रथम सदन में घुमा ता उमन विरुद्ध नाथ का ज्वार उमड रहा था और उसे सदन से बेहाशी की हालत में बाहर ले जाया गया। ल्युमीन जा उस समय प्रथम सदन की अध्यक्षता कर रहा था उमने कारण नेपोलियन की जान बच गई। सनिका ने सदन का धर लिया और मन्स्य भाग निकले। समस्त के दानो सन्ना न एक आज्ञाप्रति द्वारा बानापाट

साथ-साथ और ड्यूकास की सदन्यता में एक छोटी-सी ममिति द्वारा अस्थायी सरकार बनायी। एक महीने पश्चात् जा नया मविधान बनाया गया उसमें देश की सर्वोच्च मत्ता प्रथम सलाहकार (First Consul) के रूप में वानापाट का सौंप दी गइ। नपोलियन न घाखे और हिंसा द्वारा सचालक-पचायत का उलट दिया। उसका मत्ता में यह मेर जीवन का वह युग है जिममें मैं असम्भव योग्यता प्रदर्शित का है।

यामसन के अनुसार यह पड्यत्र इसलिए सफ़्त हुआ क्यकि विधानमंडल और सचालक-पचायत जनता का आदर और विश्वास खो चुक थे और सारी जनता न परिम-सहित, बिना विराध क, जा तथ्य वास्तविक रूप स सम्पन्न हा चुका था उस स्वीकार कर लिया।" (Europe Since Napoleon, p 28)

Suggested Readings

- | | |
|-----------|---|
| Thomson D | <i>The Babeuf Plot The Making of a Republican Legend 1947</i> |
| Thomson | <i>Europe Since Napoleon</i> |

राष्ट्रों के सगठन (The Coalitions)

आरम्भ में यद्यपि ब्रिटिश सरकार और इंग्लैंड की जनता दाना फ्रांसियों को प्रति सहानुभूति रखते थे किन्तु फ्रांसियों की अत्याचारा के कारण उनके इस रुख में बड़ा तीव्र परिवर्तन आया। यह परिवर्तन सुई सोलहवें और सत्रासीवें मेरी एंटीइन्टे की हत्या करने के पश्चात् ता और भी अधिक हुआ गया। यह ब्रिटन ने फ्रांस को परास्त करने के लिए चार सगठन बनाने का प्रयत्न किया और कुछ समय पश्चात् यह प्रयत्न सफल भी हुआ।

प्रथम सगठन (The First Coalition) (१७९३-९७)—ब्रिटेन के प्रधान मंत्री छोटे पिट की फ्रांस के प्रति निष्पक्षता की नीति की असफलता से प्रथम सगठन का जन्म हुआ। जब फ्रांस ने इंग्लैंड से युद्ध की घोषणा की तो पिट ने प्रशिया आस्ट्रिया रूस स्पेन हालैंड और सारडीनिया से परस्पर सहयोग देने की संधि कर ली। पिट का उद्देश्य यूरोप भर में प्रचलित शासन प्रणाली को चुनौती देते बाल सब शत्रुओं विरुद्ध सारे यूरोप को सगठित करना था। उनकी योजना थी कि मित्रराष्ट्रों को खूब सहायता देकर यूरोप महाद्वीप को युद्ध की टक्कर लेने योग्य बना दिया जाय जिससे कि इंग्लैंड का समुद्री बेड़ा समुद्र पर अजेय बना रहे और फ्रांस के उपनिवेशों का जीता जा सक। आरम्भ में ही मित्र राष्ट्रों ने यह निश्चय कर लिया था कि वे अपनी क्षतिपूर्ति फ्रांस से कर लेंगे। यह युद्ध आत्म-रक्षा का युद्ध होने के साथ उपनिवेशवाद और नूतनवाद का युद्ध भी था।

आरम्भ में मित्रराष्ट्र सारे मोर्चों पर विजयी हुए और फ्रांस की घुरी तरह हार हुई। १७९३ में सैनिक दृष्टिकोण से फ्रांस की अवस्था बड़ी निराशाजनक थी। फ्रांस का चारा और स भय हो गया और देश में अनेक भागों में विद्रोह होने लग।

स आपत्ति में निपटने के लिए फ्रांस का अत्यन्त दुर्दशा से काम करना पड़ा। जनसुरक्षा समिति की स्थापना का गर्द और उसे असीम अधिकार दिये गए। देश में एक प्रकार का आतंक राज्य स्थापित हुआ। यह सत्य है कि कहीं-कहीं देश में संधि का रक्तपात भी हुआ किन्तु आतंक राज्य का सही परिणाम यह हुआ कि देश में विद्रोह का कुचल दिया गया। वानट डण्ट और सण्ट जस्ट के नेतृत्व में समूचा फ्रांस राष्ट्र सैन्य लेकर उठ खड़ा हुआ और इतनी भयंकरता से कट्टरपन तथा लगन से युद्ध हुआ कि मित्रराष्ट्रों का मार भगाया गया। फ्रांस में बलिजयम और हालैंड का विजय कर लिया। १७९५ की बर्लिन की संधि के अनुसार प्रशिया और स्पेन सगठन

छाड़ गये। प्रतीत होता है कि यूरोप के राष्ट्र इस युद्ध में भाग लेने की अपनी पालेण्ड व वेंटवार में अधिक दिलचस्पी रखते थे। इस प्रकार की परिस्थिति में संचालक-पचायत के शासन-काल में नेपोलियन का वटली भेजा गया। उसने आल्पस का पार करके अनेक टुकड़ों में आस्ट्रिया के पार उखाड़ दिया। उसने मारडीनिया के सम्राट् का मित्र-संगठन' छाड़ने के लिए बाध्य कर दिया तथा नपल्स और रोमियो के अन्य राज्यों का फिर भूतान के लिए बाध्य कर दिया। नपोलियन की मफलता के दो परिणाम हुए प्रथम स्पेन में फ्रांस के साथ आक्रमण और सुरक्षा दोनों में साथ देने की संधि कर ली दूसरे स्पेन का समुद्री बहा फ्रांस व हाथ आ गया। परिणामत इंग्लैंड का अर्थ महासागर को खाली करना पडा और वहाँ फ्रांस का प्रभाव स्थापित हो गया। पिट न कई बार गारि का प्रस्ताव किया किन्तु संचालक समिति ने उसे ठुकरा दिया। १७९७ का वर्ष इंग्लैंड के लिए बड़ा कष्टमय था। तीन समुद्री बड़े आक्रमण की घण्टी द रहे थे और आस्ट्रिया उस संधि से निकल भागने की काशिश में था। इंग्लैंड अकेला रहे गया इससे दश में बड़ा असंतोष और बचनी फँसी। किन्तु इंग्लैंड की न समुद्रा युद्धों में विजय से कुछ परिस्थिति संनली। वर्ष सेप्टे विनिसेप्ट के युद्ध में स्पेन का वेहा परास्त हुआ। कॉम्पेर-हाउन पर हथ बड़ा परास्त हुआ।

नेपोलियन से कई युद्धों में हार खाने से आस्ट्रिया में विपना का भय हुआ, इस कारण उसने १७९७ में कम्पा फार्मिया की संधि पर हस्ताक्षर किया। इस संधि में अनुसार आस्ट्रिया ने फ्रांस को आन्टियन-नीदरलैंड्स (बल्जियम) दे दिया। उसने राइन न बाएँ तट पर भी फ्रांस का प्रभुत्व स्वीकार किया। उत्तरा इटली में आस्ट्रिया के प्रान्तों को फ्रांस के सुरक्षण में एक सिंस प्रस्तादन गणतंत्र बना दिया गया। लगभग इन्ही दिनों पुतगाल ने भी फ्रांस से संधि कर ली और इस प्रकार प्रथम मित्रगण्य संगठन समाप्त हो गया। यूरोप महाद्वीप में फ्रांस के शत्रु समाप्त हुए और इंग्लैंड का कोई साथी नहीं रहा। इंग्लैंड का फ्रांस से युद्ध बरने के लिए अकेला छाड़ दिया गया और दूसरी ओर संचालक-पचायत ने इंग्लैंड पर आक्रमण की तैयारियाँ आरम्भ कर दीं। नेपोलियन ने इस आक्रमण का सनानायक नियुक्त किया गया, किन्तु १७९८ के आरम्भ में वह इस नियम पर पहुँचा कि दिना इंग्लिश साही का पार किया आक्रमण करना असम्भव है। इंग्लैंड पर आक्रमण करने की योजना रह कर दी गई, किन्तु यह नियम हुआ कि ब्रिटिश साम्राज्य पर अन्य स्थानों में आक्रमण किया जाए और इस विचार का लेबर नेपोलियन १८०८ में मिस्र गया।

प्रथम संगठन की असफलता के कारण (Causes of failure of First Coalition)—यह प्रश्न उठता है कि प्रथम संगठन की असफलता के लिए कौन सी परिस्थितियाँ उत्पन्न रहीं थीं? यथा आचार्य होता है कि त्रिवालिया तथा आठरिक् पूर से बिसरा हुआ फ्रांस समूचे यूरोप के प्राथे से अधिक शक्तिशाली राष्ट्रों को परास्त करने में असमर्थ हुआ। यह एक ऐतिहासिक तथ्यकार है। किन्तु संगठन की असफलता के कारण स्पष्ट हैं। संगठित राष्ट्रों में सामंजस नहीं था। उनमें परस्पर मतभेद थे और प्रायः राष्ट्र अपनी अपनी मनमानी करता था। उनमें किसी भी

नन् थे। इंग्लैंड का लक्ष्य फ्रांस का नीदरलैण्ड से निकाल कर उस प्रदेश को आस्ट्रिया को देना था। किंतु आस्ट्रिया नीदरलैण्ड को प्राप्त करके उसका बवगिया तथादला करना चाहता था। ब्रिटिश सरकार इस प्रकार के तबादले का नहीं चाहती थी। इस और प्रशिया आस्ट्रिया की फ्रांस व विरुद्ध सहायता करने का प्रयत्न इंग्लैंड के बटवारे में अधिक दिलचस्पी रख रहे थे। निस्तदह ध्येय की एकता न होने से काम की एकता भी नहीं रही थी। पेरिस पर सम्मिलित चढ़ाई कराने की प्रयत्नायें एक मित्र राष्ट्र फ्रांस के सीमांत पर स्थित दुर्गों पर अधिकार जमाने में प्रयत्नशील थीं। ब्रिटिश शकक दुर्ग को प्राप्त करना चाहते थे इसलिए उन्होंने इस दुर्ग पर हमला डाला। आस्ट्रिया फ्लेसेस और लोरने पर और प्रशिया पोलैंड पर आगे बढ़ाये राइन नदी के किनारे पर ही रहा। अपने अपने स्वायत्त के कारण मित्रराष्ट्र इस समय के वास्तविक रूप और फ्रांस की ओर से आने वाले भय व महत्त्व का नहीं समझ पाये। उन्हें लगा कि फ्रांस इस समय क्रांति में उलझा हुआ है इसलिए उसे परास्त करना सरल होगा। उन्होंने यह अनुभव नहीं किया कि इस समय व बुरबोन राजशाही के विरुद्ध नहीं अपितु स्वतंत्रता समानता और मित्रता के सिद्धान्तों से प्रेरित और अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए प्राण देने को तैयार सगस्त्र राष्ट्र टक्कर ले रहे हैं। ये राष्ट्र अपने स्वायत्त और परस्पर की ईर्ष्या को छान नहीं सके।

मित्र राष्ट्र स्वयं पोलैंड में क्रांति कराने के लिए सत्तम थे। १७६३ में पोलैंड का दुबारा बँटवारा हुआ जिसमें रूस और प्रशिया ने अपना भाग लिया। १७६५ में शेष पोलैंड को रूस प्रशिया और आस्ट्रिया ने बाँटा और इस तरह पोलैंड का अस्तित्व समाप्त हो गया। इस काल में यूरोप की शक्तियों में पोलैंड के बटवारे के लिए आपस में होड़ लगी थी। प्रत्येक राष्ट्र दूसरे से अधिक प्रदेश प्राप्त करने की कोशिश कर रहा था। परिणामतः सगठित राष्ट्रों की सनाएँ निष्क्रिय हो गई और यह सब मोर्चों पर परास्त होना पड़ा।

कान्टन में अपने अदभुत सैन्य-संचालन कौशल और दक्षता द्वारा राष्ट्र के अंदर साधन जुटाये। आन्तक राज्य ने देश में विरोध का नाग कर दिया। कायर वीर बन गए और दशद्राहियों को भयभीत कर दिया गया। परिणाम यह हुआ कि फ्रांस फ्रांस राष्ट्र बड़ी लगन से लड़ा और उसने मित्रराष्ट्रों को हरा दिया। फ्रांस सनापतियों को स्पष्टतः बता दिया गया था कि उन्हें विजय प्राप्त करनी ही है अन्यथा उन्हें मृत्युदण्ड दिया जायगा।

नीदरलैण्ड में ब्रिटेन की सनाया का सनापति ड्यूक ऑफ याक था जो लिवुल निक्ममा व्यक्ति था और इस प्रकार के व्यक्ति से अच्ये परिणामों की उम्मीद आशा नहीं की जा सकती थी। उसका युद्ध-कौशल इस प्रकार बर्णन किया जाता है —

‘ विचारा बुडडा ड्यूक आफ याक

दस हजार की सेना पास।

कभी घडाता उन्हें छोटी पर

फिर उतार ले आता पास।”

द्वितीय सगठन (The Second Coalition) (१७९८-१८०१)—द्वितीय सगठन १७९८ के नील-युद्ध का सीधा परिणाम था जिमम नेल्सन ने नपोलियन को परास्त किया था। यूरोप की शक्तिशाली संचालक-पंचायत की आक्रामक नीति से बड़ी चिन्तित थी। अतः जब उन्हें यह सूचना मिली कि नपोलियन मिस्र में अटक गया है तो उन्होंने कारबाई करने का निश्चय किया। १७९८ में दूसरा सगठन बनाया गया जिसमें इंग्लैंड रूस आस्ट्रिया तुर्की और नेपल्स सम्मिलित हुए। इस सगठन का ध्येय पेरिस स्थित आधिकारी सरकार का बुचल कर फ्रांस का उसकी प्राचीन सीमाओं में घुसा देना था। इस सगठन से प्रशिया अलग रहा। फ्रांस ने आस्ट्रिया से, अपना प्रदेग से सभी सेना का हटाने की मांग की और उमक मना करने पर युद्ध आरम्भ हुआ।

आरम्भ में परिस्थिति मित्र राष्ट्रों के अनुकूल प्रतीत हुई। आस्ट्रिया के आर्क ड्यूक चार्ल्स ने फ्रांस को एक सना का हराकर राइन नदी के पार खदेड़ दिया। आस्ट्रिया और रूस की सम्मिलित सेना ने दो बड़े लड़ाइयाँ में फ्रांस की सेना को बुरी तरह हराया। अजमहासागर में मिनोरका द्वीप पर अधिकार कर लिया और माल्टा पर घरा डाल दिया गया। किन्तु १७९९ का वर्ष मित्र राष्ट्रों के लिए आपत्तिपूर्ण सिद्ध हुआ। फ्रांस ने अपनी स्थिति संभाल ली। अंग्रेज परास्त हुए और उन्हें हालण्ड खाली करना पड़ा। फ्रांस तत्कालीन खतरे से बच गया।

नपोलियन मिस्र से लौटा। फ्रांस की जनता ने उसका बड़े उत्साह में स्वागत किया। वह संचालक-पंचायत को उलटने में सफल हुआ और १७९९ में स्वयं प्रथम मन्त्रिहार (First Consul) बन बैठा।

नपोलियन का पुनरागमन मित्र राष्ट्रों के लिए अत्यन्त चिन्ताजनक हुआ। रूस ने सगठन छोड़ दिया और जार पॉल इंग्लैंड और आस्ट्रिया दोनों से बड़ा नाराज हुआ। जार यूरोप में फ्रांस का बुचलकर प्राचीन गणतन्त्र प्रणाली स्थापित करना चाहता था किन्तु आस्ट्रिया के शाब्दिक को शक्ति करने का अधिक इच्छुक था। आस्ट्रिया के इस रुख में जार नाराज हो गया। इंग्लैंड में जार इसलिए नाराज हुआ कि वह आस्ट्रिया की नीति का समर्थन करता था। फिर योनाटाट का बहू सम्मान करने लगा और परिणामतः इस सगठन से अलग हो गया।



जार्ज तृतीय

बोनापार्ट ने इंग्लैंड के सम्राट को एक पत्र लिखा जिसमें उसने शान्ति की इच्छा प्रकट की। उसका आशय शान्ति का प्रस्ताव करने अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाना था, क्योंकि फ्रांस युद्ध से थक चुका था। ब्रिटिश सरकार ने रोपपूर्ण उत्तर दिया और कहा कि शान्ति व्यवस्था का एक ही आश्वासन है कि फ्रांस में बुरबोन वंश के राज्य की स्थापना हो। इस पत्र के बटु शब्दों से फ्रांस की जनता में इंग्लैंड के प्रति और भी बढ़ता बढ़ गई तथा इसमें नेपोलियन का काय पर्याप्त रूप में सफर हुआ। नेपोलियन ने मोरेयू के नतुत्व में आस्ट्रिया के विरुद्ध एक सेना भेजी और स्वयं दूसरी सेना लेकर आस्ट्रिया के विरुद्ध बढ़ा। मोरेयू ने होहेनलिनडेन (Hohenlinden) के स्थान पर एक शानदार विजय प्राप्त की और स्वयं नेपोलियन ने मारेंगो (Marengo) के युद्ध में आस्ट्रिया को परास्त किया। अगले स्थानों पर भी फ्रांस की जीत हुई और १८०१ में आस्ट्रिया को लुनेविले की संधि पर हस्ताक्षर करने पड़े। इस संधि में सम्पूर्ण फोर्मीयो (१७६१) की संधि की शर्तों को पुनः पक्का किया गया। १८०१ के पश्चात् इंग्लैंड फिर अकेला रह गया। फ्रांस और इंग्लैंड दोनों युद्ध में थक चुके थे, १८०१ में शान्ति-संधि हुई। ऐमिस की संधि केवल युद्ध रोकने का प्रस्ताव सिद्ध हुई। १८०३ में दोनों देशों में युद्ध पुनः आरम्भ हो गया।

तृतीय सगठन (The Third Coalition) (१८०५)—पिट (Pitt the Younger) ने तीसरा सगठन बनाया जिसमें प्रशिया आस्ट्रिया स्वीडन और इंग्लैंड थे। नेपोलियन लुनेविले-संधि की शर्तों की अवहेलना कर रहा था और स्विट्जरलैंड जैसे पड़ोसी राष्ट्रों के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप कर रहा था। नेपोलियन द्वारा ड्यूक ऑफ युग्हीन (Duke of Eughien) को उठा लेने और उसकी हत्या कर देने का कारण सारे यूरोप में नेपोलियन के विरुद्ध बढ़ा राय फैल गया था। नए घटना से फ्रांस और रूस के बीच सम्बन्धों में खिंचाव आ गया। नेपोलियन ने इंग्लैंड के अधिकार में आये हुए होनोवर प्रदेश को प्रशिया को देने का लालच दिया। अतः प्रशिया ने सगठन में शामिल होने से साफ इन्कार कर दिया क्योंकि वह इस पक्ष का समर्थक नहीं था।

तीसरे सगठन का ध्येय उत्तरी जर्मनी से फ्रांस की सेनाओं का निचाल देना इंग्लैंड का तथा स्विट्जरलैंड को स्वतंत्रता दिलाना और सारडीनिया का राजा का पीडमोंट (Piedmont) निलाना था। पहले का अनुसार इंग्लैंड ने मित्र राष्ट्रों को खुले हाथों सहायता देना स्वीकार किया। यह भी स्वीकार किया गया कि युद्ध के पश्चात् यूरोप की नयी शक्ति का एक सम्मेलन हो जिसमें राष्ट्रों के परस्पर व्यवहार का कानून बनाने काय और एक यूरोपीय संधि (European Federation) बनाया जाय। किन्तु तीसरे सगठन का ध्येय फ्रांस की शासन प्रणाली को बदलना नहीं था।

नेपोलियन भी इंग्लैंड पर आक्रमण करने की योजना बना रहा था और रूस द्वारा गठित किया जा रहा था। इंग्लैंड-संघ का नाम से एक शानदार सना इंग्लैंड पर आक्रमण का लिए सुसज्जित की गई और इसी ध्येय से तीन समुद्री बेड़े भी तैयार किये गए। इंग्लिश चैनल की नैलमन और कानवालिंस रक्षा कर रहे गये थे।

कानवानिम द्वारा ब्रैस्ट का रास्ता सफ़रता से रोक दन मे नेपोलियन की योजना म बाधा पड गई । इस बात का प्रयत्न किया गया कि न-सन म बिना लडे ही इंग्लैण्ड



विट वि शगर

पर आक्रमण किया जाए । फिर भी १८०५ में ट्राफ़ल्गर (Trafalgar) का युद्ध हुआ और फ्रांस को पूर्णतः परास्त कर दिया गया । इस विजय से बेवत इंग्लैण्ड की रक्षा ही नहीं हुई अपितु ब्रिटेन की समुद्री जल-सत्ता की समुद्र पर निर्विवाद रूप से प्रभुत्व सत्ता स्थापित हो गई ।

यद्यपि नेपोलियन समुद्र पर हार गया किन्तु घन पर उसने अपनी उच्च स्थिति का पूर्ण लाभ उठाया । आस्ट्रियन सनापति का पर लिया गया और उस उल्म (Ulm) के स्थान पर गम्भ-समपण करने के लिए बाध्य कर दिया गया । उसने १८०५ में फ्रांस और आस्ट्रिया की सम्मिलित सनापति को आस्टरलिट्ज (Austerlitz) के स्थान पर प्रत्यक्ष करारी हार दी थी । परिणाम यह हुआ कि आस्ट्रिया न संगठन छोड़ दिया और उस प्रगबग (Pressburg) की सधि करनी पड़ी जिससे अनुमार उसे फ्रांस के इटली प्रदेश को वेनिशिया (Venetia) तथा बवेरिया को टायरोल स्ने

पडा। पवित्र राम साम्राज्य के दो राज्या के शासका का फाम स मित्रता रगन के उपहार म आस्ट्रिया के प्रभाव स स्वतन्त्र कर दिया गया। रूम ने सहायता क लिए प्रगिया पर विस्वास किया था किंतु प्रगिया के सम्राट की अस्थिर नीति क कारण, जार ने भी सगठन छोड दिया। प्रगिया ने फ्रांस स आक्रमण और सुरक्षा म माय तन की सधि कर ली और इमक उपहारम्वरूप उसे होनोवर प्रदान किया गया। इम प्रकार तीसरा सगठन भी समाप्त हुया और इसका प्रवक्तक पिट, आस्टरलिटज का हार की सूचना सुनते ही मर गया।

चतुय सगठन (The Fourth Coalition) (१८१३)—१८१२ म नपो लियन द्वारा रूस पर आक्रमण करन तथा पीछे हटने म उसकी सेनाओं के विनाग के पश्चात १८१३ म चौथा सगठन बनाया गया। इम सगठन के प्रमुख सन्ध्य रूस प्रशिया और इंग्लण्ड थ। आस्ट्रिया वा म आ मिला। इसका सारा व्यय इंग्लण्ड सहन करता था। यद्यपि मित्र राष्ट्रा की सनाएँ ड्रेसडन पर परास्त हुइ किंतु अय स्थाना पर उहे विजय प्राप्त हुई। १८१३ म लिपजिग के स्थान पर नेपालियन की हार हुई। कालान्तर म नेपालियन की शक्ति क्रमश क्षीण होती गई और मिथराष्ट्रा की स्थिति शक्तिशाली होती गई। परिणामत १८१४ म उसे पूणत परास्त कर दिया गया। १८१५ म वह फ्रांस लौट आया। वाटरलू क युद्ध म वह फिर हारा। इस प्रकार चतुय सगठन नेपालियन का पूणत उखाड फकन म तथा बुरखोन वग का राज्य स्थापित करने म सफर हुया।

Suggested Read ings

Kessinger H A *A World Restored Metternich Castlereagh and the Problems of Peace 1812 1822*

नेपोलियन बोनापार्ट (१७६९-१८२१)

(Napoleon Bonaparte, 1769-1821)

नेपोलियन विश्व में उत्पन्न सबसे श्रेष्ठ सेनानियता में से एक था। उसने अपने युग पर शासन किया और उसका नाम केवल फ्रांस या यूरोप के इतिहास में ही नहीं अपितु विश्व के इतिहास में अमर है। वह महान सैनिकी आत्मविश्वासी निर्भीक और साधन-सम्पन्न व्यक्ति था। वह भाग्य में विश्वास करने वाला व्यक्ति था, क्योंकि वाल्टरवाल से ही उसे यह विश्वास था कि बाइ गुप्त-सैनिक ही उस विजय और सम्मान प्रदान कर रही है। उसने अपने अनुगामियों का प्रेरणा देने की क्षमता थी। वह अपने सैनिकों से प्रेम करता था और वे भी प्रतिदान में उसे प्रेम करते थे। उसकी स्मरण-चित्रण अद्भुत थी। कहा जाता है कि उसे अपनी मेना की टुकड़ियाँ और सैनिकों के नाम कण्ठस्थ थे।

विश्वदन्ती है कि नेपोलियन ने कहा था कि 'मैं उस समय उत्पन्न हुआ था जब मेरा देश मृत्यु-शय्या पर पड़ा था। तीस हजार फ्रांसीसी हमारे समुद्र-तट पर ज्वरदन्ती स्वन-श्रवा के सिंहासन का लहू के समुद्र में डुबा दे रहे थे। इस प्रकार के घृणित दृश्य मुझे बालक की आँखों द्वारा दखे नहीं गए।' १७६९ में फ्रांस न जिनाया में कामिवा' का द्वीप खरीदा तथा इसी द्वीप में आजागिया (Ajaccio) नामक स्थान पर इसी वर्ष की १५ अगस्त को नेपोलियन का जन्म हुआ। उसने फ्रांस में राज्य-शासन की ओर १७ वर्ष की आयु में एक तापस्थान के अधिकारी के रूप में सेवा में कार्य करने लगा। १७९९ में जब फ्रांस में क्रांति हुई, वह मुक्ति के २० वर्ष का था। दिसम्बर, १७९३ में अपने तोपखाने की क्षमता से संचालन करने के कारण उसने ट्युलान का पुनः प्राप्त कर लिया तथा विद्रोह प्रसिद्धि प्राप्त की। इन विजय के परिणामस्वरूप उसने त्रिप्रदियर जनरल का पद प्रदान किया गया। ५ अक्टूबर १७९४ को उसने राष्ट्रीय सम्मेलन के विरुद्ध सम्राट के समर्थकों का निर्णय का विद्रोह बुलवाया। परिणामतः उसे देश में अन्तरिक सेना का सेनापति बना दिया गया। ६ मार्च, १७९६ को उसने जोमेफाइन में विजय किया।

प्रथम मगडन के कारण जिन समय फ्रांस बड़ी कठिन परिस्थिति में पड़ा था नेपोलियन का इटली के मार्च का सेनापति नियुक्त किया गया और इटली में ही उसने अपने अग्रिम कार्य की नींव रखी।

> १७ > में फ्रांस ने लिगा 'मुझे ऐसा प्रेरणा हुई है कि यह छोटा-सा देश (शतक) एक दिन यूरोप को आग्नि-विकृत कर देगा।' यह किताब सत्य मान्यता का था।

नेपोलियन का इटली पर अभियान अप्रैल १७९६ से अप्रैल १७९७ तक चला। इस इन गणों में अक्षित किया गया है—'वह आया उमन दक्षा, उमन विजय पाई।' नेपोलियन को बड़ी कठिनाइयाँ के सामने लड़ना पड़ा। उम आस्ट्रिया व सार्डीनिया की सेनाओं का मुकाबला करना पड़ा। उसका सिपाहियों की सेना कम ही नहीं थी बल्कि उनका सामान भी बहुत अपर्याप्त था। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि नेपोलियन ने अपने शत्रुओं से अलग अलग मुकाबला करने का निश्चय किया और उन्हें एक होने की अनुमति नहीं दी। वह आस्ट्रिया वाला और सार्डीनिया वाला क बीच घुस गया और आस्ट्रिया वालों को हरा कर उन्हें पूव की ओर लुट्ट दिया। उसके बाद वह सार्डीनिया वालों को ओर मुड़ा और उन्हें हरा लिया। इस प्रकार अपने सार्डीनिया की राजधानी ट्युरिन का मार्ग खाल दिया। सार्डीनिया की सरकार न शांति की माँग की और सेवामें व नाइस फ्रांस को देने की गत मान ली। नेपोलियन ने अपने सिपाहियों के सामने अपनी सफलता को इन शब्दों में व्यक्त किया—

पन्द्रह दिनों के भीतर तुमने छ विजयें पाईं हैं, इक्कीस प्रकार के अंग पचपन प्रकार की ताप और अनेकों दुर्गों का प्राप्त किया है और पीडमाट व सर्वोत्तम भागों को जीता है। तुमने १५०० लोग कदो बनाये हैं और १०००० व्यक्ति का मारा या घायल किया है। लेकिन ए सिपाहियों तुमने कुछ नहीं किया है क्योंकि अभा तुम्हारे लिए करने का बहुत कुछ नेप है। तुम्हें अभी और लड़ाइयाँ लड़नी हैं नगरों को पाना है और नदियों का पार करना है।

सार्डीनिया की पराजय के बाद नेपोलियन ने अपना ध्यान आस्ट्रिया की ओर बढ़ाया। उसने पो नदी को पार किया तथा आस्ट्रिया व क्माण्डर ब्यूला (Beau lieu) ने अडडा नदी का पार कर लिया। अब लोदी का पुल पार किया बिना नेपोलियन किसी भी प्रकार आस्ट्रिया के उस क्माण्डर का पराजित नहीं कर सकता था। यह पुल ३५० फीट लम्बा था और आस्ट्रिया वालों का आर स हान वाली तेज गोलाबारी के कारण उसे पार करना 'यावहारिक दृष्टि से असंभव था। नेपोलियन ने अपने तोपखियों को आगे बढ़ने की आज्ञा दी लेकिन व आधी दूर भी नहीं पहुँच पाए थे कि उन्हें आस्ट्रिया की गोलाबारी ने हिला दिया और वे लौटने लगे। नेपोलियन व अन्य सैनिकों ने दुकड़ी की ओर बढ़ना शुरू किया। अपनी जानों का संकट में डाल कर उन्होंने अपने सिपाहियों का उत्साह बनाया फल यह हुआ कि उन्होंने आस्ट्रिया वालों को पुड सामग्री पर कब्जा कर लिया। तब नेपोलियन ने डायरेक्टरी को यह आदेश लिख कर भेजे— उन समस्त त्रियाओं में जिनमें मर आधीन सिपाहियों ने भाग लिया है उसमें लोदी के पुल को पार करने वाली घटना के समान अन्य कोई नहीं हुई। तब उसका सिपाही नेपोलियन को लिटिल कारपा रन करने लगे।

जब आस्ट्रिया वालों मंटौ (Mantua) व दुर्ग में जा छिपे तो नेपोलियन ने उसका घेरा छात दिया। जून १७९६ व अप्रैल, १७९७ व बीच में आस्ट्रिया वालों ने अपने मंटौ में घिरे हुए कदियों को सहायता पहुँचाने के चार प्रयत्न किए।

लेकिन उन्हें नपोलियन ने बकार कर दिया। वह शत्रुओं को मिलकर एक होना से पन्ने ही दृष्टा में पराजित करने की नीति पर चलता रहा। उसने सदैव यही नीति अपनाई कि शत्रु पर तभी आघात करो जबकि वह बँटा हुआ हो। विवशतापूर्ण गमना की नीति में उसने इसे पूर्ण किया। उसके सिपाहियों ने यह ठीक ही कहा था कि इंग्लैंड टायो से उसे विजय प्राप्त होती है। उसने अपनी सेनाओं का कभी घाग कभी पीछे एम किया जैसे वह कोई खेल की चिड़िया है। अपने शीघ्र आंदोलना से उसने अपनी कम मर्यादा की त्रुटि दूर की। उसके शत्रु भी उसकी मफलता के लिए उत्तरदायी थे क्योंकि उन्होंने अपनी मारी सेनाएँ एकदम मग्राम-श्रेत्र में नहीं रहीं। आरकोला (Arcola) पर तीन दिन तक युद्ध चलता रहा। यहाँ भी विजय पुल पर अधिकार जमा करने पर आधिन थी। पुल ने ही आस्ट्रिया के विभाजन का जना रखा था। यदि वे पुल का अपने आधीन कर पाते, तो आस्ट्रिया की सेनाएँ नपोलियन के विरुद्ध मिलकर लड़ सकती। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। नेपोलियन ने अपने कमचारियों के साथ भागा छीन लिया और आगे बढ़ा। आस्ट्रिया वालों ने उन पर गोली चलाई। आस्ट्रिया वाला ने बहुत से फ्रांस के अधिकारियों का मार दिया फिर भी उन्होंने अपने सेनापति का साथ नहीं छोड़ा और उसे उसके शस्त्रों व वस्त्रों के साथ खींच लिया। नेपोलियन की चढ़ म गिर गया और उसकी मांस दहन लगी। फौरन गाँ मच गया 'जनरल का बचान के लिए आगे बढ़ा। फल यह हुआ कि फ्रांस वाला ने अपनी सारी शक्ति स चोट की और आस्ट्रिया वाला को पीछे हटाकर अपने नेता का बचा लिया। नेपोलियन की सेना को सफलता मिली तथा आस्ट्रिया वाले वापस लौट गए। आरकोला का युद्ध १५ नवम्बर से १७ नवम्बर १७९६ तक चला।

दा मास वाँ आस्ट्रिया की एक शय सेना ने मद्रुआ का महामना पहुँचान का प्रयत्न किया और तब रिवोली पर दूसरा निराशाजनक युद्ध हुआ। १२-१४ जनवरी १७९७ को नपोलियन ने आस्ट्रिया वाला को बड़ी आघातपूर्ण पराजय पहुँचाई। उस पराजय के दो सप्ताह बाद मद्रुआ ने हथियार डाल दिए। नपोलियन एल्प्स तक बढ़ गया और आस्ट्रिया वाले पीछे हट गए। ७ अगस्त १७९७ का वॉ न्यूबन (Leubben) पहुँचा जो वेयाना से लगभग १०० मील दूर है। इस स्थल पर आस्ट्रिया ने शान्ति की माँग की। नेपोलियन काफी प्राप्त कर चुका था। वह ६८ बड़े व ६५ छोटे युद्ध लड़ चुका था। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि एक सैनिक विजय में उसने कहीं इसके प्रतिरिक्त तुम परिस का लाक-वाप से २ ००,०० ००० फ्रैंक भेज चुके हैं। तुमने परिस के मग्रहालय का प्राचीन व आधुनिक इटली की २०० अदभुत कलाओं की वस्तुओं से भर दिया है जिन्हें बनाने में ३० युग लग थे। तुमने यूरोप के सबसे अधिक मुद्रर देण को पा लिया है। सबसे पहली बार एड्रियाटिक की सीमाओं पर फ्रांस का ध्वजा फहराई गई है।

यह देखने योग्य बात है कि अपने सारे इटली के अभियान में नपोलियन घोरनापाट ने इस प्रकार काय किया जैसे वह फ्रांस का प्रधान है। कभी-कभी उसने टायरकरी का परामर्श माना लेकिन प्रायः उसे टुकरा दिया। इटली में अपने

है। किन्तु उतान यह साचा कि ब्रिटिश साम्राज्य सप्तर क अनक भागा म फला हुआ है और किसी अन्य स्वान स इस पर आक्रमण करक साम्राज्य को चोट पहुँचाई जा सकती है। इन परिस्थितिया म नेपालियन न मिस्र पर आक्रमण करने का निश्चय किया। उसकी याजना थी कि मिस्र का विजय करन क पश्चात् वह मराठा और मुस्तान टीपू की सहायता स अग्रजा का भारतवप स निवाल दगा। तुर्की भी दुबल हो रहा था इसलिए वह भी इनक आक्रमण महन करन म असमय था और उस पर विजय पाई जा सकती थी। उसन सोचा कि ब्रिटिश समुद्री बडे का चक्कर म डानकर अधमहासागर म स जाकर इंग्लण्ड पर आक्रमण किया जाय।

नेपोलियन ने टयुलोन (Toulon) छाडा और मई १७९८ म मिस्र के लिए समुद्री भाग से उसन प्रस्थान किया। वह ब्रिटिश बडे से बचकर मिस्र पहुँचने म सफल हा गया। रास्ते म उसने माल्टा (Malta) को विजय किया। उसन परामिड (Pyramids) युद्ध का जीता जिसस वह नील के मदान का स्वामी बन बठा। किन्तु १७९८ म सेनापति नल्सन (Nelson) ने उसे नील (Nile) नदी क युद्ध म बुरी तरह हराया। फाम का समुद्री बडा पूणत नष्ट कर दिया गया और नेपोलियन का फ्रांस स यातायात का मन्ध ध पूणत छिन भिन हा गया। उसने मारिया पर आक्रमण किया किन्तु आकरे (Acre) को विजय नही कर पाया। किसी प्रकार बडी कठिनाई से १७९९ म वह फ्रांस पौच गया।

यह पहले ही लिखा जा चुका है कि पचायत क सचालका ने फ्रांस का शासन सफलता से नही किया अत देश म उनक विरुद्ध बडा क्षोभ फल गया था। नेपोलियन ने इस स्थिति का लाभ उठाया और ९ नवम्बर १७९९ का साइयस (Sieyes) की सहायता से सचालक पचायत को उलट दिया। इस घटना का ब्रुमयर (Brumaire) का आठवाँ सगम्त्र पडघत्र (Coup d'etat of VIIIth) कहा जाता है।

प्रथम सलाहकार के रूप मे नेपोलियन (Napoleon as First Consul) (१७९९ १८०४)—सचालक पचायत की समाप्ति पर १७९९ म फाम का नया सविधान बना। इस सविधान क अनुगार देश क कायमण्डल की सत्ता तीन सलाहकारों क हाथो म सीपी गई जिह विधानमण्डल दम बप क लिए चुनता था। इन तीन सलाहकारो म एक प्रमुख सलाहकार होता था। इस प्रथम सलाहकार का लग भग सम्पूर्ण सत्ता प्राप्त थी। कबल यह व्यक्ति ही दण म कानून लागू कर सकता तथा सम्पूचे देण मे सार नामरिका अथवा सनिका और पनाधिकारिया को नियुक्त और पदच्युत कर सकता था। बोनापाट को प्रथम सलाहकार नियुक्त किया गया और उगने अपने स व ता सहाकारिया साइयस (Sieyes) और ड्यूकाम (Ducos) को पदच्युत करके दा अय एम मनाहजार नियुक्त किय जिनम विराध करन का माहम हा नहा था और इस प्रकार उसन अपनी शक्ति का ठाम बनाया। राज्य परिपद (Council of State) का कानूना ममविता तयार करन नापारुण विधक बनाने कानूना की व्याख्या करन तथा उच्च न्यायालय का काय करन क अधिकार

दिए गए। १०० सदस्यों की एक सभा (Tribunate) बनाई गई और उसे यह अधिकार दिया गया कि यह सरकार द्वारा भेजे गए विधेयकों को स्वीकार या अस्वीकार करे, किन्तु इसे विधेयकों में संशोधन करने का अधिकार नहीं था।

विधान-सभा ३०० सदस्यों की एक 'भूक-सभा' थी जो सरकार या राज्यसभा (Tribunate) द्वारा राज्यसभा द्वारा भेजे गए कानूनों को बिना विवाद या विचार के स्वीकार या अस्वीकार कर सकती थी। सीनेट के ८० सदस्य थे जो जीवन भर के लिए सदस्य बना दिये गए थे और उन्हें अपदस्थ नहीं किया जा सकता था। सीनेट सलाहकार (Consuls) ट्रिब्यूनल और विधान सभा बनाती थी। सविधान के प्रति बूल बिंदी भी कानून को रद्द करने का इसे अधिकार प्राप्त था। सिद्धान्त रूप से देश में वयस्क मतदान का विधान किया गया किन्तु वास्तविक रूप से सावजनिक मतदान का प्राक्कियात्मक बना दिया गया था। प्रत्येक कम्पून के निर्वाचित सदस्य अपनी सख्या के दशमांश चुनकर एक 'कम्पूनल लिस्ट' बनाते थे। कम्पूनल लिस्ट के सदस्य अपनी सख्या के दशमांश चुनकर 'डिपार्टमेंटल लिस्ट' बनाते और डिपार्टमेंटल लिस्ट के सदस्य अपनी सख्या के दशमांश सदस्य चुनकर एक 'राष्ट्रीय लिस्ट' बनाते थे। स्थानीय पदाधिकारियों को प्रादेशिक सूची से चुना जाता था तथा राष्ट्रीय लिस्ट अथवा सूची से सीनेट ट्रिब्यूनल और विधान-सभा के सदस्यों को चुनती थी। डिपार्टमेंटल के प्रमुख प्रिंसेंट होते थे और कम्पूनों के प्रमुख मेयर होते थे। इन दोनों पदाधिकारियों की नियुक्ति प्रमुख सलाहकार करता था। स्पष्ट है कि १७९९ का सविधान केवल घोषणा-मात्र था। जनतंत्र का बीजा केवल जनता को भ्रम में डालने रखने के लिए बनाये रखा गया था, किन्तु सारी वैधानिक सला प्रमुख सलाहकार के हाथ में सौंप दी गई थी। देश में एक पूर्णतः केन्द्रीय तथा अथवा स्वच्छाधारी शासन-प्रणाली स्थापित कर दी गई थी। कहा जाता है कि जब सविधान की घोषणा हुई तो किसी स्त्री ने अपनी पड़ोसिन से पूछा, 'मैं तो एक शब्द भी नहीं सुना। सविधान क्या है?' उत्तर मिला, 'वहाँ बोनापार्ट है।'



नेपोलियन बोनापार्ट

१८०२ में नेपोलियन का जीवन भर के लिए प्रमुख सलाहकार नियुक्त किया गया और उसे यह भी अधिकार दिया गया कि वह अपनी उत्तराधिकारी भी नियुक्त

करेगा। ट्रिब्यूनल के प्रस्ताव को सीनेट ने स्वीकार किया और १८०४ में नेपोलियन सम्राट बना दिया गया। इस प्रस्ताव पर सावजनिक मतदान लिया गया और लगभग ३० लाख ५० हजार मतों के बहुमत से यह प्रस्ताव देश ने स्वीकार किया। पाप स्वयं २ दिसम्बर, १८०४ को पेरिस आया और नेपोलियन को शाही तलवार और राज-दण्ड का अधिकार प्रदान करके उसका अभिषेक किया। किन्तु जब पाप उसका सिर पर मुकुट रख रहा था, उसने उसके हाथ से मुकुट लेकर स्वयं ही पहिन लिया।

प्रमुख सलाहकार के रूप में नेपोलियन का काम (Work of Napoleon as First Consul)—नेपोलियन की प्रतिष्ठा मुख्यतः उसकी सैनिक सफलताओं के कारण थी किन्तु प्रमुख सलाहकार के रूप में उसने बहुत से सुधार किये जिनके कारण वह अमर हो गया। ठीक ही कहा जाता कि यदि नेपोलियन की विजय अल्पजीवी थी, तो उसके नागरिक सुधार के काम की नींव चट्टान पर खड़ी की गई थी।

(१) नेपोलियन ने स्थानीय प्रशासन की सारी व्यवस्था को केन्द्रित कर दिया। १८०० में उसने तमाम प्रादेशिक प्रशासन अपने अधिकार में कर लिया। डिपार्टमेंटों और अर्रोंडिसमेंटों (Arrondissements) की निर्वाचित सभाओं के सारे अधिकार नेपोलियन द्वारा नियुक्त तथा उसके प्रति उत्तरदायी प्रिफेक्ट और उप प्रिफेक्टों के हाथों सौंप दिये गये थे। स्थानीय सभाओं को बनाये रखा गया किन्तु वे वष में केवल राजस्व का अनुमान तथा दर निर्धारित करने के लिए १५ दिन के लिए बैठती थीं। ये सभाएँ प्रिफेक्टों और उप प्रिफेक्टों की सलाहकार समितियों के रूप में काम करती थीं। छोटी छोटी कम्यूनो के मेयर प्रिफेक्ट नियुक्त करते थे, किन्तु जिनकी जनसंख्या १ लाख से अधिक होती थी उनके मेयर की नियुक्ति केन्द्रीय सरकार करती थी। स्थानीय प्रशासन की इस व्यवस्था से केन्द्रीय सरकार द्वारा प्रसारित सार कानून और आज्ञाएँ समान रूप से सब जगह शीघ्रता से लागू होने की सम्भावना प्रकट की गई।

नेपोलियन ने राष्ट्र के सचिवालय का भी विकास किया। इसने मंत्रि के नियंत्रण में राज्य-मन्त्रालय बनाया जो देश का केन्द्रीय लेखा कार्यालय बन गया। इसमें नेपोलियन प्रत्येक विभाग के कार्यों की देखभाल कर सकता था अतः किसी भी मन्त्रालय का सामूहिक उत्तरदायित्व नहीं रहा। राजस्व और करों के अनुमान लगाने और उगाही करने के लिए केन्द्रीय शासन-व्यवस्था की गई। करों की उगाही करने वालों को अनुमानित कर का धाडा-सा भाग पेगगी जमा करना पड़ता था। ये सुधार प्राचीन शासन (Ancien Regime) के एक अग्रव्यवस्था विरोधी गावडिन (Gaudin) का काम था। १८०० के समाप्त होते हात कर की उगाही सम्पूर्ण हो चुकी थी।

हरोरक विचार में वह पूर्ण निर्भीकता जिससे उस नौजवान और गर-अनुभवी सैनिक अधिकारी ने अपने का उन समस्याओं से ग्रस्त किया जो देखने में

एक व्यक्ति की शक्ति से परे थी, यह सब नेपोलियन के मस्तिष्क के वीर तत्त्वा का लक्षण प्रस्तुत करता है। इसमें हरकुलीज जसा गुण निहित है। उदाहरण के लिए यह सोचिए कि कस ३० वर्षीय फस्ट कौंसुल न अपना सत्ता का पाय हुए कुछ ही दिना में ऐसा सविनय प्रशासन स्थापित कर दिया जिसने ऐसी स्थायी व्यवस्था का प्रमाण दिया जो फ्रांस में पिछले डेढ़ सौ वर्षों में कभी नहीं देखी थी। इस काम में ही जा नेपोलियन का केवल एक मजबूत व्यक्ति, एक सैनिक तानाशाह की तरह दखत है और उन्होंने उसकी ऐसी प्रशंसा की है जस हरकुलीज का उसकी बुद्धि की जगह उसकी बहिर्दृष्टि सम्मान किया जाता है। फिर भी अपवादजनक मान सिक शक्तियों की आवश्यकता एक साधारण पर उत्साही याजना की रचना के हनु हानी है जसा कि हरकुलीज ने फ्रांजियन के अस्तवला का साफ करान की रीति निकाली थी। किसी एपीक्लवरल कालज का स्नातक इसके विषय में कभी सोच नहीं पाता। सिकंदर ने महान् गुलामी का सुलभाने का जो उपाय किया वह शायद नही मान्य हो अस्तु न कभी भी उसे यह युक्ति नहीं सिखाई किन्तु शायद उसने टायोजीन्स, महान् साधारणता प्रेमी सितिक, से यह शिक्षा ग्रहण की। (The Mind of Napoleon, p XVIII)

(२) नेपोलियन ने देश की आर्थिक अवस्था को भी सुधारन का प्रयत्न किया। बड़ी भावधानी से करा की उगाही करके उसने राष्ट्र के धन का बढ़ाया। कठोर मित व्ययिता करके अष्ट अधिकारियों का कडा दण्ड देकर और अथ राष्ट्र को फ्रांस का सनाभा का भार उठान के लिए बाध्य करके, नेपोलियन ने देश का सर्वा करन किया। १८०० में उमन 'बैंक ऑफ फ्रांस' की स्थापना की जा विश्व की सबसे ठोस आर्थिक मस्था थी।

(३) नेपोलियन ने शिक्षा के क्षेत्र में भी बहुत से सुधार किये। प्रिपेक्ट या सबप्रिपेक्ट के नियंत्रण में सब कम्प्यूनों का प्राथमिक स्कूल चलाया अनियाय था। दूसरे श्रेणियाँ भाषा, लटिन भाषा और मौलिक विज्ञान की शिक्षा के लिए विद्यालय स्थापित किये गए। यद्यपि ये विद्यालय जनता अथवा सरकार द्वारा खोल हुए थे परंतु नियंत्रण केंद्रीय सरकार के हाथ में था। सभी महत्वपूर्ण नगरों में महा विद्यालय (Lycees) खोले गये जहाँ सरकार द्वारा नियुक्त शिक्षकों द्वारा उच्च शिक्षा दी जाती थी। विशेष प्रकार के विद्यालय यथा औद्योगिक, प्रशासनिक तथा सैनिक विद्यालय इस प्रकार की शिक्षा के लिए खोले गए जा सीधे केंद्रीय सरकार के नियंत्रण में थे। फ्रांस के विश्वविद्यालय (University of France) का स्थापना देश में शिक्षा-व्यवस्था में महान् उत्थान के लिए का गइ था। इनके प्रमुख अधिकारियों का नियुक्ति प्रमुख मन्त्रालय करता था। बिना विश्वविद्यालय के प्रमाण पत्र के किसी का नाम नया विद्यालय खोलना अथवा भावजनिक रूप से शिक्षा देने का अधिकार नहीं था। शिक्षकों का प्रतिशिक्षित करने के लिए एक शिक्षक विद्यालय (Normal School) खोला गया। अथवा शिक्षा-व्यवस्था का दूसरा धर्म के विद्यार्थियों के प्रमुख के प्रति भक्ति और विश्वविद्यालय के आदेश के शिक्षा के मूल आधार मानने पर

ये। राज्य द्वारा बालको को पाठ्यक्रम में दिये गए प्रश्नोत्तर के एक उदाहरण से स्पष्ट हो जायगा कि देश की सतान का किस प्रकार की शिक्षा दी जाती थी—

प्रश्न—प्रत्येक ईसाई का अपने शासकों के प्रति क्या कर्तव्य है ? हमारे सम्राट नेपोलियन प्रथम के प्रति विशेषतः हमारे, क्या कर्तव्य है ?

उत्तर—प्रत्येक ईसाई का अपने शासकों के प्रति और हमारा विशेषतः नेपोलियन प्रथम के प्रति यह कर्तव्य है कि हम उसे प्रेम आदर आज्ञापालन, स्वामिभक्ति, सैनिक सेवा अर्पण कर तथा साम्राज्य और राज्य मिहासन की रक्षा के लिए लगाये गए करों को देना हमारा कर्तव्य है। सम्राट की रक्षा तथा उनकी आत्मिक और राज्य-सम्बन्धी प्रगति के लिए हार्दिक प्रार्थना करना भी हमारा कर्तव्य है।

प्रश्न—हम अपने सम्राट के प्रति इन कर्तव्यों से नये बंधे हैं ?

उत्तर—प्रथम क्याकि जो परमेश्वर साम्राज्य बनाता है और स्वेच्छा से इन्हें बाँटा है उसने सम्राट पर अपने आशीर्वादों की वर्षा की है और उसे हमारा सर्वोत्तम नियुक्त किया है तथा अपनी प्रतिभूति और अपनी शक्ति का प्रतीक बना कर भेजा है। इसलिए अपने सम्राट का सम्मान करना तथा उसकी सेवा करना परमेश्वर का आदर करना और उसकी सेवा करना है। हमारे हमारे प्रभु ईसा मसीह ने अपने उदाहरण तथा उपदेश से हमें शिक्षा दी है कि अपने सम्राट के प्रति हमारे क्या कर्तव्य हैं ईसा मसीह सीजर अगस्टस की आज्ञा मानता हुआ बड़ा हुआ और वह नियत कर देना रहा। उसने जिस श्वास में यह कहा था 'जो प्रभु की वस्तु है उसे प्रभु को दो', उसी श्वास में उस ने यह भी कहा कि 'जो सीजर की वस्तु है वह सीजर को दे दो।'

प्रश्न—क्या विशेष कारण हैं, जिनके लिए हमें अपने सम्राट नेपोलियन प्रथम के प्रति अधिक भक्त होना चाहिए ?

उत्तर—हाँ, विशेष कारण यह है कि यह वह व्यक्ति है जिसे प्रभु ने कठिन समय में हमारे पूर्वजों के धर्म की पूजा को पुनः स्थापित करने के लिए भेजा और रक्षक बनाया। यही वह व्यक्ति है, जिसने अपनी कुशलता और बुद्धिमत्ता से देश में व्यवस्था की पुनः स्थापना की तथा उसे बनाये रखा है। वह अपनी बलवान् भुजाओं से देश की रक्षा करता है और बिस्व के पक्ष में प्रमुख पूण प्रभुत्व-सम्पन्न पौष द्वारा अभिषेक पाकर वह प्रभु का परम प्रिय पुत्र बन गया है।

प्रश्न—जो-श्राग हमारे सम्राट के प्रति अपने कर्तव्य पूर करने में पीछे रहते हैं उनके विषय में क्या विचार रखे जायें ?

उत्तर—सब्रत धारक बनानुसार के स्वयं परमेश्वर द्वारा स्थापित व्यवस्था का विरोध करत हैं और अपने-आपको धीरे-धीरे नरक का भागी बनाते हैं।

प्रश्न—क्या सम्राट के प्रति हमारे कर्तव्य शाही सविधान में विहित व्यवस्था के अनुसार उसने कानूनी उत्तराधिकारी के प्रति भी उसी प्रकार लागू होगी ?

उत्तर—हाँ, निस्सन्देह रूप से, हमने पवित्र पुस्तक में पढ़ा है कि परमेश्वर स्वेच्छा से और अपने विधान के अनुसार अपने राज्य को केवल एक व्यक्ति का ही नहीं अपितु उनके परिवारो को भी प्रदान करता है।

१७६५ में इन्स्टीट्यूट दि फ्रांस की स्थापना हुई। नेपोलियन ने इसका समर्थन किया और भौतिक विज्ञान, ललित कला, गणित और साहित्य में इसके कार्यों की सराहना की गई। किन्तु वह आचार और राजनीतिक विज्ञान विषयों के अध्ययन को प्रोत्साहन नहीं देता था। जनवरी, १८०३ की एक आज्ञा द्वारा नेपोलियन ने इन विषयों की शिक्षा देने वाले विभागों का दमन कर दिया।

(४) नेपोलियन ने देश में बहुत सख्या में सब-साधारण के लाभ के लिए इमारतें बनवाई। किन्तु इनके निर्माण पर उसने स्वयं अधिक धन व्यय नहीं किया। यह इसलिए हुआ कि उसने इन कार्यों के लिए युद्धबंदियाँ सँ बगार लीं। उसने यातायात और व्यापार के साधनों का देश में विस्तार किया। फ्रांस के महान राजपथ (Highways) नेपोलियन की ही देन हैं। १८११ में नेपोलियन २२६ बृहत् सैनिक राजपथ गिना जा सकता था, जो उसने स्वयं बनवाये थे। पेरिस से सीमान्त तक ३० राजपथ विभिन्न दिशाओं में फले हुए थे। आल्पस पर्वत पर से गुजरने वाली दो बड़ी सड़कों के कारण पेरिस का ट्युरिन, मिलान, रोम और नेपल्स से सीधा सम्बन्ध स्थापित हो गया। बहुत सख्या में पुल बनाए गए। प्राचीन नहरा और जलाशयों की मरम्मत करा कर व्यवस्था को सम्पूर्ण कर दिया गया। दलदल से भरे इलाकों से पानी निकालकर उन्हें उपयोगी बना दिया गया। पानी के बाँधों को टूट किया गया। महत्वपूर्ण बंदरगाहों को बड़ा करने व्यापार और युद्ध के बड़े के दृष्टिकोण से उनकी सुरक्षा का प्रबंध किया गया। ट्युलान और शरबुर्ग (Cherbourg) को विधेय रूप से सुदृढ़ बनाया गया।

(५) कोन्कार्डट (The Concordat) (१८०२)— चर्च के मामलों को सुलझाना एक कठिन कार्य था। उस युग में बुद्धिमान् वर्ग का यह रिवाज बन गया था कि धर्म को एक मूसतपूण मूठ और चर्च को शोषण विशेषाधिकार और सम्पत्ति का प्रचार करने वाली सख्या समझने लग गये। पुजारियों को मृतवत् धर्मा पर जीवित रहने वाले, विदेशिया क मित्र और देशद्रोही माना जाता था। यह एक कारण था कि राष्ट्रीय विधान सभा द्वारा चर्च की सम्पत्ति जब्त कर ली गई और दंग में नागरिक चर्च सविधान लागू किया गया। किन्तु ईमानदार और कट्टर कथोलिको ने शपथ लेने से मना कर दिया। परिणामतः बहुत भयाचार हुआ। शपथ न लेने वाले पादरियों (non juring clergy) के अनुयायी होता और बना म य जब कि शपथ लेने वाले पादरी (juring clergy) खाली गिरजा का गान का यदाया करते थे। सरकार के लिए पादरियों का वेतन देना कठिन हो गया। कथानिक चर्च की मायता छान ली गई और शासन धर्म सम्बन्धी मामलों में निष्पक्ष हो गया।

जब नेपोलियन प्रमुख समाह्वार बना देश में इस प्रकार की स्थिति बतमान थी। नेपोलियन का बिचार था कि धर्म विश्व में भरपौरगुण खण्डित नहीं है। उसने

पाया कि सारे कथालिक चमत्कारा और सत्ता में आस्था रखते हैं। उसके विचार से दबो शक्तियाँ किसानों और सैनिकों के जीवन का नियंत्रण करती हैं अतः उनमें इन दबो शक्तियों पर प्रभाव डालने और नियंत्रण करने का निणय किया। धर्म और विज्ञान में दोनों को वह एक-सा स्थान न देता था। वह सामाजिक व्यवस्था का अग्रगण्य रहस्य है। नेपोलियन स्वयं लिखता है कि वह रूएस के चर्च की घण्टियाँ की ध्वनि सुनकर प्रभावित हुआ और इस निणय पर पहुँचा कि जनता का धर्म हाना ही चाहिए और यह धर्म सरकार के नियंत्रण में हो। लोग कहेंगे कि मैं पाप का अनुयायी हूँ। किन्तु मैं कुछ नहीं हूँ। मिश्र में मैं एक मुसलमान था। यहाँ मैं जनता के हित के लिए एक कैथोलिक बन जाऊँगा। मैं किसी धर्म में नहीं अपितु ईश्वर में आस्था रखता हूँ। देश के पचास भगोड़े अंग्रेजों के बेतनभोगी धर्माचार्य फ्रांस के पादरियों के नेता हैं। उनका प्रभाव अवश्य नष्ट होना चाहिए और इसके लिए मुझे पोप की अनुमति चाहिए। नेपोलियन अपने को चार्लेमेन्गे (Charlemagne) का उत्तराधिकारी मानता था तथा वह पाप के अधिकार को केवल धर्म के मामलों तक ही सीमित कर देना चाहता था। पेरिस में पोप से विचार विमर्श हुआ और अगस्त १८०२ में कोनकाट स्वीकार हुआ। यह व्यवस्था १०३ वर्ष तक फ्रांस में शासन और चर्च के सम्बन्धों का नियंत्रण करती रही।

कोनकाट (Concordat) के अनुसार पोप ने शपथ ग्रहण करने वाले पादरियों को मायता प्रदान की गिरजाघरों के नौकर चाकर कम कर दिये गए तथा क्रान्तिकारी अचल सम्पत्ति की व्यवस्था को मायता दी गई। देश में कैथोलिक चर्च देश का माय धर्म माना गया। इससे सावजनिक उपासना के अधिकार प्राप्त हुए। धर्माचार्यों को पादरियों पर पूर्ण अधिकार दिया गया वे लोग सरकार के प्रति भक्ति की शपथ लेते थे और एक नियत वेतन प्राप्त करते थे। सारे धर्माचार्यों को अपनी विधेय भेट छोड़नी पड़ी और अवज्ञा करने वाला को पोप अपदस्थ कर देता था। फ्रांस को ५० बिगप मण्डलों और १० 'मुख्य बिगप मण्डलों में विभाजित किया गया जिनके धर्माचार्यों को नेपोलियन मनोनीत करता था। मनोनीत व्यक्तियों का स्वयं पोप नियुक्त करता था। विधेय विधान-व्यवस्था (Organic Articles) द्वारा कैथोलिक 'यायालय (Catholic Liturgy) की स्थापना हुई और पोप की विधेय पापों तथा विधेय आदेशों को लागू करने के लिए सरकार की अनुमति प्राप्त करनी पड़ती थी। विवाह के लिए धार्मिक परिपाटी के पूर्व 'यायालय में विवाह (Civil marriage) करना आवश्यक था।

कानकाट की व्यवस्था की नीति के समयमें नेपोलियन ने कहा है बिना अनुमानता के समाज का रहना असम्भव है बिना सत्ताचार के नियमों के अनुमानता असम्भव है तथा बिना धर्म के सदाचार के नियम असम्भव है। धर्म में मुझे परमेश्वर के अवतार का रहस्य नहीं अपितु सामाजिक व्यवस्था दीख पड़ती है। जो लोग परमेश्वर में आस्था नहीं रखते उनपर शासन नहीं किया जाना अपितु उन्हें गाली मार दी जानी है। जनता का एक धर्म का आवश्यकता है इसलिए धर्म की व्यवस्था शासन के हाथों में हानी चाहिए।

माकहम के मतानुसार "उसके प्रिफेक्टों व पुलिस की रिपोर्टों ने उसका यह अनुभव पक्का कर दिया कि घनी वग व मनीषी वग की चाहे सामान्य बुद्धि कृष्ट भी हो, कृपक लोग अब भी अपने चर्चों व पुरोहित से अपना सम्बन्ध बनाय रखन पर जमे हुए थे। बुद्धिजीवी लागा तक म धार्मिक मदेहवाद एक विनादहीन तथा चलन-युक्त सिद्धान्त नहीं रहा था। धार्मिक पुनर्जागरण एक साहित्यिक रोमाञ्ची आन्दोलन और एक प्रतिप्रिया शान्तिकारी राजनीतिक सिद्धान्त के साथ, जो पुनर्स्थापन के समय म धरणी चरम भीमा पर पहुँचा वह पहले ही से ज्ञान के वास्तविकवाद का चुनौती दे रहा था। बोनाल्ड, चतुप्रिया व फान्तेन्स उन बुद्धिजीवी आन्दोलन के नेता थे जिनने शान्ति की अराजकता को धार्मिक विश्वास व सत्ता व पतन तक पहुँचाया। निष्ठाहित मामन्त वग पहले ही से मदेहवाद का त्याग कर रहा था और धार्मिक बटटरता की ओर लौट रहा था।

'पोप के साथ एक समझौता राजतंत्रवाद व नवोत्थितवाद के बीच फूट डालता अत म ला वेड (La Vendee) को सतुष्ट करता और चर्च की भूमिका का श्रय करने वालों को पुन विश्वास प्रदान करता। दरारदार उर्वेदानिक चर्च पर या प्राग्मैटिकवाद पर आश्रित समझौता ऐसा कोई लाभ प्रदान नहीं करता। पाप व साथ बवल एक व्यापक समझौता ही काफी था। जैसा कि नेपोलियन ने मकत किया, 'इग्निस पविन के पचास निष्ठाहित पादरी आजकल फ्रांस के पादरिया के नता बने बैठे हैं। उनका प्रभाव नष्ट किया जाना चाहिए और उसके लिए मुझे पाप को शक्ति प्राप्त हानी चाहिए।' नेपोलियन भी जानना था कि एक समझौते का लाभ यह होगा कि फ्रांस का प्रभाव इटली बल्जियम व रूमान व प्रदेशों की केंद्रीय जनसंख्या पर पड़ेगा।'

इस समझौते के ठगर जनरल डेलमाम न यह भाव व्यक्त किया एक उत्तम साधुवासी युक्ति—केवल एक ही वस्तु की हानि हुई—१०,००० व्यक्ति निन्दाने उसकी मन्द के वास्ते धपन प्राण लिए।'

श्रार के विचार से, स्थापना का सिद्धान्त जैसा तब था और अब अपन कई शत्रु रचना था, किन्तु यह भगडा करना कठिन है कि उन व्यवस्था जिसने कृपक वग के श्रया का समाधान किया के मूल्य न फ्रांस के चर्च की शां पाट दी और, गैर विधिबेताओं की थोड़ी-थो मस्या को छोडकर फिर उसने उस समय की नगर्य व केंयोनिक धन करण के बीच समन्वय स्थापित कर दिया। तकिन यह बन्नाया जागा है कि उन प्रयाचारी पादरियों के विरुद्ध छोटे पादरी पोप से प्राथम्य कर सकते थे या बड़े पादरी सरकार के विरुद्ध इस बात न फ्रांस म गतिबल स्वतंत्र ताप्रा के पतन व गरम-भाटेनरम (Ultra montanism) का भाग खोल दिया।

यन् पान उल्लेखनीय है कि बोनापार्ट के हान पर भी नेपोलियन और पाप म युग मनभन् पन् हो गय। पोप को धपना शक्ति-क्षेत्र केवल धन और पादरियों के गामा तक ही सीमित रचना पसद नहीं था। उसे नेपोलियन-महिहा (Code Napoleon) का, जिनके अनुसार तलाक कानूनी था, इटली पर भी लागू होना

रक्षित नहीं हुआ। उसने नेपोलियन की प्रायना को ठुकरा दिया और पिटरमन द्वारा जिरोम को तलाक देने की स्वीकृति देकर उसे यूरोप के किसी राजघरान में वियाह करने की अनुमति दे दी गई। नेपोलियन की यूरोप महाद्वीप की नीति पोप की धोनीय सवधक्षितमत्ता से भेल नहीं खानी थी। नेपोलियन द्वारा इटली के राज्य में मिला लिए गए बोल्गोना और फिरारी के प्रदेशों को पुन पोप को देने से मना कर दिया गया। पोप के अधिकृत प्रदेशों—पोटे, कोर्बो और बिनिवेटो—को नेपोलियन ने जप्त कर लिया। उसने १८०५ में प्रकोना को छीन लिया और पोप को देने से मना कर दिया। १८०५ में पोप का भुक्ताव स्पष्टत तीसरे सगठन (Third Coalition) की ओर था और उसने १८०० में जोसेफ बोनापाट को नेपल्स का राजा बनान का विरोध किया। पोप ने १८०६ में नेपोलियन की इस मांग को भी ठुकरा दिया कि वह अपने राज्यों में से फ्रांस के शत्रुओं को निकाल दे तथा इन राज्यों की बन्दरगाहों को इंग्लैंड के व्यापार के लिए बंद कर दे। अक्टूबर, १८०६ में पोप ने नेपोलियन के मनोनीत व्यक्ति को वेनिस का बिशप नियुक्त करने से मना कर दिया। १८०७ में फ्रांस की सेनाओं ने इटली का कुछ प्रदेश छीन कर अपने राज्य में मिला लिया। १८०८ में रोम पर अधिकार करने पर पोप के अधिकत सारे राज्य वस्तुत फ्रांस के प्रदेश बन गए। १८०९ में अपने महान पूज्य चार्लेमेगे के दान को वापस छीन कर रोम को औपचारिक रूप से फ्रांस के साम्राज्य में मिला लिया। जून १८०९ में पोप ने नेपोलियन का बहिष्कार कर दिया और जुलाई १८०९ में पोप को बंदी बना कर बंदी-गृह में डाल दिया गया।

पोप ने फ्रांस के धर्माचार्य (Bishop) नियुक्त करने से मना कर दिया और नवम्बर १८०९ में नेपोलियन ने फ्रांस के लिए एक धर्म आयोग (Ecclesiastical Commission) बठाया। किन्तु आयोग ने नेपोलियन की इच्छा के अनुकूल कार्य करने से इनकार कर दिया। इसलिए जनवरी १८१० में इसे समाप्त कर दिया गया। फरवरी १८१० में सीनेट ने आज्ञापति निकाली कि सारे पोप अपने अभिषेक के समय तथा सारे धर्माचार्य, जो फ्रांस के साम्राज्य में हैं उन्हें गलेशियन आर्टिकल्स (Gallican Articles) स्वीकार करने पड़ेंगे। इस आज्ञा की अवज्ञा करने के कारण बहुत स पादरियों को कोसिका द्वीप में देश निकाला देकर भेज दिया गया। अगस्त १८११ में राष्ट्रीय सभा ने आज्ञा दी कि धर्माचार्यों के स्थान बारह महीने से अधिक समय तक रिक्त नहीं रहने चाहिए। यदि पोप छ महीने की अवधि में धर्माचार्यों को नियुक्ति नहीं करता तो मेट्रोपोलिटन (Metropolitan) को नियुक्ति का अधिकार दे दिया जाये। इस आज्ञा को बच बनाने के लिए पोप की स्वीकृति अनिवार्य थी किन्तु पोप ने अनुमति देने से इनकार कर दिया। जून, १८१२ में पाप को फाटनब्ल्यू (Fontainebleau) लाया गया और जनवरी १८१३ में पोप ने नेपोलियन के साथ एक नया कौनकाइट किया जिसके अनुसार मेट्रोपोलिटन (Metropolitan) को अधिकार दिया कि वह नेपोलियन द्वारा नियुक्त धर्माचार्यों का मायता दे सकेगा। पोप ने अपना निवास स्थान आविग्नोन (Avignon) बना कर और २० साल

प्रक वार्षिक का राजस्व लेकर अपने सारे प्रशासनिक और क्षेत्रीय अधिकार स्वतः छाह दिये। किन्तु पोप ने इस अनुबंध का विरोध किया और घोषणा की कि उसने बंदी होने की अवस्था में इस पर हस्ताक्षर किये थे। १८१४ में जब नेपोलियन ने अपनी स्थिति दुबल देखी तो उसने पाप का आस्ट्रिया को सौंप दिया जहाँ उसे मुक्त कर दिया गया। १८१४ में पाप को पुनः उसके पद पर बठा दिया गया।

(६) संहिताएँ (Codes) (१८०४-१०)—नेपोलियन के सारे कार्यों में सबसे शीघ्रजीवी कार्य कानून-संहिताएँ थीं। इन संहिताओं का निर्माण समितियों ने किया जिन्हें नेपोलियन ने नियुक्त किया था और उसने स्वयं इनके अनेक सम्मेलनों में भाग लिया। उसने अपनी कुशाग्र बुद्धि और बधानिक सूझ द्वारा इन समितियों के कार्य में सहायता दी। यह कहना कि स्वयं नेपोलियन का इन संहिताओं के बनाने का श्रेय है गलत होगा। हाँ इतना अवश्य है कि इन संहिताओं को व्यवस्थित करने तथा प्रयोग में लाने का श्रेय नेपोलियन को ही है। कुछ एक दृष्टियों को छोड़कर ये संहिताएँ सम्पूर्ण, सरल और 'याययुक्त' थीं। इन संहिताओं ने क्रांति के कार्य को ठाम बनाया, जिनके द्वारा एक ऐसे शासन की स्थापना हुई जिसमें भू-स्वामी वर्ग का आधार, धर्म के आयाचारों से झट्टे नागरिक कानून अधिकतम समानता के आधार पर राजस्व और ऐसे कानून जिनके द्वारा, प्रत्येक मानव के समान अधिकार हैं, घोषणा की गई है, समान कानूनों की व्यवस्था जो सरल तथा क्रियात्मक रूप से शीघ्रता से लागू करने वाली थी वास्तव में फ्रांस के लिए एक महान् वरदान थी।

इन संहिताओं के बनाने में विधि विनियमों के सहयोग के विषय में नेपोलियन ने कहा 'पहले मेरा यह विचार था कि कानूनों को ज्यामिति के सिद्धान्तों की तरह इतना सरल बना सकता सम्भव होगा कि जा भी इन्हें पढ़ें और दो विचारों का सम्पर्क स्थापित कर इनके आधार पर याचक बन सकें। किन्तु मुझे तुरन्त ही इस धारणा की मूर्खता का पता लगा। मैं अनुभव किया कि कानूनों में अत्यन्त सरलता मूढता की शत्रु है। अत्यधिक सरल कानून बनाना असम्भव है क्योंकि ऐसा करने पर गुल्मी मुलभ्रान की अपेक्षा बहुधा काटनी पड़ेगी।

अगस्त, १८०० में नेपोलियन ने चार विधि विनियमों की एक समिति नागरिक कानून-संहिता (Civil Code) बनाने के लिए स्थापित की जिसने अपना कार्य पूरा किया। इसके अनुसार परिवार पर पिता का अधिकार दृढ़ हो गया और परिवार को पूर्णरूपण सम्पूर्ण अधिकार में रखा गया। पिता को अपने पुत्रों को बन्दी बनाने का अधिकार था तथा विवाह से पूर्व पिता की आज्ञा आवश्यक थी। वह अपनी सन्तान की सम्पत्ति की प्रायः उनका १८ वर्ष की आयु तक ले सकता था। पत्नी अपने पति के अधिकार में थी, वह बिना पति की आज्ञा के सम्पत्ति को खरीद या बेच नहीं सकती थी। रोमन कॅपोलिक धर्म की नीति के विरुद्ध 'विवाह विच्छेद' की माँगना दा गई थी। तलाक केवल पारस्परिक अनुमति ब्यभिचार, अत्याचार और गम्भीर अपराधों की अवस्थाओं में ही बंध था। म्याज की दर कानून द्वारा नियत

कर दी गई थी। कोई भी कित वसीयत द्वारा अपनी आधी सम्पत्ति से अधिक बेच नहीं सकता था।

नेपोलियन के आदेशानुसार एक संहिता दीवानी की व्यवस्था के लिए बनाई गई थी। इसका मूल मिद्दात था कि 'यायालय में अपने स पूव आपसी समझौते का प्रयत्न अवश्य ही किया जाना चाहिए। किंतु संहिता द्वारा निर्देशित व्यवस्था धीमी और खर्चीली सिद्ध हुई अत इमम सगोधन करन पडे। फौजदारी के लिए भी व्यवस्था की गई। मृत्यु दण्ड कद या जीवन भर के लिए दश निवाला, दाग देना, अथवा सम्पत्ति का ज्वल करन की व्यवस्था थी। भिन्न भिन्न अपराधों के लिए अधिकतम और निम्नतम दण्ड निर्धारित किये गए। आरम्भिक 'यायाधीन तथा प्रादेशिक 'यायालय नियुक्त किये गए। अपराध सिद्ध करने के लिए नहीं, अपितु 'याय-गर्भित निणय पर पहुँचने के लिए ज्यूरी प्रणाली की व्यवस्था भी की गई थी। अपराधियों पर सावजनिक रूप से अभियोग चलाया जाना अनिवार्य था। उच्च वकील की महायता प्राप्त करने का अधिकार था। अपने बचाव के लिए अपराधी साक्षियों से विवाद कर सकता था। 'बंदी प्रत्यक्षीकरण (Habeas Corpus) प्राथना द्वारा अपराधियों को मुक्त कराने की व्यवस्था नहीं थी। 'फौजदारी व्यवस्था-संहिता १८०८ में और दण्ड-संहिता' १८१० में प्रचलित हुई। इन दोनों संहिताओं में कठोर स्वच्छाचारिता के आदेश थे, जिन्हें नेपोलियन ने देश में राजनैतिक अपराधों का रोकने के लिए बनाया था।

व्यापार-संहिता साधारण व्यापार समुद्री व्यापार दिवालियापन और अन्य व्यापारिक मामलों के लिए बनाई गई थी। यह एक बहुत असतोषजनक संहिता थी।

फिशर (Fisher) के शब्दों में, "मालोचको ने दीवानी संहिता की, 'शीघ्रता-पूर्वक लड़ा किया गया एक खोलता ढाँचा' तथा तथा कानून के मूलाधार सिद्धान्तों का एक छोटी-सी नोटबुक' कहकर आलाचना की है। जिस काय के लिए आधुनिक जर्मनों ने पन्द्रह बष तक अथक परिश्रम किया नेपोलियन ने दुम्माहम से वही काय चार महिनो में कर दिलाया। उसके दुम्माहम की निन्दा की गई है। यह दीवानी संहिता कितनी ही अपूण क्यों न हो न हाने में तो अच्छी ही है। यदि उस समय और उम्र प्रकार यह काय पूरा न हुआ होता तो आज फ्रांस विधि-संहिता विहीन होता। एक कानून २०० रिवाजों और विक्षेप मुविधाओं से कही अच्छा है। 'दीवानी संहिता नाम की यह छोटी-सी पुस्तक जिसे देश का प्रथम स्त्री गुरुय पत्र और समझ सकता है एक सभ्य और प्रजातन्त्रवादी समाज की रूपरत्ना को दर्शाती है तथा इसमें अनेक जातियों की प्राचीन और नूतन परिपाटियों का अन्ति-काल के अमस्य क्रांतिकारी कानूनों को साथ मिलाकर समाज के लिए उपयोगी बना लिया गया है। फिर महिला सुधारवादी और समाजवादियों को नेपोलियन के कानूनी प्रथा में प्रसन्नानुभव कावद ही कुछ भिन्ने तथा वह कायव ही इनकी निन्दा का पात्र बनना चाहता था। दीवानी-संहिता समाजवादी बर्षों की बेनी में नहीं, अपितु उम्र प्रथा

की धोषी में घाती है। सम्मिता के इतिहास में इसका महत्त्व इस तथ्य में निहित है कि यह फ्रांसीसी क्रांति द्वारा यूरोप में लाये गये महान सुधारों का सेखा है तथा यह इन सुधारों को घनन्न बाल तक जीवित रखी। इन सहिताओं में क्रांति की मूल विजय की भावनाएँ अर्थात् नागरिक एकता, धार्मिक सहिष्णुता भेदों की उन्नति, सावजनिक अभियोग और अन्वयत द्वारा याय का नियम गुरुभित है। जमनी और इतनी के लिए ये सहिताएँ नव-भ-देश का प्रथम सन्दर्भ तथा इसका पूरा प्रोढ़ रूप था। इन्होंने यूरोप के सम्मुख स्फट और समुचित रूप से वे मुख्य नियम रखे जिनके द्वारा एक नम्य समाज पर शासन किया जा सकता है।

नेपोलियन की सहिता केवल फ्रांस में ही नहीं, अपितु नेपोलियन की सेनाओं द्वारा विजित प्रत्येक देश पर लागू की गई। यह सत्य है कि इस सहिता के अनुसार अनेक कठोर दण्ड रखे गये थे। द्विषों की स्थिति स्पष्टतः पुरुषों से हीन रखी गई थी, किन्तु विद्वत् भर में फ्रांस की सहिताएँ सबसे सुविधाजनक और उदार तथा मानवपूर्ण कानून मानी गई हैं। इसलिए नेपोलियन की 'दूसरा जस्टीनियन' कहकर प्रशंसा की जाती है।

सम्मानित सेना (Legion of Honour) की प्रथा नेपोलियन ने ही पलाई। राजशाही-काल की उपाधियाँ और सम्मान चिह्न राष्ट्रीय सम्मेलन ने समाप्त कर दिए थे। बहुधा विधेय भाषा द्वारा लोगों को नागरिक मुकुट (Civic Crowns) प्रदान कर, सम्मानित किया जा सकता था। १८०२ में नेपोलियन ने 'सम्मानित सेना' प्रथा की एक समुचित योजना प्रस्तुत की। इसमें १६ कोहोर्ट्स (Cohorts) बनाये गये। विभिन्न प्रकार के उपाधियारियों को, यथा ग्रांड मार्शियर ब्रिगाडर क्वलियर इत्यादि को कुछ भेद के साथ भाजीवन अवकाश वेतन (Life Pensions) प्राप्त होना था। नेपोलियन की अध्यक्षता में इस सेना के सदस्यों का चुनाव महती सभा (Grand Council) करती रही। जब लोगों में विभिन्न सम्मान चिह्नों की खिलौना कहकर घालोचना की तो नेपोलियन ने उत्तर दिया कि 'भाय इन चिह्नों को खिलौना कहते हैं, अण्डा किन्तु मानव-जाति पर खिलौने द्वारा ही शासन किया जाता है।

(७) कला (Art)—अल्पधिक व्यस्तता के होने पर भी नेपोलियन कला के संरक्षण के लिए समय देता था। इसके राज्य काल में राज्य के महलों का केवल पुनर्निर्माण ही नहीं हुआ था, अपितु इन्हें बढ़ाया भी गया था। पेरिस नगर को सुन्दर बनाया गया था। पेरिस नगर यूरोप का भान-द नगर कहा जाने लगा। नेपोलियन के काल में हमकी जनगणना लगभग दुगनी हो गई थी।

(८) औपनिवेशिक साम्राज्य (Colonial Empire)—नेपोलियन ने प्रथम के लिए एक नये औपनिवेशिक साम्राज्य की नींव डालने का नियम किया और इन दिशा में आशाहीन संधारियाँ भी की गई किन्तु ब्रिटेन के समुद्री बंद की अजन शक्ति के सम्मुख उसके प्रयत्न विफल हो गए। अपनी शक्ति को दुबल होते देख १८०३ में नेपोलियन ने लुइसीयाना (Louisiana) का प्रदेश समुदाय राज्य अमेरिका के हाथों बच दिया।

यह उल्लेखनीय बात है कि नेपोलियन ने देश के आन्तरिक विरोध का बड़ी कठोरता से दमन किया। पत्रकारियों का मृत्युदण्ड दिया गया या उन्हें देश से निष्काशित किया गया। समाचार-पत्रों पर इतना कठोर नियंत्रण था कि १८०५ की ट्राफालगर की पराजय को नेपोलियन के पतन के समय तक किसी भी समाचारपत्र ने नहीं छपा।

प्रो० मार्कहम (Markham) के मतानुसार प्रमुख सलाहकार का मुख्य काम क्रांतिकाल में प्रारम्भ किये गए सुधारों का कार्य-रूप में परिणत कर देना था। नेपोलियन की अध्यक्षता में राज्य-सभा ने देश में विधान का निमाण किया तथा नेपोलियन के मंत्रियों और प्रिफक्टों में उसे योग्य महकरी तथा विभाजन मिले। नेपोलियन का मुख्य ध्येय लोगों को पुनः करना था १७८९ से प्रथम बार (१७९३-९४ की जन-सुरक्षा समिति को छोड़कर) फ्रांस ने एक संगठित तथा शक्तिशाली कार्य-सत्ता का अनुभव किया। नेपोलियन ने जिन भूतपूर्व क्रांतिकारियों को शासन-यंत्र चलाने के लिए नियुक्त किया, उनके विषय में उसने कहा है कि इन लोगों में बड़े अन्धे कारीगर थे किन्तु इनके साथ कठिनाई यह थी कि प्रत्येक निर्माण विरोध बनाना चाहता था। नेपोलियन के शासन का नागरिक और राष्ट्रीय सैनिक बनाने में जितना ध्येय नेपोलियन को था उतना ही उसके मंत्रिमण्डल का भी था। नेपोलियन इस बात को विशेष जोर देकर कहा करता था कि मैं एक सनापति के रूप में फ्रांस पर शासन नहीं कर रहा हूँ, मैं तो एक नागरिक शासक हूँ। मेरे राष्ट्र का भी इस बात का विश्वास है कि मुझ में एक नागरिक शासक के गुण विद्यमान हैं। उसने अपने शासन को चलाने के लिए सुयोग्य व्यक्तियों को बिना उनके मनीषा पर ध्यान दिए नियंत्रण दिया था। राजशाही-काल के पुराने कमचारी गाडिन (Gaudin) पोर्टलिस (Portalis) भूतपूर्व क्रांतिकारी मरसिन दे दुवाय (Merlin de Douai) ट्रेसहार्ड (Treilhard) और थिबोड्यू (Thibaudeau) नेपोलियन के साथ कंधे-स-कंधा मिलाकर कार्य करते थे। श्रेष्ठ प्रिफक्टा में १७८९ का प्राचीन समद में राजशाही का समयक माउनियर (Mounier) और भूतपूर्व जन-सुरक्षा समिति का नेता हत्यारा जीन-बोन-संट आंद्रे (Jean Bon St Andre) थे। (Napoleon and the Awakening of Europe pp 54 55)

विदेश नीति (Foreign Policy)—प्रमुख सलाहकार की विदेश-नीति का उत्पन्न इस प्रकार है नेपोलियन की अनुपस्थिति में मित्र राष्ट्रों के मित्र में होने वाली द्वितीय नगठन से उत्पन्न खतरे का मुकाबला करना उसका मकसद था। नेपोलियन ने अपनी मूर्ख-बुद्धि का बल पर रूस का जार पर प्रभाव डाला और उसका संगठन में अलग कर दिया। इस प्रकार मदान में बल इंग्लैंड और आस्ट्रिया हा रह गया। नेपोलियन ने मारेयु (Moreau) को आस्ट्रिया पर जमनी का रास्ता आक्रमण के लिए भेजा और उसने स्वयं पर आक्रमण करने के लिए इटली का । उसने विगा) दरों का पा

करके आस्ट्रिया की सेना में मुकाबला किया और उन्हें १८०० में मॉरेंगो^१ के स्थान पर परास्त किया। मोरेयु ने भी होहेनलिण्डेन (Hohenlinden) में आस्ट्रिया की सेना पर निर्णायक विजय पाई और इस प्रकार आस्ट्रिया का प्रतिरोध समाप्त हुआ। १८०० में लुनेविले (Luneville) की संधि होने पर युद्ध समाप्त हो गया और इस संधि से १७९७ की कैंपो फोर्मियो की संधि की सारी शर्तें पुनः दोहराई गईं और फ्रांस का थोड़ा-सा लाभ भी हुआ।

अब केवल इंग्लैंड ही मैदान में रह गया था। इस पर धात्रमण करना बड़ा कठिन वाय था। क्योंकि फ्रांस के पास शक्तिशाली समुद्री बेड़ा नहीं था और यूरोप महाद्वीप पर इंग्लैंड की स्थल सेना नहीं थी जिस पर धात्रमण किया जा सकता। इसी प्रकार फ्रांस के पास समुद्री बेड़ा न होने के कारण इंग्लैंड भी इस पर धात्रमण नहीं कर सकता था। किन्तु नेपोलियन ने चतुरता से इंग्लैंड के विरुद्ध रूस, प्रशा, स्वीडन और डेन्मार्क का एक सशस्त्र निष्पक्ष (Armed Neutrality) घेरा डाल दिया। इस घेरे का उद्देश्य था कि इंग्लैंड निष्पक्ष जहाजों को फ्रांस के माल के लिए तलाशी न ले सके। ब्रिटेन ने बड़ी करारी चोट की। सेनापति नेल्सन ने नापेनहेगन पर गोलाबारी की और डेनिश बेड़े को पकड़ लिया जिससे वह नेपोलियन

१ मॉरेंगो के सम्राट के विषय में, थाम्पसन का यह मत है, "मॉरेंगो अभियान को किंवदंतियों से रतना बुरी तरह लाद लिया गया है कि इतिहासकार को बोनापार्ट के लिए उसकी विजय का मायराशी प्रेष देने से रूक जगता है। यह सच नहीं है (जैसा कि बेरीन का कथन है) कि उसने तीन महीने पूर्व ही नवरो पर एक सुर्र लगा रखी थी कि वह उसी स्थान पर आस्ट्रिया वालों को पराजित करेगा। यह भी सच नहीं है कि उसने अपनी सेनाओं को (जैसा डेविड ने उसके विषय में कहा है) सट बर्नार्ड के ऊपर बना दिया, उसका खिस्चर नर्थेयर की सेना की भगली डुकदी से कई दिन पूर्व ही पीछे हो गया था। यह सच नहीं है कि वह पहल्लेडो की सबक के किनारे सो गया था, जबकि उसकी सेनाएँ उसे न जगने देन के भय से उसके पाम से धीरे-धीरे छुपकर निकल गईं। मॉरेंगो के अभियान का चतुरतापूर्ण लक्ष्य यह था कि जेनुआ को मुक्त किया जाय और लम्बार्डी से आस्ट्रिया वालों को निकाल दिया जाय। इसका समय ठीका सम्बन्ध लक्ष्य यही था कि सम्राट को रान्ति-संधि करने पर विवरा किया जाय।" (Napoleon Bonaparte His Rise and Fall p p 162-64)

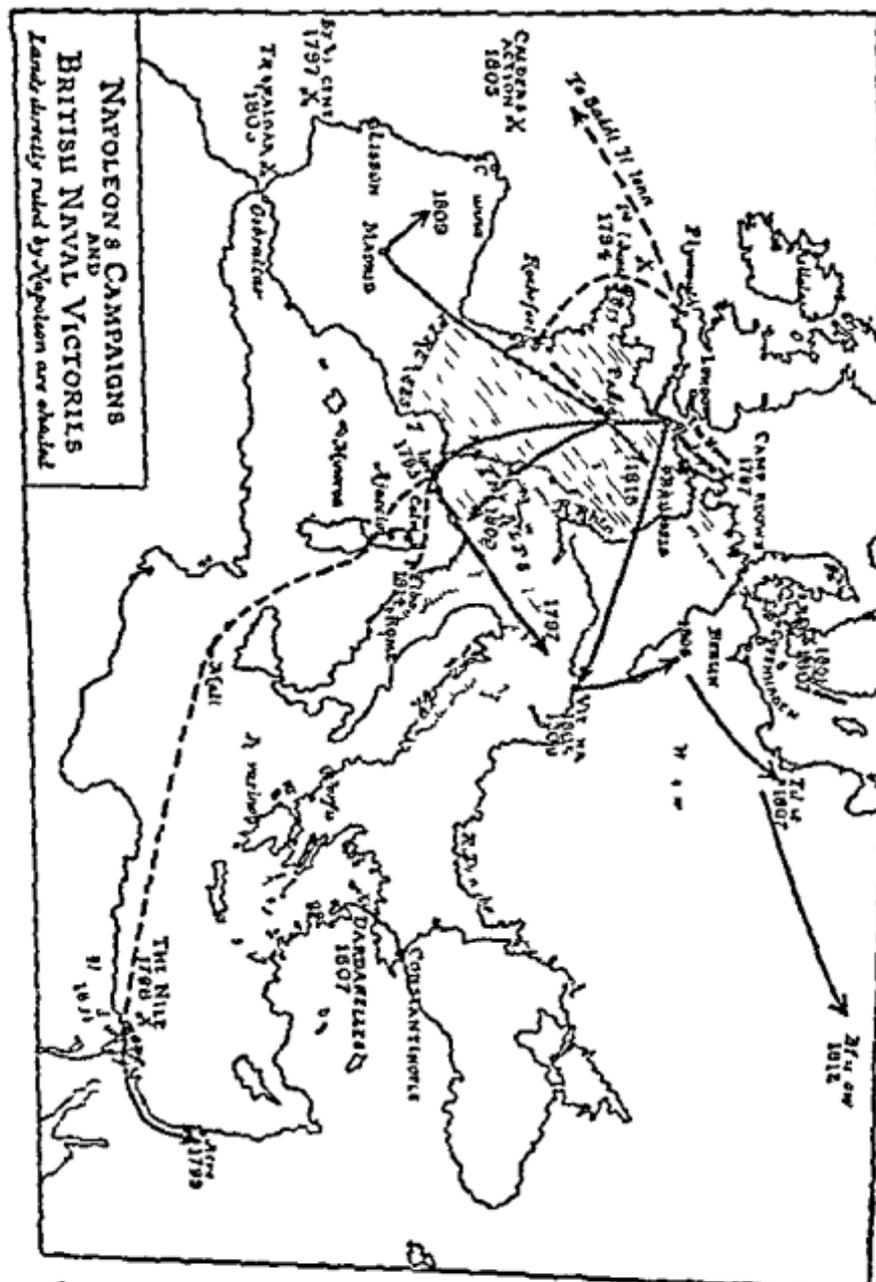
२ थाम्पसन के मतानुसार, "बोनापार्ट ने इस आक्रमण में धार लाभ देखे। प्रथम एकान्त में सोचा जाय तो यह पूरा विजय के लिए सबसे अधिक शीघ्र तथा सबसे अधिक प्रभावशाली मार्ग था। आयरलैंड में अग्नित्त, जिसे फ्रांस की अभियानात्मक शक्ति की सहायता प्राप्त हो—उससे भी अधिक उत्तम, इंग्लैंड ही में एक अग्नित्त, जिसका कारण आकस्मिक आगमन और लन्दन की और तीव्र गमन हो, वह एक सत्वाह के भीतर युद्ध का अन्त कर सकता है। दूसरे, यदि किसी कारण से यह आक्रमण असफल रहा, तो इस प्रयोग से फौजार्ड सुर्र गडबड मिट्टिया सरकार को शत्रुओं की माँग करने पर विवरा करेगा। तीसरे, डोवर से केवल बीस मील दूर पर एक अभियान करने वाली शक्ति का निरन्तर भय एक मनोवैधानिक सम्राट (War of Nerves) को स्थायी बनायेगा और यह कंधे की आपर्यकता को दुगुना कर देगा। चौथे, अभियान की धमकी रूस सागर व बल्किया की वा में से घेरा डालने वाली डुकदियों को शायद हटा सकेगी।" (Napoleon Bonaparte His Rise and Fall p 229)

के हाथों में न पड़े। सौभाग्य से इसी समय रूस के जार पॉल की हत्या कर दी गई और यह सशस्त्र निष्पक्ष घेरा टूट गया। इंग्लैंड की सनाएँ मिस्र में भी सफल हुई और फ्रांस को मिस्र छाड़न पर बाध्य होना पड़ा। दोनों पक्ष युद्ध से ऊब गये थे। यह किसी भी पक्ष की विजय हाकर समाप्त ही नहीं होता था। इस प्रकार की परिस्थिति में इंग्लैंड और फ्रांस में १८०२ में अमींस की संधि हुई। इंग्लैंड ने फ्रांस तथा इसके मित्र राष्ट्रों से जीते हुए सारे प्रदेश, लवा और ट्रिनिडाड का छोड़ कर, लौटा देने की प्रतिज्ञा की। उसने माल्टा द्वीप भी खाली करने की प्रतिज्ञा की। फ्रांस ने नेपल्स और पोप के राज्य वापस करने की प्रतिज्ञा की। सत्य ही कहा है कि दाना पक्ष इस संधि से प्रसन्न नहीं थे फिर भी दोनों ने इसका स्वागत किया क्योंकि इससे दोनों का सांस लेने का अवकाश मिल गया। अमींस की संधि केवल एक युद्ध-रोका ममभौता सिद्ध हुई और १८०३ में पुनः दोनों देशों में युद्ध छिड़ गया। नेपोलियन का दश में अपनी शक्ति सप्रहीत करने का समय मिल गया। उसने पीडभोष्ट जीता। उसने मध्यस्थ बनकर अपनी सेनाएँ भेज कर स्विटजरलैंड के मामले में हाथ डाला। इंग्लैंड को उसने फ्रांस में लगभग मिला ही लिया था। उसने ब्रिटेन के विरुद्ध भारतीय राजाओं को उकसाने के लिए एक शिष्ट दल भारत भेजा। ब्रिटेन को परे पान करने के लिए एक और दल मिस्र भेजा। ये सब चालें दोनों दशों में पुनः युद्ध प्रारंभ होने के लिए उत्तरदायी थीं।

मारकहम लिखता है कि अमींस की संधि टूटने के विषय में बहुत-कुछ लिखा गया है। वास्तविक रूप से ब्रिटिश सरकार श्रुति पर थी और उसने माल्टा के द्वीप का खानी न करके इस संधि पत्र का भंग किया। इस संधि का आरम्भ से ही अवकाश काय तथा प्रयोगात्मक संधि माना जा रहा था। कुछ फ्रांसीसी इतिहासकारा विनेपत सोरल (Sorel) ने नेपोलियन के काय का ममथन इस तक से किया है कि इंग्लैंड वास्तविक रूप से बेल्जियम फ्रांस के पास छाड़ने के लिए कभी भी तयार नहीं था। इस आधार पर नेपोलियन का इंग्लैंड से बहुत से युद्ध करना उचित था क्योंकि वह क्रांति के उत्तराधिकारी के रूप में देश की प्राकृतिक सीमा को बनाय रखने के लिए उत्तरदायी था। किंतु यह स्पष्ट है कि १७६७ में मार १८०१ में इंग्लैंड फ्रांस की प्राकृतिक सीमा का मायता देने के लिए तयार था यदि फ्रांस की सीमा इनसे आगे न बढ़े। इंग्लैंड की किसी भी सरकार के लिए यह स्वीकार करना असम्भव था कि यूरोप में गठित का संतुलन पूणत नष्ट हो जाय और महात्मीय में फ्रांस का प्रभुत्व छा जाय जिमत कि भविष्य में जर्मनी के विलियम द्वितीय और ट्रिटनर की धमकिया का प्रतिरोध किया गया। महाद्वीप पर प्रभाव रखने वाली शक्ति समुद्री बड़े बनाने के यूरोप भर के साधना का जुटा सन्ती जा और इंग्लैंड की मानासुद्धि गठित का चुनौता दकर उमक अस्तित्व तक का मिटा सकती था।

नेपोलियन ने इंग्लैंड के अधिवृत्त हनावर का छोना। १८०३ के समय में इंग्लैंड पर आक्रमण करने की तयारियाँ हाता रही। फिशर (Fisher) कहता है कि इंग्लैंड पर एक सफल आक्रमण करने के लिए तीन चाबों का हाता प्रतिवाय

था—यथा एक शक्तिशाली सेना सेना का पहुँचाने के लिए पर्याप्त सहायता में समुद्री जहाज और उनकी रक्षा के लिए शक्तिशाली युद्ध के जहाज। नेपोलियन इस कार्य के लिए पर्याप्त सेना संगठित करने में सफल हुआ। पूरी शक्ति लगाकर भी वह



घरनी मना का ले जान के लिए पर्याप्त सहायता में जहाज इकट्ठे नहीं कर पाया। जहाँ तक मना तथा मना का ले जाने वाले जहाजों की रक्षा के लिए शक्तिशाली

जहाजी बेड़े का सम्बन्ध है नेपोलियन पूर्णतः असफल रहा। १८०५ की ट्रेफाल्गर की लड़ाई में नेपोलियन की पराजय इन परिस्थितियों में आश्चर्यजनक नहीं है। लाड नेल्सन युद्ध में काम आया किन्तु ब्रिटेन ने इंग्लिश धनल पर अपना प्रभुत्व जमा लिया।



नेल्सन

प्रो० मार्कहम (Markham) के अनुसार नेपोलियन द्वारा इंग्लैण्ड के विरुद्ध १८०३ से १८०५ की आक्रामक तयारियाँ एक धोखा था, जिसकी भाँट में वह सारे महाद्वीप की शक्तियों को उलट देने में समय एक छानदार सेना का सग्रह और उसे शिक्षित करना चाहता था। सबसे पहले स्वयं नेपोलियन ने आक्रमण की असफलता के लिए यह सफाई दी। उसने जनवरी १८०५ में राज्य-सभा में कहा कि बोलाने की छावनी महाद्वीप की शक्तियों को भ्रम में डालने के लिए एक धोखा है। किन्तु नेपोलियन द्वारा किये गये उस समय के पत्र-व्यवहार को देख कर जिसमें आक्रमण के विषय में निरन्तर जोरदार तयारियाँ का बरण है इस तथ्य पर पहुँचे बिना नहीं रहा जा सकता कि कुछ भी हो १८०५ में आक्रमण करने का उसका पूर्ण और दृढ़ निश्चय था। यह बात सन्देहास्पद है कि क्या वह युद्ध-पाँता की रक्षा के बिना ही अपनी सेना को डोंगियों में बिठाकर इंग्लिश धनल को पार करता? अमीन्स (Amiens) की सन्धि से पूर्व ही डोंगियों की एक बड़ी सेना तयार करनी आरम्भ कर दी गई थी और नेपोलियन इस आक्रमण के साधन की बजाय, इंग्लैण्ड को डराने का साधन मान मानता था। १८०३४ में इस बेड़े को और बृद्ध बना कर दिया गया और इसमें विभिन्न प्रकार की नावों की संख्या २००० थी। ये बड़ी कठिनाई से

एक सात व्यक्ति और उनके प्रसाधन को ले जा सकती थीं। इसमें तनिक भी सशय नहीं है कि एक बार इंग्लैंड के तट पर उतर जाने के बाद वे भवश्य ही लन्दन को विजय कर लेते। उस समय ब्रिटेन भर में १० लाख सेना थी, तथा पिट द्वारा मग-छिद्र गृह-सेना नेपोलियन के कुशल यादार्थों के सम्मुख कुछ भी शक्ति नहीं रखती थी। बहुत सम्भव है कि नेपोलियन नावा के इस बेड़े का अकेला चैनल पार करन के लिए न भेजना चाहता हो और उसने इसे उस समय तक के लिए एक शक्तिशाली भय के रूप में बनाये रखा हो जब तक कि उसका बेड़ा चैनल को पार करते समय सेना की रक्षा करते योग्य पर्याप्त शक्तिशाली न बन जाय।'

सम्राट के रूप में नेपोलियन (Napoleon as Emperor) (१८०४ १४) —

१८०२ में नेपोलियन ने प्रमुख सलाहकार के पद की १० वय की अवधि का जीवन भर के लिए बढ़वा दिया तथा अपने उत्तराधिकारी को नियुक्त करने का अधिकार भी प्राप्त कर लिया। १८०४ में सीनट न नया सविधान पारित किया तथा नेपोलियन को सम्राट घोषित किया, क्योंकि "यह परिवर्तन फ्रांस की जनता के हित के लिए अत्यन्त आवश्यक है।" नेपोलियन ने स्वयं यह कहा कि 'मैंने फ्रांस के राज-मुकुट का धरती पर पड़े पाया और मैंने इसे अपनी तलवार की नाक से ऊपर उठा लिया।' वह १८१४ तक सम्राट रहा और लिपजिग की लड़ाई के पश्चात् उस सम्राट पद त्याग कर ऐलवा के द्वीप में अवकाश-ग्रहण करना पड़ा। ऐलवा से वापस आकर वह पुन १०० दिन फ्रांस का सम्राट बना और १८१५ में फिर वाटरलू की लड़ाई में हार गया। उसके बाद वह पेरिस चला गया और उसे ब्रिटेन के सम्मुख आत्मसमर्पण करने के लिए विवश होना पड़ा। उसे सेण्ट हेलेना द्वीप में भेज कर देशनिकाला दे दिया गया और वहाँ सात वय पश्चात् १८२२ में उसकी मृत्यु हो गई। उसकी वसीयत थी, "मेरी अन्तिम इच्छा है कि मुझे सीन नदी के तटों पर फ्रांस की जनता के बीच जिसे मैं अत्यधिक प्रेम करता हूँ, दफनाया जाय।"

यह लिखा जा चुका है कि १८०५ में ट्रेफनगर के समुद्री युद्ध में नेपोलियन परास्त हुआ। किन्तु अपनी असफलता पर शोक करने में समय नष्ट न करके उसने स्थल पर अपनी शक्ति का महत्ता का पूरा लाभ उठान का निणय किया। उसने दिसम्बर, १८०५ में आस्टरलिट्ज के स्थान पर आस्ट्रिया और रूस को बड़ी करारी हार दी। यह विजय इतनी निर्णायक हुई कि इसक साथ ही तृतीय मित्रराष्ट्र-संगठन टूट गया। इस सूचना का सुनकर पिट ने कहा 'यूरोप के मानचित्र को लपट दो क्योंकि आगामी दस वर्ष तब तक इसकी आवश्यकता नहीं होगी।'^१

रूसियों ने संधि नहीं की और बड़ी अपवस्था में वापस निकल आए। लेकिन आस्ट्रिया वालों ने प्रेसबर्ग की अपमानजनक संधि कर ली। इस संधि के अन्तर्गत आस्ट्रिया ने वेनेशिया इटली के राज्य को दे दिया जिसका नरेश भी नेपोलियन स्वयं ही था। आस्ट्रिया के हाथ में केवल ट्रीस्टे का बन्दरगाह रहा। अब आस्ट्रिया नहीं, बल्कि फ्रांस ही भविष्य में मुख्य एड्रियाटिक सत्ता हो सकता था। बैबरिया

१ "Roll up the map of Europe it will not be wanted these ten years."

श्रीर बेडेन ने आस्ट्रिया व विश्व युद्ध में नेपोलियन का साथ दिया था और इसलिए आस्ट्रिया दक्षिणी जर्मनी में उन्हें अपना कुछ कीमती भाग देने पर बाध्य हो गया था। एडिपेटिक और इटली से निकाल दिए जाने पर आस्ट्रिया का तीस लाख जनसंख्या की हानि हुई। व्यावहारिक दृष्टि से आस्ट्रिया एक भूमि स गिरा दश हो गया। वह अत्यंत ऐसे परिवर्तन करने के लिए भी बाध्य हो गया जो कि नेपालियन न किए थे या अन्य देशों में वह करने वाला था।

१८०६ के प्रारम्भिक महीना में नेपोलियन ने चार राजाघोषों का निर्माण किया। जो उपकारजनक क्षतिपूर्ति उन्होंने अपना राजा के साथ सम्बंध बनाए रख कर की उसके बदले में नेपालियन न बनेरिया व बुर्टेमवग की जागीरदारी को राज्या के स्तर पर उठा दिया। च कि नेपल्स के राजा न शत्रुओं का साथ दिया था नेपो लियन ने वहाँ का बोरोवोन नरेश हटा दिया और वहाँ की गद्दी पर उभी दे भाई जोसफ को बिठा दिया। नेपोलियन ने हालण्ड के बवरियन गणतंत्र को राजतंत्र में बदलन और अपने भाई लुई नेपोलियन को वहाँ का राजा स्वीकार करने पर विवश कर दिया। १८०६ में नेपोलियन न पवित्र रोमन साम्राज्य का भी अन्त कर दिया और उसकी जगह रहायन का अध सघ स्थापित किया।

१८०६ में प्रशिया जेना और आरस्टाड (Jena and Aurstadt) की लड़ाइयों में परास्त हुआ और नेपोलियन न बर्लिन में विजयोल्लास से पदापण किया। इसी स्थान से बर्लिन प्राज्ञप्ति के नाम से प्रसिद्ध आज्ञा १८०६ में प्रसारित हुई जिसके अनुसार यूरोप महाद्वीप प्रणाली (Continental System) का प्रारम्भ हुआ। १८०७ में प्रशिया फ्रिडलण्ड की लड़ाई में परास्त हुआ और जार को टिलसिट की संधि पर हस्ताक्षर करने पड़े। इस संधि के अनुसार जार न स्वीकार किया कि वह रूस में ब्रिटेन का माल नहीं आने देगा। रूस और फ्रांस के बीच यूरोप को परस्पर बाँटन का समझौता हुआ। विवाद तो है कि जार अलेक्जेंडर न नेपोलियन से कहा यूरोप क्या है? यह कहाँ है? यदि यह तुम और मैं नहीं हैं तो?

जर्मनी (Germany)—आस्ट्रिया और प्रशिया की पराजय के पश्चात् सारा जर्मनी नेपोलियन के हाथों में आ गया। उनके हृदय में पवित्र रोमन साम्राज्य के प्रति कोई श्रद्धा नहीं थी। उसने रूस की ससद को बंदर का एक दयनीय घर बताया। अनेक योजनाएँ बनाई गई और अन्त में जुलाई १८०६ में रहायन-सघ की स्थापना हुई। सघ का मुख्य उद्देश्य जर्मनी के सारे प्रदेशों को तीन मुख्य टुकड़ों में बाँट देना था प्रशिया उत्तर में आस्ट्रिया दक्षिण और पूर्व में शासन करे। पश्चिम में रहायन-सघ का एक नया आस्ट्रिया और प्रशिया दोनों से स्वतंत्र राज्य बनाया जाय जो फ्रांस की सरक्षयता में रहे। इस सघ के सदस्य १६ राज्य स्वतंत्र और पूर्ण प्रभुत्व-सम्पन्न होंगे। मेंबर्गट में एक ससद की स्थापना हुई जिसमें सघ के सामूहिक हिता पर विचार हाता था। किंतु इस ससद का कोई अधिवेशन नही हुआ और इसका सविधान निरर्थक रहा। नेपोलियन को सघ का सरक्षक नियुक्त किया गया। उस इस निणय का अधिकार सौंपा गया कि युद्ध होने की स्थिति में किस राष्ट्र को

नितनी सेना दनी होगी। इसके सदस्यों को जिंदा भी सदस्य राष्ट्र के युद्धप्रस्तुत होने पर अनिवाय रूप से युद्ध में भाग लेना पड़ता था। ६ अगस्त, १८०६ का सत्राट फ्रांसिस न अपनी उपाधि को त्याग दिया और इस प्रकार पवित्र रोमन साम्राज्य का अन्त हो गया।

१८०६ में आस्ट्रिया के परास्त होने पर राष्ट्रवादियों का शासन पर निद्राग्रण रचन का अवसर प्राप्त हुआ। फ्रेड्रिक विलियम का हाइनबर्ग और स्टार्डिन का मन्त्री नियुक्त करके इसके लिए विवश कर दिया गया। सितम्बर १८०७ में हाइनबर्ग ने कहा कि 'फ्रांस की शक्ति के, वर्तमान युद्ध जिसके अनुगामी हैं फ्रांस का उपलब्ध-उपलब्ध और रक्तपात के बीच एक अप्रत्याशित धर्मित प्रदान की है। नये सिद्धांतों की शक्ति इस प्रकार है कि जो भी राष्ट्र इन्हें स्वीकार नहीं करेगा वह या तो परास्त करके घुटने टकन का विवश कर दिया जायगा या नष्ट हो जायगा। वर्तमान युग की भावना ही यह है कि राजशाही सरकार में प्रजातन्त्रीय मिद्वानता का समावेश हो।

इस नीति से मन्त्रिमण्डल में सुधार हुए मुजारदारी तथा जागदारा के कर समाप्त हो गए नागरिकों का स्वायत्त शासन मिला और सना में सुधार हुआ। स्वतंत्रता की घोषणा के बाद से १८१० में सेंट मार्टिन दिवस में प्रशिया में बदल स्वतंत्र नागरिक ही निवास करते हैं। मुजारों का बगार से तथा जागदारा का अमलदारी से छुटकारा मिला। उन्हें सेना में अपमानजनक शारीरिक दण्ड नष्ट दिया जा सकता था। जिन छेतों का व अग्र लागों के लिए बात-जातत से व उनका अपनी सम्पत्ति बन गए और उन्हें धरती बेचने का अधिकार भी प्राप्त हुआ। स्टार्डिन स्वतंत्र व्यापार का समर्थक था। प्रशिया के नगरों के बीच तथा देश के अन्य प्रदेशों के बीच कानूनी प्रतिबंध तोड़ दिए गए।

स्वानहास्ट जिनीसू और कनाइविट्ज, इन तीन व्यक्तियों ने सना में सुधार किया। स्वानहोस्ट ने धार्मिक उत्तेजना की तरह एक नई सना का साटन किया। जिनासू आदेशवादी था, उसने सेना के कार्य में अपनी गृहस्थाकाक्षात्रा का पूर्णता की। कनाइविट्ज सैनिक मोर्चेबादी की विद्या का पण्डित था। जमनों की परिस्थिति के अनुसार उसने नेपोलियन द्वारा प्रचारित सब बातों का अपनाया। १८१४, १८१६ और १८७० में जिने चाली और मोर्चेबादियों से प्रशिया का विजय हुई, उन सब का जमदाता इस ही माना जाता है। सुधारों के कारण प्रशिया की सना राष्ट्रीय सेना बन गई। सभी विदेशियों का निकाल दिया गया। विनाशधिनारा को परिपाटी समाप्त कर दी गई। पनाधिकारियों का चुनाव सामाजिक न्यति के आधार पर नहीं अपितु योग्यता के आधार पर होना लगा। प्रत्येक नागरिक के लिए सैनिक सेवा अनिवाय हो गई। सेना अब अनाचार का घर नहीं रहा अपितु एक सम्मानित व्यवस्था बन गई। सैनिकों का सेवा अवधि घटा दी गई जिसे कि अधिकाधिक लागू का साथ शिक्षा मिल सक और उन्हें सुरक्षित सना में रखा जा सक।

बर्लिन विश्वविद्यालय की स्थापना हुई और बहुत बड़ा संस्था में महान् विद्वान् इसको और आविषित हुए। जमना का जनता के लिए यह विश्वविद्यालय

प्रेरणा का स्रोत बन गया। फिस्ट (Fichte) और स्कलिपरमाचर (Schleiermacher) ने जनता में देशभक्ति की भावना जगाई। ग्रानडट के काव्यों ने भी यही किया। १८०८ में कोइसबर्ग में सदाचार-संघ (Tugendbund) की स्थापना हुई। इस संस्था ने देश भक्ति और आत्मवाद को भावनाओं को शक्ति प्रदान की। एक एल जाहन (F L Jahan) ने जिमनास्टिक समिति की स्थापना की और देश में जनमत को बढ़ावा मिला।

स्पेन के विद्रोह के समाचारा से उत्तेजित होकर १८०८ में स्टार्न ने जर्मनी में भी विद्रोह करने का प्रयत्न किया। स्टार्न का एक पत्र नेपोलियन के हाथ लग गया, अतः उसने स्टार्न को तत्काल निकाल देने की माँग की। राजा को भुजना पड़ा और १८१४ में स्टार्न को पदच्युत कर दिया गया। स्टार्न ने जार के यहाँ नौवरी बर ली और नेपोलियन के विरुद्ध काय करता रहा।

यह स्मरणीय है कि जुन्करबर्ग के जागीरदारों के विरोध के कारण स्टार्न की सारी योजनाएँ धरी-की धरी रह गईं। स्टार्न के निकालने की खबर को सुनकर सेनापति वान याक न कहा—'अच्छा हुआ इन पागल व्यक्तियों में एक कम हो गया बाकी के साथ स्वयं अपने विषय से ही मर जायेंगे।' केवल एक ही प्रभावशाली सुधार हुआ कि १८१४ के समाप्त होते-हाते प्रशिया की सेना इतनी शिक्षित हो गई कि नेपोलियन से लोहा ले सके।

महाद्वीप की व्यवस्था (The Continental System)—फ्रांस के विरुद्ध



बनने वाले सार मगठना की आत्मा इंग्लैंड था। नेपोलियन ने इंग्लैंड को घुटने झुकाने के लिए प्रयत्न प्रयत्न किया किन्तु १८०५ में वह ट्रेपलगर की लड़ाई में

हूँ गया। इंग्लैंड व्यापारियाँ का राष्ट्र होने के कारण, व्यापार के माध्यम से हम पर आक्रमण किया जा सकता था। नेपोलियन ने आस्ट्रिया को आस्टेरलिट्ज के युद्ध (१८०५) में, प्रशिया को जीना की लड़ाई (१८०६) में, और रूस को फ्रीडलैंड की लड़ाई (१८०७) में परास्त करके यह अनुभव किया कि वह इंग्लैंड पर उसके सबसे कोमल स्थान पर आक्रमण करने में समर्थ था। इस प्रकार का सुझाव फ्रांस के सम्राट का एक स्मृति पत्र देते समय १८०५ में माण्ट गिलाड में दिया था। यह स्मृति पत्र महाद्वीप प्रणाली का आधार माना जाता है। माण्ट गिलाड के शब्दों में, "इंग्लैंड पर व्यापार के माध्यम से ही आक्रमण करना चाहिए जूमे एशिया, अफ्रीका और यूरोप में धन कमाने देना, उसे हमारे सहित छोड़ देना और सघर्षों और युद्धों को अनन्तकाल तक चलाना है। ब्रिटेन के व्यापार को नष्ट करना मानो इंग्लैंड के हृदय पर आघात करना है।"

थाम्पसन ने नेपोलियन के विचारों का इन शब्दों में रखा है 'उसने कहा, प्रथम मात्र एक आत्म-संतुष्ट राज्य है जो अपने उत्पादन पर निर्भर है और न कि अपने समुद्र-पार के प्रदेशों पर, जैसे कि एक भोपड़ी का स्वामी अपनी भूमि व अपने उद्यान की पदावार पर निर्भर रहता है। वह बाह्य साधना से अपना धन प्राप्त नहीं करता है, सिवाय उन बलात्कृत अनुदानों के जो वह अपने विजित देशों से पाता है। लेकिन ब्रिटेन तो एक उत्पादन व व्यापार करने वाला देश है जो इतना अधिक माल बनाता है कि उसे दूसरे राज्यों में बचा जाता है और अथवा व्यापारियों की तरह उस मान के बाह्य तथा विक्रय के बदले में धन कमाता है। यदि उसे उस व्यापार चलाने से रोक दिया जाए तो उसके धन की पूर्ति रक जायगी, उसका दिवाला निकल जायेगा और फिर वह अपने द्वारा या अपने मित्रों द्वारा चलाए युद्धों को संचालित न रख सकेगा।

"दूसरे इंग्लैंड को (सोने के रूप में) धन की आवश्यकता है जिससे वह अपनी ओर जमा हुए विशाल राष्ट्रीय ऋण का भुगतान कर सके और अपनी बड़ी हुई वाणिज्यी मुद्रा को संभाल सके, और वह अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। वस्तुतः १८०२ में यह ऋण ५०७ मिलियन पाँड था। १८१४ में युद्ध छिड़ने के समय केवल ८० मिलियन ऋण घट चुका था, जबकि इस पर औसतन १८ मिलियन पाँड प्रति वर्ष व्याज देना पड़ता था। १७९७ में बैंक ऑफ इंग्लैंड में सुरक्षित साना घट कर लगभग एक मिलियन पाँड रह गया था और यह पुनः खतरे के जिदु तक पहुँच सकता था यदि धन के बदले में वस्तुओं का निर्माण करने की जगह इंग्लैंड का निर्माण करने से रोक दिया जाता या आयात किए हुए माल के बदले में सुरक्षित धन का भुगतान करना पड़ता।

'उसने कहा कि तीसरे क्रान्ति से फ्रांस न कृषि, नागरिकता और फ्रंट कॉन्सुल, जो देश की आवश्यकताओं को पहचानता था और प्राप्ति के सारे साधनों को केंद्रित करता था के आधार पर अपने सामाजिक वर्गों को मिला लिया था और अपने प्रशासन में एकता बना ली थी। जबकि ब्रिटेन में अथवा भी राजनीतिक सत्ता राजतंत्र, कुलीन तंत्र, कृषकों व दूकानदारों के बीच झगड़े का कारण बनी हुई थी। देश को

जमींदारों के विरोधी हितों ने फाड़ रखा था व इसी के कारण लन्दन का नगर व्यापारिक विवालिपण के किनारे पर था थम वर्गों में हड़तालें और लाख वस्तुओं के मूल्य में भयानक उतार चढ़ाव—मारे वही बिल्ह जो १७८६ की क्रांति से पहले हो चुके थे—की स्थिति का चुकी थी। ऐसा विश्वास किया जाता था कि इन कठिनाइयों को उन मन्त्री वस्तुओं के उत्पादन में पड़ा किया था जो देश की आवश्यकताओं से अधिक था। ऐसी स्थिति में विदेशी बाजारों का बंद होना स्वयं ही आर्थिक विवालिपण केकारी व राजनीतिक व्याकुलता उत्पन्न करता जो सरकार को शान्ति की मांग पर बाध्य करने के लिए प्रयाप्त था।

(Napoleon Bonaparte His Rise and Fall, pp 224 25)

नेपोलियन को अपने हृदय में इस बात का पूर्ण विश्वास हो गया था कि इंग्लैंड को पार करके इंग्लैंड पर आक्रमण करना उसके लिए असम्भव कार्य है। उसके अपने गठन में बोलोने से फोक्सटोन सेना भेजने की अपेक्षा पेरिस से देहली सेना भेजना सरल कार्य है। ब्रिटेन की समुद्री सेना उसके लिए एक अग्रम्य रोक थी। इंग्लैंड की उन्नति मुख्यतः व्यापार पर निर्भर थी और यदि इसे नष्ट कर दिया जाता तो इंग्लैंड के घुटने टिक जाते। जो योजना उसने बनाई वह एक भयानक जुगा था लेकिन इंग्लैंड को नीचा दिखाने के लिए नेपोलियन इस भयानक कार्य का करने के लिए भी तैयार था। जिस योजना को उसने अपनाया वह महाद्वीप प्रणाली के नाम से प्रसिद्ध है और इसका उद्देश्य इंग्लैंड का आर्थिक प्रतिरोध करना था।

प्रसिद्ध 'वॉलिन राजाणा' द्वारा १८०६ में नेपोलियन ने इस योजना की घोषणा की। इस आशय में इस बात का आदेश था कि अब से इंग्लैंड को द्वीप पर रोक लगा दी गई है। इन सब प्रकार का व्यापार करना निषिद्ध है। इंग्लैंड का जाया वाले जहाज पन और माल की गाड़ें तथा यूरोप महाद्वीप में फ्रांस की अथवा इसके मित्र राष्ट्रों की साम्राज्य के अन्तर्गत इंग्लैंड के माल के गादाम में बंद कर लिए जायेंगे। इंग्लैंड माल इसके तमाम जहाज तथा इसके उपनिवेशों से लाय गए वस्तु मान में लाने जहाजों का मारे यूरोप तथा निष्पक्ष देशों की बंदरगाहों में टहरने न दिया जाएगा। महाद्वीप-व्यवस्था का वारमा (१८०७) मिलान (१८०७) और फ्रांसीसी (१८१०) की राजाणा द्वारा और भी बल प्राप्त हुआ। मित्राणों की राजाणा में घोषणा का गढ़ थी कि ब्रिटेन का किसी भी बंदरगाह से चलन वात राजाणा का फ्रान्स के मुद्रापान या अथवा जहाज पकड़ लें। १८१० की आशय में ना नार फ्रान्स-साम्राज्य में इंग्लैंड के मान को उन्नत करने तथा मावजनिन रूप में राजाणा के आशय दिया गया। १८०७ में मन्त्रों के आशय (Orders in Council) द्वारा ब्रिटेन का सरकार ने भी इसका उत्तर दिया। इन आशयों के अनुसार फ्रान्स तथा अन्य मित्र राष्ट्रों के साथ व्यापार करने वाले सभी राजाणाओं को पकड़ने का आशय दिया गया। इंग्लैंड निष्पक्ष देशों के जहाजों का घुरापण के किसी भाग की फ्रान्स आशय करने मुद्रापन अथवा बंदरगाहों पर जाना होता था।

निम्न राष्ट्र से ब्रिटिश सरकार को पर्याप्त कठिनाइयाँ हुईं। टेमाक ने इंग्लैंड का साथ दान से नब इनाकार कर दिया तो ब्रिटेन के एक अभियान ने १८०७ में वापनहेगन पर गोलाबारी कर दी और डेनिंग जहाजी बेड़े के जहाजों का पकड़ लिया या नष्ट कर दिया। इस बात ने टेमाक का नेपोलियन का साथी बना दिया। ब्रिटिश सरकार की ज़िद के कारण कि यूरोप महाद्वीप में जाने वाले सारे अमरीकी जहाजों की तलाशी होगी इंग्लैंड और मयुकन राज्य अमेरिका के पारस्परिक सम्बन्ध बिगड़ गए। १८१२ में इस विवाद पर दाना देना में एक प्रकार में युद्ध छिड़ गया था। किन्तु इस संधि में नेपोलियन की अपेक्षा ब्रिटेन का निम्न राष्ट्र से कम कष्ट मिला।

नेपोलियन द्वारा महाद्वीप-व्यवस्था का क्रियावित्त कर सकना एक असम्भव बात थी। उम्का साम्राज्य बहुत विंगान था और एक शक्तिशाली समुद्री बेड़े की कमी के कारण उसके द्वारा ब्रिटेन के तट पर जहाजों के पहुँचने पर रोक लगाना एक असम्भव कार्य था। वह केवल यूरोप के देशों को इंग्लैंड के साथ व्यापार करने से रोक सकता था किन्तु यह भी असम्भव था। यूरोप इंग्लैंड पर निर्भर था और उसके मान के बिना उसका गुजारा ही नहीं था। इस परिस्थिति में यूरोप के लोग महाद्वीप-व्यवस्था को मानने की अपेक्षा नेपोलियन की अवहता करना का तयार हो गए। ब्रिटेन फ्रान्स की बनी रेगम की वस्तुओं और अन्य विलास-साधनों के बिना, अपना काम करनी और सूती कपड़ों से बड़ी मात्रा में चला सकता था किन्तु इंग्लैंड के जहाजों के न यूरोप में उपनिवेशों से आने वाली आवश्यक वस्तुएँ ही नहीं अपितु पक्का मान तयार करने के लिए अत्यावश्यक कच्चे माल के आयात का भी बन्द कर दिया। नेपोलियन ने सनिका के लिए कपड़ा और घमटा महाद्वीप-व्यवस्था की व्यवहलना करने मँगाया जाता था। ग्रेट ब्रिटेन ने कहा, चाय शक्कर इत्यादि, जिनके त्रिना रहायन-मध्य के जमन जीवित नहीं रह सकते थे, पर एकाधिकार (Monopoly) स्थापित कर रखा था। इन वस्तुओं को नेपोलियन प्राप्तीयों और स्टली कालों के लिए भी पूरी तरह बन्द नहीं कर सकता था। विशेष आना (Permits) की मात्रा में ब्रिटेन का माल, स्पन और पुनगाल के रास्ते से सारे यूरोप महाद्वीप में टपूक नहीं तक पहुँचता था। चोगे स माल ले जाने के अनाचे तरीके अपनाय जाने लगे। जगह-जगह बहुत-सी अर्थियाँ निकलती दिमाइ देन लगी और जाच करन पर पता लगा कि मुदागाडियाँ शक्कर से भरी हुई थी। गक्कर तम्बाकू कहवा और रू के बढने हुए दामों से यूरोप के निवासियों को बड़ा कष्ट पहुँचा किन्तु इंग्लैंड का कोई हानि नहीं हुई। इंग्लैंड का केवल अपनी जतना की मुपमरों का डर था। किन्तु नेपोलियन ने फ्रान्स के गूँ का भेजने के लिए विनय आना दे दी।

यद्यपि नेपोलियन की अनेक कठिनाइयाँ महुनी पडी, ता भी वह इंग्लैंड के बहिष्कार की नीति पर अडा रहा। १८०७ की टिलमिड की संधि के द्वारा उमने रूस के जार से उसके देश में इंग्लैंड के माल का न आने देने का वचन ले लिया। प्रसिया के राजा ने भी इसी प्रकार का वचन दिया। स्वयं नेपोलियन ने फ्रान्स,

इटली रूहायन-सघ और वारसा के देशों में इस व्यवस्था को लागू करने का वचन दिया। इसके भाई जोसेफ ने नेपल्स में, जिरोम ने वेस्टफेलिया में, इलिस ने टुस्कनी में उमकी इच्छा को पूरा करने का वचन दिया। १८०८ में स्वीडन-युद्ध के परिणाम स्वरूप ब्रिटेन के जहाजों का स्केवेण्डिया की सारी बन्दरगाहों में घुसना बन्द हो गया। अपने आदेशों को पोप के राज्य में लागू करने के दृढ़ निश्चय के कारण ही नेपोलियन को रोम से पोप को निकाल देना पड़ा और १८०९ में पोप के सम्पूर्ण राज्य को फ्रांस साम्राज्य में मिला लिया गया। १८१० में लुई बोनापाट ने नेपोलियन के विरुद्ध डच जनता का साथ देने का स्पष्ट संकेत दिया, क्योंकि उसे अनुभव हुआ कि महाद्वीप-व्यवस्था हालण्ड के लिए घातक सिद्ध हो रहा है। अतः उन्होंने उसे अपदस्य करके हालण्ड को फ्रांस के साम्राज्य में मिला लिया।

महाद्वीप-व्यवस्था को लागू करने के लिए ही नेपोलियन को पुतगाल और स्पेन में हस्तक्षेप करना पड़ा। उसने पुतगाल से माँग की कि वह इंग्लैंड से सारा व्यापार बन्द कर दे तथा सारे ब्रिटिश निवासियों को पकड़ ले और उनकी सम्पत्ति जब्त कर ले। सरक्षक राजकुमार जोन कुछ समय तक तो क्रिभक्तता रहा किन्तु अन्त में उसने इनकार कर दिया। परिणामतः फ्रांस की सेना स्पेन से होती हुई पुतगाल में घुम आई। नेपोलियन का शाही परिवार को पकड़ने का प्रयत्न विफल हुआ। ब्रिटेन पुतगाल की सहायता को आया और इस तरह प्रायद्वीप युद्ध आरम्भ हो गया।

स्पेन की जनता को फ्रांस की सेना का अपने देश से होकर पुतगाल जाना अच्छा नहीं लगा। उन्होंने अपने राजा पर भीरुता का अभियोग लगाया। देश में अनेक स्थानों पर दंगे हुए। बुरबोन-दरबार के प्रतिद्वन्द्वी गुटों में मध्यस्थता करने के बहाने नेपोलियन ने राजा तथा राजकुमार को फ्रांस के सीमान्त पर एक स्थान पर हरा दिया और घमकी देकर तथा फुसला कर राजा और राजकुमार को स्पेन के इटामन के सारे अधिकार त्याग देने के लिए मना लिया। १८०८ में जोसेफ बोनापाट को स्पेन का राजा घोषित किया गया। पुतगाल और स्पेन में हस्तक्षेप करने के कारण दोनों देशों की जनता में तुरन्त ही असंतोष और विद्रोह फैल गया। तगान और स्पेन दाना देगा के निवामिया की ब्रिटेन ने सहायता की। सर आर्थर वेलेज़ी के नेतृत्व में ब्रिटेन ने सहायता की। सर आर्थर वेलेज़ी के नेतृत्व में ब्रिटेन पुतगाल में मना भेजी जिसने फ्रांसीसी सेनाओं को १८०८ में विमीरो के स्थान पर रान्त किया। मिष्ट्रा की संधि के अनुसार फ्रांसीसियों द्वारा पुतगाल खाली कर दिया का वचन दान के थोड़े ही दिनों पश्चात् नेपोलियन ने स्वयं कमान संभाली और डिंड पर अधिकार कर लिया। ब्रिटिश सेनापति सर जोन और स्पेन की धार बढ़ा कर बढ़ाने वाली फ्रांस की मना का हटा कर लिस्बन का बचा लिया। नेपोलियन ने नापति साल्ट (Sault) का ब्रिटेन की सेना को स्पेन के उत्तर की ओर सदहने के लिए तथा ब्रिटिश चीता (Leopards) को समुद्र में धकेल देने के लिए मना का स्थान पर सर जान माग गया किन्तु उसकी सेना बच निकली।

सर आर्थर वेलेज़ी का १८०९ में पुनः पुतगाल के मोर्चे की कमान सौंपी

गई। वह स्पेन की ओर बढ़ा और उसने टलाविरा (Talavera) को नष्ट करके जीता, किन्तु उसे फिर लिस्बन तक पीछे हटना पड़ा। सेनापति मैसेना (Massena) ने अंग्रेज चीते को समुद्र में डूबा देने के लिए आक्रमण किया, किन्तु बैलिंगटन की चालों ने उसके प्रयत्नों को विफल कर दिया। जिस प्रायद्वीप पर लिस्बन स्थित था उस पर अंग्रेज सेनापति ने भार-भार खाइयों की पकितियाँ खुदवा दीं। इन खाइयों की पकितियों को 'लाइन ऑफ टोरस वेदरास' (Lines of Torres Vedras) कहा जाता था तथा यह क्षमता से इतनी सुसज्जित थी कि मैसेना के लिए इन पर आक्रमण कर सकना असम्भव हो गया। बैलिंगटन ने इन खाइयों के निकट का प्रदेश बुरी तरह उजाड़ दिया और परिणामतः फ्रांस की सेनाएँ भूख से मरने लगीं। खाइयों के मोर्चों के पीछे बैलिंगटन की स्थिति बहुत शक्तिशाली थी और उसने लिस्बन को अपनी मुख्य छावनी बना रखा था, जहाँ रसद समुद्री मार्ग से पहुँचाई जाती रही। १८११ में मैसेना को बहुत हानि उठाकर पीछे हटना पड़ा और इसके बाद फ्रांस ने कभी पुतगाल पर आक्रमण नहीं किया।

बैलिंगटन की चालों ने फ्रांस का बुरी तरह धका दिया, क्योंकि इनकी रसद बहुत दूर से आती थी। स्पेन निवासियों ने भी इस समय छापामार युद्ध के द्वारा फ्रांस की सेनाओं पर सब स्थानों पर धावे किए। नेपोलियन आस्ट्रिया और रूस से युद्ध में व्यस्त होने के कारण प्रायद्वीप में स्थित फ्रांस की सेनाओं की कोई भी सहायता नहीं कर सकता था।

१८१२ में बैलिंगटन ने अपने को इतना शक्तिशाली अनुभव किया कि वह स्पेन की ओर बढ़कर स्पेन के स्वप्न लेने लगा। उसने पुतगाल और स्पेन की ओर जाने वाले दो मुख्य मार्गों पर नियंत्रण करने वाले दो दुर्गों को जीत कर अपने आक्रमण को प्रारम्भ कर दिया। वह सलामान्का (Salamanca) तक बढ़ गया और वहाँ एक शान्तार विजय प्राप्त करके मद्रिड (Madrid) में घुसा। जोसेफ बानापाट भाग गया। इस विजय के पश्चात् बैलिंगटन पुतगाल लौट गया। १८१३ में दूसरी बार वह पुतगाल से स्पेन की ओर बढ़ा और उसने फ्रांस की सेनाओं को भगा दिया। विटोरिया (Vittoria) की लड़ाई में जोसेफ को अपनी सारी रसद और तोपखाना छोड़ जाना पड़ा। बैलिंगटन का १८१४ का अभियान दक्षिणी फ्रांस में प्रारम्भ हुआ किन्तु उस समय तक राष्ट्रों का युद्ध प्रारम्भ हो चुका था और १८१४ में स्वयं नेपोलियन को परास्त करके एलबा द्वीप में भाग जाने के लिए विवश कर दिया गया।

प्रायद्वीप युद्ध (Peninsular War) के प्रभाव व विषय में थॉमसन लिखता है कि 'नेपोलियन का स्पेन-युद्ध उसके विनाश का प्रथम चरण था, क्योंकि उसे एक राष्ट्रीयता से प्रेरित विरोध का सामना करना पड़ा था, जिसे वह घूस या कूटनीति से नहीं जीत सकता था। वह ग्रामों तथा पर्वतों में होने वाले युद्ध के खतरे से परिचित था, किन्तु उसने यह कभी नहीं समझा कि एक युद्ध, धर्म-युद्ध (Crusade la puissance de l'ame) भी बन सकता है। वह केवल धर्म शक्ति में विश्वास करता था, जो स्पेन में इंग्लैण्ड की सेना के आने से पहले बहुत थोड़ी थी। उसने उस शक्ति

का, जिसे किसी भी प्रकार की शस्त्र शक्ति नहीं जीत सकती, अर्थात् जनता की देश भक्ति का अनुमान नहीं लगाया। यह सत्य है कि जो ज्वाला स्पेन में जली वह टायरोल (Tyrol) तक फैली जहाँ उसे बड़ी कठिनाई से दबाया जा सका, किन्तु वह प्रतीक के रूप में तीन वर्ष बाद पुनः मास्का के अग्निकाण्ड में प्रज्वलित हुई।

(Napoleon Bonaparte His Rise and Fall, p 247)

१८१२ में लार्ड लिवरपूल इंग्लैंड का प्रधान-मंत्री तथा लार्ड कमलरे (Castlereagh) विदेश-मन्त्रि बने। कैसलरे ने ब्रिटेन रूस, प्रशिया और बाद में आस्ट्रिया को मिला कर चतुर्थ सगठन बनाया। स्वातन्त्र्य-युद्ध आरम्भ हुआ। १८१३ में लिपजिग (Leipzig) के स्थान पर राष्ट्रों के युद्ध (Battle of Nations) में नेपोलियन परास्त हुआ।

१८१४ में बर्लिन ने फ्रांस को टूलूस (Toulouse) के स्थान पर परास्त किया। जब नेपोलियन ने अपने को निस्तहाय पाया तो १८१४ में उसने राज्य त्याग दिया। यद्यपि वह ऐलबा द्वीप से फ्रांस चला आया था तो भी संयुक्त राष्ट्र उसे समाप्त करने के लिए कटिबद्ध थे। इस कारण वाटरलू (१८१५) की लड़ाई हुई जिसमें नेपोलियन की सेना पूर्णतः छिन्न भिन्न हो गई। इस युद्ध में ड्यूक आफ बर्लिंगटन ने सबसे महत्वपूर्ण भाग लिया।

१८१२ में नेपोलियन का रुम पर आक्रमण उसके लिए घातक सिद्ध हुआ। जार एलेक्जेंडर इस निणय पर पहुँच चुका था कि नेपोलियन की इच्छानुसार कार्य करना उसके लिए अमंभव है क्योंकि उसकी इच्छाएँ जनता के हित के विरुद्ध थी। उसने महाद्वीप व्यवस्था (Continental System) की शर्तों को नहीं माना। नेपोलियन ने जिसने महाद्वीप-व्यवस्था पर सब कुछ दाँव पर लगा पर रखा था दुम्मा हम की भावना से प्रेरित होकर रुम पर आक्रमण किया। उसके गढ़ों में मास्को भारतवर्ष तक पहुँचने के रास्ते में एक सराय है। उसने ६ लाख सैनिकों की एक महान् सेना तैयार की और आक्रमण आरम्भ कर दिया। रूसिया ने पीछे हटने की नानि अपनाई और रास्ते की मारी सामग्री नष्ट करते गये। मास्को नगर में भी आग लगा दी गई। परिस्थितियाँ न नेपोलियन का मास्को से पीछे हटने के लिए विवश कर दिया और उसका पीछे हटना मानव इतिहास की सबसे भयानक घटना है। लगभग पाँच लाख व्यक्ति रुम में ही समाप्त हो गये। नेपोलियन की अजय गति का चमत्कार नष्ट हो गया। महाद्वीप-व्यवस्था का रुम में लागू करने के प्रयत्न में नेपोलियन की सफलता का नाश हो यह व्यवस्था भी समाप्त हो गई।

मास्को अभिमान के विषय में स्वयं नेपोलियन ने कहा सम्भवतः मैंने मास्को जाकर मृत्यु का। मुझे वहाँ अधिक समय तक ठहरना नहीं चाहिए था किन्तु मृत्यु मना और नीचता में केवल एक ही कदम का ता अंतर है किन्तु इसका निणय ता भावी सतर्कों ही कर सकता है।

पौलसन के अनुसार, १८१२ का वर्ष नेपोलियन का जीवन का जटिल वर्ष

था, किन्तु परिवर्तन मास्को के बाद हुआ, पहले नहीं। चंपटल (Chaptal) जो नेपोलियन को सबसे अधिक जानता था, लिखता है—“मास्को से लौटने के पश्चात्, जो लोग नेपोलियन के सन्निवृत्त थे, उन्होंने उसकी शारीरिक और मानसिक स्थिति में एक महान् परिवर्तन देखा मैं स्वीकार करता हूँ कि इस दुर्भाग्यपूर्ण समय के पश्चात् उसके विचारों और चरित्र में वह तारतम्य और शक्ति देखने को नहीं मिली जो पहले थी। केवल कल्पना की उड़ानें ही देखने को मिलती थी। पहले जैसे कठोर परिश्रम के लिए न तो उसमें चाह रही थी और न ही शक्ति, जैसा कि मैं बहुधा कहा करता हूँ कि उसके मस्तिष्क के १०० ज्ञान-तन्तु केन्द्रों (nerve centres) में से, आधे से अधिक अब स्वस्थ नहीं रह गये थे।”

(Napoleon Bonaparte His Rise and Fall p 340)

महाद्वीप-व्यवस्था (Continental System) के इंग्लैण्ड पर हुए प्रभाव के विषय में थॉमसन लिखता है कि “१८०३ से १८१० तक नेपोलियन ने फ्रांसीसी और डच बन्दरगाहों पर, इम्स (Ems) और ऐल्बी (Elbe) के मुहानों पर तथा १८०६ के पश्चात् जर्मनी की बाल्टिक सागर की बन्दरगाहों पर जो रोकेँ लगाईं, उनमें ब्रिटिश व्यापार पर कोई गम्भीर प्रभाव नहीं पड़ा। इंग्लैण्ड का बना माल जो विदेशों में भेजा गया उसकी कीमत १८०५ में ४१ लाख पौंड, १८०६ में ४४ लाख पौंड, १८०७ में ४० लाख ५० हजार पौंड, १८०८ में लगभग ४० लाख ७५ हजार पौंड १८०९ में ५० लाख २५ हजार पौंड और १८१० में लगभग ५० लाख पौंड आंकी जाती है। उपनिवेशों से आए हुए माल की दुबारा निकासी की कीमत १८०५ में १० लाख पौंड, १८०६ में १० लाख पौंड से कुछ कम, १८०७ में पूरे १० लाख पौंड १८०८ में ८ लाख पौंड और १८१३ में १२ लाख ७५ हजार पौंड आंकी जाती है। यदि यह मान लिया जाय कि इंग्लैण्ड अपने विदेशी व्यापार के सहारे जीवित था, तो हम मानना पड़ेगा कि इसे नष्ट करने का नेपोलियन का प्रयास सवथा गलत था। यह भी कहा जा सकता है कि जिस समय इंग्लैण्ड के जहाजों के लिए यूरोप महाद्वीप की बन्दरगाहें उत्तरात्तर बंद जाती जा रही थी उस समय उसने समुद्र-पार की श्रय नहीं महिया म अपना माल खपाना आरम्भ कर दिया था। यह तथ्य भी किमो हद तक सच है और बोनापार्ट अपनी याजना बनाते हुए इसको विल्कुल भूल गया। कुछ भी हा यदि इन आंकड़ों की पड़ताल की जाय तो स्पष्ट हो जायगा कि यूरोप में ब्रिटन का मान की निकासी प्रगति करती रही। १८०५ में ३७८ प्रतिशत माल निर्यात म गया १८०६ में ३०९ प्रतिशत १८०७ में २५५ प्रतिशत, १८०८ में २५७ प्रतिशत, १८०९ में ३५८ प्रतिशत और १८१० में ४२ प्रतिशत गया। तथा उपनिवेशों और श्रय देणों का प्रायः हुआ जा माल पुनः भेजा गया उसका जा भाग यूरोप में गया वह कुल विदेशी व्यापार का १८०५ में ७८७ प्रतिशत, १८०६ में ७२९ प्रतिशत १८०७ में ८० प्रतिशत १८०८ में ७११ प्रतिशत, १८०९ में ८३१ प्रतिशत और १८१० में ७६१ प्रतिशत था। इस प्रकार महाद्वीप व्यवस्था का प्रतिबंध अपने प्रमुख प्रयोग में १८१० तक पूणत अयफल रहा।

(Napoleon Bonaparte His Rise and Fall, pp 235 36)

मारकहम (Markham) के मतानुसार, 'महाद्वीप-व्यवस्था द्वारा नेपोलियन ने अपने साम्राज्य के विरुद्ध केवल यूरोप की जनता का ही नहीं उभारा अपितु 'उमने फ्रांस के मध्यमवर्ग का भी विश्वास खो दिया। इस वर्ग के लोग वे लोग थे जो त्राति के प्रमुख उपभोक्ता थे और जिन्होंने उसे सत्तारूढ़ किया था। १८१० से १८११ तक फ्रांस में जो निरन्तर आर्थिक संकट बना रहा उसका कारण 'महाद्वीप-व्यवस्था' का चलाया गया। इसी समय से फ्रांस की जनता तत्कालीन शासन और राजवश के भविष्य से उदासीन हो गई और उनकी यह उदासीनता १८१४ में अत्यन्त स्पष्ट प्रतीत होने लगी। देश का मध्यमवर्ग नेपोलियन की रक्षात्मक (Protectionist) नीति से सहमत था और यद्यपि उन्होंने उस समय से नेपोलियन का नाश छोड़ दिया जबकि उसके द्वारा उन्हें लाभ होना बंद हो गया तथापि वे ज़िद कर के उन्नीसवीं शताब्दी भर इस नीति का समर्थन करते रहे। १८१२ में मास्को से पीछे हटते समय मालेट (Malet) पड्यत्र से बहुत विचलित हुआ। मालेट एक घोर कट्टरपथी गणतंत्रवादी सनैपति था। उसने घोषणा करा दी कि नेपोलियन की मृत्यु ही गई है तथा गणतंत्र की स्थापना की घोषणा कर दी। उसका यह पड्यत्र उसका बंद किया जाने से पहले कुछ सफल तो हुआ किन्तु सबसे आश्चर्यजनक बात यह है कि जिन सेनानायकों को मालेट ने धोखा दिया उनमें से किसी ने भी नेपोलियन के पुत्र नेपोलियन द्वितीय का राजसिंहासन पर अभिषेक करने की बात भी नहीं साँची।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि नेपोलियन द्वारा महाद्वीप-व्यवस्था को लागू करने के प्रयत्न में फ्रांस के आर्थिक साधन छिन भिन हो गये और वह अनेक देशों की सहायता के लिए बैठा। ब्रिटेन इतना दुखी हो गया कि कुछ भी करने के लिए तैयार था। महाद्वीप-व्यवस्था' एक महान् आर्थिक सहिष्णुता की परीक्षा थी और ब्रिटेन इसमें सफल हुआ।

नेपोलियन की असफलता के कारण (Causes of Napoleon's Failure)

—नेपोलियन १८०८ में सत्ता के उच्चतम शिखर पर पहुँचा और इसके पदचान उसका पतन आरम्भ हुआ। इस व्यक्ति के त्रिभुज सारे यूरोप का अपने नियंत्रण में कर लिया था इतनी गीघ्रता से पतन के अनेक कारण हैं।

(१) एक प्रमुख कारण था मानव-बुद्धि का गीघ्रता होना। यह सत्य है कि नेपोलियन एक अत्यन्त बुद्धिमान व्यक्ति था किन्तु यह भी सत्य है कि वह एक मनुष्य था। उसके लिए मनुष्य के स्वयं के स्वयं कर सकना असम्भव था। क्योंकि उमने एक ही बार अनेक कार्य करन प्रयत्न किया था तब क्या आश्चर्य है कि वह सब कार्यों में असफल रहा।

(२) मनुष्य का जीवन-शक्ति की सामा हानी है और एक विनाश आघात पर वह अपने-आपको आत और क्वात अनुभव करन लगता है। डा० स्लाघन (Dr Sloane) के गणना में उसके पतन के सारे कारण एक ही गणना यकान (Exhaustion) में निहित हैं। मानव के कार्यों का इतना परिपूर्ण सत्ता कहा भी

नहीं है त्रिजना कि नेपोलियन के जीवन में दमने का मिलता है। आरम्भ में हम इस शक्ति के उपासक को व्यथ ही अपनी अपरिपक्व शक्ति को उत्तेजना देने हुए देखते हैं, जबकि हमने सहसा तीव्र निराशा के आवेश में अपनी शिक्षा अवधि का समाप्त करने बर्राँ के साथ निम्न स्तर का सादा किया। उमक पदचान सहसा अनिबचनीय तीव्रता से घनी बन गया तथा अच्छी वश भूपा भाजन और निवास-स्थान का पाकर गार्डेरिक रूप से अत्यन्त शक्तिशाली बनकर वह मानो अपना निमाण करता प्रतीत होता है। किन्तु शीघ्र ही उमका नेतृत्व, कुशाग्रता, अदम्य शक्ति प्रत्यक्ष रूप से एक महामानवीय सीमा के साथ प्रस्फुटित होकर विश्व को चकाचौंध कर देती है। उमकी सफाता की अवधि थोड़ी किन्तु राजनीति के क्षेत्र में यद्यत्वी है और उसके प्रयुक्त का युग दीप और स्फुटिदायक है। किन्तु दोनों ही अवस्थाओं में उसकी अज्ञेय, अवक क्रियाशीलता और मानसिक उत्तेजना अति प्रीत है। इसका बाद उसके जीवन का माद प्राया। प्रत्येक युग में भविष्य के बीज होते हैं हम सब जन्म-काल से मृत्यु की धार बढ़ते जाते हैं वतमान अवस्था के गुण और शक्तियाँ घटती जाती हैं तथा ज्ञान वाली अवस्था के गुणों और शक्तियों की वृद्धि होती जाती है। नपोलियन के साथ भी यही हुआ। घटनाओं की संख्या और महत्त्व के दृष्टिकोण से उसने थोड़े-से स्थान में इतना कुछ ट्रेस-हूँसकर भर दिया कि उसका युग एक जापानी भुर्रोंदार चित्र की तरह बन गया जिसे छोटे-से स्थान में समेट कर बना दिया जाता है जो तीव्र, गम्भीर और अवास्तविक हुआ करता है। दूसरे शब्दों में हम नेपोलियन के जीवन के विषय में यह कह सकते हैं कि उसने देश की नौका को चारों ओर से घपटे खात और तीव्र गति से प्रगति करते पाया, कोई भी उसका मागदगक नहीं था। एक कठिन समय में उसने भपडा को समाप्त कर उसकी प्रगति का गतिशील स्थिरता प्रदान की। किन्तु उसके पाम भाप अथवा अथ कल या यत्र की शक्ति नहीं थी, जिसकी वह सहायता ले सकता। वह इसे अकेला ही संभालता रहा। नूफान बढ़ता गया और वह अधिकाधिक अत्यन्त और कलात होता गया। जब वह इस नौका का पथ प्रगान कर रहा था, वास्तव में उसके काय घटनाचक्र से प्रेरित थे, वह नियंत्रण नहीं कर रहा था, किन्तु फिर भी वह इसके चट्टान पर टकराकर नष्ट भ्रष्ट हाने तक अपना काय अनवरत गति से करता ही चला गया।

प्रो० हार्नेण्ट और फ्रांस का प्रधान टीयस (Thiers) इस त्रिचर से सहमत नहीं हैं। यह बात उल्लेखनीय है कि वाटरलू की लड़ाई से पूर्व और पश्चान नपोलियन के सार काय एक स्वल्प मनुष्य के काय थे। उसकी निर्णायक बुद्धि ही उमके ज्ञान और अमफलता की कारण थी। यह सत्य है कि अनेक मुठों में उसकी निरन्तर विजय न उसे घमण्डी और तुनुक-मिडाज बना दिया था। उसका घमण्ड एक मनक बन गया और उसने दूसरा की सलाह मानने से इनकार कर दिया। टलेरण्ड (Talleyrand) और फोच (Fouche) जैसे व्यक्तियों को भी उसने अपना विदवासापात्र नहीं माना। नपोलियन यह समझने लगा था कि उसकी बुद्धि सर्वश्रेष्ठ है, अतः उमके नियम भी सर्वश्रेष्ठ हैं। उसके नियम में कभी-कभी बड़े महत्त्वपूर्ण तथ्य छूट जाते

थे जा मलाह देने पर उसे सुभाये जा सकते थे । उसके अनुमान ऋटिपूण होने लगे और अंत में उसके अनुमान ही उसके पतन का कारण बने ।

(३) उसकी असफलता का एक कारण उसका सय-वाद (Militarism) था । गप्ट्रीय सम्मेलन के नवीन सय-वाद का नेपोलियन उत्तराधिकारी था । किन्तु उमन इस सम्पूर्ण किया तथा बढाया । उसने बडी-बडी सनाघो की भरती की उह गिभित किया और शीघ्रता से युद्ध के माचों पर पहुँचाया तथा इग्लंड का छोडकर यूरोप भर की समस्त महान शक्तिया को एक एक करके परास्त किया । किन्तु उसके युद्ध न अधिकाधिक नर-बलि लेनी आरम्भ कर दी अंत उसे अपनी सना म छोटी भायु के लडक भी भती करने पडे । यह तरीका अधिक देर तक नही चल सकता था और इसका परिणाम केवल विनाश ही था । जिस सयवाद के द्वारा नेपोलियन यूरोप को विजय कर सका, वही सयवाद उसकी पराजय का कारण बना । फ्रान क सन्यवाद स अय देशा म विशेषत प्रगिया रूस और आस्ट्रिया म इसका प्रसार हुआ । दूमरे दगा क सामूहिक सयवाद के कारण ही नेपोलियन का पतन हुआ । नेपोलियन कहा करता था, परमात्मा बडी सेना के साथ चलता है । इसलिए जब शत्रुओ की सनाए उसकी सेनाओ स बडी हो गइ तो स्पष्ट है कि परमात्मा उनक साथ चलन लगा होगा और उनकी जीत हुई हागी । पुनश्च जैसे-जैसे समय बीतता गया नेपोलियन का अपनी सेनाओ में अधिकाधिक पाल, जमन इटालियन डच, स्पनियाड और डेन भनी करने पडे । नेपोलियन की महान सेना अधिकाधिक विपम तत्वो का भुण्ड बनती चली गई परिणामत उसकी सामरिक शक्ति घट गई । नेपोलियन न फ्रास की सेनाओ को अपने शत्रु और मित्र दशो म ठहराने की नीति अपनाई । इस नीति द्वारा वह खर्च म तो बचत कर पाया किन्तु इससे बहुत कटुता बड़ गई । जिन देशा म इन सेनाओ का ठहराया जाता था वे इनस घुणा करते थे और यही घुणा नेपोलियन के पतन का कारण बनी ।

(४) असफलता का एक कारण 'महाद्वीप-व्यवस्था (Continental System) भी थी । नेपोलियन इग्लण्ड का अपना सबसे बडा शत्रु मानता था और उस नीचा दिवतान के लिए दुड प्रतिज्ञ था । उसके विचार म इग्लण्ड की शक्ति और सौभाग्य उमक व्यापार पर निर्भर थे इसलिए उसने यूरोप भर म उसक माल की पहुँच को पूणत रोकन का निणय किया । उसने अनक प्रसिद्ध आनाएँ प्रसारित की और ब्रिटेन के व्यापार का चाट पहुँचाने क लिए वह जा कुठ भी कर सकता था उसने किया । उमन इस बात को नहीं साचा कि इग्लण्ड की वास्तविक शक्ति उमक तपार माल म निम्न है । शक्तिशाली समुग्री बडे की बमी और इग्लण्ड को गहूँ भजन क कारण नेपोलियन इग्लण्ड क घुटन टिकाने म असमथ रहा । 'महाद्वीप-व्यवस्था' क कारण उम अनक राष्ट्रा स भगडना पडा परिणामत वहाँ क लोगा म राष्ट्रामता की भावना जागी । 'महाद्वीप-व्यवस्था' - एक उल्टी ताप का काम करक इस व्यवस्था क निर्माता का ही नष्ट कर दिया ।

(५) नेपोलियन न स्वयं माना है कि यह स्पेन का 'अरुम' ही था, जिसने उसका नाश किया। इंग्लैंड के माल और नागरिकों को पुनर्गाल और स्पेन से निकालने व निश्चय के कारण ही उसे इन देशों में हस्तक्षेप करना पड़ा। इन देशों में उसका सतत और बड़ा विरोध हुआ। इन देशों की भौगोलिक विद्योयताओं और समुद्र व रास्तों से इंग्लैंड की सहायता निरंतर मिलते रहने के कारण, स्पेन और पुनर्गाल की जनता फ्रांस की सेनाओं का प्रायद्वीप से मार भगान में सफल हुई। स्पेन पर ड्यूक ऑफ वेलिंगटन की जीतों ने नेपोलियन की अजेय शक्ति व भ्रम का नष्ट कर दिया।

(६) १८१२ में नेपोलियन का रुम पर आक्रमण एक भारी भूल थी। उसके सम्मान व माय-माय उसकी महान सेना भी पूर्णतः नष्ट हो गई। मास्को से उसके आग्रहय प्रवस्था में पीछे हटने से ही उसके आग्रहों को संगठन करने उसका नाश करने में सहायता मिली।

(७) नेपोलियन का अपने सम्बन्धियों के प्रति मोह भी उसके पतन का एक कारण है। वह जितना उनके प्रति दयालु था, वे उसके प्रति उतने ही कृतघ्न थे। जर्मनी और इटली में उसकी सत्ता के विनाश के लिए कैरोलीन (Caroline) और जिराम (Jerome) उत्तरदायी थे। पॉलीन (Pauline) को छोड़कर उसके अन्य सम्बन्धी विपत्ति के समय उसकी प्रवृत्ता करने में आनन्द लेते थे। कहा जाता है कि नेपोलियन ने सब भाइयों को गृह बनाने का प्रयत्न किया किन्तु वे साधारण मूर्ख ही बने रहे, जिनका काय केवल अपने अन्त पुर के सामने कुड़कुड़ाना और नाचना रह गया था। यदि वह एक बुरा भाई हुआ होता तो वह अधिक अच्छा शासक हुआ होता। नेपोलियन अपने भाइयों के व्यवहार से अत्यन्त दुःखी था। १८१० में नेपोलियन ने मेटर्निक (Metternich) से शिकायत की कि "जितना लाभ मैंने अपने सम्बन्धियों का पहुँचाया, उससे कहीं अधिक हानि उन्होंने मुझे पहुँचाई है।"

(८) बालान्तर में नेपोलियन ने चालाकी और धोखे का आश्रय लेना आरम्भ कर दिया। उसकी चालाकी का एक उदाहरण स्पेन के राजा का उसके देश से निकालना था। कहा जाता है कि १८१४ में उसके पूर्ण पतन का कारण एक पत्र था जो हमन सन्धि-वार्ता के समय लिखा और जो रास्ते में आग्रहों के हाथ पड़ा गया। इस पत्र से उसकी चालाकी पतल गई कि वह वास्तविक रूप से सन्धि का इच्छुक नहीं था। वह युद्ध में विजय प्राप्त करने के लिए अर्द्ध और बुरे, सब प्रकार के तरीकों प्रयोग करने के लिए कटिबद्ध था। उसे कहते सुना गया था, "मैं जानता हूँ कि मुझे कितने समय और कितनी खाल छोड़कर लोभों की खाल पहननी है।" ऐसी परिस्थिति में संगठित राष्ट्रों का इसके प्रयोग और धोषणाओं पर से विश्वास उठ गया और यूरोप के रणमंच से उसे पूरी तरह उखाड़ फेंकने के लिए निणय किया गया। पाठों की भाँति सबदा सफल नहीं होती।

(९) प्रा० हालण्ड रोज के मतानुसार, नेपोलियन के स्वभाव का ज़िद्दी हो

जाना उसके पतन का उत्तरदायी है। एक कुशल प्रबंधक, जो सबदा त्रुटिहान बच करता था जो हर स्थिति का उपाय रखकर सन्तुलन बनाये रखता था, जो गीघ्रता से नियम करने वाला था, उसने अपनी पूर्वकालीन विशेषताएँ तो बनाए रखीं किन्तु ये उसके नियंत्रण से बाहर हो गईं। अब वह घटनाओं को माड-तोड कर अपनी इच्छाओं के अनुसार बनाने लगा और तथ्यों को भूल कर अपनी सनक का ही तथ्य मानने लगा। यह चारित्रिक ह्रास अनेक योद्धाओं के जीवन में पाया जाता है किन्तु नेपोलियन के जीवन में यह टिलसिट के बाद तथा १८०६ के आस्ट्रियन अभियान के पश्चात् और भी गीघ्रता से आया। १८१० में उसके साम्राज्य की वृद्धि उसके हठ के बढ़ने का एक संकेत है जिसने उसका उत्तरदायित्व बढ़ाया तथा विजया की शांति-पूर्वक तथा ठीक प्रकार संभाल सक्ने की शक्ति को क्षीण कर दिया।

(१०) जीवन के उत्तरार्ध में नेपोलियन अपने कार्यों से हताश होकर दुस्साहसी बन गया जो उसकी सफलता के लिए किसी प्रकार हितकर नहीं था। मेटरनिक ने कंसर्टन के स्थान पर नेपोलियन से प्रस्ताव किया कि उसको शर्तें मानकर यूरोप को शांति प्रदान करे। किन्तु नेपोलियन ने उससे पूछा 'तुम मुझ क्या चाहत हो? क्या मैं अपना अपमान कहेँ? कभी नहीं। मैं राज्य का एक इंच भी छोड़ने की अपेक्षा मृत्यु अधिक पसंद करूँगा। तुम्हारे राजा लोगों का जन्म राज्यसिंहासन पर हुआ है और बीस बार हारने पर भी वे अपनी राजधानी में पुनः पदासीन हो सकते हैं। मैं ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि मैंने छावनी से उन्नति पाई है। मेटरनिक ने पूछा कि यदि तुम्हारी भर्ती की हुई सेना समाप्त हो जाय तो तुम क्या करोगे? इसका उत्तर नेपोलियन ने दिया, 'तुम एक सिपाही नहीं हो। तुम क्या जानो एक सैनिक के हृदय में क्या होता है। मैं युद्ध-स्थल में जवान हुआ और मेरे जैसा मनुष्य लाखों मनुष्यों की जानों की क्या चिन्ता करता है।'

(११) नेपोलियन को समझौते का सुभाव सुहाता ही नहीं था। उस महत्त्व मानूँ या कि 'रहायन सभ' (Confederation of the Rhine) एक बुरा हल है, महाद्वीप-व्यवस्था' (Continental System) एक मृगमरीचिका है' और विशाल साम्राज्य (Grand Empire) एक न लौट आने वाली गान है, किन्तु वह इस स्थिति को मानने के लिए कभी तयार नहीं था। उसने राज्य-सभा के सदस्यता को इस प्रकार कहा जिस उच्च गिस्तर पर मैंने फ्रांस को पहुँचा दिया है तुम उससे नीचे उतर कर एक गवपूण साम्राज्य बनाने की अपेक्षा पुनः केवल मात्र एक छोटा-सा राज्य बनाना चाहत हो? नेपोलियन ने कभी यह कल्पना भी नहीं की थी कि जब वह फ्रांस को छोड़ेगा, देश पहले से भी निबल होगा जब उसने इसकी बागडार संभाली थी। उसके मित्रों द्वारा उसका साथ छोड़ने का विचार से ही वह शोध में भर कर बदला देने की प्रतिज्ञा कर बैठता। वह चीखा करता 'म्युनिच को जलना ही चाहिए और इसे जलना पड़ेगा। जब तक उसे सफलता का घाटा-सा अवसर भी दीस पड़ता रहता, वह अपने शत्रुओं से कभी समझौता नहीं करता था। क्योंकि, आशा ने अन्त तक उसका पीछा नहीं

छोटा, अतः शान्ति और सन्धि की कोई भाशा नहीं थी। अन्त तक नेपोलियन को यह विश्वास रहा कि वह शत्रु की श्रुतियों से लाभ उठाकर विजय प्राप्त कर लेगा। इनका कारण कुछ तो उसकी हठधर्मी तथा कुछ युवा अवस्था में अत्यधिक सफलताएँ प्राप्त करने का सीमाव्य था। आरम्भ की सफलताएँ उसका सबसे बड़ा दुर्भाग्य था। इनके कारण उमर अथ लोभों की सलाह मानना बन्द कर दिया। अतः तक उसे यह विश्वास रहा कि वह 'भाग्य विधाना पुरुष (Man of Destiny)' है। यदि नेपोलियन के दुर्भाग्य के आरम्भ होने के समय उसने समझौता कर लिया होता तो उसके समुदाय के सम्बन्धियों ने फ्रांस का सिंहासन उसके लिए सुरक्षित करने में उसकी सहायता की होती।

(१२) नेपोलियन की पराजय का कारण, यूरोप में जिनिसे-यु (Gneisenau) जस मार्चेव-दी में क्रुशल तथा ब्लुचर (Blucher) जैसे यादार्थों और सेनापतियों का उदय होना भी था। यह उसका सीमाव्य था कि आरम्भ में उसे कोई ऐसा योग्य सेनापति नहीं मिला जो उससे लोहा ले सकने की हिम्मत रखता। अपनी सेना के प्रति उसकी उपेक्षा भी उसकी हार का कारण थी। वॉलिंगटन और ब्लुचर का वह बहुत उपयोग्य समझौता था और शत्रु शक्ति का ठीक अनुमान न लगा सकने की कीमत उसे अपना साम्राज्य देकर चुकानी पड़ी।

(१३) नेपोलियन अत्यन्त श्रेणीमार हो गया था और बहुधा श्रेणी बघारने वाले व्यक्ति का पतन हो जाता है। स्पेन के अभियान के दिना में उसने लिखा, स्पेन में मुझे हरिक्युलिस की शक्ति-सीमा के स्तम्भ भले ही मिल जायें, किन्तु अपनी शक्ति की सीमा कहीं पा सऊंगा मैंने स्पेन के सामन्तों और सेनाप्रा से बड़कर कायर कही नहीं देखे।" ये वाक्य स्पेन में फ्रांस की सेनाप्रा के शस्त्र ढालने के कुछ ही दिन पूर्व लिखे गये थे।

(१४) नेपोलियन जनता के कुछ वर्गों का समयन हो चुका था जिनके द्वारा वह सत्ता के सिंहा पर पहुँच पाया था। कालांतर में उसने जैकोबिनवाद के सिद्धांतों का छाड़ दिया और राजशाही का बट्टर समयक बन गया। १७९३ में वह देश का दमन के चगुल से छुड़ाने वाला और गणतन्त्रवाद की भावना को प्रसारित करने वाला सच्चा नेता माना जान लगा। किन्तु १८०० के आते आते उसका सारा जीवन बदल गया और उसका मुकाब राजशाही की आर हो गया। स्वयं नेपोलियन ने इस प्रकार कहा है "भविष्य ही इस बात का स्पष्ट कर पायगा कि क्या नमार की शान्ति के लिए यह अच्छा नहीं था कि रूसों और मैंने जन्म ही न लिया हाता ?"

(१५) नेपोलियन को अन्य लागों से अपनी उच्चता का विश्वास था और इसलिए उमने राज्य की सारी सत्ता अपने हाथों में केन्द्रित कर ली। यह भी उसका पतन का कारण था।

(१६) गम्भीर विचार द्वारा समस्याओं का हल िकालो की शक्ति, जिसके कारण आरम्भ में उसकी महत्वाकांक्षाएँ सीमित रही, जीवन के उत्तरार्ध में आडम्बर और शान की आरंभ हुई।

हेराल्ड (Herold) के मतानुसार 'यद्यपि यहाँ यह बात युक्ति युक्त प्रतीत नहीं होती तो भी यह पूछा जाना कि नेपोलियन क्यों असफल हुआ आवश्यक है।' विक्टर ह्यूगो ने इसका उत्तर दिया 'उसने परमात्मा के साथ म हस्तक्षेप किया।' यह एक उत्तर है। अरब लोग उसके पतन का कारण कुछ चूटियाँ और चूटि-पूण निणयो को मानते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि नेपोलियन ने इतना बड़ा आस रखा कि वह उस घवा नहीं सका। कुछ लोग उसकी राज्य प्रणाली में दोष निकालते हैं या उसे अदम्य ऐतिहासिक शक्तियों के हाथों खेतता देखते हैं, या यह कहते हैं कि उसकी जनता और साथियाँ न उसका साथ छोड़ दिया या उसकी पराजय को अच्छाई की बुराई पर जीत बताते हैं या निलिप्त भाव से दुर्भाग्य की बात कहते हैं। कुछ लोगों का विचार है कि उसकी उन्नति आकस्मिक थी और उसके पतन ने उस उचित स्थान पर पहुँचा दिया था।

फ्रांस के शब्दों में नेपोलियन इस बात को भूल गया कि मनुष्य परमात्मा नहीं बन सकता। वह भूल गया कि राष्ट्र व्यक्ति से और चार्ित्रिक नियम मानवता से ऊँचे हैं। वह भूल गया कि युद्ध ही सर्वोच्च लक्ष्य नहीं है क्योंकि शान्ति युद्ध से उच्च है।'

नेपोलियन का चरित्र (Character of Napoleon)—नेपोलियन अघमहासागर का निवासी था और इस कारण उसका जीवन तीव्रता, लगन और चमत्कारी कल्पना से परिपूर्ण था। उमम निदय रूखा विलासी विचारशील और कवित्वमय होने की सामर्थ्य थी। कोलिनकाट (Caulaincourt) लिखता है 'सम्राट की भावनाएँ उसके राम राम से प्रकट होती थीं और जब उसकी इच्छा होती तो कोई अरब व्यक्ति उससे अधिक लुभावना नहीं हो सकता था। वह एक शिष्ट व्यक्ति था। विवाद में बहुत कम लाग उसका मुकाबला कर पाते थे। जिनसे भी यह बात-चीत करता वे सब उससे बड़े प्रभावित होते थे।

वह अत्यन्त हसोड था। एक बार एक पागल ने नेपोलियन से कहा कि मुझे महारानी से प्रेम है। नेपोलियन ने उस उत्तर दिया 'आपको यह गुप्त भेद किसी और व्यक्ति को बताना था।' १८१२ में जब वह कोलिनकाट के साथ मास्को से प्रशेला लौट रहा था तो उसने इस बात का लेकर कि यदि प्रणिया वाले उन्हें पकड़ लें और दोनों को साथे के पिंजर में बन्द करके लंदन में तमामों के तौर पर दिखाया करें तो कितना मजा आएँ उनमें कोलिनकाट का चिहाने की सोची। उस मजाक से दोनों कई मीन तक बटकह लगाने रहे। कहा जाता है कि विमाना में एक रात्रि को नेपोलियन ने ठंडा मुगा (cold chicken) जा उसका भोजन के लिए तयार रखा जाता था भोगा। जब मुगा लाया गया, नेपोलियन ने उसकी आरंभ देख

कर कहा, "कब से मुर्गे एक टांग और एक पख के पैदा होने लग। मैं दखता हूँ कि अग्र मुझे अपने नौकरो से बचे हुए भाजनो को खा कर जीना पड़ेगा।" नेपोलियन न अपने नौकर को, जिसने मुर्गा खाया था, बान खीचकर छोड़ दिया।

नेपोलियन अपनी युवावस्था क सायियो और मित्रो से विशेष लगाव और माह क बघन से बँधा था। लेनज (Lannes), ने (Ney), मरमोण्ट (Marmont), मुराट (Murat) और जुनो (Junot) जैसे मित्र, जो मन मे आता, नेपोलियन का बट्ट दिया करते थे। कहा जाता है लेनज और ड्यूरेक की मृत्यु पर नेपोलियन फूट फूट कर राया था।

उसे एक 'पत्थर दिल अत्याचारी कहना भूल है। वह 'नीति' के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के रूप बदला करता था। स्वयं नेपोलियन कहा करता था कि मुझ मे दो भिन्न भिन्न प्रकार के व्यक्ति हैं एक केवल बुद्धि वाला और दूसरा हृदय वाला।

उसने अपने भाई बहिनो पर धन और पदो की वर्षा कर दी। उसने जोसेफ का पहले नेपल्स और फिर स्पेन का राजा बनाया। उसने लुई को हार्लैण्ड का राजा बनाया। उसने जिरोम को वेस्टफेलिया (Westphalia) का राजा बनाया। किंतु इतना करने पर भी वे सतुष्ट कही हुए। नेपोलियन ने दुखी होकर कहा, "जिस तरह ये लोग बात करते हैं उसे सुनकर कोई यह सोचेगा कि मैंने अपनी पैतृक सम्पत्ति बरबाद कर दी है।"

नेपोलियन की स्मरण शक्ति अद्भुत थी और इसकी सहायता से वह अपनी कल्पना में योजनाओं और आकाशमो का ताना बाना बुना करता था। उसके शब्दो म वह "दो वष पहले का जीवन जिया करता।" एमरसन के शब्दो मे, 'नेपोलियन का कभी भी विजय आकस्मिक रूप से प्राप्त नहीं हुई, अपितु युद्ध-स्थल मे लड़ाई जीतने से पहले वह युद्ध को अपने मस्तिष्क मे ही जीत लिया करता था।'

उसे अपने बौद्धिक साधन हर समय उपलब्ध थे। उसके अपन शब्दा म "दराजा वाले सद्बक की तरह मेरे मस्तिष्क म भिन्न भिन्न प्रकार के मामले इकट्ठे हात रहते हैं। जब मैं किसी काय को बद करना चाहता हूँ तो उसका दराज बद करके दूसरा दराज खोल लेता हूँ। इनमे से एक भी कभी आपस म नहीं मिलता और इनमे कभी गडबड नहीं हाती। अत मुझे असुविधा का सामना नहीं करना पडता। जब मुझे नींद आती है मैं इन सब दराजों का बद करके सो जाता हूँ।

नेपोलियन का मूल्यांकन (Estimate of Napoleon)—नेपोलियन विश्व के सबम महान् विजेताओं और शामवा मे से था। वह एक उच्च स्तर का बुद्धिमान् व्यक्ति था। उसके विषय मे बहुत बडी मख्या मे लिखे गये ग्रथ उसके व्यक्तित्व क परिचायक हैं। मूराप म एक नई व्यवस्था की नाक डालने वाल के रूप म उसका अग्रन काय तक स्मरण होता रहेगा। इटली और जर्मनी को मिला दन मे उसक यागणन का भुनाया नहीं जा सकता। उसके विषय मे लिखने वाला के हृदय मे उसक विरड्ड

घोर विरोध होने के कारण उसके चरित्र का सत्य समीक्षण करना असम्भव है। एबट (Abbot) जस व्यक्तिया ने उसकी भरसक प्रशंसा करने का प्रयत्न किया है किन्तु अग्र लोपो ने उसकी निंदा की है। सत्य इन दो अत्यन्त विपरीत विचारों के मध्य में स्थित है। यह कहना कि या तो वह अत्याचारी था या लुटेरा उसके साथ घोर अनाय करना है। उसने गुणवानों के लिए पदों के द्वार खोल दिए (careers open to talent) तथा विशेषाधिकारों को समाप्त करके समानता पर जोर दिया। 'अन्तिम उदार स्वच्छाचारी शासक होने के साथ वह प्रथम आधुनिक महान शासक था।'

नेपोलियन एक उच्च स्तर का वक्ता था। जन-साधारण पर उसकी अपील सफल होती थी। किसी न उस महान लेखक भी कहा है। फिगर के गन्दों में वह पत्रकारों का राजा और युद्ध के सन्वादाताओं का पिता था। उसकी शली नाटकीय थी तथा उसमें आत्मश्लाघा का अनुपम तत्त्व विद्यमान था।

कहा जाता है कि वह अत्यन्त स्वार्थी था और अपने स्वार्थ के लिए अपने परम मित्रों तथा सब वस्तुओं को छोड़ सकता था। क्या आश्चर्य है कि उसकी विपत्ति के समय सब ने, उसकी पत्नी तक ने, उसका परित्याग कर दिया हो। वह अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए लाखों सिपाहियों की जानों की बलि दे सकता था। कहा जाता है कि बोरोडिनो के युद्ध में सबसे अधिक नर हत्या हुई और उसे देख कर नेपोलियन ने कहा 'यह सबसे गानदार युद्ध है जो मैंने अब तक देखा है। उसका व्यक्तित्व इतना महान था कि जो भी उससे मिलता सम्मोहित हो जाता विशेषतः उससे सन्निव, जो कि उसके लिए अपना जीवन देने को तयार रहते थे।

नेपोलियन कहा करता था मैं और व्यक्तियों की तरह का पुरुष नहीं हूँ। उसका सिद्धान्त था कि धर्म और सत्कार के बंधनों से वह मुक्त है। यद्यपि रामन कपोलिक धर्म में वह अपनी आस्था जताया करता था तो भी मन से एक पूर्ण भौतिकवादी था तथा स्वयं ईसा में भी उसका विश्वास नहीं था। उसने गंगा में मिस्र में मैं मुमनमान था फ्रान्स में रोमन कथालिक हूँ।

वह बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न व्यक्ति था। मनुष्य का शक्ति का जहाँ तक हम ज्ञान है नेपोलियन ने उन सब शक्तियों का पराकाष्ठा का पट्टेचा किया था। मिगनट (Mignet) के अनुसार नेपोलियन आधुनिक युग का सबसे महान व्यक्तित्व है।

वह देश का स्वतन्त्राचारी तथा सना का सन्निव अधिकारी भी था। देश का निमाण सन्निव आधार पर किया गया था। विजय के उद्देश्य से अपनी सनाए रचन और बनाय रखन के लिए इसकी सारी सत्साम्रा का संगठन किया गया था। राज्य के सारे पद के पुरस्कार मंत्रस पहले केवल सना ही के लिए सुरंगित रहते थे। एक अधिकारी, और सना का एक प्राइडेंट सिपाही तक, राज्य का सर्वोच्च सत्ता को अपनी सवामा का फन बना सकता था। यह स्पष्ट है कि एमी निर्मित सना के साथ राज्यसत्ता की उपस्थिति उनके प्रयाजना को अत्यधिक प्रात्माहन दे सकती है। यह

विल्हुन निश्चिन था कि फ्रांस के राज्य के सारे साधन—सविनय राजनीतिक, धन व सेना-सम्बन्धी तब—संचालन की गद्दी की ओर झुक गए थे जिसे नेपोलियन ही स्वयं निर्देशित करता हो। सेना को आदेशित रखने वाला प्रत्येक अधिकारी उसके विरुद्ध लाम फ्रांस करता था जिसे प्रदत्त सत्ता का प्रयोग मिला हुआ था या जा आदेशों व उत्तरदायित्वों के आधीन रहता था। लेकिन अन्त किसी सत्ताधारी जा अन्त तक हुआ था की अनेका नेपोलियन को इस प्रकार के अमूलपूर्व सुख प्राप्त थे। जैसा कि कई लोगों ने बताया है उसकी उपस्थिति ऊपर बहूँ हुए सारे लान ही फ्रांस की सेना का नहीं मिल सकते थे, वरन वह फ्रांस के भागाना की सारी इच्छाओं और एक-दूसरे के कार्यों की प्रतिक्रियाओं को समाप्त कर सकता था चाहे वह दूषित सिद्धान्तों व भावनाओं पर आश्रित हा या केवल उनके बीच मतभेद हों। इस तरह फ्रांस की सेना का त्रिधा की एकता प्राप्त थी।'

(Napoleon Bonaparte His Rise and Fall p 285)

नेपोलियन बहुत कुशल गामक और व्यवस्थापक था। उसने प्राचीन काल के विचारों का वर्तमान की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रयोग किया। वह छात्री से छोटी बात का पूरा ध्यान रखता तथा उसका प्रत्येक काम सुचारु रूप से व्यवस्थित होता था। अपनी सेना व निमाण में 'योग्यता' को महत्व देकर उसने कुशल व्यक्तियों को भेवाएँ प्राप्त कीं। वह दिन में १८ घण्टे काम कर सकता था और दूसरों से अधिक-अधिक काम की मांग करता था। १८१४ में वुड के युद्ध के बाद वह ३ दिन में ६० मील चला। वाटरलू के युद्ध के चार दिनों में वह ३७ घण्टे घोड़े पर सवार रहा और ६६ घण्टों में केवल २० घण्टे सोया। अपनी अद्भुत तीव्र बुद्धि के कारण वह सत्र की सेना में दुबल स्थान आमानों से देल लिया करता था। समुक्त राष्ट्रों की सेनाओं में तारतम्य की कमी के कारण तभी सत्र के दुबल स्थानों पर कराने चाट करने का शक्ति सममें बड़ी महत्वपूर्ण थी। वह अपनी विजय के बाद अन्त विस्था के लिए प्रयत्न करना रहता था। वह प्रत्येक सुप्रवन्धन में अधिकाधिक लाम लगाता था।

नेपोलियन ने फ्रांस की बड़ी भेवा की। उसकी सफलताओं का फ्रांस को विदेशी शक्तों से बचाया। उन्ने अन्तर्जाली कुशल केन्द्रीय सरकार की स्थापना करके देश का अग्रगण्यता से बचाया। देश में और गृह-युद्ध में केवल उसका जीवन ही एक रोज था। उसने फ्रांस को 'टीम कानून प्रणाली' प्रदान की। उसने शिक्षा की उन्नति की, व्यापार और उद्योग की वृद्धि के लिए सक्रिय कदम उठाये। उसने दूसरे देश पर फ्रांस की मनाओं का व्यय भार डाल कर देश के काय को महायता प्रदान की। उसने कागज के नाट नहीं चलाये और आय-कर भी नहीं लगाया। किन्तु टिलमिंट की सचि के परचात नेपोलियन फ्रांस में दुर्भाग्य से आया। यदि १८०७ में ही नेपोलियन की मृत्यु हो गई होती तो फ्रांस उसका कृतन होता। इंग्लैंड को नीचा दिखाने का सक्त्प ही उसकी सारी विपत्तियों की जड़ था।

भालोचक कहते हैं कि 'नेपोलियन यूरोप का आततायी था। वह फ्रांस की प्राकृतिक सीमाओं से सन्तुष्ट नहीं रहा। वह यूरोप के अन्य देशों पर भी अपना शासन जमा कर उन पर स्वेच्छाचारिता से शासन करना चाहता था। युद्ध और अत्याचार उमक चरित्र के अभिनय तत्त्व थे जो उसके रोम रोम में पैठ गये थे।' 'वह यूरोप को फ्रांस द्वारा और इंग्लैंड को यूरोप के माध्यम से नीचा दिखाना चाहता था। महाद्वीप-व्यवस्था इंग्लैंड के विरुद्ध यूरोप को संगठित करने का एक प्रयत्न था। इंग्लैंड के प्रति उमकी कटुता उसके शब्दा से प्रकट है कि, "हमारी सरकार को इंग्लैंड की राजशाही समाप्त करनी ही चाहिए अन्यथा इन क्रियाशील द्वीपों के निवासियों द्वारा अपना विनाश स्वीकार करना चाहिए।' नेपोलियन अलेग्जेण्डर महान और चार्लेमेने दोनो के पदचिह्नों पर चलना चाहता था। उसकी महत्वाकांक्षा केवल यूरोप तक ही सीमित नहीं थी उसकी इच्छा पूव को भी विजय करने की थी। जमा कि १८१२ में दिये हुए उसके वस्तुव्य से स्पष्ट है 'हम यूरोप का अन्त करने वाले हैं और फिर पूव की ओर जाकर भारतवर्ष के स्वामी बनेंगे।

एममन के गानों में उस काल में वह उन्नति करने वाले मध्यम वर्ग के सारे गुणों का मूल रूप था। वह व्यापार के बाधों में नहीं सप सका इस कारण वह इस नाटक में खलनायक बन गया।' सोरेल के मतानुसार, 'नेपोलियन विशाल फ्रांस का समर्थक तथा उसकी प्राकृतिक सीमाओं की माँग का निर्माता था। सेवी के मतानुसार नेपोलियन एक आदर्श बुजुर्ग था जो शांति-व्यवस्था को चाहने वाला था किन्तु यूरोप के सारे देशों के उसबाये जाने के कारण युद्ध करने पर विवश हो गया।

प्राण्ट और टम्परले के मतानुसार नेपोलियन निर्विवाद रूप से एक असाधारण मस्तिष्क और चरित्र का व्यक्ति था जिसने कि-ही भी परिस्थितियाँ अथवा किसी देश में अपना उच्च स्थान प्राप्त किया होता। उसमें काय तथा व्यवस्था करने की असाधारण गति तीव्र अन्तर्दृष्टि साहस उत्तरदायित्व निभाने की इच्छा एक बार काय को हाथ में लेकर उसे पूरा करने का दृढ़ संकल्प तथा एक सैनिक के गुणों की पराकाष्ठा थी। इन सब के साथ-साथ उसमें बुद्धिमत्ता थी वह प्रतिभा थी जिसे कोई भी जान नहीं पाता। किन्तु उसकी उन्नति एक श्रेष्ठ व्यक्ति द्वारा ममार में उच्च पद प्राप्त करने का कहानी से कहा अधिक है। उसकी उन्नति में इतिहास के मौलिक सिद्धान्त की भूलक है। हम इतिहास में देखते हैं कि अव्यवस्था और अज्ञानि के युग प्रायः एक व्यक्ति की गतिशील मत्ता की स्थापना में समाप्त हुआ करता है। नेपोलियन के जीवन के इतिहास की तुलना के लिए जो उदाहरण दिये जाते हैं वे राम में एक गतिशील तर्क अव्यवस्था और अज्ञानि के युग के पश्चान् जूनिअस साउथर द्वारा रामन साम्राज्य की स्थापना और प्यूरिटन अज्ञानि के पश्चात् अज्ञानि के अज्ञान का नाम है। किन्तु ये उदाहरण अत्यन्त स्पष्ट हैं। बार ग्रॉफ राउड के पश्चात् ट्यूडर राजशाही का स्थापना में तो हम वही प्रकार के तत्त्वों को देखते हैं जब फ्रांस में गतिशील युद्ध द्वारा घोर अज्ञानि पनप गई तब उस अज्ञानि और अज्ञान का अन्त अज्ञान मरण और सुई ग्यारहवें के नेतृत्व में फ्रांस

के राजाओं ने किया। किन्तु जर्मनी के तीस वर्षीय युद्ध के पश्चात् भी एक व्यक्ति का ही राज्य स्थापित हुआ।”

डा० हॉलण्ड रोज के मतानुसार, 'एक ही व्यक्ति नेपोलियन को तुलना में चुनौती दे सकता है। रोम की दुनिया पर जूलियस सीज़र का व्यक्तित्व इसी प्रकार छाया हुआ है जिस प्रकार इस कोसिका के निवासी का व्यक्तित्व फ्रांस के क्रान्ति-युग पर छाया है। दोनों व्यक्ति युगपरिवर्तन के सन्धि-काल में उत्पन्न हुए थे। यह वह समय था जब पुरानी व्यवस्था बीत रही थी और नवीन सिद्धान्त मायता प्राप्त करने के लिए सघष कर रहे थे। बहुत प्रकार से जूलियस सीज़र और नेपोलियन प्राचीन को नवीन से जाहने में सफल हुए। यद्यपि युरावस्था में ये नवीनता के प्रतिपादक रहे, किन्तु कालान्तर में प्रौढास्था में अधिक रुढ़िवादी बन गये। परन्तु सीज़र नेपोलियन से अधिक महान व्यक्ति था। यद्यपि उसने अपने जीवन का गम्भीर भाग जीवन के उत्तरार्ध में धारण किया तथापि युद्ध और शासन-कला में उसने इस प्रकार की निर्विवाद महत्ता स्थापित कर ली थी कि उसे उसकी हत्या के अतिरिक्त अन्य कोई घटना हिला ही नहीं सकती थी। उसने युद्ध विद्या के नवीन सिद्धान्तों की स्थापना की तथा इसके साथ-साथ शीघ्रता से बढ़ते हुए साम्राज्य की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समूचे रोम के लिए एक-जमी नागरिक व्यवस्था की स्थापना भी की। उसके क्षमादान और व्यवहार ने रोम के साम्राज्य में मिलाये जाने वाले विजित लोगों के हृदय जीत लिए। उसने पद सँभालने के समय से अधिक बड़ा तथा शक्तिशाली राष्ट्र छोड़ा। देश तथा विदेश में उसकी अद्वितीय जीता ने उसकी दूरदर्शिता का कम नहीं किया और न उसके स्वभाव को बिगाड़ा। वे उसके क्षमादान से अछड़े तथा अधिक मानवीय बन गये। यह बात नेपोलियन के लिए नहीं कही जा सकती। एलेग्ज़ेण्डर महान् के विषय में लिखते हुए नेपोलियन ने अपनी त्रुटि को माना है। उसने लिखा है, 'मैं एलेग्ज़ेण्डर के युद्धों को नहीं पसन्द करता क्योंकि मैं उन्हें समझ नहीं पाता परन्तु उसके नीति के तरीकों का पसन्द करता हूँ। बत्तीस वर्ष की अवस्था में उसने एक सुव्यवस्थित साम्राज्य छोड़ा जिसे बाद में उसके सेनापतियों से आगे में बाँटा। उसमें यह कला थी कि उसके विजित लोग भी उससे प्रेम करते थे'।”

डा० हॉलण्ड रोज के अनुसार नेपोलियन का व्यक्तित्व परस्पर विरोधी प्रेरणाओं से भ्रंत प्राप्त था। दक्षिण की जन-वायु से उष्णता पाकर उसमें उत्तर के निवासियों जैसा शान्ति से समस्या हल करने का स्वभाव था। वह नम्र और कठोर क्षमाशील और निदय, उदार परन्तु घमण्डी, कल्पना करने वाला किन्तु दूरदर्शी था। प्रत्येक घटना और समस्या को सुलझाने के लिए उसने विभिन्न प्रकार की तकनीकों को बेचैन किया। हर बार हम यह प्रश्न पूछना पड़ता कि किन विरोधियों के कारण उसने यह कार्य इस प्रकार किया अन्य प्रकार से क्यों नहीं किया? हम राज के अंत में हम अत्यन्त अद्भुत बातें विमूढ़ हो जाते हैं कि इतिहास के सबसे बड़े सम्राट और व्यवस्थापक ने फ्रांस को निबल और अपने अनुयायियों को बलवान छोड़ा।

डा० स्लोन (Sloane) के अनुसार 'नेपोलियन इसलिए महान् बना, क्योंकि उसकी प्रतिभा केवल मध्यम श्रेणी की नहीं थी। प्रथमा वह अपने युग के अन्य लोगों की तरह व्यक्तिगत चरित्र से मध्यमवर्गीय युद्ध में सैनिक दान्ति में स्वेच्छा-चारी और राजनीति में आदर्शवादी था। उसके सभी गुणों का विद्वेषण किया जा सकता था। उसके 'यकित्तत्व को समझा जा सकता था। वह धक भी जाता था और इस कारण उसमें अनेक गुणों का समावेश भी था। बाल के निम्नर में नेपोलियन का साम्राज्य एक चमकता हुआ बुलबुला' था। एलेग्जेंडर ने अपने युग की सम्यता को हेलिना की सम्यता से रँग दिया और ईसाई धर्म के प्रसार के लिए ससार का तयार किया। चार्लेमग्ने (Charlemagne) ने बबर यूरोप की धरती में हल चलाया इसे समन्तल किया तथा इसमें सम्यता के बीज बोकर शिष्ट आदर्शों में श्रेष्ठ राष्ट्रीयता के आदर्श को धारण करने योग्य बनाया। नेपोलियन ने सब शक्तिमत्ता को आमूल उखाड़ फेंका और व्यक्तिगत अधिकारों के आधुनिक विचारों को यूरोप में दूरस्थ प्रदेशों में फलाया। उसने रोम-जमान साम्राज्य के जजर ढाँचे को उखाड़ फेंका और न चाहते हुए भी राष्ट्रीयता और पितृ भूमि के विचारों को जिन्हें युग-युगांतर से गलत तरीके से अपनाया जा रहा था नवजीवन प्रदान किया।

शेटोब्रियांड (Chateaubriand) के मतानुसार 'नेपोलियन एक कायशील कवि था।' वह मिटटी से बने मानव शरीर के पुतले में जीवन डालने वाला अमर प्राण था। 'लियोन ब्लाया के अनुसार वह अधेरे में छुपा हुआ परमात्मा का मुख था।

हैरोल्ड के विचार में बुद्धि व शक्ति के सर्वोच्च संयोग ने नेपोलियन को अस्तिष्क को एक चुम्बक वाली—लगभग अप्राकृतिक विनोयता दी—वह शक्ति उसके चित्रांकित अज्ञात सत्यवती मालूम होती है और उसके नाम को जादू से युक्त करती है। यदि आधुनिक समय में कोई देवी यकित्त उत्पन्न हुआ है तो वह नेपोलियन ही है। अत्राहम लिबन उसका सम्भवत प्रतिद्वन्दी हो किन्तु पौराणिक गायात्रा का जीव होन के कारण नेपोलियन का बड़ा लाभ प्राप्त हुआ। ओलम्पिया वालों की तरह वह बनाई व बुराई स परे है एक सच्चा पपन देवता है जो ख्याति के साथ प्राचीन व यूनानी है। लिबन जो अमरिका के जगती भागा स उपजा हुआ मसीहा था एक और ती क्षेत्र का व्यक्ति है।

कुछ ही वागान इतन सकेत के साथ नेपोलियन के रहस्यवाद की चर्चा की है जितना कि हन (Heine) ने इन गानों में की है उसका आकृति की भी एमी बनावट थी जिसे हम यूनानिया व रोम वाला के पत्थर व सिरा पर दगते हैं। उनका अज्ञान इतना मुत्तरला न गठित व जमा कि प्राचीन मूर्तियाँ मत्था को मिलता है। उनका चहर पर यह अद्भुत या तुम्हे सिवाय मेर और कोई देवता नहा मिनेगा।

(Introduction The Mind of Napoleon, p XIX)

'Death makes no conquest of this conqueror
For now he lives in fame

टलीरण्ड (Talleyrand) के मतानुसार, 'नेपोलियन का ज्ञान अनुपम था। पिछले कई हजार वर्षों में उस जैसा आश्चर्यजनक जीवन देखा नहीं गया। वह वास्तव में सब से भ्रमाधारण व्यक्ति था। उस जैसा व्यक्ति आज तक न बनीं मैंने देखा है और न ही मेरे विचार से आने वाली कई शताब्दियों में उस जैसा भ्रमाधारण व्यक्ति जन्म ले सकेगा।'

नेपोलियन की ग़ाटलू की पराजय के बाद हाईडें ने ये शब्द कहे —

"I came too late in time
To assume the prophet on the demi god
Apart past playing now My only course
To make good showance to posterity
Was to implant my line upon the throne
And how shape that if now extinction nears !
Great men are meteors that consume themselves
To light the earth This is my burnt out hour "

१७६९ और १८१५ के बीच फ्रांस में आने वाला अंतर नेपोलियन का काम था। पिछला फ्रांस परम्परागत और गढ़बढ़प्रस्त था, जबकि बाद वाला व्यक्ति, प्रमद्विग्न व सम्पत्ति के लिए सम्मान रखता था। प्रशासन एकात्मक, सचेष्ट व सम-रूपी था। यद्यपि नियंत्रित नहीं थे, पर आर्थिक साधनों में भी उत्साह था। ऐसी प्रशियाभा का निर्माण किया गया था जिनमें फ्रांस का महान् नगर स्वस्थ व सुंदर बन गया। क्रान्तिकारी सिद्धान्त इतने मशोषित व मिश्रित हो चुके थे कि राजवर्गों के प्रयत्न उन्हें बदलने में असफल रहे। उसकी एक यह भी राय थी कि राष्ट्रों का प्रयोग न लाने से पहले तुम्हें उनकी सेवा करने का अधिकार होना चाहिए। टर्की व रूसियों में नपोलियन ने अमरतोप के बीज बोये और उमक दूतों ने उनके दिना का प्र-वलित किया। इसी प्रकार का एक उदाहरण सर्बिया था और यूनािनियों में राष्ट्रीय जागरण इसी प्रकार की आगाओं का जगाकर किया गया था।

यह बताया जाता है कि अग्र-यक्ष रूप से नेपोलियन ने अमेरिका को पूर्णतया इंग्लैंड से मुक्त कराया। वही इंग्लैंड और अमेरिका के बीच युद्ध कराने के लिए उत्तरदायी था जिसके कारण अमेरिका को यंग व पूर्णरूपेण व्यापारिक भुक्ति प्राप्त हुई। नपोलियन से लुइसियाना (Louisiana) के त्रय ने अमेरिका की राष्ट्रीय व्यवस्था में अदर व वाटर दाना रूपों में क्रान्ति पैदा कर दी।

नेपोलियन व हिटलर के बीच तुलना—हैरोल्ड के विचार में, 'नेपोलियन व हिटलर व चरित्र के बीच कई बाह्य, तथा किसी प्रकार से आकस्मिक नहीं समानताओं व कारण कई लागे न इनके चरित्रों में पाई जाने वाली महत्त्वपूर्ण असमानताओं से भ्रायें भींच लीं। नेपोलियन से भिन्न हिटलर को इतिहास में वही स्थान मिलेगा जो बनी अटोला या चगेज्वा की मिला था। हिटलर ने कानून का नाश किया, जबकि नेपोलियन कानूनदाता था जिसकी संहिताएँ महाद्वीप के पार तक पहुँचीं। यही

अन्तरतुलना के पलडों को वियम करने के लिए पर्याप्त होगा। हिटलर को सनक हो गई थी और वह एक विचारधारा के पीछे दीवाना हो गया था, जबकि नेपोलियन जा सदबुद्धि वाला और आत्म अभिमानी था। ऐसे सिद्धान्तों से घृणा करता था। हिटलर घणा की दुहाई देता था जबकि नेपोलियन सम्मान की। हिटलर उस अंधे प्रवृत्तियुक्त दानव की प्रशंसा करता था जिसे वह 'जनता' कहता था और जिसे टेन (Taine) ने गोरिल्ला (Gorilla) कहा था। नेपोलियन ने उसे आतङ्क के युग में देखा था और वह उस दानव की सत्ता की माँग करने से पूव मर जाना उत्तम समझता था। जब नेपोलियन ने अपना जीवन शुरू किया तब उसमें एक सदबुद्धि वाले व सज्जन लोका की आशाएँ निहित थी जो बीयोपिन से किसी प्रकार कम नहीं थी। जबकि हिटलर शुरू से अन्त तक मुटठी भंग मनोवैज्ञानिकों से घिरा रहा। लेकिन उस अन्तर पर क्यों आग्रह किया जाय? कदाचित् उनके बीच कोई अन्तर नहीं है सिवाय यह कि एक विवेक के युग में हुआ और दूसरा घृणा के युग में—और यही मारगर्भित अन्तर है।

यह देखना कठिन है कि कैसे हिटलर (एक "यक्ति हाने के नात) को सिवाय जनरोग के रोगी नाशक के और कुछ मान लिया जाय। दूसरी ओर नेपोलियन ने अपनी ऐतिहासिक क्रियाओं में अपने पीछे अपनी प्रत्यक्ष सफलताएँ छोड़ी। हिटलर से भिन्न उसने यूरोप को खडहरा में नहीं बरन उसे परिपूर्ण बनाकर छोड़ा। जहाँ उसकी बुद्धि ने उसके उद्देश्य का साथ नहीं दिया उसका स्वभाव ऐसा रहा कि वह मन या बेमन के इतिहास की रचनात्मक शक्तियों के साथ रहा। जर्मनी व इटली का एकीकरण, लोकतन्त्रात्मक उदारवाद का प्रसार इत्यादि हो सकता है कि उसकी इच्छाओं के अनुकूल न हुए हों। किन्तु अवश्य ही अधिक मात्रा में वे उसी के प्रति ऋणी हैं। एक प्रतीक या एक पौराणिक भाषा के रूप में उमन मानवीय याग्यताओं की सीमाओं को पीछे हटा दिया। नेपोलियन को जन्म देना मानव जाति के लिए एक कीमती वस्तु होगा किन्तु यदि वह उसे उत्पन्न करने से बिल्कुल रुक जाय तो यह पता चलेगा कि उसकी शक्तियाँ बिल्कुल सूख गईं। अपने नेपोलियनो का युद्ध व विजय से अधिक उत्तम प्रयोजनों की ओर धुमाने के उद्देश्य से पहले मानव जाति को ही युद्ध से बचना पड़ेगा। नेपोलियन को गलत समझने के लिए मानव जाति को बदलना चाहिए। (The Mind of Napoleon pp XXXVIII—XXXIX)

नेपोलियन फ्रांसीसी क्रांति के बासक के रूप में (Napoleon the Child of French Revolution)—नेपोलियन का विश्वास था कि वह क्रांति का बासक है। फ्रांसीसी क्रांति ने प्राचीन राजनीतिक व्यवस्था समाप्त करके और साथ स्वच्छा चारिता की नींव डालकर नेपोलियन को अपनी शक्ति जमाने का अवसर प्रदान किया। यदि क्रांति से एक असाधारण परिस्थिति पैदा न हो गई होती तो नेपोलियन जित्त व्यक्ति को सत्ता प्राप्त करने का अवसर ही न मिलता होता। प्रमुख सत्कार के रूप में शक्ति ग्रहण करके उसने १८०४ में जनता से अपना चुनाव सम्राट के रूप में स्वीकार करा लिया। नेपोलियन-संहिता (Code Napoleon) में उमन क्रांति के श्रेष्ठ सिद्धान्त और कानून सप्रहात किए। उसने ममानता के सिद्धान्त का मानकर

अपने सेवक तथा सेनापति, सबको सामाजिक स्थिति के आधार पर नहीं, बरन् योग्यता के आधार पर चुना। उसने फ्रांसीसी क्रांति के प्रभाव को अमरत्व प्रदान किया। आलोचक कहते हैं कि "यद्यपि नेपोलियन 'क्रांति-पुत्र' था, किन्तु वह ऐसा बालक था जिसने अपनी माता की हत्या कर दी थी।" क्रांति के जन्मदाताओं ने जिन 'स्वतंत्रता' और 'मित्रता' के सिद्धान्तों पर बल दिया, उनकी इसने उपेक्षा कर दी। फ्रांस और यूरोप की जनता की स्वतंत्रता सब प्रकार से कुचलकर उसने अपनी इच्छा को प्रजा पर थोपा। उसका अपना विचार था कि जनता स्वतंत्रता नहीं अपितु समानता चाहती है और इसी धारणा से उनमें लोगो को विचार व्यक्त करने की आजाही दी। समाचारपत्रों पर पूर्ण प्रतिबंध लगाये रखे और विरोध को प्रत्येक रूप तथा प्रकार से कुचल दिया गया। उसने जनता पर सैनिक अनुशासन लागू करने का प्रयत्न किया। नेपोलियन ने जो सम्पूर्ण प्रभुत्वशाली सरकार की स्थापना की, वह स्वयं जनता की प्रभुत्वपूर्णता की शून्यता थी। वह अन्तिम महान् स्वेच्छाचारी विधान-निर्माता था जिनमें उस स्वतंत्रताहीन युग में राज्य किया।

ग्राट और टैम्परले के मतानुसार, "नेपोलियन क्रांति का बालक था किन्तु उसने उस आन्दोलन के लक्ष्यों और सिद्धान्तों को, जिनसे इसका जन्म हुआ था, उल्टा कर दिया। यह बात इसकी बनाई संहिताओं से सिद्ध होती है। क्रांति ने केवल सामन्त-शाही के अवशेषों तथा राज्य पर धर्माचार्यों के नियन्त्रण को ही नहीं उखाड़ा अपितु उसने फ्रांस के विधि विशेषज्ञों की अभिलषित परिपाटियों पर भी चोट की। संहिताओं में समानता की प्राप्ति का प्रयास किया गया था। इनके अनुसार पैतृक सम्पत्ति का बँटवारा समान रूप से सारे बालकों में होना था। तलाक का प्रचलित करके इमन रोमन-कैथोलिक धर्म की धारणाओं पर चोट की थी। जन्म-मृत्यु और विवाह-सम्बन्धी सब प्रकार की शकायों और आक्षेपों को हटा दिया गया। इन संहिताओं में जो कुछ निहित किया गया, उसका स्वयं नेपोलियन अनुमोदन नहीं करता था। उनमें सब से मित्रता कर ली। उसे सत्ता प्यारी थी उसे समानता से विशेष प्रेम नहीं था।

पिचनेले के अनुसार 'नेपोलियन फ्रांसीसी क्रांति का बालक और उत्तराधिकारी था। जिसने यदि समानता को नष्ट भी किया तो भी उसने समानता की रक्षा अपने बनाये हुए कानूनों में इसे निहित करके की।' नेपोलियन ने कहा था कि 'मैंने अराजकता की खाई को पाट दिया है। मैंने क्रांति का परिमार्जन किया है।'

प्रो० मारकहम के अनुसार, 'यदि हम नेपोलियन द्वारा किये गये सुधारों का समीक्षण करें तो ये दृश्यक प्रतीत होंगे। ये एक प्रकार से क्रांति के सिद्धान्तों की स्थिरता प्रदान करते हैं तो दूसरी ओर परोक्ष रूप से बुरबोन राजशाही की परिपाटियों को पराक्ष रूप में प्रतिपादित करते हैं। इनसे क्रांति द्वारा कानूनी और प्रशासनिक समानता में हुए राष्ट्र के लाभों को स्थिरता और सुरक्षा प्राप्त हुई और योग्यता के लिए सुधबसरा के द्वार खोल दिये गये। इस दृष्टिकोण से नेपोलियन द्वारा

क्रान्ति का प्रतिनिधित्व करना युक्ति-युक्त है। उसके लिए और फ्रांस के जनमाधुर्य मजदूरों और किसानों के लिए क्रान्ति के सामाजिक और प्रशासनिक लक्ष्य मध्यम वर्ग को राजनीतिक स्वतंत्रता से कहीं अधिक मूल्यवान हैं। १७८६ की क्रान्ति एक नहीं अपितु सामाजिक प्रशासनिक और राजनीतिक, तीन प्रकार की क्रान्ति थी। १८०० में फ्रांस की जनता राजनीतिक क्रान्ति को छोड़कर सामाजिक और प्रशासनिक क्रान्ति को स्थिर करने के लिए उद्यत थी।

मिराबो की तरह नेपोलियन भी क्रान्ति को राजशाही से वंचित नहीं मानता था। मिराबो ने दरबार से गुप्त पत्र-व्यवहार में सम्राट से यह प्रार्थना की थी कि वह रिंगल्यु के कार्य को जारी रखे और सामन्तशाही का नाश करके शासन को आधुनिक परिपाटी पर चलाकर क्रान्ति का नतीजा बरे। नेपोलियन के विचार से सम्राट का विनाश मध्यमवर्ग के धमण्ड और लुई सातहवें की दुबलता के कारण हुआ। बुरबोन राजशाही की कुछ बाता का वह बहुत पसंद करता था। प्रमुख सलाहकार के पद पर आने के तुरंत बाद नेपोलियन कहा करता था कि प्राचीन शासन सबसे अधिक पूज्य और श्रेष्ठ था। क्रान्ति ने जालाभदायक नवीनताएँ हमें प्रदान की हैं उन्हें सुरक्षित रखते हुए वह प्राचीन व्यवस्था की अच्छाइयों को अपनायेगा जो क्रान्ति ने भूल से नष्ट कर दी हैं। १८०६ में वह कहा करता था क्लोविम से जन-सुरक्षा समिति तक के युग का मैं गले लगाता हूँ। बुरबोन वंश भवमर के अनुसार अपने को बना नहीं पाया और नेपोलियन को ही राजमुकुट गद्दी नाली से उठाना पड़ा। उसके विचार से, क्रान्ति द्वारा लाय गये परिवर्तन के आधार पर फ्रांस में चतुर्थ वर्ग के राज्य करने में कोई आपत्ति नहीं हो सकती।

जोसेफायन—जोसेफायन (Josephine) का ध्यान किए बिना नेपोलियन की बाई व्याख्या पूरा नहीं हो सकती। उसने १७६६ में उसके साथ विवाह किया। उस समय वह नेपोलियन से ६ वर्ष बड़ी थी। उसका पहला पति रोमपायर के पतन से कुछ दिनों पूर्व मारा जा चुका था। पिछले विवाह से उसके दो बच्चे थे और वधु उमर के पास जीवन निर्वाह का कोई साधन न था। फिर भी वह हताशाहित नहीं थी।

वह नेपोलियन के उमाह की गहनता व उमकी दृष्टि का तीक्ष्णता से अधिक प्रभावित थी। वह तुरंत उमम विवाह करने का तयार हो गई। वह नेपोलियन के आत्म विश्वास से भी प्रभावित थी। नेपोलियन ने उस इन गन्ना में सम्बाधित किया था क्या व (डायरक्टस) यह माचने हैं कि मुझे उठने के लिए उनका संरक्षण की आवश्यकता है? किमा तिन व बहुत प्रसन्न गग मति में उन्हें अनुमति दिया करूंगा। मेरी तलवार मेरे साथ है और इमा में मैं दूर तक जा सकता हूँ। अपनी आन्तरिक भावनाओं के विषय में जामपायन ने उमे यह चिन्ता था इम विवरहित विश्वास ने इम मात्रा तक इस प्रभावित किया है कि मेरी समझ में इस व्यक्ति को किसी भी समय कुछ हो सकता है और उसकी विचार शक्ति ऐसी आमूम होती है कि कोई नहीं कह सकता कि किस समय वह क्या कर बैठे।

नेपोलियन के जोसेफायन के साथ सबसे अच्छे दिन बट। वस्तुतः वही एक ऐसी स्त्री थी जिसकी उसे चिन्ता हुई। यह स्थान श्रीमती बेलेवस्का का भी न मिल सका, जिसे उसका पुत्र हुआ। यह ठीक ही कहा जाता है कि नेपोलियन ने यूराप जीता और उसे जोसेफायन के कदमों पर रख दिया। यदि जोसेफायन न होता तो नेपोलियन भी न होता। उसी ने उसे प्रेरणा दी। वह उस अपन क्रोध से प्रसन्न कर सकती थी व अपन शत्रुओं से हिला सकती थी। अपना परिवार त्याग कर उसने उसी के पाम शरण ले रखी थी। वही ससार में ऐसी वस्तु थी जिसे वह अपन मस्तिष्क की बात बता सकता था और वह उसी के साथ अपना हृदय खोल कर रख सकता था।

दुभाग्यवश, नेपोलियन के परिवार के सारे सदस्य उसके विघटन हो गए। नेपोलियन ने भी भूलतावश यह विचार किया कि किसी अन्य राजकुमारी के साथ विवाह कर और उससे उत्पन्न पुत्र को अपना उत्तराधिकारी बनावे। इसने सकेट उत्पन्न कर दिया और अन्ततः १८०६ में जोसेफायन का परित्याग कर दिया गया। उसके शीघ्र बाद उसने टूलैरेस (Tuileries) छोड़ दिया व मेलमर्सा (Malmaison) में रहने लगी। वही वह एकांत में मर गई। १८१५ में वाटरलू की लड़ाई के बाद जब नेपोलियन ने पेरिस को आखिरी बार छोड़ा तो वह जोसेफायन की प्रेतात्मा दग्ध मेलमर्सा गया।

यह ठीक ही कहा गया है कि उसने अपने जीवन में एक महान भूल की जब कि उसने जोसेफायन को तलाक दिया। जब उसने ऐसा किया तो उसने अपना आधा जीवन काट दिया और उसका अधिक उत्तम आधा भाग फेंक दिया।

फ्रांसीसी क्रान्ति के परिणाम (Results of the French Revolution)—

(१) फ्रांसीसी क्रान्ति कोई स्थानीय घटना नहीं थी। इसने फ्रांस की जनता का ही नहीं, अपितु यूरोप और सारे विश्व की जनता पर गहरा प्रभावित किया। फ्रांसीसी क्रान्ति किन्हीं विशेष सिद्धांतों के समर्थन में हुई थी और वे सिद्धान्त स्वतंत्रता समानता और मित्रता थे। फ्रांस का उदाहरण पहले यूरोप का तथा वहाँ से सारे विश्व की प्रेरणा बना। इसकी विचारधारा यूरोप की राजनीति में सारी उन्नीसवीं शताब्दी तथा इसके बाद भी अतः प्रोत्त रही।

(२) राष्ट्रीय सभा द्वारा 'मानव-अधिकारों की घोषणा' (Declaration of Rights of Man) ने इस तथ्य पर जोर दिया कि सर्वाधिकार-सम्पन्नता जनता में निहित है और कानून केवल जनसाधारण की इच्छा की अभिव्यक्ति है। शासन-यंत्र को इस प्रकार चलाया जाय कि जनता का अधिकधिक हित हो। यह मत है कि इस की कथरीन महान् प्रशा के फ्रेडरिक महान्, मास्ट्रिघ्ट के जोसेफ द्वितीय ने, फ्रांसीसी क्रान्ति से पहले ही जनता की हानत को सुधारने की आवश्यकता अनुभव की, किन्तु यह दृष्टिकोण समस्त यूरोप की सरकारों का नहीं था। फ्रांसीसी क्रान्ति का दावा था कि जनता को अपने आप ही स्वयं पर राज्य करना चाहिए और

शासन केवल जनता के लिए ही नहीं अपितु जनता द्वारा भी होना चाहिए। यह मायता दी गई कि सर्वाधिकार सम्पन्नता एक सम्पत्ति नहीं है जिससे उमका स्वामी लाभ उठाये अपितु वह एक 'माय पचायत' है जिसकी स्थापना कतिपय कत्तव्यों का पूरा करने के लिए हुई है। यह सत्य है कि इस सिद्धांत के विरुद्ध आरम्भ में प्रतिक्रिया हुई किन्तु अन्त में यह सिद्धांत यूरोप के सारे देशों में दबता स जड़ पकड़ गया। विरोध का काल १८१५ से १८४८ तक चला जिस समय मटरनिक (Metternich) आस्ट्रिया में सर्वोसर्वा था। मध्यम वर्ग की जनता ने अपनी सर्वाधिकार सम्पन्नता की स्थापना और मायता स्थापित करने में बड़ा महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

(३) फ्रांसीसी क्रांति का दावा था कि प्रत्येक मनुष्य कानून के समक्ष बराबर है। जन्म और धन पर आधारित विशेषाधिकारों को कोई मायता नहीं दी गई थी। परिणाम यह हुआ कि मुजारेदारी सामन्तशाही प्रतिबंध तथा व्यापारिक संधों द्वारा स्थापित सारे प्रतिबंध समाप्त कर दिए गए। धार्मिक सहिष्णुता का आश्वासन दिया गया। समाचार पत्रों की स्वतंत्रता स्थापित हुई तथा प्रत्येक व्यक्ति का शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार, माय ठहराया गया। १७९२ के 'स्त्रियों के अधिकारों की मायता' (Vindication of the Rights of Women) के प्रस्ताव द्वारा मेरी वुलस्टोन क्राफ्ट (Mary Wollstonecraft) ने मांग की कि स्त्रियों को पुरुषों के बराबर अधिकार प्राप्त हों।

(४) फ्रांस सारी मानवता का प्रतिनिधि बन गया और स्वतंत्रता की विचार-धारा सब सुधारकों तथा क्रांतिकारियों का मूलमंत्र बन गया। स्वतंत्रता विश्व की परिपाटी बन गई। केवल व्यक्तिगत स्वतंत्रता ही नहीं अपितु राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए भी प्रयत्न किया गया। सबसाधारण की मांग थी कि भ्राम चुनावों द्वारा 'यून्वधिक अधिकार वाले विधानमण्डल चुने जाने चाहिए। इस क्षेत्र में इंग्लैंड ने नेतृत्व किया और फ्रांस ने उसका अनुसरण किया।

(५) फ्रांसीसी क्रांति ने राष्ट्रीयता के सिद्धांत का भी दावा किया। फ्रांसीसी क्रांति से पूर्व सामन्तों के प्रति स्वामी भक्ति और राजा के प्रति जनता के प्रेम ने देश भक्ति का स्थान लिया हुआ था। फ्रांसीसी क्रांति ने फ्रांस के राज्य को फ्रांस राष्ट्र में बदल दिया। १७९१ में सुई सोलहवें के देश से भागने के प्रयत्न से सिद्ध होता है कि राजा तथा जनता के हित भिन्न भिन्न थे। ११ जून १७९२ का पिनभूमि पर भाषित है की घोषणा से लोगों में राष्ट्रीयता की भावना ने जाश मारा और फ्रांस को अपने 'अनुभूतों से टक्कर लेने की प्रेरणा दी। यूरोप के अन्य देशों पर फ्रांस के आक्रमण के कारण वहाँ राष्ट्रीयता की भावना जाग उठी। इटली पुनर्गठन स्पेन प्रशिया, रूस और आस्ट्रिया में भी यह भावना जागी। स्पेन और पुतगाल के निवासियों में राष्ट्रीयता की भावना जागने से वहाँ की जनता नेपोलियन की सेनाओं का प्रायद्वीप से निवृत्तन में समर्थ हुई। यही भावना थी जिसके कारण १८१२ में रूस न 'जली धरती' (scorched earth) की नीति अपनाई। इस भावना के कारण पुतगाल को पुनर्जीवन मिला। स्पेन ने यह सिद्ध कर दिया कि अनुशासनशील सेनाओं से

सारी जनता वही अधिक बलवान है। इसी भावना ने राष्ट्रीय सम्मेलन के दिनों में फ्रांस की सेना को संगठित राष्ट्रों को मार भगाने के योग्य बनाया। 'सशस्त्र राष्ट्र' की विचारधारा विश्व के लिए एक महान देन थी।

६ यह सच है १८१५ के विमाना-सम्मेलन के पश्चात् राष्ट्रीयता के विचार के विरुद्ध प्रतिक्रिया हुई और ट्रॉप्पू (Troppau) की नीति द्वारा इसका दमन करने का प्रयत्न किया गया, किन्तु अन्त में राष्ट्रीयता के सिद्धान्त का समस्त यूरोप में बोलबाला हुआ। इसी सिद्धान्त के कारण इटली और जर्मनी ने अपनी स्वतंत्रता तथा पुनर्गठन प्राप्त किया। यही बात बेल्जियम, सरबिया, ग्रीस, रूमानिया और बल्गारिया के साथ हुई। इसी सिद्धान्त ने रूस को खूब तग किया, जब पोलण्डवासियों ने अपनी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया। १८४८-४९ का वासूथ (Kossuth) के नेतृत्व में हुआ हंगरी का विद्रोह भी राष्ट्रीयता की शक्ति के कारण ही हुआ।

(७) फ्रांस की क्रान्ति ने व्यक्तिवाद का समर्थन कर विचित्र-विचारवाद (Romanticism), परम्परा के उल्लंघन और केवल युद्ध भावना के आधार पर मानवीय जीवन की स्थापना में सहायता दी। फ्रांस की क्रान्ति का प्रभाव विक्टर ह्यूगो के Les Misérables साउथे के Joan of Arc, बड सवय के Prelude, शैले क Mask of Anarchy, गेटे के Faust और कोलरिज की प्रारम्भिक रचनाओं में देख पड़ता है।

(८) उम सन्तोप के कारण जिससे पोप ने उन अपमानों को सहन किया जिनकी उस पर नेपालियन ने बोझों की, रोमन कैथोलिक चर्च की शक्ति भी मजबूत हो गई। शेटोब्रियाण्ड (Chateaubriand) ने नास्तिकवाद के विरुद्ध ईसाई मत का समर्थन किया और मेस्तर (Maister) ने पोप की सत्ता की रक्षा की।

९ नेपोलियन द्वारा किये गये अत्याचारों को जिस सहनशीलता से पोप ने सहन किया, उससे रोमन कैथोलिक चर्च का प्रभाव और भी बढ़ गया। शेटोब्रियाण्ड ने ईसाई धर्म का, नास्तिकवाद के विरुद्ध, समर्थन किया तथा मेस्टर ने पोप के अधिकारों का समर्थन किया।

(१०) फ्रांसीसी क्रान्ति का एक और प्रभाव भी पड़ा। आक्रमणों से ही नहीं, सरकार द्वारा सम्पत्ति को जब्त करने से सम्पत्ति के अधिकार की पवित्रता भी जाती रही। परिणामतः प्रजातन्त्रवाद एक काल्पनिक सिद्धान्त ही नहीं रहा, अपितु एक राजनीतिक कार्यक्रम भी बन गया। इस प्रकार फ्रांसीसी क्रान्ति की विचारधारा विश्व के कानकाने में फल गई और विश्व भर में उसे भावना प्राप्त हुई। २६ जनवरी, १९५० में लॉयू हुए भारतीय सविधान की प्रस्तावना का मसविदा बनाने वालों के मस्तिष्कों पर इस विचारधारा का प्रभाव देखा जा सकता है।

(११) क्रोपोटकिन के विचार में, 'फ्रांस की क्रान्ति ने फ्रांस को मजबूत व समृद्धिदायी बना दिया। इससे पहले उसके बहुत से भागों में अभाव चल रहा था,

लेकिन त्रान्ति के फल के कारण फ्रांस १७८६ की अपेक्षा अब जीवन का जटरी वस्तुओं को बहुत मात्रा में उत्पन्न करने लगा। १७६२ की अपेक्षा फ्रांस में कमा भी पहले इतने उत्साह के साथ कृषि-काय नहीं हो सका। उस समय कपका न अपने स्वामियों, अधिकारियों व धर्माचार्यों से छीन कर अपनी भूमियाँ पर स्वयं कृषि काय किया। उन्होंने यह चिल्लाकर *Allons Prusse* ¹ *Allons Autriche* अपने बलों को बढ़ाया। जितना काम खेतों का साफ करने का त्रान्ति के दिनों में हुआ उतना पहले कभी भी न हो पाया। १७६४ में पहली अच्छी फसल हुई जिनमें कम से कम गाँवों में, दो तिहाई फ्रांस को सुख-चैन दिया। वरना इस समय तक नारा में खाद्याभाव का प्रश्न बना रहता था। त्रान्ति के उन चार वर्षों में एक नये फ़ार्म का जन्म हुआ था। शताब्दियाँ में सबसे प्रथम बार कृषकों ने भरपेट खाना पाया अपनी पीठ सीधी की ओर बोलने का साहस किया। एक नए राष्ट्र का जन्म हुआ। इसी नए जन्म के कारण फ्रांस अपने गणतंत्र और नेपोलियन के दिनों में अपने युद्धों का संचालन करने योग्य हो सका और अपनी त्रान्ति के सिद्धान्तों को इंग्लैंड इटली जर्मनी हॉलैंड, स्विट्जरलैंड स्पेन बेल्जियम और रूस की सीमाओं तक भेज सका। जब ये सब लड़ाइयाँ समाप्त हो गईं और लोगों को यह आशंका हुई कि १८१५ में फ्रांस में सफट पड़ जायेगा और उसकी भूमि ऊसर हो जायेगी तो यह पता चला कि अब फ्रांस लुई सोलहवें की अपेक्षा वही अधिक समृद्धिशीली था। त्रान्ति द्वारा पुनः उत्पन्न की हुई शक्ति इतनी बढ़ी थी कि कुछ ही वर्षों में फ्रांस सुखी कपका का देण बन गया। यहाँ शत्रुओं ने पाया कि सारा खून जो उसमें बहाया और सारी हानियाँ जो उसमें उठाई उनके बाद भी फ्रांस अपनी उत्पादकता की दृष्टि से यूरोप का सबसे धनी देण था। उसका धन भारतीय द्वीपों या विदेशों व्यापार पर आश्रित नहीं था वरन् वह उसी की भूमि से उपजा था उसी के भूमि के प्रति प्रेम का फल था और उसके अपने उद्योग व अपनी कुशलता का पुरस्कार था।

नेपोलियन यह भी सचेत करता है कि फ्रांस की त्रान्ति न कपक-दासता (Serfdom) व सर्वोच्चवाद (Absolutism) का अन्त किया। व्यक्तिगत व व्यक्तिगत स्वतंत्रताएँ दी गईं जिनका स्वामियों के कपका तथा निरकुण राजा की प्रजा न कभी स्वयं भी न देता था। यह दो सफनताएँ उनीसवीं शताब्दी के मुख्य काय का प्रतिनिधित्व करती हैं जो १७८१ में फ्रांस में शुरू हुई और अगला शताब्दी में यूरोप के ऊपर छा गया। फ्रांस के कपका द्वारा शुरू किये गये मताधिकार के काय को नेपोलियन की मरणाघात न इटली जर्मनी स्पेन स्विट्जरलैंड और आस्ट्रिया तक में चालू रखा। यूरोप में कपक-दासता का उन्मूलन उनीसवीं शताब्दी के प्रथमाध के भीतर पूरा हो जाता यदि १७६४ में अराजकतावादियाँ कार्बोलियस व जेनेविन्स के मतक शरीरों के ऊपर मत्ता पाने वाला फ्रांस का धनिक वर्ग त्रान्तिकारी भावना का नियंत्रित न करता राजतंत्र को फिर से स्थापित न करता और फ्रांस का नेपोलियन के हाथों में न देता। नेपोलियन न कुलनीतंत्र का उठाना शुरू किया लेकिन इसका होत हुए भी कपक-दासता की सस्या पहले ही घातक घोट ला चुकी थी। प्रतिश्रिया

के अस्थायी विजय के होत हुए भी स्पन व इटली में इनका उन्मूलन हो चुका था। १८११ में इमे जर्मनी में दबा दिया गया और वहाँ यह १८४८ में निश्चित रूप में समाप्त हो गई। १८६१ में रूस अपने कृषकों का मुक्त करन पर विवश हो गया और १८७८ के सग्राम में बाल्कन प्रायद्वीप में कृषकदामतावाद का अन्त किया। इस सर्वोच्चमत्तावाद के उन्मूलन ने मारे यूरोप की यात्रा करन में लगभग १०० वर्ष लिये। १६४८ में इंग्लैंड में घायल हाकर १७८९ में फ्रांस में पराम्त होकर राजसत्ता जा दबा गिन पर आश्रित थी वह यूरोप के सारे भाग से अदृश्य हो गई। बानून की दृष्टि में समानता व जनतन्त्रीय प्रणामन यूरोप के सारे भागों में स्थापित हुए।

त्रापोटविन ने बताया है कि साम्यवादी सिद्धान्तों को फ्रांस की क्रांति में कुछ बसीयत भी मिली। मारी फ्रांस की क्रांति के समय साम्यवादी विचार स्पष्ट रूप में उपस्थित रहा। गिराडिन्स (Girondins) के पतन के बाद इमी दिगा में अग्रगणित प्रयत्न किए गए। एक ओर L'Ange की ओर से फोरियरवाद की प्रत्यक्ष रेखा आई और दूसरी ओर से सेलियर की। वेबुफ उन विचारों का सीधा उत्तराधिकारी हुए जिन्होंने १७९३ में जनता को जागृत कर दिया। १७९३ के प्रत्यक्ष Enrages और १७९५ वेबुफ पहलू के एक ओर १८६६-७८ की अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक सभ्या के बीच प्रत्यक्ष रेखा पड़ी हुई थी। गणतंत्र के पहले दो वर्षों में लोकप्रिय साम्यवाद आधुनिक समाजवाद की अपेक्षा अधिक गहरी व्याख्या के आधीन रहा। केवल उत्पादन ही नहीं बरन् जीवन की आवश्यकताओं के उपयोग तक में साम्यवाद था। यह समुदायीकरण व राष्ट्रीयकरण ही था जिसे उपभाग कहा जाने लगा। रोम्सपायन ने घोषित किया कि केवल खाद्य-पदार्थों की अनावश्यक मात्रा ही व्यापार की वस्तु बन सकती है किन्तु अनिवाप वस्तुओं को प्राप्त हागी। १७९३ के साम्यवाद जिम्मे सब को उत्पादन के वास्तव भूमि व जीवन निर्वाह के अधिकार का समायन किया, जिसे यह अस्वीकार किया कि कोई भी व्यक्ति अपने या अपने परिवार के आधीन अपनी ही भूमि रख सकता है जितनी वह कृषि के हतु प्रयाग में ला सके तथा सारे व्यापार व उद्योग का समुदायीकरण करन के विषय में उसके प्रयोजन में हमारे समय के मारे सुनतम कायक्रमा या ऐसे कायक्रमा की अधिकतम प्रस्तावनाओं की अग्रगण्य सीधे वस्तुओं के हृदयों में स्थान ग्रहण किया। वस्तुतः फ्रांस की क्रांति आधुनिक साम्यवादी अराजकतावादी व समाजवादी विचारों की उत्पत्ति का स्रोत थी। (The Great French Revolution pp 573 81)

प्रा० गुडविन के मतानुसार हमारे युग में १७८९ की फ्रांस की क्रांति १९१७ की रूसी क्रांति की छाया में दब गई है और इसका अन्तर्गत नाजी और फासिस्ट क्रांतियाँ भी अस्थायी रूप से धुँधले पड़ गये थे। फ्रांस के दर्जा आलोचना ने क्रांति द्वारा समाज और शासन से अधिक व्यक्ति का महत्त्व देने पर आश्रित किया है, किन्तु विद्वानों की समीक्षाओं ने सबदा यह प्रश्न पूछा है कि क्या यह सब एक त्रुटि थी ' क्या स्वतंत्रता और समानता प्राप्त करने के मुद्दे में फ्रांस की बलि ज्यादा थी ' इन विषयों में इतिहासकार १७८९ की क्रांति का विरलेपण अटारहवा गतांती में हुए

अनेक विप्लवों से तुलना करके करते हैं तथा इस तथ्य पर विशेष बल देते हैं कि इस क्रांति का आधुनिक प्रजातंत्र की स्थापना में इतना योगदान था कि इसने सिद्धान्तों को निर्धारित किया और जनसाधारण की सर्वाधिकार-सम्पन्नता को स्पष्ट कर दिया। आधुनिक तानाशाही का स्रोत भी किसी सीमा तक फ्रांस की क्रांति को ही माना जा सकता है क्योंकि १७९३ की जकोबिन तानाशाही और क्रांतिकारी सरकार, अत्यादी व्यवस्था थी जिसके आगे फ्रांस को गृह तथा विदेशी युद्ध अपनी राष्ट्रीयता तथा उदार सिद्धान्तों की रक्षा के लिए छोड़े समय तक झुकना पड़ा था।

Suggested Readings

Butterfield H	<i>The Peace Tactics of Napoleon (1806-8) 1929</i>
Fisher H A L	: <i>Napoleon 1913</i>
Fournier	<i>Napoleon</i>
Geyl P	<i>Napoleon—For and Against 1949</i>
Gooch G P	<i>Germany and the French Revolution 1948</i>
Hales E E Y	<i>Napoleon and the Pope</i>
Hassall	<i>Life of Napoleon</i>
Hazen	<i>The French Revolution and Napoleon</i>
Heckscher E F	<i>The Continental System An Economic Interpretation 1922</i>
Herold J C	<i>The Mind of Napoleon 1955</i>
Johnston R M	<i>The Corsican</i>
Langsam W C	<i>The Napoleonic Wars and German Nationalism in Austria 1930</i>
Ludwig	<i>Napoleon</i>
Markham F M H	<i>Napoleon and the Awakening of Europe 1854</i>
Rose J H	<i>The Personality of Napoleon 1912</i>
Rose J H	<i>Life of Napoleon</i>
Rose J H	: <i>Napoleonic Studies</i>
Rosebery Lord	<i>Napoleon the Last Phase</i>
Seeley	<i>Napoleon</i>
Sloane	<i>Napoleon Bonaparte</i>
Thompson J M	<i>Napoleon Bonaparte His Rise and Fall 1953</i>
Thomson	<i>Europe Since Napoleon</i>

विश्रान्त-व्यवस्था (१८१५)

(Vienna Settlement, 1815)

नेपालियन न यूरोप क मानचित्र का बुरी तरह नष्ट झट्ट कर दिया था। उसन अपना मुविधा के लिए एक देश के प्रदेशों का नाव कर दूसर दश स जाड दिया था। परंतु जब १८१४ मे उस परास्त करके ऐलवा द्वीप म भेज दिया गया ता यूरोप के शासकों क सम्मुख यह समस्या खडी हुई कि यूरोप क मानचित्र का किस प्रकार पुनर्निमाण किया जाय। क्याकि नेपालियन की पराजय म मैटरनिक न बहा महत्त्वपूर्ण भाग लिया था, विश्रान्त का विचार विमश और यूरोप का व्यवस्था कन निणय करने क लिए धुना गया। बटुत सु राजा, विदेश-मत्री और शासक विश्रान्त म टक्कटे हुए और १८१४-१५ के शीतकाल मे विचार करत रह। इन विजय प्राप्त करन वाता म पार्लैण्ट और सक्साने के भाग्य निणय के विषय म बहा मतभेद था। अन म एक समझौता हुआ जिस पर १८१५ की वाटरलू की लढाई के कुछ ही दिन पहन हस्ताक्षर किये गय।

(१) विश्रान्त-व्यवस्था तीन सिद्धांतों पर आधारित थी—पुन-स्थापन, चाय युक्तता और क्षतिपूर्ति। पुन स्थापन के सिद्धांत का आशय था कि क्यासम्भव फ्रांस का शान्ति तथा नपालियन क उदय स पहले जिस देश की जो सीमा थी और जा राज-वंग शासन स्थापित थे, उनका पुन-स्थापन किया जाय। पुन-स्थापन का सिद्धान्त चाययुक्तता स सम्बाधत था, जिसस फ्रांस का कूटनीतिन टल्लेरेण्ड (Talleyrand) फ्रांस के क्षत्र का छीनन से दवान के लिए तथा अपन पराजित दश का यूरोप क विचार विमश में भाग लेन चाग्य बनान के लिए प्रयुक्त कर रहा था। विश्रान्त-व्यवस्था न स्पन, मिसली और नपल्स मे बुरबान वंश की पुन-स्थापना की। आरेंज वंग (House of Orange) का हार्लैण्ड म स्थापित किया गया। मघाय वंग का पीडमोण्ट और सार्दानिया में पुन-स्थापित किया गया। इटली मे सार राज्या सहिन पाप का पुन-स्थापित किया गया। अनक जमन जागीरदारों की जागीरें, जा रूहायन मय' म मित्रा की गई थी वापस कर दी गई। स्विस-संघ की पुन-स्थापना हुई। टायगल आन्ट्रिया का वापस कर दिया गया। आन्ट्रियन नीडरलैण्ड पर आन्ट्रिया का अधिकार माना गया, किंतु उस इन प्रदेश का किसी अन्य प्रदेश स बदन लेन की अनुमति द दी गई।

(२) नेपालियन क मुट्टा म ब्रिटन ने डच उपनिवेश बना, कपकोंतानी, गणिनी अफीका तथा गायना छीन लिय थ। ये प्रदेश ब्रिटेन के पाम ही रहन लिये

गए। किंतु हालण्ड की क्षतिपूर्ति तथा फ्रान्स की उत्तरी सीमा पर एक शक्तिशाली देश बनाने के विचार में हालण्ड को आस्ट्रियन नीदरलण्डज दे दिए गए। हालण्ड का राजा को संयुक्त नीदरलण्डज का राजा बना दिया गया। नीदरलण्डज की क्षतिपूर्ति के रूप में आस्ट्रिया को इटली में लोमबार्डो और विनिगिया दे दिए गए। दुम्बन परमा और मोन्ना के गिहासना पर हैम्बुर्ग वग के राजाओं का बटा दिया गया। स्वीडन से पामेरेनिया और फिनलण्ड छीन कर क्रमशः प्रशिया और रूस का दे दिये गये। स्वीडन की क्षतिपूर्ति डेन्मार्क से नार्वे लेकर स्वीडन को देने से हुई। डेन्मार्क को नेपोलियन का बहुत समय तक साथ देने का कारण दण्ड दिया गया।

(३) प्रशिया को भी बहुत लाभ हुआ। नेपोलियन द्वारा उमक जमना के छीने हुए प्रदेश उसे पुन प्राप्त हुए। उसे स्वीडन के अधिभूत पामेरेनिया सम्मान का २/५वां भाग मारा दम्बफेलिया और बहुत सा रहायनलण्ड प्राप्त हुआ। इन सब प्रदेशों को प्रशिया का उन का यह भी आशय था कि फ्रांस के विरुद्ध प्रशिया का मुख्य राक्ष बनाया जाय। इस विस्तार का परिणाम यह हुआ कि प्रशिया जमनी का नेता बन गया। इसमें उमक खनिज पदार्थों के स्रोत बढ़ गए जिनसे उसे एक विशाल औद्योगिक देश बनने में सहायता प्राप्त हुई। पोलण्ड के प्रदेश को रूस को लौटा देने के कारण प्रशिया विगुज जनन देश बन गया।

(४) शक्ति का मतुलन बनाये रखने तथा फ्रांस के चारों ओर घेरा बनाने के उद्देश्य से यह नियम हुआ कि मारडीनिया के राज्य का विस्तार किया जाय और इसे शक्तिशाली बनाया जाय। इस राज्य का सवाय और पीडमाण्ट लौटा दिए गए तथा जिनोग्रा भी दिया गया।

(५) जमनी के विषय में यह नियम किया गया कि फ्रांस की क्रांति के पहले के इसके छोटे छोटे राज्य न लौटाये जाय। १८०६ में नेपोलियन ने पवित्र रामन साम्राज्य का नाश कर दिया था अतः इस पुन बनाने का प्रयत्न नहीं किया गया। यह साथ ही कि स्पर्द्धात्मक व्यक्तियों ने एक शक्ति के अन्तर्गत जमनी का संगठित करने का समयन किया। किंतु फ्रांसीसी विनियम द्वितीय ने हमम बोर्ड रचि नहा गिवाई तथा दोग जनना के नागारजगारा का मटरनिक न आन्वासन दिलाया था कि उनका सत्त अयोग रखा जाएगा। प्रशिया आम्शिया और छोटी छोटी जमन रियासतों के राजाओं में म किया न भी संगठित जमनी का बनाने में उगा नहा गिनाया और इस प्रकार जमनी का संगठित करने का अवसर जाता रहा। १८ राज्या का एक हीता जमन मध बनाया गया। प्रेक्फर म एक समद बनी जिसमें विभिन्न राज्या में प्रतिनिधि भान थे। इस समद का अध्यक्षता आम्शिया का चांगलर करता था। इस समद में ६ प्रतिनिधि भेजने का अधिकार आम्शिया का किया गया। सारे राज्या का इनमें प्रतिनिधित्व नहीं दिया गया। मत्स्या का समूह मध अथवा मध के क्रिया भी मत्स्या के विरुद्ध क्रिया भा विन्ना शक्ति से सम्बन्ध स्थापित करने की मनाया थी। यद्यपि औपचारिक रूप में यूरोप के मार देश न जमन-मध का मायना था या किन्तु वास्तव में आम्शिया का राजनातिक क्षेत्र में बातमता था।

(६) किननल का हस्त क पास रहने दिया गया क्योंकि उसे उचने स्वीडन से जीजा था। तुकों से जीजा हुआ दशाजिविया नी द दिया गया। उस ग्राउ डची आफ वारसा (Grand Duchy of Warsaw) का भी दहा भाग प्राप्त हुआ।

इंग्लंड ने उत्तरी समुद्र में हर्निंगैट अधमहानागर न मान्डा औ इयो निन (Ionian) द्वीपसमूह, दक्षिण अट्रीका म कप का उपनिवेश तथा और अन्य द्वीपों पर अधिकार जमा लिया।

आस्ट्रिया-हंगरी का अपन पार्लैट के प्रदेश मिले। क्योंकि हर्निंगैट को बन्डियम आस्ट्रिया हंगरी से लेकर लिया गया अतः उसके एवज म आस्ट्रिया-हंगरी का सम्बार्डि और निनिगिया दिय गए। उस एड्रियाटिक क पूर्वी किनार का स्लेरियन प्रान्त भी मिला। नपोलियन की पत्नी मरिया तुर्झा को जा आस्ट्रिया की राजकुमारी थी पत्नी की रियासत दी ग। आस्ट्रिया क राजवश स सम्बन्धित राजकुमारा का माडिना औ दुम्बन के सिहासना पर आसीन किया गया।

राजसुम्नता के नाम पर फ्रांस का दश लौटा दिया किंतु उसे नीदरलण्डज, प्रुशिया और सारडीनिया के धरे म डाल दिया गया। यूरोप का नन्व फ्रान क हाथ स आस्ट्रिया के हाथों में चला गया। आस्ट्रिया के राज्य विन्नाग ने उस यूरोप की एक मरान् शक्ति बना दिया। उसका जमनी और इटनी दाना पर प्रनुत्व छा गया। वरुन्द से अधिक जमन बन गया। यद्यपि आस्ट्रिया के राजा से पवित्र रामन सम्राट का पत् छिन गया तथापि आस्ट्रिया न जमनी पर पूण अधिकार प्राप्त क लिया।

आलोचना (Criticisim)—प्रा० फ्राइफ (Prof Fyffe) के मतानुसार दो युगों के शक्ति-काल में हुई विमाना-व्यवस्था इतिहास म एक महत्वपूर्ण घटना है। इसम कई सन्ट नहीं कि १८१५ की विमाना-व्यवस्था १६१६-२० का फ्रान्स-व्यवस्थापन जितना बुरी नहीं थी। केसलरे के प्रभाव के कारण १८१५ की व्यवस्था प्रति प्राधान्य नहीं थी। उसन विमाना म उपस्थित कूटनीतिनो को ठीक ही कहा था कि 'घाप लाग यहाँ युद्ध की छूट बाटने के लिए नहीं अपितु एक इस प्रकार की व्यवस्था स्थापित करन कलिए आए हैं जिससे यूरोप में शांति की स्थापना हो सके। समझौते के सिद्धान्त का जहाँ भी सम्भव हो सका प्रयोग किया गया, परिणामत फ्रांस का दण्ड या ताडना नहीं दी गई। १६१६ म जमनी को विनियम द्वितीय की मद नूतों और भुटिया का उत्तरदायी ठहराया गया और उसका राज्य उपनिवेश तथा धन आदि छीन लिय गए और उसे कगोड़ों डालर की युद्ध-क्षति की प्रति करने को कहा गया ता स्पष्टतः ताकी मामध्य से परे की चीज थी। इस बात को अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि जिस अत्याचारपूर्ण आक्रमण ने यूरोप की व्यवस्था को बुरी तरह बिगाड दिया था उसके लिए नेपोलियन पूणरूप से उत्तरदायी था किन्तु फ्रांस का उसके दुष्कर्मों का दोषी नहीं माना गया। उस समय भी, जब १८१५ म नेपोलियन वाटरलू के युद्ध में दूसरी बार परास्त हुआ, फ्रान्स पर एक बहुत

नरम संधि लागू की गई। उसकी सीमा को १७६१ की सीमा माना गया। १७८६ में जब क्रांति हुई तब फ्रांस की जो सीमा थी, उसे नहीं माना गया। विभिन्न देशों से नेपालियन द्वारा लूटे गए कला भण्डार को फ्रांस को लौटाना पड़ा। उसे केवल ७० करोड़ फ्रैंक ही युद्ध-भत्ते के रूप में देने पड़े। सयुक्त राष्ट्रों की सेना को फ्रांस में ठहरने की शर्तों को १८१८ में क्षतिपूर्ति कर देने के परिणाम में घटा दिया गया। फ्रांस के प्रति इस प्रकार के दयालु व्यवहार का यह परिणाम हुआ कि ६० वर्ष (१८१५-१९१४) तक यूरोप में कोई बड़ा युद्ध नहीं हुआ।

सीमन के अनुसार केवल विघ्नाना-व्यवस्था को ही हम एक शताब्दी तक युद्ध न होने देने का कारण नहीं मान सकते। इसकी बजाय यह सम्भव है कि इस व्यवस्था की किसी भी धारा में बड़ी शक्तियों में परस्पर युद्ध होने के बीज नहीं थे और इस कारण इसे युट्रिक्ट (Utrecht) और वरमाई की संधियों से यूरोप को अच्छी गति वाली संधि माना जा सकता है। युट्रिक्ट की संधि हेल्सिंग बर्ग की छाती में आग की तरह जलती रही तथा इसकी औपनिवेशिक तथा व्यापारिक शक्तों ब्रिटेन के लिए बालात्तर में फ्रांस और स्पेन पर आक्रमण करने के लिए साहस प्रदान करती थी। वरमाई की संधि से जर्मनी के घुटन टिका दिये गये। इस संधि में आवाजहीन कृत्रिम अधिकारवाले प्रजातन्त्रात्मक नवीन राज्य बनाये प्राचीन प्रजातन्त्र की समस्याओं को समाप्त करके नई समस्याएँ खड़ी कर दीं इटली को निराशा करके फ्रांस को श्रद्धावा दिया तथा बहुसंख्यक जनसाधारण की युक्तिहीन गतिविधियों को अजीब करके एक ऐसी व्यवस्था उत्पन्न कर दी जो विघ्नाना-व्यवस्था के बहुसंख्यक जनसाधारण को महत्त्व न देने के कारण इससे दुःखान्त रूप में भिन्न प्रतीत होती है। विघ्नाना में प्रजातन्त्रवाद और राष्ट्रवाद को महत्त्व न देने से युद्ध नहीं हुआ। १८१५ में उन लोगों ने यह ठीक ही सोचा कि क्रांति द्वारा युद्ध उत्पन्न होने में पड़ेने युद्ध होने हैं जिनमें क्रांतियों को प्रोत्साहन मिलता है। उन्हीं देशों को कि गति और युद्ध के मामले में बड़ी गतिविधियाँ ही निपटा सकती हैं। इसलिए यह मत सत्य है कि विघ्नाना-व्यवस्था में कोई ऐसी धारा ही नहीं थी जिसमें बड़ी गतिविधियों का युद्ध का कोई बहाना मिलता इस व्यवस्था का सम्पूर्ण और पापपूर्ण हाना हा इसका गति यह है। (From Vienna to Versailles pp 89)

(१) यह नहीं कहा जा सकता कि विघ्नाना-व्यवस्था एक आदर्श समझौता था क्योंकि हमें भाष्य के अनुसार जानना है। प्रो० ह्यमर के मतानुसार क्षेत्रों का इस तरह का बंटवारा सत्य रूप में स्थायी था बाकी सब केवल अस्थायी व्यवस्था था। गति और गति के मत केवल १५ वर्ष ही चला। इटली और जर्मनी का समस्या केवल ५० वर्ष तथा पोल्ण्ड की व्यवस्था कठिनाई से एक शताब्दी ही चला। युद्ध द्वारा ही समस्या का ठीक प्रकार से लाय करने में मना करने पर नया विचार न करने का १८१५ में अन्त राज्य में मिला लिया था। विस्तृत हाना और अन्तर्गत का सम्बन्ध करने में कोई युक्ति नहीं था। इतना प्रजातन्त्रवादी प्रोटोस्ट और ट्युर्गनिक था। अन्तर्गत रुढ़िवादी क्रांतिकारी था और उसकी अन्तर्गत

जनता फ्रांस की भाषा बोलती थी। बेल्जियम की जनता का हालैण्ड की प्रमुखता स्वीकार नहीं थी और इस कारण उसने १८३० में विद्रोह करके अपनी स्वतंत्रता प्राप्त कर ली। यह बात स्मरणीय है कि इस अप्राकृतिक गठजोड़ का उत्तरदायी इंग्लैंड था। उसे डर था कि हालैण्ड के बिना बेल्जियम फ्रांस के दबाव का विरोध नहीं कर पायेगा और इसलिए यह आवश्यक है कि इस हालैण्ड के साथ जोड़ दिया जाय जिससे फ्रांस इसे एक ही भास में न हड़प सके।

१९१७ में रूस और फिनलैंड तथा १९०५ में स्वीडन और नार्वे के सघ टूट गये। जिम्माक ने जर्मन सघ को इसके सारे आडम्बर के साथ नष्ट कर दिया। केबूर ने इटली के ममभौते को पूणत उलट दिया।

(२) इन व्यवस्था में यह अवगुण था कि इसमें पोलैण्ड स्पष्ट इटली और जर्मनी की जनता में हलचल मचा देने वाले राष्ट्रीयता के आन्दोलन का पूणत नगण्य माना गया। पालण्ड का शान्तिकारी नना जारटारस्की (Czartorysky) जार एलैग्जेंडर प्रथम से इसलिए मिला कि इस प्रकार उसके दबाव को स्वतंत्रता मिल जायगी किन्तु उस प्रयत्नों में असफलता मिली। पोलैण्ड का रूस के नियंत्रण में रखकर उसका शासन एक पृथक् राज्य की तरह चलाया गया। पोलैण्ड निवासियों का उनीसवीं शताब्दी में अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए सघप करना पड़ा और इन सघप में उन्हें काफी हानि उठानी पड़ी। व रूस के अत्याचारी शासन से कुचल दिये गये थे। इसी प्रकार स्टार्डिन के जर्मनी को एक करने के स्वप्न भी अधूर रह गये। एक ढीला जर्मन-सघ बनाया गया। आस्ट्रिया पर जर्मनी को एकता और वैधानिक शासन न देने का आरोप लगाया जाता है। यह बात उल्लेखनीय है कि इंग्लैंड की शासन-प्रणाली भी असतोषजनक मानी गई थी। विघ्नाना सम्मेलन ने जर्मनी के 'संविधानवाद' की उपमा नहीं की किन्तु वाद में मेटर्निक की प्रतिनिधावादी नीति के कारण शठिनाइयाँ उत्पन्न हुई। इटली के विषय में यह उल्लेखनीय है कि यदि विघ्नाना में उपयुक्त समय पर सरकार बना दी जाती तो इटली में जनता की सरकार की स्थापना हो गई होती। विघ्नाना सम्मेलन के पास ऐसा कोई अधिकार नहीं था जिसके द्वारा आस्ट्रिया पर इटली को स्वायत्त शासन प्रदान करने पर विवश कर दिया जाता। सम्मेलन ने सवाय और पीडमोण्ट के राज्यों का जिनाब्रा और नाप्स के गणतंत्रों से मिला दिया। यह सगठन अस्थायी प्रतीत होता था और इसमें जिनाब्रा और नाप्स को जनता में असन्तोष उत्पन्न हुआ। इसके होने पर भी पराक्षर्य से इन छोटी-छोटी इटली की रियासतों के सगठित हान से मारे इटली की एजता हो गई। इटली के स्वतंत्र-युद्ध का देवता मेडिनी जिनाब्रा का निवासी था। ग्रीकों के प्रसिद्ध गरीवालदी का जन्म नाप्स में हुआ था। जिनाब्रा में ही प्रसिद्ध ग्रीक सान कुर्नो वाले सनिका ने मिमलो का स्वतंत्र कराने के लिए समुद्री यात्रा की थी। १८५६ में केबूर ने जिनीगिया और लम्बार्डी से आस्ट्रिया वाला का निजालन व लिए नाप्स और सवाय दकर नेपालियन तृतीय की सहायता खरीदी।

(३) उदारदलीय लागा की आशाएँ नष्ट हो गईं। जिन शासकों को विधाना व्यवस्था के अनुसार पुनः राज्य प्राप्त हुईं उन्होंने अपने देशों में प्रतित्रियावादी शासनाधीनता की स्थापना की जिससे सब जगह दमन का बोलबाला हुआ। स्पेन और नेपल्स में विशेष रूप से दमन चक्र चला जहाँ युरबोन वंश पुनः सत्ता आसीन हुआ। मेरनिक् ने स्वयं सारे यूरोप में पुलिस का कार्य करने का प्रयत्न किया। जहाँ कहीं भी उदार विचारों ने सिर उठाया उन्हें कुचल दिया गया। उदार विचारों को छुड़ी समझा जाता था। ट्रापो (Trappau) के विधान ने यूरोप के देशों को अन्ध देशों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने में सहायता प्रदान की। मटरनिक् की निजी धारणा थी कि यूरोप की जनता स्वतंत्रता नहीं, अपितु शान्ति चाहती है।

(४) प्रा० हेयस के अनुसार विधाना व्यवस्था इसलिए ऋटिपूण थी कि जनता को राजवंशों की शान बढाने के मेल में दौब पर लगाया गया था।

(५) क्रुटवेल (Cruwell) के मतानुसार, गणतंत्रों पर न्याययुक्तता के निदान का न लागू करना नीचता तथा धोखेबाजी थी। वेनिस और जिनोआ में अनेक राजाओं से कहीं अधिक दीर्घ तथा यशस्वी स्वतंत्रता का उपभोग किया था, किन्तु इन दोनों को उत्तरी इटली की फ्रांस से काल्पनिक सुरक्षा के उद्देश्य से नष्ट कर दिया गया।

(६) फ्राट और टैम्परले के अनुसार विधाना के शान्ति-स्थापकों को अत्यन्त प्रतित्रियावादी और अनुदार बताना एक परिपाटी बन गई है। यह पूर्णतः सत्य है कि वे लोग प्राचीन परिपाटी का प्रतिनिधित्व करते थे और अधिकांश रूप से नवीन विचारधाराओं से अछूत थे। किन्तु वे प्राचीन परिपाटी की निकष्टता का नहीं अपितु श्रेष्ठता का प्रतिनिधित्व करते थे तथा उनकी व्यवस्था ने ४० वर्ष तक यूरोप का बड़े युद्धों से बचाव रखा। उनका मापदण्ड से यह व्यवस्था यायपूण थी। फ्रांस के साथ उदारता से व्यवहार किया गया। शक्ति का सतृप्तन और क्षेत्रों की बाट छांट एक पक्षी का तरह नाप-ताल कर अथवा किसी साहूकार के खाना मित्रान की निपुणता से हुई। अकाले इसका अपने भाग से अधिक मिला और इसका कारण यह था कि उनकी सना अनुपात से कहीं अधिक थी। व्यवस्था में राष्ट्रीयता का दान का उभार का गढ़ हालण और बल्जियम तथा नार्वे और स्वीडन पर अन्ध प्रतित्रियावादी व्यवस्था का प्रयत्न म गणतंत्रों में अन्धकारिणी सहकारिया (स्वीडन और डान्मार्क) ने अन्धकारिणी भाग का और गणतंत्र राष्ट्र मात्र नहीं पाये कि उनकी इस भाग का किन्तु प्रकार विरोध किया जाय। अन्ध कट्टी आलापना यह है कि छोटे देशों का दृष्टिकोण का सम्मान नहीं किया गया। यद्यपि यह व्यवस्था प्राचीन परिपाटी का अन्ध वर्तमान अधिबारा की समर्थक माना जाती थी तथापि छोटे राष्ट्रों का बड़े राष्ट्रों के हित के लिए निरपेक्षता से बलिदान कर दिया गया। शान्ति के व्यवस्थापकों के इन कार्यों के लिए कोई धोखेबाजी नहीं है और यही उनका कार्य की सबसे बड़ी और गम्भीर अन्धकारिणी है।

(७) आगेचक इस बात का निर्देशन करते हैं कि विश्वाना सम्मेलन ने पूव की समस्या का सन्तोषजनक हल नहीं निकाला। किन्तु यह भी सत्य है कि विश्वाना सम्मेलन द्वारा इस समस्या को हल करना भी असम्भव था। यह प्रश्न यूरोप क कृतनीतिनो द्वारा उनीसवीं शताब्दी भर प्रयत्न करने पर भी नहीं सुलझा। यूरोप की मारी शक्तिर्यां कुस्तुन्तुनिया (Constantinopole) का प्राप्त करना चाहती थी और इस विषय म कोई भी निणय नहीं हा सका। फिर रूस की तुर्की से सधियर्यां था, विणेपत १८१० की बुखारेस्ट (Bucharest) की सधि ने इस समस्या को और भी जटिल बना दिया।

हेज्जल लिखता है कि "विश्वाना का सम्मेलन सामन्ता का सम्मेलन था जिनके लिए फ्रांसीसी क्रान्ति द्वारा प्रतिपादित स्वतंत्रता और प्रजातंत्र के विचार समझ मे न आन वाले तथा घृणास्पद थे। शासको ने अपनी इच्छानुसार यूरोप की पुनर्व्यवस्था की। उ हाने इसका बँटवारा जनता की इच्छामो की अवहलना करते हुए किया तथा उम समय अदभुत रूप से जाग्रत राष्ट्रीयता की भावना की उपेक्षा भी की। इस व्यवस्था को स्थायी बनाने वाले तत्त्वो की उपेक्षा करने के कारण यह समझौता, व्यवस्था का रूप धारण नहीं कर पाया। १८१५ क पश्चात यूरोप के इतिहास मे विश्वाना सम्मेलन की महान भूल सुधारने के बहुधा सफल प्रयासो की पुनरावृत्ति देखी जाती है।'

एच० ए० किसिंगर, 'विश्वाना के शासको की मानवता का सशोधन करने म रुचि नहा थी क्योंकि उनकी दृष्टि म इसी प्रयत्न न उम दुघटना का माग खोला था जो शताब्दी के चतुर्थ भाग तक चलती रही। इच्छाकृत क्रिया से मानवता म मगाधन करना जमनी के नाम म फ्रांस के राष्ट्रवाद को लानेवा उर्हे ऐसा मालूम हाना जमा शान्ति द्वारा शान्ति स्थापित करना, अघकार मे स्थायित्व लाना और यह मानना कि एक वार की टूटी हुई हवा फिर नहीं स्थापित हो सकती। अत विश्वाना पर उजय्या गया विषय प्रतिक्रिया के विरुद्ध मुधार नहीं था। यही व्याख्या आगामी सनानो की है। वस्तुतः समस्या ऐसी व्यवस्था लाने का थी जिसम परिवर्तन सत्ता का प्रयाग करने क वजाय उपहार के भाव द्वारा हो सके।" (A World Restored p 172)

इसके आग, "उनके द्वारा दिए गए नतिक समाधान के विषय म कोई कुछ भी मगच इनने यूनापीय महाद्वीप स किसी भी बडी सत्ता को पदक नहीं किया और इस प्रकार असमाधानीय शाश्या के अभाव का प्रमाण दिया। यह समझौता केवल मन् विन्वाम पर आधारित नहीं था जो कि आत्म नियंत्रण पर बहुत बडा भार डालता था न यह सत्ता के विकास को गुदता पर ही आधारित था जा गणना को अत्यधिक धनिदित्त बना दता। इनक विपरीत वहाँ एमे मगटन की रचना हा गई थी जिसम शक्तिर्यां पर्याप्त रूप से सभारित थी, जिसम आत्म नियंत्रण आत्मत्याग से कहा अधिन बडा दीव पडता, किन्तु जिहोंने इनके आग के ऐतिहासिक दावो का ध्यान मे रखा जिससे इसकी सत्ता को स्वीकृति म परिणत किया जा सका। नई अन्तर्राष्ट्रीय

व्यवस्था में कोई भी शक्ति इतनी असंतुष्ट नहीं थी जिसने कि विभिन्न समझौते के ढांचे के भीतर ही उपाय खोजने की रुचि नहीं ली। चूंकि राजनीतिक व्यवस्था एक शक्तिकारी सत्ता की धारक नहीं थी इसके सम्बंध वृद्धि के साथ रुचिकर हो गए जो इस बढ़ती हुई निश्चितता पर आश्रित थे कि एक विनाशकारी उथल-पुथल की आशा नहीं की जा सकती।

विभिन्न समझौते की ऐसी सामान्य स्वीकृति कोई भाग्यशाली वस्तु नहीं थी। सारे युद्धकाल में कसलरे व मेटर्निक ने यही आग्रह किया था कि उनका प्रयत्न स्थायित्व के लिए था प्रतिवारक के लिए नहीं जो शत्रुता को कुचलने की बात से नहीं बल्कि उसकी मजबूरियों को मायता देने में उचित था। यदि हम विभिन्न समझौते की स्फुरा की पिट योजना और उनके औचित्य की क्षारजेनबर्ग को दिए हुए निर्देशों से तुलना करें तो हम पायेंगे कि भाग्य जसा कि राजनीति में वसा भी अर्थ कायों में केवल नमूने का नैप भाग है। कहने का यह तात्पर्य नहीं कि इस समझौते ने किसी भविष्यवाणी का प्रदर्शन किया जिसने सारी घटनाओं का किसी दृश्य के अनुकूल बना दिया। कसलरे ने एक ऐतिहासिक सभारता के हेतु कठोर सतुलन में अपने विश्वास को हटाकर इस संकट के बीच गोपनीय लेन-देन की व्यवस्था की और अपने को अपने राय की आत्मा से बढ़ती हुई मात्रा में अलग कर दिया। मेटर्निक जो इटली व जर्मनी दोनों ही में अपना प्रभुत्व रखने का प्रयत्न कर रहा था उस नीति को ग्रहण करने पर विवश हो गया जो उसके साधना में परे थी। औचित्य के हेतु उसकी बढ़ती हुई कठोर लड़ाई ने यूरोपीय काम के लिए आस्ट्रिया के महत्वपूर्ण आधार की अपर्याप्तता के प्रति बतती हुई घेतना का प्रदर्शन किया जो आधार उमने उसी के लिए बनाया था। यदि एक महाद्वीप के बीच में स्थित साम्राज्य के लिए केवल शक्ति की नीति धारक है तो सहायताहीन औचित्य पर विश्वास भी साहसपूर्ण नहीं हो सकता और यह पतन को और ले जाता है। चतुराई शक्ति का स्थान ले सकती है यदि लक्ष्य निश्चित है परन्तु यह विचारों का स्थान नहीं ले सकती यदि चुनौतियाँ अन्तरिक हैं। और प्रजा जो सदैव के मकोचों से युक्त था जो राष्ट्रीय अपमान लाने वाले समरण के भाव से व्याकुल था वह अपनी सत्ता रखने हुए भी जर्मन उद्देश्य में विलीन होने पर विवश हो गया। अब विस्कुला से लेकर रूहान तक विस्तृत हानि के कारण जर्मनी की एकता के लिए राज का प्रतिक उपस्थित किया। केंद्रीय यूरोप के धार-धार धरा में तित्तिर-बिनिर इसकी सुरक्षा के लिए आवश्यकता न यदि राष्ट्रीय लक्ष्य के लिए इस विचार ने नहीं इस चाह अनिच्छा के माय जर्मन नीति का दास बनने पर बाध्य कर दिया। मुख्य जलमार्गों व धलमार्गों के धर उधर स्थित हानि के कारण, प्रिया न जर्मनी को उनकी भौतिक एकता धान में पूव ही आयिक दृष्टि से अपने प्रभुवाधान कर दिया था। सम्माना में पराजय जिसका इतनी क्रूरता के माय विरोध किया गया प्रिया की आम्निया के ऊपर अन्तिम विजय का मात्र बन गई।

पवित्र गठबंधन (Holy Alliance) (१८१५)—स्वप्नद्रष्टा, रहस्यमय, अस्थिर स्वभाव और कल्पना वाले जार एलेग्जेंडर प्रथम द्वारा कृत १८१५ के पवित्र गठबंधन की चर्चा भी आवश्यक है। इस प्रकार की योजना पहले फ्रांस के हेनरी चतुर्थ के मंत्री सुले (Sully) ने भी प्रस्तुत की थी। इस महान् योजना' (Grand Design) का उद्देश्य था, यूरोप में नित्य प्रति भयानक रक्तपात से छुटकारा प्राप्त करना तथा यूरोप के राजाओं के लिए एक अपरिवर्तनीय शांति प्राप्त करना, जिससे इस योजना के पश्चात् सारे राजा परस्पर भाईयो की तरह रह सकें। एक महासमिति या मीनेट की स्थापना करने की योजना थी, जिनमें विभिन्न देशों के ६० प्रतिनिधि हों जिनका कर्तव्य भगड़ों का निपटारा करना तथा यूरोप में शांति बनाये रखना हो। किन्तु १६१० में हेनरी नेवारे की अकाल मृत्यु के कारण कुछ नहीं हो पाया।

नेपोलियन के पतन के पश्चात् यूरोप में जार एलेग्जेंडर का सर्वोपरि प्रभाव होने के कारण उसे अपनी 'पवित्र गठबंधन की योजना रखने का प्रोत्साहन मिला। अपने स्विस शिक्षक के प्रभाव के कारण वह उदार विचारों वाला था। एलेग्जेंडर यह चाहता था कि यूरोप के देशों के शासक परस्पर व्यवहार में ईसाई धर्म के सिद्धान्तों का प्रयोग करें। एलेग्जेंडर के शब्दों में "वर्तमान काल की सत्ता के सम्मुख घोषणा करने का इसके अतिरिक्त अन्य कोई उद्देश्य नहीं है कि वे अपने देशों के आंतरिक प्रशासन तथा अन्य राज्यों से उनके कूटनीतिक व्यवहार में पवित्र धर्म लायें, ईसाई धर्म विशाल हृदयता और छाति की मायताओं का प्रयोग करेंगे। ये मायताएँ केवल निजी व्यवहार से कहीं अधिक राजाओं के सलाहकारों पर आवश्यक रूप से लागू होती हैं और उनकी प्रजा का पथ निर्देशन करती हैं तथा मानव की मायताओं को गति प्रदान करती हैं और उनकी अपूर्णताओं को नष्ट करके सम्पूर्ण बनाती हैं।"

यह बात ध्यान रखने योग्य है कि पवित्र गठबंधन का लोगो ने अधिकतम ताड़ कर ही सम्मानित किया है। यह सत्य है कि रूस, आस्ट्रिया और प्रशिया ने आवश्यक घोषणा की किन्तु इन घोषणाओं का काल्पनिक रूप में परिणत नहीं किया गया। पवित्र गठबंधन अन्तर्राष्ट्रीय कूटनीति के क्षेत्र में सत्ताचार की भावना को पैदा करने का तथा यूरोप में राजनीतिक आत्मा (political conscience) की उत्पत्ति करने का प्रयास था जो अपने ध्येय में असफल रहा। जार 'पवित्र गठबंधन की पारदर्शी आत्मा का भौतिक शरीर प्रदान नहीं कर सका' और यह योजना केवल योजना ही रही।

ग्रेट ब्रिटेन ने पवित्र गठबंधन के सिद्धांतों को मानने से इनकार कर दिया। कमलरे के अनुसार 'पवित्र गठबंधन अलौकिक रहस्यवाद तथा मूर्खता थी।' मटर-नित्र इसे धार्मिक गजना या 'सदाचार का ढोंग' कहा करता था। उसके शब्दों में पवित्र गठबंधन धर्म के चाल में एक उत्तरदायी महत्वाकांक्षी थी। यह जनता के अधिकारों का दमन करने, स्वेच्छाचारिता की उत्पत्ति करने अथवा अन्य अत्याचारों का बताने का साधन-मात्र ही थी। यह सम्राट एलेग्जेंडर की धार्मिक भावना का उच्चाटन और राजनीति में ईसाई धर्म के सिद्धांतों का प्रयोग करने का प्रयास था।

धार्मिक गठबंधन का क्रियात्मक रूप से बहुत थोड़ा महत्त्व है।

मिद्धाता का कभी भी काय रूप में परिणत नहीं किया गया। यूरोप का जनता न पवित्र गठबन्धन और चतुमुखी सन्धि का भूल से एक ही बात समझा। क्योंकि चतुमुखी सन्धि का राष्ट्रवाद और उदारवाद का कुचलन के लिए यूरोप भर में प्रयुक्त किया गया पवित्र गठबन्धन की भी निन्दा की गई और इस भा प्रतिक्रियावादी जनता का विरुद्ध राजाशाही के गुट तथा उदार नीति का विरुद्ध पक्षयत्र समझा गया था। इस याजना के प्रति विभिन्न राष्ट्रा के रूप से इन शक्तियों में ध्वंस की एकता नहीं थी और समय आने पर उनका इस पथक ही जाना सम्भव था।

सीमैन का विचार है कि पवित्र गठबन्धन यूरोप में शांति का बनाव रखने का महत्त्वपूर्ण साधन था। जब तक यह व्यवस्था आस्ट्रिया रूस और प्रुशिया को एकता के सूत्र में बाँधे थी उस समय तक शांति निश्चित थी और युद्ध का सम्भावना कम थी। पवित्र गठबन्धन के कारण ही प्रुशिया और आस्ट्रिया रूस का विरुद्ध प्रुशिया का युद्ध में नहीं लड़े। इस प्रकार युद्ध का क्षेत्र यूरोप के प्रदेशों से दूर ही रहा। १८५६ के पश्चात् इस व्यवस्था का टूटना इटली और जर्मनी में १८६५ की व्यवस्था के समाप्त होने की प्रस्तावना थी। आस्ट्रिया का पीड़ित रूप से चलता कर दिया गया था ताकि नेपोलियन तृतीय तथा बिस्मार्क आस्ट्रिया का ध्वंस पर नया इटली और नया जर्मनी बना सकें (परोक्ष रूप से स्वायत्त गणतन्त्र हंगरी भी)। टोक्यो का व्यवस्था के अनुसार १८७२ की तीन राजाशाही की समिति (League of Three Emperors) भी गणतन्त्रवाद का रोकने के लिए सामूहिक विरोध पर आधारित थी। बिस्मार्क की बाद की विदेश नीति की अनुरता भी उसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए थी जिसके लिए मटरनिक प्रयत्न कर रहा था अर्थात् पूर्व के प्रान्त पर रूस और आस्ट्रिया को युद्ध में रोका जाय। इस प्रकार की स्थिति बन जान पर ही यूरोप को अन्तर्गुह से बचाया जा सकता था।

Suggested Readings

Fyffe	1 <i>History of Modern Europe</i>
Kissinger H A	<i>A World Restored</i>
Lipson	<i>Europe in the Nineteenth Century</i>
Nicholson Sir Harold	<i>The Congress of Vienna 1945</i>
Phillips	<i>Modern Europe</i>
Seaman	<i>From Vienna to Versailles</i>
Seignobos	<i>Political History of Europe Since 1814</i>
Thomson David	<i>Europe Since Napoleon 1957</i>
Webster C. K.	<i>The Congress of Vienna 1934</i>
Webster	<i>The European Alliance</i>
Ferrero G	<i>The Reconstruction of Europe 1941</i>
Cresson W P	<i>The Holy Alliance 1972</i>

कैसलरे और कैनिंग

(Castlereagh and Canning)

कसलरे (१८१२-२२)—कसलर उन लागा म स एक ब्यक्ति है जिहें बडा जूक परिस्थितिया का सामना करना पडा और जिहाने अपना काय प्रत्यत याग्यता कर दिखाया। उमके शात तथा शीघ्र ही उत्तेजित न हो जान वाले स्वभाव न उमे उसके काय म बडी सहायता दी।

उसका जन्म १७३६ ई० तथा मृत्यु १८२२ ई० म हुई। इंग्लण्ड और आयरलण्ड क मेल के समय वह इंग्लण्ड की ओर स आयरलड के लिए मन्त्रेरी नियुक्त था। रिदवत आदि देकर आयरलड के लागा का आयरलड और इंग्लड के एकीकरण के लिए तैयार करवान मे उमका भी हाथ था। वह कैथोलिक लोगो को कुछ अश तन धार्मिक स्वतंत्रता देने के हक मे था। वह कुछ समय के लिए युद्ध मंत्री और फिर वस्त्रियो का मंत्री भी रहा। १८०७ म उसन सना का पुनर्गठन किया। परन्तु उसके द्वारा सेना का यह पुनर्निर्माण पुरानी सना क आधार पर ही किया गया था। १८०६ ई० मे उमने अपन पद स त्यागपत्र दे दिया और कैनिंग से मुकाबला किया। १८१२ ई० म वह विदेश मंत्री (Foreign Secretary) बन गया और १८२० ई० मे आत्महत्या करन तक वह उमी पद पर रहा। लाड ब्राह्म के शब्दा म 'कैसलर एक सरन और प्रत्यत बुद्धिमान् व्यक्ति था। तडक भडक वाले काल्पनिक विचार और यथ की कल्पना की उडानें उस धोखा नही द सकती थी। वह मीधा वात की तड तक पहुँचना। राजनतिक दष्टि से ही नही, अपितु व्यक्तिगत रूप म भी वह बडा दीर था।

जब १८१२ ई० म वह विदेश मंत्री बना, उम समय नेपोलियन क विरुद्ध यूरोप क राष्ट्रों की शक्ति विशेष मगटित नही थी। प्रत्येक दंग अपना उल्लू सीमा करना चाहता था। परिणामस्वरूप नेपोलियन के विरुद्ध कोई सामूहिक पग नहा उठाया जा सकता था। इही परिस्थितिया म कसलर यूरोप गया और वहाँ जाकर उमने मित्र राष्ट्रों को मगटित किया। उमके इही प्रयत्ना की बदौलत राष्ट्रों का युद्ध (Battle of Nations) आरम्भ हुआ और १८१४ ई० म नेपोलियन की शक्ति समाप्त कर दा गई। १८१४ ई० म यूरोप म हान वाली अंतर्राष्ट्रीय कान्फेन्स म इंग्लण्ड को बही स्थान प्राप्त था जा कि १६१६ ई० म अमरिका का प्राप्त था। उम समय कवन इंग्लड ही एक ऐसा ण था जिमके पान युद्ध करने की शक्ति और साधन थ और जिस युद्ध करने की इच्छा भी थी। वह अपने समय के यूरोप का भाग्य

विधाना था। इंग्लैंड को ऊँचे स्थान पर पहुँचाने का श्रेय लाड कसलर का है जिमक उच्च न्यायाधीशों को व्यवहार बुद्धि और राजनतिक कार्यों को करने की ईश्वरदत्त प्रतिभा न उस ऐसा करने में समय किया। वह कवल अग्रजी पार्लियामेंट और मंत्रिमण्डल में कार्य करने वाले अपने सहकर्मचारियों का ही विश्वासपात्र नहीं अपितु यूरोप भर के राजनीतियों की अच्छी सम्मतियाँ और विश्वास प्राप्त करने में सफल हुआ।

कसलरे का यूरोप जाने और मित्र राष्ट्रों की राजधानियों की यात्रा करने का एकमात्र उद्देश्य इन चार बड़े-बड़े राष्ट्रों को संगठित करके नेपोलियन के मुकाबले में लड़ा करना था। साथ ही साथ वह एक ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय संधि की स्थापना करना चाहता था जो यूरोप के राजनीतिज्ञों को सम्मुख उपस्थित समस्याओं को सुलभ करावे। कसलरे के विचार में राष्ट्रों की नीति में मतभेदों का दूर करने युद्ध में विजय प्राप्त करने और इस प्रकार शान्ति स्थापित करने के लिए शत्रु को सामने सामूहिक रूप से उपस्थित होने का सर्वोत्तम ढंग बड़े-बड़े राष्ट्रों के प्रधानमंत्रियों में विचारों का विश्वस्त और खुला आदान प्रदान था। बीसवीं सन्नी में तो अनेक राष्ट्रों से अपनी रक्षा करने के लिए काँग्रेसों बुलाकर यात्राएँ बनाने का विचार कोई नया नहीं प्रतीत होता परन्तु कसलरे के समय में ऐसा विचार क्रान्ति मचा देने वाला किसी विचार से कम नहीं समझा जाता था। अपने इसी एक कार्य में कसलर इतिहास के एक महान् शान्ति स्थापित करने वाले व्यक्ति के रूप में प्रसिद्ध हो गया।

कसलरे चार बड़े-बड़े राष्ट्रों को परस्पर एक दूसरे के निकट लाने का उद्देश्य से ही यूरोप गया था और दो मास के अदर अदर की गई माच, १८१४ ई० की शामोन्ट (Chaumont) की संधि उसकी अत्यन्त महत्वपूर्ण और एक बड़ी भारी सफलता थी। इस संधि के द्वारा चारों राष्ट्रों ने युद्ध को तब तक जारी रखने की प्रतिज्ञा की जब तक फ्रांस शान्ति का समझौता करने के लिए तैयार नहीं हो जाता। इन राष्ट्रों में से प्रत्येक राष्ट्र ने युद्ध के लिए धस्त्र आदि दान स्वीकार किया। इंग्लैंड ने शस्त्रों के साथ-साथ प्रति वर्ष ५० लाख पौंड की राशि देनी भी स्वीकार की। यह समझौता बीस वर्षों के लिए किया गया और मित्र राष्ट्रों ने बीस वर्षों तक फ्रांस के द्वारा शान्ति के समझौते की गतों का ताठन का प्रयत्न करने पर सामूहिक रूप से यूरोप की धार संधि के विरुद्ध लड़ने का वचन लिया। इस संधि-पत्र पर हस्ताक्षर किए जाने के कुछ ही समय पश्चात् नेपोलियन को फ्रांस के सिंहासन में उतार दिया गया और अब परिम में समझौते की बातचीत आरम्भ हो गई। शान्ति के समझौते का पहला भाग परिम में और दोवा का भाग विघाना (Vienna) में तैयार किया गया। नवम्बर १८१५ में ई० शान्ति के संधिपत्र पर हस्ताक्षर कर लिए गए।

इस संधि का तैयार करने में कसलरे ने बड़ा महत्वपूर्ण कार्य किया। ड्यूक ऑफ बलिनगटन मन्त्रिण और एमेक्ज़ेण्डर प्रथम ने उन उमक के कार्य में सहायता दी। कसलरे और एमेक्ज़ेण्डर प्रथम इस बात पर तुल हुए थे कि फ्रांस के साथ संधि

कठोर व्यवहार न किया जाए। कैमलर का कहना था कि हमारा काय विजयोपहार इकट्ठे करना नहीं अपितु ससार के लोगों का फिर से शान्तिपूर्ण रहना सिखाना है। वह फ्रान्से उसके साम्राज्य के किन्हीं भी एम भाग का जबरदस्ती छीनने के विरुद्ध था, जिसका फिर प्राप्त करने के लिए फ्रांस के द्वारा युद्ध किए जाने की सम्भावना है। उमन लिबरल को लिखा— मैं जितना और विचार करता हूँ उतना ही मुझे उसकी (फ्रान्सीसी) शक्ति कुरदन्त का यह ढग पसन्द नहीं आता। हमें उस नीचा दिवाकर उसके नामूनो को बाट देना चाहिए जिसमें वह कई वर्षों तक हम घायल न कर सकें। परन्तु मुझे विश्वास है कि जिन चीजों को वापिस प्राप्त करने के लिए फ्रान्से अवश्य ही प्रयत्न करेगा उन चीजों की रक्षा के लिए यूरोप में होने वाले युद्ध में यूरोप के राष्ट्रा की सहायता करने के लिए वचनबद्ध हान की नीति अवश्य ही शक्य के लिए हानिकारक है।”

चूंकि यूरोप के राजनीतिज्ञ ने कैमलर के द्वारा दिवाए जा रहे रास्ते पर चलकर फ्रांस के साथ वायव्यपूर्ण और नम व्यवहार किया इस लिए फ्रांस न विमाना के समझौते को मानना स्वीकार कर लिया। लगभग बीस वर्षों से यूरोप में गड़बड़ मचाते चले आने पर भी फ्रांस के साथ आश्चर्यजनक नुर्मी का व्यवहार किया गया। युद्धकाल में उसके द्वारा जीत गए प्रदेशों में से बहुत से प्रदेश वापिस ले लिए गए परन्तु उस अपनी उत्तरी तथा पूर्वी सीमाओं का कुछ अंश तक बढ़ाने की इजाजत मिल गई। युद्ध में होने वाली हानि के बदले उससे कोई हर्जाना न मांगा गया। लुई अठारहवें का फ्रांस के सिंहासन पर बिठा दिया गया। १८१५ ई० की वाटरलू की लड़ाई में नेपालियन की हार होने पर भी संधि की शर्तें फ्रांस के लिए विनोय कठोर न रखी गईं। केवल अपनी सीमा बढ़ाने के सम्बन्ध में दी गई रियासतें उससे वापिस ले ली गईं और उसे युद्ध के हजनि के रूप में छाटी-नी राशि देने के लिए कहा गया। उसे महान् कलाकारों की कृतियाँ भी वापिस लौटानी पड़ीं। यह भी निश्चय किया गया कि जब तक फ्रांस हजनि की राशि नहीं देगा तब तक फ्रांस के कुछ भाग पर मित्र राष्ट्रा की सनाए रहेंगी। फ्रान्से के साथ इस प्रकार सन्धियों से सिद्ध होता है कि कंसलर लायड जाज से अधिक योग्य राजनीतिज्ञ था। क्योंकि लायड जाज ने १८१६ ई० में जर्मनी के साथ एक अत्यन्त कठोर शर्तों वाली संधि की, जिसके परिणामस्वरूप बीस वर्षों के अन्दर अन्दर ही एक दूसरा महायुद्ध छिड़ गया। कंसलर के द्वारा तैयार की गई यह संधि लगभग एक शताब्दी तक चली।

पेरिस और विमाना में चल रही लम्बी और पचीदा समझौते की बातचीत का चराना हुए लाड कंसलर ने एक क्षण भी अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के आदेश को अपने ध्यान में परे न किया। जिस समय नवम्बर, १८१५ की संधि की छोटी धारा पर बाद विवाद हो रहा था उस समय उस अपनी योजना का क्रियात्मक रूप देने का अवसर मिल गया। जिस समय यह धारा पग की गई थी उस समय तो इसमें यह लिखा था कि फ्रांस के सम्बन्ध में सलाह-मसवरा करने के लिए यूरोप के राजनीतिक विद्वानों को समय-समय पर एकत्रित होना चाहिए परन्तु कैमलर का इस धारा के

पाठ और भाव दोनों ही पसन्द न आए। उसने इस धारा का बदल कर इसका स्थान पर नीचे दी जा रही धारा रखी—

‘ इस संधि को त्रियात्मक रूप देने के काय का सरल करन और इसकी रक्षा करने के लिए तथा ससार के लिए हितकर इन चारों राष्ट्रों के मेल मिलाप का बढ़ाने वाले सम्बंधों को और भी दृढ़ करने के लिए इस संधि में भाग लेने वाले मुख्य देशों के द्वारा इस बात को स्वीकार किया जाता है कि वे निश्चित समय में पश्चात् जलसे बुलाते रहेंगे। अपने सामान्य स्वार्थों के विषय में सलाह-मशवरा करने के लिए और समय का दखल कर आवश्यक और लाभदायक पग उठाने के लिए देशों का फिर से समृद्ध बनाने और यूरोप में शान्ति को बनाए रखने के लिए या तो इन राष्ट्रों के राजा या उनके प्रतिनिधि इन कांफेंसों में भाग लेंगे। ’

यूरोप में शान्ति स्थापित करने की दिशा में यह धारा कमलरे की एक बड़ी भारी देन थी। इसमें हम राष्ट्र संधि (League of Nations) के कौनबनण और संयुक्त राष्ट्र संधि (United Nations) के चाटर की भूलक मिलती है। कन्सर्ट ऑफ यूरोप (Concert of Europe) की स्थापना भी इसी के आधार पर हुई थी। कमलरे की आशा थी कि यूरोप में शान्ति भङ्ग करने वाली सभी समस्याएँ इस संधि की छोटी धारा के अनुसार बुलाई जाने वाली कांफेंसों में सुलझा ली जाया करेंगी और इस प्रकार यूरोप में शान्ति स्थापित रह सकेगी। परन्तु कमलरे की इस योजना का असफल रहना निश्चित ही था क्योंकि उसके समकालीन राजनीतिज्ञ कांफेंस बुलाने के बगैरे निपटाने का महत्त्व को न समझ सके। जब शान्ति भङ्ग होने का खतरा उपस्थित हुआ तो स्वयं इंग्लैंड भी शान्ति की रक्षा के लिए आगे न बढ़ा।

कई बार कहा जाता है कि कमलरे ने इंग्लैंड को होली एलायंस की दुम के साथ बांध दिया परन्तु ऐसा कहना ऐतिहासिक तथ्यों के विरुद्ध है। यह सत्य है कि कमलरे का इस बात पर बड़ा विश्वास था और वह इस बात का प्रबल समर्थक भी था कि यूरोप के राजनीतिज्ञ अपने बीच में पड़ा हुए भगदोरों का मह्योग की नीति पर चलकर स्वयं ही निपटारें। इसी उद्देश्य से एकमन्ता-चपल ट्रिपल एलायंस और बरोना के स्थान पर चार कांफेंसों हुईं। इसमें मदेह नहीं कि कमलरे आपसी भङ्गों को विचार विनिमय के द्वारा निपटाने के पक्ष में था। विचार विनिमय की उपयोगिता में उस निश्चय ही बहुत विश्वास था परन्तु यह कहना सवसा गलत है कि वह Holy Alliance की इस नीति का समर्थक था या (नीति) त्रियात्मक रूप में अपना जान पर मार यूरोप में से उठाने विचारों और स्वतंत्रता के लिए किए जा रहे आन्दोलनों का बाहर निकाल देना के लिए हमें प्रशिक्षण और आम्बिवा-ट्टेरा के हाथों में एक संयुक्त उपयोगी गन्धक रूप में आ गई। यह सच है कि इंग्लैंड चार देशों के समन्वित (Quadruple Alliance) का एक मन्थ्य था और यूरोप के राजनीतिज्ञों के सामने उस समय उपस्थित समस्याओं का मुकामान के लिए उन्हें मह्योग देने के लिए तय्यार था। यह भी सच है कि कमलरे आम्बिवा का इत्नी में मनचाही करन का खुला दुकान देने के लिए तय्यार था। उसने नेपोलियन और मिगनी में निरकृत गामन के

स्थापित रहने दिए जाने के सम्बन्ध में आस्ट्रिया और नपल्स के राजा फर्डिनेण्ड चतुर्थ को की गई गुप्त संधि का मान लिया। यही कारण था कि उसने इटली के रिमा जिमेटा (Resorgimento) के विद्रोह का एक नाम और दयालु सरकार के प्रति सैनिक विद्रोह और साम्प्रदायिक पडयंत्र का नाम दिया। कैमलर एक 'अच्छा यूरोपियन और शांति का मित्र था। वह आपसी भगडा का मिटाने के लिए समय समय पर मुलाहें जाने वाली कांफ्रेंसों का प्रबल समर्थक था। इन कांफ्रेंसों के द्वारा भगडे निपटा कर वह युद्ध के कारणों का ही दूर कर देना चाहता था परन्तु वह इन कांफ्रेंसों को अथवा राष्ट्रों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने का साधन नहीं बनाना चाहता था। वह रूस, आस्ट्रिया और प्रुसिया के अन्तराष्ट्रीय पुलिस के रूप में कार्य करने का धार विरोधी था। यही कारण था कि उसने हाली एलायंस (Holy Alliance) का अथवा राष्ट्रों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने का अधिकार देने वाले ट्रॉप्पू प्राटाकाल (Protocol of Troppau) का प्रबल विरोध किया।

१८२० ई० में कंसलरे ने अपने सब विचारों का एक स्टेट पपर (State Paper) में सग्रहीत किया। उसके पदचातु लाड कैनिंग ने इस स्टेट पपर का अपनी नीति का आधार बनाया। उसने स्टेट पपर का उस समय घोषित किया जिस समय स्पेन के राजा फर्डिनेण्ड सप्तम के अत्याचारों और जुल्मों के विरुद्ध स्पेन में एक सैनिक विद्रोह हो रहा था। उसने अपने इस पपर में इंग्लैंड की अथवा देशों के आन्तरिक भगडों में हस्तक्षेप न करने की नीति पर प्रकाश डाला। इसमें उसने इस बात को धार संकेत किया कि देशों के आन्तरिक भगडों में अथवा देशों के हस्तक्षेप का सह सक्ने में स्पेन के लोग यूरोप के सब देशों के लागू से बढ़कर हैं। इस विषय में उसके विचार बर्लिन के विचारों पर आधारित थे। परन्तु स्पेन के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने की नीति अपनाने का केवल एक ही कारण नहीं था। हाली एलायंस में भाग लेने वाले देश फर्डिनेण्ड सप्तम का पुनः स्पेन का राजा बनाने के लिए स्पेन के मामलों में हस्तक्षेप करना चाहते थे परन्तु कंसलर उन्हें नवम्बर १८१५ की संधि की छठी धारा के अनुसार स्थापित किए गए चार राष्ट्रों के समझौते (Four Powers Alliance) की याद दिलाकर उन्हें ऐसा करने से रावना चाहता था। वह समझौता १८१५ ई० की संधि के द्वारा स्थापित की गई व्यवस्था को रक्षा करने के उद्देश्य में बनाया गया था, न कि अथवा देशों के आन्तरिक मामलों की दखल बंद करने या सत्तार के सब देशों को सरकारों के संगठन करने के उद्देश्य से। कैमलरे ने यह भी कहा कि इस समझौते को इसके आधारभूत सिद्धांतों और वास्तविक उद्देश्यों से प्रकट होने वाले कत्तबों से भी आगे धकेलने से अग्रिम इसकी उपधागिता नष्ट करने वाली कोई और चीज नहीं है। उसने हाली एलायंस के द्वारा १८१५ ई० की संधि की छठी धारा का दुरुपयोग किए जाने की बड़ी समालोचना की। जहाँ तक इंग्लैंड का प्रश्न था कैमलरे ने कहा कि इंग्लैंड एक बुरे व्यवहार करने वाले राजा के पक्ष में किसी देश के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने के लिए तैयार नहीं। कैमलरे ने कहा कि मधुसूक्त ही यूरोप की शांति भङ्ग हो जाने का खतरा उपस्थित हो जाएगा तो हमारा यह सैन्य अपने कत्तबों का पूरा करने के लिए उचित स्थान पर पहुँच जाएगा। परन्तु

हमारा यह देग खतर से बचने के लिए परहेज के तौर पर थोथ और काल्पनिक सिद्धान्तों पर नहीं चलेगा। जहाँ एक ओर वास्तविक खतरा उपस्थित होते ही इंग्लंड उसका सामना करने के लिए सामने आ जाएगा वहाँ दूसरी ओर वह अपने राष्ट्रा के द्वारा काल्पनिक खतर से लड़ने में और अत्याचार करने वाले के पक्ष की ओर से लड़ने में उनकी सहायता नहीं करेगा।

अपनी दृढ़ नीति के कारण कसलर चार राष्ट्रों के समझौते से अलग नहीं होना चाहता था। परन्तु वह इस बात पर तुला हुआ था कि वह अन्य राष्ट्रों के आन्तरिक मामला में हस्तक्षेप की नीति को यूरोप के राष्ट्रों के द्वारा नहीं अपनाया जाने दगा। अपनी मृत्यु से कुछ ही समय पहले कसलर वेरोना की कांग्रेस में भाग लेने के लिए तयार हो रहा था। इस कांग्रेस में स्पेन के भगडे के विषय में भी बड़ा विवाद होना था। उसमें पहले ही यह निश्चय कर लिया था कि वह यूरोप के राष्ट्रों का स्पेन में पुनः फिडिनण्ड सप्तम को गद्दी पर बठने से रोकेंगा। यद्यपि उसमें वेरोना की कांग्रेस के मौके पर आत्म हत्या कर ली उसका काय लाड कनिंग पूरा करता रहा। वेरोना की कांग्रेस में भाग लेने के लिए वेलिङ्गटन को भेजा गया। उसने कसलर के द्वारा स्थापित किए गए सिद्धान्तों पर ही आचरण किया। वुडवर्ड (Woodward) ने ठीक ही कहा कि कनिंग कसलर के सिद्धान्तों और उद्देश्यों से सहमत था। उसका तात्पर्य उन उद्देश्यों का प्राप्त करने के ढंग से कसलर से मतभेद था। जहाँ एक ओर कसलर अन्तर्राष्ट्रीय भगडों को मुलभान के लिये अन्तर्राष्ट्रीय काँग्रेसों को बुलाने के पक्ष में था वहाँ दूसरी ओर कनिंग भगडों को निपटाने के इस ढंग का विरोधी था। उसके विचार हम उसके अपने शब्दों से जान सकते हैं। उसने कहा परमात्मा का धर्मवाद है कि भ्रम और काँग्रेस नहीं होगी। उसकी इस नीति का परिणाम था कि काँग्रेस का युग समाप्त हो गया।

यह कहना गलत है कि कसलर ने इंग्लंड का Holy Alliance की दुम के साथ बाँध लिया। वह निश्चय ही Holy Alliance के उन सिद्धान्तों का विरोधी था जो कि एलायंस में भाग लेने वाले राष्ट्रों को अन्य देशों के राष्ट्रों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने का अधिकार देते थे। प्रसन्न बात तो यह है कि कसलर Holy Alliance का धार विरोधी था। वह इस असंगत प्रलाप और उत्कृष्ट गूढ़ विद्या का दुक्ता कहा करता था। उसने लिबरपूल का स्पष्ट शब्दों में कहा किया था कि जोर के (त्रिम हाना एलायंस करने की सूझी थी) मन्त्रिष्वक में प्रवचन ही कुछ गटबड़ था। वह हाना एलायंस को स्वतंत्र विचारों के विरुद्ध युद्ध में प्रयाग विषय जान के पक्ष में न था। कसलर स्वयं स्वतंत्र विचारों का विनाश समझकर न था परन्तु दूर अन्य देशों के आन्तरिक भगडों में हस्तक्षेप करने का नीति से उम बढ़ा पूणा था। उस समय का हाना एलायंस की दुम के साथ बाँधने वाला इस लिए कहा जाता है कि ऐसा कहने वाले सात हाना एलायंस और चार राष्ट्रों के समझौते (Quadruple Alliance) में भेद का नही समझत। स्वतंत्रता के विरुद्धी गन्धुषा के साथ उर्वर मित्रतायुग धरने सम्बन्धन सागा के ऐसे विचारों का और भी दृढ़

कर दिया। कंसलरे कोई विशेष धृच्छा वक्ता न था। न तो उसमें इतनी योग्यता थी और न ही उसकी इच्छा थी कि वह लोग का इस बात का विश्वास दिलाए कि वह हाली एलायस (Holy Alliance) का विरोधी है और यह ता केवल आधुनिक अनुसंधान-कर्त्ताओं ने इस बात की साज की है कि हाली एलायस और क्वाडरूपल एलायस (Quadruple Alliance) दो असंग-अलग चीजें थी। इन समझौता के दो पृथक्-पृथक् समझौते होने के रस्यादघाटन ने कंसलरे की वास्तविक महत्ता का प्रकट किया है। उसके समकालीन विद्वान् जो कि हाली एलायस और क्वाडरूपल एलायस को एक ही चीज समझते थे, उसे मर्याद के समान ही यूरोप का एक अन्य कन्सर्वेटिव और रूढ़िवादी राजनीतिज्ञ मानते थे। हाली की इसी अज्ञानता न उसे Masque of Anarchy (१८१७) में निम्नलिखित पंक्तियाँ लिखन के लिए प्रेरित किया—

“I met Murder on the way,
He had a mask like Castlereagh,
Very smooth he looked yet grim
Seven blood hounds followed him
All were fat and well they might
Be in admirable plight,
For one by one and two by two,
He tossed them human hearts to chew”

केवल आधुनिक युग में आकर ही कंसलरे की महत्ता को समझा जाना लगा है। यह सच है कि वह यूरोप के राष्ट्रों को शांति भंग करने वाले आपसी भगडा का परस्पर सहयोग से सुलभाने के लिए मनवाने के अपने आदेश का त्रियात्मक रूप देने में सफल न हो सका परंतु साथ ही इस बात से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि उसी ने सबसे पहले वे मुभाव पेश किये जो कि आगे चलकर लीग ऑफ नेशन्स के कौन्सेल और संयुक्त राष्ट्र संधि के चाटर के आधार बने। कंसलरे की रचनाओं का बड़ी गम्भीरता से अध्ययन करने वाले इतिहास वेत्ताओं के द्वारा ही उसकी योग्यता का अनुमान लगाया जा सकता है। 'कंसलरे की विदेश-नीति नाम की अपनी पुस्तक में ब्रिस्टल ने कंसलरे को इंग्लैंड के इतिहास में महत्त्वपूर्ण विदेश-मंत्री माना है। सीटन-वॉटसन (Seton Watson) ने कंसलरे को इंग्लैंड के इतिहास में हुए विदेश-मंत्रियों में से एक श्रेष्ठ और गम्भीरता को धनाने वाला विदेश मंत्री कहा है। कंसलरे के अपने शब्दों में “शान्ति स्थापित करने के लिए की गई संधि की सफलता के लिए उमका यायपूण और परिमित होना आवश्यक है। आदेश रूप में और त्रियात्मक रूप में आन्तरिक सहयोग की भावना को पदा करन का प्रयत्न किया जाना चाहिए। ग्रेट ब्रिटेन का यूरोप के मामलों में अपना वस्तुव्य पूरा करना चाहिए। ब्रिस्टल के विचार में कंसलरे यह गमक चुरा था कि युद्ध में बचने के लिए शान्ति के लिए तयार होना आवश्यक है।

जार्ज कनिंग (१८२२-२७)—जार्ज कनिंग का जन्म १७७० ई० में हुआ।

यद्यपि उसका जन्म एक छोटे घराने में हुआ था तथा भी ईटन और आक्वफोर्ड में अच्छी शिक्षा प्राप्त कर वह एक ऊँचे पद पर पहुँच गया। वह एक अत्यन्त बुद्धिमान व्यक्ति था। १८०७ ई० से १८०६ तक वह इंग्लैंड का विदेश मंत्री रहा। १८०६ ई० से १८१६ ई० के बीच के समय में वह किसी विशेष ऊँचे पद पर नहीं रहा। परन्तु १८१६ ई० में वह वाइ ऑफ कण्ट्राल का अध्यक्ष बन गया। १८२१ ई० में उसने रानी करालीन के प्रति राजा के दुर्व्यवहार के कारण अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। वह भारत का गवर्नर जनरल बनकर इंग्लैंड से यहाँ आने की तयारी कर ही रहा था कि कसलरे का आकस्मिक मृत्यु हो जाने के कारण उस इंग्लैंड का विदेश मंत्री बना लिया गया। १८२२ ई० से १८२७ तक वह इंग्लैंड का विदेश-मंत्री रहा। वह एक हाज़िरजवाब निपुण वक्ता और वाद विवाद करने में अत्यन्त माग्य व्यक्ति था। वह हाऊस ऑफ कामन्स का नेता था। कसलरे के समान कनिंग भी पिट की मगर का मित्र और निपुण था परन्तु उसके और कसलरे के स्वभाव में बड़ा अंतर था और दाना अपने सावजनिक जीवन में एक दूसरे के प्रतिद्वंद्वी रहे। दानो के दृष्टिकोण से सदा भिन्न भिन्न थे। कसलरे एक गौरी तबियत का व्यक्ति था और गान्ति डग से साक्षात्कार था। वह त्रियात्मक रूप दिये जा सकने वाली योजनाएँ बनाता था। वह अपने देश का अर्थ दशा के साथ मेल मिलाप करवा कर गान्ति तथा महाराज की नीति पर चलने हुए उसके हितों की रक्षा करना चाहता था। परन्तु उसकी नीति की सफलता उसके अपने व्यक्तित्व और यूरोप के राजनीतिज्ञों पर उसके आच्यजनक प्रभाव पर निर्भर थी। कनिंग भी गान्ति का समर्थक था परन्तु उस महाराज की नीति पर चलने हुए गान्ति स्थापित किया जा सकने पर विश्वास नहीं था। उसका विचार था कि इंग्लैंड का यूरोप के अर्थ दशों के साथ तब तक कोई विचार नहीं था ममभौता नहीं करना चाहिए जब तक वह अपनी रक्षा करने के लिए ऐसा करने पर विचार नहीं हो जाए। जब उस अपनी रक्षा के लिए आक्रमण कराने का रास्ता तब उम अर्थ ही और बड़ जाइ शार के साथ यूरोप के अर्थ दशा के साथ आवश्यक ममभौता करने चाहिये। गान्ति काल में उस यूरोप के राजनतिक भंगना में अर्थ ही रहना चाहिए। उसकी नीति कसलरे की नीति से अधिक राष्ट्रियता का पुट लिए हुए थी। अपने पद का ग्रहण करते हुए उसने कहा कि यूरोप में कानून उठाने के लिए मैं चाहूँगा कि इंग्लैंड वहाँ की परिस्थिति का समय-समय पर अध्ययन करता रहे। उसका आशय था कि प्रत्येक देश अपने लिए और परमात्मा के दशा के लिए साब। सीटन वाटसन ने इन वाक्यों का पूरा करने के लिए एक आशय लिखा है कि गान्ति के लिए सबसे पिछला भाग रहे गना (Devil take the hindmost)।

कनिंग कसलरे की अपेक्षा अपने युग के अधिक अनुभूत था। उसीसे ही गान्ति राष्ट्रियता का युग था और कसलरे का अन्तर्राष्ट्रियता की भावना हमें अनुभूत नहीं बनती थी। १८२१ ई० में इंग्लैंड में एक विवादात्मक नवदृष्टान्त का वहाँ नाम में जाने मार अर्थ दशा। इंग्लैंड ने उन राष्ट्रों से क्या लना-पैना है ?

इन दो राज्या से हमें उम समय के इंग्लंड के लागो के यूरोप के प्रति दृष्टिकोण का पना चनता है। इंग्लंड के लागो के भावो को प्रकट करते हुए स्वयं कनिंग ने कहा कि हम ऐसा मोचने की मूर्खता नहीं करनी चाहिए कि हम अकले यूरोप का पुनर्निर्माण कर मनते हैं।

बुडबड ने उचित ही कहा है कि कमलर और कनिंग का उद्देश्य ता एक ही था वत्रल उम उद्देश्य को प्राप्त करन के ढग मिनमिन थे। कनिंग ने उमी नीति का अपनाया जा कि कंसलरे के १८२२ इ० के स्टेट पपर म तिकी हुई थी। विदश मत्री वनन पर उमने उमी स्टेट पेपर का अपना नीति का आधार बनाया चाहे उमने महत्वपूर्ण परिवर्तन कर लिए गए। उसने इन बात का स्वीकार कर लिया कि इंग्लंड और उमके यूरोपियन मित्र राष्ट्रों म अनवन है परन्तु उमने इसे दूर करन का कार्द प्रयत्न न किया। उसने कहा कि परमात्मा का धयवाद है कि अथ काफ्रेनें नहीं हागी। इन प्रकार कंसलर के हाग समर्थित की जा रही राष्ट्रों म सहयोग की भावना का पदा करने की नीति का अन्त हो गया। कनिंग होली एलायन म भाग लेने वाले देगा के साथ मल मित्राप बनाने के हक म न था। इमका कारण यह था कि उमने अपना दग की पुरानी सस्थाएँ और रीति रिवाज बडे पसंद थे। उसे विश्वास था कि अथ राष्ट्र भी इंग्लंड की सस्थाओं के नमून पर प्रथाएँ और मस्थाएँ चला कर लाभ उठा सकते हैं। वह अंग्रेजी सस्थाओं का यूरोप क अथ राष्ट्रों के द्वारा अन्त मस्थाओं के रूप म लेना जाना चाहता था।

स्पेन (Spain)—कनिंग को सबसे पहले स्पेन क साथ निपटना पडा। बेरोना की काफ्रेम म स्पेन मे पुन पुराने राय की स्थापना करने का भार फ्रांस पर छाडा गया। कनिंग ने अथ देशो के आन्तरिक मामलो मे हस्तक्षेप करन की इस नीति का विरोध किया और इस विरोध के कारण ही इंग्लैण्ड ने अपन आपको काफ्रेम से अलग कर लिया। यह अथ देशो के आन्तरिक मामलो मे हस्तक्षेप करने की और रुम आदि पुगानी पद्धति के अनुमान गमित किए जाने वाले प्रतिनियामवादी राष्ट्रों के द्वारा अथ देशो का मुग्रायना किये जाने के सिद्धांत का विरोधी था। इंग्लैण्ड के द्वारा विरोध किए जाने पर भी फर्डिनैण्ड सप्तम को स्पेन का सिद्धान्त वापिस दिलवाने के लिए ड्यूक आफ एंगोलोम को स्पेन भेजा गया। पुन गद्दी प्राप्त करन पर फर्डिनैण्ड ने बदला लेने की नीति अपनाई। कनिंग को फ्रांस क हस्तक्षेप करन की इस नीति पर बडा त्रोध आया। परन्तु वह विवश था क्याकि फ्रांस का विरोध करने का अथ यूरोप के सब राष्ट्रों मे खुला युद्ध छेडना था। उमने केवल शब्दा मे ही इस नीति का विरोध करके सतोप करना पडा। जेफर्डिनैण्ड ने दक्षिणी अमेरिका मे स्पेनिश बस्तियो पर अधिकार करने की मोची उस समय कनिंग न निश्चय कर लिया कि वह उम ऐसा नहीं करने देगा। उमके भाषणा की गली भी बदल कर तेज हो गई। उमने कहा 'मेरा निश्चय था कि यदि फ्रांस स्पेन को ल लेगा तो यह स्पेन बस्तियो से रहित स्पेन होगा। फ्रांस को स्पेन की बस्तियो सहित स्पेन नहीं मिल सकेगा।' उसने दक्षिणी अमेरिका म स्पेन की बस्तियों की स्वतंत्रता को स्वीकार कर लिया।

१८२३ ई० में कनिंग ने अंग्रेजी व्यापार की रक्षा के लिए स्पेन की बस्तियों में कौन्सल (Consul) नियुक्त किये। अंग्रेजी सरकार ने फ्रांस को यह स्पष्ट कर दिया था कि इंग्लैंड स्पेन के अतिरिक्त अन्य किसी शक्ति का स्पेनियन बस्तियों को दुबारा जीतने की इजाजत नहीं देगा। इंग्लैंड की सरकार यह भी जानती थी कि अग्रेज स्पेन इन बस्तियों को नहीं जीत सकता। १ जनवरी, १८२५ ई० का अग्र शक्तियों को सूचना दे दी गई कि इंग्लैंड ने बुएनस एयरज (Buenos Aires) कोलम्बिया और मैक्सिको के राज्या की सरकारों की सत्ता स्वीकार कर ली है। अग्र राष्ट्रों ने इंग्लैंड के इस कार्य के विरुद्ध आवाज उठाई परन्तु क्रियात्मक रूप में वह कुछ भी नहीं कर सकते थे। यूरोप के बड़े बड़े राष्ट्रों की नाराजगी के बावजूद भी कनिंग अपनी इस नीति पर चलता रहा।

अमेरिका के रूप में कनिंग को एक बड़ा शक्तिशाली मित्र राष्ट्र प्राप्त हुआ। दिसम्बर, १८२३ ई० में प्रेसिडेण्ट मुनरो ने प्रसिद्ध मुनरो सिद्धान्त (Monroe Doctrine) की घोषणा की। उसने घोषित किया कि यूरोप के बड़े-बड़े राष्ट्रों के द्वारा स्पेनियन अमेरिकन राज्यों को (Spanish American States), जो अपनी स्वतंत्रता घोषित कर चुके हैं, दबाने या इनके भाग्य को निर्दिष्ट करने के उद्देश्य से किया जान वाला किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप अमेरिका की शान्ति और सुरक्षा के लिए खतरनाक होगा और अमेरिका के प्रति शत्रुता की भावना का प्रदर्शन ममत्ता जाएगा। कनिंग ने १८२४ ई० में इस प्रकार लिखा 'मुझे इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि प्रेसिडेण्ट की दक्षिणी अमेरिका के राज्यों के प्रति ऐसी घोषणा करने में हमारी भावनाओं की जानकारी द्वारा प्रोत्साहन मिला होगा। हमारे यकी (Yankee) सहयोगियों की इस महान् उदारता का ऐकसन्ना-शेषन के कानूनों के धरि अत्याचारा पर जो प्रभाव पड़ा है उससे हमें ठीक वही सतुलन प्राप्त हो गया है जो मैं चाहता था।' अगले वर्ष उमने फिर लिखा 'काम हो चुका है। यह एक ऐसा काम है जो इस सभार में इतना भारी परिवर्तन लायेगा जितना परिवर्तन अब स्वतंत्र होने वाले वाण्टीरिण्ट की खोज (Discovery) होने पर हुआ था। मित्र राष्ट्र कुन्गे परन्तु अब वह इस दिना में कोई गम्भीर पग उठाने का साहस नहीं करेंगे। फ्रांस भूल जाएगा परन्तु वह दक्षिणी अमेरिका में शीघ्र प्रति शीघ्र हमारा अनुकरण करने की दृष्टि में भूलगा।' इंग्लैंड और अमेरिका का यह पग निगमकारी पग था। १८३० ई० तक दक्षिणी अमेरिका में स्पेन का साम्राज्य समाप्त हो चुका था और पारिणामस्वरूप मैक्सिको, गाटेमाला, कोलम्बिया, पीरू चार्ल्स, बोलीविया, पैरागुए, कियो डी ला प्लाटा और बुएनस एयरज नाम के स्वतंत्र गणराज्य स्थापित हुए।

पुतगाल (Portugal)—पुतगाल के मामले में कनिंग का भारी कदम उठाना पड़ा। उसने यह स्पष्ट कर दिया कि इंग्लैंड किसी भी देश में पुतगाल में किटुश सामनपद्धति के विचारों (Reactionary Forces) का प्रचार नहीं सहन करेगा। उसने फ्रांस से जबरदस्ती यह घोषणा करवा दी कि वह स्पेन में निरकुण राजतंत्र के हक में किये जा रहे प्रतिक्रियावादी आन्दोलन को दी जाने वाली सहायता को

पुनगाल तक नहीं फनाएगा। उसने पुनगाल के राजा को ब्राजील की स्वतंत्रता मानने के लिए भा मनवा लिया। १८२६ ई० में पुनगाल के राजा की मृत्यु हो गई। ब्राजील पर अधिकार छोड़ने की इच्छा न हान के कारण डोन पेद्रो (Don Pedro) ने पुनगाल के लोगो के सम्मुख देग के लिए एक सविधान (Constitution) उपस्थित किया। स्पेन के राजा फर्डिनण्ड मप्तम ने तत्कालीन शासन व्यवस्था को पलटने के लिए पुनगाल में पड़यंत्र रचने आरम्भ किया। पुनगाल की सरकार ने इंग्लैंड में महायत्ना के लिये अपील की। सहायता के लिए की गई अपील के जवाब में इंग्लैंड ही चार दिनों के अंदर अंदर अंग्रेजी सैनिक दगते पुनगाल पहुँच गये। इस प्रकार अंग्रेजी गाल की सहायता में पुनगाल के सविधान की रक्षा की गई। पार्लियामण्ट ने अपन द्वारा उठाये गये इस कदम का वणन करते समय कनिंगन गानदार भाषण किया जिसमें उमन घोषणा की कि हम पुनगाल पर गामन करने के लिए या उमस कुछ विधि नहीं मनवान के लिये या उमके सम्मुख सविधान रखने के लिए नहीं अपितु एक मित्र राष्ट्र की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए जा रहे हैं। हम लिज्जत की ऊरी चलायों पर इंग्लैंड की धाक जमाने जा रहे हैं और जहाँ कहीं भी यह जमा ली जाएगी वहाँ विदगी गामन अमभव हो जाएगा।

ग्रीक का स्वतंत्रता-युद्ध (Greek War of Independence)—ग्रीक के स्वतंत्रता युद्ध में भी कनिंगन एक भारी कदम उठाया। वह तुर्की के द्वारा ग्रीक के निवासियों पर अत्याचार अधिक दूर तक सहने के लिए तयार नहीं था। इस मामले में हस्तक्षेप करने से कवन इंग्लैंड का एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करने में ही नहीं अपितु होली एनायस को तोड़ने में सफलता मिली। लेवण्ट (Levant) के साथ अंग्रेजी व्यापार का आगमन में वचन के लिए उसने १८२३ ई० में ग्रीस को युद्ध की दृष्टि से एक स्वातंत्र्य राष्ट्र मान लिया। १८२७ ई० में उतने हम और फ्रान्स के साथ लन्दन का संधि (Treaty of London) की। इस संधि का उद्देश्य ग्रीस का स्वतंत्रता का रक्षा करना था। लन्दन की यह संधि अत्यंत महत्वपूर्ण थी। इमन बगल भारी काय कर लिया। इमने आस्ट्रिया का अथ राष्ट्रों में अलग कर दिया। अब वह अक्षत रह गया। साथ-हा-साथ उमने होली एनायस में भी कृत्त हान था। हम का इंग्लैंड के साथ मित्राकर कनिंगन रुस के पूर्वो भंडारिरेनियन में अपना माझा कर बनाने की महत्वाकांक्षा का समर्थन कर दिया। एक नए स्वतंत्र राष्ट्र का स्थापना भी अंग्रेजी व्यापार के लिए लाभकारी सिद्ध होनी निश्चित थी। इसके बाद मासन में अपना जा रही नीति में कनिंगन को फ्रान्स और इंग्लैंड में ग्रीक का समर्थन करने वान आगमनता में भी महायत्ना मिल रही थी। यह सब है कि उमके उत्तराधिकारी कनिंगन ने तुर्की के साथ मिलकर और उमके साथ दाही दर के लिए संधि करके कनिंगन के विरुद्ध बराण का नाट करने का यत्न किया। परन्तु फिर भी इस बात में अन्तार नहीं किया जा सकता कि लन्दन की नए संधि में ग्रीक की स्वतंत्रता सुरक्षित है। उमकी मृत्यु के कुछ ही समय पश्चात् अक्टूबर १८२७ ई० में रुस फ्रान्स और इंग्लैंड के सामूहिक जव-जवा न नगरिना की सारी

(Bay of Navarino) में तुर्की और मिस्र के जहाजी बेड़ा का नष्ट कर दिया। यद्यपि इन सब घटनाओं से मार्ग लाभ हमने ही प्राप्त किया ता भी हम बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि कैनिंग की ग्रीक के प्रति अपनाई गई नीति सफल सिद्ध हुई।

विदेश मंत्री का पद ग्रहण करने के बाद पांच वर्षों के अदभुत अदर ही कैनिंग ने इंग्लैंड का उस भाग पर ला कर खड़ा कर दिया जिस पर वह अगले पचास वर्षों तक चलता रहा। उसने इंग्लैंड के हितों की रक्षा की और विदेश में उदार और वैधानिक आन्दोलनों को प्रोत्साहन दिया। उसने यूरोप और समुद्र पार अग दशा में नागरिक तथा राष्ट्रीय स्वतंत्रता के विकास में वैधानिक शासन-पद्धति के विरोधी राष्ट्रों के हस्तक्षेप का रोक। बड़े-बड़े मामलों का अन्तराष्ट्रीय सहयोग से सुलझाने की प्रथा का अन्त हो गया। कनिंग को इस बात का गव था कि उमने हानी एलायंस को छिन भिन्न कर दिया है। उसके बताए हुए भाग पर चरता हुआ इंग्लैंड फिर से मनमानी करने की स्वतंत्रता का पान में ममय हो गया। अब वह यूरोप के राजनैतिक भगवा में जिस समय चाह, जहाँ पर जिस किसी ढंग में हस्तक्षेप कर सकता था। अब उसे यूरोप के देशों के हाथ में उनके अपने लाभ के लिए अपने कठपुतली बनाए जान का भय नहीं रहा था। अपनी इस नीति में कनिंग का इंग्लैंड की जनता का सहयोग प्राप्त था। वह विदेश-नीति में राष्ट्रीय एकता के महत्त्व का समझता था। उसकी इच्छा थी कि इंग्लैंड के मार नागरिक उसके साथ हों जिसे विदेशी सरकारों का पता हो कि वह मारे इंग्लैंड की शर ने बाता है और इंग्लैंड की मारों गविन, सब मायन उसके लिए खुले पडे हैं और वह उन सब का प्रयोग कर सकता है। उसके भाषणों और सत्त्वा ने जनता का विदेश-नीति निश्चित करने के सम्बन्ध में अपनी सम्मति देने के साधन प्रदान दिये। टम्परल के शरणों में हम कह सकते हैं कि कैनिंग का विचार था कि यह आवश्यक है कि भविष्य में विदेशी-नीति लाकप्रिय और सरलता से समझ में आ सकन वाली हो। परन्तु कैनिंग ने जनता को उस विदेश-नीति निश्चित करवाने की ग्ट न दी। उसने विदेश-नीति का निर-थक बनाए बिना उसे लाकप्रिय बनाया। वह जानता के सामन केवल उतनी ही बात पेश करना जितनी कि उसका समयन पाने के लिए आवश्यक होनी थी क्योंकि जनतंत्र की शर उसका कोई विरोध नुवाच नहीं था। इतना होने पर भी निरकुश राज्यतंत्र शासन-पद्धति द्वारा शासित किय जा रहे राष्ट्रों में उसकी इस नीति को शक्तिशाली नीति का नाम दिया गया।

ससिल (Cecil) के शरणों में कनिंग के राजनैतिक विचार सम्मति का एक अच्छी प्रकार से इकट्ठा किया गया संग्रह था। इसका कुछ गिने-चुने वाक्यों में बणन किया जा सकता है। उनके सब विचारों के मून में यह विचार था कि राजनीति के पान की इवाई राष्ट्र है। यहाँ तक उस सब कुछ स्पष्ट था। इसके आगे जाने का उमने यत्न ही नहीं किया। हम गेवने हैं कि उसने कैसलरे के अन्तराष्ट्रीय सहयोग के विचारों को अपनाया। हम उस केवल होली एलायंस के विरुद्ध ही नहीं

अपितु कन्स्ट्रॉफ यूरोप, राष्ट्रों को कांग्रेस के अधिवर्तनों और कांग्रेसों का विरोध करते देखते हैं। उसने प्रत्येक राष्ट्र को अपने कामों की ओर ध्यान देने और अन्य राष्ट्रों को ईश्वर के महारे छोड़ने के लिए कहा। उसने अपने भण्डो में शक्ति के सन्तुलन (Balance of Power) के विचार को बड़ी महत्ता दी। उसने स्वार्थों, गुटों और सिद्धांतों के परस्पर संघर्ष को एक स्वाभाविक वस्तु माना और अपनी विदेश नीति का इसी विश्वास पर आधारित किया। कस्लरे ने एक बार कहा 'कि कुछ वय पहले मैंने कहा था कि केवल अन्य देशों के पारस्परिक भण्डों में ही नहीं अपितु विरोधी सिद्धान्तों के संघर्ष में भी यह देश उत्तम और निष्पक्ष रहेगा और इस उदासीनता की नीति पर चलकर ही यह शक्ति के उस सन्तुलन को जिसे मैं मानवता के अस्तित्व और उसकी भलाई के लिए अनिवार्य समझता हूँ रक्षा कर सकेगा। कनिंग भी यह मानता था कि हमारे लिये यह अच्छा है और इससे हमें धाराम भी रहेगा कि हमारे पड़ोसी राष्ट्रों के रीति रिवाज और प्रचरि। व्यवस्थाएँ ऐसी हो जिनका हमारी व्यवस्थाओं से मुकाबला न किया जा सके। कनिंग भी नतिकता का विरोधी नहीं था। उनका संधि में और संधि की शर्तों को पूरा करने में बड़ा विश्वास था। उसे शान्ति और न्याय पसंद था। समाज के अदृश्य आधारे में उसका कोई विशेष विश्वास नहीं था। अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था के आधारभूत सिद्धांत समान हन से सब की भलाई करने के आत्म का क्रियारमक रूप देने के लिए आवश्यक ऐसा करने की सामूहिक रूप से सब की इच्छा की भी उसे विशेष परवाह नहीं थी।

कनिंग की सहानुभूति भी समाज के उमी वय के साथ थी जो यंग देश की रीढ़ की हड्डी का काम देता था। उसमें क्रियात्मक रूप से काम करने की योग्यता, आत्मविश्वास वास्तविक परिस्थितियों का भाँपने की योग्यता और भौतिकवादी दृष्टिकोण था। इन्हीं विशेषताओं की महामता से वह विकटारिया के शासनकाल के मध्य भाग में इंग्लैंड को राजनतिक और व्यापारिक दृष्टि से इतना उन्नत कर सका। उसमें अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में कार्य करने के लिये आवश्यक नम्रता यूरोप को संपर्क करने की इच्छा और शान्तिप्रिय स्वभाव की कमी थी। प्रतिस्पर्धा करने वाले लड़ाकू तथा उद्दण्ड कनिंग ने अमेरिकी विदेश-नीति के लिए मार्ग विस्तृत कर दिया जिस पर चाही हा दर बाजार पारस्परिक न गव से भाव ऊँचा करके चलना था। लाह एक्ट के अर्थों में इंग्लैंड का कार्य भी विदेश-मंत्री कनिंग के मुवाबने का नहीं था। परन्तु दूसरा धारण भी व्यक्ति है जो उसकी रचना अधिन प्रणाम नहीं करते परन्तु व भी उसके गुण और भिन्न भिन्न क्षेत्रों में पाई गई सफलताओं की मराहना करते हैं।

Suggested Readings

Webster	Castlereagh
Marnot	Castlereagh
Stewart	Memoirs of Castlereagh
Temp rly	Canning
Hil F H	George Canning

यूरोप का संघ (१८१५-२२)

(Congress of Europe, 1815-22)

१७९१ में आस्ट्रिया के चान्सेलर कानिडज ने यूरोप-संघ के प्रस्ताव को प्रस्तुत किया और इस प्रस्ताव की पूर्ति मार्च, १८१४ की व्हीमोण्ट की संधि द्वारा हुई। यह संधि ब्रिटेन, रूस, प्रुशिया और आस्ट्रिया में हुई। इन्हीं चार शक्तियों ने विभिन्न सम्मेलन में 'यूरोप की राजनैतिक व्यवस्था को पुनर्जीवित' करने का प्रयत्न किया था। विभिन्न-सम्मेलन में प्रतिप्रियागौन तत्वों की विजय हुई और यथासम्भव क्रांति से पहले की स्थिति को स्थापना हुई। किन्तु क्रांति का अतना अधिन भय था कि यूरोप की शक्तियाँ उस समय तक मनुष्य नहीं हो सकती थी जब तक विभिन्न-व्यवस्था को स्थायी बनाने के माध्यम उनके पास झुटके न हो जाते। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए ब्रिटेन, आस्ट्रिया, प्रुशिया और रूस ने नवम्बर १८१५ में एक चतुर्मुखी संधि की जिसमें फ्रांस के साथ किये गये प्रतिज्ञा-पत्रों की शर्तों की रक्षा हो तथा समार के हित के लिए इन चार शक्तियों के पारस्परिक सम्बन्ध दृढ़ बने रहें। इन शक्तियों ने यह भी निश्चय किया कि इन देशों के सम्राट अथवा इनके मंत्री समय-समय पर विचार विमर्श के लिए मिलें। इनकी बैठकों में परस्पर हित की प्रमुख समस्याएँ तथा राष्ट्रों और सारे यूरोप में शान्ति और उन्नति के लिए सर्वश्रेष्ठ तरकों पर विचार होता था। इस प्रकार यूरोप-संघ की स्थापना हुई। सम्मेलनों द्वारा कृष्णीति की यह परिपाटी उन्नीसवीं शताब्दी का सबसे अनास्था प्रयोग था। इस चतुर्मुखी संधि के बाद के काल को 'सम्मेलन का काल' (Era of Congresses) कहा जाता है। यूरोप संघ के सदस्य बहुत बार भिन्न भिन्न स्थानों पर मिलते रहे और मामूहिक रूप से विचारणीय समस्याओं पर विचार करते रहे। इन सम्मेलनों में मेटरनिक का व्यक्तित्व छाया रहता। इसके नेतृत्व और पक्ष निर्देशन द्वारा चतुर्मुखी संधि ने इन शक्तियों की तानाशाही स्थापित हुई। किन्तु एकमात्र चेपल में १८१८ में, १८२० में ट्रिपोली में १८२१ में लॉयबक में तथा १८२२ में वेरोना में, चार सम्मेलनों के पदवात् १८२३ में यह संघ समाप्त हो गया।

एक्स-ला-चेपल का सम्मेलन (Congress of Aix La Chapelle) (१८१८) —

प्रथम सम्मेलन १८१८ में एक्स-ला-चेपल नामक स्थान पर हुआ, जहाँ पर सभी नेपोलियन ने यूरोप के हित के लिए अपनी योजना रखी थी। इस सम्मेलन के विषय

म मटरनि ने कहा था 'मैं दृग्ते गुत्तर छाग-गा सम्मेलन कभी नहीं आया।' यह सम्मेलन मगटिन राष्ट्र द्वारा यूरोप भर में आया पर अपना नियंत्रण अपने का उच्चायक प्रयाग था। यह सम्मेलन यूरोप की सर्वोच्च शक्ति माना गया था। इस प्रकार का मामला की अपनी गुनगी पड़नी थी।

इस सम्मेलन के सम्मुख सबसे बड़ी समस्या प्राय की थी किन्तु गीभाग्य म इस प्रश्न पर समझौता हो गया। क्योंकि प्राय युद्ध-शक्ति की पूर्ति कर चुका था। यह विषय हुआ कि प्राय देश मगटिन राष्ट्र की अधिकार अपने दाता गैनाया को हटा दिया जाय और प्राय का यूरोप-मध्य में सत्त्वना प्रश्न की जाय। इस प्रकार यह चतुर्मुखी संधि पंचमुखी संधि बन गई। प्राय का पंचमुखी सम्मेलन में सम्मिलित करने की शर्तों में विषय में एक धार म्य तथा दूसरी धार प्रिन्स और आस्ट्रिया के विचारों में मतभेद था। रूस का प्रस्ताव था कि पवित्र गठबंधन के सिद्धांत को माना जाय किन्तु इंग्लैंड और आस्ट्रिया का मत था कि प्राय का चारों देशों में प्रतिज्ञा-संधि करनी चाहिए और अन्त में यही हुआ। पंचमुखी संधि को पृथक रूप से पुन दोहराया गया जिसमें प्राय की धार से कोई गड़बड़ न हो। जॉर्ज एलेक्जेंडर को प्रमत्त करने की इच्छा से इस गठबंधन के उद्देश्य की बड़े मुत्तर शक्ति में घोषणा की गई। इस घोषणा में कहा गया कि यह संधि जनता के अधिकारों का रक्षित और सलित कलाओं की सुरक्षा राष्ट्र की उन्नति की प्रगति पद और सदाचार के नियमों को प्रोत्साहन देने तथा शांति और सहयोग का आदर्श स्थापित करने के उद्देश्य से की गई है।

इस सम्मेलन ने स्वीडन के राजा से नार्वे और डेन्मार्क के साथ संधि शर्तों का उत्तर देने करने के विषय में सफाई मांगी। मोनाका के शासन से शासन प्रणाली को सुधारने के लिए कहा गया। हेसे (Hesse) के निर्वाचित प्रमुख ने याचना की कि उसे राजा की उपाधि धारण करने की अनुमति दी जाय किन्तु उसकी याचिका अस्वीकार कर दी गई। सम्मेलन ने बार्डिन की डची (Duchy of Baden) के विवादग्रस्त उत्तराधिकारी के प्रश्न पर विचार किया। आस्ट्रिया और रूस में यहूदी नागरिकों की स्थिति पर भी विचार किया गया।

एकमन्ता चेपल की उपरोक्त सफलताओं के होने पर भी सदस्य राष्ट्रों में मतभेद हो गये और ये मतभेद कालांतर में बढ़ते ही गये। ये मतभेद निजी स्वायत्त और परस्पर ईर्ष्या के कारण हुए।

१. अमेरिका में स्पेन के द्विदोही उपनिवेशों के प्रश्न के विषय में वहाँ प्राय मध्य ही इंग्लैंड और इन देशों में बहुत-सा व्यापार हो रहा था किन्तु इन उपनिवेशों में लगा रखा था इंग्लैंड का विचार कि भी प्रस्ताव इन उपनिवेशों को स्पेन को वापिस और स्पेन करने का हो तब एक मानन के तब ब्रिटेन के का आश्वासन नहीं

दासो के व्यापार को रोक्न के विषय म ब्रिटन ने यह सुझा दिया कि सदस्य राष्ट्रों का एक-दूसर क जहाजों की तलाशी ली का अधिकार हो। इस सुझाव का इसलिए नहीं माना गया क्योंकि ब्रिटन क बड़े की शक्ति से सब राष्ट्र ईंध्या करते थे। कोई भी देश अपने व्यापार में ब्रिटन का हस्तक्षेप सहन करने क लिए प्रस्तुत नहीं था। परिणामत दासता के विरुद्ध कोई भी प्रभावशाली कदम नहीं उठाया जा सका।

बबर समुद्री लुटेरों की गतिविधि पर रोक लगान के लिए रूस न सुझाव दिया कि विभिन्न शक्तियों का प्रतिनिधित्व करने वाला एक अंतर्राष्ट्रीय बड़ा अधमहासार में रखा जाय। ब्रिटन न इस सुझाव को नहीं माना। वह अधमहा सार म रूस के बड़े की स्थिति नहीं चाहता था। क्योंकि बबर लुटेर यूनियन जैक का सम्मान करते थे, इसलिए उनके हित सुरक्षित थे। परिणामत बबर समुद्री लुटेरों का आतक बना रहा।

कहा जाना है कि ऐक्स-ला चैपल का वास्तविक महत्व बड़ा गहरा था। पहली बार ब्रिटन को यूरोप-सघ के सदस्यों की इच्छा का पान हुआ। इस अवसर पर जार एलेक्जेंडर ने प्रस्ताव रखा कि उपस्थित शक्तियाँ को एक विनप्ति पर हस्ताक्षर करन चाहिएँ कि वे विभिन्न राष्ट्रों की वर्तमान सीमाओं तथा राजाओं की सर्वाधिकार सम्पन्नता का मायता अभ्युण्ण रखेंगे। क्योंकि यह प्रस्ताव मैटर्निक क विचारों से मिलता था अत आस्ट्रिया ने इसे मान लिया। प्रशिया ने भी इसका अनु करण किया। यह सत्य है कि यदि मावभौमिक रूप से तत्कालीन स्थिति का मायता प्रदान कर दी जाती तो यूरोप में राष्ट्रीयता, प्रगतिवाद और विधानवाद का क्रमश समाप्त कर दिया जाता। यह विनप्ति यूरोप की प्रगतिशील शक्तियों के विरुद्ध एक धार्मिक युद्ध घोषणा हाती और विद्वध म उनके प्रभुत्व के लिए घातक सिद्ध होती। "टर्ली और जमनी का सगठन नहीं हो पाता। बेल्जियम को हालैंड से अलग करना असम्भव हाता। नार्वे और स्वीडन इकट्ठे बने रहते। ग्रीस रूमानिया बल्गरिया और सर्बिया का स्वतंत्रता न मिलती। पोलैंड अनन्त काल तक विदेशी दासता में न रहता। यूरोप म स्वतंत्रता और सर्वाधिकार क मूल्य पर शांति की स्थापना हाती।

इस योजना को असफल करन का श्रेय ब्रिटन को है जिसन रूस के इस प्रस्ताव का घोर विरोध किया। प्रश्न यह था कि क्या राष्ट्रों को किसी देश म केवल वर्तमान व्यवस्था क परिवर्तित हो जाने के कारण ही उसके आंतरिक मामला में हस्तक्षेप करन का अधिकार है अथवा नहीं? यूरोप-सघ का दिखावटी रूप स कुछ भी उद्देश्य रहा हो, इसका वास्तविक उद्देश्य यूरोप के दशा के, आंतरिक और विदेशी सब मामलों म हस्तक्षेप करना था। ब्रिटन इस नीति का विरोधी था और अन्य राष्ट्रों का योजनाओं क विरुद्ध काय किया करता था। ब्रिटन किसी भी प्रकार क अंतर्राष्ट्रीय नियंत्रण को सहन करने के पक्ष में नहीं था। किंतु किसी भी देश म प्रापत्तिकालीन स्थिति म हस्तक्षेप करने के प्रदन पर विचार करन का तयार भ्रदस्य था। ब्रिटन न सगठित राष्ट्रों की सम्मिलित सेना की वर्तमान व्यवस्था को बनाये

रखने के प्रस्ताव को भी नहीं माना। बाए एन से उगना ध्येय बैगा ही प्रतीत क्यों न हो, उसका वारसिक ध्येय यूरोप के राजाओं के घातक और बाह्य मामला नियंत्रण रखना था। कंसलरे के शब्दों में "एस मगन को सत्तार के सागनो का सगठन बनाने का उद्देश्य अभी नहीं था। ध्येय देना व घातक मामलों में हस्तक्षेप करना का उद्देश्य भी नहीं था। इसका उद्देश्य यूरोप के प्रत्येक कोने में क्रान्तिकारी भावोंमनो का, बिना उनके गुणावगुणों को जाने दमन करना भी नहीं था।

विंसेगर का विचार है कि यद्यपि ऐकम-ला चेपल की कांग्रेस में बाह्य मयुक्ता दील पढी किन्तु विभिन्न प्रेरणाओं की प्रतिकूलता भी प्रगट हो रही थी। प्राम के शक्तियों के सध में मिल जान के बाद राजनीतिक सधय अन्तिम रूप से समाप्त हुआ और इसी के साथ वह उद्देश्य भी जाता रहा जो महाद्वीप के विषयों में ब्रिटिश हस्तक्षेप को साम्यन्तरिक रूप से स्वीकरणीय कर सकता। वू कि ब्रिटिश लोगो ने इसकी प्रतिज्ञाओं को अधिकता के साथ फाँस लिया एक गये शक की बात शुरू हो गई। ब्रिटेन की एकातवादी प्रवृत्तियाँ जितनी अधिक दृढ़ हुई उतना ही आस्ट्रिया की भौतिक हीनताओं से प्रभावित मटरनिक की जार के रोकने के सबसे अधिक प्रभावशाली यत्र के प्रयोग करने पर विश्वास हो गया। उसने जार के नतिक उल्हाह की प्रशंसा की किन्तु उसने जार की महानता की जिननी अधिक चापलूसी की, उतना ही कंसलर को किसी मयुक्त कायवाही में भाग लेना कठिन हो गया। ज्यो ही एक्स-ला चेपल की कांग्रेस का अन्त हुआ दोनों ही उसे पुचला बनाने के इच्छुक हो गए—मटरनिक क्योंकि उसकी रूस के प्रति सोदेवाजी की स्थिति ब्रिटिश विकल्प के निराकरण पर निर्भर थी और कंसलरे अपने यूरोपीय दृष्टिकोण के कारण जिसके विषय में उसे यह शक भी आशा थी कि वह उस महाद्वीप की मूढ़ता और उसके लिए उसके मित्रों की सुरक्षा की तुच्छ खोज के विरुद्ध भी चला सकेगा। फिर भी उसने यह जान लिया होगा कि स्वप्नों का समय पूरा हो रहा था क्योंकि इस समय मटरनिक एक ऐसे काम में व्यस्त था जिसने इस बारे में बहुत थोड़ा सदेह रखा कि अगला युद्ध उस मदान में हागा जहाँ कंसलरे चाहे उसकी व्यक्तिगत सहानुभूतियाँ कुछ भी हो उसका पीछा नहीं कर सकता। उसने प्रशा के राजा के सामने दो स्मरणपत्र रखे जिनमें उसने उसे अपने राज्य के प्रशासकीय ढाँचे के विषय में राय दी व अपनी वह अयोग्यता प्रगट की कि उस प्रतिज्ञा को पूरा नहीं किया जा सकता जो उसने १८१३ के उत्तेजनाशील दिनों में की थी कि वह अपनी प्रजा को एक मविधान की स्वीकृति दिलायेगा। मटरनिक के प्रथम प्रयोजन की अपेक्षा उसके प्रयोग किए हुए निश्चित तक अधिक रोचक नहीं हैं जिन्होंने उसकी यह नियत स्पष्ट की कि वह यूरोप के रूढ़िवादी अन्त करण के अनुकूल काय करना चाहता है। (A World Restored pp 230 31)

टोप्पू सम्मेलन (Congress of Troppau) (१८२०)—द्वितीय सम्मेलन १८२० में टोप्पू के स्थान पर हुआ। नेपल्स स्पेन और पुतगाल में विद्रोह हुए और जनता ने अपने राजाओं को उदार सविधान देने का विवश कर दिया। शक्तिशाली

राष्ट्र। न विद्रोहों की निंदा की किन्तु इस परिस्थिति का निपटाने के लिए क्या किया जाय, इस विषय में मत भेद था। रूस ने स्पेन के राजा का विद्रोह का दमन करने के लिए सेना दान का कहा। किन्तु मेटर्निक न उसे राख दिया क्योंकि फ्रान्सि के प्रति घणा हान के साथ उसे रूस की यश प्राप्ति का डर भी था। नपल्स अथ मारमो से अधिक महत्वपूर्ण समझा गया परिणामतः इस फ्रान्सि पर ही टोपू म आय हुए कूटनीतिज्ञों का ध्यान लगा रहा। सब ने यह माना कि इटली में फ्रांसिस्टिया का स्वाथ अधिक है इसलिए उस नपल्स की फ्रान्सि का दमन करने की अनुमति दे दी जाय। कसलरे के विचार से फ्रांसिस्टिया नेपल्स में दो कारणों से हस्तक्षेप कर सकता था। इस फ्रान्सि म साम्राज्य और विनीशिया की सुरक्षा का भय था और य दोनों ही फ्रान्सिस्टिया के साम्राज्य में थे। यही अवस्था परमा, मोडिना और टुस्कन की थी जहाँ हैब्सबुर्ग का वं सदस्य शासन कर रहे थे। पुनर्दत्त, नेपल्स और फ्रांसिस्टिया के राजाओं में एक संधि हुई थी जिसके कारण फ्रांसिस्टिया नेपल्स की सहायता के लिए वचनबद्ध था।

मेटर्निक केवल फ्रांसिस्टिया और इटली के अन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने के अधिकार से ही सन्तुष्ट नहीं था, कानूनी आधार के अतिरिक्त वह हस्तक्षेप के लिए 'यय' के आधार की आवश्यकता चाहता था। ब्रिटेन का विदेश मंत्री कसलरे इसके लिए तैयार नहीं था। उसकी धारणा थी कि कोई भी देश किसी अन्य देश के आंतरिक मामलों से केवल किसी संधि के आधार पर ही हस्तक्षेप कर सकता है। पुनर्दत्त, नेपल्स का विद्रोह ब्रिटेन के क्षेत्र के बाहर था इसलिए ब्रिटेन द्वारा हस्तक्षेप करने में कोई 'यययुक्ति' नहीं थी। कसलरे यह मानने के लिए तैयार नहीं था कि जनता द्वारा किया गए सार विद्रोह या आन्दोलन यूरोप के सवसाधारण कानून के विपरीत हैं।

मेटर्निक का रूस और प्रणिया न समयन किया। टोपू के सम्मेलन में जार एलेग्जेंडर न स्वयं की मेटर्निक का अनुयायी बताया। मेटर्निक पहले रूस की बातों से सदैव भय खाता था, क्योंकि यूरोप भर में रूस के गुप्तचर फले हुए फ्रान्सि-कारी आन्दोलनों को प्रोत्साहन दिया करते थे। जार के विचार-परिवर्तन से मेटर्निक का बड़ी सन्तुष्टि मिली। एलेग्जेंडर ने यह परिवर्तन कोटज्ब्यु की हल्का तगा पिट्रोप्रेड में सही अग्ररक्षका के विद्रोह के कारण हुआ। जार एलेग्जेंडर ने मेटर्निक से बातचीत करत हुए कहा "राजकुमार! अब हम एक हैं और इसका श्रेय भी तुम्हें ही है। मुझे समय नष्ट करने से घणा है तथा जो हो चुका उसे संभालना चाहिए। मैं यहाँ बिना किसी निश्चय अथवा योजना के आया हूँ किन्तु मैं तुम्हें अपरिवर्तनीय और दृढ़ आदवासन दे सकता हूँ। मैं यह बात तुम्हारे साम्राट पर छाडता हूँ कि वह इस जिस प्रकार चाह प्रयाग में लाये। तुम कहो कि क्या चाहत हो? अथवा मुझे जो कुछ करने का कहोगे मैं अवश्य पूरा करूँगा।' परिणाम यह हुआ कि पंचमुखी-समूह दो गुटा में बँट गया एक और रूस, फ्रान्सिस्टिया और प्रणिया की प्रतिनिध्यावादी सरकारें थीं और दूसरी और ब्रिटेन और फ्रांस थे।

दिया। ब्रिटेन कायदगी क रग रग का मन्त न कर सका और इग सगठन म प्रलग हा गया। सम्मन्तन-युग ब्रिटेन क प्रनग हा। हा समाप्त हा गया था। ब्रिटिश सर वार का रग उग गुप्त पन म स्पष्ट गी गाता है जा कनिग न १८२३ म विराना स्थित प्रपन राजदून का िगा— इगलण्ड िगी भी प्रकार स स्वतंत्र राष्ठा के घातरिष मामला म हस्तगत करन प्रथवा हस्तागत म सहायता दी क लिए बाध्य नहा है। फास म मन्त लेग करन क िग जा िगिग रूप म सगठन हुषा बट एन इग प्रकार का िगिष्ट प्रगवाद है कि उमस नियम प्रमाणित हा जाता है। नियम स मरा प्रागप ता गाति-स्थापता क गमय क्षत्रीय अधिनार की निर्णित सामाघ्रा और राष्ठी के पारस्परिक सम्बन्धा की स्थिति स ता है किन्तु सीमाघ्रा का स्थिति स नही। (कवल उपरोक्त प्रपवा क छाड कर) इग सगठन म विचार विमग स हम क्या प्राप्त हुषा ? हमन लायबल म विराध किया विराना म भी िकायत की। हमारे विरोध का र्ही वागुड समभा गया हमारी िकायने वायु म विलीन हा गइ। हमारा प्रभाव यदि इस विदगा म बनाय रगना है ता हमार दग का निजी गन्ति के स्रोत के आधार पर ही रखा जा सकता है। इस गति क सात हमारी सरकार और जनता की पारस्परिक सहानुभूति जनता की भावनाघो और जनता की धनुमति म हैं। सम्राट और हाउम आफ कामस के बीच परस्पर के विश्वास और सहयोग पर भी यह आधारित है।

स्वेच्छाचारी शासन और सविधानवा साध-साध नही चल सकत। इसम क्या आश्चय है कि इगलड अपनी ससगीय प्रणाली के साथ यूरोप क प्रथ स्वच्छा चारी शासनो के साथ सहयोग नही कर पाया। यूरोपीय गठबन्धन स्वेच्छाचारी शासनो की रक्षा क लिए प्रजातन्त्रवाद और राष्ट्रायता के साथ प्रकारा के दमन क लिए एक पडयन्त्रकारी गुट के रूप म बदल गया।

आरम्भ स ही शक्तिता म परस्पर ईर्ष्या था। एकसन्ता चेपल के सम्मेलन म शक्तिता दासो के व्यापार और बबर समुगी सुटेरा क प्रशन पर असहमत थी। १८२० म हस्तक्षेप क प्रशन पर ये असहमत हो गइ। शक्तियो म आन्तरिक सह योग नही था। घाडे समय के लिए कवल दिखावटी सहयोग रहा। इस प्रकार की परिस्थिति अधिक समय तक नही चल सकती थी और यह परिस्थिति फास के स्वन म हस्तक्षेप स और भी जटिल हा गई।

यह भी कहा जाता है कि यूरोप का गठबन्धन नपोलियन के मुद्धो की उपज था जिसका लक्ष्य सामूहिक गत्रु फास क विषुद्ध सगठित होना था। किन्तु जब फास का खतरा समाप्त हुषा तो उसके साथ सगठित राष्ठा की एकता भी समाप्त हा गई। प्रत्येक राष्ठा पृथक रूप स अपनी कूटनीति चलाना चाहता था।

थामसन के मतानुमार, जहाँ तक सम्मेलन प्रणाली क उद्देश्य का प्रशन था वहाँ तक यूरोप के शक्तिशाली राष्ठा समय-समय पर आपसी भगडूँ का निपटारा करने और यूरोप महाद्वीप म गति का सतुलन बनाये रखने के लिए मिलते रहे इम कुछ सफलता मिली और शान्ति बनी रही। बाद के सम्मेलनो म दासता की

प्रथा की समाप्ति देखूँव में समुद्री व्यापार और भगडा की मध्यस्थता की समस्याओं पर विचार हुआ। किन्तु जहाँ तक पवित्र गठबंधन के उद्देश्या की पूर्ति तथा पचमुखी संगठन के मददस्या के स्वार्थों की पूर्ति का प्रश्न है यूरोप में यह एक असाति उत्पन्न करने वाली शक्ति थी। सामूहिक हस्तक्षेप का सिद्धान्त अपने शत्रु फ्रांस के सम्बंध में सब मानते थे। यह सिद्धान्त सभी स्थानों में व्यय का पचढा माल लेने के लिए प्रयुक्त हान लगा। इसमें मंदरनिक अथवा ब्रिटेन किसी के भी हित की पूर्ति नहीं होती थी। वारी-वारी से सारे राष्ट्रा को हस्तक्षेप करने के लिए उक्तसाया गया। आस्ट्रिया को पोडमाष्ट और नेपल्स में फ्रांस को स्पेन और ग्रीस में, ब्रिटेन का ग्रीस और पुतगाल में तथा रूस को ग्रीस में हस्तक्षेप करने के लिए कहा गया। ब्रिटेन प्रतिक्रियावादी राजाओं के हस्तक्षेप से, रूस के तुर्की के मामले में गुप्त उद्देश्यों से धरारा गया और उस हस्तक्षेप का रोकने के लिए हस्तक्षेप करने की अदभुत नीति अपनाती पडी। युद्ध से रोकने की कठार और लम्बी अवधि के अंत में ग्रीक शक्ति आरम्भ हुई और इस दौरान में ग्रीकों का बहुत हानि उठानी पडी। मुनरो सिद्धान्त द्वारा वर्तमान व्यवस्था के पक्ष अथवा विपक्ष में हस्तक्षेप करने के विरोध में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बंधों के उच्च मौलिक प्रश्न पर जनसाधारण का ध्यान केन्द्रित कर दिया। प्राचीन परिपाटी की समथक शक्तियों अथवा राष्ट्रीयता और उदारता की समथक शक्तियों में से किसी को भी इस नीति से लाभ नहीं पहुँचा। यह हस्तक्षेप स्पेन और नेपल्स में राजाघ्रा तथा पुतगाल और ग्रीस में प्रजातंत्र के समथक विद्रोहियों के हित में था। किन्तु बश-परम्परागत राजघाही अथवा राष्ट्रीय स्वतंत्रता के आन्दोलन इस सिद्धान्त का मानकर चले कि कोई बाहर की शक्ति उचित रूप से हस्तक्षेप करके अंततः लाभ नहीं उठा सके। अनुभव से यह पता लगा कि सम्मेलन प्रणाली का अर्थ सब जाना में एक-जैसा दृष्टिकोण रखना है तथा प्रत्येक भगडे का बडा चडा दना तथा जहाँ कहीं भगडा हा वहाँ शासन को बदल दना होता है। शक्ति को अविभाज्य बना कर उसे अत्यंत नाजुक बना दिया गया। इसका कारण था कि प्रत्येक शान्तिकारी घटना में बडी शक्तियों की प्रतिद्वन्द्विता छिपी रहता थी। यूरोपीय गठबंधन का रूढ़िवादी शक्तियाँ शक्ति के विरुद्ध एक बांध मानती थी किन्तु ब्रिटेन इस राष्ट्रीयता और उदार विचार-धाराघ्रा की प्रगति के प्रवाह का नियंत्रित करने वाले बांध का फाटक मानता था।

(Europe Since Napoleon pp 119 20)

घाट और टम्पले के मतानुसार, "अन्तर्राष्ट्रीय शासन के इस गम्भीर प्रथम प्रयास को बत्ताय बिना महत्त्वहीन मानकर रद्द करदना उचित नहीं। शासकों में व्यक्तिगत विचार विमर्श और परम्पर विश्वास का विचार बहुत मुदर था। कमजोरे पुनगठन करने में सलाल था और किसी हद तक मंदरनिक भी इस काय में लगा हुआ था। किन्तु एलेग्जण्डर इन दोनों से ही अधिक आगे और अधिक तीव्रता से बढ़ गया। १८२० के पश्चात सम्मेलन प्रणाली काय रूप से राजाघ्रा की जनता की स्वतंत्रताओं को कुञ्चलन के लिए एक महादीय प्रणाली वाला इन्ड अपनी अनुमति नहीं दे सक्ता था तथा शान्तिकाय फ्रांस इनमें अनचाहा मह्यागी था। छाट राष्ट्र जो इसमें सम्मिलित नहा थे स्वतंत्र ही इनके विराधी थे। बाद में भी

यूरोप में अनेक गाम्भयन हुए जिग बहुत भलाई हुई। यद्यपि अद्य भी नतुल्य बड़े राष्ट्रों के हाथ में ही था तथापि राजशाही को पुनर्जीवित करने या शक्ति की निष्ठा करने या गाम्भय हस्तक्षेप करने की बार्द भ्राम नीति की घोषणाएँ नहीं की गई। इस कारण सप्तदीय प्रणाली बाल इग्लंड और फ्रांस दोनों ही पूर्वी यूरोप में तीन सर्वोच्च राजाओं के साथ सरलता से विचार विमर्श करते रहे। त्रिस सम्मेलन में बर्जियस को स्वतंत्रता दिलाई वह इस बात का अच्छा उदाहरण है कि त्रिस प्रकार बड़े राष्ट्र बिना भिन्न-विचार के मिलकर स्थायी भलाई कर सकते हैं क्योंकि वे एक-दूसरे की विचार धाराओं और कठिनाइयों का समझते थे।

कनिंग (Canning)—फ्रांस द्वारा स्पेन पर आक्रमण का न रोक सकने के कारण कनिंग ने कहा मैं एक नया समार पुरानी दुनिया का सन्तुलन राखने के लिए बनाया है। ब्रिटेन यूरोप के अग्र्य देशों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने का विरोधी था। १८१८ में यूरोप की राजनीति में इस सिद्धांत को प्रचलित करने के लिए उसने रूस आस्ट्रिया और प्रुशिया की चालों का विरोध किया। किन्तु इग्लंड के विरोध करने पर भी १८२० में टोपू-व्यवस्था लागू कर दी गई। इस अनुसार यूरोप के देशों को अपने पड़ोसी देशों में विद्रोह होने पर अथवा विद्रोह से उनकी सुरक्षा को डर होने की स्थिति में उनके आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने की छूट मिल गई। इस नीति के अनुसार १८२१ में आस्ट्रिया ने नेपल्स और पीडमण्ट में हस्तक्षेप किया। १८२२ में विरोना सम्मेलन में ब्रिटेन ने स्पेन के मामले में किसी भी देश के हस्तक्षेप का विरोध किया। किन्तु फिर भी फ्रांस ने स्पेन पर आक्रमण कर ही दिया और इसके राजा को पुनः सारे अधिकार दिला दिये। जहाँ तक स्पेन का सम्बन्ध है ब्रिटेन असफल हुआ। उस समय कनिंग ने यह स्पष्ट कर दिया था कि वह दक्षिणी अमेरिका में स्पेन के उपनिवेशों को पुनः जीतने नहीं देगा तथा यूरोप की हानि की अमेरिका में क्षतिपूर्ति नहीं होने देगा।

पुरानी दुनिया का सन्तुलन बनाने के लिए कनिंग की नई दुनिया बनाने की नीति सहसा प्रेरणा का फल नहीं था। यह बहुत सोच विचार के पश्चात् तथा दृढ़ता से पालन की गई नीति थी। १७६० में पिट ने मिराण्डा को यह बताया था कि अमेरिका में स्पेन के उपनिवेशों का हित एक ऐसा मामला है जिस पर इग्लंड का प्रत्येक मंत्री ध्यान देगा। १८०८ में ब्रिटेन की सरक्षता में स्पेन के उपनिवेशों का अग्र्य कर देना कनिंग और कसलरे दोनों के विचार में था। यह विचार कनिंग द्वारा विद्वान मंत्री का पद संभालने के पहले दिन से ही उसके मस्तिष्क में था और इस काय के पूरा होने तक बराबर रहा। १८२२ में कनिंग ने ड्यूक आफ वेल्सिंगटन को जो विराना में ब्रिटेन का प्रतिनिधित्व कर रहा था पत्र में लिखा प्रायद्वीप की वर्तमान स्थिति तथा देश की स्थिति को देखते हुए नित्य प्रति मेरे मस्तिष्क में यह विचार घर करता जा रहा है कि हमारे लिए यूरोप के प्रश्नों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण प्रश्न अमेरिका के हैं। यदि हमने वर्तमान अवसर का उपयोग करके इसे अपने हित के लिए प्रयुक्त नहीं किया तो भविष्य में एक अमूल्य अवसर को खो देने के लिए सबदा पश्चात्ताप करते रहेंगे।

यह सत्य है कि स्पन का अपने अमेरिका के उपनिवेशों का शासन करने में बड़ी कठिनाइयाँ आ रही थीं। १८१७ में स्पन ने ५० लाख डालर में पनोरिडा का प्रदेस बच लिया।^१ उसके पश्चात् भी पश्चिमिगति नहीं मँभनी। दक्षिणी अमेरिका में अराजकता थी और अंग्रेजों का उनक जहाजों पर हानि वाला आक्रमण का कारण बनी कठिनाइयाँ होती थी। १८२३ में कनिंग ने ब्रिटिश व्यापार की रक्षा के लिए स्पन के उपनिवेशों में अपने प्रतिनिधि नियुक्त किए। ब्रिटिश सरकार ने फ्राम को स्पष्ट रूप से यह बताया गया कि स्पन के उपनिवेशों की वापसी स्पन के अतिरिक्त अन्य किसी शक्ति को नहीं की जायगी। १ जनवरी १८२५ में अर्थ शक्तियों को बताया गया कि ग्रेट ब्रिटन ने न्यूनम एयस, कालम्बिया और मैक्सिको के प्रदशा की स्वतंत्रता को मान्यता दे दी है। शक्तियों ने ब्रिटन के इस कथ का विरोध किया किन्तु कुछ भी नहीं कर सके। कनिंग यूरोप के राष्ट्रों की अनिच्छा हाते हुए भी अपनी नीति का अनुसरण करता रहा।

कनिंग को समुक्त राज्य अमेरिका के रूप में एक शक्तिशाली मित्र प्राप्त हुआ। दिसम्बर, १८२३ में राष्ट्रपति मुनरो ने मुनरो सिद्धान्त की घोषणा की। उसने घोषणा की—'यूरोप की महान शक्तियों द्वारा दक्षिणी अमेरिका का स्पन के उपनिवेशों का नियंत्रण करने अथवा दमन करने का उद्देश्य से हस्तक्षेप करना समुक्त राज्य अमेरिका की सुरक्षा के लिए घातक कार्य समझा जायगा। क्योंकि यह प्रदेश अपनी स्वतंत्रता घोषित कर चुके हैं। इसलिए किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप उनको प्रति अमश्रीपूर्ण कार्य समझा जायगा। १८२४ में कनिंग ने लिखा, "मुझे तनिक भी संन्देह नहीं कि राष्ट्रपति ने यह घोषणा दक्षिणी अमेरिका में स्पन के उपनिवेशों के प्रति हमारी भावना को जान कर की है। हमारे अमेरिकी महयोगियों की बट्टर गणतन्त्रीय विचारधारा का जो प्रभाव हमारे ऐक्स-ना चपल के बट्टर दृष्टिवादी कानून पर हुआ है उसने ठीक उसी प्रकार का शक्ति-मनुलन कर दिया है जिसकी इच्छा मैं सदा से कर रहा था।' अगले वर्ष १८२५ में उसने लिखा 'कार्य पूरा हो चुका एक ऐसा कार्य जो सत्तार का चेहरा बाल डालेगा और जो लगभग उतना ही महान है जितना कि अमेरिका महाद्वीप का पाया जाना था। मित्र राष्ट्र तिलमिनायेगे। किन्तु वे कोई गम्भीर बदम नहीं उठायेगे। फ्रांस भूल जायेगा, किन्तु दक्षिणी अमेरिका हमारे उदाहरण का शीघ्रता से अनुगमन करेगा। ब्रिटन और अमेरिका के बन्ध निर्णायक थे। १८३० के आरम्भ होने ही दक्षिणी अमेरिका में स्पनिश साम्राज्य का अस्तित्व समाप्त हो गया और परिणामतः मैक्सिको, ग्वाटेमाला, कालम्बिया, पेरू, चिली, बोलीविया, पराग्वे और रियो डी ला प्लाटा अर्थात् न्यूनम एयस के स्वतंत्र गणतन्त्रों की स्थापना हुई।

स्पष्ट है कि जहाँ यूरोप में कनिंग अक्षय रहता वहाँ अमेरिका में सफल हुआ। वह स्पन में फ्रांस का हस्तक्षेप नहीं रोक सका किन्तु वह स्पनिश अमेरिका में स्पन तथा अन्य किसी भी देश का हस्तक्षेप रोकने में सफल हुआ और इस प्रकार अमेरिका में वह स्पन के उपनिवेशों की स्वतंत्रता की स्थापना करा सका। कनिंग का यह

बहुत सत्य ही था कि उसने दक्षिणी अमेरिका में एक नई दुनिया की मूर्ति की है और जो सन्तुलन आदिभ्यां रूप प्रणियां और प्रांश व इकट्ठे हा जाने से बिगड़ गया था पुन ठीक हा गया है ।

Suggested Readings

Fyffe	<i>History of Modern Europe</i>
Phillips W A	<i>The Confederation of Europe A Study of the European Alliance (1813 '3) 1870</i>
Phillips	<i>Modern Europe</i>
Schenk H G	<i>The Aftermath of the Napoleonic Wars the Concert of Europe—an Experiment 1947</i>
Seignobos	<i>Political History of Europe Since 1814</i>
Thomson	<i>Europe Since Napoleon</i>
Kis inger	<i>A World Restored</i>
Ward Sir A W	<i>The Period of the Congresses 1819</i>

लुई अठारहवें से नेपोलियन तृतीय तक

(Louis XVIII to Napoleon III)

लुई अठारहवाँ (Louis XVIII) (१८१४-२४)—नेपोलियन के १८१४ में राज त्याग देने और एलबा द्वीप में निष्कासित होने के पश्चात् फ्रांस के राजमहासन पर लुई अठारहवें को बठाया गया। वह लुई सोलहवें का भाई था। राज्यारोहण के समय उसकी आयु ५६ वर्ष की थी। वह अस्वस्थ और गठिया से पीड़ित था तथा घोड़े पर सवारी नहीं कर सकता था। मानसिक तथा चारित्रिक रूप से वह राजा होने योग्य था। वह अनुभवी व्यक्ति था और आरम्भ से ही उसने यह जान लिया था कि शालचक्र को पीछे की ओर चराना असम्भव है। वह इंग्लैंड के चार्ल्स द्वितीय की तरह पुनः भ्रष्ट में नहीं पड़ना चाहता था तथा समझौते और शान्ति की नीति का समर्थक था। १८१८ में उसने लिखा था, “जिम प्रणाली को मैंने अपनाया है तथा जिसे बड़े परिश्रम से मेरे मंत्री पालन कर रहे हैं वह इस कथावत पर आधारित है कि ‘दो प्रकार की जनता का राजा होना कभी उचित नहीं है। क्योंकि प्रजा के दो भाग स्पष्ट हैं इसलिए मेरे शासन का पूरा प्रयत्न यह है कि उनका भेद शमन समाप्त कर दिया जाय।’

१८१४ का अधिकार-पत्र (Charter of 1814)—४ जून १८१४ को लुई अठारहवें ने एक उदार अधिकार-पत्र प्रनारित किया। इस विनक्ति पर जार एलेग्जेंडर प्रथम का प्रभाव था। इस विनक्ति में १८४८ तक फ्रांस के सारे सविधान विहित हैं। इसकी प्रस्तावना थी, “अपने पूर्वज राजाओं के आदेश का अनुकरण करते हुए यह हमारा वक्तव्य है कि हम ज्ञान की उत्तरोत्तर होती हुई प्रगति के परिणामों, इस प्रगति द्वारा समाज में हुए नवीन सम्बन्धों, पिछली अधःशताब्दी में जो प्रभाव इसने जनसाधारण के विचारों पर डाला है तथा जो महत्त्वपूर्ण परिवर्तन इस काल में हुए हैं, उन सब की हम प्रशंसा करते हैं। हमने अनुभव किया है कि हमारे प्रजा की इच्छा एक आवश्यकता है। किन्तु प्रजा की इस इच्छा का मायता देते हुए हमने ध्यान रखा है कि यह सविधान हमारे तथा जिन प्रजाजनो पर हम शासन करते हैं, उनकी शान के उपयुक्त हो।’

इस अधिकार-पत्र के अनुसार सम्राट् को देश का प्रमुख माना गया। उसे सब नियुक्तियाँ, कानून, युद्ध, शान्ति, संधि और व्यापार-सम्बन्धी प्रतिष्ठा पत्र इत्यादि करने का अधिकार दिया गया। जल और स्थल की सेनाओं के सवालन तथा

कानून की स्वीकृति का अधिकार दिया गया। दो सदन प्रॉक्सिमेन्स और पीपर्स और चेम्बर प्रॉक्सिमुजीज की समझौते की स्थापना की गई। चेम्बर प्रॉक्सिमुजीज के सदस्य प्राचीन कथना वंशपरम्परागत अधिकार के अनुसार सम्मिलित किये जाते थे। इनके अधिकार गुप्त होने से तथा यह देश का सर्वोच्च न्यायिक निकाय भी था। यह न्याय के विरुद्ध अपवित्रता के समर्थन की सुनवाई भी करता था। चेम्बर प्रॉक्सिमुजीज के सदस्य ३०० प्रॉक्सिमुजीज (Direct taxes) के बावजूद ही चुन सकते थे। इनकी अवधि पांच वर्ष थी तथा इनका पांचवाँ भाग प्रत्येक वर्ष अवकाश प्राप्त करता था। इनका अधिकार बाधित होता था। यह सम्मेलन में किसी विशेष विषय पर कानून बनाने की प्राथमिकता दे सकता था।

समय के साथ-साथ न्याय की मायता दी गई। न्यायिक मामलों को भी स्वतंत्रता प्रदान की गई। नेपालियन के काल में तथा कान्ति से पूर्व के सार सामन्तों को मान्यता दी गई। समाचारपत्रों का स्वतंत्रता का प्रावधान दिया गया। फ्रांस के सार नागरिकों को राज्य-पद प्राप्त करने की स्वतंत्रता दी गई। कान्ति-काल में जन्म का अधिकार व वर्तमान स्वामियों को प्रावधान दिया गया कि यह सम्पत्ति उनमें छीनी नहीं जायेगी।

इन घोषणा का मुख्य महत्त्व यह था कि इससे कान्ति तथा नेपालियन द्वारा किये गए कार्यों की मायता दी गई। यह मायता जनसाधारण की समानता पद प्राप्त करने की मायता धार्मिक सहिष्णुता नेपालियन-सहिता तथा कानून-द्वारा दत्तान्त की मायता से स्पष्ट है। यह अधिकार पत्र राजा के दबी अधिकार के विरुद्ध प्रतिबन्धन भी नहीं था। वास्तव में सम्मेलन ने उम्मीद से यह अधिकार जनता का माप दिया था। शेठानिमाड के अनुसार अधिकार पत्र फ्रांस में बन चुका था तथा बीच समझौता था जिसमें दानो ही दलो ने अपनी कुछ मायताएँ छाँटकर देश के लिए इकट्ठा हाकर कार्य करने का निश्चय किया।

टैल्लेरण्ड (Talleyrand)—फ्रांस में उत्पन्न चतुर व्यक्तियों में सबसे अधिक कुशल व्यक्ति टैल्लेरण्ड था। यह कान्ति-काल में नेपालियन के राज्य में तथा सम्मेलन के आसपास ही पर किसी न किसी पद पर काम करता ही रहा। वह सामन्त वर्ग का था तथा सर्वे का सदस्य भी था। नेपालियन ने उसे बहुत कठिन कार्यों के लिए नियुक्त किया था। वह बहुत चतुर और चालाक व्यक्ति था। वह परिस्थितियों के अनुसार चालाकी से अपनी स्वामि भक्ति बतलाना था। नेपालियन सब जटिल समस्याओं में उनकी सहायता लिया करता था। कान्ति विश्वस्त होने पर भी फ्रांस में न नेपालियन का माप छोड़कर आम्बिया से जा मिला। अपनी चतुरता के कारण ही उनमें विघ्नाना सम्भवतः सम्भवपूर्ण भाग लिया। इसी ही मायमुक्तता के निश्चय का प्रतिपादन करके फ्रांस की रक्षा की। यद्यपि फ्रांस परास्त हो गया किन्तु फ्रांस की कुशलता के कारण फ्रांस प्रदत्त नहीं छीन गये।

टैल्लेरण्ड आन्तरिक व्यवहार में नहीं था। नेपालियन ने एक बार उसे फ्रांस में आज पहिलेवाला सम्मेलन का रक्षक कहा था। एक बार नेपालियन ने यह भी

कहा, "तुम इसान नही घातान हो । मैं तुम्हें अपने मामलों के बारे में बताने या तुम्हें पसंद करने से रोक नहीं सकता ।"



टसोरण्ड

राजनतिक दल (Parties)—फ्रांस में दो राजनतिक दल अर्थात् मॉडरेटस' (Moderates) और अल्ट्रा रॉयलिस्ट' (Ultra Royalists) थे । मॉडरेटस अर्थात् उदार दलीय १८१४ के सविधान के समथक थे और अल्ट्रा रॉयलिस्ट अर्थात् राजपाही दल, सम्राट की सर्वाधिकार-मम्पन्नता और विशेषाधिकारों के समथक थे । वे चर्च और सम्राट में मंत्री चाहते थे । वे चाहते थे कि प्रशिक्षण-काय चर्च के हाथ में रहे । वे समाचारपत्रों पर सेसर के समथक और जागीरदारा की जागीरों की जब्ती के विरुद्ध थे । सुई अठारहवें ने उदार नीति का पालन किया और इनकी मांगा पर कोई ध्यान नहीं दिया । यह सेना और किसानों का प्रिय नहीं हो पाया । बर्लिगटन के मतानुसार 'फ्रांस का सम्राट बिना मेना के सम्राट नहीं हो सकता ।' किसानों और मेना की अप्रियता का परिणाम यह हुआ कि नेपोलियन ऐलवा से लौट आया और विमान और सेना उममे जा मिले । तन्तु सौ दिन बाद सुई अठारहवें को पुन राज्य प्राप्त हुआ ।

श्वेत घातक (White Terror)—जस ही फ्रांस में वाटरलू की लड़ाई में नेपोलियन की हार की खबर पहुँची सम्राट के समथकों ने देश में घातक फैला दिया । राजशाही दल ने बानापाट के समथकों पर घातमण किये । बंथोलिका ने प्रोटैस्टण्टों

पर धारण करने लगे। देश भर में लूट मार और हत्याएं प्रारम्भ हो गईं और इस उथल-पुथल को दबाने के नाम से पुकारा गया। इस प्रकार गृहयुद्ध और घातक के यातावरण में काम चलाव हुए और यह कोई ईरानी का बाग नहीं कि राजशाही दल बहुत बड़ी संख्या में जीत गया। टैलियर और फॉर्च को मारने पर दिया गया। नये मंत्रिमण्डल का प्रमुख रिशेलीयु और उगका मुख्य गृहमन्त्री डिका जेग (Decazes) था। नवीन चम्बर फॉर्च डेप्युटीज सम्राट से कहीं अधिक राजशाही का समर्थक था। यद्यपि सम्राट उगके मंत्री और चम्बर फॉर्च पीपल के मन्त्र उदारता की नीति के समर्थक थे तो भी सम्राट के भाई काउण्ट ऑफ आर्टोइस (Count of Artois) के नेतृत्व में चम्बर फॉर्च डेप्युटीज ने गनुआ से प्रतिरोध की मांग की। काउण्ट ऑफ आर्टोइस १८२४ में फ्रांस का सम्राट बना। योरनिगेमणि मन्त्रालय नियम को देशद्रोही कहकर गौरी मार दी गई। बोनापार्ट के हजारों समर्थकों को कैद कर लिया गया या देशनिवाला दे दिया गया। कुछ लोगों का मृत्यु दे दिया गया एवं बाकी सब को पञ्च्युत कर दिया गया। सितम्बर, १८१६ में चम्बर फॉर्च डेप्युटीज को भग कर दिया गया।

उदार बल सत्तासीन (Moderates in Power)—१८१६ में फिर चुनाव हुए और उदार दल बहुसंख्या में चम्बर फॉर्च डेप्युटीज में आया। वह १८२० तक सत्तासीन रहा। १८१८ में ऐक्स-ला-चेपल के सम्मेलन में फ्रांस द्वारा युद्ध क्षति की पूर्ति करने पर, सगठित राष्ट्रों की सेनाओं को फ्रांस से हटा लिया गया। १८१७ में उदारदल के हित में चुनाव सम्बन्धी एक नया कानून बनाया गया। १८१९ में एक नया कानून बना जिसे समाचारपत्रों पर से प्रतिबंध हटा दिया गया। समाचारपत्रों द्वारा किये गए अपराधों का निषेध पंच फसले द्वारा करने का निषेध किया गया।

फरवरी १८२० में एक मदाध व्यक्ति द्वारा ड्यूक डी बेरी की हत्या कर दी गई। ड्यूक काउण्ट ऑफ आर्टोइस का पुत्र था और इससे बुरबोन (Bourbon) राजवंश की बड़ी आशाएँ थीं। यद्यपि हत्या एक व्यक्ति का काम था तो भी राजशाही के समर्थकों ने इसे सम्राट की उदार नीति का परिणाम बताया। किसी ने कहा "जो छुरा ड्यूक डी बेरी की छाती में घुसाया गया वह एक उदार विचार था। भय लोगों ने कहा, पदासीन राजवंश और सम्राट की समाप्ति से पहले डिकाजेस को अपदस्थ होना चाहिए।" स्वयं डिकाजेस ने कहा कि "ड्यूक के साथ हम लोगों की भी मृत्यु हो गई है। डिकाजेस को अपदस्थ कर दिया गया और राजशाही दल सत्ता में आया।

१८२० में पुन रिशेलीयु मंत्रिमण्डल का नेता बना और १८२१ तक पदासीन रहा। उसके काल में प्रतिक्रिया का युग प्रारम्भ हुआ। समाचारपत्रों पर प्रतिबंध लगा दिया गया। चुनाव के कानून बदल दिए गए। गुप्त मतदान प्रणाली समाप्त कर दी गई। मतदान का क्षेत्र सकीण कर दिया गया। भूस्वामियों को दो मत (Double Vote) प्रदान किए गए।

रिसेलु का उत्तराधिकारी विल्लेले (Villèle) बना, जो एक याग्य और सचेत शासक था, किन्तु प्रसिद्ध प्रतिनिधावादी था। वह अपने पद पर १८२७ तक रहा। १८२२ में समाचारपत्रों पर कठोर प्रतिबंध लगा दिया गया। सम्राट और चर्च का प्रचार करने के लिए चर्च को शिक्षा का कार्य सौंप दिया गया। जागीरदारों और उद्योगपतियों के हिता की रक्षा के लिए विदेशों से माल मगाने पर बहुत बंधन चूरी लगा दी गई। १८२३ में बुरबोन (Bourbon) वंश को पूर्ण सत्ता दिलवाने के लिए स्पेन में फ्रांस की सेनाएँ भेजी गईं। चेम्बर ऑफ पीयस में उदार सदस्यों के बहुमत को समाप्त करने के लिए उपाधियाँ प्रदान की गईं। सप्तवर्षीय कानून (Septennial Act) द्वारा चेम्बर ऑफ डेपुटीज की अवधि पाँच वर्ष से बढ़ाकर सात वर्ष कर दी गई।

चार्ल्स दसम (Charles X) (१८२४-३०)—१८२४ में लुई अठारहवें की मृत्यु के पश्चात् काउण्ट ऑफ आर्टोइस (Count of Artois) चार्ल्स दसम के नाम से गद्दी पर बैठा। काउण्ट होते हुए वह देश से भागे हुए सामन्तों का नेता रहा था। लुई अठारहवें के शासन में वह राजशाही दल का नेता था। वह एक दृढ़ धारणा और बहुपित हृदय का व्यक्ति था। उसके विषय में कहा जाता था कि 'उसने कोई नवीन धारणा नहीं अपनायी तथा वह कुछ भी भूला नहीं।' उसे गव था कि उसमें और लाफायट (Lafayette) में समय में इतनी उलट-पट्ट होनी पर भी कुछ परिवर्तन नहीं आया। वह चर्च की महत्ता का समर्थक था और चर्च के लिए अपना सिंहासन भी छोड़ने के लिए प्रस्तुत था। वेलिंगटन (Wellington) के शब्दों में, "इसने धर्माचार्यों की सरकार, धर्माचार्यों के द्वारा, धर्माचार्यों के लिए स्थापित की।" वास्तव में उसकी तुलना स्पेन के फिलिप द्वितीय से की जा सकती है।

इसके शासन-काल में शक्तिशाली विदेश-नीति से फ्रांस का सम्मान बढ़ा। अल्जीयर्स (Algiers) पर विजय हुई और फ्रांस ने ग्रेटब्रिटेन से गठजोड़ करके तुर्कों के विरुद्ध ग्रीक लोगों की सहायता की। जब १८२७ में नवारिनो (Navarino) की लड़ाई में तुर्कों का बड़ा नष्ट हुआ, उस अभियान में फ्रांस भी था। यद्यपि फ्रांस ग्रीक के स्वातन्त्र्य युद्ध से हट गया परन्तु उसने बल्कान में रूस के प्रभाव को कम करने के लिए इंग्लैंड का साथ दिया।

विल्लेले (Villèle)—१८२७ तक विल्लेले मन्त्रिमण्डल का नेतृत्व करता रहा। क्योंकि देश के समाचारपत्रों सम्राट का चर्च-नीति के विरोधी थे, समाचारपत्रों का शासन का अङ्ग बनाने का निणय किया गया। आदेश सारित किया गया कि सम्राट की आज्ञा के बिना कोई भी समाचारपत्र प्रकाशित न किया जाय। पत्रों के सारे समाचार शासन द्वारा स्वीकृत हों। किसी ऐसे लेखक के लेखकों को अथवा चित्र के चित्रकार को, जिसके द्वारा देश के धर्म पर आघेप या व्यंग्य किया गया हो अथवा जिससे किसी वर्ग के विरुद्ध धूणा का प्रचार हो बहूत बड़े जुर्माने या सात वर्ष की कद में दण्डित करने की घोषणा हुई। १८२७ में एक ऐसा कानून बनाने का प्रयास किया गया, जिससे समाचारपत्रों की स्वतंत्रता पूर्णतः समाप्त हो गई। सब और से

विरोध होने पर भी चेम्बर ऑफ डेपुटीज ने इस कानून को स्वीकार कर लिया, किन्तु चेम्बर ऑफ पीयस के घोर विरोध के कारण सरकार को यह विधेयक रद्द करना पड़ा।

१८२५ में कानून के दिनांक भंगे हुए जागीरदारों की जागीरों की शक्ति प्रति के लिए एक कानून बनाया गया। जनजागृति में तिवे हुए अर्थ पर मूल की दर पौन प्रतिगत से घटाने पर प्रतिगत कर दी गई और यह शक्ति प्रति की गई। मूल की दर घटा देने से मध्यम वर्ग की हानि पहुँची और इससे यह वर्ग अवश्य ही रुद्ध हुआ होगा। कुछ अनुयायियों के साथ स्त्रियों के लिए भी धार्मिक सस्थाओं की स्थापना हुई। ज्येष्ठाधिकार के कानून को पुनः लागू करने का प्रयत्न किया गया किन्तु चेम्बर ऑफ पीयस के विरोध के कारण यह विफल रहा। गिरजाघरों से पूजा के पवित्र बतना को घुराने के अपराध पर मृत्यु-दण्ड देने के लिए एक कानून बनाने का प्रस्ताव रखा गया। पूजा की वेदी को अपवित्र करने वाला के हाथ काटने का भी कानून बनाने का प्रयत्न किया गया। कुछ सशोधनों के साथ यह कानून स्वीकृत तो हो गया, किन्तु जनता के घोर विरोध के कारण यह लागू नहीं किया जा सका।

१८२७ में राष्ट्र रक्षक (National Guards) सेना भङ्ग कर दी गई। यह इसलिए हुआ कि एक बार मग्राट सेना के निरीक्षण के पश्चात् लौट रहा था राष्ट्र रक्षक सेना के सदस्यों ने 'मनियों का नाश हो 'जसुइटस (Jesuits) का नाश हो आदि नारे लगाने आरम्भ कर दिये। पेरिस के निवासी इस सेना के भङ्ग होने पर अत्यधिक क्रोध हुए और इसका परिणाम बड़ा ही घातक हुआ।

मार्टिगनक (Martignac)—विल्लेली (Villele) का उत्तराधिकारी मार्टि गनक बना और यह जनवरी १८२८ से जुलाई १८२९ तक सत्तासीन रहा। यह एक योग्य, अनुभवी और उदार व्यक्ति था। इसने समझौते की नीति का अनुसरण किया। जसुइटस (Jesuits) का शिक्षा पर से नियंत्रण हटा दिया गया। समाचार पत्रों का सेन्सर बन्द कर दिया गया। मताधिकार प्रान्तीय सभाओं को दिया गया। स्थानीय स्वायत्त शासन के लिए अनेक सुधार प्रस्तावित हुए। प्रतिक्रियावादी इससे बहुत नाराज हुए परिणामतः इसे त्याग-पत्र देना पड़ा।

पोलिगनक (Polignac)—चाल्स दशम की धारणा थी कि रियायतों (concessions) ने लुई सोलहवें का नाश किया था अतः उसने प्रजा को कोई भी सुविधा न देने का निष्पत्ति किया। 'इन लोगों के साथ व्यवहार का यह तरीका नहीं है जब इन सुविधाओं को बन्द करना चाहिए। सभ्रात प्रतिक्रियावादी और क्रांति काल में भगोड़े राजकुमार पोलिगनक को सरकार का प्रमुख बनाया गया। चेम्बर ऑफ डेपुटीज में उसने समयको का बहुमत नहीं था। इससे सरकार की सारे देश में घोर आलोचना हुई। मार्च १८३० में चेम्बर ऑफ डेपुटीज में चाल्स दशम ने भाषण दिया, "अधिकार पत्र ने फ्रांस की स्वतंत्रताओं को सम्राट के अधिकारों के अतगत रखा है। ये अधिकार पवित्र हैं और यह मेरा कर्तव्य है कि मैं इन्हें अपने उत्तराधिकारी को अनुष्ण सौंपूँ। मुझे इसमें कोई सन्देह नहीं है कि तुम लोग मरी इस

गम्भावना को काय परिणत करने में सहायता दोगे तथा विदेश में अनिष्टकारियों द्वारा जो लज्जाजनक आक्षेप लगाये जा रहे हैं, उनका निराकरण करोगे। यद्यपि मुझे प्राणका नहीं है फिर भी यदि पदचक्र ने मेरी सरकार के काय में रोड़ा अटकवाया, जो मेरे लिए अमह्य है तो मुझ देश में शान्ति बनाए रखने के लिए फ्रांस की प्रजा में विश्वास रखत हुए तथा उनका सम्राट के प्रति प्रेम को देखत हुए और अपने सकल्प में दब रहकर इन अदृष्टता का दूर करने के साधन जुटाने पड़ेंगे।" सम्राट के इस भाषण को जनता ने चुनौती समझा। थियर्स (Thiers) जैसे लोग सम्राट की इस प्रतिक्रिया-पूर्ण नीति का विरोध करने के लिए अग्रगुणा बने। नेपोलियन-मन्त्रिमण्डल को हरा दिया गया। सम्राट ने चेम्बर ऑफ डेपुटीज को पहले स्थगित किया और बाद में भंग कर दिया गया। जून और जुलाई १८३० में नये चुनाव हुए, किन्तु इसका परिणाम यह हुआ कि विरोध पक्ष और अधिक बलवान हो गया।

२५ जुलाई, १८३० को चार्ल्स दशम ने चार अधिनियम (Ordinances) प्रसारित किए और इनके समय में यह सफाई दी कि, 'शराजकता फैलाने वाली एक प्रजातंत्र की लहर कानून द्वारा स्थापित शासन को नीचा दिखाने का प्रयत्न कर रही है। यह सगठना और समाचारपत्रों द्वारा चुनावों पर छा जाना चाहती है। यह सम्राट के अधिकारों का बंधन में डालकर मसद को भंग करना चाहती है।'

'यह सरकार जिसे देश की सुरक्षा का अधिकार प्राप्त न हो, अपना अस्तित्व बनाए नहीं रख सकती। यह अधिकार, जो कानूनों से भी प्राचीन है, प्राकृतिक विधा में निहित है। एक अत्यन्त बठिन परिस्थिति इस अधिकार के प्रयोग की माँग करती है कि इस विषय में कदम उठाए जायें। यदि परिस्थिति साधारण वैधानिक कार्यों से नियंत्रण में न आए ता भी काय किया जाएगा वह इस अधिकार-पत्र की विन्यति के अनुसार होगा।' चार अधिनियमों के द्वारा चार्ल्स दशम ने समाचार-पत्रों की स्वतन्त्रता छीन ली नवनिर्वाचित चेम्बर ऑफ डेपुटीज को भंग कर दिया, विधानमण्डल की अधिमात्र सत्ता स पाँच वर्ष कर दी और नियन्त्रित मतदान द्वारा नये चुनावों की घोषणा की।

ये अधिनियम जनता के लिए चुनौती थे और इसे स्वीकार किया गया। परिणत की गलियाँ में मोर्चाबन्दी की गई, किन्तु सरकार ने इसे नष्ट कर दिया। राष्ट्रीय रक्षक सेना और नियमित सेना जनता से मिल गई, और २६ जुलाई, १८३० का पेरिस पर जनता का राज्य स्थापित हो गया। थियर्स ग्युजोट और टैल्लेरेण्ड ने ड्यूक ऑफ गोरलीस लुई फिलिप को राजसिंहासन सौंपने की योजना बनाई और उसने इस स्वीकार कर लिया। चार्ल्स दशम ने अपने पौत्र हनरी ड्यूक ऑफ बोर्दो के लिए राज्य का परित्याग किया। किन्तु इसकी अपेक्षा कर दी गई। परिणामतः चार्ल्स दशम और उसका परिवार इंग्लैंड चला गया। इस प्रकार के वातावरण में फ्रांस में जुलाई १८३० की शान्ति हुई।

जुलाई की क्रांति का महत्त्व (Importance of July Revolution)—फ्रांस के इतिहास में जुलाई क्रांति का बड़ा महत्त्व है। इससे राजवध का परिवर्तन हुआ।

युर्वोत यग के स्वात पर भारतीय वंश की स्थापना हुई। प्रजातन्त्रवादीयों के विरोध पर भी राजागद्दी बनती रही। १८१४ व अधिवार पत्र म कुछ घाट में बधानिक परिलता निय गण। आपतिरालीन भयवा गाधारण रूप स अधिनियम प्रसारित करने का अधिवार सम्राट म छीन लिया गया। विधानमण्डल को कानून बनाने का अधिवार दिया गया। कर्षातिक मत फास का राज्य पद माना गया। समाचारपत्रों का पुन स्वतंत्रता प्रदान की गई। मतदान बढ़ा दिया गया। यद्यपि सावन्निक ययस्व मतदान की प्रतिष्ठा का गर्द थी किन्तु २८० व्यक्तियों का एक मत माना गया। सम्राट का दवी अधिवार व आधार की अपेक्षा जनता की इच्छा में सामक माता गया। उस प्राप्त विवासियों का सम्राट कहा जान सगा। राजशाही दल अपन कार्यक्रम व साथ युर्वोत यग के साथ-साथ फास के रगमच स अदृश्य हो गया। १८३० की क्रान्ति १७८६ की पूरव थी। इससे समानता स्वतंत्रता और सम्पत्ति व अधिवार माय हुआ। १८१४ का अधिवार पत्र सम्राट द्वारा लिया गया कर्षातिक नहीं बल्कि राष्ट्र का अधिवार बन गया। जो भी नागरिक अपने गणवेश के लिए ध्यय कर सकता था उसे राष्ट्र रक्षक सना म भर्ती कर लिया गया। इस सना का काय इस अधिवार पत्र की रक्षा करना था।

लुई फिलिप (Louis Philippe) (१८३०-४८)—लुई फिलिप गरुडचिह्न (Egalite) वाले ओरलीस (Orleans) वग का पुत्र था। इस वग ने १७८६ का



क्रान्ति म बडा महत्वपूर्ण भाग लिया था। युवा अवस्था म इमने वाल्मी (Valmy) के स्थान पर फास की क्रान्तिकारी सना के साथ युद्ध म भाग लिया था। इसक बाद उसने फास से भागकर दक्षिणी यूरोप सिसली समुक्तराय अमेरिका इग्नड स्विटजरलण्ड इत्यादि सगार के अनेक देशों म भ्रमण किया। स्विटजरलण्ड म उसने गिणक का काय किया। १८१४-१५ म राजशाही की स्थापना के पश्चात वह फास लौटा और अपनी पतक सम्पत्ति प्राप्त करके चेम्बर आफ पीयस का सदस्य बन गया। उसने पेरिस के मध्यमवर्गीय श्रमिकों के साथ अपना सम्बन्ध रखा। यद्यपि वह धनी था फिर भी वह मन्न स्वभाव का और

लुई फिलिप

मिलनसार व्यक्ति था। परिणामत जनता को प्रजातन्त्र और गणतन्त्र में उसकी आस्था पर विश्वास हो गया। जुलाई १८३० के विकट समय में चाल्स दसम को

सुई प्रथागृह्ये से नेपोलियन तृतीय तक

अनुभव हुआ कि यह बस एक 'विद्रोह' नहीं, अपितु क्रांति है, फलतः अपने चारों
 भाइयों रद्द कर दिये और पोलिगनर को अपदस्थ कर दिया। किन्तु बहुत दूर हो
 चुका थी और सुई फिलिप फ्रांस के सिंहासन पर बैठाया जा चुका था।
 सुई फिलिप न प्रथागृह्ये बस एक राज्य किया और इस प्रवर्ध में मध्यमवर्ग
 बड़ा प्रसन्न रहा। उसे 'नागरिक सम्राट' (Citizen King) कहा जाता था। वह
 'राज करता था, शासन नहीं। उसने सम्राट् पद के प्राचीन चिह्नों का धारण करना
 छोड़ दिया था। 'मुकुट और राजदण्ड' उठाकर रख दिए गए थे। वह सफ़ेद टोपी
 और हरा छतरी का प्रयोग करता था। उसने अपने बच्चों को साधारण विद्यालया
 में भेजा तथा वह स्वयं जनसाधारण की तरह बाजार में सामान खरीदने जाया करता
 था। 'उसने फ्रांस का सम्राट' की उपाधि छोड़कर 'फ्रांसीसियों का
 सम्राट् (King of the French) की उपाधि धारण की। पुष्टि-वाक्य परदेवर
 की रूपा से (By the Grace of God) के साथ 'और राष्ट्र की इच्छा से' (And
 by the Will of the Nation) वाक्य और जोड़ दिया गया। तिरों फ्रंसे की
 राष्ट्र ध्वज माना गया। उपाधिधारी जागीरदारों को पदों से हटाकर उनका स्या
 साधारण योग्य प्रजाजनों को दिया गया और यह घोषित किया गया कि यह राष्ट्र

प्रतिनिधि प्रोड समदीय पासम है।
 डी टोक्युविले (De Tocqueville) के मतानुसार सुई फिलिप में वे
 गुण और भवगुण थे जो विशेषतः समाज के मध्यम वर्ग में हुआ करते हैं। उसका
 जीवन नियमित था और वह अपने सम्पन्न में रहने वालों से भी ऐसा ही चाहता था।
 वह चरित्र से नयमी और स्वभाव से सदा था। वह नियम का कठोर समर्थक सब
 प्रकार के सीमान्तधन और घृति का गद्ग तथा महत्वाकांक्षाओं से मुक्त गम्भीर
 स्वभाव का स्वामी था। वह भावुकता से दूर मानवता का प्रतिपादन लाम्बी तथा
 नम्र था। उसे किसी भी व्यसन से लगाव नहीं था और न ही उसमें उसे नष्ट
 करने वाली कोई दुर्लला ही थी। उसमें स्पष्ट रूप से प्रतीत हान वाली बाई बुराई
 भी नहीं थी, हाँ, उसमें एक राजाचित गुण था, धर्मान् सहाय। यह अत्यन्त मिष्ट-
 भाषी था, किन्तु उसकी नम्रता में किसी प्रकार की विशेषता या महानता नहीं थी।
 उसकी नम्रता एक सम्राट् की महानता न होकर एक व्यापारी की नम्रता थी। उसने
 'गायद ही कभी साहित्य या कला की प्रशंसा की हो। हाँ उसे उद्योग से भवदय
 प्रेम था। उसकी स्मरण शक्ति असाधारण थी और छोटी-छोटी बात भी उसे सूतती
 नहीं थी। उसकी बातचीत बड़ी लम्बी वगनपूरा, मौलिक, साधारण, मनोरञ्जन-
 पूरा, छोटी-छोटी बातों से भरी हुई सीखी और सारगमित हुआ करती थी। वह
 बुद्धिमान् तीव्र बुद्धि दूरियों की बात मानने वाला था। जीवन में उसका दुष्टिवाग
 बसल 'मानदायक' बातों के मानने के लिए ही रहा, इसलिए गुणों में उसे अर्थात् थी।
 वह अठारहवाँ शताब्दी की विचारधारा के अनुकूल धर्म में अस्था नहीं रहता था।
 वह ठीक उन्नामधी 'गान्धी' की तरह राजनीति के प्रति धाम्पाहीन था उसका
 स्वयं में किन्वाग न हान के कारण वह किसी भी अर्थ व्यक्तित्व का भी विरुद्ध नहीं
 करता था।

यह बात उल्लेखनीय है कि लुई फिलिप के राज्य के धारम्भ में लैफार्डे (Lafayette) और बेतिमिर पेरियर (Casimir Perrier) जने पू जीपनि और पारिफ सुधारवादी सत्तारूढ़ थे, इसलिए उसकी सरकार का उधार और बुजुर्ग होना कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। इस काल की फ्रांस की सरकार इंग्लैंड के प्रथम सुधार कानून १८३२ के पश्चात् अपनी सरकार का प्रतिरूप थी। बेतिमिर पेरियर ने अपनी नीति की बिस्नुज संतुलित (just mean) कहकर परिभाषा की है। वह 'क्रमशः प्रगति' का समर्थक था। उसका ध्येय देश के विदेशी व्यापार की उन्नति करना तथा अन्य देशों से मन्त्रीपूण सम्बन्ध स्थापित करना था। उसकी मृत्यु के पश्चात् समय-समय पर गुईडोट और पीयस ने शासन की बागडोर संभाली। दोनों ही महत्त्वाकांक्षी, तीव्र और महान् लेखक थे। गुईडोट १८३२ से १८३६ तक गिन्ना मन्त्री और १८४० से १८४८ तक मुख्य मन्त्री रहा। वह किसी भी मृत्यु पर शान्ति की नीति का समर्थक था। वह शान्ति बनाये रखने के लिए कुछ भी कर सकता था। वह अत्यन्त भ्रष्ट व्यक्ति था और भ्रष्टाचार के सहारे ही वह ८ वर्ष तक विधा मण्डल पर छाया रहा। पीयस एक स्वतंत्र विचारक और अवसरवादी व्यक्ति था। उसे विवाह में बहुत धन मिला था। राजनीति में उसे टलिरण्ड ने गिन्ना दी थी। यद्यपि उसने जनसाधारण से ही उठकर इतनी उन्नति प्राप्त की थी, तो भी वह इन पर विश्वास नहीं करता था। वह भ्रष्टारहणी गतान्दी की सुधारवादी विचारधारा को मानने वाला था और लुई फिलिप के स्वच्छाचारी शासन का विरोधी था। वह एक महान् लेखक था तथा चार्ल्स दथम को हटाने वाले व्यक्तियों में से वह भी एक था। वह शक्तिशाली विदेश-नीति का समर्थक और १८३२ से १८३८ तक मन्त्रिमण्डल के मन्त्रियों में मुख्य रहा और १८४० में प्रधान मन्त्री बना। उस इस लिए हटा दिया गया कि वह इंग्लैंड से युद्ध होने के खतरे पर भी मेहमत भली की सहायता करना चाहता था।

लुई फिलिप का शासन काय प्रणाली ध्येय और कायकर्ताओं में मध्यमवर्गीय (Bourgeois) था। उद्योगों को प्रोत्साहन दिया गया। इंग्लैंड से मशीनों मंगाकर देश में उद्योगों की स्थापना की गई। देश भर में रेलों का जाल बिछाने की योजना बनाई गई और उनमें से कुछ बना भी दी गई। सावजनिक हित के कार्यों को ठेके पर व्यापारियों को दिया गया। उसने कोई भी ऐसा कार्य नहीं किया जिसे समाज प्रणाली का काम कहा जा सके। वह जनता के नेतृत्व और व्यक्तिगत अल्पव्यय का समर्थक था। एक अच्छे मध्यवर्गीय गृहस्थ की तरह सम्राट ने अपने परिवार की सारी धन्य उद्योग धंधों में लगा दी।

देश में स्वतंत्र व्यापार की स्थापना के लिए आन्दोलन हुआ। किन्तु यह सोच कर कि फ्रांस के नवनिर्मित उद्योग इंग्लैंड के उद्योग से मुकाबला नहीं कर सकेंगे, उद्योगों की रक्षा की नीति अपनाई गई। इंग्लैंड की तरह फ्रांस में कॉर्न लॉ (Corn Law) जसा कोई कानून नहीं बना। १८४६ में बास्टिया (Bastiat) नाम के एक अर्थशास्त्री और व्यापारी ने फ्रांस में एक 'स्वतंत्र व्यापार-संघ (Free Trade Association) की स्थापना की।

दश म औद्योगिक क्रांति के कारण श्रमिका की अवस्था बड़ी असतापजनक हो गई, किंतु नगण्य अधानिक नियमा के अतिरिक्त श्रमिका के हित के लिए कोई कानून नहीं बनाया गया। १८४१ में एक 'उद्योग कानून (Factory Act) बनाया गया जिसके अनुसार आठ वष से कम आयु के बालका से मजदूरी बराना बंद कर दिया गया, सोलह वष से कम आयु के बालको के लिए काय दिवस बारह घंटा ना रखा गया तथा बारह वष से नीचे की आयु तक के बालका के लिए शिक्षा की व्यवस्था की गई। इस कानून का कोई प्रभाव नहीं पडा क्योंकि इस लागू करने के लिए कोई व्यवस्था नहीं की गई।

गुईज़ोट (Guizot) के निर्देशन में १८३३ म शिक्षा सम्बन्धी एक कानून बनाया गया। प्रारम्भिक शिक्षा चर्च के लिए छोड दी गई। माध्यमिक और उच्च शिक्षा पर सरकारी नियंत्रण कठोर कर दिया गया। सारी शिक्षा-संस्थाया के लिए आध्यात्मिक और सामाजिक कर्तव्यों की शिक्षा अनिवार्य कर दी गई। यद्यपि विद्यालयों की संख्या म वृद्धि कर दी गई तो भी विद्यार्थियों की उपस्थिति अनिवार्य नहीं थी।

धर्म के विषय में शासन की निष्पक्ष नीति थी। पाप के साथ हुई कानकाष्ट-व्यवस्था प्रचलित रही और सरकार बिनाप इत्यादि नियुक्त करके उनका वेतन देती रही। सरकार सब धर्मों को समान समझती थी और १८३१ म यहूदी धर्म या 'माई' धर्म के समान मान्यता दी गई। जिस प्रकार कथोलिक और प्रोटेस्टेंट पादरिशा का बतन दिया जाते थे उसी प्रकार यहूदी रब्बीयो (Rabbis) का भी बतन मिलन लगा था।

यह काल फ्रांस में साहित्यिक दृष्टि से बड़ा महत्त्वपूर्ण काल रहा है। १८०० म विक्टर ह्यूगा का 'हिरनानी' (Hernani) नाटक प्रस्तुत हुआ। शेठोब्रियाड, महाम डी स्टोल न एक नई प्रेरणा दी जिसको ला माटिनी विक्टर ह्यूगा अल्फ्रेड डी मुस्सेट ने इसे कविता में जीवन-दान दिया। बल्बाक, जाज सेण्ड और ह्यूमस ने उसे कला में परिणत कर दिया। शास्त्रीय और नवीन कला म सघष चल रहा था और इस प्रकार हमें गरीकोल्ट और डिलाक्रोइक्स के प्राकृतिक और सुन्दर चित्र रचना का मिलते हैं। '१८३० की दार्शनिक विचारधारा के (School of 1830) क्रांति, ह्यूगरे और थ्योडोर रुसो अप्रणी थे। इस काल न मूर्ति निमाण कला के क्षेत्र म रघूडे, आक-डी-ले इटोले की महान् कला के प्रदर्शन दक्ष 'टोब्रियाड की प्रेरणा ने हम काल म महान् ऐतिहासिक ग्रन्थों की रचना हुई। ऐतिहासिक ग्रन्थ म थियर (Thierry), मिचलेट (Michelet), गुइज़ोट, मिगनट और थियरों के लेख-नीय हैं। इस राज्य-काल ने साहित्य और कला के अनन्व महान् प्रामीनी निमाया के दशन किए।

विदेश-नीति (Foreign Policy)—वस्तुतः सुई पितृप विदेशी मामला म शान्ति की नीति का अनुसरण करता था। किन्तु वह अपन देगवामिया का रण की इच्छा (La Glorie) की पूणत उपशा नहीं कर पाया। यद्यपि वह पामर्यन म अधिक अर्धे सम्बन्ध नहीं रख पाया तथापि सभ्नानी विक्टोरिया म राज्य अर्धे

राम्य न था। इस प्रकार की नीति का अनुसरण करने का प्रयत्न किया गया जो द्वात्रिंशत् की नीति का अनुसरण था। धारम्भ में जब बल्जियम ने हाग्वेस्ट का विरुद्ध किया तो लुई फिलिप की इच्छा हस्तगत करने की थी किन्तु बाद में वह इंग्लैंड की नीति अपनाते के लिए सहमत हो गया कि उह स्वतन्त्रता प्राप्त करके अपना राजा चुनने दिया जाय। उसने यूनान के नये राज्य का एक उत्तर राजा पान में गहायता की। वह बलवान में रंग का प्रभाव बढ़ने नहीं देना चाहता था।

धीयग इंग्लैंड से स्वतन्त्र गतिवाली विदेश-नीति का समर्थक था। १८३६ में वह मन्त्री इसाबेला के विरुद्ध विद्रोह का दवाने के लिए फ्रांस की सनाए स्पेन भ्रजन का समर्थक था। किन्तु सम्राट ने उम अपसम्भ कर दिया। १८४० में इंग्लैंड और फ्रांस में युद्ध का सम्भावना थी। इसका कारण यह था कि धीयग उम समय प्रधान मन्त्री था और वह मिस्र के पाना मेहमतमली की महायता करने के लिए दृढ-मकल्प था। इंग्लैंड का विदेश-मन्त्री पामस्टन मेहमतमली की बढ़ती हुई शक्ति का कुचलकर उसके विरुद्ध तुर्की की सहायता करना चाहता था। ब्रिटेन को आस्ट्रिया और रूस का समर्थन प्राप्त था। यदि लुई फिलिप ने धीयस को मनमानी करने का होती तो इंग्लैंड और फ्रांस में युद्ध अवश्य ही होता। उस समय धीयस का पदच्युत कर दिया गया और युद्ध टल गया। गुर्डोत्त को प्रधान मन्त्री नियुक्त किया गया जो स्वयं गान्ति में विश्वास रखता था। परिणामतः मेहमतमली का भ्रदन और सीरिया छोड़ने पड़े और उसे मिस्र का वग परम्परागत राज्यपाल मान लिया गया।

चाल्स दशम के काल में फ्रांस की सेनाओं ने अल्जियस नगर पर अधिकार करके उसके शासक का देश निकाला दे दिया था। बहुत वर्षों तक लुई फिलिप अल्जीरिया के विषय में नीति का निगम नहीं कर पाया। सरकार के सम्मुख तीन माग थे—सारे देश पर अधिकार कर लिया जाय देश के थोड़े से भाग पर अधिकार किया जाय या इस देश को विलकुल छोड़ ही दिया जाय। उदार दल वाले इससे अपनी सनाए बुला लेने के पक्ष में थे। १८३४ से १८३६ तक फ्रांस की सरकार ने अल्जियस और कुछ समुद्री तट के छोटे कस्बों पर अधिकार किये थे। सम्राट ने इस दंग में धीरे धीरे अदर धुमन की शाना दे दी। १८३६ में अवेद भल-कादिर द्वारा फ्रांसीसियों के विरुद्ध जिहाद की घोषणा करने पर नक्शा बदल गया। सम्राट को सेनापति ब्युग्याड (Bugeaud) के नेतृत्व में अवेद भल-कादिर का दमन करने और सार दंग पर अधिकार करने के लिए एक लाख सना भेजने के लिए विवश होना पड़ा। लडाई बहुत लम्बी चली और बड़ी हानि हुई। १८४७ में अवेद-भल-कादिर पकड़ लिया गया और अल्जीरिया में शान्त हुई। लगभग ४० हजार फ्रांसीसी इस उपनिवेश में बसा दिये गए। यह फ्रांस के औपनिवेशिक साम्राज्य का धारम्भ था।

लुई फिलिप अपने परिवार के हित के लिए बड़ा जागरूक था। उसकी एक पुत्रा का विवाह बल्जियम के राजा लियोपोल्ड प्रथम के साथ और दूसरी का बुरटेमबर्ग के राजा से हुआ। १८४६ में उसने अपने एक पुत्र का विवाह स्पेन की राजाणी इसाबेला तृतीय की बहन से किया।

क्रान्ति की ओर (Towards Revolution)—१८४६ के आरम्भ होने से पहले लुई फिलिप की मध्यमवर्गीय राजशाही स देश के सार वग बड़े असन्तुष्ट हा गय । न्याय युक्ति' के समयक (Legitimist) लुई फिलिप को राज्य के अधिकारी नहीं मानते थे, क्योंकि उनके विचार से सिंहासन पर चार्ल्स दसम के पौत्र काउण्ट फ्रॉफ चेम्बोर्ड का अधिकार था । वे उसकी सरकार का क्रान्तिकारी और बुजु भा मानते थे । गणतंत्र के समयक राजशाही को समाप्त करके देश में गणतंत्रीय शासन की स्थापना करना चाहते थे । वे सावजनिक वयस्क मताधिकार क समयक थे और लुई फिलिप की बुजु भा राजशाही से नितान्त असंतुष्ट थे ।

समाजवादी भी लुई फिलिप की बुजु भा सरकार की निंदा करते थे । मजदूरों की हालत बड़ी असतोषजनक थी और सरकार ने उनके हित क लिए कुछ भी नहीं किया था । वास्तव में सरकार ने मजदूरों की भीड़ों को त्राहने के लिए शक्ति का प्रयोग किया था और श्रमिक सगठनों को रोकने के लिए कानून भी बनाये थे । फ्रांस के प्रमुख समाजवादी नेता सेण्ट माइमन, फोरियर, फाबेट लुई, ब्लान्क और प्राउडन थे । सेण्ट साइमन वगानिकों और इंजीनियरों द्वारा संचालित एक सहकारी सरकार का समयक था । उसके शिष्या ने पेरिस क पास समाजवादी सेवामत की स्थापना का, जिसने १८३० में सरकार को पर्याप्त रूप से परेशान किया । फोरियर देश में सहकारी दस्तियाँ बसाने का समयक था । १८३० से १८४० तक फ्रांस में इमक कुछ अनुयायी थे । लुई ब्लान्क एक लाकप्रिय क्रान्तिकारी था, जिसकी मांग थी कि सरकार को सब मजदूरों का जीवनयापन के लिए उपयुक्त वेतन देना चाहिए । उसका शब्दों में, 'स्वस्थ शरीर लागा के लिए सरकार को काम, वृद्धों और अशक्तों के लिए सहायता और सुरक्षा दनी चाहिए । यह सब बिना प्रजातंत्रीय शक्ति क असम्भव है । प्रजातंत्रीय शक्ति वह शक्ति है जिसका सिद्धान्त जनता का सर्वाधिकार-सम्पन्नता है, जिसका उदगम वयस्क मताधिकार में है और जिसका चरम ध्यय स्वतंत्रता, समानता और मंत्री की प्राप्ति है । प्राउडन एक उग्र क्रान्तिकारी था । वह व्यक्तिगत सम्पत्ति और अधिकारपूण शासन के विनाश तथा स्वेच्छा से महयोग के आधार पर निर्मित नवान ध्यकथा का प्रतिपादक था । प्राउडन के अनुयायी थोड़े थे, किन्तु वे लाग किसी निर्माण की अपेक्षा विनाश के लिए अधिक उत्सुक थे । समाजवादी प्रचार में नी जनता में असताप फैला ।

फ्रांस के कथोलिक गुइज़ाट की भ्रष्टाचार-पूर्ण नीति स प्रसन्न नहीं थे । वे धर्म क मामले में सरकार की उदार नीति का भी नहीं चाहते थे । वे जुलाई की राजशाही क अप्रजातान्त्रिक ढंग का निन्दा करते थे और श्रमजीवियों क हित के लिए कानून बनाने की मांग करते थे । दगाभक्त, लुई फिलिप की द्यू विदग-नीति का निन्दा करते थे । वे अपनी विदग-नीति को इंग्लैंड की नीति की अनुचरों नहा देखना चाहते थे । वे राष्ट्रीय सम्मान और यग क समयक थे । उन्होंने यौथम का अपदम्य करन पर सम्राट की निन्दा की । धीमेसे गुईज़ाट के विरुद्ध दशमकता का अग्रणी बना ।

लुई फिलिप क राज्यकाल में नेपोलियन की विजया की बड़ी प्रसिद्धि हुई ।

नेपोलियन की कमियाँ को भूलकर उसकी सफलताओं का बड़ा योगदान हुआ। उसे एक महान् नेता तथा समाज का पुनर्स्थापक कहा जान सगा। सुई फिलिप ने नेपोलियन की सफलताओं को चिरस्मरणीय बनाने के लिए नेपोलियन विजय-स्तम्भ का निर्माण कराया। उसने नेपोलियन द्वारा जीत गए युद्धों के नाम पर राज्यों के नाम रगे। उसने ब्रिटिश सरकार को राजी करके सप्ट हलना द्वीप से नेपालियन के प्रवेशों को साफ़ प्रान्त में बड़ी धूमधाम से दफनाया। सुई बानापाट जो नेपालियन का भतीजा था के लगे से भी नेपालियन की योगाया का घोर भा प्रचार हुआ। नेपोलियन के योगान का परिणाम यह हुआ कि जनता ने नेपालियन की सफलताओं की तुलना में सुई फिलिप की सरकार की सफलताएँ नगण्य पाई।

मुधारवादिया ने भी सुई फिलिप की सरकार की बड़ी निंदा की। इसका कारण यह था कि इन लोगों की समाधारण माँगें कि मताधिकार का क्षेत्र बड़ा दिया जाय और भ्रष्टाचार को समाप्त किया जाय इत्यादि पर भा गुइज़ाट और सुई फिलिप ने कोई ध्यान नहीं किया और अकम्प्यता की नीति पर अड़े रहे। ये व्यक्ति प्रयोग समाचारपत्रों पर प्रतिबंध तथा श्रमिकों के सम्मेलनों पर रोक लगाने की नीति का व्यवहार करते रहे।

१८४७ में उदार मुधारवादिया ने जलसे करने शुरू कर लिये जिनमें मुधारों पर वाद विवाद होता तथा इस प्रकार उद्दिष्ट जनमत को अपनी ओर आकर्षित किया। कई अवसरों पर श्रमिकों की अवस्था में मुधार के नाम पर गराब के प्यालों पर हाथें उठाई जाती थी। एक अवसर पर लुआटिने ने राजशाही के अन्न की भविष्यवाणी की। २२ फरवरी १८४८ को मुधारवादियों ने एक विनिष्ट भोज (Monster Banquet) का आयोजन किया किन्तु सरकार ने इस पर रोक लगा दी। इससे परिस्थिति और भी जटिल हो गई। नियत दिवस पर श्रमिकों और विद्यार्थियों ने इक्वेट हाकर मुधारों की माँग के लिए नारे लगाये। मारसिलेस का क्रांति-गीत गाया गया और सत्वा पर जगह-जगह आग (bonfire) जलाई गई। २३ फरवरी १८४८ का राष्ट्रीय रक्षक सेना (National Guards) को व्यवस्था स्थापित करने का आदेश मिला किन्तु सरकार की आज्ञा पालन करने की अपेक्षा के जनता से जा मिले। जनता ने गुइज़ोट का नाम ही के नारे लगाये और सभा ने गुइज़ोट के त्याग पत्र देना कहा। परिस्थिति बिगड़ती नहीं यदि गुइज़ोट के निवासस्थान की रक्षा करने वाले मजदूरों ने जनता का भाइ पर गोली न चलाई होती। इस गोली चलाने से २३ प्रदानकारी मारे गये और ३० घायल हुए। प्रदानकारियों ने मृतकों का गाँधी पर लाठर मगाने जलाकर सारे पेरिस नगर में घुमाया और इस कृत्य का परिणाम क्रांति हुआ। सड़कों पर मोर्चाबंदी कर दी गई और सुई फिलिप हमारी हत्या उगी तरह कर रहा है जिस तरह चार्ल्स दशम ने की थी इस लिए उसे भी चार्ल्स का राह चाना चाहिए' इस प्रकार के सूचना-पत्र सारे पेरिस भर में लगाये गये। सुई फिलिप ने स्थिति संभालने का प्रयत्न किया किन्तु असफल रहा। अन्ततः उसने अपने पौत्र काउंट आफ पेरिस के लिए राज्य त्याग करके 'मिस्टर स्मिथ' के रूप में इतलण्ड को प्रस्थान किया।

१८४८ की क्रान्ति का वणत किमी ने इस प्रकार किया है "मैं अभी पूर चार वष का भी नहीं हुआ था कि एक प्रात मरी माता न मुझ विन्तर पर से गादी म उटाया और मेरे पिता ने, जिसन नयनल गाड का गणवेश पहिन रखा था बडी भावुकता से मुझे प्यार किया। गली से रामिरी बजी और सडक पर घोडा की टापें गूँज उठीं। कभी-कभी हमें चिल्लान की आवाज और दूर गानी चलाने की धमक मुनाई पड जाती थी। मेरी माता ने खिडकी से कपडे का पदा उठाकर बाहर भाका और फूट-फूटकर राने लगी। यह शान्ति थी।" (Anatole France, *Le Petit Pierre*)

यह दात ध्यान रखने योग्य है कि लुई फिलिप का अत इसलिये हुआ कि वह देश के सब वर्गों का प्रिय नहीं हा पाया था। वह अल्पसंख्यक मध्यमवर्ग के समयन पर निर्भर रहा जिसका न कोई चरित्र ही था और न ही सरकार का नियन्त्रण संभालन का ऐतिहासिक आधार, पर य लोग समान्तवर्ग तथा साधारण जनता दोना से घृणा करते थे। यदि लुई फिलिप ने सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में सुधार के प्रयत्न किये हाते तो वह जनता का समयन प्राप्त करने में सफल हुआ हाता, किन्तु उमने ऐसा नहीं किया। वह फ्रांस की जनता का प्रेम शक्तिशाली विदशनीति का अनुसरण करके प्राप्त कर सकता था, किन्तु उसने यह भी नहीं किया। परिणाम यह हुआ कि जुलाई की राजशाही का पतन हा गया।

१८३० और १८४८ की क्रान्तियों की तुलना

१८३० की क्रान्ति मूलत मध्यमवर्ग की क्रान्ति थी। बुजुर्ग आ-वर्ग पर चाल्स दशम की नीति से बडा आघात पहुँचा था और इस कारण जुलाई-क्रान्ति हुई। १८२५ म क्षतिपूर्ति विधेयक लागू हुआ, इसके अनुसार भगाडे सामन्ता की सम्पत्ति का फ्रांसीसी क्रान्ति के समय उच्छ कर ली गई थी, क्षतिपूर्ति करने की व्यवस्था की गई। यह क्षतिपूर्ति राष्ट्रीय ऋण के सूद की दर ५ प्रतिशत से घटाकर ४ प्रतिशत करके की गई। इससे मध्यमवर्ग को बडी हानि हुई। दूसरा कारण था अपमान-विधेयक' (Sacrilege Act) जिसके अनुसार धार्मिक काल में निदयता से दण्ड देन का विधान था। चाल्स दशम के चरित्र न भी मध्यमवर्ग को अपने विरुद्ध कर लिया। प्रा० हेयस के अनुसार, चाल्स जिन सिद्धान्तों का मानता और प्रतिपादित करता था, वे थे सिंहासन और पूजा की वेदी की एकता, प्राचीन युग के राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक और बौद्धिक सिद्धान्त की स्थापना, और क्रान्तिकारी सिद्धान्तों से घृणा करना। चाल्स स्वयं कहा करता था कि समय मुझे और सफायत का १७८६ से बदल नहीं पाया। इस प्रकार के विचारों वाला व्यक्ति, समानता, स्वतंत्रता और मित्रता के सिद्धान्तों से प्रभावित फ्रांस के निवासियों पर राज्य करन के उपयुक्त नहीं था। उसकी व्यवस्था का धार विरोध भव्यपम्भावी था। जनता जेसुइटो का देश की शिक्षा का नियन्त्रण देने को उद्यत नहीं थी। वे अपनी सन्तानों को धर्म-निरपन्न शिक्षा दिताना चाहते थे। समाचारपत्रों पर प्रतिबन्ध लग जान से भी बडा अपमानोप फँला। सम्राट की अनुमति के बिना कुछ भी प्रकाशित नही हो सकता था। चाल्स दशम की सरकार ने मताधिकार में सम्पत्ति की योग्यता का स्तर ऊँचा कर

शिया जिंगे मध्यम श्रेणी के लोगों का महाधिकार बहुत कम हो गया। गुप्त मतान-प्रणाली समाप्त कर दी गई और जागीरदारों को हुकने मतान का अधिकार शिया गया। १८२७ में राष्ट्रीय रक्षा सेना को भंग कर दिया गया। मन्थेप मन्थाल्म की घनेक भूमों और नृतिया के कारण मध्यमवर्ग की जनता का उसके प्रति विरोध बढ़ता गया और घन्त में १८३० में उसकी सरकार का घन्त हो गया।

१८३० की क्रान्ति भूमन एक मध्यवर्गीय श्रान्ति थी, किन्तु १८४८ की श्रान्ति भूमन एक समाजवादी श्रान्ति थी। सुई फिलिप की सरकार के पतन में समाजवादिया का बड़ा हाथ था। फ्रांस में औद्योगिक प्रगति के कारण देश में एक श्रागणक श्रमिक बग का जन्म हुआ। बपोकि सरकार ने श्रमिकों की श्रवस्या में सुधार करने के लिए कुछ नहीं किया घन्त समाजवादी नेताधा ने परिस्थिति से लाभ उठाया। सेण्ट साइमन, फोरियर, प्राउडन और सुई ब्येन की विचारधारा ने श्रमिका में हलघल पदा कर दी और सामाजिक और राजनीतिक सुधारों की मांग हान लगी। श्रमिक शिल्पात में 'हमें रोटी दो या गोली दो' सुई फिलिप की सरकार ने जनता द्वारा घान्दोलन करने पर भी सुधार की ओर ध्यान नहीं दिया। जनता में घसनीप बढ़ता गया और जिसका परिणाम फरवरी श्रान्ति हुई।

इन दो श्रान्तियों के तात्कालिक कारण भिन्न भिन्न हैं। १८३० में इसके तात्कालिक कारण शाल्म दशम के शार श्रपमानजनक विधेदक थे, किन्तु १८४८ में तात्कालिक कारण २२ फरवरी के महान् उत्सव पर रोक लगाना और श्रान्ति-कारियों पर गोली चलाना था।

शाल्म दशम का समझौता न करने वाला श्रवितत्व जुसाई श्रान्ति का कारण था। सुई फिलिप की श्रलोकप्रियता उसके पतन का कारण थी। देश भर में उसका एक भी समर्थक नहीं था। थीयस (Thiers) को इसके पद से हटाने और १८४० में १८४८ तक गुइजोट के पूँसखोर शासन में जनता के सारे बग उसके विरुद्ध हो गये थे। प्रो० हन्गों के मतानुसार उसे कोई भी नहीं चाहता था, केवल कुछ ही लोग उसका श्रादर करते थे और बहुत ही छोटे मध्यमवर्गीय लोग उसके समर्थक रहे।

दोनों ही शासनों की श्रवधि में फ्रांस की जनता सरकार से श्रवितगाली विधेद नीति श्रपनाने की मांग करती रही किन्तु सरकारों ने जनता की मांग की श्रपशा की इस कारण दोनों का पतन हुआ। शाल्म दशम के समय १८३० में श्रलजियम जीत लिया गया था किन्तु यह सूचना उपयुक्त समय पर नहीं पहुँची जिसमें उसकी रक्षा हो पाती। सुई फिलिप की श्रकमण्य नीति' से फ्रांस की जनता तग भा गई थी। उसके श्रपने श्रादो में मुद्र करने की श्रपेक्षा बारह ससदों का दमन करने के लिए तयार है। वह विधेद-नीति का देश के हित के लिए सचालन करने की श्रपेक्षा श्रपने परिवार के हित में सचालन करता था। उसने पोलैण्ड और उत्तरी इटली के लोगो की सहायता नहीं की। जब थीयस तुर्की के सुलतान मेहमत श्रती की सहायता करना चाहता था तब सुई फिलिप ने उसे पदश्रुत करके पामस्टन से समझौता कर लिया। गुइजोट निरन्तर श्रान्ति की नीति का श्रनुसरण करता

रहा। उसका आदेश था, 'सब वालों और स्थानों में शान्ति की सुरक्षा करना।' ले मार्टिने ने इसका उत्तर दिया कि 'इस नीति का बचल एक पाषाण-स्तम्भ बना सकता है।' १८४७ में फ्रांसीसी समद के एक सदस्य ने पूछा 'इन लोगों ने गत वर्षों में क्या किया? कुछ नहीं कुछ नहीं।'।

यह बात उल्लेखनीय है कि जहाँ जुलाई १८४८ की आत्म दंगम की वैधानिक-समयक नीति का परिणाम थी वहाँ फरवरी १८४८ की धर्म विरोधी नीति का परिणाम थी। प्रधान मंत्री पार्लियों के विरोधी विद्वविद्यालयों का सहायता देता था। वह धार्मिक सहिष्णुता का समयक था जिसके कारण वैधानिक बड़े गृह थे।

जुलाई १८४८ की सिंहासन पर एक अग्र बुजुर्ग सम्राट् को बैठाया, फरवरी १८४८ की प्रजातंत्र की स्थापना की। १८३० में सावजनिक मताधिकार का बचन दिया गया था किन्तु १८४८ में यह अधिकार वास्तव में जनता का प्राप्त हुआ। १८३० की १८४८ की आत्म दंगम में सामाजिक-व्यवस्था में उथल पुथल नहीं की तथा जुलाई १८४८ की प्रजातंत्र प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष थी। सुई फिलिप के राज्यासीन होते ही व्यवस्था स्थापित हो गई थी। किन्तु फरवरी १८४८ की प्रजातंत्र का जून १८४८ में घोर रक्तपात देवना पया। १८३० में १८४८ की प्रजातंत्र ने दैवी अधिकारपूण राजशाही को उखाड़ा किन्तु १८४८ की प्रजातंत्र ने मध्यमवर्ग की सीमित राजशाही का उखाड़कर एक प्रजातंत्र शासन प्रणाली की स्थापना का जो चार वर्ष तक चली।

प्रा० ह्यस के शब्दों में 'फरवरी १८४८ की प्रजातंत्र आधारभूत रूप से जुलाई १८३० की प्रजातंत्र से भिन्न नहीं थी। दोनों ही प्रजातंत्रों परिस नगर की घटनाएँ थीं। दोनों ही मूलतः राजनीतिक तथा केवल मूल रूप से सामाजिक थीं। दोनों ही प्राथमिक रूप से सुधारवादी थीं। यह सत्य है कि एक न सीमित मताधिकार सहित राजशाही की स्थापना की ता दूसरी न प्रजातंत्र की स्थापना करके वयस्क मताधिकार प्रणाली प्रचलित की। दोनों ने ही जनता की सर्वाधिकार-सम्पन्नता के सिद्धांत को मायता भी दोनों ने ही 'तिरग' ध्वज को तथा मारसिलेस के प्रजातंत्र-गान को अपनाया। दोनों में ही सम्पत्ति के स्वामियों की विजय हुई तथा दोनों ने ही उन नीतियों का अनुसरण किया जिनमें सम्पत्ति के स्वामियों की दृष्टि का प्रतिबिम्ब भनकता था।'

सामयिक सरकार (Provisional Government)—सुई फिलिप के पतन के पश्चात् २६ फरवरी १८४८ को द्वितीय गणतंत्र की घोषणा हुई। लिमार्टिन के मतानुसार 'राजशाही की समाप्ति और गणतंत्र का स्थापना हुई। पुनश्च 'सामयिक सरकार ने काम दकर श्रमजीवियों का अस्तित्व मुग्धित किया।' सरकार ने श्रमिक नागरिक का काम देने का दावा किया। कामचलाऊ सरकार में लिमार्टिन एक 'कार वैधानिक, निरक्ष-रोलन एक जेकोबिन प्रजातंत्रवादी सुई ब्लाक समाजवादी नेता, तथा एल्बट एक श्रमजीवी थे।

लिमार्टिन के विचार से गणतंत्र एक लक्ष्य था किन्तु सुई ब्लाक इसे लक्ष्य का

साधा मानता था। स्त्राँक द्वारा तयार की गई एक प्राज्ञप्ति में व्यक्तवाची कि 'सामयिक सरकार अपने श्रमजीवियों का काम देकर उनका प्रतिबन्ध बनाए रखने में सक्षम होगा। सरकार प्रत्येक नागरिक को काम देने का दावा करती है। २७ फरवरी, १८४८ की एक प्राज्ञप्ति में कहा गया था 'सामयिक सरकार राष्ट्रीय कारखानों की स्थापना की घोषणा करती है। सावजनिक निर्माण विभाग के मंत्री (Minister for Public Works) को इस प्राज्ञप्ति की पूर्ति का कार्यभार सौंपा गया है।

सुई ब्लॉक को एक आयोग का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। इस आयोग का काम था कि यह श्रमजीवियों का दावा पर विचार कर तथा उनके हितों की रक्षा करे। उमरा कार्यालय लक्समबर्ग महल में था। लक्समबर्ग में सुई ब्लॉक काम चलाने सरकार का गम्भीर प्रतिद्वन्द्वी बन गया और सरकार को अपस्थ करने जन सुरक्षा समिति की स्थापना का कई प्रयास किये गए। लक्समबर्ग आयोग की चार माँग थी अर्थात् दिन में दस घण्टे की कार्य अवधि काम के बटवारे पर प्रतिबंध काम को तोड़ने की प्रथा की समाप्ति और उचित निम्नतम वेतन। इस आयोग ने अनेक योजनाओं पर विचार किया किन्तु लक्समबर्ग आयोग को एक ही बात का श्रेय दिया जा सकता है कि इससे सहकारी उत्पादन के विचार को प्रोत्साहन मिला। कहा जाता है कि दर्जियों घोड़ों के साज बनाने वाले जुलाहों और अन्य श्रमजीवियों की लगभग एक सौ सहकारी समितियों की स्थापना की गई।

पेरिस की भीड़ की हिंसावृत्ति से भी बड़ा भारी खतरा था। १७ मार्च १६ अप्रैल और १५ मई को इन तीन अवसरों पर आंतरिक मतभेद से पीड़ित सामयिक सरकार को अपदस्थ करने के प्रयत्न किये गए। इसके एक गुट का नेता लिमाटिने और दूसरे का सुई ब्लॉक और एल्वट थे।

सावजनिक चुनाव २३ और २४ अप्रैल १८४८ को हुए और राष्ट्रीय सभा का प्रथम अधिवेशन ४ मई १८४८ को हुआ। मतदान वयस्क मताधिकार के आधार पर था किन्तु उग्रशैलीय व्यक्ति नहीं चुने गये। निर्वाचित सदस्यों का बहुत बड़ा बहुमत नरमदलीय व्यक्तियों का था। सामयिक सरकार ने अपनी सारी सत्ता राष्ट्रीय सभा के हाथों सौंपकर पदत्याग कर दिया। सभा ने एक कार्यकारिणी चुनी जिसमें सुई ब्लॉक और एल्वट दोनों में से कोई भी नहीं था। इहे मंत्रिमण्डल में भी नियुक्त नहीं किया गया।

राष्ट्रीय सभा का राष्ट्रीय उद्योगों की समस्या को सुलझाना था। यह ध्यान रखने प्राय्य बात है कि २५ फरवरी १८४८ को सामयिक सरकार ने राष्ट्रीय कारखानों की स्थापना का सिद्धांत रूप से स्वीकार कर लिया था तथा २७ फरवरी की प्राज्ञप्ति द्वारा इनकी स्थापना तुरन्त ही करनी थी। किन्तु वास्तव में कोई कारखाने नहीं थे और कुछ हजार व्यक्तियों का काम सौंपा जा सका था। काम माँगने वालों की संख्या प्रतिदिन बढ़ती गई परिणामतः सरकार को बिना काम के भी वेतन देने को विवश होना पड़ा। केवल पेरिस निवासी ही काम की माँग नहीं करते थे

अपितु देग क ग्रामों से विभिन्न प्रकार के व्यक्ति काम प्राप्त करने के लिए परिसर चले आए। उनकी मर्यादा इतनी अधिक हो गई कि सावजनिक व्यवस्था का खतरा पैदा हो गया और राष्ट्रीय सभा अममजस में पढ़ गई कि क्या कर? इस प्रकार की परिस्थिति में ऐमिली थामस का राष्ट्रीय कारखानों का सचालक नियुक्त किया गया। यद्यपि थामस सभी बेगजगार व्यक्तियों को काम नहीं दे सका तथापि वह घोर अन्व-वस्था में कुछ व्यवस्था स्थापित कर पाया। उसने कामदिलाऊ कार्यालय की स्थापना की। उसने आर्थिक सहायता के बाँटने के काय को वेदित किया और बेकार व्यक्तियों के प्रशिक्षण का प्रबंध भी किया। घोषणाही और अन्ववस्था की आशंका घट गई। कहा जाता है कि १६ अप्रैल, १८४८ को ६६ हजार बेकार व्यक्तियों के नाम लिखे गये किन्तु मई समाप्त होते-होते यह संख्या एक लाख बीस हजार हो गई।

१५ मई का लगभग एक लाख व्यक्तियों की भीड़ ने राष्ट्रीय सभा भवन पर आक्रमण किया और नई सामयिक सरकार बनाई। किन्तु लिमादिने और लेटूर-रोलिन ने दम्पता से परिस्थिति संभाली। सेना की सहायता से उन्होंने भीड़ को हटा कर भगा दिया और विद्रोही नेताओं को पकड़ लिया। राष्ट्रीय कारखानों से उत्पन्न अन्ववस्था को ठीक करने के लिए तैयारियाँ की गईं। सेनापति कैविगनेक (Cavaignac) का युद्ध मंत्री नियुक्त किया गया और सेना में बहुत संख्या में लोग भर्ती किए गए। आनक्ति प्रचारित की गई कि जो लोग पेरिस में अपना निवास छोड़ने का सिद्ध नहीं कर सकेंगे उन्हें पारपत्र देकर राजधानी से बाहर निकाल दिया जाएगा। ठीक के काम की प्रथा व स्थान पर दिन के काम की प्रथा प्रचलित हुई। उद्योग-पतियों को आदेश हुआ कि रिक्त स्थानों को सरकार के माध्यम से पूरा करें। जो कमचारी सर-सरकारी मर्यादा म काम करने से मना करें तथा १८ से २५ वर्ष की आयु के बीच के सारे अविवाहित कमचारी जो सेना में भर्ती होने से मना करें उन्हें सरकारी कारखानों से निकाल दिया जाय। सरकार ने २२ जून, १८४८ को इन आगामी की लागू करने का प्रयत्न किया जिससे श्रमिकों ने बड़ा उत्पत्त किया। २३ जून को सारे पेरिस में बड़ा भारी दंगा हुआ और गलियों में मार्चबन्दी की गई। २४ जून से २६ जून तक पेरिस की गलियों में घोर युद्ध हुआ। बहुत रक्तपात हुआ और लगभग ४००० विद्रोहियों को समुद्र पार के उपनिवेशों में निष्कासित कर दिया गया। एक व्यवस्थित आन्दोलन के रूप में समाजवाद नष्ट कर दिया गया। लुई ब्लान्क को मर्यादा का भय दिखाया गया। वह झगड़ भाग गया। प्राउडन को कैद कर लिया गया। किन्तु समाजवाद को नष्ट करके सामयिक सरकार ने स्वयं अपना विनाश कर लिया।

यद्यपि कैविगनेक ने अपनी तानाशाही सत्ता का परित्याग कर दिया था ता भी राष्ट्रीय सभा ने उसे कार्यकारिणी (Council) का अध्यक्ष चुना। दिसम्बर, १८४८ में राष्ट्रपति के चुनाव होने तक वह भास का शासक रहा। किन्तु वह गणतंत्र के प्रति भक्त रहा और वानापाट-दल ने साम्यवादिया तथा याववादियों से इसकी रक्षा का प्रयत्न किया। राष्ट्रीय कारखाना को समाप्त कर दिया गया। विद्रोही विचारों को फँसाने वाले कलबों को बन्द कर दिया गया। कुछ समाचारपत्रों को

कर दिया गया। राष्ट्रीय रक्षक सभा का नियंत्रण वर्गानियंत्रण को सौंप दिया गया।

बहुत विचार विमर्श के पश्चात् राष्ट्रीय सभा ने गणतन्त्रीय प्रणाली का संविधान तैयार किया। संविधान में व्यवस्था हुई कि वयस्क मताधिकार के आधार पर उपनिवेशों और प्रदेशों द्वारा ७५० सदस्य एक ही विधान सभन के लिए चुने जायेंगे। ये सदस्य वैतनभोगी होंगे। मतदान सीधा (direct) होगा। इस सभन का तान बंध बाद भंग कर दिया जायेगा। राष्ट्रीय सभा द्वारा एक राज्य सभा (Council of State) बनाई जायेगी जो कानूनों का मसविदा तैयार करेगी। प्राप्त का एक राष्ट्रपति होगा जिसे जनता वयस्क मताधिकार के आधार पर सीधे मतदान (direct election) द्वारा चुनेगी। राष्ट्रपति अपने मंत्री नियुक्त करेगा किन्तु मन्त्रा विधानमण्डल के प्रति उत्तरदायी होंगे। राष्ट्रपति और मंत्री दोनों ही सर्वोच्च न्यायालय के प्रति उत्तरदायी होंगे। राष्ट्रपति को विधेयका पर निलम्ब निषेधाधिकार (Suspensive Veto) होगा। राष्ट्रपति की कार्यभारविचार बंध बंध होगी तथा वह दूसरी बार नहीं चुना जाएगा। एम ग्रेव (M Grevy) ने राष्ट्रपति में सम्बंधित व्यवस्था का विरोध करते हुए कहा क्या आप लोगों को विश्वास है कि एक वह महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति जिसे आप राष्ट्रपति के सिंहासन पर बठायेंगे अपना शक्ति को निरन्तर बनाये रखने का प्रयत्न नहीं करेगा? विनापत यदि वह व्यक्ति फ्रांस पर शासन करने वाले राजवशों का वर्ग हुआ तो क्या आपने पास कोई भावशासन है कि वह व्यक्ति वह महत्त्वाकांक्षी गणतन्त्र की समाप्ति नहीं करेगा? शीघ्र के विरोध होने पर भी फ्रांस की संविधान सभा ने राष्ट्रपति से सम्बंधित व्यवस्थाओं को स्वीकार करके गणतन्त्र पर घातक प्रहार किया।

नये संविधान के अनुसार चुनाव हुए और लुई नेपोलियन को राष्ट्रपति चुना गया। उसे ५४ ३४ २२६ केविगनक को १४४८ १०७ और लिमार्दिने को केवल १७ ६१० मत प्राप्त हुए। लुई नेपोलियन के राष्ट्रपति बनने से फ्रांस के इतिहास में एक नए अध्याय का आरम्भ हुआ। इसलिए आवश्यक है कि उनकी जीवनी और सफलताओं का उल्लेख किया जाय।

लुई नेपोलियन (Louis Napoleon)—लुई नेपोलियन बोनापार्ट का जन्म १८०८ में पेरिस में हुआ था। वह हालण्ड के सम्राट के भाई लुई बोनापार्ट तथा नेपोलियन प्रथम की रानी जोसफीन के प्रथम विवाह से उत्पन्न तीसरी पुत्री होटेंन्सी व्युहारनिएस का पुत्र था। इसलिए नामकरण के समय नेपोलियन प्रथम ने अपना नाम बोनापार्ट-वर्ग की नामावलि में लिखाया था। १८१४ में जब संयुक्त राज्य की सेनाओं ने पेरिस पर अधिकार किया प्रशिया का राजा विलियम अपने बच्चा को होटेंन्सी के बालक के साथ खेलने के लिए ले आया था। लुई नेपोलियन की भावी जन्म सम्राट से यह प्रथम भेंट थी। वाटरलू की लड़ाई के पश्चात् होटेंन्सी और उसके बालक ने स्विटजरलण्ड में शरण ली। १८३० का क्रान्ति के समय युवा राजकुमार रोम में थे और वे एक गुप्त सस्था (Carbonari) के सदस्य थे। लुई नेपोलियन का बड़ा भाई इटली में मर गया तथा जुलाई १८३३ में फ्रांसिया की

राजकुमारी से उत्पन्न नेपोलियन प्रथम के पुत्र नेपोलियन द्वितीय की मृत्यु हो गई । इसके पश्चात् सुई नेपोलियन को बोनापाट के समयकों का नेता और जनराधिकारी माना जाने लगा ।

१८०६ में पहली बार सुई नेपोलियन न अपना अधिकार की मांग की । स्ट्रासबर्ग (Strasbourg) जहाँ नेपोलियन की कट्टर समयक सेनाओं का पडाव था सुई बोनापाट भाया और उसन मांग की कि व देग म नपोलियन साम्राज्य की स्थापना में उसकी सहायता करें । किंतु वह लगभग तीन घण्टों में ही पकड़ा गया और सुई फिलिप ने इसके विरुद्ध कारवाई करने के बजाय इसे केवल सयुक्त राज्ज अमेरिका मिजवा दिया । १८४० में यह पुन बोलेने (Boulogne) नामक स्थान पर उतरा और घोषणा की 'नेपोलियन प्रथम के अद्वय केवल फ्रांस के पुनर्निर्माण होने पर ही गान्ति से रह सकेंगे । उसे फिर कैद करके हैम (Ham) के किले में बन्द कर दिया गया । बन्दीगृह में उसने अपना आन्दोलन जारी रखा । १८३६ तक यह एक पुस्तक 'नेपोलियनवाद की विचारधारा' (Napoleonic Ideas) लिख चुका था जिसमें उसने निजी राजनीतिक विचारों का प्रतिपादन किया था । उसके विचारानुसार नेपोलियनवादी साम्राज्य' स ही १७८६ के सिद्धान्तों की पूर्ति की जा सकती है । इस साम्राज्य की नौव राष्ट्रीय सवाधिकार-सम्पन्नता' क सिद्धान्त पर आधारित थी । इसका मुख्य नानि का आधार सावजनिक बन्धन मनाधिकार था । विदेशनीति के क्षेत्र में इसका लक्ष्य राष्ट्रीय-सम बनाना था जिस रोम के सम्राट सीजर के सिद्धान्तों पर मगठित करना सचालन करना तथा बगम्वा बनाना था । १८४१ में जब यह बन्दीगृह में ही था उसने 'Fragments of Historiques' लिखा जिसमें उसने गुईज़ाट द्वारा फ्रांस की १८३० की और इंग्लैंड की १६८८ की क्रान्तिमों की तुलना का लक्षण किया था । १८४४ में उसने 'The Extension of Pauperism' लिखा जिसमें उसने देश में बकारी हटान और आर्थिक अवन्या सुधारन की योजना का उन्नेत किया । उसका दावा था कि "वह उद्योगों का नया क्षेत्र खोल कर देग के धनिकों के लिए नवीन योजनाएँ बनायेगा और किसानों का महानता देकर गेठी की उन्नति करेगा । प्रत्येक व्यक्ति को जीवन-उपान के मायन उपयुक्त होंगे और देग से गरीबी खट दी जाएगी । उसके अर्थों में ईसाई धर्म की विजय के कारण समार में दासता की प्रदा समाप्त हुं, फ्रांस क्रान्ति की विजय ने भुजार-दारों समाप्त कर दी और प्रजातन्त्र की विजय गरीबी को नष्ट कर दी ।" १८४५ में उसने 'History of Artillery' लिखा । मर् १८६६ में नेपोलियन पैम के दुग न भागने में सफल हुआ और इंग्लैंड चला गया जहाँ वह दो वर्ष टिका रहा ।

फरवरी १८४८ में जब क्रान्ति हुई तो सुई नेपोलियन न द्वितीय गणतन्त्र को अपनी भवार्थ समर्पित की । किन्तु उसकी मेवाएँ स्वोकार ननों नूई और उस भागा गी गई कि वह बीबीम फण्टा के भीतर ही दग छोट कर चला जाए । अतः, १८६८ में जब चुनाव हुए तो उसने भाग नहीं लिया । किन्तु उसका समयक निरंतर उसक लिए प्रचार करत रहे । जून, १८४८ में जब चुनाव हुए वह अपना क्षेत्र में अनुपस्थित होने पर भी चुन लिया गया । सुई नेपोलियन न राष्ट्रीय मन्त्र का

सम्बन्ध से इस प्रकार लिगा—' मेरा नाम ही व्यवस्था, राष्ट्रीयता और यश का प्रतीक है। मुझे घटपन्त दुःख होगा यदि इसका प्रयोग दण्ड में अमानि पदा करने के लिए किया गया। किन्तु जनता न यदि मुझ पर काय भार डालता है तो मैं उम पूणतमा निभाना भी जानता हूँ। राष्ट्रीय सभा बड़ी परेशान हुई किन्तु लुई नेपोलियन ने अपने स्थान से त्यागपत्र दे दिया। जून १८४८ के रक्तपात के अन्तिम में नेपोलियन दूर था इसलिए उसका नाम इन घटनाओं में नहीं आया। सितम्बर में दूसरी बार वह पाँच बुनाव क्षेत्रों से चुना गया और २६ सितम्बर १८४८ को उसने राष्ट्रीय सभा में अपना स्थान ग्रहण कर लिया। दिसम्बर, १८४८ में जब राष्ट्रीय पद के लिए चुनाव हुआ तो वह अमानिती बहुमत से राष्ट्रपति के पद के लिए चुन लिया गया।

राष्ट्रपति नेपोलियन (Napoleon as President) (१८४८-१८५२)— १८४८ से १८५२ तक द्वितीय गणतंत्र के राष्ट्रपति होने के नाते लुई नेपोलियन ने इस प्रकार की नीति अपनाई कि वह फ्रांस देश की जनता का प्रेमपात्र बन सके। उसने कारखाने के श्रमिकों की प्रशंसा की। १८५० में उसने राष्ट्रीय सभा को एक कानून बनाने के लिए विवश कर दिया जिसने अनुसार वृद्धावस्था के लिए स्वयंसेवक बीमा हो जाना था। उसने कपोलिको और बुजुर्गों को भी प्रसन्न करने का प्रयत्न किया। उसने फ्रांस में उद्योगों की वृद्धि के लिए प्रोत्साहन भी दिया। पोग को पुनः पदासीन करने के लिए १८४९ में एक सैनिक अभियान को रोम भेजा गया। १८५० के एक कानून के द्वारा (Falloux Law of 1850) फ्रांस में शिक्षा के अधिकार जो पादरियों को अन्तः देश के समय प्राप्त थे उन्हें पुनः दे दिए गये।

१८४९ की चुनौती हुई सभा में बहुत छोटे बौनापाटवादी थे। ७५० सदस्यों में से ५०० राजशाही के समर्थक थे। गणतन्त्रवादी अल्पमत में थे। सभा में राजनतिक दल के नाम से कोई भी दल संगठित नहीं था और यह बात नेपोलियन के लिए हितकर सिद्ध हुई। प्रतिक्रियाशील नीति का अनुसरण करने के कारण राष्ट्रीय सभा उसके हाथों में खेलती रही। जनता के जलसों और समाचारपत्रों पर प्रतिबंध लगाया गया। सभा के सदस्य बतनिक बना दिए गए। १८५० में एक कानून बनाया गया जिसने अनुसार यदि किसी व्यक्ति ने एक ही क्षेत्र में तीन वर्ष तक निवास न किया हो और राजस्व न दिया हो तो उसे मतदान का अधिकार नहीं होगा। इस कानून का यह परिणाम निकला कि श्रमजीवी लोग जो रोजगार की खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकते फिरते थे पूणत मताधिकार से वंचित कर दिए गए। ९० लाख मतदाताओं में से ३० लाख मतदाता कम हो गए। इस कानून का विरोध हुआ। पेरिस में बड़ा असंतोष फैल गया। लुई नेपोलियन ने इस परिस्थिति से लाभ उठाया और घोषणा की— जनता का चुनाव हुआ प्रतिनिधि होने के नाते मेरा यह कर्तव्य है कि मैं राष्ट्रीय सभा को जनता के अधिकार छीनने से रोकूँ।' सभा और राष्ट्रपति में लगभग एक वर्ष तक संघर्ष चलता रहा। किन्तु जब राष्ट्रीय सभा ने उसके विरुद्ध खुले रूप से युद्ध घोषणा कर दी तो उसने राष्ट्रीय रक्षक सेना के सेनापति चगानियर को पदच्युत कर दिया। चगानियर के अपदस्थ कर दिए जाने से

परिस्थिति और भी जटिल हो गई। देग म राष्ट्रीय सभा की प्रतिष्ठा दिन प्रतिदिन घटती जा रही थी और नेपालियन की प्रतिष्ठा उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही थी। भास म बहूत-सु लाग ऐसे थे जा देग में राजशाही अथवा तानाशाही की स्थापना करने की सोच रह्ये। उम समय की अद्भुत परिस्थिति क विषय म किसी न बह्ये था 'यदि विश्व का कोई गणतया मन्त्र गामन प्रणाली है ता फान उस अपनाकर ससार का चर्चित कर दया। देग राजशाही के समयकों स मरा है किन्तु व उसकी स्थापना नहीं कर सकत तथा जो गणतंत्र क भार से तिलमिला रह है तथा जिसकी रक्षा क लिए गणतंत्रवादी नहीं हैं। उम अव्यवस्था म कवल दो ही व्यक्तिव स्थिर है एक नेपालियन और दूसरा पवन। केवल दो ही घटनाएँ सम्भव हैं। अथवा तानाशाही या क्रान्ति। मेरी दृष्ट धारणा है कि शक्ति ही इसका हल निकालेगी।

सभा न मन्त्रिमण्डल के विरुद्ध अविश्वाम का प्रस्ताव स्वीकार करके न त्यागपत्र देन के लिए विवश कर दिया। किन्तु राष्ट्रपति न दूसरा मन्त्रिमण्डल नियुक्त करन स इन्कार कर दिया। इसके विपरीत उमन सभा द्वारा अप्रदम्य मन्त्रिमण्डल का पुन नियुक्त कर दिया। सभा ने राष्ट्रपति का वेतन बढ़ान से इन्कार कर दिया। सविधान म सशोधन करने का विधेयक बहुमत स स्वीकार हुआ, किन्तु यह बहुमत सविधान के अनुसार पर्याप्त बहुमत नहीं था। किन्तु कालान्तर में सविधान म सशोधन की मांग बढ़ती गई।

नवम्बर, १८५१ म सुई नेपालियन न सभा को चुनौती दी कि वह सावजनिक मताधिकार की स्थापना करे। सभा ने यह आदेश नहीं माना तब राष्ट्रपति न इस विषय में कदम उठान का निणय किया। उसको गुप्त योजना को सेंट अर्नाड मापन, मोर्ने परमिगन, फनाहूड और धोकाड जानत थे। १० दिसम्बर १८५० की रात्रि को सरकार क विरोधियों का सत्रे हुए कद कर लिया गया। पारिस के नागरिक निज समय नाग, उहाने दो घोषणा-पत्र सार नगर में छिपके हुए देने। जिनम से एक जनता और सेना के प्रति था और दूसरा आन्धि था। आन्धि म घोषणा थी कि राष्ट्रीय सभा भग कर दी गई है सावजनिक मताधिकार पुन प्रचलित कर दिया गया है तथा जनता का आन्धामन लिया गया था कि उन्हें अनुमति अथवा विरोध प्रकट करने का अवसर दिया जाएगा। महत्त्वपूर्ण स्थाना पर सेना तैनात कर दी गई और विरोधियों का दमन कर दिया गया। १८५१ की यह घटना सफ्त हुई। देग में काँ गम्भीर गन्वड नहीं हुड और उर सगला था माना जनता न अपनी अनुमति दे दी है। प्रमिड नता थोयस चगानियर इत्यादि रगमच छाड चुके थे। २० दिसम्बर, १८५१ का देग भर म मतदान हुआ जिसके अनुसार राष्ट्रपति का द्वितीय गणतंत्र का सविधान बनान का अधिकार दिया गया।

नवीन सविधान (New Constitution) (१८५०)—१४ जनवरी १८५० की राष्ट्रपति ने नया सविधान लागू किया। राष्ट्रपति की पदावधि १० वष कर दी गई। उम नार कानून और आताएँ लागू करने का अधिकार दिया गया। मन्त्रिमण्डल कवन राष्ट्रपति के प्रति उत्तरदायी था। राज्याभा की नियुक्ति भी वह ही करता था तथा राज्यसभा उसके ही आदेशानुसार कानून का ससविदा तैयार

करती थी। विधान मण्डल में दो सभें थीं। सीनेट में स्थल सभा और जन सभा के सेनापति तथा धर्माचार्य पदाधिकार (Ex-officio) के अनुगार गण्य बनने थे। इसमें १५० सदस्य राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त किए जाते थे 'कार सजिगनेटिक (Corps Legislatif) में २६१ सदस्य थे इस विधेयाधिकार (Veto) प्राप्त था, किंतु कानून का बनाने प्रयत्न सभोपन करने का अधिकार नहीं था। प्रथम की जनता ने नवीन संविधान का प्रस्ताव की प्रस्ताव केवल यही संविधान प्राधुनिक प्राप्त की सामाजिक और प्रशासनिक परिपाटियों के अनुकूल है तथा देश में स्वतंत्रता तथा न्यायवाद का सिद्धान्त का रक्षक है।" सावजनिक मताधिकार भा इस संविधान में था।

१८५२ के वर्ष में प्राप्त राजशाही के पक्ष पर प्रचलित हो रहा था। यद्यपि लुई नेपोलियन राष्ट्रपति था ता भी उसकी मूर्ति मुग्धा पर छापी जान लगी। सैनिक तथा सरकारी कार्यालयों पर गिरफ्त का चिह्न लगाया गया। उमन देश के सभी वर्गों का समर्थन प्राप्त करने के लिए समूह देश में भ्रमण किया और भाषण दिए। नवम्बर १८५२ में सावजनिक मतदान द्वारा जनता ने राष्ट्रपति पद का वक्त्रमानुगत राजशाही में परिवर्तित करने के लिए अनुमति दे दी। २ दिसम्बर १८५२ का लुई नेपोलियन का नेपोलियन तृतीय सम्राट घोषित कर दिया गया। उसने १८५२ से १८७० तक प्रथम पर शासन किया।

सम्राट नेपोलियन तृतीय (Napoleon III as Emperor) (१८५२-७०) — नेपोलियन तृतीय के शासन के दो अंग हैं अर्थात् गृह-नीति और विदेश-नीति। उसने



सम्राट नेपोलियन तृतीय

अक्टूबर १८५२ में बार्डा (Bourdeaux) में दिए गए भाषण में अपने कार्यक्रम की स्पष्टता बताई थी एक भय है जिसका निराकरण मुझे करना चाहिए। लोग गंवा की भावना से बर्हा करते हैं साम्राज्य युद्ध है। मैं कहता हूँ साम्राज्य शान्ति है तथापि मैं स्वीकार करता हूँ कि मुझे भी सम्राट की तरह अनेक विजयें प्राप्त करनी हैं। मेरी इच्छा उसकी तरह कभी एक न हो सकने वाले निरंतर भगडन वाले दला की दुर्भावना को जतन की है और विज्ञान का भी लाभ न पहुँचाने वाले व्यय के भगडा को नष्ट कर देने की है। मैं अपने देश की बहुमह्य जनता का जो इस घम और आस्था के देश

म भी ईसा के उपदेश से अनभिन्न है तथा जा सत्कार के सब से अधिक उबर देश मे रहन हुए नी दनिक् जीवन की आवश्यकताभा को कठिनाई से जुटा पाती है, उमके लिए धर्म, सदाचार, समृद्धि जीतकर लाना चाहता हूँ। हमारे पान बहुत-सी बजर धरती है जिस मुझे खेती योग्य बनाना है। सबकें बनानी हैं, बन्दरगाहा को गहरा करना है नहरों का ठीक करना है नदिया को भावा के योग्य बनाना है और देश म रत्ना का जाल बिछाना है। मागमिलेम के सामने एक बहुत बड़ा देश है जिसे फ्रांस म मिलाना है। हमें अपर्याप्त यातायात क तीव्र साधना की वृद्धि करके पश्चिम की मारी बड़ी बन्दरगाहा को फ्रांस के निकट लाना है। हमारे चारों ओर घबसावशेष है जिनका पुनर्निमाण करना है भठे दक्ताभा को नष्ट करना है और सत्य की जय करानी है। मैं साम्राज्य की स्थापना का यही वास्तविक रूप समझता हूँ। इस प्रकार की विजय प्राप्त करना चाहता हूँ। आप लोग जो मेरे चारों ओर हैं, जा इस प्रकार के साम्राज्य का चाहत हैं सब मेरे मनिक् हैं।

गृह-नीति (Home Policy)— नपोलियन तृतीय न जनता को दिए गए वचना का पूरा करन का प्रयत्न किया। अव्यवस्था फैलान वाली शक्ति का दमन किया गया। उद्योग धंधा को प्रोत्साहन मिला। डाक की व्यवस्था म सुधार हुआ। सबकें नहरें और बन्दरगाहें बनाई गई। पूव से पश्चिम तक और उत्तर से दक्षिण तक फ्रांस मे रत्ना का जाल बिछा दिया गया। खेती व्यापार और उद्योग क लिए ऋण दिया जान लगा। दक्ष मे दो केन्द्रीय बैंक की स्थापना हुई—*Credit Foncier and Credit Mobilier*। पेरिस तथा अन्य प्रान्ता म खेती के लिए बक बनाए गए। यातायात क साधना की उन्नति के कारण किसानों की हालत म बड़ा सुधार हुआ। सरकार किसानों की खेती और फला के बागा म बड़ी दिलचस्प लेती थी। घोड़ा की नसब सुधारने क लिए सहायता दी जाती थी। दलदल वाले स्थानों का मुन्ना कर खेती कराई जाने लगी।

पेरिस का पुनर्निमाण किया गया और इसे अधिक खुला, अधिक स्वच्छ अधिक सुन्दर तथा अधिक सुरक्षात्मक बनाया गया। पेरिस मे सुन्दर चौराहे और शानदार सरकारी इमारतें बनाई गई। बैरन हाउसमन्न (*Baron Haussmann*) क प्रयत्न में पेरिस को सत्कार का सबसे सुन्दर तथा आकर्षक नगर बनाने का प्रयत्न किया गया।

नपोलियन न श्रमजीवियों म यह धारणा जमाने का यत्न किया कि बहू स्वयं भी उनका एक सहाया है। चहू रत्नके क इंजीनियरों के साथ इंजन के टिब्वो मे बैठकर धूमता, सड़का पर मिश्रणों और मजदूरों से बातें करता, उनके साथ बैठकर उनकी गुनाहारी के लिए शराब पीता था। उनके सगठनों को यह आर्थिक सहायता देना था। मगयवालों का भी आर्थिक सहायता दी जाती थी जिससे मजदूरों का सम्ते काम पर रोटी प्राप्त हा। मजदूरों का त्योहारों पर सृष्टियाँ मिलती थी। श्रमजीवियों क लिए घर बनाने दुघटना तथा वृद्धावस्था के लिए धोम का जनाएँ भी बलाई गई। श्रमिक-सभा का वैधानिक मायता प्रदान की गई थी। १८६३ के एक कानून

के अनुगार मजदूरों को सामूहिक श्रम विनियम के लिए सहकारी समितियाँ बनाने की अनुमति दी गई थी। १८६४ के एक नए कानून के अनुगार मजदूरों द्वारा हड़ताल करने के अधिकार को मायता दी गई। १८६८ के एक कानून के अनुगार मृत्यु और काम करते समय दुपटना के गिजार होन की धक्क्या म काम की व्यवस्था भी की गई थी।

औद्योगिक क्षेत्र में सरकार की नीति उदार थी। निजी व्यापार पर सरकार का नियंत्रण प्रमाण कम कर दिया गया। मगाना के प्रमाण तथा औद्योगिक मया के बनाने के लिए सुविधाएँ दी जान लगी। बचत के लिए बच खासू किए गए। कर प्रमाण कम कर दिए गए। १८६० में इंग्लैंड और फ्रांस के बीच एक व्यापारिक संधि हुई जिसके अनुसार दोनों देशों के बीच व्यापार सरल हो गया। १८५५ में महान् अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी पेरिस में हुई जिसका उद्देश्य सामा पर देश की आर्थिक प्रगति और खुशहाली का प्रभाव डालना था।

नेपोलियन तृतीय ने कथोलिकों का खुण रसन की नीति का निरन्तर अनुसरण किया। १८४६ में उसने राम में पोप को पुन पदस्थ करने के लिए फ्रांस की सेनाएँ भेजी थी। उसने सावजनिक शिक्षालयों और विश्वविद्यालयों पर पादरियों का नियंत्रण बढ़ाने में सहायता दी थी। १८५६ में इटली के अभियान को मध्य में ही बंद करने का एक कारण यह भी था कि उसे फ्रांस के कथोलिकों के विरोध का भय था। महारानी इयुगनी कथोलिक चर्चों को बहुत दान दिया करती थी। नेपोलियन तृतीय ने फिलस्तीन (Palestine) के कथोलिक साधुओं की सहायता के उद्देश्य से ही त्रीमिया के युद्ध में हस्तक्षेप किया था। वह ममार भर के कथोलिकों का संरक्षक बनना चाहता था।

यह ध्यान रखने योग्य बात है कि कम-से-कम १८६० तक ता नेपालियन तृतीय फ्रांस का तानाशाह बना रहा। वह देश में सब चीजों का नियंत्रण करता था। समाचारपत्रों पर कड़ा नियंत्रण था। जनता की गतिविधि पर दखल भान रखने और प्रतिबंध लगाने के लिए गुप्तचरों का जाल फला हुआ था। विधानमण्डल पर उसका नियंत्रण इस प्रकार था कि सरकारी सदस्यों के चुनाव का सर्वा राष्ट्रीय-कोष से दिया जाता था जबकि अन्य सदस्यों को चुनाव के लिए स्वयं खर्च करना पड़ता था। चुनाव-चक्र पूर्णतः सम्राट के वश में था। १८५८ के एक कानून के अनुसार प्रत्येक सदस्य को सम्राट के प्रति वफादार रहने की सौमध उठानी पड़ती थी। उस ही वष में प्रचलित एक नए कानून के अनुसार फ्रांस अथवा अल्जीरिया को राजनीतिक अपराधियों का बिना अभियोग चलाए नजरबंद अथवा निष्कासित किया जा सकता था।

यह परिस्थिति उस समय तक बनी रही जब १८६० में संविधान को संशोधित किया गया तथा सरकार को अधिक उदार बनाया गया था। सीनेट और विधान सभा के सम्राट के भाषण पर प्रति वष वाद विवाद तथा मतदान करने की अनुमति दी गई थी। ससद् में हुए वाद विवाद की अक्षरशः विज्ञप्ति प्रकाशित होने

सगी थी। कायमण्डल अपनी कारवाही की सूचना विधानमण्डल का दे देता था।

इन सब छूटों के हान पर भी १८६३ के मात्रदक्षिण चुनावों में गणतन्त्र-वादिया की बहुमत स जीत हुई। ज्युलिस साइमन, धीयम फ़्री और गमबट्टा ससद् में पुन सदस्य बनकर आए। त्रिफ़रन्स के प्रभाव के कारण सरकार का बहुमत प्राप्त हुआ तथापि विगाधी दल शक्तिशाली था और नपानियन तृतीय को परेशान करन के लिए पर्याप्त था।

१८६६ में मार्लीवियर ने 'सुधारवादी' सरकार की विचारधारा का समर्थन करन के विचार से एक नया राजनीतिक दल बनाया। १८६७ म सम्राट् ने 'राष्ट्र' की इच्छा से निर्मित दली का मुकुट पहनान की घोषणा की। समाचारपत्रों का प्रतिबन्ध ढीला कर दिया गया। सावजनिक जलसा को करने का सीमित अधिकार माना गया। मंत्रियों को विधानमण्डल में बैठकर प्रश्नों के उत्तर देने पड़ते थे तथा विवाद म भाग लेना पड़ता था।

१८६६ के सावदक्षिण चुनावों के पश्चात् ओलीवियर को मन्त्रिमण्डल बनाने के लिए कहा गया। नया मन्त्रिमण्डल विधानमण्डल के प्रति उत्तरदायी तथा सुधारवादी था। विधानमण्डल का विवाद करने की राष्ट्र-धन पर नियन्त्रण रखने की प्रतिबन्धहीन छूट दी गई थी। मार्लीवियर ने प्रस्ताव में "यह १७८६ के पश्चात् सबसे पूण और वास्तविक उदार सविधान था जिसका प्राप्त ने उपभोग किया है।"

२६ नवम्बर १८६६ का नपानियन तृतीय ने राज्यमिहासन से दिए भाषण में साम्राज्य पर किए गए आक्रमों का उल्लेख तथा सावजनिक बयम्न मताधिकार पर आधारित प्राप्त साम्राज्य का शक्ति का बणन भी किया था। उमन घोषणा की, 'स्पष्ट है कि प्राप्त स्वतन्त्रता चाहता है किन्तु व्यवस्था महित स्वतन्त्रता चाहता है। भद्र पुरुषो! आप लाग स्वतन्त्रता की रक्षा करन में मेरी सहायता करें और व्यवस्था का बनाए रखना मेरा उत्तरदायित्व है।' सम्राट् ने अधिक सुधारों के कायन्त्रम का रूप रखा भी बनाई। सत्ता विकेंद्रित करन की घोषणा की गई। बम्पूनों द्वारा उनका महापौर चुन जान की व्यवस्था हुई। जनता को परिपदा के सदस्यो का चुनन का अधिकार दिया गया। कण्टनों का भी परिपद् बनान की अनुमति दी गई। नि-गुल्क प्राथमिक शिक्षा म सुधार किया गया। कारखाना में बालकों द्वारा मजदूरी करन पर नियन्त्रण रखा जाने लगा। जनता के हित के लिए धर्मों म बचत के बक खाले गए। इन सुधारों की योजना जनता की स्वीकृति प्राप्त करन के लिए प्रकाशित हुई तथा इनका अत्यन्त बहुमत स समर्थन हुआ। किन्तु १८७० म सोडान के युद्ध में नपानियन तृतीय की पराजय हुई और उसे धारम समर्पण करना पडा। इसके कारण द्वितीय राजशाही समाप्त हुई और तृतीय गणतन्त्र का घोषणा मितम्बर १८७० म हुई।

नेपोलियन तृतीय की विदेश-नीति (Foreign Policy of Napoleon III)

—धाम के गणतन्त्र के राष्ट्रपति होने के नाते तथा प्राप्त का सम्राट् होने के नाते, सुई नेपोलियन ने धान्ति के समर्थक होने का प्रचार किया किन्तु वास्तव में वह शक्ति

पानी विदेग-नीति का अनुसरण करता रहा जिसके कारण फ्रांस को कई बार युद्ध में उलझना पड़ा। उगरी आन्ध्रमक विद्रोह-नीति का धन-कारण था। लुई नेपोलियन एक राष्ट्रवादी व्यक्ति था और इटली जर्मनी और पान्ड का स्वातंत्र्य के लिए समय करती हुई जनता के साथ उत-हार्निक महानुभूति थी। उसकी दंगभक्ति ही थी जिसके कारण फ्रांस की जनता उगरी के भार धारणियाँ हुईं। उगरी नेपोलियन नाम ही १८४८ में उसके राष्ट्रपति चुने जाते थे तथा बाद में उगरी प्रतिष्ठा का मूल कारण था। वह धन नाम को धन धापा के पदचिह्न पर चल कर ही सायक कर सकता था किन्तु इसका घब-युद्ध-प्रस्त हो जाना था। नेपोलियन न यह भी अनुभव किया कि गतिगत विदेग-नीति का पालन करने से ही यह दंग की सारी जनता का प्रिय हा सनेगा क्योंकि फ्रांस की जनता यंग का भूमी थी। वह पन्धरा का केन्द्र तथा यूरोप की दलित जातियाँ द्वारा सहायता प्राप्त करने का मुख्य साधन भी था। यूरोप के गणभक्त सहायता के लिए उसकी आर देना करते थे। स्वयं नेपोलियन को आशा थी कि वह भय प्रदेशों को धन देग की सीमा में मिला कर राष्ट्र के यश और प्रतिष्ठा की वृद्धि कर सकेगा।

उपनिवेशों के क्षेत्र में नेपोलियन ने सार अल्जीरिया को फ्रांस में मिला लिया और यह देश एक बड़ा धनधायक सारक्षित प्रदेश बन गया था। चीन के विरुद्ध इसने इंग्लैंड के साथ सैनिक प्रदर्शन में भाग लिया जिसके परिणामस्वरूप चीन की अनेक बन्दरगाहें यूरोपीय देशों के लिए खुल गईं। १८५१ में उसने आनाम और बोचीन चीन के विरुद्ध सैनिक अभियान किए तथा १६६३ में उसने कम्बोडिया को फ्रांस के सारक्षण में रख लिया था।

रोम (Rome)—१८४९ में लुई नेपोलियन ने रोम में फ्रांस की सेनाओं को गणतन्त्रीय शासन का दमन करके पोप की पुनर्स्थापना करने के लिए भेजा। गणतन्त्र पराजित हुआ और पोप का राज्य स्थापित हुआ। फ्रांस की सेनाएँ १८४९ से १८७० तक रोम में रही। उसने राम में इसलिए हस्तक्षेप किया कि उसे फ्रांस के कथोलिकों का समयन प्राप्त हो जाएगा जिनकी इच्छा पोप को पुनः प्रतिष्ठित देखने की थी।

क्रीमिया का युद्ध (Crimean War)—१८५४ में नेपोलियन तृतीय ने क्रीमिया के युद्ध में हस्तक्षेप किया। नेपोलियन और आर निकोलस प्रथम के सम्बन्ध अत्यन्त बटु थे। आर नेपोलियन को एक नीच व्यक्ति समझता था और नेपोलियन १८१२ में हुए फ्रांस के अपमान का प्रतिशोध लेना चाहता था। फ्रांस के व्यापारी सुधारवादी और कथोलिक धन के कारणों से रूस से घृणा करते थे। फिलिस्तीन में किन्हीं कारणों से कथोलिक और बट्टर-पन्थी साधुओं में झगड़े हुए। आर निकोलस प्रथम १ तुर्की से तुर्क साम्राज्य में ईसाइयों की रक्षा के लिए रूस के अधिकार को मायना देने के लिए कहा। नेपोलियन ने तुर्की के सुल्तान को रूसी आक्रमण को रोकने के लिए सुभाव दिया। तुर्की के सुल्तान ने वसा ही किया जसा उसे कहा गया था। रूस और तुर्की में युद्ध छिड़ गया। तुर्क-साम्राज्य की रक्षा के लिए फ्रांस और इंग्लैंड का गठबंधन हो गया था। आरम्भ में इंग्लैंड और फ्रांस, दोनों की ही सेनाओं ने आर

खाई और बहुत हानि उठाई। किंतु निकोलस प्रथम की मृत्यु तथा १८५५ में पामस्टन के इंग्लण्ड का प्रधान मंत्री बन जाने के पश्चात् पासा पलट गया। रूस पराजित हुआ और १८५६ में 'पेरिस-संधि' द्वारा शांति स्थापित हुई। पेरिस के संधि सम्मेलन की अध्यक्षता करके नेपालियन को निश्चय ही बड़ी सतुष्टि हुई होगी। इससे भी उसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई।

इटली (Italy)—नेपालियन ने इटली के मामलों में दश के सगठित होने में सहायता देने का विचार सहस्त्रक्षप किया। युवावस्था में वह स्वयं एक गुप्त मस्या (Carbonar) का सदस्य था जो इटली से आस्ट्रिया का निवारण तथा दश को सगठित करने के लिए काम कर रही थी। बानापाट के वंशजा के शरीर में इटली का रक्त था। इटली का सगठन के लिए आस्ट्रिया से युद्ध करना फ्रांस के उदारदलीय लोगों के लिए भी प्रिय था। नेपालियन को भी कुछ क्षतिपूर्ति मिलने की सम्भावना थी। इन सब परिस्थितियों के होने पर भी नेपालियन इटली के मामले में हाथ डालने से सनाच करता रहा। उसकी धारणा थी कि आस्ट्रिया की शक्ति का देखते हुए युद्ध करना एक खतरनाक काम है। पुनश्च, सगठित इटली अघमहासागर के क्षेत्र में फ्रांस का बलवान प्रतिद्वन्दी बन सकता था। फ्रांस के कथोलिक इटली में पोप की अदभुत स्थिति के कारण इटली के सगठन के लिए फ्रांस के हस्तक्षेप का विरोध अवश्यमेव करते। ऐसी परिस्थिति में नेपालियन का घोर असमजस में पड़ जाना स्वाभाविक ही था। किंतु १८५८ में औरसिनी नाम के एक इटली के आन्तिकारी द्वारा इसकी हत्या के प्रयत्न करने पर इसकी हिचकिचाहट समाप्त हो गई। नेपोलियन ने इस प्रभावशाली इटली के हस्तारे की शिवायता को दूर करने का निणय किया। उसने पाप और फ्रांस के कथोलिकों का विराध सहन करने का निणय भी किया।

१८५८ में नेपोलियन और कैटूर में प्लाम्बीयस के स्थान पर यह समझौता हुआ कि नेपालिया आस्ट्रियनो को लोम्बार्डी और विनिशिया से निवारण के लिए पीडमाण्ट की सहायता करेगा। इस सहायता के बदले में उसे सवाय और नार्स दिया जाएगा। अप्रैल, १८५६ में आस्ट्रिया की सरकार ने सारडीनिया को चुनौती दी कि वह अपनी सेनाओं का काम कर दे। सारडीनिया ने यह आदेश मानने में इन्कार कर दिया, परिणामतः सारडीनिया पीडमाण्ट के विरुद्ध युद्ध छिड़ गया। क्योंकि आस्ट्रिया आक्रमणकारी था, नेपोलियन सारडीनिया पीडमाण्ट की सहायता के लिए आगे बढ़ा और इनकी हकटठी सेनाओं की मगेटा और सालफर्नों की लड़ाई में विजय हुई। सोलफर्नों की लड़ाई के बाद नेपोलियन ने यवायक लड़ाई बंद करके आस्ट्रिया के साथ सुह कर ली जिसका समयन ज्युरिच संधि में हुआ। ज्युरिच संधि के अनुसार जब आस्ट्रिया की सेना ने लोम्बार्डी खाली किया, परमा माडिना और टुस्केने को जनता ने विद्रोह करके अपने अपने राजाओं का देश से निवारण भगाया। इन लोगों ने सारडीनिया-पीडमाण्ट के साथ सगठित होने की योजना भी स्वीकार की। ट्युरिन की संधि के अनुसार नेपालियन तृतीय ने पीडमाण्ट द्वारा टुस्केने, परमा, मोन्ना और लोम्बार्डी को मिला लेने की मायता दी और स्वयं नाइस और सवाय पर अधिकार कर लिया।

टेलर के विचार में 'सेवाय के विलीनीकरण (Annexation) ने दूसरे साम्राज्य के इतिहास में महान् परिवर्तन किया। तब तक यह दलील देना स्वीकार करने योग्य था कि नेपोलियन फ्रांस के प्रत्यक्ष अभियान के बिना दूसरा का स्वतंत्र कर पक्ष की तोज कर रहा था। भय उसने प्राकृतिक सीमाओं की क्रांतिकारी नीति ग्रहण कर ली थी जो प्रत्यक्षत यूरोप के ऊपर फ्रांस का आधिपत्य बमान की धार बढ़ती मालूम होती थी। ब्रिटिश सरकार युद्ध के द्वारा घटनाओं के एक घन का विरोध न कर सकी जो इटली के एकीकरण में सहायता दे सकता था, लेकिन उनमें नया लियन तृतीय के प्रति वह विश्वास न मा सका जा माच १८६० ई० में जा चुका था।" (The Struggle for Mastery in Europe p 118)

यद्यपि नेपोलियन तृतीय को सेवाय और नाइस मिल गए तथापि अन्ततः उसे कोई विजय लाभ नहीं हुआ। इस पहल से ही सन्धु या प्रब आस्ट्रिया एक नया गन्धन गया। इटली के दशभक्त अत्यन्त कठिन समय में दिए गए नेपोलियन के घोषों को नहीं भूल सकते थे। नेपोलियन तृतीय अनेकाल रह गया और इसका प्रतिरिक्त वह घोषेबाज कहा जाने लगा। इटली में हस्तक्षेप करने के कारण फ्रांस का राष्ट्रवादी दल दो दलों में बँट गया। फ्रांस के कथोलिक उस पर इस मामले में अचिन्त की सीमा लाघने का आरोप और दूसरी ओर उदार दल के लिए उस पर इस मामले में डिलाई से काम लेने का आरोप लगाते थे। इन दो दलों के मतभेद दिन प्रति दिन बढ़ते ही गए और नेपोलियन इनको अपने पक्ष में नहीं रख सकता था। १८६० में उदार दल का समर्थन प्राप्त करने के लिए उस अपनी सरकार को सुधारवादी बनाने के लिए विवश होना पड़ा।

मोलफनों के युद्ध के बाद नेपोलियन द्वारा सहसा युद्ध बन्द करने के अनेक कारण बताए जाते हैं। कहा जाता है कि नेपोलियन हार्दिक रूप से कायर व्यक्ति था और वह सालफनों के युद्ध में हुए घोर रक्तपात को सहन नहीं कर पाया। उसके गुदों (Kidney) खराब हो गए थे और उसका स्वास्थ्य युद्ध के कठोर परिश्रम सहन कर सकने में असमर्थ था। उसने यह भी सोचा कि यदि सारा इटली एक हो गया तो इटली में पोप का कोई स्थान नहीं रहेगा और वह इस परिस्थिति के लिए तैयार नहीं था। यदि उसने इटली के राष्ट्रवादियों द्वारा पोप को इटली से बाहर निकालने दिया होता तो फ्रांस के कथोलिका की बहु आलोचना के कारण वह बड़ी कठिन परिस्थिति में हो जाता। आस्ट्रिया की सेनाएँ किनिशिया में इकट्ठा हो जमी हुई थीं और वहाँ पर फ्रांस की सेनाओं की पराजय की पूरी सम्भावना थी। इस परिस्थिति में प्रशिया की ओर से भी खतरा था, क्योंकि रहायन नदी के किनारे उसने अपनी सेनाएँ इकट्ठी कर रखी थी।

रुमानिया (Rumania)—रुमानिया के संधय में सहायता करने के कारण नेपोलियन तृतीय की प्रतिष्ठा बढ़ी। १८५६ में मोलडाविया और वालाकिया को अपने प्रशासन के लिए स्वायत्तता दे दी गई थी। दो वर्ष बाद नेपोलियन ने उन्हें अपने राजा तथा सविधान प्राप्त करने का अधिकार दिला दिया था। तीन वर्ष बाद

नेपोलियन ने यूरोप की शक्तियाँ का इस बात के लिए राजी कर लिया कि दोनों प्रदेश सयुक्त हो जायें और उनका एक ही राजा हो। इस प्रकार उसने स्तानिया को सयुक्त होने में सहायता दी थी।

पोलण्ड के निवासी (The Poles)—नेपोलियन तृतीय को फ्रांस के सब वर्गों का संगठित समर्थन प्राप्त था कि पोलैण्ड के निवासियों की रूस की दासता से छुटकारा प्राप्त करने के सघष में सहायता का जाये। फ्रांस के उदार दल के लोग पोलैण्ड की स्वतंत्रता के समर्थक थे। फ्रांस के कॅथोलिक चाहते थे कि नेपोलियन पोलैण्ड निवासियों की सहायता करे क्योंकि वे कॅथोलिक थे। किन्तु १८६३ में जब पोलैण्ड के लोगों ने विद्रोह किया तो नेपोलियन ने उनकी सहायता नहीं की थी। उन्हें डर था कि प्रशिया और आस्ट्रिया रूस का साथ देंगे और रूस के साथ युद्ध का परिणाम फ्रांस के लिए आत्मघात के बराबर था। परिणाम यह हुआ कि पोलैण्ड के विद्रोहियों का बड़ी निन्द्यता से दमन किया गया और फ्रांस का उदार दल तथा कॅथोलिक नेपोलियन से असंतुष्ट हो गए।

मेक्सिको (Mexico)—जब मेक्सिको की सरकार ने दश के वर्जों को देने से इन्कार कर दिया तो फ्रांस इंग्लैण्ड और स्पेन ने अपने अधिकारों को मायता दिलाने का निणय किया था। इनमें से अग्र्य दा दगो ने सैनिक कारवाही न करके विचार विमर्श द्वारा मामला सुलझाने का प्रयत्न किया किन्तु १८६२ में नेपोलियन ने तीस हजार सैनिकों की सेना मेक्सिको भेजी। उसका उद्देश्य मेक्सिको में एक कॅथोलिक और लेटिन साम्राज्य स्थापित करना था। फ्रांस कॅथोलिकों को मेक्सिको के लोगों को कॅथोलिक धर्मानुयायी बनाने का अवसर देकर नेपोलियन को प्रसन्न करना चाहता था। फ्रांस के देशभक्तों को यह तथा व्यापारियों को बच्चा माल और नई मण्डियाँ प्राप्त होने की आशा थी। १८६४ में नेपोलियन ने आस्ट्रिया के सम्राट के भाई मेक्सिमिलियन को मेक्सिको का राजा बनाया। मधुवन राज्य अमेरिका जब तक देश में गृह-युद्ध चलता रहा, तब तक चुप रहा किन्तु युद्ध समाप्त होते ही अमेरिका की सरकार ने मुनरो सिद्धांत (Monroe Doctrine) के आधार पर फ्रांस को मेक्सिको खाली करने का आदेश दिया। १८६७ में नेपोलियन तृतीय को मेक्सिको से अपनी सेनाएँ हटाने के लिए विवश होना पड़ा। मेक्सिमिलियन ने यादी देर कर दी और उसे गोली मार दी गई। मेक्सिको का अभियान पूरात असफल रहा और नेपोलियन तृतीय की प्रतिष्ठा को बड़ा गम्भीर धक्का पहुँचा। मेक्सिमिलियन की मृत्यु से आस्ट्रिया शत्रु बन गया था। फ्रांस की सेनाएँ मेक्सिको में व्यस्त होने के कारण नेपोलियन १८६६ के आस्ट्रिया प्रशिया युद्ध में प्रभावशाली रूप से भाग नहीं ले सका।

हेज़न के मतानुसार, "फ्रांस के सम्राट् को इस अभियान का बहुत भारी भूल्य चुकाना पड़ा। १८६४-६६ के समय मध्य यूरोप की घटनाओं में वह उचित रूप से भाग नहीं ले सका। डैनिक युद्ध और आस्ट्रिया प्रशिया के युद्धों के परिणामों ने यूरोप में फ्रांस का महत्त्व घटा दिया और प्रशिया जैसा महत्त्वाकांक्षी, आक्रमणकारी और

सैनिक दृष्टि से क्षत्रियगामी राष्ट्र का महत्त्व बढ़ गया। यूरोप में उसका चरित्रहीन माना जाने लगा क्योंकि उसने समुक्त राज्य की धमकी के सामने घुटने टेक कर अपने गरिष्ठ प्रदेशों को भयानक परिस्थितियों में उनका भाग्य पर छोड़ दिया था। इससे देश में भी उमकी प्रतिष्ठा का बहा पकना पड़ना।

आस्ट्रिया प्रणिया युद्ध (Austro-Prussian War) (१८६६) — १८६६ में आस्ट्रिया और प्रणिया में युद्ध हुआ जो केवल सात सप्ताह चला। आस्ट्रिया की नेनाए साडोवा (Sadowa) के युद्ध में पराजित हुई और आस्ट्रिया ने प्रणिया से संधि कर ली। जिस तर्जि और पूणता से प्रणिया को विजय प्राप्त हुई उससे नेपालियन तृतीय की सारी योजनाएँ उलट-मुलट हो गई। उसे धाना थी कि यह युद्ध पर्याप्त अवधि तक चलेगा और यह इस युद्ध में प्रभावशाली रूप से हस्तक्षेप कर सकेगा। नेपालियन की धारणा थी कि प्रणिया पराजित होगा और जर्मनी अत्यन्त गतिहीन हो जाएगा। किन्तु साडोवा के युद्ध में आस्ट्रिया की पराजय से सारी योजनाएँ भंगफल हो गई। युग युगांतर से फ्रांस की नीति थी कि जर्मनी को विभाजित और निम्न रखा जाय किन्तु प्रणिया की विजय और जर्मनी के संगठित हो जाने के कारण फ्रांस का बड़ा उत्तरा हो गया था। प्रणिया की सैनिक सफलता फ्रांस के लिये चुनौती तथा उसकी सुरक्षा के लिए एक बहुत बड़ा भय था। यह ठीक है कि साणवा के युद्ध में वास्तव में फ्रांस को ही पराजय हुई। नेपालियन अपनी इस कूटनीतिक हार का बदला लेना चाहता था और इसमें फ्रांस और प्रणिया के युद्ध की सम्भावना और भी दृढ़ हो गई।

फ्रांस प्रणिया युद्ध (Franco Prussian War) (१८७०-७१) — १८६५ में बिद्यारिडज के स्थान पर नेपालियन तृतीय बिस्मार्क से मिला। इस भेंट में बिस्मार्क ने नेपालियन तृतीय का यह आश्वासन दिया कि फ्रांस को बेल्जियम या रहायनलण्ड का प्रदेश क्षतिपूर्ति के रूप में दिया जाएगा। १८६६ के युद्ध के पश्चात् नेपालियन ने क्षतिपूर्ति के रूप में बेल्जियम की माँग की। किन्तु उसकी माँग टूटकरा दो गई। वह रहायन पलटाइनैट भी प्राप्त नहीं कर सका। उसने लक्सम्बर्ग को खरीदने का प्रस्ताव रखा। हालण्ड का राजा लक्सम्बर्ग बेचने को तयार था किन्तु बिस्मार्क ने धाक्षेप किया। नेपालियन तृतीय युद्ध के लिए तयार नहीं था इसलिए उसने इस मामले को १८६५ की संधि-पत्र पर हस्ताक्षर करने वाली शक्तियों की सभा को निणय के लिए भेजा। १८६७ में लन्दन में इसका निणय हुआ जिसके अनुसार लक्सम्बर्ग को एक स्वतंत्र राष्ट्र बना दिया गया और सब महान् शक्तियों ने इसे मान्यता दी। इस प्रकार नेपालियन का लक्सम्बर्ग भी नहीं मिला।

फ्रांस की जनता नेपालियन तृतीय की कूटनीति से तग धा गई थी। बहुत से नाग देश में बुरबोन या अारलियन राजवण की स्थापना की सोचने लगे थे। बहुत से मध्यमवर्गीय व्यापारी तथा कर्मचारी लोग फ्रांस में गणतंत्र की स्थापना करने की सोचने लगे थे। फ्रांस में राजशाही तथा गणतन्त्रीय प्रवृत्तियों की प्रगति में भी नेपालियन की स्थिति निबल हुई। नेपालियन ने सोचा कि अपनी स्थिति बनाए रखने

के लिए जनता को सुविधाएँ देनी चाहिए। परिणामतः समाचारपत्रों के प्रतिबंध ढीले कर दिए गए। उसने सरकारी सदस्या के चुनाव का व्यय भी बढ़ कर देना स्वीकार किया। मंत्रिमण्डल सम्राट की अपेक्षा विधानमण्डल के प्रति उत्तरदायी बना दिया गया। उसने उदार राजशाही के समर्थक ओलिवियर का अपना प्रधान मंत्री बनाया। १६७० में द्वितीय साम्राज्य के लिए नया मविधान बनाया गया। इसमें व्यवस्था की गई कि विधानमण्डल का द्वितीय सदन सम्राट के अधिकार में नहीं रहेगा। इन सुधारों से उदार राजशाही के समर्थक का समर्थन प्राप्त हुआ। किंतु इनसे देश के पायवादिमों और गणतंत्रवादियों की सतुष्टि नहीं हुई।

फ्रांस में प्रशिया के प्रति अत्यंत विरोधी विचारधाराएँ प्रचलित थीं। फ्रांस के सुधारवादी प्रशिया को एक प्रतिक्रियावादी राष्ट्र मान कर घणा करते थे। फ्रांस के कथोलिक प्रशिया को असहनीय प्रोटेस्टेंट राष्ट्र मानत थे। फ्रांस के देशभक्त प्रशिया से इसलिए घृणा करते थे क्योंकि इससे उनके देश को सबदा खतरा बना रहता था। फ्रांस १८६६ की कूटनीतिक पराजय का प्रतिशोध लेना चाहता था। निस्संदेह प्रशिया से युद्ध करना फ्रांस के सब ही लोगों को प्रिय था। किंतु नेपोलियन तृतीय में प्रशिया से युद्ध करने का साहस नहीं था। उसका स्वास्थ्य बिगड़ चुका था। इस क्रमिया के युद्ध में फ्रांस के कार्य भूला नहीं था तथा उसका प्रशिया के प्रति मनी का भाव होना और फ्रांस से वमनस्य रखना कोई आश्चर्यजनक बात नहीं थी। आस्ट्रिया का सम्राट नेपोलियन तृतीय के हाथों किए गए अपने अपमान का भूल नहीं मणा था। इटली के निवासियों का भी फ्रांस के प्रति मैत्री भाव नहीं था क्योंकि नेपोलियन तृतीय ने उन्हें स्वातंत्र्य युद्ध के बीच में असहाय अवस्था में छोड़ दिया था। रोम में फ्रांस की सनामों के पडाव डाले रहने के कारण इटली के देशभक्त फ्रांस से चिढ़े हुए थे क्योंकि रोम को बिना मिलाए उनके देश का सगठित होना अपूरा रह जाता था। इंग्लैंड की जनता और सरकार दोनों ही नेपोलियन तृतीय की गतिविधि को मदद की दृष्टि से देखते थे। जर्मनी की दक्षिणी रियासतों को बिस्माक ने अपनी समझौते की नीति द्वारा अपने पक्ष में कर लिया था। इन परिस्थितियों में क्या आश्चर्य है कि नेपोलियन तृतीय ने प्रशिया से युद्ध करने को देश का आत्मघात समझा। फिर भी नेपोलियन तृतीय से युद्ध करने को प्रस्तुत हो गया क्योंकि इस साल के द्वारा ही वह सारे फ्रांस के देशवासियों को सगठित करने कुछ प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकता था।

बिस्माक की भी धारणा यही थी कि फ्रांस से युद्ध अवश्यम्भायी है क्योंकि फ्रांस की पराजय हो जाने पर ही जर्मनी का सगठित होना सम्भव था। युद्ध छेड़ने के लिए एव बहाना चाहिए था और वह बहाना स्पेन के उत्तराधिकार के रूप में मिल गया। स्पेन का राजसिंहासन ल्योपोल्ड की दावारा दिये जाने की याचना बनी। ल्योपोल्ड प्रशिया के राजवश का राजकुमार था, किंतु उसने इसे लेने से मना कर दिया था। बिस्माक के उकसाने पर स्पेन का राजत्व एक बार फिर राजकुमार ल्योपोल्ड को देने का प्रस्ताव हुआ और बिस्माक ने इस नए निमन्त्रण का पूरा लाभ उठाना चाहा। इस नई खाल की फ्रांस में बड़ी आलोचना हुई क्योंकि फ्रांस स्पेन और

प्रशिया के बीच में बसा हुआ था। नेपोलियन तृतीय ने प्रशिया और स्पेन को विराप पत्र भेजे और स्पेन में घोषणा हुई कि राजकुमार ने प्रस्ताव मानने से इन्कार कर दिया है। मामला यही समाप्त हो जाता यदि फ्रांस के सम्राट पर उनके सलाहकारों ने यह दबाव न डाला होता कि एक धरमर को प्रशिया की एक गुनी कूटनीतिक पराजय बनाया जाय। बर्लिन स्पिन फ्रांस के राजदूत विनिडिट्टी (Beneditti) को आदेश दिया गया कि वह प्रशिया के राजा में एक स्पष्ट प्रतिज्ञा कराए कि प्रशिया के राजवंश का कोई भी राजकुमार भविष्य में स्पेन के राजसिंहासन के लिए कभी भी उम्मीदवार नहीं बनेगा। इम्मा (Ems) में विनिडिट्टी की प्रशिया के राजा से भेंट का कोई निर्णायक परिणाम नहीं हुआ। कहा जाता है कि विनिडिट्टी का फ्रांस से आदेश मिला कि 'वह प्रशिया के राजा से राजवंश के उम्मीदवार के विषय में स्पष्ट आश्वासन प्राप्त कर लया जाय युद्ध होगा। प्रशिया का राजा विलियम प्रथम एक समझौते और मिलनसार व्यक्ति था और शांतपूर्ण समझौता पसाद करता था। विनिडिट्टी को बड़े आश्चर्यक आदेश दिये जा रहे थे कि वह एक स्पष्ट और गीघ्र उत्तर प्राप्त करे। विलियम प्रथम ने फ्रांस और स्पेन को तार भेजे कि स्पेन के राजसिंहासन की स्वीकृति वापस ले ली गई है। किन्तु प्रमोट तथा फ्रांस के सैनिक दल सन्तुष्ट नहीं हुए। राजदूत विनिडिट्टी ने इस बात की प्रतिज्ञा करने पर जोर दिया कि स्पेन का सिंहासन भविष्य में कभी भी स्वीकार नहीं किया जाएगा। प्रशिया के राजा ने चिढ़ कर उससे भेंट बंद कर दी।

बिस्माक राजसिंहासन के मामले में शान्ति हो जाने से प्रसन्न नहीं था। उसे जब 'इम्मा' में हुई विनिडिट्टी की और प्रशिया के राजा की भेंट के विषय का तार मिला तो उसे छवसर मिला। उसने इस तार को सक्षिप्त रूप से समाचारपत्रों में प्रकाशित होने के लिए भेजन का निणय किया। बिस्माक के शब्दों में यदि मैंने यह किया तो इसका प्रभाव फ्रांस रूपी साँड को लाल भण्डी निलाने जैसा होगा (If I do this it will have the effect of red rag upon the Gallic Bull)। बिस्माक, रून और मोल्टके के युद्ध की सम्भावना से अत्यन्त प्रसन्न थे। रून ने कहा, हमारा बूढ़ा खुला प्रभी जीवित है और वह हमें अपमान की मृत्यु नहीं मरने देगा। मोल्टके ने कहा यदि मैं इस युद्ध में अपनी सनाओ का नेतृत्व करने के लिए जीवित हा तो भले ही गतान बाद में आकर मेरी बूढ़ी साँड उठा ले जावे मुझे कोई चिंता ही। इस तार को इस प्रकार सक्षिप्त किया गया कि फ्रांस यह समझे कि उसके राजदूत का अपमान किया गया है और प्रशिया यह समझे कि उनके राजा का अपमान हुआ है।

फ्रांस ने प्रशिया के विरुद्ध युद्ध की सावजनिक माँग की जा रही थी। युद्ध के शान्ति के विषय में निणय करने के लिए मन्त्रिमण्डल की तीन बैठकें हुई। प्रमोट धमकी दी, "यदि आपने और बैठक बुलाई तो मैं अपना त्यागपत्र आपके सामने फेंक दूंगा। परिणामतः फ्रांस ने प्रशिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। प्रमोट ने कहा 'हम आपको आश्वासन तो नहीं दपितु आपके लिए युद्ध ला रहे हैं।

युद्ध का दोनों देशों में स्वागत हुआ। फ्रांस को आक्रमणकारी माना गया। जर्मनी की दक्षिणी रियासतें फ्रांस के विरुद्ध प्रशिया से मिल गई। समूचे जर्मनी में स्वातंत्र्य युद्ध के गीत गूँजने लगे और संगठित जर्मनी राष्ट्रगीत (Die Wacht Am Rhein) की धुन पर मोर्चों पर जा जमा। जर्मनी वालों का नारा था 'पेरिस चलो' दूसरी ओर पेरिस वाले 'बर्लिन चलो' का नारा लगाते थे। मारसिलैस गीत गूँजने लगा। मार्शल ली बोयुफ (Marshall Le Boeuf) ने घोषणा की कि जेना (Jena) के सन्धि पूरी तरह लैस हैं, किन्तु फ्रांस की सेना के पास अत्यावश्यक युद्ध सामग्री भी नहीं थी। उनके पास तोपखाना, सामान, दवाइयाँ तथा गाला-चाहूँद नहीं था। उनका प्रशिक्षण भी कम हुआ था। सय सचालक अकुशल और अपर्याप्त थे। रेनों में कम स्थान था तथा उनके गुप्तचर भी कम थे। फ्रांस की सेनाओं के पास जिस फ्रांस की रक्षा करना अनिवार्य था, उनके मानचित्रों की अपेक्षा उनके पास जर्मनी, जिस पर वे आक्रमण करने जा रहे थे उनके मानचित्र अधिक थे। फ्रांस को किसी से भी सहायता नहीं मिली थी। विस्माक ने रूस का १८५६ की पेरिस संधि की कालामागर (Black Sea) सम्बन्धी शर्तों को तोड़ देने की अनुमति देकर अपनी ओर मिला लिया था। इटली भी प्रशिया से प्रसन्न था क्योंकि १८६६ में उसने विनिशिया इटली को वापिस दिला दिया था। इटली का यह भी आशा थी कि यदि फ्रांस हार गया तो उस रोम भी मिल जाएगा। स्टुट्टोन की नीति के कारण इंग्लैंड ने निष्पक्षता की नीति अपना ली थी।

जर्मनी ने आक्रमण करके फ्राम का वीमिनबर्ग (Weissenburg), स्पीचरेन (Spicheren), वोथ (Worth), ग्रेवलॉट (Gravelotte) और सीडन (Sedan) के युद्धों में हराया। सीडन की विजय निर्णायक थी। इसके पश्चात् प्राकृतिक सेनाओं ने आत्मसमर्पण कर दिया और नेपोलियन तृतीय का बन्दी बना लिया गया। इस प्रकार फ्रांस की दूसरी राजशाही की समाप्ति होकर सितम्बर, १८७० में तृतीय गणतन्त्र की घोषणा हुई। विस्माक इतने से सतुष्ट नहीं हुआ और पेरिस की ओर बढ़ता चला गया। उसका घोर मुकाबला हुआ और बहुत दिन घेरा हालने के पश्चात् पेरिस नगर ने आत्मसमर्पण किया। १८७१ की फ्रैन्कफर्ट की संधि के अनुसार युद्ध बंद हुआ।

उपयुक्त घटनाओं से यह स्पष्ट हो गया कि नेपोलियन तृतीय की विदेश नीति आरम्भ में थोड़ी तो चमक कर पूणत अग्रफल रही। १८६० के पश्चात् फ्रांस पर नियन्त्रण रखने के लिए सफलता प्राप्त करना अत्यावश्यक था किन्तु सफलता मिली नहीं। वह न तो शत्रु से तुल्य सक्ता और न मित्रों को अपने साथ रख सका। डेन, पोलैण्ड और आस्ट्रिया के मामलों में से किसी से भी उसकी प्रतिष्ठा नहीं बढ़ पाई।

उसमें मेक्सिका में लेटिन क्रांतिक सांघ्राज्य के प्रयत्न में व्यर्थ ही बहुसूत्र्य समय गँवा लिया जबकि दूसरी ओर प्रशिया क्रमशः पकितवाली होता जा रहा था और अत्यन्त दुर्लभ बात यह है कि मेक्सिको के मामलों में भी वह बुरी तरह असफल

रहा। १८६४ तक श्रीमिया के युद्ध में बना इन्वैन्सिबल फ्रांस का गठन बिल्कुल निवृत्त हो चुका था। पेरिस सम्मेलन के पश्चात् जो मित्रता नेपोलियन तृतीय ने रुम के साथ की थी यह १८६३ में पोलिश के विद्रोह से महानुभूति रणन के कारण समाप्त हो गई। बिस्मार्क ने जब भी किसी के साथ भलाई का उस अपना मित्र बना कर रखा किन्तु नेपोलियन तृतीय ने इटली का बहुमूल्य सहायता और पारितोषिक लिए किन्तु फिर भी उसकी श्रेयता प्राप्त नहीं कर पाया। पोप का समर्थन करने के कारण यह पोडगोण्ट-सारडीनिया की मित्रता सा बटा था। १८६६ में वह आस्ट्रिया की सद्भावना प्राप्त किए बिना ही प्रशिया में गयुता कर बटा था। जो भी हा उसकी नीति समकालीन यूरोपी शासक की तरह स्वार्थी नहीं थी। वह अंतर्राष्ट्रीय शान्ति का प्रबल समर्थक था। उसकी सहानुभूति सारे देशों के राष्ट्रवाद्या के साथ था यद्यपि इस सहानुभूति का मूल्य वह साथ ही ले लिया करता था। उसने यूरोप का पथ निर्देशन करने की अपेक्षा असमजस में डाल दिया परिणामतः साग उसे समझ नहीं सके और न उस पर विश्वास कर सक। उसकी नीति अस्थिर और अविश्वसनीय थी। उसके अपने दादा में मैं कभी लम्बे चौड़े नक्के नहीं बनाता मैं केवल वतमान की आवश्यकता को महत्व देता हूँ। उसके विषय में सत्य ही कहा गया कि, 'बेचारे शान्तिप्रिय नेपोलियन में नेपोलियन महान जसी बुद्धि नहा थी।' ('Napoleon le petit had not the genius of Napoleon le grand')

सौमन्य के विचार में उस क्षेत्र के सबसे अधिक रोचक अभ्यासों में, जिसे तुलनात्मक जीवनी कहा जा सकता है लुई नेपोलियन तथा एडोल्फ हिटलर के बीच समानताओं व असमानताओं का अध्ययन करना है। कई दशाओं में उनके जीवन समानांतर रेखाओं पर चलते मालूम होते हैं और इनका अध्ययन एक के द्वारा दूसरे को समझने की शक्ति को चमकाने में सहायता देता है। वे सदिग्धताओं के नियमों को एक समान प्रकार से विलक्षणता के साथ हटाते हुए ऊपर उठे। उन्होंने एक-सा ही काम किया, पहले पुन स्थापन और फिर अपने ग्रहण किए हुए राज्यों की शक्ति का खण्डन और दोनों ने उस अंतर्राष्ट्रीय नींव को नष्ट किया जिस पर उनके समय के यूरोप की स्थापना की गई थी। जैसे बड़ी चीजों में वैसे ही छोटी चीजों में दोनों विचित्र रूप से समान थे। दोनों उन लोगों से अपरिचित थे जिनका उन्होंने पथ प्रदान किया। हिटलर ने आस्ट्रियन स्वर में जर्मन भाषा बोली और लुई नेपोलियन ने जर्मन स्वर में फ्रांस की भाषा बोली। दोनों ने असफल आंदोलन किए और उनके फलस्वरूप बड़ी हुए। स्ट्रेसबर्ग व बालोन लुई नेपोलियन के लिए बही हुए जो हिटलर के लिए १९२३ में म्युनिख का उपद्रव। और लडसबर्ग हिटलर को बहुत कम महत्वपूर्ण लगा जितना कि हैम लुई नेपोलियन को लगा था फिर भी प्रथम नेपोलियन के सस्मरणों को मिलाकर 'The Extinction of Pauperism' ने बहुत मात्रा में दूसरे साम्राज्य की उत्पत्ति से वही सम्बन्ध दिखाया जो 'Mein Kampf' ने तीसरे जर्मन राज्य को बनाने में किया। अनिवाय रूप से, दोनों का उत्पादन स्वभाव था और यह उनकी आँखों से ही टपकता था। हिटलर के बिल्वरे बिल्वरे बाल और उसकी पेट्रीदार बरसाती पिछड़ी हुई असम्भता

का अटल प्रभाव डालती थी और लुई नेपोलियन के यदि कुछ कम चादुकारीपूर्ण चित्र देखे जावें तो कोई भी यह विचार बनाने से नहीं रक सकता कि वह ऐसा लगता है जस कोई इटली का नौव नौकर हो, जिसे हाल ही में किसी चतुप स्तर के होटल से निवाल दिया गया हो। और यदि लुई नेपोलियन की आँखें बहुत कम दिखाई देती थीं तो हिटलर की आँखा से बचना असम्भव था लुई नेपोलियन की आँखें भी जबकि वे आधी बंद मालूम होती थीं, ऐसी मालूम पड़ती थीं कि उन्होंने उसकी पीटी के लोगो को जादू से प्रभावित कर दिया है ऐसे जैसे हिटलर की आँखें जो हमेशा पूरी खुली रहती थीं।

‘दोनों के पाय गिरोह थे। दोना ही उन राजनीतियों के इशारा से सत्ता धारी बने जिन्होंने अपनी योग्यताओं को हीन समझा। दोनों ने भौतिक समृद्धि पर केन्द्रित और लाक प्रदान को खूब प्रोत्साहित कर लोगो का ध्यान राजनीति से हटाया। दोना का प्रारम्भिक प्रचार यह दिखाता है कि उन्होंने अपने समय की विरोधी राजनीतिक शक्तिया के नारे चुराने की कला का चतुर प्रयोग किया और यह बहाना किया कि उन्होंने उन वाता में समन्वय लाने का रहस्य खूब लिया है जिन्हें उनके शासक समन्वय के अयोग्य बताते थे। अतः हिटलर ने राष्ट्रवाद की छाप अपनी धासेवाजियों पर लगाई, और अपनी समाजवादो छाप अपने शत्रुओं पर और तब दोनों पक्षा को यह फुसनाकर मिलाया कि वह उनका मित्र है। इसी तरह लुई नेपोलियन ने फ्रान्स को जन्तुत्र और व्यवस्था, सामाजिक कल्याण व सामाजिक अनुशासन, दानो ही पेश किए। उसने जनता को सबमताधिकार दिया, सेना को साम्राज्य बना वैभव, धम वालो को स्वतंत्रता दी और व्यापारियों को लाभकारी विनियोग का खुला क्षेत्र ठीक उसी प्रकार जैसे हिटलर ने साथ-साथ यह दावा किया कि वह बहुरूपी भडारों के एकाधिकार से जमनी को मुक्त कर रहा है, और जबकि उसी के साथ वह उसे रूहर के उद्योगपतियों के लिए सुरक्षित कर रहा था। अतः म यह भी पता चल सकता है कि यदि दोनों ने निर्माण के कुछ काम किए ता वह भिन्न कारणों से नहीं।

‘फिर भी लुई नेपोलियन व अन्य तानाशाहो व सुटेरो तथा हिटलर के बीच एक अनिवाय अंतर है जिसे यदि समझ लिया जाये, तो वह उसके चरित्र की कुजी प्रशन्न करता है। इस प्रकार के बहुत से लोगो को महान् निदयता के साथ शासन जमा अधिकार मिल जाता है। यह बात लुई नेपोलियन के बारे में सच नहीं। उसके पट में ऐसी कोई ज्वाला नहीं थी जो उसे नेपोलियन प्रथम या हिटलर या मुगोलिनी तक के तुल्य करती। उसके पास न तो गति थी, न सगठन करने वाली योग्यता, और न अम्यस्त प्रशासन के वास्तु निरन्तर प्रयोग का उपहार जो उसके चाचा, या महान् फ्रेडरिक, या लुई चौहर्वे में स्पष्ट हुआ था। विरती भी वस्तु के विषय में एक स्पष्ट निगम करने की योग्यता का अभाव उसके चरित्र का बड़ा लक्षण था। जब कभी कोई निगम हर हाल में उसी के ऊपर था पड़ता था, तो बड़ी कठिनाई से उसे यह समझाया जा सकता था कि अब उससे

जावे। शान्ति, फ्रीमिया १ इटली की लड़ाई में प्रवेश, १८६६ में कोई काम १ करने का निश्चय और १८७० में वियाना के सम्पन्न करने का विचार—ज्यों ही वे घटित हुए उसने घेद प्रवृत्त किया और उनकी घोर फिर वापस जाने का प्रयत्न किया, सित्तये १८७० के निणय के—जो घानक गिद हुआ।

Suggested Readings

- | | |
|------------------|---|
| Arnaud R | : <i>The Second Republic and Napoleon III 1930</i> |
| Aubry O | <i>The Second Empire 1940</i> |
| Dickinson G | <i>Lowes Revolution & Reaction in Modern France 1927</i> |
| Elton G | <i>The Revolutionary Idea in France (1789-1871) 1923</i> |
| Fisher H A L. | <i>Bonapartism</i> |
| Fisher | : <i>The Republican Tradition in Europe</i> |
| Forbes A | : <i>A Life of Napoleon the Third</i> |
| Guedalla P | <i>The Second Empire</i> |
| Guerard H | <i>Napoleon III 1943</i> |
| Huddleston S | <i>France</i> |
| Marrriott, Sir J | <i>The French Revolution of 1848 in its Economic Aspect 1913</i> |
| Mckay D C. | <i>The National Workshops A Study in the French Revolution of 1848 1933</i> |
| Plamenatz J | <i>The Revolutionary Movements in France (1815 1871) 1952</i> |
| Partgate R | <i>Story of a Year 1848</i> |
| Schapiro J S | <i>Liberalism and the Challenge of Fascism Social Forces in England and France (1815 1870) 1949</i> |
| Seignobos C | <i>A History of the French People</i> |
| Simpson F A | <i>The Rise of Louis Napoleon 1950</i> |
| Simpson F A | <i>Louis Napoleon and the Recovery of France (1848 1856) 1923</i> |
| Thompson J M | <i>Louis Napoleon and the Second Empire 1954</i> |
| Whitridge A | : <i>Men in Crisis The Revolutions of 1848</i> |

बेल्जियम की स्वतंत्रता (Independence of Belgium)

हालैण्ड और बेल्जियम संघ (Union of Holland and Belgium)—
 चार्ल्स पंचम के राज्य काल में नीदरलैण्ड्स के सत्रह प्रान्त स्पेन के आधीन थे। स्पेन के राजा फिलिप द्वितीय के शासनकाल में विद्रोह हुआ और अन्ततः उत्तर के सात प्रान्तों ने स्वतंत्रता प्राप्त कर ली और संयुक्त प्रान्त (या हालैण्ड) के नाम से पुकारे जाने लगे तथा दस प्रान्त स्पेन के ही आधीन रहे। १७१३ में स्पेन का उत्तराधिकार सम्बन्धी युद्ध समाप्त हो गया और यूट्रिख्ट की संधि हुई। उसके अनुसार बेल्जियम के दस प्रान्त आस्ट्रियन के नाम से पुकारे जाने लगे। फ्रांस की क्रांति के समय फ्रांस ने आस्ट्रियन-नीदरलैण्ड्स जीत लिया और ये प्रान्त बीस वर्ष तक फ्रांस का भाग रहे। फ्रांस ने हालैण्ड का जीत लिया और बहुत समय तक यह भी फ्रांस का एक भाग बना रहा था।

१८१४ में नेपोलियन के पतन के पश्चात् हालैण्ड के राजा को पुनः पदासीन किया गया तथा उसने हालैण्ड की जनता को एक नया संविधान दिया था। विधाना सम्मेलन में फ्रांस के उत्तर-पूर्वी सीमान्त पर एक शक्तिशाली प्रतिरोध करने योग्य राज्य बनाने का निश्चय किया गया और परिणामतः आस्ट्रियन-नीदरलैण्ड्स अपना बेल्जियम और हालैण्ड का संयुक्त कर दिया गया था।

कठिनाइयाँ (Difficulties)—पिट (Pitt) की उत्कट अभिलाषाओं की पूर्ति हुई किन्तु विमाना में उपस्थित कूटनीतियों ने कठिनायियों की श्रवहेलना कर दी थी। नवीन राष्ट्र के दो भागों में राष्ट्रीयता और धर्म के मतभेदों की खाई थी। दोनों भाग शताब्दियों तक पृथक् रहे, इस कारण दोनों देशों में अधिक समन्वय नहीं रहा। हालैण्ड के निवासी प्रोटेस्टेंट और बेल्जियम के कैथोलिक थे। वे भाषा के दृष्टि से भी परस्पर भिन्न थे। फ्रांस की भाषा बेल्जियम की साहित्यिक भाषा ही नहीं अपितु उच्चवर्ग की बोलचाल की भाषा भी थी। यद्यपि जनता का फेलमिश (Felmish) भाग डच लोगों से सम्बन्धित था तथापि डच सम्प्रदाय इतनी विकसित नहीं हुई थी कि उसे भिन्न तत्त्व मान कर मान्यता दी जा सकती।

प्रो० फाय्फ (Fyffe) के मतानुसार, 'यद्यपि बेल्जियम और हालैण्ड की विपत्तियाँ अज्ञेय नहीं थी तथापि यह इतनी अधिक थी कि दानो देशों में तारतम्य स्थापित करने काय चलाना कठिन था। हग (Hague) स्थित सरकार ने विरोधी तत्वों में समझौता कराने के लिए ठीक माग नही अपनाया था। संयुक्त राज्य के

लिए एक सविधान का निर्माण करने के लिए प्रयाग की नियुक्ति की गई। बेल्जियम की जनता के विरोध करने पर भी इस बात की परवाह न की गई कि बेल्जियम की जनसंख्या हालण्ड से कहीं अधिक है। दाना देश को राज्य गमा (States General) में बराबर का प्रतिनिधित्व दिया गया था। बेल्जियम की जनता द्वारा सविधान का निषेध कर देने पर भी इसे लागू कर लिया गया। प्रागामी पत्रह वर्षों में बेल्जियम की जनता को सारे राज्यपदा से वंचित कर दिया गया और अधिकार पद हालण्ड की जनता का ही दिए गए। इसमें आश्चर्य नहीं कि बेल्जियम की जनता ने इन विदेशियों का स्वागत नहीं किया। राज्यसभा का अधिकार हमारा डच प्रदेश में ही होता रहा, कभी भी बेल्जियम प्रदेश में नहीं हुआ। इससे भी बड़ा असन्तोष पला। डच भाषा को देश की राज्य भाषा घोषित किया गया इससे भी बेल्जियम की जनता में बड़ा क्षोभ उत्पन्न हुआ। डच सरकार की आर्थिक नीति को भी बेल्जियम की जनता अप्रियपूर्ण मानती थी। जिन करों का बेल्जियम की जनता पसंद नहीं करती थी उन्हें करों (Taxes) को जब लगा दिया गया सब जनता द्वारा उनका घोर विरोध हुआ। जो भी पत्रकार सरकार विरोधी लेख लिखते हुए पाए जाते उन्हें बड़ा दण्ड दिया जाता था। दोनों देशों का ऋणभार बराबर नहीं था। हालण्ड बेल्जियम की अपेक्षा अधिक ऋणी था। ऋण को चुकाने के लिए सारे देश पर समान कर लगाया गया इससे बेल्जियम की जनता बहुत असन्तुष्ट हुई। १८२१ में घाटे और मास पर नए कर लगाने से स्थिति और भी बिगड़ गई। धर्मभेद के विषय में तो देश के दानो भाग बिल्कुल पृथक-पृथक थे। राज्य संयोजन के समय बेल्जियम के कथालिक विद्यवा ने प्रोटेस्टण्टों को धार्मिक सहिष्णुता प्रदान किये जाने का बड़ा विरोध किया। बेल्जियम के चर्च अधिकारी शिक्षा पर पूर्णाधिकार रखने के लिए दृढ़ प्रतिन थे किन्तु सरकार ने 'गिगा को धमनिरूप अधिकारिया का सौंपने का प्रयत्न किया। हालण्ड का कठोर शत्रु बेल्जियम का चर्च था। बेल्जियम के धर्माधिकारी-दल ने बेल्जियम से डचों को निकालने के उद्देश्य से राजनीतिक विरोधी दल से गठजोड़ किया।

विद्रोह (Revolt)—१८३० के फ्रांस के जुलाई विद्रोह के कुछ महीने पूर्व बेल्जियम के निवासियों का अपने शासन से इतना विरोध था कि इसके प्रकट होने के लिए किसी अन्य ऋके की आवश्यकता नहीं थी। जुलाई आति से आवश्यक चिनगारी प्राप्त हुई। आतिकारी नाच समारोह इस विस्फोट का प्रदूत था। पालिग्नेक (Palignac) द्वारा इस विद्रोह की योजना तयार की गई तथा विदेशी आंदोलनकारियों ने जो मुख्यतः फ्रांसीसी थे इस उभारा। फ्रांस बेल्जियम के विद्रोहियों से सहानुभूति रखता था क्योंकि विद्रोह के कारण सीमान्त का शत्रु राष्ट्र निबल होता था तथा उह बेल्जियम का फ्रांस में मिलाने का सुभवसर प्राप्त होता था। विद्रोह नगरी से प्रामा में फला।

हालण्ड के राजा ने बेल्जियम के लिए एक अलग राज्य बनाने का आवासन दिया था किन्तु इससे बेल्जियम की जनता सन्तुष्ट नहीं हुई। ब्रुसेल्स में डच सेना के घान से शान्ति की सारी आशाएँ व्यय हो गई। कई बार आकस्मिक युद्ध हुए। सेना

हट जाने पर एक अस्थायी सरकार की स्थापना हुई और बेल्जियम की स्वतंत्रता की घोषणा कर दी गई। हालैण्ड के उत्तराधिकारी राजकुमार को नए देश का राजा बनना का आशाएँ थी, किन्तु विद्रोह की हिमात्मक कारवाही, फ्रांस के दूतों और स्वयंसेवकों की गतिविधि और डच सेना द्वारा ऐंटवर्प पर गोलाबारी के कारण समझौते की सारी आशाओं पर पानी फिर गया था।

इस भगड़े में यूरोपीय शक्तियाँ के टकरा जाने का भय था। बेल्जियम की स्वतंत्रता और हालैण्ड से अलग हो जाना १८१५ के शांति-समझौते का अतिक्रमण था और यूरोप की सारी शक्तियाँ ने इस समझौते को निबाहन की प्रतिज्ञा की थी। केवल एक ही बात से बचाव हुआ था। यूरोप के अधिकांश देशों ने लुई फिलिप को फ्रांस का राजा मान लिया था तथा वे बेल्जियम के मामले में उसका समर्थन करने के लिए प्रस्तुत थे। लुई फिलिप का स्वायत्त था कि शांति बनी रहे क्योंकि उसे पता था कि यदि वह विद्रोहियों की सलाह पर चलेगा तो उसे अपना राज्यसिंहासन तथा जीवन खाने का डर है। उसे मालूम था कि वह यूरोप के देशों के संगठन के सम्मुख नष्ट हो जाएगा। टैनीरेण्ड वही योग्यता से उसका पथप्रदर्शन कर रहा था और उसे विश्वास था कि उस समय सबसे बड़ी आवश्यकता यह थी कि फ्रांस का कुछ साथी मिल जाएँ जिसमें वह अकेला न रहे। इस ध्येय को सामने रखते हुए टैनीरेण्ड फ्रांस का राजदूत बन कर इंग्लैंड गया। वहाँ उसने बेल्जियम और विलियम चतुर्थ से भेंट करके आश्वासन दिया कि फ्रांस बेल्जियम के विद्रोह को अपनी शक्ति की वृद्धि करने के निमित्त उपयोग नहीं करेगा। उसने यूरोप के देशों की नीति का निर्देशन करने के लिए 'हस्तक्षेप मत करा' का सिद्धांत प्रस्तुत किया। इस विषय में इंग्लैंड और फ्रांस का इतना गहरा विश्वास पैदा हुआ कि यूरोप के अन्य राष्ट्रों द्वारा फ्रांस के विरुद्ध युद्ध प्रारम्भ करने की चर्चा ही समाप्त हो गई। लंदन सम्मेलन में बेल्जियम के मामलों की व्यवस्था करने का प्रस्ताव पर विचार हुआ। लड़ाई बंद कर दी गई। १८३० के समाप्त होने से पहले ही बेल्जियम की स्वतंत्रता का भाष्यता दे दी गई थी। जनवरी १८३१ में बेल्जियम की सीमाओं का निर्धारित करने के सम्बन्ध में बड़ी शक्तियाँ एक सत्र पर हस्ताक्षर किये।

किन्तु मामला यही नहीं सुलभा क्योंकि बेल्जियम के राजा के विषय में समझौता नहीं हुआ था। हालैण्ड और बेल्जियम की सरकारों को उनकी सीमाओं के सम्बन्ध में किये गए निर्णय की भाष्यता दनी थी। बेल्जियम की जनता लुई फिलिप के दूसरे पुत्र का राजा बनाने के पक्ष में थी। यद्यपि लुई फिलिप ने प्रबल रूप से इस प्रस्ताव का विरोध किया, पराजय रूप से वह इसे प्रोत्साहन देता रहा। परिणाम यह हुआ कि उसका पुत्र ड्यूक डी नीमोवस (Duc de Nemours) फरवरी १८३१ में राजा चुन लिया गया। इस व्यवस्था का यूरोप की शक्तियाँ मानने के लिए तैयार नहीं थीं और इसलिए लुई फिलिप ने अपने पुत्र के लिए राजमुकुट लेने से इन्कार कर दिया। इंग्लैंड और फ्रांस के बीच यह समझौता हुआ कि सेक्स-कोबर्ग (Saxe Coburg) के लियोपोल्ड को राज्यसिंहासन दिया जाय और वह लुई फिलिप की पुत्री से

विवाह करे। स्योपोड ने राजतिहासन को इस बात पर स्वीकार किया कि बल्जियम के हित में सीमाप्राप्त म कुछ परिवर्तन कर दिया जाएगा।

बेल्जियम की सीमाप्राप्त म परिवर्तन करने में क्विल ग्राण्ड-डचों का सखसम्बन्ध की स्थिति के कारण कठिनाई पड़ी। १८१४ में ग्राण्ड-डची हालण्ड को दे दी गई थी। १८३० में ग्राण्ड-डची क निवासिया ने बल्जियम की जनता से विद्रोह किया और दुग को छाड़ कर सारा प्रदेश बल्जियम के हाथ में चला गया। लंदन सम्मेलन में लक्सम्बर्ग को हालण्ड का भाग माना था। किन्तु स्यापोल्ड की प्रायना पर जब लक्सम्बर्ग पर पुन भविष्य में विचार करने को कहा गया तो हालण्ड ने दाम्त्र उठाए और पचास हजार सनिना को बल्जियम भेजा। ल्योपोल्ड ने फ्रांस से सहायता माँगी और फ्रांस की सेनाएँ तुरन्त सीमा पार कर गईं। डच सेना पीछे हट गई और फ्रांस की सेना भी वापिस बुना ली गई। लंदन सम्मेलन में यह मामला पुन विचाराय आया और सुभाव दिया गया कि लक्सम्बर्ग का हालण्ड और बल्जियम के बीच बाँट दिया जाए। बेल्जियम ने यह सुभाव स्वीकार कर लिया किन्तु हालण्ड ने इसे ठुकरा दिया। परिणामत ल्योपोल्ड और महान शक्तियाँ में एक सन्धि हुई। १८३२ के आरम्भ तक बेल्जियम को सारी शक्तियाँ न मायता दे दी थी तथा पामस्टन ने फ्रांस को बेल्जियम का थोडा-सा भाग भी देने से इन्कार कर दिया।

यद्यपि बेल्जियम राज्य की स्थापना हो गई थी ता भी हालण्ड के राजा के विरोध से निपटने की समस्या शेष थी। डच राजा ऐटवप के दुग पर अपना अधिकार किए बैठा था और वह तक धयवा शक्ति किसी भी बात का मानन से इन्कार करता था। फ्रांस की सेना न दुग पर घेरा डाला और डर्लण्ड के समुद्री बडे ने गेल्डट नदी में यातायात पर रोक लगा दी। घोर गोलाबारी होने के परचात दुग का पतन और युद्ध का अन्त हा गया। शान्ति क लिए पुन बातचीत आरम्भ हुई। बेल्जियम को मनचाहा स्थान मिल गया इसलिए वह कोई जल्ती में नहीं था और हालण्ड का राजा केवल हठ के कारण सकोच कर रहा था। यह स्थिति कई वर्षों तक बनी रही। अन्तत १८३९ में लंदन सन्धि के द्वारा हालण्ड राज्य की स्वतंत्रता और तटस्थता को सारी शक्तियाँ न जिनमे हालण्ड भी था मायता प्रदान की। १९१४ में इस मायता के अतिभ्रमण के कारण ही ब्रिटेन को जमनी से सहसा युद्ध में अडना पडा।

यह बात उल्लेखनीय है कि इस सारे काल में पामस्टन का रस बुद्धिमत्तापूष तथा सहनशीलता का रहा। उसने डची के हठ और बेल्जियना को चिदान वाले रस से सुलभने में अत्यन्त सहनशीलता दिखाई। उसने बडी बुद्धिमत्ता से इस बात को माना कि १८१४ की व्यवस्था असफल रही और उसके स्थान पर नई व्यवस्था बनानी चाहिए।

Suggested Readings

<i>Cambridge Modern History Vol X</i>	
Ensor	<i>Belgium</i>
Fyffe	1 <i>History of Modern Europe</i>
Phillips	<i>Modern Europe</i>

१८१५ से १९१८ तक आस्ट्रिया-हंगरी

(Austria Hungary from 1815 To 1918)

आस्ट्रिया-हंगरी ने नपानियन की पराजय में बहुत महत्वपूर्ण भाग लिया। इसलिए कोई आश्चर्य नहीं कि विधाना नगर का यूरोप का मानचित्र का पुनर्निर्माण के लिए चुना गया है। आस्ट्रिया के चांसलर मेटर्निक ने आस्ट्रिया की नीति का इतना शक्तिशाली और ठोस बनाया कि बाद में वह अपने आप का नपानियन का विजेता बहने लगा। आस्ट्रिया-हंगरी पर १७९२ में १८३५ तक फ्रांसिस प्रथम ने १८३५ से १८४८ तक फर्डिनेण्ड प्रथम ने तथा १८४८ से १८९८ तक फ्रांसिस जॉर्ज प्रथम ने राज्य किया।

मेटर्निक प्रणाली (Metternich System)—गजकुमार मेटर्निक का जन्म १७७३ में हुआ तथा १८४९ में उसकी मृत्यु हुई थी। वह जन्म में ही पनाडप

या तथा बहुत छोटी आयु में वह आस्ट्रिया की कूटनीतिक सेवा में प्रविष्ट हुआ। बहुत घाटे से समय में उस बहुत सा कूटनीतिक अनुभव हुआ क्योंकि उस यूरोप की एक राजधानी से दूसरी राजधानी में बहता जाता रहा था। जब उसकी आयु बढिनता से ३६ वर्ष की थी तो उस आस्ट्रिया का चांसलर नियुक्त किया गया तथा विधाना में इंग्लैंड भाग जान के अन्तर्गत तक लगभग ४० वर्ष तक वह इस पद पर प्रामाण रहता था।



मेटर्निक

मेटर्निक का व्यवहार केवल आस्ट्रिया और जर्मनी की ही नहीं, अपितु गारे यूरोप भर की कूटनीति

का वेद था। वह उनीतर्षी गनाजी का सबसे अधिक विख्यात आस्ट्रिया का राजनीतिज्ञ था। वह कूटनीतिज्ञों का गिरोमणि तथा यूरोप की कूटनाति के दाव-पेचों से पूणरूपेण परिचित था। वह अत्यन्त धमण्डी व्यक्ति था। उसकी धारणा थी कि सारे सप्ताह का श्रम उसने सहारे चल रहा है। उसने दागो म, मरी स्थिति में यह अद्भुत बात है कि जहाँ भी मैं होता हूँ सब की आगाएँ सब की आँखें उमी स्थान पर लगी जाती हैं। क्या कारण है कि अस्तव्य व्यक्तियों में केवल मैं ही विचार करता हूँ जब कि अर्थ लोग कुछ भी नहीं सोचते, केवल मैं ही काम करता हूँ जबकि अर्थ लोग कुछ भी नहीं करते तथा मैं ही लिखता हूँ क्योंकि अर्थ लोग इस योग्य नहीं हैं। उसकी धारणा थी कि उसकी मृत्यु से पूण न हाने वाली रिक्तता रह जायगी।

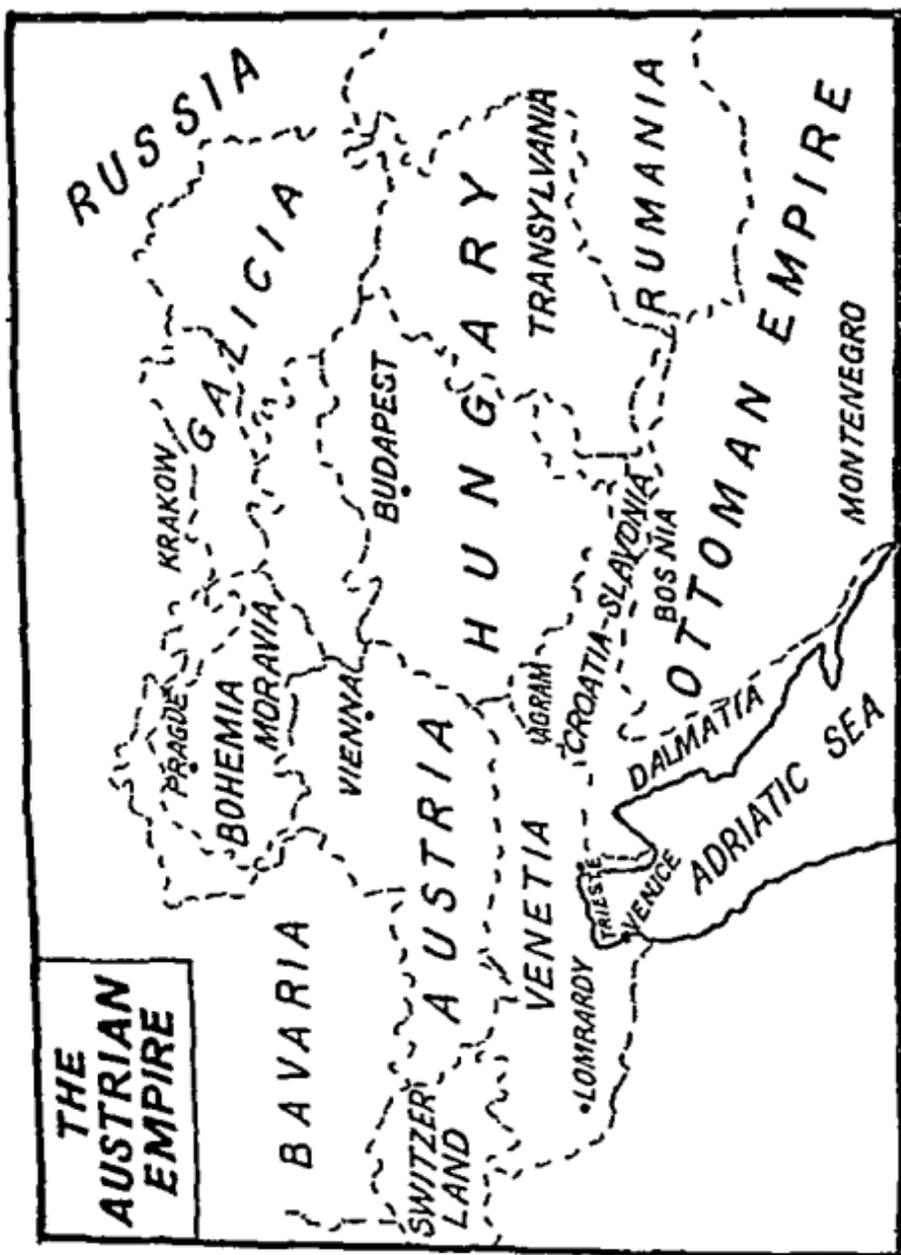
मेटरनिक फ्रांस की श्रांति तथा उसने ध्येय का दात्र था। वह श्रान्ति को एक रोग जिनका उपचार करना चाहिए एक ज्वालामुखी जिस बुझाना चाहिए एक गदा फोडा जिसे गम सलाखों से जला देना चाहिए तथा एक दानव समझता था जो समूची सामाजिक व्यवस्था का निगलन के लिए मुँह खोल खडा था। उसने विचार से प्रजातन्त्र दिग् के प्रकाश को रात्रि के घोर अंधकार में बदल सकता है।

आरम्भ में उसे बडा कठिन काय करना था। नेपोलियन आस्ट्रिया के राजघराने का सम्बन्धी था इस कारण उसके विरुद्ध काय करना बडा कठिन था। ठीक इसी प्रकार मेटरनिक रूस का पूण नाश नहीं चाहता था क्योंकि इससे यूरोप में शक्ति-अतुलन के बुरी तरह से अस्तव्यस्त हो जाने का अदोष था। १८१० से १८१३ तक मेटरनिक नेपोलियन को आर से भिडान की नीति का अनुसरण करता रहा। जब १८१२ में नेपोलियन ने रूस पर आक्रमण किया उस समय मेटरनिक ने उसे सहायता का आश्वासन दिया कि-तु साथ-ही साथ रूस को भी वचन दिया कि रूस के विरुद्ध आस्ट्रिया की सेना प्रयुक्त नहीं की जायगी। १८१३ में राष्ट्रों के युद्ध में (Battle of Nations) तथा १८१४ के युद्ध में आस्ट्रिया के हस्तक्षेप से नेपोलियन का पतन हो गया और विजेता राष्ट्रों में आस्ट्रिया का महत्त्व प्राप्त हुआ।

विश्वाना सम्मेलन (१८१४-१५) में मेटरनिक का सबसे अधिक महत्त्व किया गया और उसने नेतृत्व में यूरोप की बागडोर फ्रांस से हटकर आस्ट्रिया के हाथों में आ गई। दूसरे आस्ट्रियन-नीदरलण्ड्स के बदले में उसे इटली में लोम्बार्डो और विनिगिया मिले थे। उसने परमा मोडिना और टुस्कने के मिहानों पर हैन्सबग राज्य-वश के वशजों को बठाया था। इस प्रकार उसने इटली पर सक्रिय नियन्त्रण स्थापित किया था। इसी प्रकार उसने जर्मनी के मामलों में भी अपना देश के लिए महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया था। आस्ट्रिया जर्मन डायट का नियन्त्रणकर्ता बना और उसके अनुमोदन के बिना वहाँ कुछ भी नहीं बन सकता था। उसने फ्रांस के चारों ओर शक्तिशाली सीमांत दगों का निर्माण किया जिससे वह भविष्य में उत्पात न कर सके।

मेटरनिक यूरोप में 'यथा स्थिति (status quo) बनाए रखने के पक्ष में

और ग्रेट ब्रिटेन के साथ चतुर्मुखी संधि की थी। महान् शक्तियों ने निगम किया कि वे समय-समय पर मिलते रहें, जिससे कि व आपस की समस्याओं पर विचार करके यूरोप में शान्ति बनाए रखें। १८१८ में ऐक्स-ला-चेपेल में प्रथम सम्मेलन



हुआ। इस सम्मेलन में यह प्रयत्न किया गया कि विघ्नाना में देगा की जा सीमा निर्धारित की गई थी उसे सारे राष्ट्र स्वीकृत मान लें, किंतु ब्रिटेन नहीं माना। १८२०

ये प्रिटेन के न चाहने पर भी टाणू की व्यवस्था प्रिटेन के विरोध करते रहा पर भा माना भी गई। इस व्यवस्था व अनुगार यूरोप का गठितवा का यह अधिभार लिया गया कि यदि किसी भी देश में प्राति हा और उग प्राति से अय देश को रतता हा ता उह उग देश के धान्तरिक मामला में हस्तगत करन का अधिभार होगा। इस व्यवस्था से मटरनिक सारे यूरोप में पुनित का काय करव जहाँ भी सुधारवाद और राष्ट्रवाद का ध्यानलन हा उह कुचल दन में समथ हा गया था। इस नीति का अनुगरण करव आस्ट्रिया व नपम और पोइमाण्ट व विद्राह का दमन किया था। इसी प्रकार फ्रांस का स्पेन में हस्तक्षेप करव स्पेन व राजा को पुन आमीन करन की छूट दी गई थी। १८१२ में सम्मनन-युग समाप्त हुआ। प्रिटेन न विद्राहा सम्मनन में स्पेन और अपन अमरिका के उपनिवगा व मामला का लकर सगठन को छोड दिया। किन्तु मटरनिक अपनी इच्छानुसार काय कर चुका था। हजारों राष्ट्रवादिया का कर् कर लिया गया था अथवा उह देशनिवगा या मयु दण्ट किया जा चुका था। निवृष्ट तथा जनता से अनिगोध की प्यानी सरकारी की स्थापना हो चुकी थी। मटरनिक इन परिणामों से अत्यंत सन्तुष्ट था। मटरनिक का नाम में एक अच्छे दिन का उपादान देत रहा हूँ। प्रभु की इच्छा यही है कि विद्वे का विनाग न हो।

मेटर्निक और जर्मनी (Metternich and Germany)—जर्मनी के देश भक्ता को इच्छा और प्रयत्न के विरुद्ध जर्मनी में एक बीला मथ बनाया गया क्योंकि इसमें आस्ट्रिया का स्वायत्ता। जर्मन-सभ में उनतालीस सम्पूर्ण अधिभारसम्पन्न राज्य थे जिन्हें आस्ट्रिया अपना स्वायत्त व लिए प्रयोग में ला सकता था। मटरनिक ने छोटे छोटे जर्मन देशों की प्रशिया के प्रति ईर्ष्या से लाभ उठाया। जर्मनी में गुप्त जातिकारी सगठनों पर रोक लगाने के लिए १८१६ में कार्ल्सबड अध्याप्तियाँ (Carlsbad Decrees) प्रसारित की गईं और समाचार पत्रों पर प्रतिबंध लगाए गए थे। विश्वविद्यालयों का राज्य व नियंत्रण में रखा गया था। पत्रकारों का पता लगाने तथा दमन करने के लिए एक आयोग की नियुक्ति हुई। इन प्रतिबंधों का परिणाम हुआ जनता की स्वतंत्रता का दमन। देशभक्ताओं की बड़ी कठिन परिस्थितियों में अपना काय करना पडा। फ्रांस की जुलाई क्रांति के परिणामस्वरूप जर्मनी के कुछ राज्यों में भी गठबन्ध हुई किन्तु मटरनिक ने उसका दमन कर दिया था। १८४८ में जब मेटर्निक का शासन समाप्त हुआ इस प्रकार की परिस्थिति बनी रही। प्रो० हेयस के शब्दों में जर्मनी पर मटरनिक का पूरा नियंत्रण था।

मेटर्निक और इटली (Metternich and Italy)—इटली को मेटर्निक केवल एक भौगोलिक वाक्य मानता था। उसने लोम्बार्डी और विनिगिया को आस्ट्रिया में मिला लिया था। परमा, माटिना और टस्कन के राज्यों पर हेनसबग राजवंश का वंश राज्य कर रहा था। १८१५ में मेटर्निक ने मिसली और नेपल्स के राजाओं से एक गुप्त संधि की जिसके अनुसार आवश्यकता पडने पर वे आस्ट्रिया से सहायता माग सकते थे। १८२० में नेपल्स में विद्रोह हुआ और इसका राजा ने आस्ट्रिया से

सहायता मागी। आस्ट्रिया की सेना ने नपल्स में जाकर इराके राजा का पूण अधिकार
 तिला कर पुन पदस्थ कर दिया था। १८२१ में पीडमोंट में विद्रोह हुआ और
 नेपल्स से लौटती हुई आस्ट्रिया की सेना ने इमका भी दमन कर दिया। ह्यम क
 शब्दा में, 'इटली के हाथ और पाँव, जकड़ कर उसे आस्ट्रिया के प्रतिश्रियावादी युद्ध
 रथ के साथ बाँध दिया गया था।'

मेटरनिक और स्पेन (Metternich and Spain)—फर्डिनण्ड मप्तम १८१५
 में पुन राजा बना। उसने प्रतिश्रियावादी नीति का अनुसरण करके १८१२ के
 मुधारवाती सविधान को भंग कर दिया। १८२० में स्पेन की जनता ने १८१२ के
 सविधान का लागू करने की माँग करत हुए विद्रोह कर दिया। फर्डिनण्ड ने कुटिलता
 से स्वीकार करते हुए यूरोप की गिनिया से सहायता की अपील की। यूरोप की
 गिनिया ने स्पेन में शान्ति का 'भूत दम्बा और १८२२ के विमाना-सम्मेलन में फ्रान्स
 को अधिकार दिया कि वह स्पेन में हस्तक्षेप करे और बाबन-बग के राजा को पुन
 पत्नीन कर दे। जब फ्रान्स की सेनाएँ स्पेन में घुमी और फर्डिनण्ड का पुन पदस्थ
 किया गया तो मेटरनिक बहुत प्रसन्न हुआ था।

मेटरनिक और रूस (Metternich and Russia)—ग्राम्म में जार
 एलेग्जेंडर के विचार उदार थे किन्तु क्रम में वह अपनी नीति को नहीं चला पाया।
 १८१५ के बाद जार के विचार बदल गए। १८१५ में जार के अग्ररक्षक मनिक्
 अधिकारिया ने एक शान्तिकारी पद्यत्र रचा था। १८१६ में कोटज-यु जिसे जर्मनी
 में रूस का गुप्तचर समझा जाता था मार डाला गया। १८२० में ड्यूक डी बेरी की
 फास में हत्या कर दी गई। इन सब घटनाओं से एलेग्जेंडर बुग्री तरह डर गया
 और उसकी यह धारणा बन गई कि उदार विचारधारा स्वतन्त्र है। १८२० में
 ट्रोणू सम्मेलन के अवसर पर उसने मावजतिक रूप से घोषणा की कि वह मेटरनिक
 का अनुयायी है। उसने मेटरनिक का अपना गुप्त मानकर आना देने के लिए कहा।
 १८२० से १८२५ तक वह पूणत मेटरनिक का प्रभाव में था और इसी कारण जब
 शीकों ने तुर्कों के शत्याचारों के विरुद्ध विद्रोह किया तो एलेग्जेंडर ने उनकी सहायता
 नहीं की थी।

मेटरनिक का पूर्वी प्रश्न—यूनानियों ने इजीलैंटी (Ypsilanti) के नेतृत्व में
 विद्रोह कर दिया और उहाने विश्वास के साथ रूसी मदद की आगा की। रूस तुर्कों
 से घृणा करता था और यूनान वालों की मदद कर सकता था जो उसी के धर्म का
 अनुयायी थे। हितों की समानता होत हुए भी मेटरनिक ने फुमलाकर एलेग्जेंडर को
 इजीलैंटी से अलग कर दिया। फन यह हुआ कि विद्रोह का तुर्कों ने दबा दिया और
 मेटरनिक ने सात वर्षों तक इजीलैंटी को आस्ट्रिया के बदीशूह में रखने का प्रान्त
 किया। १८२१ में मारिया व एड्रियन द्वीपों में भी यूनानियों ने उपद्रव किया और
 इस बार पुन मेटरनिक ने एलेग्जेंडर का उनकी सहायता देने में राव किया। मेटरनिक
 ने रूसी स्वयं से कहा कि 'उपद्रव की यह पहलिक कि यह प्रश्न की सम्भला के
 दापरे से बाहर कर भस्म कर ले।'

मेटरनिक व फ्रांस—नेपोलियन का पतन कराने के बाद, मेटरनिक ने एने सोह वन म फ्रांस को घेरना चाहा। इसी उद्देश्य से, बेल्जियम व हॉलैंड को मिला लिया गया और राइनलैण्ड प्रशिया को तथा जेनोवा पीडमोंट को दे दिया गया। मेटरनिक को इन तत्त्व का भी ज्ञान नहीं था कि त्रासिकारी विचार फ्रांस से घाय थे जो एक बार फिर परेगानी का कारण हो सकता था, लेकिन जब १८१८ म फ्रांस ने युद्ध-शक्ति का भुगतान कर दिया तो मित्र राष्ट्रों की सेना का बन्धा हटाने का निश्चय किया गया। फ्रांस को चौमुसी संध (Quadruple Alliance) का सदस्य मान लिया गया जिसे पाँचमुसी संध म बदल दिया गया। मेटरनिक अपनी रक्षा कर रहा था जबकि १८३० म फ्रांस म एक क्रांति हुई।

मेटरनिक और ग्रेट ब्रिटेन (Metternich and Great Britain)—मेटरनिक ने परस्पर के स्वाय भयार्त्त नेपोलियन को हराने के लिए ब्रिटेन का साथ दिया था। जब यह स्वाय पूरा हुआ तो मेटरनिक और कंसलरे ने विमाना सम्मेलन म सहयोग दिया। ब्रिटेन ने चतुमुखी संधि म सहयोग किया जिससे यूरोप म 'यथा स्थिति' (status quo) को बनाए रखा जाए। किंतु इस प्रश्न पर कि 'एक देश को दूसरे देश के मामले म हस्तक्षेप का अधिकार है' दोनों देशों मे मतभेद हो गया। १८१८ म ऐक्स-ला-चेपल के सम्मेलन म यह मतभेद प्रबल हो गया था। १८१० म कंसलरे ने ट्रोप्सू व्यवस्था का विरोध किया था। यद्यपि विमाना सम्मेलन से पूर्व ही कंसलरे ने आत्महत्या कर ली थी। ब्रिटेन ने स्पेन म फ्रांस के हस्तक्षेप का विरोध किया तथा सम्मेलन से सम्बन्ध विच्छेद कर लिया। इसका परिणाम यह हुआ कि सम्मेलन व्यवस्था का अन्त हो गया। कनिंग ने स्पेन द्वारा दक्षिणी अमेरिका म अपने उपनिवेशों पर पुन अधिकार जमाने के प्रयत्न का भी विरोध किया था। इस विषय मे अमेरिका की सरकार ने उनकी सहायता प्रसिद्ध मुनरो सिद्धान्त' का प्रतिपादन करके की थी।

मेटरनिक और आस्ट्रिया (Metternich and Austria)—मेटरनिक आस्ट्रिया हगरी मे प्रतिनिध्यावादी नीति का अनुसरण करता रहा। उसने अपने देश मे सुधारवाद और राष्ट्रीयता का दमन करने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी थी। उसकी धारणा थी कि आस्ट्रिया के साम्राज्य की तत्कालीन परिस्थिति म बनल ऐसी नीति की ही आवश्यकता थी। उसकी नीति 'ध्वसात्मक' (negative) थी और जो काय उसे करना पड़ता था वह उसे भरचिक्कर था। उसने अपने 'गदो म मैं इस समार म आया हूँ। यदि मैं शीघ्र आया होता तो मैं युग का आनंद भोगता यदि देर से आया हूँ तो इसका पुनर्निर्माण मे हाथ बटाता। किंतु आज तो मुझे युग के मरिच-काल म बनती हुई व्यवस्थाओं को संवारने मे अपना जीवन लगाना पड़ रहा है। गृहनीति म उसका मूलमंत्र प्रतिरोध (Prevention) था। उसके कायक्रम का आदि और अन्त शासन करो किन्तु परिवर्तन मत करा। इस वाक्य म निहित था। उसने शांति म 'हम प्रतिरोध की नीति इसलिए अपनाए हुए है कि हम दमन की नीति का अनुसरण न करना पड़े। हमारा दुःख विश्वास है कि सरकार

द्वारा दी गई प्रत्येक सुविधा इसके अस्तित्व पर कुठाराघात करती है। जिन्हें सुविधाएँ कहा जाता है वे राजा के स्वाधिकार में कमी करती हैं, इसलिए यदि राजा कोई सुविधा देता है तो वह अपने अस्तित्व पर कुठाराघात करता है।' मेटरनिक् न अपनी नीति की व्याख्या इस प्रकार की है, जहाँ तक नीति का प्रश्न है आस्ट्रिया की कोई नीति नहीं है। हमारी नीति की सीमा केवल गान्नि बनाए रखना तथा सधि प्रतिभाषा का पालन करना है। फ्रान्स (Francis) द्वितीय ने अपनी सरकार की नीति का मशियन बणन इन शब्दों में किया है 'मेरी व्यक्तिगत जागीरें भी हैं मैंने उन्हें विधान प्रदान कर रखा है और मैं उन्हें तो नहीं करता। किन्तु यदि वे बहुत आगे बढ़ने का प्रयत्न करेंगे तो मैं उन्हें खदेड़ कर सोचा उनके घर भेज दूंगा। जो मेरी सेवा में है उसे मेरी आज्ञा का प्रचार भी करना होगा।'

अपने ध्येय की प्राप्ति के लिए मेटरनिक् न समाचारपत्रों पर प्रतिबंध लगा दिया था। सारे देश में गुप्तचरा का जाल फसा दिया गया था। विश्वविद्यालयों को बंदार सरकारों नियंत्रण में रखा दिया गया था। विदेश यात्रा को प्रोत्साहन नहीं दिया जाता था। आस्ट्रिया को यथामाम्भव यूरोप के अन्य देशों से अलग करने का प्रयत्न किया गया था। शिक्षा का स्तर नीचा था और देश में व्यापार तथा उद्योग की उन्नति नहीं हो रही थी। कार्ल मार्क्स (Karl Marx) के अनुसार जहाँ वहाँ भी आस्ट्रिया देश की सीमा किसी अन्य सम्य देश की सीमा को छूती थी वहाँ चुंगी की चौकियों के साथ-साथ बड़ा बंदार साहित्यिक प्रतिबंध लगा हुआ था। प्रत्येक चुंगी पर वहाँ के पदाधिकारी प्रत्येक विद्वानों पुस्तक और पत्रिका उस समय तक देश में नहीं आने देते थे जब तक वे उसे कई बार पढ़ताल करके सन्तुष्ट नहीं होते थे कि उसमें युग की भावनाओं का लेशमात्र भी बणन नहीं है।'

इन सब प्रतिबंधों के होने पर भी १८२१ में मेटरनिक् को यह मानना पड़ा था कि जनमत बुरी तरह बीमार है। विमानों में भी परिम, बर्लिन और लन्दन, सारे जर्मनी और इटली में भी रुस और अमेरिका की तरह हमारी विजयों को महान् अपराध, हमारी सफलताओं को महान् भूत और हमारे प्रस्ताव महान् भ्रष्टाचार मानी जाती हैं।'

यद्यपि आस्ट्रिया चीन जैसे 'अकमप्यता' की नीति का अनुसरण करता प्रतीत होता था, तथापि देश में गुप्त रूप से आन्दोलन चल रहा था जिसने मेटरनिक् के प्रयास विफल कर दिये थे। चीजें बनाने वालों और व्यापारी लोग तथा मध्यमवर्गीय लोगों का धन और प्रभाव बढ़ गया था। उद्योग धंधा में मशीन और वाष्प शक्ति के प्रयोग ने अन्य देशों की भाँति समाज के सारे वर्गों के पारस्परिक सम्बन्धों का एकदम बदल दिया था। इसके कारण मुजार स्वतंत्र व्यक्ति हो गए छोटे किसान औद्योगिक प्रबंधक बन गए तथा इस परिवर्तन से पुराने व्यापार-मणों का बड़ी गति पट्टी और इन में से अनेक का तो जीवन ही समाप्त हो गया। नवीन उद्योगों तथा व्यापार में लग हुए लोगों को लगभग सभी स्थानों पर समाज की प्राचीन भावनाओं से टक्कर लेनी पड़ती थी। मध्यमवर्ग के लोग व्यापार के सम्बन्ध में अधिक

विदेश यात्रा करते थे और स्वदेश आकर आस्ट्रिया की युगी से परे बस हुए देश के विषय में अद्भुत बातें सुनाया करते थे। रेलमार्ग की प्रगति के कारण देशवासियों की औद्योगिक तथा मानसिक उन्नति को अधिक गति प्राप्त हुई। आस्ट्रिया के राज्यों के संगठन में साम्राज्य के लिए एक सत्तरनाक बात थी अर्थात् हंगरी का सामन्तशाही मंत्रिधान जिसमें सप्तदीप विधान और निधन तथा सरकार के विरोधी सामन्तव्य में निरन्तर सघर्ष रहता था। हंगरी की विधान सभा (Diet) का भाग्य प्रसन्न विधानों के द्वार पर था। इन सभी चीजों ने नगरों में रहने वाले मध्यमवर्गीय लोगों में असन्तोष की भावना को उत्पन्न कर दिया। जन-साधारण की इच्छा थी कि सुधार होने चाहिए। इन सुधारों से संबंधित सुधारों की अपेक्षा प्रशासनिक सुधारों की अधिक इच्छा थी। इन सुधारों की योजना अत्यन्त सीधी-सादी और राजनीतिक विचारधारा से नितांत दूर थी। आस्ट्रिया में सविधान और समाचार पत्रों की पूर्ण स्वतंत्रता एक काल्पनिक धारणा थी। आस्ट्रिया के नगर और सज्जन नागरिकों की इच्छा प्रांतीय विधान सभाओं के अधिकारों में वृद्धि, विदेशी पुस्तकों को स्वदेश में लाने की अनुमति तथा समाचार-पत्रों पर साधारण प्रतिबंधों से बंधन और कुछ भी नहीं था। (Karl Marx)।

मेटरनिक का मूल्यांकन (Estimate of Metternich)—मेटरनिक यूरोप की राजनीति पर १८१५ से १८४८ तक छाया रहा। अतः इसमें कोई अत्युक्ति न होगी यदि इन ३३ वर्षों की अवधि को मेटरनिक युग के नाम से पुकारा जाये। काफी लम्बे समय तक वह यूरोप में होने वाली घटनाओं का भाग्यनिर्णय करता रहा था। १८२४ में उसने एक बार कहा था 'ये लोग मेरी और इस प्रकार देखते हैं मानो मैं इनका मसीहा हूँ।' किन्तु अन्त में मेटरनिक को मानना पड़ा कि वह एक बीते हुए युग के लिए मघप कर रहा है। प्रो० हेयस के मतानुसार मेटरनिक के प्रयत्नों के बावजूद भी प्राचीन परिपाटी का विनाश हो चुका था और इसे किसी भी प्रकार बचाया नहीं जा सकता था। प्रो० ऐलिसन फिलिप्स के शब्दों में 'एक डरपाक और श्रांत पीढ़ी के लिए वह एक आवश्यक पुरुष था किन्तु यह उदात्त दुर्भाग्य था कि वह उपयोगी होने के साथ-साथ इस तथ्य का भूल गया कि जब स्वयं दुबल और बूढ़ा हो रहा था सत्कार अपनी जवानी पुनः प्राप्त कर रहा था।

प्रो० फिशर के मतानुसार मेटरनिक प्रणाली में आस्ट्रिया के शासकों को एक पीढ़ी की प्रशंसा प्राप्त हुई। इन लोगों को उन दिनों युद्धों की कठिनाइयों का ही ज्ञान था। मेटरनिक में एक महान राजनीतिक नेता के अनेक गुण थे। उसमें तीव्र और आकर्षक बुद्धि, शांत चित्त मामला की गहरी सूझ-बूझ तथा एक देशभक्ति की भावना थी। अपने देश के सुकृतिता तथा नए यूरोप के निर्माता के रूप में उसका महान सम्मान था। जर्मन भाषा बोलने वाले देशों को तो उसमें अमीम विश्वास था। स्वेच्छाचारी राजाओं के सम्मेलनों में वह उत्तम सचिव था। इतलिए १८१५ से १८४८ की अवधि का सत्य ही मेटरनिक युग कहा जाता है। किन्तु यह महान् योग्य सामन्त जिसका चरित्र इतना हीन, जिसके सिद्धांत अत्यन्त बटार तथा

जिसका प्रभाव इतना विशाल था, एक अत्यंत घोर मानसिक दुबलता का शिकार था, उसने 'त्रान्ति और 'स्वच्छाचारी शासन' इन दो प्रणालियों के बीच का कोई माग खोजने का प्रयत्न ही नहीं किया। क्योंकि त्रान्ति स उस धार घणा थी इसलिए उसने उस भावना का दमन करने का बीड़ा उठाया जो समाज में मानवता-पूण जीवन की धारणा होती है अथवा जो स्वतंत्रता के प्राण होत हैं।'

हेनरी ए० किर्मिगर के मत में, "यह आस्ट्रिया का भाग्य था कि मकट के बपों में इसका पय प्रदर्शन एक ऐसे व्यक्ति ने किया जिसने उसके सार ही को सन्निप्ट रूप में प्रस्तुत किया। लेकिन यह उसका भाग्य अथवा पर भाग्यमानिता नहीं क्योंकि ग्रीक दुस्मान्त नाटकों की भांति मेटरनिक की सफलता ने राज्य के उस पतन को भी अन्त बना दिया जिस राज्य को सुरक्षित रखने के लिए वह इतने दिनो तक लड़ा था।

"जिस प्रकार के राज्य का उसने प्रतिनिधित्व किया मेटरनिक उस युग की देन था जो लंघे जाने की प्रक्रियाधीन था। वह अठारहवीं शताब्दी में पैदा हुआ था जिसके बारे में टेनीरेड कहा करता था कि कोई भी जो फ्रान्स की त्रान्ति के बाद रहा यह नहीं जान सकेगा कि जीवन कितना मधुर व उत्तम भी हो सकता है। और अपनी युवावस्था के समय के दृढ़ निश्चय ने मेटरनिक को कभी नहीं छोड़ा। उसके द्वारा दृढ़ विवेक के सिद्धांतों की प्राथना पर, उसके सुगम दगनीकरण पर और उसके सजे हुए अलंकारों पर समकालीन हास्य कर सकत थे। वे यह नहीं समझते थे कि यह एक इतिहास की घटना है जिसने मेटरनिक को एक त्रान्तिकारी सग्राम में लीज दिया जो उसके स्वभाव से इतना परे था। जिस शताब्दी में उसकी रचना हुई उसकी शली यथा प्रदत्त तत्वा को मिलाने में अधिक उपयुक्त थी, अपक्षाकत निश्चय के मध्य के जो पैमाने की अपेक्षा अनुपात द्वारा अधिक भली प्रकार प्राप्त हो सकता था। वह एक अतन्त सुन्दरतायुक्त प्रतिमा था विषम सुन्दरता के साथ बटा हुआ, बिल्कुल समतल जैसे कि कोई बारीकी से कटा हुआ धनशेय का टुकड़ा। उसका मुख कोमल था लेकिन गहनताहीन और उसकी वार्तालाप चमकदार लेकिन अन्तिम, अर्थ में गम्भीरताहीन थी। जसा कि घर पर वसा ही कंबिनिट में मनोरम व सुगम वह अठारहवीं शताब्दी में कुलीनता की सुन्दरता का आदर्श था जो अपने को अपनी सत्ता से, न कि अपने सत्य से अचिन्त्यतापूण बता रहा था। और यदि उसका नये युग से कभी मेल न हो सका तो इस लिए नहीं कि वह उसकी गम्भीरता समझने में अक्षम हुआ, वरन् इसलिए कि वह उसमें घूपा करता था। उस में भी उसका भाग्य आस्ट्रिया का भाग्य रहा।"

फिर, मेटरनिक के आत्म प्रमन्न सत्ताप व कठोर आस्था के विरुद्ध प्रतिक्रिया न अथ एक शताब्दी से अधिक यह मनाही वर्ग के स्वरूप में लगा दी है कि उसकी महानताया में वास्तविकता नहीं थी किन्तु एक व्यक्ति जिसने प्रत्येक उस मिश्रित भाग पर आधिपत्य रखा जिसमें भाग लिया जिसे दो विदगी राजाशाह न अपने निजी मंत्रियों से अधिक विभवमयीय पाया, जा तीन बपों तक सारे बुराप

का सप्यत प्रधानमंत्री रहा ऐसा व्यक्ति नीच परिणाम वाला नहीं हो सकता । विश्वास की बात यह है कि, वह सफलता जो कि वह अपने मिडान्ना की नतिक उत्तमता को देना चाहता था यह उसकी कूटनीति की प्रमाधारण बुगलता ही के कारण थी । उसकी बुद्धिमत्ता गुजनात्मक नहीं वरन् प्रयोगात्मक थी यह निर्माण में नहीं बल्कि जोड़-तोड़ में दक्ष था । अठारहवीं शताब्दी की कब्रिड कूटनीति में प्रशिक्षित होकर उसने सामने चोट करन की चतुर चाल को पगद किया, जबकि उसने विवेकवाद में प्रायः एक सफल क्रिया की जगह एक मुगलिन उद्देश्यपत्र के प्रति दोषपूर्ण बनाया । नेपोलियन ने उसके बारे में कहा था वह नीति और चालबाजी के बीच भ्रम पदा करता है और विमाना में हेनोवर के दूत हाडेंबग ने १८१२ के सक्ट की पराकाष्ठा को देखते हुए मेटरनिक की कूटनीतिक विधियों की व्याख्या इस प्रकार की, अपनी योग्यता की उत्तमता के विषय में एक उच्च विचार में भरकर

वह राजनीति में चालबाजी पसन्द करता है और उसे अनिवाय समझता है । च कि उसके पास इतनी काफ़ी शक्ति नहीं है कि वह अपने देश के साधना को गतिशील बना सके वह ऐसा प्रयत्न करता है कि शक्ति व चरित्र की जगह मक्कारी को मिल जाये । यह उसने लिए सबसे अधिक उपयुक्त होगा यदि एक भाग्यशाली घटना—नेपोलियन की मृत्यु या रूस की महान् विजय—ऐसी स्थिति पदा कर दे जहाँ वह आस्ट्रिया को एक महत्वपूर्ण भाग पूरा करने योग्य बना सके ।' फ्रेडरिक वॉन गेंज जो काफ़ी समय तक मेटरनिक का निकट सहयोगी रहा ने कदाचित् एक सर्वोत्तम सकेत किया है जो कि मेटरनिक की रीतियाँ व व्यक्तित्व बताता है— वह दब भावनाओं व माहनी प्रयत्नों का पुरुष नहीं था, विद्वान् नहीं वरन् बड़ा चतुर था । अपने गान्ध मन्त्र, अविघ्नोय स्वभाव में सबसे बढ़िया था । (A World Restored pp 11 12)

१८४८-४९ की क्रान्तियाँ (Revolutions of 1848-49)—फ्रांस की फरवरी क्रान्ति का हंगरी के भाग्य पर बड़ा गम्भीर प्रभाव पडा । जब फ्रांस में क्रान्ति की खबर हंगरी पहुँची, तो कोस्सुथ (१८०२-६४) ने आस्ट्रिया के राजा के सम्मुख केवल उत्तरदायी मन्त्रिमण्डल की ही नहीं अपितु आस्ट्रिया की जनता के एक भाईचारे की हंगरी के नेतृत्व में माँग करने का निणय किया । ३ मार्च, १८४८ के भाषण में कोस्सुथ ने इस प्रकार कहा, 'दम धोतने वाले शाप के धुएँ का बादल हम पर मडरा रहा है । विमाना के मन्त्रिमण्डल रूपी मुर्दाघर से एक सडाद भरी वायु हमारी इन्द्रियों को शिथिल करती हुई और हमारी राष्ट्रीयता की भावना को सुन करती हुई बहती है । हंगरी का भविष्य कभी भी सुरक्षित नहीं रह सकता जब तक अन्य प्रान्तों में, विशेषतः विमाना में सब प्रकार के सविधाना के विरुद्ध सरकार चतमान है । यह हमारा काय है कि हम आस्ट्रिया की समस्त जातियों के भ्रातृ भाव की नीव पर एक सुन्दर भविष्य का निर्माण करें तथा तलवार की धार पर धोपी गई एकता की अपक्षा स्वतंत्र सविधान के आधार पर अद्वैत एकता का निर्माण करें । इस भाषण की हजारी प्रतियाँ छापकर हंगरी और आस्ट्रिया में बाँटी गई । परिणाम यह हुआ कि मार्च १८४८ में विमाना में खोरदार प्रदशन हुए और मेटरनिक को भागना

पड़ा। बहुत से सुधार करने के बाद आस्ट्रिया का राजा भी विघ्नाना से इनसब्रुक भाग गया।

जैसे ही विघ्नाना के विद्रोह तथा मेटरनिक के पलायन की सूचना इटली पहुँची वैसे ही मिलान में भी विद्रोह हो गया और राज्यपाल भाग गया। लोम्बार्डी से भी आस्ट्रिया की सेनाएँ राडेत्ज़की (Radeizky) के नेतृत्व में वापिस लौट गई। वेनिस में एक प्रजातन्त्रात्मक सरकार की स्थापना हुई। परमा और मोडिना के भी राजा भाग गए। मार्च, १८४८ में पीटमोण्ट के शासक ने आस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। इटली भर में देश से आस्ट्रिया को भगा देने के लिए बड़ा उत्साह था। इटली के कोन-कोने से आस्ट्रिया से लड़ने के लिए सेनाएँ आईं। ऐसा प्रतीत होता था मानो इटली में आस्ट्रिया का प्रभाव बिल्कुल समाप्त हो जाएगा।

जर्मनी पर आस्ट्रिया का नियंत्रण १८१५ से था। मार्च १८४८ में बर्लिन में विद्रोह हुआ और प्रसिया के राजा ने विद्रोहियों का नेतृत्व किया। १८४८ में सारे जर्मनों में प्रतिनिधियों की एक संसद् फ़ैकफ़्ट में सारे जर्मनी के लिए एक संविधान का मसविदा बनाने के लिए एकत्रित हुई। देश भर में बड़ा उत्साह था और आस्ट्रिया का जर्मनी पर नियंत्रण समाप्त हो गया।

हंगरी में हंगरी के नेता कास्सुय ने हंगरी के लिए एक अलग संसदीय प्रणाली की सरकार की माँग की और आस्ट्रिया के राजा ने यह स्वीकार कर लिया। हंगरी में प्रसिद्ध 'माच कानून' प्रचलित हुए जिनके अनुसार देश में सामन्तशाही, मुजारेदारी और विशेषाधिकार समाप्त कर दिए गए।

बोहीमिया में भी विद्रोह हुआ। चक लोगों ने जर्मनों के आधिपत्य का विरोध किया तथा विघ्नाना विद्रोह के पश्चात् उठाने आस्ट्रिया के सम्राट के सम्मुख अपनी माँगें पेश कीं किन्तु इन माँगों को नहीं माना गया। चक लोगों ने प्रेग में एक सम्मेलन किया जिसमें चैक, सिलिसियस, पोल्य, हथिनियस, मस्य, त्रोस इत्यादि जातियों के प्रतिनिधि आए। प्रेग निवासी चैको ने विद्रोह करने आस्ट्रिया के सैनिक राज्यपाल की पत्नी की हत्या कर दी। परिणामस्वरूप उनकी माँगें मान ली गई और शान्ति हो गई।

अग्राम (Agram) एक अत्यन्त क्रान्तिकारी आन्दोलन का केन्द्र बना हुआ था। इसका उद्देश्य क्रोट, स्लोवन और सब कबीलों का संगठन करना था।

इस प्रकार की परिस्थिति में आस्ट्रिया-हंगरी की हालत बड़ी जटिल हो गई और ऐसा प्रतीत होना था कि सक्नाग होने ही वाला है। किन्तु कुछ अपने प्रयत्नों से तथा कुछ विराधियों की त्रुटियों के कारण आस्ट्रिया पुनः जीवन प्राप्त कर सका।

इटली में कस्टोज़ा (Custoza) की लड़ाई में चार्ल्स अलबर्ट पराजित हुआ। विनिसिया और लाम्बार्डी आस्ट्रिया के अधिकार में आ गए। मार्च १८४९ में चार्ल्स अलबर्ट ने आस्ट्रिया के विरुद्ध पुनः युद्ध छेड़ लिया किन्तु वह नोवारा (Novara) की लड़ाई में फिर हार गया। रोम का प्रजातन्त्र फास की सेनाओं ने समाप्त कर दिया

श्रीर वेनिग का प्रजातंत्र आस्ट्रिया की सेनाओं ने भंग कर डाला। इस प्रकार इटली फिर एक बार आस्ट्रिया के अधिनार में आ गया।

जर्मनी में फ्रांफट ससद के सदस्या ने अपना बहुसूय समय जनता के मौलिक अधिकारों तथा नवीन जर्मन देश की सीमाओं के विषय में साहित्यिक वादविवाद में नष्ट कर दिया। बहुत बादविवाद के पश्चात् यह निगम हुआ कि जर्मनी का सिंहासन प्रशिया के राजा को दिया जाए। किंतु प्रशिया के राजा ने आस्ट्रिया के डर से जो पुनः पनप रहा था इस प्रस्ताव को मानने से इन्कार कर दिया। इस प्रकार १८४६ में प्रजातंत्र के आधार पर जर्मनी को संगठित करने का प्रयास विफल हो गया। फ्रांफट ससद द्वारा राज्य की भेंट अस्वीकार करने के पश्चात् प्रशिया के राजा ने हेनोवर सम्मोचन, युटमबर्ग और बावेरिया के राज्यों से प्रशिया के साथ एक संधि बनाने के लिए कहा। आस्ट्रिया ने इस संधि का विरोध किया और अंततः प्रशिया को १८५० में ओल्मुटज़ (Olmutz) सम्मेलन में आस्ट्रिया के सम्मुख आत्मसमर्पण करना पड़ा।

हंगरी की समस्या बहुत कठिन थी। हंगरी निवासियों के आन्दोलन का उद्देश्य हंगरी की सीमा में बसने वाली सारी जातियों पर मेग्यार (Magyar) कबीले का अधिकार जमाना था। वास्तुमें एक बार कहा था मुझे मानचित्र पर क्रोशिया (Croatia) नजर नहीं आता। उसमें, वही स्वतन्त्रता जो अपने लिए चाहता था प्रोटस रूमानिया स्लोवेस और सस जातियों को देने से इन्कार कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि इन अल्पसंख्यक जातियों ने मेग्यार जाति के प्रभाव को रोकने का आन्दोलन आरम्भ कर दिया।

हंगरी के नेताओं विरोधकर वास्तुमें और गोरों में भी परस्पर मतभेद था। दिसम्बर, १८४८ में गोरों को मेग्यार सेना का सेनापति नियुक्त किया गया। जैसे ही आस्ट्रिया की सेनाएँ हंगरी की राजधानी की ओर बढ़ने लगी उदारदलीय हंगरी के लोगों ने डीक (Deik) के नेतृत्व में आस्ट्रिया से मुलह करने का प्रयास किया। किंतु वास्तुमें और गोरों ने मुलह करने से इन्कार कर दिया। हंगरी की राजधानी को आस्ट्रिया ने जीत लिया किंतु हंगरी वालों ने इसे पुनः जीत लिया।

मार्च, १८४६ में हेम्सबर्ग साम्राज्य का संविधान घोषित हुआ। इसमें सब कुछ विमानता में केन्द्रित था किन्तु विभिन्न जातियों को अपनी प्रांतीय सभाएँ बनाने की छूट दी गई थी। हंगरी निवासियों को अन्य जातियों के समान ही एक स्तर पर माना जाना रुचिकर नहीं हुआ। परिणाम यह हुआ कि हंगरी ने स्वयं को आस्ट्रिया से स्वतन्त्र घोषित कर दिया। अप्रैल १८४६ में वास्तुमें को हंगरी के प्रजातंत्र राज्य के राष्ट्रपति के रूप में चुना गया। यह वास्तुमें की महान् भूल थी। उसे इस प्रकार खुले रूप से आस्ट्रिया की अवहेलना नहीं करनी चाहिए थी। हंगरी को स्वतन्त्रता की घोषणा से ता कुछ प्राप्त नहीं हुआ किंतु एसासे आस्ट्रिया को इस के जार निबोलस प्रथम से हंगरी के विरुद्ध सहायता मांगने का बहाना

मेल गया। परिणामत आस्ट्रिया की सहायता के लिए रूस की लगभग एक लाख पचास हजार सेना आ पहुँची। हंगरी निवासियों की हार हुई। वास्मुथ भाग गया। गार्गी बड़ी शान से लड़ा किन्तु बाद में पकड़ लिया गया। यद्यपि उसकी जान बचा दी गई ता भी एक अन्य सेनापति का मृत्युदण्ड ही दिया गया। हंगरी की जनता पर घोर अत्याचार किए गए और आस्ट्रिया के सेनापति का 'बसाई' (Butcher) का उपनाम दिया गया। यह बात उल्लेखनीय है कि आस्ट्रिया का हंगरी के अल्पसंख्यकों के नेता जेलासिक (Jellacic) से बड़ी सहायता प्राप्त हुई। उसने आस्ट्रिया की सेना की उस समय सहायता की जब वह विभ्रान्तों को पुनः प्राप्त करने के लिए सलाम थी। उसने वास्मुथ द्वारा विभ्रान्तों के विद्रोहियों की सहायता के लिए भेजी गई सेना से युद्ध किया और उसे पराजित किया।



वास्मुथ

उसने आस्ट्रिया द्वारा हंगरी पर किए गए आक्रमण में भी हाथ बँटाया। इस प्रकार हंगरी के नेताओं की आपसी फूट तथा वास्मुथ की सकीण राष्ट्रीयता के कारण आस्ट्रिया ने हंगरी के विद्रोह का दमन करके पुनः हंगरी पर अधिकार जमा लिया।

आस्ट्रिया और इटली (Austria and Italy)—१८५९ में एक और आस्ट्रिया और हंगरी और फ्रांस और प्रुसिया की लड़ाई का घणन आवश्यक है। कैवूर (Cavour) की दूर धारणा थी कि आस्ट्रिया की दायता से उभरे देश का छुटकारा किरी एत विद्रोह की सहायता से ही संभव, जिगकी स य गतित आस्ट्रिया जती ही विनाश हा। इस विचार से जुलाई १८५८ में प्लोम्बिये (Plombieres) के स्थान पर नेपालियन तृतीय के साथ गमभीत किया। दोनों पक्षों में यह समझौता हुआ कि नेपालियन तृतीय पीडमाष्ट की सहायता करके आस्ट्रिया के चगुल से विनिर्गिया और लाम्बार्डों को मुक्त करा देगा तथा इसके बदले उसे नाइम और सवाय के राज्य दे दिए जायेंगे। इस समझौते के अनुसार १८५९ में नेपालियन तृतीय ने आस्ट्रिया के विरुद्ध पीडमाष्ट के साथ रह कर युद्ध किया। आस्ट्रिया मालफेना के युद्ध में पराजित हुआ किन्तु जुलाई १८५९ में नेपालियन तृतीय ने विलार्डेना में आस्ट्रिया में मुनह कर ली और इतकी गतों की ज्यूरिच मधि में पृष्टि हुई। पीडमाष्ट को आस्ट्रिया में लाम्बार्डों मिन गया और नेपालियन ने नाइम और सवाय नहीं माँगा। लोम्बार्डों से आस्ट्रिया की सेनाओं के चले जान के पश्चात्, टुस्कन, परमा

घोर मोहिना की जनता न विद्रोह करके अपने राजाघा को मार भगाया। अन्त में माच, १८६० में टूरिन की संधि के अनुसार प्राप्त ने टुम्बन, परमा घोर माडिना के पीडमोष्ट में सम्मिलित होने को मायता दी और १८५८ के वचन के अनुसार उसे नाइस और सवाय प्राप्त हुए।

१८६६ में इटली ने प्रणिया से मित्रता स्थापित कर ली तथा १८६६ में आस्ट्रिया और प्रणिया में युद्ध में उसने प्रणिया की और से युद्ध किया। यद्यपि इटली की सेना कुस्टोज्जाघा में युद्ध में पराजित हुई तथापि क्योंकि इसके साथी ने आस्ट्रिया के दौत सट्टे कर दिए थे इस कारण उसे भी विनिर्णय प्राप्त हुआ।

१८६७ का समझौता (Ausgleich of 1867)—यह पहले ही लिखा जा चुका है कि १८४६ में रूस और आस्ट्रिया की सम्मिलित शक्ति ने हंगरी की जनता को कुचल दिया था। उसके पदचातु हंगरी के प्रति एक कर्त्रीय तथा तानाशाही सरकार स्थापित की गई। अधिभूत रूप से यह घोषित किया गया कि 'हंगरी का अन्तिम से पूर्व का सविधान विद्रोह के कारण रद्द कर दिया गया है। स्थानीय स्वायत्त शासन समाप्त कर दिया गया तथा समस्त प्रशासनिक तथा न्यायिक पदों की पूर्ति आस्ट्रिया के पदाधिकारियों द्वारा कर दी गई। मेग्यार भाषा के स्थान पर जर्मन भाषा को राज्य भाषा घोषित किया गया तथा हंगरी को आस्ट्रिया का एक दास राष्ट्र बना दिया गया था।

किन्तु इस प्रकार की स्थिति अधिक समय तक नहीं चल सकती थी। १८५६-६० के इटली के स्वातंत्र्य युद्ध से यह स्पष्ट हो गया कि आस्ट्रिया अपने साम्राज्य की अधुणता बनाए रखने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली नहीं है। यह अनुभव किया गया कि जिस देश पर विदेशों से आक्रमण हो रहा है वह देश अपनी प्रजा से युद्ध नहीं कर सकता। परिणामतः आस्ट्रिया के शासकों को हंगरी से समझौता करने पर विवश कर दिया गया।

इस गुत्थी को किस प्रकार सुलझाया जाये—इस प्रश्न पर मतभेद था। जर्मन सुधारवादी केन्द्रस्य और 'एकात्मक' (Unitary) प्रणाली की सरकार के समर्थक थे। किन्तु कुछ अन्य लोग 'संघीय' (Federal) प्रणाली की सरकार के समर्थक थे। इस प्रकार की परिस्थिति में अनेक प्रकार के अवेपण करके दोनों पक्षों के मानने योग्य हल पर पहुँचने का प्रयत्न किया गया था।

१८६० के अक्टूबर अधिकार पत्र द्वारा हंगरी को १८४८ की वस्तुस्थिति पर स्थिर किया गया। पाँच शासन प्राप्त समाप्त कर दिए गए। हंगरी की विधान सभा पुनः स्थापित हुई तथा हंगरी में स्थानीय स्वायत्त शासन पुनः लागू कर दिया गया। हंगरी के लोगों को हाँ राज्य के पदों पर लगाया जाने लगा। निस्संदेह १८६० के अधिकार-पत्र द्वारा हंगरी से समझौते का मांग बन गया था।

किन्तु हंगरी की मेग्यार जाति (Magyars) केवल १८४८ की व्यवस्था तथा परिपाटी की पुनःस्थापना में प्रसन्न नहीं थी। उन्होंने माच १८४८ के कानूनों के लागू करने की माँग की थी। विभिन्न दलों के हठ के कारण फिर भगडा हुआ।

शिमरलिंग (Schmerling) मन्त्रिमण्डल का ध्येय सत्ता को केन्द्रस्थ करना तथा आस्ट्रिया के साम्राज्य की असुण्णता का बनाए रखना था। मन्त्रिमण्डल न फरवरी, १८६१ में एक घोषणा की थी। समूचे आस्ट्रियायी साम्राज्य के लिए एक सन्विधान बनाया गया और हंगरी की स्थिति केवल एक प्रांत जैसी रह गई। हंगरी की विधान सभा न इस घोषणा-पत्र का अस्वीकार कर दिया। हंगरी न विघ्नाना की कन्द्रीय सभा (Reichsrath) में अपने प्रतिनिधि भेजन से इन्कार कर दिया। हंगरी के नेता डीक (Deak) का नारा था १८५८ के कानूनो का मायता दा। हंगरी के जनता का दावा था कि वे बहुत समय से एक भिन्न राष्ट्र रह हैं। आस्ट्रिया से उनका सम्बन्ध केवल एक व्यक्तिगत सम्पक है। आस्ट्रिया का सम्राट तभी हंगरी का राजा बन सकता है जब वह हंगरी के मौलिक कानूनों की रक्षा करने की शपथ सता है तथा जब उसका सेंट स्टाफन के मुकुट को धारण करके अभिषेक हाता है। हंगरी के मौलिक कानून शताब्दियों पुराने थे और १८५८ माच के कानूनो द्वारा इनकी पुष्टि मात्र हुई थी। इन कानूनो में बिना हंगरी की अनुमति के कोई परि बतन नहीं हो सकता था। आस्ट्रिया का सम्राट अपनी निरङ्कुशता के द्वारा उन्हें रद्द नहीं कर सकता था। हंगरी एक प्राचीन ऐतिहासिक देश था जिसकी सुविस्थान सीमाएँ थी जिन्हें आस्ट्रिया का सम्राट अपनी इच्छा द्वारा नहीं बदल सकता था।

यह मामला १८६१ से १८६५ तक उलझा रहा। इस मुलभान के लिए विचार विमर्श चलता रहा था। १८६६ की आस्ट्रिया प्रशिया की लड़ाई के कारण यह वार्ता बन्द हो गई किन्तु १८६७ में पुन चालू हो गई थी। परिणाम यह हुआ कि उनी वष समझौता' हा गया था। कहा जाता है कि १८६६ में आस्ट्रिया की पराजय के पश्चात डीक से पूछा गया कि हंगरी क्या चाहता है? उसने उत्तर दिया कि हंगरी तो कानिग्राटज (Konnigratz) के पहल माँगता था उसके पश्चात उस अधिक नहीं माँगता। डीक के समझौता करने के रूप से फंमला अत्यन्त भीघना से हा गया। पुनश्च आस्ट्रिया प्रशिया के युद्ध के बाद आस्ट्रिया को जमनी में बाहर निकाल दिया गया था। यह आवश्यक हुआ गया था कि वह किन्ही अय देशों में सहायता प्राप्त करे जिससे कि वह प्रशिया के विरुद्ध जमन योग्य हो जाए। यह उमी स्थिति में सम्भव हो सकता था जब हंगरी से मुलह हा जाती। समझौते का आस्ट्रिया के सम्राट फ्रांसिस जोसेफ तथा दोनों देशों की सदो ने भी मायता दी थी। फ्रांसिस जोसेफ का हंगरी के राजा के रूप में अभिषेक किया गया।

१८६७ के समझौते से एक अनोखा राज्य बन गया जो न तो सधीय' और न 'एकात्मक' प्रणाली का था। इससे आस्ट्रिया हंगरी में दाहरी राजगर्ही बन गई। आस्ट्रिया हंगरी दो भिन्न भिन्न पूणत स्वतंत्र तथा एक दूसरे के बराबर के दो राज्य बन गए। इनका राजा तथा राष्ट्र ध्वज एक ही था किन्तु राजा का आस्ट्रिया में सम्राट (Emperor) तथा हंगरी में राजा (King) कहा जाता था। आस्ट्रिया और हंगरी दोनों में अलग अलग ससे मन्त्रिमण्डल तथा सरकारें थीं। दाना राज्य पार्लरिण मामला में पूणत स्वतंत्र थे। किन्तु विदेश, युद्ध, तथा वित्त मन्त्रालय

दोनों के समुक्त थे। दोनों देशों की कोई सामूहिक ससद् नहीं थी किन्तु 'प्रतिनिधि मण्डल प्रणाली' की व्यवस्था थी। प्रत्येक देश की ससद् ६० सन्स्यों का एक प्रतिनिधिमण्डल चुनती थी और ये प्रतिनिधिमण्डल बारी-बारी से कभी विधाना और कभी बुडापेस्ट में मिलते थे। वास्तव में ये प्रतिनिधिमण्डल दोनों ससदों के दो समितियाँ थीं। इनके अधिवेशन अलग अलग होते थे दाना ही भिन्न भिन्न भाषाओं का प्रयोग करते थे तथा अगने विचार लिखित रूप में भेजा करते थे। दोनों प्रतिनिधिमण्डलों में मतभेद की अवस्था में दोनों के समुक्त अधिवेशन की व्यवस्था थी। समुक्त अधिवेशन का नियम बहुमत के आधार पर होता था। अर-व्यवस्था और मुद्रा-व्यवस्था इत्यादि समुक्तमण्डलों के अधिकार में नहीं थीं। इस विषय में दानो राज्यों की ससदें दस-वर्षीय प्रतिनाम द्वारा नियम करती थीं और इस व्यवस्था का यह परिणाम होता था कि प्रत्येक दस वर्ष की अवधि के पश्चात् दोनों राज्यों में पर्याप्त तनाव रहा करता था।

यह बात उल्लेखनीय है कि आस्ट्रिया-हंगरी की दाहरी राजशाही व्यवस्था ही तत्कालीन परिस्थिति का एकमात्र निपटारा था। आस्ट्रिया-सम्राट प्रासिक जोसफ कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन करने को उद्यत नहीं था। यह समझीता प्राचीन परिपाटी के अनुकूल था और इसका उद्देश्य सम्राट की महत्ता को बनाए रखना था। यद्यपि मेग्यार राष्ट्रीयता को अनेक सुविधाएँ दी गई तथापि समझीत से कई लाभ हुए। इससे सैनिक तथा दूतावास की सेवाएँ यथायाग्य बननी रही और इनके आस्ट्रिया का सम्राट अत्यन्त महत्त्व देता था। इस समझीते से इन महत्वपूर्ण मामलों का संचालन सम्राट के हाथों में सुरक्षित रहता था तथा आस्ट्रिया और हंगरी को दृष्टिकोण स्वाधिनारपूर्ण राष्ट्र बनने से रोक्ता था। दोनों देशों के प्रशासन सामंती तथा धनी मध्यमवर्ग के लोग चलाते थे। सम्राट को दोनों देशों के विधेयकों पर अखण्ड निषेधाधिकार प्राप्त था। ससद का समयन सा देन पर भा सम्राट मंत्रिमण्डलों का बनाए रख सकता था।

१८६७ के पश्चात् आस्ट्रिया और हंगरी के बीच मतभेद बढ़ गए। आस्ट्रिया का उत्तरोत्तर औद्योगिक दृष्टि में विकसित किया गया था। इस कारण वहाँ उत्पादन-व्यापार तथा बकों की प्रगति हुई और कृषि सम्बन्धी मामलों पर कम ध्यान दिया जान लगा। दूसरी ओर हंगरी मुख्यतः कृषिप्रधान देश था। अतः वहाँ औद्योगिक उत्थिति पर ध्यान नहीं दिया गया था। दोनों देशों की आर्थिक असमानता के कारण दानो देशों में साम्राज्य के समुक्त खर्चों के विषय में काफी भगडा चलता था। आस्ट्रिया की राजस्व नीति हंगरी की नीति से भिन्न थी। आस्ट्रिया उद्योगों की रक्षा तथा कृषि के उत्पादन में खुले व्यापार का समर्थक था। दूसरी ओर हंगरी कृषि उत्पादन की रक्षा और तयार माल के खुले व्यापार की नीति का समर्थक था। इस विषय में एक समझीता हुआ जिसके द्वारा उद्योग और मेती दोनों को रक्षा प्राप्त हुई थी।

१८६८ के मध्य मध्यमों के कारण दोनों देशों में असंतोष था। हंगरी की

सरकार ने इस बात पर ज़ार दिया कि हंगरी की मना म केवल मग्यार जाति के ही पनात्रिमारी हा तथा उन्हें मग्यार भाषा म ही आदग लिए जागें । आस्ट्रिया न हंगरी की बात नहा मानी आर १८८७ म हंगरी न आस्ट्रिया क माय मैनिक-सधि का पुन नहीं दाहगया । सझाद दोना देगा का सदा का नियत्रण वार्षिक आजाप्तिया आग करता रहा तथा मय आदगा की भाषा जमन ही बनी रही । १९०७ म हंगरी न आस्ट्रिया के माय मैनिक-सधि की जमका मुख्य कारण अन्तराष्ट्रीय बठिन परिस्थिनिया थी ।

१८७८ म एक केन्द्रीय आस्ट्रिया-हंगरी बैंक की स्थापना भी एक मतभेद का परिणाम था । हंगरी अलग राष्ट्रीय बैंक की स्थापना करना चाहता था और व केवल सामूहिक मचालन चाहते थे । १९१७ म यह समझौता हुआ कि दाहरी राजशाही क माय प्रत्येक वदगिक और व्यापारिक सधि पर केवल विदश-मत्री क ही सम्भाभर ननु होंगे अपितु आस्ट्रिया और हंगरी का सरकार क प्रतिनिधिया क भी सम्भाक्षर हगे ।

अनक कमिया के हाने पर भी १८६७ के समझौते स दोना देगा का अनक लाभ हुए थे । दानों को यह अनुभव हुआ कि मयुक्त हान पर ही अतराष्ट्रीय राज-मानि के अक्षर म उनका कुछ प्रभाव बन पायगा । उनका सम्मान बढ गया और उनका आर्थिक स्थिति म भी बहुत उन्नति हुई । मयुक्त आर्थिक व्यवस्था स आस्ट्रिया और हादी के माल के लिए विगाल मण्डा का क्षेत्र चुन गया था । आस्ट्रिया क उद्योग के लिए हंगरी में एक सुविधाजनक मण्डी मिला और हंगरी क केवल मान का इसी प्रकार सुविधाजनक मण्डी प्राप्त हुई । उनकी मयुक्त सनिव गकिन न हैजबग वग का एक सम्मानयुक्त महान गकिन बनाए रखा था । आस्ट्रिया और हंगरी दानों ही म म डरत थ और इसलिए इन दाना न एक विगाल सेना का व्यय भार उठान क लिए एकता कर ली थी ।

१८६७ के समझौते पर टिप्पणी करत हुए वाटसन कहता है "यह मत्य है कि इस समझौते का १७७३ क अधिचार-पत्र (Pragmatic Sanction of 1723) का युक्तियुक्त परिणाम कहा जा सकता है । किन्तु सन्वदवान् नान वाली घटनाधा न यह सिद्ध कर दिया है कि इसका आधार एतिहासिक प्रगति क सिद्धान का अपभा मानसिक ईर्ष्या अधिव है । दानरी राज-व्यवस्था का वास्तविक आधार-तत्त्व दा गकिन गाना जातिया अथान् जमन और मग्यार के बीच धारम्परिक सगठन है । एन दा जातिया न राजशाही का आपम म बाँट दिया और अथ न प्रमग युक्तिगानी जातियों— पाव और श्राट—का स्वायत्त गसन प्रगन करके उन्हें अथ गेप आठ जातिया का अपन अधिचार म रक्त क लिए अपना मानी बना लिया था । स्लाव (Slavs) जाति शहरी राजशाही की अपभा मय प्रगानी की सरकार क अधिक पत्र म था । व आस्ट्रियायी माआग्य क अन्तगत गमसन जातिया का स्वायत्त अधिचार देन क पत्र म थे क्वाकि यह इनका एतिहासिक अधिचार था । बाहीमिया (Bohemia) विगप म म दुनी या क्यौकि वह ममभना था कि उनक गाय अन्ता व्यवहार नहीं हुआ

था। १८६७ के समझौते में हांगरी के वीज पड़े थे। १८६७ के पञ्चान हंगरी में भी परिस्थिति विकट होती जा रही थी। यह स्पष्ट है कि पान न एक पागल व रूप में व्यवहार करके हंगरी में प्रमथार (Non Magyar) लोगों में समझौता करने का प्रयत्न किया था। उसने प्रांट जाति का प्रसिद्ध कारा अधिकांश पत्र (Blank Sheet) देकर कहा था कि वे उस अपनी इच्छानुसार भर लें। क्रागिया (Croatia) का प्रपागन थाय धर्म के माधता में पूरा स्वाधिकार दिया गया तथा क्रोशिय भाषा उनका विधान मण्डल तथा काय मण्डल की भाषा थी। हंगरी का समझ के पाग वेतल विष्णु मामल ही रहे और क्रागिया हंगरी की समझ में चाहीम सम्म्य भजा करता था। क्रोशिया की अग्रराम (Agram) में अपना अलग मन्द भ्रां थी।

१८६८ के जातिया के कानून (Law of Nationalities) द्वारा हंगरी में प्रमथार जातियों की समस्या मुलभाने का प्रयत्न किया गया था। मथार भाषा का हंगरी के विधान मण्डल और काय मण्डल की राज्यभाषा बनाकर शिक्षालया और यायालयों में प्रय भाषाभाषा के प्रयोग करने की छूट दी गई थी। इसमें हंगरी की प्रय जातियों के मुक्तियुक्त राष्ट्रीय दावों की पूर्ति करने का प्रयत्न किया गया था किन्तु यह कानून आरम्भ में ही एक मत विधेयक बना रहा और इस प्रिया मक रूप में का कोई प्रयत्न नहीं किया गया। हंगरी और प्रमथार तरवों को मथार बनाने के लिए काइ भी प्रयत्न अधूरा नहीं रखा गया था। इससे बड़ा असाप फता और इसका परिणाम अतः म हंगरी का छिन भिन हा जाता था।

१८६७ का समझौता आस्ट्रिया हंगरी के सम्मुख समस्याओं का शारतत्रिक हन न था। आस्ट्रिया हंगरी की प्रय अलगअलग जातिया १८६७ में हंगरी का विधान विभागाधिकारों में ईर्ष्या करती थी। १८६७ के पञ्चान् इस समझौता करने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि इस तीय विचार वृत्त गया और अतः आस्ट्रियायी साम्राज्य टुकड़ टुकड़ हा गया।

आस्ट्रिया हंगरी और बल्कान (Austria Hungary and the Balkans) — आस्ट्रिया हंगरी के लिए बल्कान राज्य बड़े महत्त्व के थे। इसका कारण यूरोप में आस्ट्रिया की भौगोलिक स्थिति थी। यह स्थल से घिरा हुआ देश था और इस समुची माग की आवश्यकता थी। डेयूब नदी से आस्ट्रिया का समुद्र का माग प्राप्त हो जाता था किन्तु कुस्तुनतुनिया (Constantinople) शत्रुका के हाथ में था। इस लिए इस माग के लाभ नगण्य थे। ट्रिस्टी (Trieste) आस्ट्रिया की लिवरपूल और पाला इसका पाट समाज्य था। यदि किन्हीं कारणों से ट्रिस्टी इटली के पास चला जाता और इस्ट्रिया और फ्रान्स इटली या साईबेरिया या यूगास्ताविया के हाथ पड जाते तो आस्ट्रिया हंगरी की सामुद्रिक व्यापार की परिस्थिति अत्यन्त भयकर हा जाती। एडियाटिक में उसकी स्थिति अत्यन्त गम्भीर थी। विलाना और त्रिस्टी को प्राप्त करके इटली अत्यन्त सख्तता से आस्ट्रिया का अग्रमहासागर में जाने का माग रोक सकता था। बल्कान में ग्राष्ठीनागो और मथिया दोनों आस्ट्रिया हंगरी के

प्रतिद्वन्दी थे। यद्यपि माण्टेनीग्रो का समुद्री तट केवल ३० मील के धर में था, तथापि उस एड्रियाटिक समुद्र में जाने का मार्ग प्राप्त था। यदि युगास्लाव साम्राज्य के स्वप्न आशिक रूप से भी पूरे हो जाते तो टिस्टी फ्लूम और पाला का महत्त्व न रह पाता। इन तथ्यों के कारण आस्ट्रिया बल्कान में बड़ी दिलचस्पी रखता था। यदि उस काना सागर और एड्रियाटिक समुद्र में भी पहुँचने का मार्ग नहीं मिलता था तो वह एजियन समुद्र (Aegean Sea) से अपना मार्ग निकाल सकता था। इन सब कारणों से आस्ट्रिया और रूस तथा सर्बिया के बीच तनाव हाना कोई आश्चर्यजनक बात नहीं थी।

१८६६ में जर्मनी और इटली से निकाल दिए जाने के पश्चात् आस्ट्रिया हंगरी राज्या में आशिक दिलचस्पी दिखाने लगा था। १८७८ की बर्लिन संधि के अनुसार आस्ट्रिया हंगरी का बामनिया, हरजीगाविना नावी बाजार का मञ्जक (Sanjak) मिला था। नोरी-बाजार सर्बिया और मोण्टेनीग्रो की स्लाव जाति के बीच कब्रन रात का काम ही नहीं करता था अपितु आस्ट्रिया-हंगरी का वार्डार (Vardar) घाटी में आग मानानिना तक आग का निमंत्रण भी देता था।

१९०३ तक सर्बिया का राजवण आस्ट्रिया-हंगरी का सेवक रहा था। किन्तु उस वण राजा एलजबेटर और उमरी रानी की हत्या कर दी गई थी और इनकी मृत्यु के साथ, जिम आत्रिनात्रिक (Obrenovic) वंश का वह वंश था समाप्त हो गया था। अतः एक नया राजवण (Karageorgevic) सत्ता में आया। नवीन वंश उग्र तथा आस्ट्रिया विरारी था। परिणामतः सर्बिया और आस्ट्रिया-हंगरी के बीच तनाव बढ़ा गया। इसका परिणाम १९०५-६ का पिग युद्ध (Pig War) निकला। इसमें सर्बिया की यह धारणा अतः अधिक दृढ़ हो गई कि जब तक उस एड्रियाटिक समुद्र का एजियन समुद्र पर तट प्राप्त नहीं होगा उसके देश की उन्नति असम्भव है। एजियन समुद्र पर मार्ग मिलना असम्भव था किन्तु एड्रियाटिक सागर का मार्ग भी उस बामनिया हरजीगाविना और बालमटिया की कुछ बंदरगाहों में मिले बिना प्राप्त नहीं होता था।

सर्बिया का आगा था कि उसे हरजीगाविना और बामनिया मिल सकता है किन्तु जून १९०८ में आस्ट्रिया-हंगरी ने जिस बर्लिन-संधि के द्वारा बवल प्रगाप्तता का अधिकार लिया गया था उन्हें अपने राज्य में मिला दिया तो सर्बिया का उग्र निराशा हुई। सर्बिया में युद्ध की तयारिया हान लगी किन्तु हम न उस समझाया कि वह जाना न कबे क्योंकि वह आस्ट्रिया और जर्मनी के विरुद्ध युद्ध करने का स्थिति में नहीं है। जर्मनी ने भी अपने माथी आस्ट्रिया का साथ देने का वाचन कर ली थी। सर्बिया ने नावी बाजार में मञ्जक का धातिपूति माँगी किन्तु उस कुछ नहीं दिया गया। इस विपरीत उस नीचा खतना पत्र और यह धारणा करती पत्र कि बामनिया और हरजीगाविना पर उसका कान दावा नहीं है तथा आस्ट्रिया का कान भी अपने राज्य में मिला उन में आपत्ति नहीं। तुर्कों को २० वर्षों में भी सर्बिया-सूडान के लिए गण और उसने आस्ट्रिया द्वारा इनके राज्य में मिताने

को मायता दे दी। आस्ट्रिया ने बल्गारिया का २ करोड़ पौण्ड लिए। इस प्रकार १६०८ ई का बोसनिया समस्या का निपटारा हुआ था। किंतु इस घटना ने सर्बिया व निवामिया व मन में इस बात की बद्ध-स्मृति छोड़ दी कि उन्हें बोसनिया तथा हरजीगाविना को प्राप्त करने व अक्सर संचित कर लिया गया है।

१६१२-१३ व बलकान-युद्ध में सर्बिया ने अपने राज्य और सम्मान में बढ़ि की थी। उसने सलोनिवा और आस्ट्रिया-हंगरी के बीच की रोक का भी शक्तिशाली बनाया था। बलकान युद्ध में विजय प्राप्त करने से सर्बिया का आत्मविश्वास बढ़ गया और वह महत्वाकांक्षी भी बन गया था। सर्बिया की शक्ति की इस महान बढ़ि का आस्ट्रिया सहन नहीं कर सकता था और १६१३ में इस बात की बड़ी आशंका थी कि इन दोनों में युद्ध छिड़ जाएगा। किंतु यह भय टल गया। किंतु २८ जून १६१४ का बासनिया की राजधानी सिराजिवा (Serajevo) में आस्ट्रिया के आर्क ड्यूक फ्रांसिस फर्डिनण्ड की सर्बिया व निवामिया में हत्या कर दी। आस्ट्रिया ने सर्बिया का चुनौती (ultimatum) दी और घोषित अवधि की समाप्ति पर आस्ट्रिया ने सर्बिया व विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। आस्ट्रिया का साथ जर्मनी ने तथा सर्बिया का साथ रूस फ्रांस और ब्रिटेन ने दिया था। आस्ट्रिया हंगरी युद्ध में आस्ट्रिया पराजित हुआ और सेंट जर्मेन तथा ट्रियानोन की संधियों के द्वारा इसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए।

Suggested Readings

Andrews	<i>Historical Development of Modern Europe</i>
Cecil A	<i>Metternich 1933</i>
Drage	<i>Austria Hungary</i>
Fyffe	<i>History of Modern Europe</i>
Flenley R	<i>Maker of the Nineteenth Century Metternich</i>
Herman A	<i>Metternich</i>
Ka singer H A	<i>A World Retored 1957</i>
Auernheimer	<i>Metternich Statesman and Lover 1940</i>
Malleon C B	<i>Life of Prince Metternich</i>
Sandemans	<i>Metternich 1911</i>
Woodward	<i>Three Studies in European Conservatism 1929</i>
Mahaffy	<i>Francis Joseph</i>
Pribram A F	<i>The Secret Treaties of Austria Hungary</i>
Redlich J	<i>Francis Joseph of Austria</i>
Rumbold	<i>Francis Joseph and His Times</i>
Seton Watson	<i>The Future of the Hungarian Nation</i>
Steed H Wickham	<i>The Habsburg Monarchy</i>
Taylor A J P	<i>The Habsburg Monarchy</i>
Thayer W R	<i>Throne Makers</i>

इटली का एकीकरण

(Unification of Italy)

१८१५ की व्यवस्था (Settlement of 1815)—१८१५ की विमाना व्यवस्था से इटली का सगठन नहीं हो सकता था। वास्तव में यह बहुत से शासकों के अधिभूत बहुत से राज्यों में बँटा हुआ था। फ्रैंकफर्ट प्रथम को सिसली और नेपल्स का राज्य पुनः दे दिया गया था। पोप को रोम तथा अन्य प्रदेश तथा हैब्सबर्ग राजवंश को परमा, मोडेना टुस्कन पुनः दे दिए गए थे। लोम्बार्डी और विनिशिया का आस्ट्रियायी साम्राज्य में तथा मारिनीया और जिनात्रा को पीडमोंट राज्य में मिला दिया गया था। इटली को बहुत से स्वतंत्र राज्यों में मिला देने के कारण ही मटरनिक इटली को एक 'भौगोलिक अभिव्यक्ति' कहा करता था। मेज़िनी ने इटली की अवस्था का इन शब्दों में वर्णन किया है, "उनसे उनका देश उनकी स्वतंत्रता और उनका भातभाव छीन लिया गया है। उन लोगों ने जो उनकी प्रवृत्तियों, आवश्यकताओं तथा इच्छाओं से अनभिन्न हैं उनकी रुचि का अग्रभंग करके उन्हें बाध कर एक अत्यंत सक्तीय वस्तु में डाल दिया है। उनकी परिपाटियाँ को आस्ट्रिया के साधारण सैनिकों की दखलेंदगी में नष्ट किया जा रहा है और उनकी आत्मा आज विमाना के राज्य सिंहासन पर बैठने वाले एक व्यक्ति के लोभ के कारण दासता के बंधन में बंदी बना दी गई है।"

१८१५ में भूतपूर्व शासकों को पुनः पदासीन करने के पश्चात् उन देशों में गावर्जनिक् रूप से प्रतित्रियावादी अथवा आचरहीन प्रशासन स्थापित हुए। फ्रैंकफर्ट ने प्राचीन घृणास्पद पुलिस व्यवस्था समाचारपत्रों पर प्रतिबन्ध तथा धर्मचारियों की सत्ता का पुनः स्थापन किया। उसने सुधारवादियों को दण्ड दिया राजशाही के समयको का सम्मानित किया तथा सिसली का स्वाधिकारपूर्ण सविधान भंग करके देशवासियों की भावनाओं का निराकरण किया। पोप के राज्यों में धार्मिक दण्ड व्यवस्था (Inquisition and Index) तथा अन्य मध्यकालीन पंच शासन का छाडम्बर पुनः लागू कर दिया था। भ्रष्टाचार से पूरा तथा निवृष्ट शासन व्यवस्था में जनता में अत्यन्त असंतोष फैला। देश में सामाजिक अराजकता फैल गई थी। मोडेना में अत्याचारी सरकार थी। लोम्बार्डी और विनिशिया में जनता के राजनीतिक जीवन पर जान-बूझ कर आस्ट्रिया की विचारधारा और परिपाटी घोपने का प्रयत्न किया गया। सूक्ष्म रूप से यह कहा जा सकता है कि इटली में अत्यधिक शासकीयता की भावना थी और देश के सम्पूर्ण क्षेत्रों पर आस्ट्रिया का पूर्ण अधिकार था।

नेपोलियन के शासन^१ १ इटली में एक नया जीवन फूँक दिया था तथा प्रथम युद्ध क्षत्रा में कठिनता से प्राप्त की गई एकाता का और भाग्य बनाने का प्राप्ति



दिया गया था। मयाकि पुन राजप्राप्ति के बाद राजाशा ने प्रतिनिधावादी नीति का अनुमरण किया तथा वामिधा में प्रजातन्त्राधता और राष्ट्रीयता की भावना का बड़ी तेजी

१ इटली पर नेपोलियन के राज्य के कारण उत्तरी प्रदेश पर बहुत अच्छा शासन था। नेपल्स का राज्य मुश्किल अधिकार में था और उमने अपने शासन में सारे इटली को एक करने की पादमपूण योजना बना। १८०१६ में उमने अपना योजना को क्रियात्मक रूप दे दिया और इटली के सभ का घोषणा का। वह पराजित हुआ और उसे गाली मार दी गई किन्तु जिम शासन हो उमने बनाया उनका मरु नहीं हुए। मुश्किल को आज भी इटली की स्वतंत्रता और एकता का अवयव भावुनिक अग्रदूत माना जाता है।

मार्कहम (Markham) के मतानुसार, 'इटली में नेपोलियन के शासन में भले ही आर्थिक

स प्रगति हुई थी। दशभक्ता म दश की अपमानजनक अवस्था का कारण जाग्रति हुई और प्रजातंत्र का समर्थन ने सिसली दश के निवासी होने के नाते नहीं अपितु इटली का निवासी हान के नाते दमन और अत्याचार का विरोध करने के लिए जाग्रति पदा गी थी। अश्व के कोन-कोने में गुप्त जातिकारी सस्थाओं का निर्माण हुआ जिनमें कारवानारा (Carbonari) नाम की सस्था सबसे प्रमुख थी। इसके अपने रहस्यमय और गुप्त प्रतीक तथा आचार व्यवहार थे। किंतु इसका गुप्त तथा दूर राजनीतिक ध्येय दश में स विदेशियों को निवालकर सावधानिक स्वतंत्रता प्राप्त करना था। इनमें सार वग, यथा सामन्त सनिक पदाधिकारी किसान, धमाधिकारी इत्यादि सभी मध्यम थे। उच्च तथा बुजुर्ग वर्गों में सुधारवाद तथा प्रजातंत्रवाद के विचार अत्यन्त गम्भीरता से जड़ पकड़ चुके थे। कारवानारी की सदस्यता अटली में बाहर भी थी तथा काले, लाल और नीले रंग का इसका तिरंगा ध्वज जाति का ध्वज बन गया था।

नेपल्स का विद्रोह (Revolt in Naples) (१८२०)—गुप्त सभाओं से प्रेरणा पाकर १८२० में विद्रोह आरम्भ हुआ जो तीस वर्ष तक भी समाप्त नहीं हुआ था। प्रथम विद्रोह नेपल्स में आरम्भ हुआ था। १८१५ में सिंहासन पर पुन आसीन हान पर फर्डिनेण्ड प्रथम ने पूण भक्ति के साथ यह शपथ ली थी कि वह सिसली का सुधारवादी सविधान की रक्षा और सम्मान करेगा किंतु १८१६ में उसने इन सविधान का भंग कर दिया जिससे यह इटली के अन्य राज्या के लिए आदेश न बन जाए। १८२० की स्पन क्रान्ति के कारण स्पन के बोर्बन वंशजों के अधिकृत इटली के राज्या में बड़ी उत्तेजना फैली। नेपल्स के निवासियों को सना का समर्थन प्राप्त था, उन्होंने स्पेन की तरह के सविधान की मांग की। फर्डिनेण्ड प्रथम ने बड़ी उत्तरता में विद्रोहियों की माँगें मान ली थी। "उसने परमेश्वर का शपथवादा किया कि उसने उस यह शपथ प्रदान किया कि वह अपनी प्रजा को यह शपथ दे सके।" उसने बड़ी सन्चार्य के साथ सब सुविधाएँ देने की प्रतिज्ञा की थी। दरबार और मंत्रियों की उपस्थिति में वह वेदी की ओर बढ़ा और यह शपथ ली—'हे सवन परमात्मा! आप असीम ज्ञान द्वारा भूत और भविष्यत् के द्रष्टा हैं। यदि मैं असत्य

और अनियमित प्रशासनिक एकता रहा हो किन्तु नेपोलियन द्वारा 'संहिता' (code) तथा सामन्त व कारण इटली पर पक्क आक्रमण के बाद से ही रिसोरजिमेंटो (Risorgimento) का बुद्धि में प्रगति होन लगी थी। नेपोलियन के नेतृत्व में इटली की सेनाएँ अपनी टुकड़ियों में टट कर लड़ती थी और इनके लगभग २० हजार सैनिक मार गए। इनके पदाधिकारी भोचों से नवान राष्ट्रीयता की प्रेरणा प्राप्त करके लौटव थे। अलपायरी (Alfieri) और फोस्कोलो (Foscolo) जैसे रिसोरजि मेंटो के अग्रदूत लेखक नेपोलियन के विरुद्ध भावना रखते थे क्योंकि उसने उनकी राष्ट्रीय एकता की आशाएँ विफल कर दी थीं। १८११ के परचातु मुरट इटली का और अधिक लगा क्योंकि वे लोग फ्रांसीसी पदाधिकारियों का अधिकता के कारण बड़े दुःखी थे। नेपोलियन ने मुरट को अपदस्थ कर देने की धमकी दी थी। १८१५ में '१०० दिन' की अवधि में मुरट ने आस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध का घोषणा कर दी और सारे इटली निवासियों का राष्ट्रीय एकता और स्वतन्त्रता के नाम पर युद्ध करने के लिए आवाहन किया था।"

कहें अथवा इस गौगंध को ताड़ों का मैन कभी विचार भी किया हो ता घाप प्रपन दण्ड के बख्त म मरा सिर इसी समय ताड़ दें।' वाग्नाह ने बार्दरल को घुमा और यह शपथ उसके पुत्रा ने भी दोहराई और नवीन सविधान की सावजनिक रूप से घोषणा हुई।

किन्तु फर्डिनण्ड प्रथम ने ट्राण्पू म एकत्रित राजाघ्रा को एक गुप्त सन्धि भेजा कि उमकी इच्छा प्रपना देश छोडने की है तथा प्रास्ट्रिया की सेना की सहायता से पूर्णाधिकार प्राप्त करने की है। दिसम्बर, १८२० म वह लाईबख (Laibach) गया था। जम ही वह प्रास्ट्रिया की सीमा की सुरक्षा म पहुँचा उसने प्रास्ट्रिया के मघ्राट स अपनी पूण सत्ता प्राप्त करने के लिए सहायता की याचना की। परिणामन प्रास्ट्रिया की सनाएँ नेपल्स म भेजी गई और नेपल्स की सेनाएँ भाग गई। सविधान पाड लिया गया और विद्राही नताघ्रा को बंदी बना लिया गया या मार डाला गया।

पीडमोण्ट का विद्रोह (Revolt in Piedmont) (१८२१)—त्रातिकारी घ्राणालन बवल नेपल्स तक ही सीमित नहीं रहा था। उस समय मारे इटली म गुप्त सभाघ्रा का जाल फटा हुआ था। पीडमोण्ड म विक्टर इमेयुल (Victor Emmanuel) की सरकार दुबल और प्रतिश्रियावादी थी और यहाँ माच १८२१ म विद्रोह हुआ। किन्तु सिबाय राजवश के प्रति कोई हिंसा नहीं की गई। जनता के मारे थ हमारा हृदय राजा के प्रति पूणत स्वामि भक्त है किन्तु हम उसे दुराचारी सलाहकारो से बचाना चाहत हैं। प्रास्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध दग म एक सविधान यही दा इच्छाएँ हम प्रजाजनो की हैं। जब प्रास्ट्रिया की सेनाएँ नेपल्स की और प्रयाण कर रही थी पीडमाण्ट के त्रान्धिकारियो ने प्रास्ट्रिया की सना पर पीछे से धावा करने की याजना बनाई। दुभाग्य से योजना बुरी तरह श्रियावित हुई और अमफल हुई। विक्टर इमेयुल ने अपना भाई चार्ल्स फेलिक्म के लिए राज्य का परि त्याग कर लिया। कुछ लाग सिहामन चार्ल्स अल्बट का दिलाना चाहते थे। इन मतभेद के कारण यह घ्राणोन बुरी तरह समाप्त हुआ।

लोम्बार्डी (Lombardy)—लोम्बार्डी पर प्रास्ट्रिया की दामता पुन पूरी शक्ति से जड दी गई थी। विद्राही नेताघ्रो को प्रास्ट्रिया से जाया गया जहाँ उन्हें प्रपना माग जावन बंदीशूट म बिताना पडा। युवको को प्रास्ट्रिया की सेनाघ्रा मे भर्ती कर दिया गया था। लोम्बार्डी की जेलें राजनीतिक कदियो से ठसाठस भरी थी। सब सन्धजनक ब्यक्तियो पर बडी निगरानी रखी जाती थी। अपराध स्वीकार करान के लिए अत्याचार किय जात थे।

फ्रान्स की जुलाई १८३० की त्राति का इटली की राजनीति पर भी प्रभाव पडा था। पोप के राज्यो पर इसका बहुत ही बुरा प्रभाव पडा था। पोप के राज्यो से घ्राणालन पाडमोण्ट, परमा और मोडना म फल गया था। किन्तु सब स्थाना पर विद्रोह असफल रहा था। पोप गिगोरी सोलहवें ने प्रास्ट्रिया से सहायता मांगी थी। मेटरनिक ने प्रास्ट्रिया की सेनाएँ इटली म भेजी और पोप के राज्यो पर 'सफेक कोट (White Coats) वालो न अधिकार कर लिया था। व्यवस्था स्थापित हुई और

पाप को पुनः पदस्थ कर दिया गया था। फ्रांसिस चतुर्थ को मादना के सिंहासन पर तथा मेरी लुई को परमा के सिंहासन पर पुनः आसीन कर दिया गया था। किन्तु जस ही आस्ट्रिया की सेनाएँ इटली में निक्ली नए विद्राह फूट पड़े और सनाभ्रा को पुनः लौटना पड़ा। इस बार (१८३० में) फ्रांस न भी अनकोना (Ancona) पर अधिकार करने के लिए सेनाएं भेजी और ६ वर्षों तक आस्ट्रिया तथा फ्रांस की सेनाएँ पाप के राज्या में एक दूसरे के सामने टटी रही थी।

यह विद्राह इसलिए अग्रसर रह गया कि प्रयत्न में एकता और व्यवस्था नहीं थी। जनता अभी विद्राह के लिए उत्सुक नहीं थी। एकता केवल कुछ नेताओं की ही पुकार थी, सबसाधारण की भावना नहीं थी। एक बात अर्थात् प्रतिनियामवादी इटली के राज्या की निबन्धता स्पष्ट थी। उनकी रक्षा केवल आस्ट्रिया के हस्तक्षेप के द्वारा ही हो पाई थी।

रिसोरजिमेन्टो (Risorgimento)—तत्कालीन परिस्थिति के विरुद्ध इटली में अनेक विद्राह हुए और हजारों व्यक्तिगत रूप से बलिदान दिए गए अथवा दंडनिवाला द दिया गया था। इन घटनाओं से विचार और भावनाओं का एक गम्भीर आन्दोलन आरम्भ हुआ, जो वास्तव में इटली के इतिहास में इतना महत्वपूर्ण हो गया कि उसे 'द्वितीय रिसोरजिमेन्टो (Il Risorgimento) अर्थात् पुनरावृत्ति या पुनर्जीवन के नाम से पुकारा जाना लगा था।

यह आन्दोलन मूल रूप से एक मताचार का आन्दोलन था। इसका आधार 'स्वतंत्र और गणतन्त्र इटली का आदर्श था। इस माहित्यिक आशाओं में सक्ति की प्रेरणा प्राप्त होती थी। यह इटली की जनता को उनके महान् अतीत की स्मृति दिलाना था। गजनीतिक दृष्टि में यह पुनरावृत्ति दशभक्ति और राष्ट्रीयता से परिपूर्ण थी। यह आस्ट्रिया के शासन के विरुद्ध विरोध तथा एकता की मांग थी। यह मुद्रास्वामी तथा प्रजातन्त्रवादी था। देश में ममदीय प्रणाली की मन्तव्य समाचार पत्रों की स्वतन्त्रता के अधिकारों में कमी तथा गणतन्त्र की स्थापना की मांग थी। यह इटली के मध्यमवर्ग की आर्थिक उन्नति करने की महत्वाकांक्षा भी थी। इसका मन्व्य विनाश और शिष्टा की प्रगति से था। इतना विनाश आन्दोलन एक मात्र अवलंबनीय में याजित नहीं हो सकता था। मन्व्य जैसे विद्वानों के विचार और प्रयत्न भी इस आन्दोलन में निहित थे।

मेज़िनी (१८०५-७२) (Mazzini)—ग्युसेप मेज़िनी (Giuseppe Mazzini) जिनीवा के एक डाक्टर और शरीर विज्ञान के आचार्य का पुत्र था। बाल्यकाल से ही वह इटली के राष्ट्रीय युद्ध में बड़ा प्रभावित था। जब उसकी आयु मुद्रिकल से १० वर्ष की थी तब १८१५ में जिनीवा पोडोमाटो के अधिकार में कर दिया गया था। इस काल में लोपो में बड़ा अग्रणी था। १८२० में मेज़िनी ने इटली में फ्रांस के विद्राह और जर्मनी के माहित्यिक का माहित्य पदा था। उसके प्रिय माहित्यकारों में डण्टे (Dante) नेकमीयन बायर्न, गेटे शिल्लर (Schiller) स्वाट और ह्यूगो इत्यादि प्रमुख थे। छोटी आयु से ही उस पर स्वदेश की दुःख का बड़ा गहरा

था। उसका शब्द 'ममता' सहायिका व शीघ्र शीघ्र सह्य पहल भर जावन म म गम्भीर शीघ्र विचार म द्वा द्वा रहता था शीघ्र एता प्रतीत जाता था कि मैं महमा ही अत्यन्त बूढ़ा हो गया हूँ। मैं बचपन क भावने म आकर स्वय ममने एग क लिए शान बनन क लिए मवता वान वस्त्र पहनन सगा था।

उसका भुवाव साहित्यिक जीवना की मार था। हजारों एनिगमिक शीघ्र साहित्यिक सपन मेरी मानगिक मीक्षा के आगे नाचा करने प। किन्तु उमन एग के



मेजिनी

करना है? हम युवका का इस प्रकार विचारमग्न होना पसन्द नहीं जब तक कि हम यह मानूम न हो कि व किम त्रिपय पर विचार करते हैं।

मेजिनी के विगल अनुभव न एक नई सस्था— युवा इटली (Young Italy) की नीव डालने म सहायता की। राष्ट्रीयता के आन्दोलन के केन्द्र के रूप म यह सस्था कार्वोनारी स भी अधिक प्रसिद्ध हुई थी। इसका नारा था परमेश्वर शीघ्र जनता (God and the People)। इसका प्रत्यक सदस्य को शपथ लनी पत्ती थी कि, मैं स्वतन्त्र शीघ्र गणतन्त्रात्मक इटली की स्थापना के लिए पूणरूप स अपना सबस्व बलिदान कर दूंगा।

मेजिनी का विश्वास था कि यदि इटली के युवको को ममन ध्यय म दृढ विश्वास हो तो कवल म ही लोग इटली का सगठन कर सकते थे। उसके गन्ने म युवका का क्रांतिकारियो का नतत्व सौंप देना चाहिए। हम इस युवको के हृदय मे निहित गप्ट शक्ति का अनुमान भा नहीं है शीघ्र हमे इनकी शीघ्रस्वी वाणी के जन

लिए युद्ध करन क लिए हम जीवन का परिचाग कर दिया। इसको वह ममना प्रथम शीघ्र महान त्याग मानता था। वह कार्वोनारी का मन्स्य इसलिये नह। बना कि वह इसके तराका मे सहमत था कि इसलिये कि यह शीघ्र कुछ नही ता एक क्रांतिकारी सस्था ता थी ही। उस १८३० म बन्नी बनाकर मवाना (Sivona) के विल म डाल दिया गया किन्तु उस ६ महीन बाद ही मुक्त कर दिया गया था। जिनाम्रा के राज्यपाल ने मेजिनी के पिता स कहा आपका पुत्र प्रतिभाशाली है किन्तु वह रात्रि के समय विचारो म द्वा द्वा ममेता धूमने का अत्यन्त गौकीन है। आखिर इस आयु म उमे कौन सी समस्या पर विचार

साधारण पर प्रभाव का अनुमान भी नहीं है। कुछ दिन युवका म दशभक्ति व नवीन युवक धनक धमाकाय प्राप्त होंगे। मेजिनी ने इटली के लिए बलिदान करने वाला के नाम पर देश को जाग्रत किया। उसने इटली की जनता का बताया कि उनकी वाई नागरिकता, बाई दश और बाई राष्ट्रीय ध्वज नहीं है। युवक इटली का नारा 'परमेश्वर जनता और इटली' था। इसकी काय प्रणाली शिक्षा, साहित्यिक प्रचार और विद्रोह थी।

मेजिनी का विश्वास था कि युवक इटली पढ्यनकारिया का सगठन मात्र नहीं था। इसका मुख्य उद्देश्य इटली की जनता म आमात्याग और दश के लिए बलिदान करने की भावना का जाग्रत करना था।

मेजिनी इटली की मुक्ति और सगठन व यम मानता था। वह इसक लिए जान और मरने के लिए तयार था। वह एक निर्भीक नेता था। वह एक सूक्ष्म भाषा, कवि और बुद्धि-बुद्धि व्यक्ति था। उसका लेखन गला हृदयग्राही थी। उसका उसाह अदम्य था। मेजिनी के न्न मद्र गुणों मे इटली व सगठन म बनी महायता मिली।

मेजिनी की धारणा थी कि आस्ट्रिया को जितनी गीघ्रता से इटली से निकाल दिया जाए उतना ही शुभ होगा। यह आस्ट्रिया का निवान न्न म बिदगी महायता प्राप्त करने के पथ म नहा था। वह कहा करता था अपना उद्धार चाहने वाले 'इटली व दो बगड निवामियो का अपनी मुक्ति के लिए गति की नहीं अपितु विश्वास को आवश्यकता है।'

मेजिनी की इटली को सब से बड़ी न्न इस वास्तविकता म है कि जिग समय इटली के निवामी इटली के एकीकरण और मुक्ति को एक अमम्भत्र स्वप्न मानने व उम समय उमन रह एक त्रियामत्र आत्मा बना दिया था। वह इस ध्यय के प्रति जनता म आस्था उत्पन्न करने म सफल हुआ था। वह अपनी ही तरह सवा और बलिदान का भावना म प्रेरित बहून म लागे का इटली व एकाकरण के लिए जाग्रत करके सगठित करने म सफल हुआ था।

१८४६ म जय 'पापम नरम (Pius IX) इटली म पाप बना उम समय लागे म बढा उल्साह था। वह मुधारवादी नीति का अनुकरण करता था और यह आगा की जानी थी कि व देग की राष्ट्रीय और गणतन्त्रात्मक शक्तिया का बना बन जाणगा। जहाँ-तहाँ महान पाप की जय हो (Viva Pio Nono) के नारे सुनाई पड़ने थे। मटरनिव घबरा गया। उसने कहा हम एक मुधारवादी पाप व अतिरिक्त मव चाजा के लिए तयार हैं। अब पाप भी मुधारवादी है। कहा नहीं जा सकता कि भविष्य में क्या होगा।' आस्ट्रिया की सेनाओं ने फेरारा (Ferrara) पर परिवार कर लिया। पीडमाष्ट व चार्ल्स अल्बर्ट ने न्न अपमान गमभा और इटले न विरोध प्रकट किया था किन्तु पाप का उल्साह गौत्र ही ठण्डा पड गया और उगने प्राग कु भी करने से इनकार कर लिया। किन्तु एमन विपरीत इटली व प्रत्येक राज्य म एक नवीन भावना दीग पडती थी और दशभक्ति की भावना सावदधिक थी।

इटली में जनताधारण की भावना का ब्राउनिंग (Browning) ने ठीक प्रकार से चित्रण किया है। एक कविता में उगन ल'न्न स्थित एक इटली निवासी के मुख से इस प्रकार कहनाया है —

'However if I pleased to spend,
Real wishes on myself—say three—
I know at least what one should be
I would grasp Metternich until
I felt his red wet throat distil
In blood through these two hands

१८४८-४९ (1848-49)—१८४८ का वर्ष अनेक समस्याओं के साथ आरम्भ हुआ। नेपल्स और सिसली में सुधारों के लिए जनता का आन्दोलन प्रगति पर था। पोप के राज्यो दुस्वने और पीडमोण्ट के प्रजातंत्रवादी दल इस प्रकार के सविधान की माँग कर रहे थे जिगने राजमत्ता जनता के हाथों में आ जाए। लोम्बार्डी और विनिशिया में भी आस्ट्रिया का शासन अमहनीय हो रहा था। १८४८-४९ के सारे आन्दोलन राष्ट्रीयता और प्रजातंत्रवाद के समर्थक थे।

जनवरी १८४८ में पालेरमो (Palermo) में विद्रोह हुआ और सुपारो सिसली के स्वशासन और १८१२ के सविधान का पुनः लागू करने की माँग की गई थी। छोटे विरोध के पश्चात् इन माँगों को मान लिया गया। नेपल्स में भी प्रदग्नन हुआ और वहाँ भी नया सविधान लागू कर दिया गया। परिणामतः पाप के राज्यो में पीडमोण्ट और दुस्वने में भी सविधान के लिए सावजनिक विद्रोह हुआ। मार्च १८४८ में पीडमोण्ट और दुस्वने में सावधानिक सरकारों की स्थापना कर दी गई थी।

मार्च में ही सूचना प्राप्त हुई कि विमाना और बुडापेस्ट में विद्रोह हुआ है और मेटरनिक ल'दन भाग गया है। मिलान में विद्रोह हुआ राडेजकी के नतृत्व में आस्ट्रिया की सेनाएँ पीछे हट गई और राज्यपाल देग से भाग गया। वेनिस में प्रजातंत्र की घोषणा कर दी गई। माडेना और परमा के राजा भी भाग गए। देग में आस्ट्रिया से युद्ध करके उसके शासन को समाप्त करने की माँग की जाने लगी। बेचूर ने अपील की सार्डानिया के राजा का सर्वोत्तम समय आ पहुँचा है। इस समय सरकार देश और राजा के लिए एकमात्र माँग केवल युद्ध ही है। चार्ल्स अल्वट ने आस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। दुस्वने नेपल्स और पोप के राज्यास भी सेनाएँ युद्ध के लिए आईं किन्तु कुछ समय पश्चात् ये सब पीछे हट गईं। जुलाई १८४८ में वस्टाज्जा की लड़ाई में चार्ल्स अल्वट की पराजय हुई। लोम्बार्डी और विनिशिया पुनः आस्ट्रिया के अधिकार में आ गए। वस्टोज्जा के युद्ध का परिणाम यह हुआ कि नरम ल'न के अनुयायियों की निंदा हुई और मजिनी के नतृत्व में उग्रदल का प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। देग में राजाओं का युद्ध समाप्त हुआ और जनता का युद्ध आरम्भ हुआ।

रोम में गणतंत्र की घोषणा हुई और मेज़िनी को इमका प्रमुख बना दिया गया था। पाप की सत्ता समाप्त हो गई। पोप नपल्स भाग गया और वहाँ जाकर यूरोप की गतिविधियों में सहायता माँगी। मार्च, १८४६ में चार्ल्स अल्बर्ट ने फिर आस्ट्रिया से लड़ाई लड़ी किन्तु नौबारा के युद्ध में हार गया। उसने राज्य छोड़ दिया। उसके पुत्र इमेन्युएल द्वितीय ने आस्ट्रिया से संधि कर ली। नौबारा के पदचोत इटली में प्रतिप्रिया का चक्र चला। नेपल्स ने सिसली पर पुनः अधिकार जमा लिया। टुस्कन के राजा को भी पुनः पदासीन किया गया। फ्रांस के राष्ट्रपति लुई नेपोलियन ने रोम में एक सैनिक अभियान भेजा। गरीबारों का पतन हुआ और पाप को पुनः पदस्थ कर दिया गया। अगस्त, १८४८ में आस्ट्रिया की सेना ने वेनिम पर पुनः अधिकार कर लिया। यद्यपि १८४८-४९ का संघर्ष असफल रहा तथापि इसमें लाभ हुआ था। उन लोगों की जो गणतंत्र के अथवा पाप के अधिकृत राज्य के समर्थक थे निंदा की गई और पीडमोंट की राजशाही के अन्तर्गत इटली के एकीकरण के लिए मार्ग प्रशस्त हो गया था। इस संघर्ष में बिना प्रान्तीयता का विचार किए इटली के सभी प्रदेशों के लोगों ने भाग लिया था। इटली की जनता का स्वामिमान जागृत हुआ और इस संघर्ष में इटली का अपनी रक्षा के लिए एक राष्ट्र और प्रतिनिधित्व करने के लिए एक राजवत् प्राप्त हुआ।

बेचूर के प्रतिद्वन्द्व होने में पूरा इटली के विद्रोहों के असफल होने के कई कारण थे। आस्ट्रिया का स्थिति इटली में बहुत शक्तिशाली थी। बिना विदेशों की सहायता के उसे इटली से निवासना असम्भव था। किन्तु इटली के दशमवत्ता का नारा था कि वे बिना विदेशी सहायता के ही स्वतंत्रता और संगठन प्राप्त करने में सफल हो जायेंगे। यह असम्भव था। यह मत्य है कि कार्बोनारी और युवा इटली जैसी संस्थाओं के कारण इटली में राष्ट्रीयता की भावना प्रगति कर रही थी किन्तु अभी भी लोगों में स्वायत्त और प्रांतीयता की भावना प्रबल थी। बहुत बड़े भाग में इटली के हित की दृष्टि से विचार करते थे। इटली के सामंतों और राजाओं में संगठन के लिए एकता नहीं थी। वास्तव में पीडमोंट को छोड़कर सारे ही इसका विरोधी थे। लाम्बार्डों और जिनिगिया के साथ आस्ट्रिया एकीकरण का विरोधी था। परमा मादना और टुस्कन के आस्ट्रिया के वंशज राजा भी इसके विरोधी थे। पोप इटली के एकीकरण का सबसे बड़ा शत्रु था क्योंकि इटली के एकीकरण से उसका राज्य, राजधानी, आमदनी और प्रतिष्ठा समाप्त हो जाती थी। इटली को विशुद्ध बनाए रखने के प्रयत्न में फ्रांस और अन्य देश उसके सहायक थे। इटली के देश भक्तों के ध्येय भी भिन्न भिन्न थे। कुछ प्रजातंत्र के, कुछ पोप के नेतृत्व के और कुछ पीडमोंट के समर्थक थे।

एकता के अभाव के कारण ध्येय के लिए संघर्ष दुबल हो गया था। दश-भक्त अपनी-अपनी विचारधारा का प्रचार करते थे और उनकी विभाजित शक्तियाँ अधिक शक्ति नहीं कर सकती थी। जिस समय बेचूर प्रकाश में आया उस समय इस प्रकार की परिस्थिति थी। किन्तु यह बात ध्यान में रखने योग्य है कि विद्रोहों की असफलता से बेचूर का कार्य सरल हो गया। प्रजातंत्र और पोप के नेतृत्व का

समझ करके जानो के विरुद्ध प्रचार किया गया था। इंग्लिश सारे स्ट्री की जनता पीडमोण्ट के राजवत व घनगत इटली व गगठन के लिए भयप कर गवना थी। पुनश्च विद्वाना नी पुनरावृत्ति म पीडमाण्ड इटली व जगता का नेता मिद्ध हा सुवा था।

केवूर (Cavour) (१८१०-६१)—इटली के गगठन व लिए केवूर क वाय का उत्तलेल भी प्रावश्यक है। यह गगभवत घोर नूतनीतिग था। उमन मजिनी द्वारा भोए गए देगभविन व चीज की सेती की रक्षा की। १८४० म वह पीडमाण्ट मन्त्रिमण्डल का सदस्य बना घोर १८४२ म वह वहाँ का प्रधानमन्त्री बना घोर १८६१ तक मृत्यु-पयत वह इस पद पर आसीन रहा था। केवूरसे पूव जनता का नारा इटली अपनी रक्षा स्वय करेगा (Italia Fara da se) था। इटली की जनता की धारणा थी कि व अपना उदार बिना बाहरी सहायता के स्वय ही कर सकेंगे। किन्तु १८४८-४९ की असफलताओं से मिद्ध हा गया कि बिना विदेशी सहायता के आस्ट्रिया को देश से निवालना असम्भव है। केवूर न अपना काय इस धारणा से आरम्भ किया कि बिना विदेशी सहायता के आस्ट्रिया को इटली से नहीं निवाला जा सकता था। इसी कारण उमने त्रीमिया युद्ध म भाग लिया घोर फ्रांस व पोपलियन तृतीय की सहायता भी प्राप्त की।

पुनश्च केवूर की यह दृष्ट धारणा थी कि यदि पीडमोण्ट को इटली का नेता बनना है तो उसे इसके योग्य बनना चाहिए। पीडमोण्ड को राजनीतिक घोर आर्थिक

उन्नति करनी चाहिए। इसे एक आदेश राज्य बनना चाहिए जिमम कि इटली के भय राय इस अपना नेता स्वा कार कर। यदि इस प्रकार प्रगति हा जाए ता इटली व देगभवत पीडमाण्ट का नेतृत्व स्वीकार कर लग। केवूर व गगता म पीडमोण्ट स्ट्री की मारी जाणत गवित का पत्र कर सरेगा घोर जिस काय का असस आगा वा जा रहा है उम उन्च उद्देश्य का य पूरा करन म समथ हो जाएगा। पाडमाण्ट का आर्थिक उन्नति व लिए उमन कृषि घोर उद्योग का प्रात्मान लिया था। स्वतंत्र व्यापार की नाति का अनुसरण करन उमने व्यापार को उन्नति करा। उमने अपने राय म नए नहर घोर रंग बनवाइ। उसने



केवूर

आय-व्यय के लेख (Budget) का पुनगठन किया घोर राजस्व म उद्धि करके अधिक धन प्राप्त किया। उसने स्वतंत्र राय म स्वतंत्र णच का नाति का अनुसरण

विया और राजतानि न धम का प्रेषन निवाल दिया। मेनापति ला-मारमोरा (General La Marmora) के नेतृत्व न मना का निर्माण विया गया।

श्रीमिया में हस्तक्षेप (Intervention in Crimea)—अपन दंग का तीव्र करने के पश्चात् अबूर एक मित्र की खातिर में था जो श्रीमिया के युद्ध में प्राप्त हुआ। १८५५ में समन इंग्लैंड फ्रांस और तुर्की के फल में श्रीरूस के विरुद्ध श्रीमिया में युद्ध में भाग लिया। यह समय है कि पीडमाट का पूत्र व प्रान से कोई सम्बन्ध नहीं था किन्तु केवल पीडमाट की प्रतिष्ठा बगान के अवसर की प्रतीक्षा में था। यह नीति का एक कुशल दाव था। जब श्रीमिया में इटली की मनाजा न कीचट बहुत हान की गिरायन की ता अबूर न निव कर भेजा इस कीचट न ही इटली का निमाण होगा। रूस पर विजय प्राप्त करने के पश्चात् १८५६ में पेरिस सम्मेलन हुआ था। इस सम्मेलन में अबूर न इटली में आस्ट्रिया के दमन की धार निदा का और इटली के प्रश्न का एक म्यानीय प्रान के स्तर से उठा कर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का प्रश्न बना लिया था। केवल न अपन प्रान पर युरोप विनियन नपातियन ननीय की महानुभूति प्राप्त की थी।

नेपोलियन और इटली (Napoleon and Italy)—केवल इटली के लिए नेपोलियन ननीय का समयन प्राप्त करने पर कटिबद्ध था। नेपोलियन तृतीय स्वयं वाग्धानारी का मन्मथ था। वह इटली के सपप के प्रति महानुभूति रखता था और प्रान के सुधारवादियों का प्रात्साहन देता था। किन्तु फ्रांस के क्रांतिक इटली की महायता के फल में नहीं थे क्योंकि इसमें राम व पोप की मत्ता समाप्त हो जान का डर था। नेपोलियन तृतीय को इस बात का भी भय था कि यदि इटली में आस्ट्रिया अतिक्रमितागामी सिद्ध हुआ तो वह स्वयं पराजित ही भवता था। प्रान व इटली में युद्ध करने समय प्रिया द्वारा फ्रांस पर आक्रमण किए जाने का डर था। नेपोलियन तृतीय का मकसद करना स्वाभाविक था। इटली के एक दंग भक्ति औरमिनी न नेपोलियन ननीय की हत्या करने का प्रयत्न किया था। औरमिनी न बन्धुगृह में निगा 'जब तक इटली स्वतंत्र नहीं होता उस समय तक आप सम्राट तथा सारे यूरोप का गानि एक मृगमरीचिका मात्र है। आप मर देग का सुवन बरा दें मेरे दंग व डाई कराह निरामियों का धुम इच्छाएँ भविष्य में आप के साथ रहूँगी। इटली की जय हो का नारा औरमिनी के हाथों पर मृत्यु के समय भी था। इनका परिणाम यह हुआ कि केवल और नेपोलियन तृतीय प्लोम्बियस नामक स्थान पर मित्र और यह नियम हुआ कि नेपोलियन लाम्बार्डो और विनिशिया से आस्ट्रिया को निकालने में पाटमाट की महायता बगना। नेपोलियन और राम का अद्यता रखा जाएगा। यह इटली का एक राज्य बना लिया जाएगा। नेपोलियन का नाइन और सत्राय न सिद्ध जाएँगे। नेपोलियन पीडमाट की महायता आस्ट्रिया द्वारा आक्रमण करने की स्थिति में ही करेगा।

सामन (Saman) के मतानुसार यह मानना कि नेपोलियन तृतीय न कल्पनमय इटली के सामन का हाथ में निगा कदाकि इटली के राष्ट्रीय सपप के

प्रति उमका भावुकतापूर्ण लगाव था अत्यंत दृष्टिपूर्ण बात है। उसने जा काय किया इस आशय से किया कि इससे इटली में फ्रांस का प्रभाव बढ़ जाएगा। इटली के लिए कुछ करन पर इटली भी फ्रांस के लिए कुछ करेगा और यह स्वयं वानापाट दल के लिए कुछ कर सकेगा। तिसम्बर का यह पुरुष भ्रमन युग की उपज थी जो जबल स्वतंत्र और पुनर्जीवित इटली के स्वप्न का ही द्रष्टा नह। था और उसकी निजा कायप्रणाली जिसके द्वारा स्वतंत्र इटली का निर्माण होना था, अधिक चाय की दृष्टि से नहीं देखी जाती थी।

भ्रमन निणय को श्रियान्वित करते समय वह नेपोलियन की परिपाटी और नेपोलियन गाथा के अनुसार चल रहा था। सेण्ट हैलिना द्वीप से उसे आशय मिला था कि 'प्रथम राजा जो जनता के हित का समर्थन करेगा वह यूरोपका निर्विवाद नेता बनेगा। इटली को आस्ट्रिया के चंगुल से छुड़ाने का प्रयत्न उसके द्वारा स्वयंमव 'राष्ट्रों का नेता की पदवी धारण करने के अनुकूल ही था। उसकी धारणा थी कि इस काय का करन से वह स्वयं का तथा फ्रांस को उस युग की सबसे बलशाली शक्ति का अगुआ बना रहा था। वह स्वयं और फ्रांस इतिहास के साथ सहयोग करके यूरोप के भाग्यविधाता बन सकते थे। इस प्रकार का सत्ताचारपूर्ण नतत्व एक अत्यंत सूक्ष्म तथा अन्तर्राष्ट्रीय कूटनाति का कुशल दाव था।

प्लोम्बियस के समझौते तथा वास्तविक युद्ध आरम्भ होने में ६ महीने का समय लगा और इस अवधि में बेवूर को युद्ध के लिए बहाना ढूँढना तथा युद्ध के लिए तयारियाँ बनानी थी। इससे पहले कि नेपोलियन अपना विचार बदलता वह युद्ध आरम्भ करने के लिए दृढ़प्रतिबन्ध था। बहुत से सैनिक प्रदर्शन और परेडें हुए। आस्ट्रिया पर समाचार पत्रों द्वारा आक्रमण किए गए तथा आस्ट्रिया का युद्ध करने के लिए उकसाने के लिए सारे साधनों का प्रयोग किया गया। पीडमोण्ट के राजा ने विधान सभा में कहा हम इटली के विभिन्न भागों से आती हुई दुख की पुकारों के प्रति सोए हुए नहीं हैं। नेपोलियन तृतीय ने भी घोषणा की कि उसके आस्ट्रिया के साथ उलने अन्धे सम्बन्ध नहीं है नितने कि पहले थे। आस्ट्रिया ने पीडमोण्ट को चुनौती दी कि वह युद्ध की तयारियाँ बन्द कर दे। बेवूर ने उसे टुकरा दिया। और आस्ट्रिया ने १८५६ में युद्ध छेड़ दिया। इस अवसर पर बेवूर ने कहा हमने बाजी लगाई है और इतिहास का निर्माण किया है। नेपोलियन तृतीय पीडमोण्ट की सहायता को आया और इटली वालों ने उम अपना मुक्ति दाता रक्षक और सरक्षक माना। उसने इटली वालों से कहा उस सौभाग्यपूर्ण आए हुए अवसर का उपयोग करो। यदि तुम इस योग्य सिद्ध हुए तो समझो कि तुम्हारे स्वतंत्रता के स्वप्न पूरे होने जा रहे हैं। अपने देश के इस महान् काय के लिए सगठित हो जाओ। आस्ट्रिया का मजठ्टा सालफरनो के युद्ध में पराजय भित्री और उहे लोम्बार्डों से निवाल दिया गया। कि तु नेपोलियन का विचार बन्द गया और उसने सहमा युद्ध बन्द कर दिया। उसने मार्लानिया में सलाह किये बिना ही आस्ट्रिया से १८५६ में विलाफ्राका की संधि कर ली। आस्ट्रिया ने पीडमोण्ट को नाम्बार्डों का देना स्वीकार किया किन्तु विनिगिया नहीं किया था। परमा भावना और दुस्वने के राजाघातों को

पुनः पदासीन कर दिया गया। पाप क नृत्व में इटली का एक सघ बनाने का निणय किया गया। ज्यूरिच की संधि द्वारा 'युद्ध रोका समझौते की घातें पक्की कर दी गई थी।

टेलर के मत में '१८५६ का युद्ध आधुनिक इतिहास में अद्वितीय था, यही ऐसा युद्ध था जो आशिक रूप में पारम्परिक आगवाग्रा से नहीं उपजा था। आक्रमणकारी अभियानों तक में निराश का एक तत्त्व हाता है। नेपोलियन प्रथम को यह सोचन की कुछ गुञ्जायग थी कि ग्लेगोर्णर प्रथम उम पर चढ़ाई करने की तैयारी कर रहा है जबकि उसने १८१२ में रूस पर आक्रमण किया था। जर्मन लोगों का भी अपने लिए 'घिरा हुआ सोचन की कुछ गुञ्जायग थी जबकि उन्होंने बीसवीं शताब्दी में प्रथम व द्वितीय महायुद्ध किए। प्रिस्माक भी ऐसा स्वीकरणाय व सहमतीय दावा कर सकता था कि वह सबसे पहले आस्ट्रिया व फ्रान्स के विरुद्ध अपनी तैयारी कर रहा था। १८५६ में तो फ्रान्स और न ही सार्डीनिया को आस्ट्रिया की धार से कोई आशका हान का कारण हो सकता था और व भी तब तक उस पर धावा नहीं बोल सकते थे जब तक कि वह उन्हें अग्रसर न देता। भय के कारण नहीं बल्कि दूरग्रे पक्ष को युद्ध में जान पर बाध्य करने के लिए दोनों तरफ में सनाप चल पड़े। १८५६ में केवल यही वास्तविक आगवा थी कि आस्ट्रिया में आंतरिक शान्ति न हो जाय और यह भी बहुत अलियावितपूर्ण था।"

(The Struggle for Mastery in Europe pp 114 12)

केवूर (Cavour) ने नपोलियन ततीय के वाय का समर्थन नहीं किया और इमेपुन द्वितीय ने ज्यूरिच संधि का विरोध करने के लिए कहा। किन्तु इमेपुन ने ऐसा करने का इकार कर दिया क्योंकि वह समझता था कि इटली वाले अपनी इच्छानुसार नपोलियन को विवश नहीं कर सकते। केवूर ने पदत्याग कर दिया किन्तु धाड़े समय पदचाल उमन पुनः कायभार मेंभाला। जब आस्ट्रिया ने लोम्बार्ड गाली किया तब परमा भाडेना टुम्बन और राजगना की जनता ने सार्डीनिया के राज्य में मिलन का निणय किया। नेपोलियन ने इस स्वीकार पर किया और उसे नाइस और सवाय द लिए गए थे। केवूर ने भा राजनीतिक लाभ के कारण इस स्वीकार किया। यह बात उमके द्रम वाक्य में स्पष्ट है, 'अब हम दोनों अपराधी हैं।

सिसली और नेपल्स (Sicily and Naples)—केवूर (Cavour) के सन्धि में 'मुझे उत्तर की ओर में यूटनीति द्वारा इटली का निर्माण करने से राक दिया गया किन्तु धय में दक्षिण में शान्ति द्वारा इसका निर्माण करना।' धयन गावधानी और दक्षता में उमने इटली का गगटित कराने इतिहास में अत्यन्त आश्चर्यजनक योजना आरम्भ की। मिगनी की जनता ने विद्रोह करके गरावाल्डी में सजायना की माचा की। गरीवाल्डी ने अपने प्रतिद्वन्द्वी हज़ारों जान कुतों दल के साथ सिसली की धार प्रस्थान किया। आंतरिक रूप से केवूर का सहायता के साथिया के सन्तुष्टि थी किन्तु प्रकट रूप में यह उसे आशपकन स्वयंभू भावना व्यक्त भागता था। इसीलिए उसने बटार सिसली का पानन किया। उमने दुष्क रूप में उसे छन

प्रकार की सहायता दी और शक्तियाँ द्वारा विरोध में सैनिक अभियान भेजने के सम्बन्ध में चुनौती का मुकाबला करने के लिए तयारियाँ कर ली थीं। ब्रिटिश सरकार ने भी सहानुभूति का रख दिया था। गरीबाल्डी अपने काय में सफल हुआ और उसने सारा सिसली विजय कर लिया। यह काय पूरा करके वह मुख्य द्वीप में आया और नपल्स के राजा का भी पराजित किया। तब गरीबाल्डी ने रोष जान का निषेध किया था। यदि उसने ऐसा किया होता तो फ्रांस में युद्ध छिड़ जान की सम्भावना थी क्योंकि वहाँ फ्रांस को सनाण (१८४६ स) पड़ाव डाल पड़ी था। केवूर ने उस समय घोषणा की इटली की विदगिया से तथा बुर व्यक्तिता और मिद्वानता से रक्षा करनी चाहिए। उनमें विक्रम इमयुल के नतृत्व में गरीबाल्डी का राबने के लिए भेजा था। इमयुल गरीबाल्डी से टक्कर लेने के लिए बड़ी शीघ्रता से आगे बढ़ा और गरीबाल्डी ने उसे सारी सत्ता सौंप दी। नपल्स और गिगली पीडमाण्ट राज्य में मिला दिए गए। राम और विनिगिया को छान कर सारा इटली इमयुल द्वितीय के अधिकार में आ गया था। इन दो राज्या को प्रमण १८६० और १८६१ के पीडमाण्ट राज्य में मिला लिया गया था। १८६१ में इटली की प्रथम समर का अभियान हुआ और इसके बाद शीघ्र ही केवूर की मृत्यु हो गई। इससे कोई भी शंका नहीं कर सकता कि एक राष्ट्र के रूप में इटली का निर्माता केवूर ही था। फिलिप्स के शब्दों में एक राष्ट्र के रूप में इटली केवूर का जीवन भर का काम तथा उसकी दी हुई विरासत है। अर्थनेता दण को मुक्त कराने का प्रयत्न करते रहें किन्तु किम प्रकार इसे एक सम्भव काय बनाया जाए इस संबंध में वही जानता था। उनमें इस समय का सब प्रकार की फूट डालने वाली प्रवृत्तियों से अज्ञानता रखा इस बातपनिव तथावचित उच्च सिद्धान्तों से दूर रखा इसे दुस्साहसी पडयना में पवित्र रखा विद्रोहिया और प्रतिश्रिया के मध्य सीधा पथ निर्देशन किया और अपने दण का एक सुयवस्थित साथ शक्ति राष्ट्रीय ध्वज सरकार और विदगी मित्र प्रदान किया। यह सत्य है कि केवूर की बुद्धिमत्ता ने मेजिनी की प्रेरणादायी और विचारों का शक्ति प्रदान की। उसी ने ही गरीबाल्डी की तलवार को राष्ट्रीय गन्ध बनाया और पन्ध्रवाट माहरी लोगो की राजनीतिक उछल-बूद को राष्ट्र के शासनपत्र का मुख्य साधन बना दिया। एक अर्थ लेखक ने लिखा है यदि यूरोप की सहानुभूति विश्वास और सहायता प्राप्त करने के लिए केवूर नहीं होता यदि यह नहीं माना जाता कि सब विपत्तियों में उसकी बुद्धि स्थिर रहती है तो मेजिनी के परतन केवल कुछ विद्राह मान ही बन कर रह जाते और गरीबाल्डी की आश्रय जनक धीरता से सारहीन दणभक्ति के इतिहास में एक अध्याय और जुड़ जाता। कहा जाता है कि केवूर ने मृत्यु पाया पर पड़ हुए कहा था इटली का निर्माण हो गया, अब सब सुरक्षित है। केवूर इटली वालों की इटली का निर्माण कर चुका था।'

लाइ पामस्टो के शब्दों में, केवूर ने अपना नाम एक शिक्षा देने के लिए, एक गाथा का सुन्दर बनाने के लिए छोड़ा है। शिक्षा यह है कि एक प्रतिभाशाली

असीम परिश्रम वाला, जबलन्त दशभक्ति वाला व्यक्ति अगम्य कठिनाइया को पार कर सकता है और अपने देश को महान् और मानव की कल्पना से भी अधिक लाभ पहुँचा सकता है। जिस गाथा से उसकी स्मृति जुड़ी थी वह अत्यन्त अदभुत तथा मसार क इतिहास में अत्यन्त मनोरञ्जक है। एक ऐसी जाति जो मृतप्राय थी, मुग्धा-वस्था की तट्टा का लोड कर तथा एक नवीन और यशस्वी नव शक्ति से श्रोत प्रोत् जीवन प्राप्त कर चुकी थी।”

मेरीबाल्डी (Garibaldi) (१८०७-८२) — इसका जन्म १८०७ में नाइस में हुआ था। वह मेजिनी से दो वर्ष छोटा और केवूर से तीन वर्ष बड़ा था। इसके माता पिता इसे एक पादरी मात्र बनाना चाहते थे किन्तु इसकी रुचि समुद्री जीवन में थी। बहुत समय तक यह एक नाविक का दुस्साहसी जीवन व्यतीत करना रहा।

वह मेजिनी की 'युवा इटली का सदस्य बना और १८३४ में मेजिनी द्वारा सवाय में विद्रोह कराने पर उसमें भाग लिया और उसे मृत्युदण्ड दिया गया था। किसी प्रकार यह दक्षिणी अमेरिका चला गया और वहाँ १४ वर्ष दश से निष्वासित रहा। वहाँ पर भी वह अपनी इटली-सना (Italian Legion) के साथ दक्षिणी अमेरिका के युद्ध में भाग लेता रहा था।

जब ही उसने १८४८ के विद्रोह का समाचार सुना वह इटली की ओर गीघ्रता से चला यद्यपि उस समय तक भी उसका मृत्युदण्ड रद्द नहीं किया गया था। उसके आने पर आस्ट्रिया के विरुद्ध लड़ने के लिए हजारों व्यक्ति माण्टीविडो का गरदार (Hero of Montevideo) के भडे के नीचे इकट्ठे हो गए। विद्रोह के अग्रपत्र होने पर वह १८४९ में रोम के प्रजातन्त्र की रक्षा के लिए लड़ने के लिए चला गया। जब रोम का पतन होने वाला था तब वह चार हजार सैनिकों के साथ बच निकला, किन्तु आस्ट्रिया की सना उसका पीछा करती रही और उसने उसे नहीं भी चर्च में नहीं बैठना दिया। वनों और पर्वतों में उसका इस प्रकार पीछा किया गया मानो वह कोई शिवारी का शिवार हा। उसके सारे साथी मार गये और उसकी धीर पत्नी अनिता (Anita) भी युद्ध में काम आई। अन्ततः मेरीबाल्डी किसी प्रकार अमेरिका भाग जाने में सफल हो गया और फिर देश निकाल की अवस्था में रहने लगा। किन्तु उसकी वीरता गान, प्रेम से भरे हुए वारनामा ने इटली के निवासियों को प्रेरणा और उम्माह इत्यादि भावानुए प्रदान कीं।

१८४४ में वह पुनः इटली पहुँचा और कैपरोरा (Caprera) द्वीप में रहने लगा। १८४९ में वह फिर मदान में आया और स्वयमेवका की एक बड़ी सना आस्ट्रिया के विरुद्ध लड़ने के लिए इकट्ठी की। देश के एक कोन से दूसरे कोने में रहने वाले सैनिकों का वह आदान था और हजारों व्यक्ति आत्म मूँद कर उसका अनुसरण करने को तैयार थे।

१८६० में गिमला में विद्रोह हुआ था। वह लगभग ११५० आदीमर्गों के साथ मानी-जहाजा में मवार होकर चर्च पड़ा। इन ताल कुर्ती सैनिकों ने मेरीबाल्डी

को द्वीप या स्वामी बना दिया। इस काय में उगकी सहायता स्वानाय विनाटिया ने भी की थी। सिसली से गरीवाल्डो मुख्य द्वीप की ओर आया और उसने नपल्स के राजा को पराजित किया और लगभग पाँच महीने के समय में गरीवाल्डो ने लग



गरीवाल्डो

भग ११ बराड को जनमख्या के राज्यों को जात लिया था।

गरीवाल्डो ने रोम पर आक्रमण करने की योजना बनाई किन्तु उम के बुरे और विपन्न इमयुन ने ऐसा नहीं करने दिया क्योंकि इसमें फ्रांस में युद्ध हो जाने की सम्भावना थी। वहाँ १८४६ में फ्रांस का सना डेरे डाल पड़ी थी।

जब के बुरे ने फ्रांस को आस्ट्रिया के विरुद्ध सहायता देने के मूल्य के रूप में नाइस देना स्वीकार किया तो गरीवाल्डो रो पड़ा क्योंकि इस द्वीप का फ्रांस को चल जाने का परिणाम यह हुआ कि वह इटली के लिए एक विदेशी नागरिक बन गया था।

विनिजिया (Venetia) (१८६६)—१८६६ में इटली ने प्रणिया से विनिजिया की सुरक्षा के हेतु माँच की थी। जब प्रणिया और आस्ट्रिया में युद्ध हुआ इटली की सेना भी युद्ध क्षेत्र में उतर आई। आस्ट्रिया की सेना ने इन्हें हरा दिया था किन्तु इनके युद्ध में ध्यान से विस्माक का काय हलक पड़ गया क्योंकि आस्ट्रिया को दो मोर्चों पर लड़ना पड़ता था। परिणाम यह हुआ कि आस्ट्रिया साडोवा (Sadowa) के युद्ध में हार गया और इसमें गस्त्र डाल दिए थे। विस्माक ने पराजित आस्ट्रिया में कुछ नहीं मांगा और केवल विनिजिया का इटली को वापिस लौटा देने को कहा था। विनिजिया पुन इटली का बन गया था।

रोम (Rome) (१८७०)—१८७० में जब नेपोलियन का रोम से अपनी सेनाएँ, जा वहाँ १८४६ से स्थित थी हटा लेने का विवश कर दिया गया उस समय

इटली का एकीकरण पूरा हुआ था। इसका कारण यह था कि नेपालियन को आस्ट्रिया से युद्ध लड़ना था और इसलिए मारी सनाथा का इकट्ठा करना आवश्यक हो गया था।

इस प्रकार दशमकों के प्रयत्न, विदगी सहायता और परिस्थितियाँ रु प्रभाव से १८७० में जाकर इटली एकाता प्राप्त कर सका था।

टेलर के विचार में, इटली के एकीकरण न वह काम पूरा कर दिया जो ग्रीसिया के युद्ध ने गुरु किया था— यूरोपीय व्यवस्था का नाश। मटरनिक की प्रणाली रुस की गारटी पर निर्भर थी, यदि उसे एक बार वापस ले लिया जाय तो प्रणाली को हटाया जा सकता था। नेपालियन ने मोक्षा कि उसकी अपनी नई योजना उसका स्थान ग्रहण कर रही है। इसमें १८५६ व १८६१ की घटनाओं का गन्त समझना निहित था। निस्सन्देह इटली फ्रांस की सेनाओं व ब्रिटन की नतिक स्वीकृति व प्रति बहुत ऋणी था, किन्तु इन्हें दा तन्त्रा की सहायता के बिना फलदायक नहीं बनाया जा सकता था—पेरिस की संधि के विरुद्ध रुसी विराय और जर्मनी में आस्ट्रियन आधिपत्य के प्रति प्रणिया की अप्रमत्तता। यदि रुस ने ऐसी नीति का आचरण किया होता तो आस्ट्रिया के प्रति कम गन्तुतापूर्ण होती यदि १८५६ में प्रणिया में रहाया में सप्राप्त करता तो इटली की रचना न हो पाती। १८६१ के बाद भी रुस का यही सत्य था कि १८५६ के समझौते का उखाड़ फेंका जाय प्रणिया भी आधिपत्य की जगह जर्मन में समानता चाहता था। दाना ही आस्ट्रिया व विरुद्ध काय करत रह यह कोई ऐसी गारण्टी नहीं थी कि वह फ्रांस के पक्ष क लिए काम करते रहें। और वस्तुतः यूरोप का नवतृत्व, जिसे नेपालियन ने इटली क मामले से प्राप्त किया था, पालण्ड के प्रश्न के ऊपर दा वर्षों क भांतर ही जाता रहा।'

(The Struggle for Mastery in Europe, pp 124-25)

Suggested Readings

Flecken R.	<i>Makers of Nineteenth Century Europe</i>
Garibaldi	<i>Autobiography</i>
Holland	<i>Builders of United Italy</i>
Johnston R. M.	<i>The Napoleon Empire in Southern Italy and the Rise of the Secret Societies 1904</i>
King Bolton	<i>Mazzini</i>
King	<i>History of Italian Unity</i>
Marrist	<i>Makers of Modern Italy</i>
Martinengo-Cesaresco	<i>The Liberation of Italy 1815-70</i>
Mowter	<i>Immortal Italy</i>
Murdock	<i>Reconstruction of Modern Europe</i>
Orsi P.	<i>Cavour</i>
Orsi P.	<i>Modern Italy</i>
Smith B. Mack	<i>Cavour and Garibaldi</i>
Taylor A. J. P.	<i>The Italian Problem in the European Diplomacy (1847-49) 1934</i>

Thayer	<i>Life and Times of Cavour</i>
Thayer	<i>Dawn of Italian Independence</i>
Trevelyan G M	<i>Garibaldi and the Making of Italy</i>
Trevelyan G M	<i>Garibaldi and the Thousand</i>
Trevelyan	<i>Manin and the Venetian Revolution of 1848</i>
Trevelyan (Mrs)	<i>A Short History of Italy</i>
Zimmern	<i>Italy of the Italians</i>

जर्मनी का एकीकरण

(Unification of Germany)

जर्मनी के जन्मकाल और सुधारवादियों के विचार से जर्मनी के विषय में विधाना सम्मेलन में हुआ समझौता अत्यंत निराशाजनक था। उनकी आशा थी कि एक एकीकृत जर्मनी का निर्माण होगा किन्तु इसके विपरीत ३६ राज्यों का एक सघ बना दिया गया। आस्ट्रिया की अध्यक्षता में एक मघीय सभ (Federal Diet) की व्यवस्था की गई थी। प्रत्येक राज्य का शासक अपने क्षेत्र में सर्वाधिकार सम्पन्न था इसलिए स्वायत्तरक्षा की भावना से प्रेरित होकर उसका जर्मनी के एकीकरण तथा उन सब सुधारवादी आंदोलनों का जिससे एकीकरण हो सकता था, विरोध करना स्वाभाविक था। आस्ट्रिया के अतिरिक्त सघीय सभ में अन्य अजन्म तत्व भी थे। हैनोवर (Hanover) जो इंग्लैंड के अधिकार में था, उसे जर्मनी में मिला कर प्रतिनिधित्व दिया गया था। होलेस्टीन की डची (Duchy) को जो डेन्मार्क के राजा के अधिकार में थी जर्मन सघ में मिला कर अन्य राज्यों की तरह उसे भी प्रतिनिधित्व दिया गया। इन विदेशी तत्वों से जर्मनी के एकीकरण के बाध में सहयोग देने की आशा नहीं की जा सकती थी। सघ की सभ को सदस्य राज्यों पर कोई अधिकार नहीं था। आस्ट्रिया जर्मनी का भाग्य निर्णायक था। १८१५ के सघ-कानून द्वारा व्यवस्था की गई कि प्रत्येक राज्य में उत्तरदायित्व-पूर्ण सविधान बनाया जाय, किन्तु इस कभी भी पूरी सीमा पर क्रियान्वित नहीं किया गया। १८१५ के बाद समूचे जर्मनी में प्रतिश्रिया आरम्भ हो गई थी। फ्रेड्रिक विलियम तृतीय (१७६७-१८४०) प्रशिया के राजा द्वारा जर्मनी के देशभक्ता और सुधारवादियों के नेतृत्व की आशा थी किन्तु वह भी मंदरनिक के दबाव में आ गया था। परिणामतः उसने देश में राष्ट्रवाद और सुधारवाद की समयक शक्तियों का दमन करना आरम्भ कर दिया था।

जर्मनी में इस प्रकार का परिस्थितियाँ थीं उस समय इस देश के विश्वविद्यालयों ने देश का नेतृत्व संभाला। जेना (Jena) जर्मनी के सुधारवाद का केन्द्र बन गया और विश्वविद्यालयों के विचारियों ने जो आन्दोलन चलाया वह दिन प्रतिदिन बढ़ता ही गया। गम्भीरता, समय और जर्मनी की एकता के उच्च आदर्शों का जनता के सम्मुख रखा गया। सिबेल (Sybel) के मतानुसार, 'युद्ध से लौटने वाले वीरों ने विश्वविद्यालयों को राष्ट्रीय भ्रमण की भावना से भर दिया। सारे विश्वविद्यालयों की समितियाँ (Burschenschaften) बना कर उन्होंने जर्मनी के विभिन्न युवकों में एकता भाव और स्वतंत्रता की भावनाएँ भर दीं। इन समितियों

के उद्देश्य मुख्यतः सदातिक्रम के थे। उनका उद्देश्य तत्कालीन व्यवस्था को उलट देना नहीं प्रकृत नई पीढ़ी का देशभक्ति की भावना में प्रतिष्ठित करना था। तन्निष्ठ क उत्थान और देशभक्ति की भावना द्वारा वे भविष्य का निर्माण करके राष्ट्रीय एकता का लक्ष्य प्राप्त करना चाहते थे। वास्तव में उनके भविष्य के स्वप्न साकारणों को ही और कार्य-परिणत ही मानने वाला नहीं थे। तथ्य रूप में कुछ युवा मता उगाह उभरतता की सीमा तक पहुँच गया था और व लोच प्राप्तनायिका में युवतारा पान के लिए शस्त्र उठाने के लिए तयार थे। किन्तु इन उगाही व्यक्तियों के देश में फकी हुई समितियों में अधिक अनुगामी नहीं थे जो इनकी प्रणाली का अनुसरण करते।

(Foundation of the German Empire Vol I p 67)

विद्यार्थियों के सङ्गठन जेना सफल और दो वर्ष में उठाने १६ विद्यालयों पर नियंत्रण कर लिया। १८१७ में विद्यार्थियों ने प्राटस्टण्ट मुचारा की सत्ताही तथा लिपजिग युद्ध की जयती मनान का निर्णय किया। वाटिंग में शय स्थाना पर



मनाए जाने वाले उत्सव के कार्यक्रम के अतिरिक्त सैनिकों के चिह्न नेपोलियन की संहिता की एक प्रति कोटजन्नु की पुस्तक की एक प्रति और अन्य कागज पत्र भी जलाए गए। मटरनिक द्वारा इस उत्सव को बड़ा महत्व दिया गया और इस जमनी की जनता में क्रांतिकारी घमटोप का प्रतीक माना गया। १८१८ में त्रय ऐक्स ला वेपल में सम्मेलन हुआ उसने गामका को भविष्य-निमित्त भय के प्रति सचेत किया। १८१७ के पश्चात जो घटनाएँ हुई उनसे मटरनिक के हाथ और भी मजबूत हो गए। जमनी में समय-समय पर हत्याएँ होती रही। मार्च १८१९ में कोटजन्नु की जिसे रुम का गुप्तचर माना जाता था काल सण्ड (Karl Sand) ने हत्या कर

दी। मेटर्निक न इसमें पूरा लाभ उठाना चाहता। प्रुसिया के राजा की अनुमति से उसने १८१६ में वॉस्तेनबर्ग में जर्मनी के मुख्य राज्यों के मंत्रियों का एक सम्मेलन बुलाया। कुछ प्रस्ताव स्वीकार किए गए जिन्हें सध ससद ने भी स्वीकार कर लिया था।

कार्ल्सबाद आज्ञापिका (Carlsbad Decrees)—कार्ल्सबाद आज्ञापिका के अनुसार प्रत्येक राज्य के शासक का एक विशेष प्रतिनिधि प्रत्येक विश्वविद्यालय के लिए नियुक्त किया गया। इस प्रतिनिधि का विश्वविद्यालय के नगर में रहना था और उसे शासक की आज्ञानुसार बहुत से अधिकारों का प्रयोग करना था। इसकी वजह से इस बात की जांच करना था कि कानून और अनुशासन का ठीक प्रकार पालन हो रहा है अथवा नहीं। उसे ध्यानपूर्वक यह भी रखना था कि विश्वविद्यालयों के शिक्षक अपने व्याख्यानों में किस भावना को प्रेरित करते हैं। त्रिद्वन्द्व और अग्न्याग्नि भक्ति की अवस्था में उसे शासक को सूचना देनी पड़ती थी। शासक का कर्तव्य था कि विद्यार्थियों पर अपने प्रभाव का अनुचित प्रयोग करने वाले तथा विद्यार्थियों में वर्तमान सरकारी व्यवस्था तथा सामाजिक नियमों का उल्लंघन करने की भावना को प्रेरित करने वाले शिक्षकों का विश्वविद्यालयों में से तथा अन्य शिक्षा संस्थाओं में से निकाल दे। निकाल दिए गए शिक्षकों को अन्य विश्वविद्यालयों तथा शिक्षा संस्थाओं में से निकाल दे। गुप्त तथा अनियमित संस्थाओं के विरुद्ध कानून बनाना से लगाए जाएं। एक विश्वविद्यालय में पढ़ाते हुए विद्यार्थियों का अन्य विश्वविद्यालयों में भर्ती न करें। २० छोटे हुए पृष्ठों से अधिक का कोई भी दैनिक पत्र अथवा लेख राज्य अधिकारियों की अनुमति के बिना प्रकाशित न किया जाय। मध की मसल का मध के अथवा मध में शामिल व्यक्तियों का भंग करने वाले लेखों को स्वामिदारों से दमन करने का अधिकार दिया गया। यदि मध मसल की आवाज से कोई समाचार-पत्रिका बंद करा दी जाए तो इस पत्र का सम्पादन किंवा अन्य पत्र का पाँच वर्षों तक सम्पादन नहीं कर सकता था। साल सदस्यों के एक जाँच आयोग की नियुक्ति की व्यवस्था थी। इसका कार्य प्रांतिकारी पद्धतों तथा बाद विवाद करने वाली समितियों तथा उनका उद्गम और विकास का पता लगाना था। यह उन समितियों का भी पता लगाती थी जो वर्तमान विधान आन्तरिक शांति तथा भिन्न भिन्न राज्यों के विरुद्ध कार्य कर रही थी। इस आयोग का वर्तमान पद्धतों का पता लगाने का कार्य सौंपा गया। केंद्रीय जाँच आयोग को समय समय पर जाँच के परिणामों की सूचना सध ससद को देनी पड़ती थी।

यह सब कहा जाता है कि कार्ल्सबाद की आज्ञापिका के कारण आस्ट्रिया का सम्राट एक राक्षसविमान पुष्टिम व्यवस्था का स्वामी बन गया। मेटर्निक और भी आगे बढ़ता किन्तु कुछ राज्यों के विरोध ने उसके उत्साह को ठण्डा कर दिया था। बुर्गोवर्ग के शासक ने चुनौती स्वीकार की और अपनी प्रजा का और भी सुविधाएँ और अधिकार प्रदान किए और अपने आपका एक विशुद्ध जर्मन सध का नेता बना कर आस्ट्रिया और प्रुसिया के मुकाबले के लिए तैयार हो गया। परिणामस्वरूप १८२४ के विधान सम्मेलन में सम्मिलित हुआ। छात्रों के राज्यों की स्वतंत्रता को मायूसता दी गई। १८२४ में कार्ल्सबाद आज्ञापिका का स्थायी रूप दे दिया गया।

जोलवरीन (Zollverein)—युद्ध प्रणिया ने पराग रूप में जर्मनी के एकांतरण में गह्रायता की। यहाँ जालवरीन अथवा चुगी-समिति का उत्पन्न किया जाए। १८१८ में पहल प्रणिया के प्रत्येक जिले की अपनी चुगी व्यवस्था की और अन्त में प्रणिया में ६७ चुगी क्षेत्र थे। इन कारण रूप के व्यापार और एकरता में बड़ी बाधा थी और प्रणिया प्रिटेन से प्रतियोगिता नहीं कर सकता था। बहुत से चुगीघर हानि के कारण बंद होना तम्बक-व्यापार हाता था। १८१८ में चुगी सुधार कानून बनाया गया। इसमें अनुमान रूप में आने वाले बच्चे माल पर चुगी हटा दी गई। तयार माल पर १० प्रतिशत और उपनिवेशों के माल पर २० प्रतिशत चुगी लगाई गई। आंतरिक चुगी कर (taxes) समाप्त कर दिए गए। प्रणिया से गुजरने वाले माल पर बहुत भारी राहदारी चुगी लगाई गई ताकि अर्थ प्रणिया के साथ मिल जाए। १८१८ के सुधार के परिणाम में प्रणिया एक स्वतंत्र-व्यापार का क्षेत्र बन गया और आंतरिक व्यापार के साथ-साथ राज्य का राजस्व भी बढ़ने लगा।

१८१८ का कानून केवल प्रणिया में ही लागू था किन्तु कालांतर में अर्थ जर्मन राज्य भी प्रणिया से सहयोग करने लगे। १८१६ में एक और राज्य (Schwarzburg Sondershausen) इस व्यवस्था का सदस्य बन गया। १८२२ में छ राज्य और आ मिले।

किन्तु कुछ जर्मन राज्यों ने चुगी समिति संगठन का विरोध भी किया। १८२४ में वावरिया और बुट्टेमबर्ग के नतत्व में दक्षिण में दूसरा चुगी-समिति-संगठन स्थापित हुआ। मध्य के राज्यों का भी एक संगठन १८२४ में बनाया गया। इसमें सेक्सोने हेस्सी-कैसल हनोवर वुसविश आर हेमबर्ग वीमन और फ्रैफर्ट के स्वतंत्र नगर थे।

१८३१ में हेस्सी-कैसल जोलवरीन में मिल गई और मध्य स्थित राज्यों की समिति टूट गई। १८३४ में वावरिया आठ वर्ष की अवधि के लिए जोलवरीन में मिला। संगठन की गति यह थी कि समिति की बैठकें बर्लिन तथा अर्थ स्थानों पर हुआ करेंगी, वावरिया के माल को विशेष सुविधाएँ दी जाएगी। इसी वर्ष सेक्सोने भी जालवरीन में आ मिला। १८३७ में अधिकांश राज्य इस समिति के सदस्य बन चुके थे। जब भी संधियों का अवधि समाप्त होती उह फिर स्वीकार कर लिया जाता था। केवल हनोवर ओल्डनबर्ग मकमिलनबर्ग और हंस के नगर जोलवरीन से अलग रहे। जोलवरान की मुख्य गति थी कि राज्यों में परस्पर स्वतंत्र व्यापार होगा चुगी की दरें भी सीमान्तों पर समान होंगी और चुगी से प्राप्त धन राज्यों की जनसंख्या के आधार पर बाँट लिया जाएगा। आरम्भ में आस्ट्रिया जालवरीन के प्रति बिलकुल उदासीन था। मेटरनिक व्यापार को अधिक महत्त्व नहीं देता था। परिणाम में उसने भी जोलवरीन के क्रिया-बलापों पर अधिक ध्यान नहीं दिया। किन्तु १८४८ में मेटरनिक के पतन के पश्चात् आस्ट्रिया ने भी जोलवरीन का सदस्य बनने के लिए बड़ा प्रयत्न किया। प्रणिया ने इसका विरोध किया और सफल हुआ।

१८५३ में जोलवरीन और आस्टिया में एक संधि हुई जिसके अनुसार एक दूसरे का कुछ सुविधाएँ दी गई।

जोलवरीन का महत्त्व कुछ कम नहीं था। मटरनिव और रावटसन के मतानुसार "पहली बार जर्मनी एक व्यापारिक और आर्थिक इकाई बना। जालवरीन ने जर्मनी के राज्यों को पारस्परिक आर्थिक वृद्धि में बाधा दिया था। वह प्रशिया के नतुत्व में सगठित हो गए थे। इसके द्वारा वह आस्टिया के बिना त्रिशुद्ध जर्मन मस्या के अभ्यस्त हो गए थे। फाइफ (Fyffe) के मतानुसार 'इस सगठन का किसी भी प्रकार राजनीतिक रूप नहीं दिया गया किंतु आर्थिक हिता की रक्षा के लिए इस सगठन में राजनीतिक एकता का बीजागणन हो चुका था। धन, सूत्रबूझ और अपने गरीब पड़ोसी राज्यों के प्रति उदारता द्वारा प्रशिया ने चुपचाप आर्थिक हिता के बाधनों के द्वारा उन राज्यों से अपना सम्बंध स्थापित कर लिया जो अब तक आस्टिया का अपना नेता मानते आए थे। जालवरीन की वृद्धि के प्रत्येक कदम के साथ केवल प्रशिया की प्रतिष्ठा में ही नहीं अपितु जनता की समृद्धि में भी वृद्धि हुई।

डा० बोरिंग के मतानुसार 'जर्मन राष्ट्रवाद का कथल आशा और कल्पना के क्षेत्र से निवालकर जालवरीन ने इन्हें प्रत्यक्ष और वास्तविक आर्थिक समृद्धि में बदल दिया। जोलवरीन के प्रति जर्मनी की जनता की यह धारणा है कि 'जर्मनीकरण (Germanisation)' के प्रति यह प्रथम कदम था। इसमें दानुता और विरोध का सबसे शक्तिशाली गढ़ का तोड़ दिया था और व्यापारिक और औद्योगिक हिता के आधार पर इसमें राजनीतिक राष्ट्रीयता के लिए मार्ग का निर्माण कर दिया था।

जुलाई आरि और जर्मनी (July Revolution and Germany)—जुलाई, १८३० में हुई फ्रांस की आरि का जर्मनी पर भी प्रभाव पड़ा। जर्मनी में उदारवादी सविधान की मांग की जाने लगी और नुसबिक, हेनोवर, सक्मान और हस्ती-वेसल के राज्यों में यह मांगें मान ली गई थीं। बावेरिया, बुरेंबर्ग इत्यादि के शासकों ने उस सविधान का लागू कर दिया जा उन्होंने १८३५ में स्वीकार किया था। परिणामतः प्रशिया अपरिवर्तित रहा किन्तु छोटे राज्यों का उदार सविधान प्राप्त हो गया था। किंतु मटरनिक एक बार फिर जर्मनी पर अपना अधिकार जमाने में सफल हुआ और शास्त्रवाद की धारणियों का लागू कर दिया गया। विमाना में एक सम्मेलन हुआ जिसमें निणय किया गया कि समाचार पत्रों और विश्वविद्यालयों की सुधारवादी प्रवृत्तियों का दमन किया जाय। जर्मन राज्यों के शासकों तथा उनकी प्रजाओं के बीच के भ्रम का निपटान के लिए एक न्यायालय की स्थापना की गई।

फ्रेडरिक विलियम चतुर्थ (Frederick William IV) (१८४०-६१)—फ्रेडरिक विलियम तृतीय के लम्बे राज्यकाल में प्रशिया में कुछ विरोध आशा नहीं की जा सकती थी। १८४० में फ्रेडरिक विलियम चतुर्थ उमका उत्तराधिकारी बना। नया राजा सकिनासी, धार्मिकवादी और बुद्धिमान् था, किंतु उमकी याय वृद्धि उमकी विचार-वृद्धि के समान नहीं थी। राज्यकाल के आरम्भ में उमने बहुत से

राजनीतिक दृष्टि का मुना पर किया था। मि० आर्न्डट और डह्लमन (Arndt and Dahlmann) को बॉन (Bonn) विश्वविद्यालय में पुनः शिक्षण तथा भाषाचारक पद पर नियुक्त किया गया। प्रांतीय समितियों को नियमित रूप से अपने अधिनियम करने तथा स्वतंत्र रूप से विचार विमर्श करने की अनुमति दी गई थी। समाचार पत्रों को स्वतंत्रता पुनः दे दी गई। किंतु वह सत्ताय प्रणाली का संविधान लागू करने के लिए नहीं माना था। फरवरी १८४७ में फ्रेड्रिक विनियम चतुष्टय न बर्लिन में सारी प्रांतीय समितियों की एक बैठक बुलाई जिस सयुक्त प्रांतीय सभा (United Provincial Diet or States General) कहा गया। यद्यपि यह संयुक्त सभा बहुत दिना तक नहीं चली फिर भी इसके प्रति काफी आकर्षण हुआ।

१८३० से १८४८ के काल में जर्मनी के छोटे-छोटे राज्या में निरंतर आन्दोलन हो रहे थे। इन आन्दोलनों के दो ध्येय थे जर्मनी का संघटन और राज्या में सावधानिक तथा सुधारवादी सरकारों की स्थापना। १८४७ में एक सम्मेलन हुआ जिसमें सुधारवादी कार्यक्रम स्वीकृत हुआ और काल्पवाद की आनृप्तियों का भग करने के लिए आन्दोलन आरम्भ हुआ। धार्मिक सहिष्णुता प्रतिनिधित्वपूर्ण सभाओं की प्रत्येक राज्य में स्थापना सामाजिक विशेषाधिकारों की समाप्ति समूच जर्मनी के लिए एक प्रतिनिधित्वपूर्ण विधान सभा की स्थापना, राज्य सभा की अपेक्षा जनता की सेना की नियुक्ति सभा संविधान के प्रति भक्ति की शपथ ल राजा के प्रति नहीं इत्यादि मांगों की गई। इसी वर्ष एक और सम्मेलन भी हुआ। समूच देश के लिए एक संसद बनाने की मांग की गई।

जब फरवरी शान्ति की सूचना जर्मनी पहुँची तब बादेन (Baden) के राजा ने अपनी प्रजा को नया संविधान दिया और बृहत्संख्य नासाऊ दृष्टिक रीमर ड्रामस्टड और हस्ती केसल के राजाओं ने भी उसका अनुसरण किया। बावेरिया के राजा को राज्य छोड़ने पर विवश कर दिया गया। हनोवर और सेक्सोने की प्रजा को भी सुधारवादी संविधान मिल गया।

जहाँ तक प्रशिया का सम्बन्ध था मार्च मास के आदर बर्लिन में कुछ भगडा हुआ और राजा ने सुधारवादी संविधान को मान लिया। प्रजा और सनाओं में टक्करें हुई और अंत में प्रशिया के राजा ने राजधानी से सनाए हटा ली। उसने यह भी प्रतिज्ञा की कि वह स्वतंत्र और नवजात जर्मन राष्ट्र का नेतृत्व करेगा। राष्ट्रीय संसद की स्थापना करके एक संविधान बनाने का भी निश्चय किया गया था।

हेनरिच फान गेगन ने देश भर के लिए एक अस्थायी सरकार बनाने का सुझाव दिया। ५ मार्च १८४८ को हैलबर्ग में ५० नेताओं की बैठक हुई और जर्मनी की विभिन्न राज्या की सभाओं को निमन्त्रण भेज गए। ३१ मार्च, १८४८ का लगभग ६०० व्यक्तियों ने फ्रैंकफर्ट (Frankfurt) में एक बैठक में भाग लिया। इस बैठक में यह निणय किया गया कि दो सदन का विधान मण्डल बनाया जाए और जर्मनी के साथ का एक ही प्रमुख हा। इस प्रस्ताव की विशद व्याख्या संविधान

सभा कर जिसमें ५०,००० नागरिकों का एक व्यक्ति प्रतिनिधित्व कर। यह सब व्यवस्था हुई और जनता को सभा का सम्मेलन फ्रैक्चर में हुआ।

फ्रैक्चर मस्य में आरम्भ में लगभग ३०० सदस्य थे किन्तु बाद में इनकी संख्या ५५० हो गयी। हेनरिच वॉन गेगन (Heinrich Von Gagern) को इसका अध्यक्ष चुन लिया गया। इस सभा में विश्वविद्यालयों के शिक्षकों और पत्रकारों का बहुमत था इसलिए बहुत समय केवल सिद्धांतों पर विवाद करने में ही नष्ट हुआ। फ्रैक्चर सभा की स्थापना के ६ महीने तक हमने केवल केन्द्रीय कायमण्डल की स्थापना ही की थी। अस्थायी सरकार (Provisional Government) का अध्यक्ष (Imperial Vicar) आर्क ह्यूब जोन को बनाया गया। १८४८ में क्रिसमस से पहले जर्मनी के नागरिकों के मौलिक अधिकारों की व्यवस्था हुई। इनमें में कुछ नागरिकों और आमिव समानता, समाचारपत्रों की स्वतंत्रता पचायत द्वारा जाय (Jury), नियोक्ताओं की सम्पत्ति इत्यादि थे।

ग्राइटिया को जर्मनी में मिलाया जाए अथवा नहीं इस विषय में दो मत थे। 'लिटल जर्मन्स' (Little Germans) इसके विरुद्ध था किन्तु उच्च वर्ग (Great Germans) इसके पक्ष में था। परिणामतः जनमत की विजय हुई और ग्राइटिया को अलग ही रखा गया। वॉपरम्परा के अनुसार राजा तथा जर्मन सभों की स्थापना का निश्चय हुआ। फ्रैक्चर की सभा ने २८ मार्च १८४९ को प्रुशिया के राजा विलियम चतुर्थ को राज्य सौंपने का प्रस्ताव रखा किन्तु उसने ३ अप्रैल, १८४९ को यह प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया। इसके कई कारण थे। प्रथम वह स्वभाव से क्रांतिवादी था और फ्रैक्चर सभा की महत्वाकांक्षाओं के प्रति उदात्त नहीं था। वह 'शान्ति का दाम (Serf of the Revolution) नहीं बनना चाहता था। उसका राजा के देवी अधिकारों में निश्वास था अतः वह फ्रैक्चर सभा द्वारा निमित्त सविधान को मानने को तयार न था। यदि राजा ने उसे राजमुकुट पहनाया होता तो सम्भवतः वह स्वीकार भी कर लेता किन्तु प्रजा द्वारा लिए जाने पर स्वीकार नहीं करना चाहता था। सम्भवतः इसका वास्तविक कारण यह था कि वह ग्राइटिया से युद्ध नहीं करना चाहता था। उस काल में ग्राइटिया ने अपनी स्थिति मजबूत की थी और यदि प्रुशिया के राजा ने फ्रैक्चर सभा द्वारा राज्य देन के प्रस्ताव को मान लिया होता तो निश्चित रूप में उसकी ग्राइटिया से टक्कर हो गई होती। इसका आशय युद्ध होता था और दूसरी बात यह थी कि प्रुशिया का राजा इसके योग्य भी नहीं था। जर्मनी की जनता ने एक सविधान बनाना चाहा किन्तु उसका प्रयास असफल रहा। उन्होंने अपना बहुमूल्य समय बौद्धिकवाद विवाद में नष्ट कर दिया। यदि उन्होंने आरम्भ में तेजी में कार्य किया होता तो सफलता के अधिक अवसर थे। फ्रैक्चर सभा की असफलता से जर्मनी की जनता को निश्चय हुआ कि देश के एकीकरण के लिए अब उन्हें कुछ और माधुन्य प्रयाग में लाने पड़ेंगे।

हजारों मनुष्यों ने फ्रैक्चर सभा जिस से देश को बहुत आशाएँ थीं, असफल हुईं। किसी हद तक इसकी असफलता के उत्तरदायी इसके सदस्य ही थे। किन्तु इसकी

असफलता का मुख्य कारण जमनी के विभिन्न राजाओं द्वारा इंग्लैंड का विरोध करना था। विशेषतः आस्ट्रिया और प्रणिया के राजाओं की परस्पर ईर्ष्या के कारण भी यह प्रयत्न असफल हुआ क्योंकि इनमें से कोई भी साम्राज्य हितों के लिए अपने स्वार्थों का बलिदान करने के लिए तैयार नहीं था। किन्तु यह ससत एक श्रेष्ठ तथा उच्च मान्यतावाला सविधान बनाने में सफल हुई जिसके द्वारा प्रत्येक नागरिक को नागरिक स्वतन्त्रताएँ, कानून के समक्ष समानता, केन्द्रीय तथा प्रादेशिक सरकारों का जनता के प्रतिनिधियों के हाथ नियंत्रण इत्यादि दिया गया था।

यद्यपि प्रणिया के राजा ने फरफट मसद द्वारा दिए गए राजमहासन्ध का नहीं लिया तथापि उसका दंग का एकीकृत करने के लिए और कई तरीके अपनाए। उसके मंत्री रेडोविज़ (Radowiz) ने जर्मन मध्य का सविधान बनाया। प्रणिया के राजा ने आस्ट्रिया का छोड़कर मध्य शामका द्वारा स्थापित एक कालिज की अध्यक्षता स्वीकार की। मार्च १८२० में इरफर्ट (Erfurt) में जर्मन महासन्ध का अधिवेशन हुआ। किन्तु आस्ट्रिया का नया चाम्बेर्ग द्वारजेनबर्ग (Schwarzenberg) जर्मनी पर आस्ट्रिया का नियंत्रण बनाए रखने के लिए और प्रणिया के राजा के इन प्रयासों को रोकने के लिए कटिबद्ध था। ओल्मुटज़ (Olmutz) के सम्मेलन के अनुसार प्रणिया के राजा का भुक्ता पड़ा। उसने इस सन्ध को भंग करना स्वीकार किया और १८१५ में जर्मन महासन्ध पुनः स्थापित हुआ। १८२० में प्रणिया के राजा ने दंग के लिए नया सविधान बनाया जो १८१८ तक चलता रहा।

१८४८-४९ का आन्दोलन असफल रहा किन्तु उसने जर्मनी की जनता को अनेक पाठ पढ़ाए। उन्हें पता लग गया कि जब तक आस्ट्रिया शक्तिशाली रूप से विरोध में है तब तक जर्मनी का एकीकरण असम्भव है। और कि बधानिक तरीकों से एकीकरण असम्भव है। सुधारवादी कायशील शक्ति नहीं थे और वे देश की वास्तविक समस्याओं को मुलभान की अपेक्षा सिद्धांतों पर विवाद अधिक करते थे। आस्ट्रिया को जर्मनी से तभी निकाला जा सकता था जबकि जर्मनी के पास उससे अधिक शस्त्र शक्ति हो और वह शक्ति केवल प्रणिया ही दे सकता था। एक शक्तिशाली सेना की आवश्यकता सामाजिक रूप से अनुभव की गई।

१८५७ में फ्रेड्रिक विलियम चतुर्थ पागल हो गया और उसका भाई विलियम प्रथम सरकार बना। १८६१ में विलियम चतुर्थ की मृत्यु के पश्चात् वह प्रणिया का राजा बना।

विलियम प्रथम (William I) (१८६१-८८)—विलियम प्रथम एक दृढ़ प्रतिभ पुरुष था। उसका भाग्य पर तथा प्रणिया के नेतृत्व पर पूर्ण विश्वास था। वह हृदय से कट्टर प्रणियन था। वह मनुष्यों का पारखी तथा अपने विश्वस्त नौवरो को चुन सकता था।

आस्ट्रिया द्वारा प्रणिया के अपमान करने पर उसका दृढ़ विश्वास था कि यदि जर्मनी को मुक्त कराना है तो यह प्रणिया की शक्तिशाली शस्त्र शक्ति से ही हो सकता है। १८४९ में उसने कहा था, 'तो भी व्यक्ति जर्मनी पर राज्य करना चाहेगा उस

इसे जीतना पड़ेगा और यह केवल आपके वाक्यों से पूरा नहीं होगा।' इसी धारणा को लेकर उसने रून (Roon) का युद्ध-मंत्री और मोल्त्के (Moltke) का महा सेनापति नियुक्त किया। इन दो व्यक्तियों ने प्रणिया की सेना का पुनर्गठन करना प्रारम्भ किया और इसके विकास के लिए याचनाएँ बनाई। १८६१ में जर्मन विधान मण्डल ने इसके लिए धन देना स्वीकार किया किन्तु १८६२ में अस्वीकार कर दिया। विलियम सेना के विकास में और विधानमण्डल वैधानिक सुधारों में विश्वास रखता था। इस प्रकार की परिस्थिति में वाय रूढ़ गया। इस समय प्रणिया के राजा के सम्मुख तीन मांग थीं। वह सेना के विकास की योजना का छाड़ देता। वह राज्य का परित्याग करता अथवा संविधान को स्थगित कर देता। वह वित्तव्यवस्था ठीक हो जाती। अंत में परिसर में विस्माक का बुलाया गया कि वह स्थिति का संभाले। इन परिस्थितियों में विस्माक का १८६२ में प्रथम मंत्री का पद पर नियुक्त किया गया। उसने विलियम प्रथम का आश्वासन दिया मैं श्रीमान के साथ नहीं हूँ जाऊँगा किन्तु मगद के साथ इस समय में आपका साथ नहीं छोड़ूँगा।



विलियम प्रथम

विस्माक एक दौड़ पुण्य तथा एकाधिकार राजशाही का समर्थक था। उसका एकाधिकार और भाव्यवस्था में विश्वास था। उसका राजा की हमारी समस्या व्याख्यान देने और वह मत से प्रस्ताव स्वीकार करने से पूरी नहीं जाता अपितु रक्त और लाह से सुलझेगी।" वह विलियम प्रथम की इस बात से पूरा सहमत था कि जर्मनी के एकाधिकार के लिए जर्मनी की सेना का पुनर्गठन अनिवार्य है। वह प्रणिया की मताद तक का ना करने के लिए तैयार था यदि वह सेना के पुनर्गठन के लिए धन देने से अस्वीकार करती। वह अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए वैधानिक परिषदी की परवाह नहीं करना था। इसमें कोई शक्यता नहीं कि उसे चाहे कथ तत्र दण्ड पर विधानसभा की अनुमति के बिना ही जनता से धन प्राप्त करने के लिए निरस्तुता मानना पड़ेगा। इस प्रकार धन प्राप्त करने के लिये सेना में सुधारों की याचना का त्रिआन्विन किया।

१८६३ में आस्ट्रिया ने 'जर्मन-मध्य के सुधार' के प्रस्ताव पर विचार करने के लिए जर्मनी के राजाओं का एक सम्मेलन बुलाया। यदि आस्ट्रिया की चान सफल

हो जाती ता जमनी म आस्ट्रिया का प्रभाव बना रहता । बिस्माक ने प्रणिया क राजा पर दबाव डाला कि वह इस सम्मेलन म न जाए । प्रणिया का राजा इस सम्मेलन म उपस्थित नहीं हुआ और परिणामत यह सम्मेलन असफल रहा ।

इलसविग हात्सटाइन प्रश्न (Schleswig Holstein Question)—यहाँ इलसविग हात्सटाइन क प्रश्न का भी उल्लेख कर देना उचित प्रतीत होता है जिसका बिस्माक न अपनी बाय सिद्धि क लिए प्रयोग किया था । इलसविग (Schleswig) और हात्सटाइन डेमाक क राजा क दो अधिवृत्त प्रान्त थ । इन राज्या का डेमाक के राजा के साथ व्यक्तिगत मंत्री संगठन था । हात्सटाइन का राज्य जर्मन वंशधरों का था और यह १८१५ क जर्मन संघ का सदस्य था । इलसविग म जर्मन और डेन दाना ही रहत थ । डेमाक की जनता इन राज्या को डेमाक म मिलाना चाहती थी । जर्मनी क लोग इसे जर्मन-मध्य म मिलाना चाहते थे । १८४८ म इन राज्या क शासन-यंत्र का डेमाक म मिलाने का प्रयत्न किया गया था, किंतु जर्मनी क विरोध के कारण अधिक प्रगति नहीं हो पाई । इसका कारण प्रणिया और ड्यूक ग्राफ भ्रगस्टनवग का इन पर अधिक अधिकार था । परिस्थिति अधिक जटिल हो गई और युद्ध की आगवा होने लगी थी । अग्रे दशा क हस्तक्षेप के कारण १८५२ म लन्दन संधि के अनुसार समझौता हो गया । डेमाक को चेतावनी दे दी गई कि वह इन राज्यों को मिलाने की कोशिश न करे । ड्यूक ग्राफ भ्रगस्टनवग ने अपने अधिकार डेमाक के राजा को बच दिए ।

१८६३ म डेमाक के सिंहासन पर एक नया राजा बैठा और उसने इलसविग को डेमाक म मिला लिया तथा हात्सटाइन का अधिकार दूर बंधनो म बांध लिया । यह व्यवस्था लन्दन संधि का स्पष्ट रूप से अतिशय करने का परिणाम थी । ड्यूक ग्राफ भ्रगस्टनवग ने अपने अधिकारों का दावा किया । बिस्माक ने इस अवसर को जर्मनी के एकीकरण के लिए प्रयोग किया । वह नहीं चाहता था कि ये राज्य डेमाक अथवा ड्यूक को प्राप्त हो । वह प्रणिया की पुनर्गठित सेनाओं की परीक्षा भी करना चाहता था तथा डेमाक से युद्ध होने पर उस यह अवसर प्राप्त होता था । उसने आस्ट्रिया से समझौता करके डेमाक के विरुद्ध बायवाही करने का निश्चय किया जिससे अन्त म युद्ध सम्पत्ति के बटवारे पर आस्ट्रिया से भी युद्ध का सहानुभूति मिल जाए ।

इस उद्देश्य को दृष्टि में रखकर डेमाक के राजा को युद्ध की चुनौती दी कि वह लागू किए गए सविधान को भंग कर दे । डेन इन संगठित सेनाओं का मुकाबला नहीं कर सकत थे और १८६४ की वियाना का संधि के अनुसार डेमाक के राजा ने इलसविग और हात्सटाइन के राज्य प्रणिया और आस्ट्रिया को सौंप लिए ।

इन राज्यों का प्राप्त करने के पश्चात् इनके बँटवारे का प्रश्न उठा आस्ट्रिया ने सुझाव दिया कि ये दाना राज्य ड्यूक ग्राफ भ्रगस्टनवग का द दिए जाएँ किंतु प्रणिया ने इसका विरोध किया । अतः गेस्टीक सम्मेलन (१८६५) के निष्पत्ति के अनुसार यह निश्चय हुआ कि पूर्ण निष्पत्ति होने तक आस्ट्रिया हात्सटाइन पर शासन

करे और प्रणिया श्लैसविग पर। इन राज्या का मामला जर्मन विधान सभा के सम्मुख न लाया जाए। यह उल्लेखनीय है कि गैस्टीन का समझौता बिस्माक की बड़ी भारी कूटनीतिक जीत थी। वह ड्यूक ऑफ अगस्टेनबर्ग का निकालने में तथा आस्ट्रिया से युद्ध कर मक्का की परिस्थिति उत्पन्न करने में सफल हो गया था।

टेलेर के मतानुसार 'गैस्टीन (Gastein) की संधि, अपनी पूर्ववर्ती शान ब्रुन (Schonbrunn) की संधि की तरह [और उसके बाद मई १८६६ के गबलीज (Gablentz) के प्रस्ताव] एक अनंत विवाद का विषय रही है। कुछ की दृष्टि में बिस्माक का यह घृणित प्रयाजन केवल एक अटल युद्ध की ओर था, दूसरों के विचार में यह उसकी दृष्टि का प्रमाण था कि मेन्ट्रनिक के दिना वानी जर्मन सार्वभौमिकता का स्वतंत्र रूप पुनः स्थापित हो जाय। शायद इनमें कोई भ्रम न था। बिस्माक एक कूटनीतिक जानी था जो युद्ध में गर अनुभवों का और जो उसके मकदमा से घृणा करता था। वह अपना कूटनीतिक चाला से यह भली प्रकार आशा कर सकता था कि आस्ट्रिया को डचोस (Duchies) से अलग करने, गायद जर्मनी की अध्यक्षता के बाहर भी करने की वागिस की जाय। इस प्रकार के चमत्कार आगामी जीवन में उसकी शक्ति के बाहर नहीं थे। इस अवधि में उसकी कूटनीतिक युद्ध की तैयारी करने की अपेक्षा आस्ट्रिया का भयभीत करन ही मालूम हानी है। उसने मस को केवल यही प्रलाभन दिया कि यदि प्रणिया को डचोस प्राप्त हो जावे तो वह डेमाक को उत्तरी श्लैसविग पुनः दखर राष्ट्रीयसिद्धांत लागू करेगा और इस सब के बदले में उसने केवल परोपकारी निष्पक्षता की माग की।' (The Struggle for Mastery in Europe, pp 157-58)

गैस्टीन सम्मेलन आस्ट्रिया के हित में नहीं था। उस एस प्रदेश का नियंत्रण सौंपा गया था जो दोना ओर से प्रणिया की सीमाओं से घिरा हुआ था। ठीक ही कहा गया है कि यह समझौता दरारा पर वागज विषयान के समान था। यह समस्या का समाधान नहीं था। आस्ट्रिया ने अनुभव किया कि हाल्मटाइन में उसकी स्थिति सुरक्षित नहीं है और इसलिए उसने ड्यूक को उसका गुप्त कर दिया। उसने यह भी निष्पक्ष किया कि इस मामले का जर्मन विधान सभा के मामला रखा जाए। स्पष्टतः इस कदम का अर्थ गैस्टीन समझौते को ताड़ना था। बिस्माक ने आस्ट्रिया से कहा कि वह ड्यूक ऑफ अगस्टेनबर्ग के लिए प्रस्ताव करना बंद करे। आस्ट्रिया ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया और प्रणिया की मेना में हाल्मटाइन में पुनः आस्ट्रिया को खदेड़ दिया। बिस्माक जर्मन-संघ में मायजनिंग महाविचार द्वारा सुधार करना चाहता था, किन्तु आस्ट्रिया इसका विरोधी था। आस्ट्रिया ने जर्मन-संघ की विधान सभा पर जार डालकर प्रणिया के विरुद्ध वापस नहीं करने के लिए स्वीकृति ले ली। प्रणिया ने संधि छोड़ दिया और १८६६ में आस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

युद्ध घोषणा करने से पूर्व बिस्माक ने केवल मजिब तैयारियाँ ही नहीं कीं अपितु आस्ट्रिया को कूटनीतिक से अकेला कर दिया था। परिणामतः जब युद्ध हुआ तो

आस्ट्रिया का कोई साथी नहा था। इस विषय में विस्माक के रुम इटली और फ्रांस के सम्बन्धों का उल्लेख आवश्यक है।

आस्ट्रिया का एकाकीपन रूस (Isolation of Austria Russia)—

विस्माक ने रूस का अपने अरार करने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी क्योंकि वह यह नहीं चाहता था कि आस्ट्रिया से युद्ध होने पर रूस उमकी सहायता करे जमे उसने १८४६ में हंगरी के मामले में की थी। १८५६ से १८६२ तक विस्माक प्रशिया की ओर से पीटसवग में राजदूत की हैमियत से रहा था। उस अवधि में उमने रूस को प्रशिया की ओर आकर्षित करने का यत्न किया था। विस्माक न जार को कहलवाया कि प्रशिया दागा देशों के शत्रुओं के विरुद्ध रूस को भरपूर सहायता दगा। विस्माक समस्त पोलण्ड के निर्माण को सहन नहीं कर सकता था क्योंकि वह स्वका शत्रु और प्रतिद्वन्दी बन सकता था। इसी कारण उसने पोलण्ड के विद्रोह का विनाश किया था। उसने एल्जण्डर द्वितीय से समझौता किया कि वह प्रशिया में शरण लन वाल अथवा प्रशिया से भर्तों करने वाल अथवा किसी भी प्रकार से प्रशिया का अपने वायकलापा का कर्तृ बनाने वाले पोलण्डसी के विरुद्ध कड़ी कारवाई करंगा। यद्यपि विस्माक के इस वाय की निंदा की गई किन्तु उस कबल रूस की मन्त्री की ही परवाह थी अथ किसी बात की नहीं। रूस प्रकार उसने रूस का अपने पक्ष में कर लिया और उम विश्वास हो गया कि आस्ट्रिया और प्रशिया के बीच युद्ध होने की श्मिति में रूस आस्ट्रिया का साथ नहीं देगा।

फ्रांस (France)—विस्माक ने भी नेपोलियन ततीय का अपने पक्ष में करने का प्रयत्न किया। १८६२ में जब विस्माक पेरिस में प्रशिया का राजदूत था उमने नेपोलियन ततीय से अच्छे सम्बन्ध बनाने का प्रयत्न किया था। नेपोलियन त्रिम्माक का आदर करने लगा था। अक्टूबर १८६५ में विस्माक नेपोलियन ततीय में वियाटिज नामक स्थान पर मिला। यह भेंट गुप्त थी और इसका कोई प्रमाण नहीं रखा गया। इस भेंट के परिणामस्वरूप नेपोलियन ने आश्वासन दिया कि युद्ध होने पर वह तटस्थ रहेगा तथा विजय प्राप्त होने की स्थिति में एल्बी (Elbe) को डचियों (Duchies) का प्रशिया में मिला लेगा। इटली और प्रशिया में सन्धि हान की स्थिति में उसने इटली का विनिर्णय लौटा देने का वायदा भी किया। नेपालियन ने जमन-सध में सुधारों और प्रशिया के तत्वावधान में उत्तरी जमनी के एक नवान राज्य के निर्माण का भी विरोध नहीं किया। फ्रांस की तटस्थता के मूल्य के रूप में विस्माक ने थोडा-सा सीमांत प्रदेश देने का आश्वासन दिया यदि उससे जमनी और प्रशिया को कोई घाटा न पड़े। वह फ्रांस की तटस्थता ता चाहता था किन्तु इस विषय में कोई दृढ निश्चय नहीं करना चाहता था जिससे कि बाद में क्षतिपूर्ति के दावा का निपटाना पड़े। यह सत्य है कि जहाँ तक जमना के एकीकरण का प्रश्न था विस्माक के प्रति नेपालियन ततीय पूरा सहानुभूति रखता था। वह इटली का विनिर्णय भी देना चाहता था। उमका विचार था यदि उत्तरी जमनी में एक सचिन्तासी राज्य बन गया तो आस्ट्रिया का बहुत कुछ फ्रांस पर निर्भर रहना होगा। नेपालियन ततीय ने यह भी सोचा कि प्रशिया की पराजय की सम्भावनाएँ अधिक

हैं। ऐसी स्थिति में फ्रांस जर्मनी के छोटे-छाट राज्या पर अधिकार कर लेगा। जो भी हा, बिस्माक ने फ्रांस को तटस्थता का बनाए रखा और जब आस्ट्रिया के साथ युद्ध शुरू हुआ तो आस्ट्रिया न फ्रांस से कोई सहायता न मांगी।

इटली (Italy)—बिस्माक ने आस्ट्रिया के स्वाम्याधिक शत्रु इटली को भी अपने पक्ष में करने का प्रयत्न किया। क्योंकि आस्ट्रिया के अधिकार में अभी भी इटालियन भागी प्रदत्त थे। इटली विनिसिया प्राप्त करना चाहता था किन्तु इस प्रकार का वाय वह विदग्गी सहायता से ही कर सकता था। इटली और प्रशिया में एक व्यापारिक समझौता हुआ था किन्तु बिस्माक एक सामरिक संधि करना चाहता था। बिस्माक आस्ट्रिया पर दो मार्चों से अर्थात् एक इटली से तथा दूसरा प्रशिया से आक्रमण करने के महत्त्व का समझता था। समझौते में एक कठिनाई यह थी कि दोनों देश एक दूसरे पर विश्वास नहीं करते थे। दोनों ही देशों की धारणा थी कि समझौते को आस्ट्रिया से कुछ मुविधानों प्राप्त करने के लिए प्रयाग किया जाएगा। किन्तु अविश्वास हान पर भी अप्रैल १८६६ में इटली और प्रशिया में एक संधि हा ही गई जिसके अनुसार यह समझौता हुआ कि यदि प्रशिया आस्ट्रिया पर तीन महीने में आक्रमण कर देता इटली आस्ट्रिया पर आक्रमण कर देगा। कहा जाता है कि यह संधि पारस्परिक सुरक्षा और आशंका से पूर्ण थी। कुछ भी हा किन्तु आस्ट्रिया के विरुद्ध इटली की सक्रिय सहायता का आश्वासन मिल गया था।

यह बात उल्लेखनीय है कि मार्च, १८६६ में प्रशिया के राजा ने नेपोलियन तृतीय को एक पत्र लिखा था और नेपोलियन ने इसके उत्तर में मैत्रीपूर्ण तटस्थता का बचन दिया था। किन्तु उसने इसका मूल्य मांगा था। शीघ्र जर्मने फ्रांसीसी राजनीतिज्ञ आस्ट्रिया और प्रशिया के युद्ध के निष्पत्ति में तटस्थता की नीति के विरुद्ध थे। एक सम्मेलन का प्रस्ताव रखा गया किन्तु आस्ट्रिया ने इस अस्वीकार कर दिया था। बिस्माक युद्ध की सम्भावना से बड़ा प्रसन्न था।

आस्ट्रिया और प्रशिया का युद्ध (Anstro Prussian War) (१८६६)—आस्ट्रिया और प्रशिया का युद्ध बहुत थोड़े समय तक चला इसलिए इस सान सप्ताह का युद्ध कहा जाता है। आरम्भ में ऐसा प्रतीत होता था कि आस्ट्रिया विजयी होगा क्योंकि उस बावेरिया, मेकलान तथा जर्मनी के अग्रछाटे राज्यों की सहायता प्राप्त थी। किन्तु प्रशिया की सेना की व्यवस्था इतनी कुशल थी कि आस्ट्रिया इसका मुकाबला नहीं कर सका। इसके अलावा आस्ट्रिया को दो मोर्चों पर लड़ना पड़ रहा था। उस केवल प्रशिया से ही नहीं अपितु इटली से भी लड़ना पड़ रहा था क्योंकि इटली भी उसी समय युद्ध आरम्भ कर दिया था। यह स्पष्ट है कि इटली को मुस्टाग्ना को सहाई में और लिस्सा के समुद्री तट पर जनयुद्ध में हार हुई थी किन्तु इससे युद्ध के परिणाम पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा था। प्रशिया ने आस्ट्रिया का साडवा (Sadowa) युद्ध में पराजित किया। विजय के पश्चात् प्रशिया की सत्ताए विभागा पर चढ़ाई करने के लिए जार को दगा और इंग्लैंड राजा का समर्थन भी प्राप्त था। किन्तु बिस्माक इसके विरुद्ध था और अन्त में उसकी ही बात मान ली गई। उसने

प्रास्ट्रिया के सम्मुख बड़ी उदार गतों रखा और इन गतों का १८३६ की प्राग (Prague) की संधि में मान लिया गया। इसने अनुमार प्रास्ट्रिया ने तत्कालीन जर्मन-संघ को भंग करने को माना तथा प्रास्ट्रिया व बिना जर्मनी के एकीकरण को भी स्वीकार किया। विनिगिया इटली का दे दिया गया तथा युद्ध की क्षतिपूर्ति नाम मात्र को निर्धारित हुई। हनोवर हेस्सी कैसल (Hesse Cassel) नसगऊ, फ्रफ्ट आन दे मेन तथा हात्सटाइन और श्लसविग की डची प्रगिया को दे दी गई। श्लमविग के उत्तरा जिला के विषय में यह नियम हुआ कि यदि इनकी जनता चाहे तो इन जिलों को डेमाक का दे लिया जाए। मेन (Maine) के उत्तर की धार के राजाप्रा को प्रगिया के नेतृत्व में उत्तरी-जर्मन-संघ में मिला दिया गया। जर्मनी व दक्षिणी राज्या को स्वतंत्र रहन दिया गया था।

युद्ध के परिणाम (Effects of the War)—प्रास्ट्रिया और प्रगिया के युद्ध के बड़े गम्भीर परिणाम हुए। प्रास्ट्रिया को जर्मनी से अलग कर लिया गया और प्रशिया जर्मनी का नेता बन गया। यूरोप ने प्रगिया के युद्ध कौशल को मायता दी। उसे एक सैनिक गवित माना जाने लगा। विस्माक की सफलता के पश्चात् प्रगिया के सुधारवातियों की निन्दा हुई अतः दंग में उदारवाद नष्ट हो गया। विनिगिया मिलने से इटली एकीकरण प्रयत्न में एक और कदम बढ़ गया। केवल रोम ही इटली से बाहर रह गया था। युद्ध का प्रास्ट्रिया के साम्राज्य पर भी बड़ा प्रभाव पड़ा। विनिगिया क चले जाने तथा जर्मनी से प्रास्ट्रिया का पृथक् कर देने के कारण प्रास्ट्रिया को हंगरी की मेग्यार जाति से समझौता करना पड़ा जिसने अनुमार १८६७ में हंगरी और प्रास्ट्रिया की संधि (Ausgleich) हुई। दुहरी राजशाही की स्थापना हुई। क्वन युद्ध और कूटनीतिक मामला को छोड़कर दाना देश पूणत स्वतंत्र हो गए। यह व्यवस्था १९१८ तक चलती रही। दोनो देशों का एक राजा था जिसे प्रास्ट्रिया में सम्राट और हंगरी में राजा कहा जाता था। दानो दंगों के सयुक्त गिण्ट-मण्डलों के निर्माण की व्यवस्था हुई और यह नवीन स्थिरता १९१८ तक बनी रही।

फ्रांस और प्रशिया का युद्ध (Franco-Prussian War) (१८७०-७१)—१८६६ के युद्ध में प्रास्ट्रिया की पराजय के पश्चात् भी जर्मनी का सगठन सम्पूर्ण नहीं हुआ। दक्षिणी राज्यों को भी सगठित करना था और यह कार्य बिना शक्ति प्रयोग व पूरा नहीं हो सकता था। किन्तु यदि विस्माक ने ऐसा किया होता तो फ्रांस द्वारा इन राज्यों की सहायता करने की आशंका थी। परिणामतः विस्माक ने इस परिस्थिति को बड़ी सूझबूझ से सभाला। १८६७ से १८७० तक विस्माक दक्षिणी राज्यों को समझौते और सहायता की नीति द्वारा अपने पक्ष में करता रहा। उसने उन्हें अपने साथ अन्धकारी उनकी संना का गिभित करने के लिए दिए। उसने उन्हें वित्तीय सहायता भी दी। उन पर यह प्रभाव डालने का प्रयत्न किया गया कि प्रगिया उनका मित्र है और उन्हें इससे किसी भी प्रकार का भय नहा होना चाहिए।

विस्माक का विश्वास था फ्रांस के साथ युद्ध एक ऐतिहासिक आवश्यकता है और उसने इस घटना के लिए देश तयार किया। सैनिक तयारियाँ और तेजी

से होने लगीं और मत्र और से इसे कुण्ठित रनाया गया । मोल्टके और र्न फ्रास से युद्ध आरम्भ होने के दिन की प्रतीक्षा करने लगे ।

विस्मार्क फ्रास की कूटनीतिक रूप से पृथक् करने में सफल हुआ । इटली नेपोलियन तृतीय से १८५६ में विश्वासघात करने के कारण नाराज था । प्रणिया ने १८६६ में विनिर्णिया प्राप्त करने में उसकी सहायता की थी और इसलिए इटली का प्रणिया के प्रति कृतज्ञ होना स्वाभाविक ही था । पुनश्च, १८७८ से फ्रास की र्नाएँ गम में पड़ी थीं और इटली का एकीकरण उसी समय पूरा हो सकता था जब फ्रास की सेनाएँ रोम से चली जातीं । यह उसी समय ही सम्भव था जबकि फ्रास किसी युद्ध में उन्मत्त हो और उस अपनी सेनाएँ वहाँ से वापिस बुलानी पड़े । परिणामत इटली में आशंका नहीं थी कि वह फ्रास की ओर से युद्ध में लडेगा ।

विस्मार्क रूस की तटस्थता का आश्वासन प्राप्त कर चुका था । रूस प्रीमिया का युद्ध, जिनमें फ्रास ने उसे हराया था, भूला नहीं था । इसके अनावा विस्मार्क ने जार को कह दिया था कि जब वह फ्रास पर आक्रमण करेगा उस समय रूस परिस संधि की काला सागर सम्बंधी धाराया को तोड़ सकता है ।

१८६६ में विस्मार्क ने आस्ट्रिया को हराने के बाद अत्यन्त उदार गते रूस कर अपनी ओर कर लिया था । यद्यपि प्रणिया की सेनाएँ जीत गई थीं तथापि उसने उन्हें विभाना पर आक्रमण नहीं करने दिया था । आस्ट्रिया का युद्ध की क्षतिपूर्ति के लिए बहुत हजाना नहीं देना पडा था । विस्मार्क फ्रास से युद्ध होने पर आस्ट्रिया से तटस्थ रहने की आशा कर सकता था ।

यदि विस्मार्क जमनी के सगठन के लिए फ्रास से युद्ध करना चाहता था तो नेपोलियन तृतीय भी प्रणिया से युद्ध करने का इच्छुक था । फ्रास में सावजनिक रूप से यह धारणा थी कि साटोवा के युद्ध में आस्ट्रिया की हार नहीं अपितु फ्रास की कूटनीतिक हार हुई थी । इसमें आश्चर्य नहीं कि फ्रास अपनी हार का बदला लेना चाहता था । पुनश्च फ्रास में नेपोलियन तृतीय के प्रति विराध बढ़ता जा रहा था और उसकी धारणा थी कि प्रणिया से युद्ध आरम्भ करके ही वह फ्रास के सब वर्गों का समर्थन प्राप्त कर सकता है । इस प्रकार की परिस्थितियों में विस्मार्क ने अपना जाल बिछाया और नेपोलियन तृतीय इसमें फँस गया ।

स्पेन का राज सिहासन राजकुमार लियोपोल्ड (Leopold) को देने का प्रस्ताव दो बार किया जा चुका था किन्तु उसने इसे स्वीकार नहीं किया था । विस्मार्क के उक्ताने पर उससे एक बार फिर भेंट करने का प्रस्ताव किया गया । फ्रास के समाचार-पत्रों में इस प्रस्ताव की बड़ी धालोचना हुई । यह कहा गया कि फ्रास प्रणिया और स्पेन के बीच धिर जाएगा और इस प्रकार उसके अस्तित्व को खतरा उत्पन्न हो जाएगा । यद्यपि लियोपोल्ड ने स्पेन का सिहासन लेना सम्वीकार कर दिया फिर भी आन्वेषण बराबर चसता रहा । नेपोलियन ने प्रणिया के राजा से यह आश्वासन प्राप्त करना चाहा कि वह लियोपोल्ड को स्पेन के सिहासन के लिए कभी भी उम्मीदवार नहीं बनाएगा । फ्रास का राजदूत बनेडिटी (Benedetti) प्रणिया के

इम्म व निवास स्थान पर मिला और जोर डालना चाहा। प्रशिया के राजा ने फ्रांस व राजदूत व अपनी भेंट का विवरण एक तार द्वारा भजा। बिस्मार्क ने इस तार को इस प्रकार से सक्षिप्त किया कि फ्रांस को यह प्रतीत हो कि उनका राजदूत का अपमान किया गया है और प्रशिया की जनता को यह प्रतीत हो कि उनका राजा का अपमान किया गया है। जब यह सदेश फ्रांस पहुँचा तो फ्रांस में प्रशिया व विरुद्ध युद्ध करने के लिए भाग की जाने लगी और युद्ध की घोषणा कर दी गई।

इस युद्ध की सबसे महत्वपूर्ण लड़ाई सीडान (Sedan) की हुई जिसमें नेपोलियन तृतीय हार गया और उसने आत्मसमर्पण किया था। यद्यपि फ्रांस में प्रजातंत्र की स्थापना हो गई थी तथापि बिस्मार्क पेरिस पर अधिकार करने के हठ पर अड़ा था। क्योंकि फ्रांस को जानना था कि वह स्वीकार नहीं किया अतः पेरिस का घेरा आरम्भ हुआ और युद्ध हुआ किन्तु पेरिस को आत्मसमर्पण करना पड़ा। १८७१ की फ्रकफ्ट की संधि के अनुसार शान्ति हुई और फ्रांस को एल्साए और लॉरेन प्रशिया को देने पड़े। उसे बहुत बड़ी धनराशि भी युद्ध की क्षतिपूर्ति के रूप में देनी पड़ी। १८७१ में वर्साई के प्रसिद्ध दपण-महल (Hall of Mirrors) में एक समारोह हुआ जिसमें प्रशिया के राजा को जर्मनी का सम्राट घोषित किया गया। जर्मनी के दक्षिणी राज्य भी जर्मन सघ में मिल गए। इस प्रकार जर्मनी का एकीकरण परिपूर्ण हुआ।

हेज़न के मतानुसार, '१८७१ के पश्चात् फ्रकफ्ट की संधि यूरोप का रिसने वाला फोडा बन गया। फ्रांस व भी अपने घोर अपमान को भूल अपवा क्षमा नहीं कर सकता था। कालांतर में यह बड़ा हर्जाना तो भूल भी जाता किन्तु इन दो राज्यों का शक्ति प्रयोग द्वारा और एल्साए और लॉरेन की जनता की सबसेममति और कड़े विराध के होने पर भी अधिकार कर लेना अक्षम्य था और कभी भी भूला नहीं जा सकता था। पुनश्च फ्रांस का पूर्वी सीमांत अत्यन्त कमजोर हो गया था।

फ्रांस और प्रशिया के युद्ध के अन्त्य भी परिणाम हुए। इसके द्वारा इटली का एकीकरण पूर्ण हो गया। इसका यह कारण था कि जब फ्रांस और प्रशिया का युद्ध आरम्भ हुआ तब फ्रांस को सनाथो को रोम से हटा लिया गया और इटली की सेनाओं ने रोम में प्रवेश किया। रूस ने भी इस युद्ध से लाभ उठाकर पेरिस संधि का काला सागर सम्बन्धी धाराओं को तोड़ दिया। नेपोलियन के साम्राज्य को उखाड़ दिया गया और फ्रांस में प्रजातंत्र की स्थापना हो गई।

फ्रको प्रशियन युद्ध के विषय में प्रो० टेलर का मत है कि "यद्यपि १८७० में फ्रांस के ऊपर विजयने निस्स-देह जर्मनी में एकता स्थापित कर दी, पर युद्ध ने आस्ट्रिया के विरुद्ध भयानक का अभाव प्राट किया। १८६२ और १८६६ के बीच में बिस्मार्क ने निरन्तर दबाव तीव्र किया। आक्सफोर्ड तथा शुद्ध चिन्ताओं के हाते हुए भी, जब तक आस्ट्रियावासिया ने उसकी शर्तें स्वीकार नहीं की वार वार के सक्को ने युद्ध को अनिवाय कर दिया। १८६६ और १८७० के बीच में युद्ध की और कोई निरन्तर प्रगति नहीं थी, तीन वर्षों से अधिक बाद तक दस्तक १८६७ के

सकजम्बग मामल स लकर मुद्ध के छिड जान तक किमी भी सकट ने फ्रांस व प्रशिया क सम्बन्ध को खतरे म नही डाला । न दन वर्षों मे विस्मार्क मिश्रित शासना (Coalitions) क भय से डरो जिनका उस पर बाद म आधिपत्य जम गया । जब य अफवाहें फली कि फ्रान्स का इटली तथा आस्ट्रिया हंगरी के साथ मयाग हा गया है ता उसने इहें हास्यजनक बडा कहकर हटा दिया और जो वास्तेव म हुआ भी । वह फ्रान्स व रूस क बीच होन वाले अच्छे सम्बन्ध स बहुत परगान रहा क्योंकि इनका आधार फ्रांस की पोलड के प्रति सहानुभूतिया का त्याग था और प्रशिया इस सामन्तारी म केवल तीसरा भागीदार बन सकता था । उसकी अपनी नीति पहल और वाट क किसी समय की अपनी अत्रिक अत्रत्यस (Passive) रही । यद्यपि उसन रूस के साथ मित्रता की ठाम नीव बनाए रखी, इसकी सीमा पोलैण्ड के प्रति ममान गनुता तक थी । उसन रूसिया का कभी भी इतना योग्य नही बनाया कि व उसम अपन लिए निकट पूव म सहायता मांग सकें । अन्तत उसन आस्ट्रिया-हंगरी व रूस के साथ रुचिवाणी मधि की आशा की, सिद्धान्त पर आधारित अत्र सधिया की तरह इसका लाभ यह हुआ कि बिना कुछ मूल्य दिए हुए सुरक्षा की व्यवस्था हा गई । लेकिन वह यह जानता था कि उस तक तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी जब तक कि १८६६ की पराजय पर हैप्पसग का विराध ममाप्त नही हो जाता । (The Struggle for Mastery in Europe p 201)

धामसन के विचार म, "इस बात पर इतिहासकारा के बीच काफी मतभेद रहा है कि क्या घटनाघना का लम्बा क्रम, जा १८७१ की नई जमन रीश (Reich) म पराराष्टा पर पहुँच गया, का एक सम्बद्ध योजना मान लिया जाये, जा विस्मार्क की महान् बुद्धि म उपजी जबकि वह १८६२ मे सत्ताधारी हुआ और जिसन एक निश्चित समय-मारिणी के अनुसार अपनी शक्तिशाली इच्छा शक्ति और कृत्नीतिक दूरदर्शिता से उसे लागू किया । विस्मार्क के जोशीले अनुयायियो व उसके उत्तरवादी भालाचका ने यह दलील देने का प्रयास किया है कि ऐसा ही था । यह प्रमाण का एक विचित्र उदाहरण है जो इस दृष्टिकोण को सहायता देता है । डिजरायली के विचार म, जा १८६२ मे लन्दन म एक भोज के समय विस्मार्क से मिला था और जिसके कुछ हा समय बाद वह स्वयं सत्ताधारी हुआ विस्मार्क ने उस आधे घंटे को बात चीन म अपनी सारी योजना से अलगत कर दिया । बाद मे नाम के समय डिजरायली ने लन्दन म रूसी दून सेबुरोव को बताया 'क्या यही अद्वितीय पुरुष विस्मार्क है । वह मुझे पहली बार मिला और उसन मुझे यह सब बता दिया कि वह क्या करन जा रहा है । वह इलसविग-हाल्मटाइत पर कब्जा करने के लिए डेमाक पर आक्रमण करेगा वह आस्ट्रिया को जमन मघ (Confederation) से बाहर करेगा, और फिर वह फ्रांस पर चढ़ाई करेगा—एक धमूतपूव व्यक्ति है ।' यदि यह कहानी सच्ची है और यदि सेबुरोव तथा डिजरायली दाता ही के सरकारी जीवनी लेखक इतको अनुमान करन हैं तो इगम बाई मनेह नहीं होगा कि कम-मे-कम एक विनास विस्मार्क के मस्तिष्क में अवश्य था जबकि उसन अपना पद ग्रहण किया ।

“लेकिन बड़े से बड़े राजनीतिज्ञा के लिए भी इतिहास में यह अग्रगण्य है कि वह हमें यह पहल से ही सपना योजना बना लें और फिर मगार व ऊपर उह लागू कर सकें। विस्माक व कुछ आधुनिक जीविनी लम्बा ने यह महत् प्रगट किया है कि क्या उस इतने विनक्षण तथा दवी परिचान से अलकृत किया जाव। यह कहा जाता है कि मटरनिक या एलगजण्टर प्रथम की भानि विस्माक काई व्यवस्था रचक नहीं था। वह एक योग्य अ्रवसारवादी था जिसेकी कामविधि सदव लचीली व अनिश्चित रही जब तक कि अन्तिम क्षण न आया और जिसकी नीति उस समय की अपथा अनीत वान में बहुत साफ और सम्बद्ध मालूम हाती थी। वह प्रधान रूप से प्रशिया का राष्ट्रपानी था जा यह विश्वास करता था कि प्रशिया के हित यह मांग करते हैं कि वह सार उत्तरी जमनी पर अधिार जमावे और जमन विपया में से आस्ट्रिया को अलग कर दे। अत डेमाक आस्ट्रिया और फ्रांस तक के प्रति उसकी नीति बवल एक ही महान् परीक्षण से जानी जा सकती है—प्रशिया राय के हित। बाकी सब केवल विस्तार व विधि की बात थी जो क्षणिक परिस्थितियों से निर्धारित होती थी और जसाकि वह यूरोप की राजनीति के स्वभाव में अपने तीक्षण परिभान के बल पर सम्भता था। जमनी का एकीकरण प्रशिया के हित से नैमित्तिक और उस दिशा में अनन्त खोज से सतम्न प्रयोजन था। (Europe Since Napoleon, pp 291 92)

Suggested Readings

Clark C W	<i>Franz Joseph and Bismarck The Diplomacy of Austria before the War of 1866</i>
Dawson W H	<i>Evolution of Modern Germany</i>
Dawson W H	<i>The German Empire 1867 1914</i>
Ergang R E	<i>Herder and the Foundations of German Nationalism 1931</i>
Friedjung H	<i>The Struggle for Supremacy in Germany (1859 1866) 1936</i>
Gooch C P	<i>Germany</i>
Headlam	<i>Bismarck and the Foundation of the German Empire</i>
Henderson E F	<i>A Short History of Germany</i>
Marriont and Robertson	<i>The Evolution of Prussia</i>
Oncken H	<i>Napoleon III and the Rhine The Origin of the War of 1870 71 1892</i>
Priest	<i>Germany Since 1740</i>
Taylor A J P	<i>The Course of German History</i>
Valentin V	<i>1848 Chapters in German History 1940</i>
Willoughby L A	<i>The Romantic Movement in Germany 1930</i>

रूस १७६६ से १८७० तक

(Russia from 1796 to 1870)

यद्यपि रूस जार पीटर और कैथरीन महान जैसे व्यक्तियों के कारण महत्ता प्राप्त कर चुका था तथापि यह यूरोप के अन्य प्रगतिशील देशों से पिछड़ा हुआ था। यह इसी दयनीय अवस्था में उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक रहा। इसके बाद यहाँ मुज़ारेदारी (Serfdom) समाप्त कर दी गई और देश का उद्योगीकरण हुआ जिसके कारण देश में उदार और क्रान्तिकारी विचारधाराओं का जन्म हुआ। किन्तु इसका यह आशय नहीं कि रूस ने यूरोप के विदेशी मामलों में महत्वपूर्ण भाग नहीं लिया। यह तथ्य है कि रूस को एक महान् शक्ति माना जाता था और अन्तर्राष्ट्रीय मामलों की शतरंज की विसात पर उसकी प्रत्येक चाल भय, चिन्ता और दिलचस्पी से देखी जाती थी।

जार पॉल प्रथम (Czar Paul I) (१७६६-१८०१)—कैथरीन द्वितीय की मृत्यु के पश्चात् जार पॉल प्रथम १७६६ में रूस के सिंहासन पर बैठा। उसके राज्यारोहण के तुरन्त बाद देश के प्रशासन में बहुत से परिवर्तन किए गए। एक शाही घोषणा हुई कि रूस के सिंहासन पर 'ज्येष्ठाधिकार' के सिद्धान्त के अनुसार उत्तराधिकार होगा। जनता का वेश, आचार और व्यवसाय भी बदल दिए गए। सैनिक अनुशासन कड़ा कर दिया गया। प्रिय दरबारी लोग जो सैनिक पथ-संचलन में बप में केवल एक बार भाग लेते थे तथा पुराने सैनिक जो कमी छावनी में गए ही नहीं थे उन्हें निश्चयप्रति नियमित रूप से सैनिक कवायद में शामिल होना पड़ता था। प्रशिया की सेना की शिक्षा पद्धति और वेश को अपना लिया गया। प्रशासन के अधिकारियों में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए गए। रूस के वित्त विभाग में भ्रष्टाचार को हटाने के प्रयत्न किए गए। जार पॉल (Czar Paul) जन्म से ही निदय, स्वेच्छाचारी था और पुराने रूसी ज्ञान का रुढ़िवादी अनुयायी था। दरबार में भ्रष्टाचार के नियम लागू किए गए और उनका इतनी कठोरता से पालन किया जाने लगा कि प्रत्येक दिन दरबार की हाज़िरी दरबारियों के लिए एक समस्या बन गई। वे लोग दरबार में जाने से काँपा करते थे। राजकुमारों और महिलाओं को अपनी गाड़ियों से उतरकर बर्फ पर खड़ा हो कर गुजरती हुई शाही गाड़ी को सलाम करना पड़ता था। यास्का में राज्याभिषेक के समय पोलैण्ड के प्रतिनिधियों ने अपने राजा को छज्जे के किनारे, जहाँ खड़ा होने का आदेश दिया गया था लटके देखा। देश में एक प्रकार का अराजक स्थापित हो गया था।

विदेशी मामलों में पान न पर्सिया (Persia) और ज्योजिया (Georgia) से रूसी सत्ताएँ जुदा लीं। उगन पालण्ड व प्रमुख माननाय व्यक्तिना का कर्म ग गिना कर दिया। उगन स्टेनीस्लास (Stanislas) का मेंट पीटमबग बुनाया और उसका राजाचिह्न स्वागत किया। उसान पालण्ड व नता से यहाँ तक बड़ा कि वह व्यक्तिगत रूप से पालण्ड व विभाजन व पक्ष में नहा था। उसन सत्र से मुनह रसन की नीति की घोषणा की। उगन अनुभव किया कि रूस १७५६ से युद्ध में सलग्न रहा है और अत्र वह धक गया है और अब वह शांति का इच्छुक है। उसन घोषणा की कि वह रूस द्वारा की गई सारी संधियाँ का निवाहना चाहता है और वह सब प्रचार से प्राप्त क प्रजातंत्र और जकोबिनवाद का विरोध करगा। कथरीन की बाल्टिक नीति का अनुसरण किया गया और डेमाक से घनिष्ठ मंत्री सम्बंध स्थापित किए गए। स्वीडन से भी मंत्री सम्बंध स्थापित किए गए। पाल अपने वचन का पालन करने वाला था। रूस की एक बड़ी सेना वापस बुला ली गई और रहायन नदी के क्षेत्र में ६० हजार सैनिक भेजने की योजना भी छोड़ दी गई। सेना में दमन द्वारा भर्ती रोक दी गई। किंतु देख रेस की व्यवस्था ढीली नहीं की गई। प्राप्त शान्ति के प्रति उसकी शत्रुता उसके लिए धम बन गया था। बाद में जब वह बोनापाट का मित्र बना, उसका मुख्य कारण यह था कि उसने नेपोलियन को जेकोबिनवाद का शत्रु माना था। रूसी प्रजाजना को पश्चिम की यात्राओं से लौट आने की आज्ञा दी गई थी। समाचारपत्रों और नाटयगहों पर कडा प्रतिबंध लगाया गया। फ्रांसीसी नागरिकों का रूस की सीमा में आने से पूर्व बोबन वश के किसी राजकुमार द्वारा माय पारपत्र दिखाना पड़ता था। कभी-कभी तो पेरिस के नवीन शिष्टाचार के विरुद्ध पाल का रोष उपहासजनक हो जाया करता था। ऊँचे कालर (collars) को प्रजातंत्रवाद का प्रतीक माना जाता था। राजधानी में गोल टोपी पहनने वालों का पुलिस पीछा किया करती थी, यहाँ तक कि एक राजदूत को भी अपनी टोपी उतार कर बदलनी पड़ती थी।

पाल जसी मनोवृत्ति वाला राजा अधिक समय तक बिना विपत्ति में पड़े नहीं रह सकता था। उसकी सबसे प्रथम राजनतिक पराजय स्वीडन (Sweden) से हुई। वह उससे मैत्रीपूर्ण सम्बंध रखना चाहता था, किन्तु उसकी अवहेलना कर दी गई। फ्रांस से भी उसके सम्बंध असंतोषजनक ही रहे। १७६७ में पाल ने नाइट्स आफ सेंट जान को अपना संरक्षण प्रदान किया। यूरोप भर के सामंतों को एक सूत्र में पिरोने की एक चाल चली गई ताकि समाज की नींव पर कुठाराघात करने वाले सम्मनता के विचारों के आक्रमण का मुकाबला किया जा सके। वह अठारहवीं शताब्दी का धर्मांध व्यक्ति था। यद्यपि उसमें कथरीन जसी बनावटी उदारता नहीं थी फिर भी वह यूरोप की कूटनीति में यशस्वी होने की अभिलाषा रखता था। वह 'नाइट्स आफ सेंट जान' द्वारा ग्राण्ड मास्टर के पद पर चुना गया। हालण्ड पर दण्ड और रूस का समुक्त अभियान असफल रहा और रूस को बड़ी हानि उगानी पड़ी। १७६६ में नेपोलियन ने माल्टा द्वीप रूस का दे दिया क्योंकि जार सेंट जान का 'ग्राण्ड मास्टर' था। नेपोलियन द्वारा आस्ट्रिया के विरुद्ध मैरिंगो (Marengo)

के युद्ध में विजय प्राप्त करने पर वह उग्रवा आदेश करने लगा था। दानापाट ने प्रगट रूप से पॉल का साडीनिया, नपन्न और राम म दिलचम्पी का माना और इससे भी पाल का बड़ा सन्तोष हुआ होगा।

१८०० म नेपोलियन से दानचीत आग्रह हुई। माल्टा पर ब्रिटेन न अधिकार कर लिया और इस द्वीप को पुन जार का नहीं लौटाया गया। पॉल न अपना शोध १८०० की द्वितीय सशस्त्र तटस्थता संधि म व्यक्त किया। रूस प्रनिया स्वीडन और डेमाक संधिया द्वारा परम्पर साथी बन गए। यह नियम किया गया कि प्रत्येक तटस्थ देश के जहाज साथी राष्ट्रों की बन्दरगाहों और शत्रु राष्ट्रों के समुद्री तट स यात्रा कर सकेंगे। युद्ध की सामग्री के अतिरिक्त युद्ध-सलमन राष्ट्रों को जाने बाल मान तटस्थ देशों के जहाजों पर स्वतंत्रता से जा सकेंगे। तटस्थ जहाजों को पर्याप्त कारणों पर ही पकड़ा जायगा और तुरन्त ही उनके अपराधों की जांच की जाएगी। समान और शीघ्र याय व्यवस्था अपनाई जाएगी। नेपोलियन न जार से सहयोग किया। १८०१ मे जार ने परिस म अपना एक प्रतिनिधि भेजा। उसने नेपोलियन का सुभाव दिया कि वह इंग्लैंड पर आक्रमण करे। नेपोलियन न उसका सुभाव स्वीकार कर लिया। उसने नेपोलियन से कहा कि वह पुनगाल स्पन और समुक्त राज्य अमेरिका को इंग्लैंड के विरुद्ध करके अपने साथ मिला ले। उसने भारतवर्ष पर आक्रमण करने की योजना बनाई। योजना इस प्रकार थी, कि एक रूसी सेना बुखारा और खीवा के माग से चले। एक फ्रांसीसी सेना डेन्यूब नदी के किनारे स आगे बने। दूसरी फ्रांसीसी सेना हरात (Herat) और कंधार के माग से आगे चले और ये सब मिलकर भारतवर्ष पर आक्रमण करें। जार न शत्रु देशों में स हाकर इस लम्बी यात्रा के खतरो का अनुमान नहीं लगाया। इसम क्या आश्चय है कि ब्रिटेन न भी प्रतिरोधात्मक ञायवाहों की हा। १८०१ मे रूस, स्वीडन और डेमाक के जहाजों पर रोक लगा दी गई। पाकर और नैल्सन (Nelson) के निरीक्षण म एक जहाजी बड़ा बाल्टिक सागर भेजा गया। जिन राष्ट्रों का भय हुआ उन्होंने बड़ी तीव्रता स युद्ध की तयारियाँ आरम्भ कर दी। किन्तु इससे पहले ही जार की हत्या कर दी गई।

यह बात उल्लेखनीय है कि हत्या से बहुत महीना पहले ही जार में पागल पन के लक्षण प्रगट हो गए थे। उसे अकारण असयन रूप स शोध के दौरे पडत थे। उसके व्यवहार म सामंजस्य नहीं रहा था। लोगो की बिना युक्ति के पदोन्नति और पगबन्ति होती थी। जार से सगप के आघार पर प्रत्येक बग के लोगों को दण्ड दे दिया जाता था। अद्भुतक सता के पदाधिकारियों को छोटे-छोटे अपराधों पर पीटा गया कद कर दिया जाता था। मंत्रियों को भूल से बड़े गए एक ही शब्द पर दण्ड निकाला द दिया जाता था। अनक भाग्यहाना को साइबरिया भेज दिया गया था। एक-एक करके उनमें अपने सारे स्वामिनक सेवकों को दण्ड बना लिया था। बहुत स उच्च पदाधिकारियों का शूट दिया गया दण्ड से निकाल लिया गया और अपमानित कर दिया गया था। मन्त्रि उन्मे पूजा किया करके से क्योंकि वह उनक पदाधिकारियों का अपमान न करता था। आगवापुत्र वानावरण भगवनीय हा गया था। इन

परिस्थितियों में पड़कर रचा गया और गाँव, १८०१ में जार को निरदयता से गला घोट कर मार डाला गया।

एलेग्जेंडर प्रथम (Alexander I) (१८०१-२५)—१८०१ में जार पॉल का उत्तराधिकारी एलेग्जेंडर प्रथम बना और वह १८२५ तक राज्य करता रहा। उसे एक



एलेग्जेंडर प्रथम

पर उसने जोर डाल कर १८१४ की अधिकार पत्र की घोषणा कराई थी। स्वयं भी उसने पोलण्ड के क्षेत्र को उदार सविधान प्रदान किया था। इसी प्रकार का सविधान विभिन्न सम्मेलन के पश्चात् रूस ने फिनलण्ड को दिया था।

यह ध्यान रखने योग्य है कि १८०७ के युद्ध के पश्चात् एलेग्जेंडर ने नेपोलियन से टिल्सिट की संधि करने के पश्चात् महाद्वीपीय व्यवस्था (Continental System) को क्रियाविन्त करने में नेपोलियन का साथ दिया था। यह व्यवस्था थोड़े समय तक चलती रही। किंतु अनेक कारणों से एलेग्जेंडर को नेपोलियन से असहयोग करना पड़ा। १८१२ में नेपोलियन ने रूस पर आक्रमण कर दिया। इसके पश्चात् उसने यूरोप की अन्य शक्तियों से सहयोग करके नेपोलियन का नाश किया। नेपोलियन के पतन के पश्चात् यह विभिन्न सम्मेलन (१८१४-१५) में अत्यंत प्रभावशाली व्यक्ति था। उसके पास एक विशाल सेना थी जिसने बल पर वह अपने दृष्टिकोण को अन्य शक्तियों से मनवा सकता था। इसी कारण एलेग्जेंडर विभिन्न सम्मेलन में अपने दैर्घ्य के लिए बहुत कुछ प्राप्त कर सका।

विभिन्न सम्मेलन के पश्चात् एलेग्जेंडर के विचार तेजी से बदले। १८१८ में वह आस्ट्रिया और प्रशिया से सहयोग करके यूरोप में यथास्थिति (Status quo)

१ नेपोलियन ने एलेग्जेंडर के विशय में लिखा था "मैं एलेग्जेंडर को चाहता हूँ, उसे भी मैंने चाहना चाहिए। यदि वह स्त्री होता तो मैं उसे प्रेम करने लगता।"

बनाए रखन के लिए तैयार था। १८२० में वह विल्जुल बदल गया। १८२० में ट्रोप्पू (Troppau) सम्मेलन में उसने सबजनिक रूप से अपने को मेटरनिक का अनुयायी घोषित किया और कहा कि वह इसका यूरोप में क्रान्तिकारी विचार धारा को दमन करने के लिए मन चाहे रूप से प्रयोग कर सकता है। वह नेपोल्य, पीडमोंट और स्पन के विद्रोहों का दबान के लिए अपनी सना भेजने को तैयार था। मेटरनिक रूस की विशाल सैन्य शक्ति से डरता था इसलिए उसने इसका उत्साह कम कराया था। एलेग्जेंडर शेष जीवन भर प्रतिक्रियावादी (reactionary) ही रहा।

जब ग्रीस ने तुर्की के विरुद्ध विद्रोह किया तो पूरी सम्भावना थी कि रूस अपनी सेनाएँ विद्रोह को दबाने के लिए भेजेगा। एलेग्जेंडर की भी बड़ी इच्छा थी, और उस अर्ध दशा ने उत्साहित भी किया था किन्तु वह मेटरनिक के प्रभाव में था। उसका विचार था कि मस्यता के सूर्योत्थ से पहले ही विद्रोह का जल कर समाप्त हो जाना चाहिए। परिणामतः मौलडेविया में राजकुमार हिपसिलण्टी (Hypsilanti) का विद्रोह बुरी तरह अमफल हुआ। मारिया द्वीप में जब ग्रीक लोगों ने विद्रोह का झण्डा उठाया उस समय भी एलेग्जेंडर ने उनकी सहायता नहीं की।

एलेग्जेंडर अध्यात्मवाद, सुधारवाद, स्वच्छाचारिता और साम्राज्यवाद का अद्भुत मिश्रण था। इसलिए कभी वह उदार और कभी प्रतिक्रियावादी हो जाता था। लॉड बायरन (Byron) ने उसके विषय में एक कविता लिखी है जो नीचे दी जाती है

' Now half dissolving to a liberal thaw,
But hardened back whenever the morning s raw
With no objection to true liberty,
Except that it would make the nations free

निकोलस प्रथम (Nicholas I) (१८२५-५५)—अपनी मृत्यु से पहले ही एलेग्जेंडर ने कान्स्टैन्टाइन (Constantine) को छाटकर निकोलस प्रथम का अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था। निकोलस प्रथम प्रतिक्रियावादी होने के कारण काफी बदनाम था। इस कारण रूस के सुधारवादियों ने दिसम्बर १८२५ में विद्रोह किया। उनका नारा था 'हमें सविधान और कॉन्स्टैन्टाइन चाहिए'। उन्होंने कान्स्टैन्टाइन के शासन की माँग की, जो अपने उदार विचारों के लिए प्रसिद्ध था। जनता इतनी अज्ञानता में थी कि उसने सविधान पर कॉन्स्टैन्टाइन की पत्नी समझा (They mistook Constantine for wife of Constantine)। दिसम्बर विद्रोह का बड़ी निष्फलता से दमन कर दिया गया और निकोलस प्रथम ने ३० वर्ष राज्य किया। प्रतिक्रिया उसके राम रोम में बनी थी। वह स्वच्छाचारिता की श्रुति था। स्वयं की नीति में तानाशाही का राज्य छा गया। स्वयं में प्रगतिशील विचारों पर प्रतिबंध लगा दिया गया। जनता की धावाज को प्रमारित करने के सारे साधनों पर नियंत्रण हो गया। विचारों और कानों की स्वतंत्रता के धारे बन्द कर

दिए गए। १८२६ में उसने तर्ही कार्यालय का तीसरा विभाग (Third Section of Imperial Chancery) बनाया जिसका कार्य राजनतिक तथा सामाजिक नवीनताएँ प्रचलित करने वाली की खोज करना तथा उन्हें दण्ड देना था। यह बात उल्लेखनीय है कि तृतीय विभाग का कार्य रूस के इतिहास में बाला अध्याय है। तृतीय विभाग का अध्ययन रूस की पुलिस का संचालक था और उस पद देने, बंद करने देशनिवाला देन और बिना रोक-टोक के दण्ड देन के असंमित अधिकार प्राप्त थे। तृतीय विभाग द्वारा पत्राएँ गए आतंक का मुकाबला रूस के घमं पाया लयो के अत्याचार ही कर सकते थे। निकलस ने अपनी प्रजा को पश्चिमी यूरोप के उदार विचारों की झूत से बचाने का प्रयत्न किया। इस उद्देश्य से उसने रूस के नागरिकों द्वारा विदेश यात्रा बन्द कर दी। विदेशी पुस्तकें बिना पूरी जांच के रूस में नहीं आने दी जाती थीं। विद्यार्थियों को विश्वविद्यालयों में अध्ययन करने से हतोत्साहित किया जाता था। दण्ड शास्त्र का अध्ययन पाठ्यक्रम में निकाल दिया गया। युवाओं को उच्च शिक्षा के लिए विदेशों में भेजना बन्द कर दिया गया। समाचारपत्रों पर बड़ा कठोर सेंसर (Censor) लगाया गया। यदि किसी भी व्यक्ति के पास निषिद्ध पुस्तकें मिल जातीं अथवा भूल से कोई बात कह देता था तो उसे साइबरिया के किसी भाग में देशनिवाला देकर भेज दिया जाता था। रूस में कोई नया व्यवस्था नहीं रह गई थी।

विदेश नीति के विषय में वह अपने को तानाशाही का प्रवर्तक समझता था और सारी प्रगतिशील विचारधाराओं को शत्रु मानता था। १८३१ में वह पोलैंड के विद्रोह के कारण बोरबन (Bourbon) वंश की ओर से फ्रांस के विद्रोह में हाथ नहीं डाल सका था। १८३३ में उसने क्रान्तिकारी तथा प्रगतिशील आंदोलनों का दमन करने के लिए आस्ट्रिया और प्रुशिया के साथ पेरिस सम्बन्ध स्थापित किए। इस त्रिमुखी संधि ने यूरोपीय व्यवस्था में निकलस प्रथम को केन्द्रीय व्यक्ति बना दिया और रूस की प्रतिष्ठा बढ़ गई। १८४६ में जब हंगरी ने आस्ट्रिया के विरुद्ध विद्रोह करके स्वयं को स्वतंत्र गणतंत्र घोषित किया तो निकलस ने अपनी सेनाएँ आस्ट्रिया की सहायता के लिए भेजीं। उसने जर्मनी के राष्ट्रीयता आंदोलन के विरुद्ध भी हस्तक्षेप करने की धमकी दी। निकलस के आतंककारी रूस के कारण ही १८४६ में फ्रांस-प्रुशिया सन्धि द्वारा प्रस्तावित युद्ध को प्रुशिया के विलियम चतुर्थ ने स्वीकार नहीं किया था।

जिस समय वह सिंहासन पर बैठा तब ग्रीक लोग अपने स्वातंत्र्य युद्धों में सलग्न थे। आरम्भ में जर्मन इंग्लैंड और फ्रांस से सहायता करके ग्रीकों की तुर्कों के विरुद्ध सहायता की। रूस के बड़े ने नवारिना (Nivarinno) के समुद्री युद्ध में भाग लिया और तुर्कों और मिथ के बड़े को नष्ट किया। यद्यपि रूस की मृत्यु के पश्चात् फ्रांस और इंग्लैंड ने युद्ध बन्द कर दिया तथापि रूस ग्रीस की सहायता करता ही रहा। परिणामतः १८२६ में ग्रीस (Greece) की स्वतंत्रता को मान्यता दी गई। निकलस द्वारा की गई ग्रीस की सहायता का काम महत्व नहीं था।

महमद अली (Mehmet Ali) ने ग्रीक स्वतन्त्र युद्ध में तुर्कों के सुलतान की गणतन्त्रता की थी। युद्ध के पश्चात् उसकी सेवाओं के उपहार स्वरूप उसे क्रीट (Crete) का द्वीप बं दिया गया था। मेहमद अली ने इनसे पर्याप्त नहीं समझा और सीरिया (Syria) और एशिया माइनर (Asia Minor) पर अधिकार कर लिया। जब वह कन्स्टान्टिनोपल (Constantinople) की ओर बढ़ने लगा तो तुर्कों के सुलतान ने रूस की सहायता मांगी। इन परिस्थितियों में अदवार स्केलेसी (Unkiar Skelessi) की १८३३ में संधि हुई। इसके अनुसार रूस ने तुर्कों की सहायता करना स्वीकार किया और यह निणय हुआ कि जब भी रूस युद्ध में लगे होगा दारदनेलस का बंदरगाह में रूस किन्हीं भी देश के जहाज़ी बंदे का नहीं रहने दिया जाएगा। इस संधि के अनुसार रूस काता भाग का स्वामी हो गया और अन्तमण से उसकी सुरक्षा हो गई। इसके द्वारा रूस का नाम अन्तमहासागर की ओर भी धुन गया।

१८६० में रूस ने ब्रिटन आस्ट्रिया और प्रणिया के साथ मित्र कर तुर्कों की अगुणा बनाए रूस का निणय किया। चारा गकिनया इग्रेण्ट में मिनी और सुनतान की सहायता करने का निणय किया। चतुर्मुखी सगठन का प्राय न अपना अपमान समझा और युद्ध की सम्भावना बढ़ गई। किन्तु कुछ फिनिश न फ्रांस के प्रधान-मन्त्री को पदच्युत कर दिया। यूरोपीय गकित्या व सामूहिक काय के परिणाम स्वरूप महमद अली व पुत्र इब्राहीम को मीरिया में निकाल दिया गया और उसे १८४१ में आत्ममर्षण करना पड़ा। १८६१ की संधि के अनुसार सागे गकिनया न दारदनेलस (Dardanelles) और बॉम्फारस के माग में काता समुद्र में गम्ता दन व अधिकार का मायता दी। रूस ने १८७३ की संधि का रह कर दिया।

१८४४ में निकनस प्रथम सन्तन गया और उमन तुर्कों के विभाजन का प्रस्ताव किया क्योंकि उसे तुर्कों के पतन की पूरी आशा हो गई थी। उमन प्रस्ताव किया कि इग्रेण्ट मिश्र और क्रीट (Crete) पर अधिकार कर ले और उस चतर्काली द्वापसमूह पर अधिकार करन दिया जाए। उमने यह भी कहा कि वह कन्स्टान्टिनोपल पर अधिकार नहीं करना चाहता। ब्रिटिश सरकार ने यह प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया।

ब्रिटन का तुर्कों के मामले में न हाथ डालत देखकर उमन अनेक ही यह काय करने की मोची। उमने तुर्कों के ईसाइया की रक्षा का भार अपने ऊपर ले लिया। किन्तु उसकी इस चेष्टा का विरोध हुआ निकनस ने १८५३ में डब्लू नगी व प्रदा पर अधिकार करन की आना द दी। इन परिस्थितियों में ग्रीमिया युद्ध आरम्भ हुआ। विदेन, फ्रांस और गार्डीनिया ने सामूहिक रूप से रूस के आक्रमण का रकने तथा तुर्कों की सहायता व निण सामूहिक माचा लिया। ग्रीमिया का युद्ध (Crimean War) १८५४ से ५६ तक चला। इस युद्ध व चतत हुए ही १८५५ में निकलन की शूर्य हो गई।

यह स्पष्ट है कि निक्लस की विदग-नीति गतिगाली था और उसका प्रभाव सारे यूरोप पर छाया हुआ था।

हम लिपमन द्वारा की गई निक्लस प्रथम और स्पन के फिलिप द्वितीय की तुलना से चर्चा का समाप्त करेंगे। निक्लस फिनिप की तरह उम युग का स्वेच्छा चारिता की मूर्ति था। वह स्वेच्छाचारिता का प्रचारक और उम युग की प्रगति की भावना का प्रतीक था और अत्यन्त कठोर हठधर्मी स मृतप्राय मिद्वान्तो की रक्षा के लिए जो ताड़ कर लड़ने वाला था। जिस प्रकार मालहवी गताग म स्पन के राजा सुधारो के कट्टर विरोधी थे उसी प्रकार यह भी गणतन्त्रवाद का कट्टर शत्रु था। दाना ने ही एक जसे हथियार प्रयुक्त किए यथा स्पन ने घम-न्यायानय (Inquisition) और रूस ने तृतीय विभाग। उन्होंने अपनी विचारधाराओं को यूरोप में फन्ती हुई प्रगतिशील विचारधाराओं में जानबूझ कर बरखम भ्रूता रखा था। किन्तु स्पन की तरह रूस में भी राजग्राही की नीव प्रजा की श्वण्ड स्वामिभक्ति और उपमा पर आधारित थी। किन्तु यह उनकी दुबलता का भी प्रताक था। क्याकि एक बार जनता में राजनतिक जाग्रति हो जान पर इसका मारा भवन चूर धर हाकर गिर जाना स्वाभाविक था। १८५५ तक यह जाग्रति रूस में नहीं आई किन्तु श्रीमिया क युद्ध का रूस की जनता पर वही प्रभाव हुआ जो स्पन में स्पन के जहाजी बड व नष्ट हो जाने पर हुआ था। इससे उनका तत्कालीन राज्य-व्यवस्था तथा दंग की प्रजय गतिक में विश्वास समाप्त हो गया था।

एलेग्जेण्डर द्वितीय (Alexander II) (१८५५-८१)—श्रीमिया युद्ध के दौरान में ही एलेग्जेण्डर द्वितीय गद्दी पर बडा। इस ही सधि वार्ता करके १८५६ की अपमानजनक पेरिस सधि पर हुस्ताक्षर करने पडे थे। जहा तक काला सागर का सम्बन्ध है आगामी चौदह वर्षों में रूस का प्रभाव पूणत नष्ट हा गया।

श्रीमिया युद्ध के समाप्त हो जाने पर उसने आन्तरिक व्यवस्था की ओर ध्यान दिया। देश में बडा असंतोष था। जनता में देश के स्वेच्छाचारी शासन के प्रति घोर बटुता थी क्योंकि इसके ही कारण श्रीमिया के युद्ध में पराजित हाकर १८५६ की अपमानजनक सधि करनी पडी थी। इसलिए जनता को गान्त करने के लिए कुछ गुपार करन का निणय किया गया।

मुजारेदारी की समाप्ति (Abolition of Serfdom)—एलेग्जेण्डर द्वितीय द्वारा सबसे बडा सुधार मुजारेदारी को १८६१ में समाप्त कर देना था। रूस मुख्यत एव खेतिहर देग था और देग में बटुत बडी सख्या मुजारो की थी। रूस की खेती का दस में से नौ भाग भूमि या ता राजा की थी या गाही परिवार अथवा अय लगभग १ लाख गाही परिवारों की थी। मुजारे इस भूमि पर काम करते थे और जन्मस्थान का बिना अपन स्वामी की आज्ञा क छाड नहीं सकते थे। जागीरो के बिचने के साथ साथ मुजारे भी बिक जाया करते थे। मुजारे अपन अपने स्वामी को कर देते धारीरिक परिश्रम करते और उनके प्रति स्वामि भक्ति रखते थे। कभी-कभी जागीर दार अपने मुजारो का नगरो में कमाने के लिए भेज देते थे और उनकी मजदूरी का

कुछ भाग जागीरदार का मिलता था। कभी मुजारा को धरतू नौकरों का काम करना पड़ता था। अतः कभी-कभी उनकी अवस्था गुलामा जसी हो जाया करती थी। बहुत कम जागीरदार उदार और कृपासु हान थे। अधिकांश अत्याचारी ही होते थे। मुजार गरीब, निरक्षर और अस्वस्थ रहा करते थे। उनकी अवस्था बड़ी दयनीय थी।

एलेग्जेंडर ने अपना आज़ा साही जागीरों में काम करने वाले मुजारों का मुक्त करने का प्रयत्न किया। यद्यपि स्वामी जागीरदारों ने विरोध भी किया किन्तु जार ने मार्च, १८६१ में एक राजाणा द्वारा सारे रूसी साम्राज्य में मुजारदारी समाप्त करवा दी। मुजारा पर जागीरदारों के सारे अधिकार समाप्त कर दिए गए। वे इच्छा अनुसार कहा भी जा सकते थे। इस प्रकार की व्यवस्था की गई कि मुजारेदारी की अवस्था में जितनी धरती पर वे लागू होती करते थे उससे आधी धरती उन्हें मिलती के लिए मिल जाए। धरती का सरकार खरीद कर किसानों का ४६ वार्षिक किश्तों पर देती थी। किन्तु खेती की धरती किसानों का व्यक्तिगत रूप में नहीं अपितु ग्रामों की मीर (पंचायत) का दी गई थी। मीर का किसानों से राजस्व और किश्तें उगाहने का काम सौंपा गया। मुजारा की मुक्ति जार का महान मानव हित का कार्य था। यह रूस प्रगति करना चाहता था ता मुजारदारी चले नहीं सकती थी। मुजारेदारी की समाप्ति के कारण बहुत से लोग रूस के कारखानों में काम करने लगे थे। इस प्रकार देश में उद्योगीकरण का भी प्रोत्साहन मिला था। खेती की भूमि में बड़ा सरोरि हुई और उपज भी बढ़ गई। धरती की कीमत भी बढ़ गई। राज्य को करोड़ों से अधिक आय होने लगी। मान्य विद्वानों में भेजा जाने लगा। किसानों की हालत भी सुधर गई।

मुजारेदारी की समाप्ति केवल बरदान ही नहीं थी। अनेक किसानों की हालत पहले में भी बराबर हो गई। उन्हें दी गई धरती इतनी घाटा थी कि उनका जीवन यापन भी कठिन था। राज्य का दी जाने वाला किश्तों का भार भी उन पर बहुत था। जागीरदारों के अत्याचार समाप्त हुए तो मीर के अत्याचार सहन करने पड़ते थे। उन्हें बर उगाहने वाले और केन्द्रीय सरकार की पुलित लगे करती थी। राज्य के अधिकारियों का बर्ताव बठार था। आलापक कहते हैं कि जार ने किसानों को जागीरदारों का मुजारेदारी में मुक्त करने राज्य के मुजारेदार बना दिया था।

न्यायिक सुधार (Judicial Reforms)—१८६२ में न्याय प्रणाली में भी कुछ सुधार किए गए। दीवानी और फौजदारी के मुकदमों का गामका स हटा कर पाश्चात्य प्रणाली पर बनाए गए न्यायालयों को सौंप दिया गया। न्यायाधीशों का चुनाव जनता को सौंप दिया गया। जिला और प्रान्तों में भी न्यायाधीश नियुक्त किए गए। सीनेट का सर्वोच्च न्यायालय बना दिया गया। देश के कानूनों की महिमा बनाने की घोषणा दी गई। राज्य की धोरण में भी कमीस नियुक्त किए गए। फौजदारी मुकदमों का न्याय करने के लिए जुरी प्रणाली अपनाई गई। मुकदमों के गुप्त रूप में न होकर खुली सदासतों में किए जाने लगे थे। केवल राजनैतिक अपराधों के विषय

म आई ध्वरस्था गहा दुई थी। अपराधियों का भ्रम भा बिना मुक्तम क दण्ड दिया जाता था।

जम्स्टवोस (Zemstvos)—१८६४ की एक राजाणा क अनुगार रुम को ३८ प्रणामनिक प्राता म बाट कर घापणा की गई कि प्रत्येक प्रात म एक सभा अधीन जम्स्टवोस होगी। इसम जागीदारी किसानों और नागरिकों के प्रतिनिधि होंगे। इसका कार्य गात्रजनिक निर्माण चक स्कूल, जलखानों, जन-स्वास्थ्य और गरीबों की गहायता इत्यादि की व्यवस्था करना होगा। इसे कर लगान का अधिकार दिया गया। प्राता क राज्यपालों का जम्स्टवोस के नियमों को रद्द करने का अधिकार दिया गया। यद्यपि इन सभाओं का कार्य क्षेत्र और अधिकार सीमित थे य सभाएं जनता क लिए राजनीतिक शिक्षा प्राप्त करने के स्थान थे। यह स्वायत्त गामन और मत्ता के विकेंद्रीकरण की दशा म महत्त्वपूर्ण कदम था।

पोलण्ड का विद्रोह (१८६३) (Polish Revolt of 1863)—१८६३ म जार की सुधार नीति को बड़ा धक्का पहुँचा। इस वष पोलण्ड की जनता ने रुम के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। उन्हें नेपोलियन तृतीय तथा यूरोप के अन्य देशों से सहायता की आशा थी। किसी भी देश स सहायता न मिलने तथा अपने साधन पचापत न हाने के कारण उनका विद्रोह का बड़ी कठोरता से दमन कर दिया गया। बिस्माक ने रुस को सहायता देने के लिए कहा किन्तु उसने अपना काम बिना किसी की सहायता के ही कर लिया था। विद्रोहियों तथा गणहत्यास्य व्यक्तियों को बड़े कठोर दण्ड दिए गए। स्कूलों और विश्वविद्यालयों म पोलिश भाषा की शिक्षा बन्द कर दी गई। पोलण्ड के अधिकारियों को पदच्युत करके रूसी अधिकारी नियुक्त कर दिए गए। पोलण्ड निवासियों को सारे अधिकारों से वंचित कर दिया गया। पोलण्ड का रोमन कॅथोलिक चक जो दंगलियों की धार्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता था उससे सारी सुविधाएं छीन ली गई। विद्रोही जागीरदारों को दुरी तरह कुचल दिया गया। पोलण्ड के विद्रोह ने एलज़बेथर द्वितीय का पूरी तरह प्रतिनिध्यावादी बना दिया और वह जीवन भर कट्टर बना रहा। समाचारपत्रों पर बड़ा प्रतिबंध लगा दिया गया। गुप्तचर पुलिस की संख्या बढ़ा दी गई और शिक्षा को हतोत्साहित किया जाने लगा।

पोलण्ड क विद्रोह के ध्वमावरोध पर बिस्माक के महान् कार्य के भवन तथा जार के साम्राज्य म रूसीकरण के कार्य का निर्माण हुआ। इसका भाशय यह था कि पोलण्ड के विद्रोह के कारण बिस्माक रुस को अपना सहयोगी बना सका था। यह उसने रुम का पोलण्ड के विरुद्ध सहायता देकर किया था। इस उपयुक्त अवसर पर सहायता देकर बिस्माक १८६६ और १८७० म नमश आस्ट्रिया और फ्रांस के विरुद्ध युद्ध क मौका पर रुम के तटस्थ रहने पर विश्वास कर सकता था। पोलण्ड के विद्रोह ने जार को सुधारवाद का कट्टर शत्रु बना दिया था। वह कबल प्रतिनिध्यावादी ही नहीं बना अपितु उसने रूसी साम्राज्य म अल्पमत गणतंत्रियों म रूसीकरण की नीति को लागू करने का प्रयास किया था। इस नीति का मुख्य प्रयास की

राष्ट्रीयता की भावना को कुचल देना तथा उन्हें रूस में आत्मसात कर लेना था।

विदेश नीति (Foreign Policy)—रूस की विदेश नीति त्रैमसिया युद्ध के समय तक बताई जा चुकी है। १८६५ में एलेग्ज़ेण्डर ने फ्रीट के प्रीवो का तुर्की के विरुद्ध विद्रोह करके प्रीस के एकीकरण की मांग करने को कहा था। १८७० में उसने बल्गार जाति को कुम्मुन्तुनिया के प्राचीन चर्च से पृथक् एक स्वतंत्र राष्ट्रीय प्राचीन चर्च की स्थापना करने के लिए उकसाया था। १८७० में एलेग्ज़ेण्डर द्वितीय पेरिस संधि की कालासागर सम्बंधी धाराओं का भंग करने में समय हुआ। उसने सेबस्टोपोल (Sebastopol) की मोर्चेबन्दी करके कालासागर में अपना बड़ा सट्टा कर दिया था।

बल्कान प्रदेश के ईमान्दा पर तुर्की का राज्य बड़ा दमनपूर्ण था। इसके कारण बासनिया और हर्ज़ोगाविना में विशाह हुए थे। १८७५ में बल्गारिया में विशाह हुआ। इन विद्रोहों को इतनी कठोरता और अत्याचार से दबाया गया कि चारों ओर से यह मांग होने लगी कि बल्कान से तुर्की को आमूल उखाड़ कर फेंक दिया जाए। यद्यपि ब्रिटेन ने बल्कान में क्रिस्टेनज़ की महत्ता नहीं की थी तथापि रूस ने उनकी सहायता की थी और इसके कारण १८७७-७८ में रूस और तुर्की में युद्ध छिड़ गया। थोड़े समय मुकामला करने के बाद तुर्की हार गया और उस रूस से १८७८ में सान स्टीफना (San Stefano) की संधि करनी पड़ी। विज्ञान बल्गेरिया का निर्माण हुआ। सुनतान का बासनिया और हर्ज़ोगाविना में मुधार करने पड़े। ओर का विशाल युद्ध-रूतपूर्ति के माध्य अर्मेनिया (Armenia) का थोड़ा-सा भाग तथा दोब्रुजा (Dobrudja) का भाग भी मिला।

सान स्टीफना की संधि का अर्थ यूरोपीय शक्तिशास्त्र में नहीं माना। ब्रिटेन और फ्रांसिया ता रूस से युद्ध करने पर उत्साह हो गए और कहा कि उन संधि का यूरोपीय शक्तियों के एक सम्मेलन के विचारार्थ रखा जाए। रूस युद्ध में प्रत्यक्ष भाग नहीं ले सका। परिणामतः बल्कान संधि के अनुसार बल्गेरिया का दो भागों में बाँट दिया गया और रूस का उगने द्वारा प्राप्त करने का भाग से वधित कर लिया गया।

रूस के उदारवादियों ने एलेग्ज़ेण्डर (Alexander) द्वितीय की नाति का समर्थन नहीं किया और देश भर में इसके विरुद्ध प्रचार करते रहे। परिणामतः अनेक गुप्त राजनयिक दल बन गए। देश का उद्योगीकरण के कारण भी देश में उन्नत प्रवृत्तियाँ पैदा हुईं। इसका परिणाम यह हुआ कि त्रान्निवारियों द्वारा एक बम स १८८१ में एलेग्ज़ेण्डर की मृत्यु हो गई।

Suggested Readings

Beazley
Rose
Skrine
Wallace

Russia from the Tsarist to the Bolsheviks
Development of European Nations
Expansion of Russia.
Russia.

पूर्व का प्रश्न

(The Eastern Question)

मिल्लर के मतानुसार पूर्व का प्रश्न की परिभाषा यूरोप में तुर्कों के साम्राज्य का लुप्त हो जाना का कारण उत्पन्न हुए शून्य की पूर्ति की समस्या कहा जा सकता है। जब तुर्क अपनी सत्ता का चरम गिस्तर पर थे, बलवान एगिप्ट माइनर सीरिया मसापोटामिया अरब मिश्र और अफ्रीका का लगभग सारे उत्तरी मसूद्दी तट पर गामन करते थे। किन्तु तुर्कों साम्राज्य का शन शन पतन हान लगा। १६६६ की कार्लाविट्रज की संधि का ठोक ही ओटोमान साम्राज्य का प्रथम प्रगमन कहा जाता है। यह इतिहास के उस क्रम का प्रथम चरण था जो दा गतादियो से भी अधिक काल तक चलता रहा। यह मत्व है कि कुछ अवसरों पर तुर्कों को कुछ अस्थायी रूप से लाभ हुआ किन्तु वास्तविक रूप से छिन भिन्न हान का क्रम निरन्तर चलता रहा और अंत में बलवान और उत्तर अफ्रीका में ओटोमान साम्राज्य पूर्णतः समाप्त हो गया। जहाँ तक बलवान राज्यों का सम्बन्ध है वहाँ बहुत सी ईसाई जातियाँ थी यथा सब बल्गारियन ग्रीक और रूमनियन इत्यादि। तुर्कों का शासन बड़ा अत्याचारी था और कभी-कभी इमाइया की सामूहिक हत्याएँ कर दी जाती थी : गणित जातियों का तुर्कों की सामर्थ्य के ह्रास तथा कुछ राष्ट्रीयता की भावना जाग्रत होने के कारण अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करने का प्रास्तावक मिला। रूस उनका सहायक था और कभी-कभी अन्य शक्तियों से यथा फ्रांस और इंग्लैंड में भी सहायता मिलती रहती थी। लाड मार्ले ने पूर्व के प्रश्न का एक अस्थिर तथा बुरी तरह विरोधी स्वार्थों का उल्लेख हुआ गारखण्डा बताया है जिसमें बमन्स्य रखने वाले धार्मिक विश्वास और ईर्ष्या करने वाली जातियाँ उलझी हुई थी। यह प्रश्न उनीसवीं शताब्दी में अनेक बार प्रकाश में आया और इन अवसरों को पूर्व का प्रश्न के विभिन्न पहलू कहा जा सकता है।

ओटोमान साम्राज्य के पतन का इतिहास १६६६ में आस्ट्रिया द्वारा हंगरी को हथिया लेने के समय में आरम्भ होता है।

सर्बिया (Serbia)— सब जाति ने तुर्कों के शासन के विरुद्ध विद्रोह का झंडा उठा उठाया। उन्होंने काराजात्र नाम के जम से किमान व्यक्ति का नेतृत्व में १८०४ में अपना संध आरम्भ किया। रूस ने १८१२ तक इस आन्दोलन का समर्थन किया था। किन्तु नपोलियन द्वारा रूस पर आक्रमण करने के कारण जार का

तुर्की में १८१२ में संधि करनी पड़ी थी। तुर्की ने अक्सर से लागू उठाकर पुनः संधियाँ पर अपना अधिकार जमा लिया। किन्तु मिलाग ओत्रेनाविच के नतत्व में पुनः विद्रोह हुआ और सुततान ने १८२० में ओत्रेनाविच का संधियाँ की जनता का गिरोमणि मान लिया। ओत्रेनोविच ने रूस की सहायता से संधियाँ की स्वतंत्रता के लिए संधि चालू रखा। १८३० के आरम्भ होने तक संधियाँ और तुर्की के संधि केवल नाममात्र के रह गए थे। संधियाँ पर ओत्रेनोविच वंश के सामन्त वंशक्रमानुगत परिपाटी के अनुसार शासन करते रहें।

ग्रीक स्वातन्त्र्य युद्ध (Greek War of Independence) — इसके पश्चात्



तुर्की के विद्रोह का भडा उठाने वाले ग्रीक थे। उन पर बहुत भारी बर लगाए गए और अन्ध प्रकार से भी उन पर बडा अत्याचार हुआ था। अठारहवीं शताब्दी के अन्त में और उनीसवीं शताब्दी के आरम्भ में ग्रीक जाति में राष्ट्रात्मता की भावना पुन जाग्रत हुई। प्राचीन ग्रीक साहित्य का उद्यान हुआ और प्राचीन साहित्यिक ग्रीक भाषा का जनमाधारण द्वारा बोली जाने वाली अपभ्रंश भाषा के स्थान पर पुन प्रयोग पर लान का प्रयत्न किया गया। पूर्व पुरुषों के प्राचीन यश ने उन्हें प्रोत्साहन और आशा की प्रेरणा दी तथा उनमें स्वतंत्रता प्राप्त करने की उग्र भावना को उत्पन्न किया। १८१४ में आस्ट्रिया के ग्रीकों ने 'हेटैरिया फिलाइक' (Hetairia Philike) नाम की एक गुप्त संस्था बनाई। इसका उद्देश्य ग्रीस से तुर्कों को निकाल कर देश की स्वतंत्रता की स्थापना करना था। कालांतर में यह संस्था जनप्रिय तथा गाँवतशाली बन गई।

राजकुमार एलेग्जेंडर हेपसीलांट (Alexander Hysilanti) के नेतृत्व में १८२१ में ग्रीकों ने विद्रोह किया। एलेग्जेंडर बड़ी कठिनाई में फँस गया था। ग्रीक जन के सशक्त दलित जातियों के समर्थक तथा तुर्कों के अनुष्ठा का वशानुगत शत्रु होने के नाते उसका ग्रीकों की आर से हस्तक्षेप करना स्वाभाविक था। दूसरी ओर एलेग्जेंडर ससार भय के क्रान्तिकारी सिद्धान्तों का धोर शत्रु था। इसी समय रूस का भी तुर्कों से झगडा था और वह अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए ग्रीकों के विद्रोह से लाभ उठाना चाहता था किन्तु जार के रूस का निगम मेटरनिक ने किया क्योंकि उसका जार पर पूरा नियंत्रण था। मेटरनिक का निजी रस्य यह था कि सम्यता के उपायों से पहले ही इस विद्रोह की अग्नि का जलकर स्वयं ही राख हो जाने दिया जाए। जार ने हेपसीलांट के प्रति कोई सहानुभूति नहीं दिखाई और उसे तुरन्त रूस लौट आने की आज्ञा दे दी, उसने विद्रोहियों का आज्ञा दी कि वे मुलतान के आगे आत्मसमर्पण कर दें अन्यथा उन्हें उसका कापमान बनना पटगा। जार के 'यव्दर' ने हेपसीलांट के आग्रह का निगम कर दिया। वह पराजित हुआ और सारा जीवन उसे बंदीगृह में ही बिताना पडा।

१८२१ में भी ग्रीकों ने मोरिया (Morcia) में विद्रोह किया था। कुस्तुन तुनिया के प्रमुख पादरी की ओर ग्रीक ईसाइया की हत्या हो जाने के कारण रूस उत्तेजित था। डर था कि वह तुर्कों पर एकदम आक्रमण कर देगा। इंग्लैंड और आस्ट्रिया ने तुर्कों से रूस के हस्तक्षेप का बचाव कर दिया। कुछ समय तक कनिंग और मेटरनिक सिद्धान्त रूप में सहमत रहे। ग्रीकों और तुर्कों का परस्पर संपर्क किसी भी प्रकार से सम्बन्धित नहीं था इसलिए महान् शक्तियों का यह वक्तव्य था कि वे इस संघर्ष में किसी भी शक्ति को न आने दें और हस्तक्षेप न करन दें। कनिंग का विचार था कि यदि रूस को प्राप्त में हस्तक्षेप करने दिया गया तो ग्रीस उसका प्रथम प्राप्त और दूसरा प्राप्त तुर्कों होगा। १८२० से १८२५ की अवधि में यही स्थिति बनी रही। ग्रीक और तुर्क दोनों ही निन्द्यता में समान थे। कनिंग और मेटरनिक, दोनों का ग्रीकों के प्रति मित्र भाव था और उनका उद्देश्य था कि

किसी प्रकार तुर्कों ग्रीकों से मुलह कर ले जिसे कि जार इस कठिन समय में अपना स्वायत्तता न कर सके। कहा जाता है कि मोरिया युद्ध मुलत सबनाग का युद्ध था। ग्रीकों का नारा था 'तुर्कों का अब मोरिया अथवा सारी पृथ्वी पर जीवित नहीं रहना चाहिए।' यिस्माले मेसिडोनिया, एशिया माइनर और चिओम में ईसाइयों का सामूहिक हत्याएँ की गई थी। एक बार जार ने तुर्कों को चुनौती भी दी थी और ऐसा प्रतीत होता था कि युद्ध अवश्यम्भावी है।

किन्तु ग्रीक स्वातन्त्र्य युद्ध में एक भारी परिवर्तन आया। तुर्कों के सुलतान ने मिथ के पास मेहमतअली से सहायता मागी। मेहमतअली ने एक विनाश रक्षक सेना तथा नमुद्री बेडा अपने पुत्र इब्राहीम के नेतृत्व में भेज दिया। १८२५ में इब्राहीम ने त्रोट को विजय करके नष्ट कर दिया और १८२५ में मारिया में आकर उतरा। इब्राहीम चारा और दिनाश और हत्याएँ करता हुआ मोरिया के भाग से होता हुआ आगे बढ़ा। इस युद्ध में लाख बायरन भी मृत्यु हुई।

रूस में भी स्थिति बदल गई। जार एलेक्जेंडर का पूणत मेटरनिक के नियंत्रण में था १८२५ में मर गया। उसका उत्तराधिकारी निकलम प्रथम एक विनयुक्त भिन्न विचारधारा और शिक्षा वातावरण व्यक्ति था। वह मेटरनिक के प्रभाव में नहीं था इसलिए स्वतंत्र नीति का अनुसरण करने में पूणत स्वतंत्र था। कहा जाता है कि यद्यपि वह ग्रीकों की विरोध परवाह नहीं करता था किन्तु वह सुलतान का रूस के साथ माचाहा उद्दण्ड व्यवहार करने के लिए भी तैयार नहीं था।

इस अवसर पर इंग्लैंड के विदेश मंत्री कैनिंग ने ड्यूक आफ वलिंगटन को एक विशेष राजदूत के रूप में पीटम्बर्ग भेजा। अप्रैल १८२६ में ब्रिटेन और रूस में एक समझौता हुआ और दोनों देशों ने तुर्कों का अपनी संयुक्त मध्यस्थता का प्रस्ताव भेजा। इसके अनुसार यह योजना बनाई गई कि ग्रीक तुर्कों का कर देगा किन्तु वास्तविक रूप से स्वतंत्र रहेगा।

जार निकलम ने सुलतान का चुनौती भेजी और सुलतान ने एक गतिनाप पर हस्ताक्षर करके जार का भेज दिया। सुलतान ने जागीरा का छोड़ने, मरिया का कुछ विरोध छूटें दो तथा हर मामले में जार की इच्छानुसार कार्य करने की प्रतिज्ञा की। किन्तु हमने ग्रीकों की कोई चर्चा नहीं की। सुलतान दण्ड विषय में हमारे पर पक्षपाते के लिए तैयार हुआ कि हमारे साथ ग्रीकों का प्रयोग नहीं किया जाएगा। जुलाई, १८२७ में ब्रिटेन, फ्रांस और रूस में सम्मेलन हुआ। तीनों देश इस बात पर सहमत हुए कि यदि तुर्कों युद्ध को बंद करने के लिए तैयार न हों तो ग्रीकों का प्रयोग किया जाए। ग्रीकों का रक्षात्मक युद्ध दुबल होता जा रहा था और १८२७ में एथेन्स के पतन के पश्चात् उनकी पराजय की पूरी आशा हो गई थी। यह भी अफवाह थी कि इब्राहीम युद्ध में पकड़े गए मार ग्रीकों का नाम बनाकर एशिया या अफ्रीका में भेज देगा। अगस्त १८२७ में ग्रीकों ने तीनों गवियों को मध्यस्थता स्वीकार की थी। तुर्कों अपने का गवियन समझौता था अतः उगन का स्वीकार नहीं किया।

जलमेता के सेनापति कार्डिगटन को घाते में लिया गया कि वह 'ग्रीस' के विरुद्ध सना धपवा सम्म से जान बाल गार जहाजा को बिना युद्ध किए ही माग म ही रोक ले। ब्रिटेन और फ्रांस के जसमना के सेनापतिया ने इब्राहीम को मूचना दी कि उसके एक भी जहाज को नवारिना के बन्दरगाह के भाग म नहीं जान दिया जाएगा। इब्राहीम ने प्रोध म भरकर मोरिया के बचे हुए भाग्यनीन नागरिकों की हत्या करने का प्रयत्न किया। सेनापतिया ने इब्राहीम को विराध पत्र भेजा और उत्तर म तुर्कों ने ब्रिटिश बेड़े पर गोलाबारी आरम्भ कर दी। नवारिनो की लड़ाई २० अक्टूबर १८२७ को आरम्भ हुई। सूर्यास्त से पहले तुर्कों और मित्र के सारे जहाज लुप्त हो गए और नवारिनो की खाड़ी उनके सण्डो से भर गई थी। नवारिनो की लड़ाई इस युद्ध की सबसे अधिक निर्णायक लड़ाई थी और इसका अन्तिम परिणाम ग्रीस की स्वतंत्रता प्राप्त कर लेना था। किन्तु नवारिनो के विजेताओं को उनकी सफलता का कोई श्रेय नहीं मिला। कनिंग की अगस्त, १८२७ म ही मृत्यु हो गई थी और उसके उत्तराधिकारी वेलिंगटन ने इस अप्रत्याशित घटना के लिए सेद प्रगट किया था।

ब्रिटेन ने युद्ध छोड़ दिया और फ्रांस ने भी उमका अनुमरण किया। तुर्कों बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने ग्रीकों से अपने तरीकों से निपटने का निणय किया। इन परिस्थितिया में जार का तुर्कों के विरुद्ध की गई घोषणा करना आश्चर्यजनक काय नहीं था। जार ने प्रुथ (Pruth) पार करके डारडेनीलिस पर अधिकार कर लिया। रूस का जहाजी बेड़ा भी डारडेनीलिस में घुस आया। रूस के इस काय से कसलारे और कनिंग के प्रयत्न विफल होते प्रतीत हो रहे थे क्योंकि इन्होंने बलकान में रूस के प्रभाव को रोकने का भरमक प्रयत्न किया था। एक और ग्रीक तुर्कों की दया पर धे और दूसरी ओर जार से तुर्कों की स्वतंत्रता को सतरा उत्पन्न हो गया था। रूस का बड़ा प्रतिरोध हुआ कि तु वे रूस से जीत नहीं सकते थे। सितम्बर १८२६ म रूस और तुर्कों की संधि हो गई।

इंग्लण्ड और फ्रांस मेहमतअली और इब्राहीम में परामश करके उनकी सेनाएँ मोरिया से हटाने में सफल हुए। तुर्कों की सेना के चले जाने के पश्चात् फ्रांस ने वहीं के दुग पर अधिकार कर लिया। सदन में हुए समझौते के अनुसार मोरिया और ग्रीस को अय शक्तियों के संरक्षण में रख दिया गया। निणय हुआ कि ग्रीस को स्वशासित बना दिया जाए किन्तु उसे शक्तिया द्वारा निर्वाचित किसी राजा का कर दाता राज्य बनना पड़ेगा। नए राज्या की सीमाओं की व्याख्या भी कर दी गई। यह ब्यवस्था १८२६ की एण्ड्रोपली की संधि द्वारा स्थायी बना दी गई। इस प्रकार ग्रीस की स्वतंत्रता को मान्यता दी गई।

फ्रांस और इंग्लण्ड को भय था कि ग्रीस रूस का अधिकृत राज्य बन जाएगा। इसलिए वेलिंगटन ने इसको दो टुकड़ा में विभाजित कर देना चाहा जिससे यह अत्यन्त छोटा और गतिहीन रहे। एवरडोन ने इनमें भी भागे बढ़ कर ग्रीस को तीन टुकड़ों में विभाजित करने का प्रस्ताव किया था। किन्तु वेलिंगटन और एवरडोन को पन्चुत

कर लिया गया और इनके उत्तराधिकारी पाम्प्टन और ग्रे ने इनसे भिन नीति का अनुमरण किया। १८३२ में ग्रीस की सीमाएँ बढ़ा दी गई। ग्रीस का स्वतंत्र घोषित कर लिया गया तथा उस ऋण दन का और राजा चुना का आश्वासन भी दिया गया। रूस इंग्लैंड और फ्रांस के ग्रीस की स्वतंत्रता को मायता दी। ग्रीस रूस का प्रभाव से मुक्त हो गया।

यह ध्यान रखने योग्य है कि ग्रीकों के प्रयत्नों के प्रति फ्रांस में बहुत सहानुभूति थी और फ्रांस की जनता ने उनकी बहुत कुछ सहायता भी की थी। आस्ट्रिया में मेटर्निक का विचार था कि ग्रीक विद्रोही हैं और इसलिए उन्हें उनका भाग्य पर छात्र दना चाहिए। ग्रीकों का विरोध एक रोग है। आस्ट्रिया को इसकी छूट से बचे रहना चाहिए। मेटर्निक ने आरम्भ में रूस को रोष लिया किन्तु रूस ने अपना काय पूरा किया और १८२८ के पश्चात् वह अकेला ही लड़ता रहा। प्रशिया ने आस्ट्रिया का अनुगमन किया था। इंग्लैंड की ग्रीकों के उद्देश्य से पूरी महानुभूति थी। ग्रीकों को यूरोपीय सभ्यता का जन्मदाता माना जाता था और उन्हें यथासम्भव सहायता भी दी गई थी। स्वयं कैनिंग एक ग्रीक विद्वान् था। फिशर के मतानुसार 'उस समय इंग्लैंड के उच्चवर्गीय नागरिकों में कोई भावना नहीं थी। वे इंग्लिश राष्ट्रीयता का उपभोग करते थे। उन्होंने आयरलैंड की राष्ट्रीयता की भावना का दमन कर दिया था भारतीय राष्ट्रवाद उस समय एक दूर भविष्य की बात थी। गिगा ने उन्हें मागर बना दिया था, सामाजिक जीवन ने उन्हें मसदीय प्रणाली का विद्वान् बना दिया था, इसलिए एक छाटी-सी जाति के स्वतंत्रता के लिए सघष के प्रति उनकी सहानुभूति एक मनारजन से अधिक कुछ नहीं थी। जब मिस्सोलोपी में लाड वायरन की मृत्यु ग्रीस की सहायता करत समय हुई, तो ग्रीस के प्रति इंग्लैंड के नागरिकों में एक महानुभूति का ज्वार आ गया और यह भावना जनसाधारण में फल गई। प्रॉक्समोड और कम्ब्रिज के विद्वविद्यालयों में युवकों को जिस प्राचीन ग्रीस की बीरता के विषय में बताया जाता था और जिम्का वे लोग अत्यन्त भक्ति से अध्ययन करते थे, उसके विषय में कोई भी यह नहीं पूछता था कि भव उस यद्य का कितना घग ग्रीस के ग्वाल्लों, दुस्साहसी व्यक्तियों तथा इसके समुद्री लुटेरों में क्षेप रह गया है। ग्रीस का नाममात्र ही पवित्र बन गया था। यद्यपि तुर्कों अभी भी औपचारिक रूप से भिन्न था और पूव में रूस का चालों के लिए एक रोक का काय करता था तथापि इंग्लैंड की साधारण जनता आज कैनिंग की समयक थी, जब उसने ग्रीक विद्रोहियों को देशभक्त मानकर फ्रांस और रूस से सहयोग करके इसे सवनाच से सवान का प्रयत्न किया था।

मेहमनअली और पोर्टे (Mehmet Ali and Porte)—महमतअली अल्बानिया का एक दुम्ताहमी निवासी था। यह अपने प्रयत्नों से उन्नति करके मिस्र का राज्यपाल बन गया था। यद्यपि वह धर्मभ्रष्ट और अशिक्षित था ता भी उसे पान्थाय सभ्यता के गुणों की परख थी। यद्यपि वह नाममात्र को पोर्टे के प्रति स्वामि भक्ति रखता था तो भी उमने प्रामाणी विनोयता का नियुक्त करके ~~किसे~~ को एक मन्त्रिद्वारा तथा अफिशाली राष्ट्र बना लिया था। १८२४ के

मेहमतप्रली की मिग्री राना १ लगभग सारे ग्रीस पर पुन विजय प्राप्त कर ली थी। रूस, ब्रिटेन और फ्रांस के हस्तगत के बिना ग्रीस सबदा के लिए पूरण नष्ट हो गया होता। ग्रीस के स्वातन्त्र्य-युद्ध के पश्चात् तुर्की ने उसकी सहायता के बदले पुरस्कार रूप में ग्रीस का द्वीप मेहमतप्रली को दे दिया। उसने इस पुरस्कार को अपर्याप्त समझा। वह तुर्की की कमजोरियाँ से भी परिचित हो चुका था। अतः उसका विचार पाठों के भाषिपत्य से स्वतन्त्र हो जाने का हुआ और वह इसक लिए उचित बहाने की खोज करने लगा। १८३२ में उसका पुत्र इब्राहीम ने सीरिया पर आक्रमण किया और वहाँ से एशिया माइनर की ओर बढ़ने लगा। तुर्की हार गया और आक्रान्ता के लिए कुस्तुनतुनिया का मार्ग खुल गया।

सुलतान महमूद द्वितीय ने यूरोपीय शक्तियों से सहायता की याचना की। उसने ब्रिटेन से अपील की किन्तु वह उस समय बल्जियम के भगड़े में व्यस्त था। उसने फ्रांस से अपील की किन्तु वहाँ जनमत मेहमतप्रली के प्रति सहानुभूति रखता था। हताश होकर सुलतान का रूसी सहायता का प्रस्ताव स्वीकार करना पड़ा। सुलतान ने आरम्भ में घोषणा की थी कि जो भी उसे मेहमतप्रली का सिर काट कर ला देगा वह उसे कुस्तुनतुनिया और अपना साम्राज्य दे देगा किन्तु अब रूस की सहायता लेने के पश्चात् उसे अनुभव हुआ कि उसे वास्तव में अपना वचन पूरा करना पड़ेगा। रूस की सरकार तुरन्त ही सहायता के लिए तैयार हो गई। रूस का जहाजी बेड़ा बालफोरस पहुँच गया और रूस की सेना ने एशिया के तट पर पड़ाव डाल दिया। कुस्तुनतुनिया के निकट एक स्थान पर रूस के पाँच हज़ार सैनिकों ने छावनी डाल दी।

मेहमतप्रली के भगड़े के आरम्भ होने के क्षण से ही फ्रांस को रूस के हस्तक्षेप का डर हो गया था। फ्रांस को मेहमतप्रली से विशेष लगाव था और वह उस अपना समझता था। फ्रांस की सरकार ने मेहमतप्रली को युद्ध करने से रोका था। युद्ध आरम्भ हो जाने पर फ्रांस ने एक शिष्ट-मण्डल इस दृष्टि से कुस्तुनतुनिया भेजा कि वह रूस का इस मामले में हस्तक्षेप करने से रोकें। किन्तु फ्रांस सफल नहीं हुआ। ब्रिटेन और आस्ट्रिया सफल हुए थे। उन्होंने सुलतान को मना लिया कि वह सीरिया और अदन मेहमतप्रली का दे दे (१८३३)। इस प्रकार मित्र के भगड़े की समाप्ति हुई और रूस पीछे हट गया।

अक्षयार स्कतसेरी की संधि (Treaty of Unkar Skeless)—रूस ने पीछे हटने से पहले तुर्की से एक संधि की थी। १८३३ की रूस और तुर्की की संधि एक सुरक्षात्मक संधि थी। यह संधि आठ वर्ष के लिए की गई थी। रूस ने तुर्की का सबके काल में सहायता देने का वचन दिया। इस संधि में यह व्यवस्था भी की गई थी कि यदि रूस का अथवा किसी यूरोपीय शक्ति से युद्ध हो जाए तो तुर्की डारदनेलिस (Dardanelles) की बन्दरगाह को बंद करके काला सागर का ओर से रूस को सुरक्षित कर देगा। रूस का जहाजी बेड़ा डारदनेलिस के मार्ग से अथवा सागर में जान तथा अपनी इच्छानुसार सुरक्षित स्थान पर पहुँचने के लिए स्वतन्त्र

होगा। इस व्यवस्था का आशय रूस द्वारा तुर्की की विदेश नीति पर नियंत्रण रखना था। इससे तुर्की एक प्रकार का सरभित्त देश बन गया। निक्जम ने विजय और विभाजन की नीति छोड़ कर घुमपठ और नियंत्रण की नीति अपनाई थी।

अबयार स्कलसी की संधि व्यवस्था को इंग्लैण्ड और फ्रांस सहन नहीं कर सकते थे। जार ने किसी प्रकार आस्ट्रिया और प्रशिया की सहमति प्राप्त कर ली थी। यद्यपि जार ने मेटेरनिक को आश्वामन दिया था कि वह आस्ट्रिया की मध्यस्थता को स्वीकार किए बिना संधि की व्यवस्था का प्रयाग नहीं करेगा तथापि यह संधि युराप के लिए खतरा बनी रही। कई महीनों तक युद्ध का वातावरण छाया रहा। ब्रिटेन भी रूस से उतना ही पीड़ित था जितना तुर्की क्योंकि पाटें द्वारा रूसी बड़े का माग देना १८०६ की तुर्की इंग्लैण्ड की संधि के विरुद्ध था। पामस्टन न संधि व विरुद्ध एक औपचारिक विराध पत्र भेजा था। इंग्लैण्ड का जनमत इस विषय पर अग्रयन्त उत्तेजित था। यदि इंग्लैण्ड की सरकार ने बड़ी कायवाही की होती तो उसे पर्याप्त समर्थन भी मिल जाता। किन्तु पामस्टन ने बड़ी सावधानी से काय किया।

इस सावधानी का मुख्य कारण यह था कि पामस्टन का फ्रांस की सरकार के रुख ने विषय में विश्वास नहीं था। फ्रांस ने तुर्की में रूस का विरोध करने के प्रश्न पर इंग्लैण्ड से भले ही सहयोग कर लिया होता किन्तु स्पेन के विषय में वह इंग्लैण्ड का विराधी था इसलिए इंग्लैण्ड को अविश्वास था। १८३४ में पामस्टन ने स्पेन और पुतगाल की सरकारी से संधि की और फ्रांस भी इस संधि में सम्मिलित हो गया। यह चतुर्मुखी संधि २२ अप्रैल १८३४ को हुई। यह एक बड़ी कूटनीतिक सफलता थी। पामस्टन ने इसे 'अपने सारे कार्यों में सबसे अधिक श्रेष्ठ काय' कहा था। इस प्रसिद्ध संधि ने पामस्टन का थाडा सा सकोच भी समाप्त कर दिया और अब वह तुर्की और रूस के प्रश्न को दुबता से सुलभा सकता था। दुर्भाग्य से मेलबान मंत्रिमण्डल, जिसका पामस्टन सदस्य था नवम्बर १८३४ में समाप्त हो गया किन्तु ड्यूक ऑफ वॉलिंगटन ने उसकी नीति का अनुसरण किया। १८३५ में पामस्टन पुनः पदासीन हुआ। उसका विचार था कि युद्ध में रूस सरलता से हराया जा सकेगा। उसने टेम्पल को लिखा था 'तथ्य यह है कि रूस घोसेबाज है। यदि इंग्लैण्ड ने रूस से युद्ध किया तो हम युद्ध में रूस को पचास वष पीछे धकेल देंगे।' किन्तु वास्तव में युद्ध का इच्छुक कोई भी नहीं था। रूस ने कुस्तुनतुनिया में अपना प्रभाव नहीं जमाया, शांति बनी रही और चार वष के लिए युद्ध टल गया।

१८२६ में फ्रांस के मंत्रिमण्डल में परिवर्तन हुआ। धीयम प्रधान मंत्री बना। यद्यपि पाटें के विचार से धीयम इंग्लैण्ड के प्रति मैत्री भाव रखता था किन्तु उसका पुताव कदीय दक्षिण की ओर अधिक था। ड्यूक ऑफ ओरलीन्स का धाम्त्रिया की राजकुमारी से विवाह करने का प्रस्ताव हुआ। धीयम को उसकी उग्र नीति के कारण मुई विविध न पदच्छुत करने पड़े पर मोले को नियुक्त कर दिया।

इस अग्रिम में सुलतान और मन्तवली अतिम समय के लिए तयारियाँ कर रहे थे। महमूद द्वितीय अपनी सना को पश्चिम की प्रणाली पर समर्पित कर चुका था। मान्यता उसका सहायक था।

मिस्र में भी व्यवस्था ठीक नहीं थी। १८३७ में सीरिया ने अपनी शक्ति को गंभीरता से धारण कर दिया था। १८३८ में उसने ब्रिटिश राजदूत का बताया कि वह स्वतंत्र होना के लिए दृढ़प्रतिज्ञ था। पामस्टन को इस पर बड़ा आश्चर्य था। उसे पूरी तरह मालूम था कि तुर्की पराजित होगा और १८३३ की अवधारणा जल्दी संधि के कारण हम इसमें हस्तक्षेप करेगा। फ्रांस द्वारा महमूद अली की सहायता करने का भी सम्भावना थी। पामस्टन की नीति के तीन उद्देश्य थे अर्थात् महमूद अली द्वारा तुर्की साम्राज्य को नष्ट होने से रोकना अवधारणा-स्कैलसी की संधि को निष्क्रिय कर देना और फ्रांस और रूस के संगठन को नष्ट करने देना। पामस्टन इस जटिल स्थिति का एक कुशल नूतनीतिज्ञ की तरह समालोचक था। तुर्की और मिस्र की सेनाएँ एक-दूसरे के सामने युद्ध-सामग्री से सुसज्जित होकर तयार हो चुकी थी।

कुछ अन्य तत्त्व ऐसे भी थे जिनके कारण शान्ति बनी रही। पाँच महान् शक्तियाँ युद्ध नहीं करना चाहती थीं। उन्होंने दोनों पक्षों को शान्ति से सम्झौता करने का परामर्श दिया, किन्तु दोनों ही पक्ष सम्झौते के लिए तैयार नहीं थे। अक्टूबर १८३६ में युद्ध आरम्भ हो गया। कुछ ही दिनों में महमूद की सेनाएँ हार गइं और वह मारा गया। तुर्की का सेनापति अपने जहाजी बेड़े के साथ एलाङ्ग्रेण्डिया में मेहमूदअली के साथ जाकर मिल गया। तीन सप्ताह में तुर्की अपने सुलतान स्थल सेना और जहाजी बेड़े से वंचित हो गया।

सुलतान की मृत्यु और निस्सिबि की लड़ाई से पामस्टन की धारणा दृढ़ हो गई कि उसे अब कड़ा कदम उठाना चाहिए। उसका विश्वास था कि इस मामले में फ्रांस और फ्रांस का सहयोग बना रहेगा। उसने ब्रिटिश जलसेना को मेहमूद अली पर दबाव डालने के लिए आना देने का विचार किया। फ्रांस ने मेहमूद अली के प्रति मन्त्रीभाव रखने के कारण सहयोग देने से इन्कार कर दिया। महमूद अली द्वारा सुलतान से स्वेच्छानुसार अपनी भाँति पूरी करा लेने की संभावना थी। इस स्थिति से बचने के लिए अन्य शक्तियों ने पोटों को परामर्श दिया कि वह मेहमूद अली से कोई सम्झौता न करे।

पामस्टन को मेहमूद अली पर दबाव डालने में फ्रांस का सहयोग नहीं मिला इसलिए उसने फ्रांस से सम्बंध तोड़कर, इस मामले को पाँच शक्तियों के सम्मेलन के सामने विचारार्थ रखने का निणय किया। इस सम्मेलन का उद्देश्य था कि यदि मेहमूद अली तुर्की का जहाजी बेड़ा न सीटाएँ तो पाँच शक्तियाँ सीरिया का भाग बन्द कर दें। पामस्टन इस भगड़े को सम्मेलन द्वारा सुलतान के लिए इस कारण इच्छुक था क्योंकि इस योजना द्वारा १८३३ की संधि के अनुसार वह तुर्की और रूस के संगठन को रोक सकता था। इस भी युद्ध से बचना

चाहता था। तब न दब्राह्मिण प्रांस की प्राप्ति का सोचने के लिए प्रांस ने सहयोग के बिना भाइयों के साथ वापवाही करने का प्रस्ताव किया। पामस्टन ने प्रांस की सरकार का मूचित किया कि "इन्हीं मन्त्रों द्वारा प्रांस और प्रशिया के साथ इस मामले में सहयोग करने का दृष्टिकोण है, उसे प्रांस का सहयोग प्राप्त हो या न हो किन्तु इन्हीं का इस बात का बड़ा खेद होगा कि इस वापवाही में प्रांस न सहयोग देता है।"

पामस्टन का दूसरा समय एक भयानक सूचना मिली कि प्रांस के सम्राट न सिद्धो विदेश मंत्री का बताया था कि सम्भवतः प्रांस की एक दो वर्षों में इंग्लैंड से युद्ध करना पड़ेगा और इसलिए वह महमत्त अनी की रक्षा कर रहा है। प्रांस का इस युद्ध में अथवा महा-युद्ध में महमत्त अनी की जहाजी बड़े की सहायता की आवश्यकता पड़ेगी। पामस्टन ने प्रांस के सम्राट का 'एक ऐसा व्यक्ति बताया जिस पर किसी भी प्रकार का विश्वास नहीं किया जा सकता।' प्रांस ने सिकायत की कि उसे अथवा आधा जा रहा है, किन्तु फिर भी उसने मीरिया के मामले में महमत्त अनी की सहायता करना बंद नहीं किया। प्रांस का निमित्त जनमत महमत्त अनी की बंदूक समय का इस कारण प्रांस की सरकार उसकी उपाय नहीं कर सकती थी। प्रांस की सरकार भ्रम में थी कि इंग्लैंड और मन्त्रों का सहयोग कभी भी नहीं हो सकता किन्तु वास्तव में दोनों दलों में समझौता हो चुका था।

मार्च, १८४० में प्रांस में थियर्स (Thiers) पुनः मन्त्रिमंडल हुआ। उसकी नीति थी इंग्लैंड में मंत्रों की रचना पाँच गतिविधियों के संगठन में प्रांस की मददस्वयत्ता का अनुष्ठा करना और साथ में सीरिया के मामले में महमत्त अनी का समर्थन करना। पामस्टन महमत्त अनी की शक्ति को रोकना चाहता था और थियर्स इस विषय में समर्थ नहीं था। इसलिए गतिविधि न्यून हो गया।

इस अवसर पर तुर्की का राजदूत लंदन गया और गतिविधियों से भाग की कि वे १८४० की संधि के अनुसार अपने वचन का पालन करें और तुर्की का सहायता दें। पाठों हम नामले का सुनमान के लिए मिलने के राज्यपाल का पत्र भी महमत्त अनी को देने का तयार था। थियर्स और उगरी सरकार ने लंदन वार्ता का उपाय कर दी। कारण यह था किम समय लंदन में वातावरण रहती थी उसी समय प्रांस के राजदूत के माध्यम से कन्सुलनुनिया में अनेक बातचाल चल रही थी। १८४० में दक्षिणों के प्रतिनिधियों ने संधि पर हस्ताक्षर किए जिसे पर तुर्की के राजदूत ने भी हस्ताक्षर किए थे। इस संधि के अनुसार महमत्त अनी का मित्र या वापवाही-गत राज्यपाल नियुक्त किया गया उस प्रांते और दक्षिणी सीरिया में जीवन भर दिन के लिए संभलता किया गया। इस व्यवस्था का स्वीकार करने के लिए महमत्त अनी का कुछ समय दिया गया। सीरिया के विषय में उससे दिन दिन में तथा मित्र के विषय में दोस दिन में उत्तर माँगा गया था। चारों गतिविधियों में महमत्त अनी पर शकाल डालने के लिए उसका माँग बन्द करके का भी निणय किया। कन्सुलनुनिया की शरत उसकी प्रगति को रोकने के लिए संगठित वापवाही का निणय भी किया गया। तुर्की चारों दक्षिणों के संरक्षण में रहेगा और १८३३ की सन्धि के संधि रद्द कर दी गई।

इस व्यवस्था से परिसर में बड़ी उत्तजना फैली। यह कहा गया कि फ्रांस का अपमान किया गया है। कुछ महीना तक फ्रांस और यूरोप के देशों में युद्ध के होने की सम्भावना बनी रही। फ्रांस युद्ध करना चाहता था और थियस उनका मुख्य नेता था। थियस केवल इस द्विचक्रियाहट में था कि वह पहले इंग्लैंड पर आक्रमण करे अथवा रूस पर। फ्रांस में दशभक्ति की भावना का उभारना गया। पामस्टन ने फ्रांस की सरकार को कहा 'यदि आपन युद्ध के लिए चुनौती दी तो हम इसे स्वीकार करने में सकोच नहीं करेंगे।'

सीरिया में घटनाक्रम यदी तजी से चल रहा था। महमद अली ने शक्तियों के प्रस्ताव को ठुकरा दिया अतः शक्तियों ने उस पर दबाव डालने का निणय किया। सीरिया के तट का मार्ग बन्द किया जाने लगा। नेपियर ने बरुत पर बम बारी करके इस पर अधिकार कर लिया। उसने अरब भी लडाइयाँ जाता। मुलतान ने महमद अली को पदच्युत कर दिया। शांति की कोई सम्भावना नहीं रही। लुई फिलिप ने थियस को लडाकू नीति का अनुमोदन नहीं किया। पामस्टन ने अक्टूबर १८४० में लिखा था 'यदि फ्रांस हम एक मन्नापूण सन्देश वतमान स्थिति पर शान्ति से समझौता करन उद्देश्य से भेजेगा तो हम सहज उस पर उसी भावना से विचार करेंगे।'

सौभाग्य से पेरिस में शान्ति के समझौते की जीत हुई और थियस को पदच्युत कर दिया गया। नई सरकार ने इस सन्देश का उत्तर मैत्रीपूर्ण ढंग से भेजा। इस अवधि में नेपियर ने अफ्रीके पर अधिकार कर लिया था और महमद अली को सीरिया से पीछे हटना पडा था। नेपियर अलग्जण्डिया गया और वहाँ अपनी इच्छानुसार शान्ति की शर्तें पेश की। शर्तों के अनुसार महमद अली को सीरिया छोड़ देना पडा तथा उसके मिस्र पर स्थायी रूप से अधिकार करन की व्यवस्था की गई। चारों शक्तियों ने शर्तों का अनुमोदन किया था।

फरवरी १८४१ में मुलतान पर दबाव डालकर उससे महमद अली को पदच्युत करने की आज्ञा की गई करायी गया और एक फरमान द्वारा उसे मिस्र का बशपरम्परागत राज्यपाल नियुक्त किया गया। १८४१ में लन्दन के सम्मेलन में पुराने निणयों का स्थायी रूप दिया गया।

यह अन्तिम व्यवस्था पामस्टन की महत्त्वपूर्ण विजय समझी गई। ब्रिटेन का सम्मान बढ़ गया और अफ्रीका स्वतन्त्रता की शर्तों के बिना युद्ध के रद्द हो गई।

श्रीमिया युद्ध (१८५४-५६) (The Crimean War) — मर ज० ए० आर० मरियट के मतानुसार श्रीमिया युद्ध के कारणों के विषय में दो भिन्न भिन्न मत हैं। साम्राज्ञी विक्टोरिया का मत था कि यह युद्ध केवल एक व्यक्ति (निबलस प्रथम) अथवा उसके अनुचरों की स्वाधरता और महत्वाकांक्षा का परिणाम था। किंग्सलैक (Kingslake) ने नवनिम्न तृतीय पर इसका उत्तरदायित्व सौंपा है। किन्तु दोनों ही मतों को पूर्णतः स्वीकार नहीं किया जा सकता यद्यपि दोनों में ही सत्य का कुछ अंश है। यद्यपि नेपालियन तृतीय इस युद्ध का प्रत्यक्ष कारण नहीं

या तथापि पूव के सघप म वही चिगारी फेंकने वाला था । १७४० की एक सधि के अनुसार फ्रांस ने तुर्की से जेरुसलम के निकट के कई तीर्थस्थानों का वज्र ले लिया था । लेटिन साधुओं ने अपन अधिकारों के प्रति उदासीनाता दिखाई और परिणामस्वरूप ये स्थान ग्रीक साधुओं के अधिकार में आ गए । १८५० म नेपोलियन तृतीय ने फ्रांस के पादरियों का समयन प्राप्त करके इन स्थानों का अधिकार लेटिन साधुओं का दिलवाने का प्रयत्न किया । इस मामले म उसे आम्स्ट्रिया, हंगरी, स्पेन और अन्य रामन कथोलिक देशों का समयन प्राप्त था ।

सीमन (Seaman) के मतानुसार "उन लोगों के साथ सहमति प्रकट करना युक्तियुक्त ही है कि त्रीमिया का युद्ध जितना यूरोप में शक्ति मतुलन के लिए सघप था उतना ही यह युद्ध पूव की समस्याओं को सुलभाने के लिए भां महत्वपूर्ण तत्व था । ग्रीक और सीरिया के मामलों में जो अनुभव प्राप्त हुआ उसे ध्यान में रखते हुए यह प्रतीत होता है कि यदि पूव के प्रश्न को भी पूव और पश्चिम की राजनीतिक प्रणाली के सघप को महत्व दिए बिना शान्ति में सुलभाय जाता तो निश्चित रूप से यह युद्ध टल जाता । इसलिए पूव की समस्या मूलतः अंतर्राष्ट्रीय थी और यदि इसे उसी स्तर पर निरूटाया जाता तो युद्ध न होता । इस समस्या में प्रागत्यवादी इंग्लैंड तथा नेपोलियनवादी फ्रांस का रुम से अनेक अन्य समस्याओं पर चलते हुए सघप का जुड़ जाना ही युद्ध का कारण था ।

'इसके अलावा जार ने जिन समय मोलडाविया और बलाचिया पर आक्रमण किया, उसे पता था कि वह यूरोप की इच्छानुसार काय नर रहा है । किन्तु जब १८५३ म उसने बलवान पर अपना दावा किया ता उसे इस बात की बिलकुल ध्याना नहो थी कि उसे इंग्लैंड का समयन मिल जायगा । रुस व इा जागीरा को छाड़ देने के पश्चात पिबाय इस बात के कि, जार की उनकी उद्दण्डता का नण्ड किया जाए, युद्ध का अर्थ कोई कारण नहीं रह गया था । तुर्की के साम्राज्य की रक्षा के लिए बलवान युद्ध युक्तियुक्त था किन्तु इसका वहाँ से त्रीमिया के प्रायद्वीप में घसीट कर ले घाना तो निरान युक्तिहीन बात थी । इस परिवर्तन का अर्थ यह हुआ कि जिस युद्ध की योजना तुर्की साम्राज्य की रक्षा के लिए बनाई गई थी, वह युद्ध के आरम्भ होने से पहले ही रुम के विरुद्ध युद्ध का रूप धारण कर चुका था ।'

प्रा० फाइफ (Fyffe) के मतानुसार "प्रतिद्वंद्वी साधुओं व द्वारा, बुजिया मूनिया और दीपको के दावा को कोई भी अनुभवी प्रबधक सरलता से सुलभ गवता था किन्तु इन साधारण बातों के परस्पर एक दूसरे का नीपा दिमान में घनन बूटनीतिता के हाथ में आ जाने व कारण ये इतना विकराल रूप धारण कर गई कि मारे मूरुप की शान्ति मन्तरे में पड़ गई ।' फ्रांस और रुस व पादरी पाटों पर नियम के लिए दबाव डाल रहे थे । १८५२ स पोटों ने दोनों पक्षों का समान अधिकार दे दिए थे । १८५३ म तुर्की ने फ्रांस व कुछ दावा का स्वीकार कर लिया तथा रुस के दावों को अस्वीकार कर दिया ।

गिबल्स प्रथम ने तुर्कों के इस कार्य को अपने विरुद्ध अपमान समझा। उसने प्रतिशोध लेने की सार्ची। १८२३ में उसने ब्रिटिश राजदूत सर सम्पूर से पीटासबग में कहा 'वह समय आ गया है कि इंग्लैंड और रूस में स्पष्ट रूप से समझौता हो जाना चाहिए। इसी सेनाप्रा का कुस्तुनतुनिया पर अधिकार करना आवश्यक है। सक्ता है किन्तु जार इस पर स्थायी अधिकार नहीं रखेगा। वह बासफोरस पर अल्प किसी देण का अधिकार नहीं हानेगा। वह ओटोमान साम्राज्य को नष्ट भ्रष्ट करके यूरोप के मेजिनी और वास्तुयों का कारण स्थान नहीं बनने दगा। डेयूब की रियासतें रूस में सरक्षण में पहले ही स्वतंत्र हैं। बलकान में उत्तर में सुलतान के अधिभूत राज्य भी स्वतंत्र किए जा सकते हैं। इंग्लैंड मित्र और ग्रीस पर अधिकार कर सकता है। ब्रिटिश सरकार ने जार के साथ किसी भी प्रकार का समझौता करने से इन्कार कर लिया। इससे पश्चात् निकलने प्रथम में राजकुमार मेन्शीकोफ को कुस्तुनतुनिया भेजा कि वह पाटों से बचल तीर्थस्थानों का मामला का निणय करने के लिए ही नहीं अपितु एक संधि की मांग करे। इस संधि में तुर्कों से ग्रीक चर्च को उसके प्राचीन अधिकारों तथा पाटों द्वारा अल्प ईसाइया का दावई सारी सुविधाएँ देने की भी मांग की गई थी।

इस संधि से सुलतान सदा के लिए जार के अधिकार में हा जाता और सुलतान की ग्रीक मतावलम्बी सारी प्रजा के किसी भी व्यक्ति का सुबिधाया पर आघात हान की स्थिति में रूस को इस विषय में हस्तक्षेप करने का अधिकार प्राप्त हो जाता। १७७४ की कुटचुक कनाडजी संधि के अनुसार सुलतान ने एनाइ धम और चर्चों की रक्षा की प्रतिज्ञा की थी। किन्तु यदि इस संधि के अनुसार रूस को ग्रीक चर्च की रक्षा के विषय में साधारणतः हस्तक्षेप का अधिकार मिल गया था तो यही अधिकार रोमन कथोलिक और प्रोटस्टेंट चर्चों के लिए गाय गकिया को भी दिए गए थे। किन्तु जार ने - भी भी इस बात का जवाब नहीं किया था कि उस कुटचुक कनाडजी की संधि से यह अधिकार प्राप्त हो गए हैं। इस संधि में केवल एक ही चर्च का नाम था जिसके पुजारियों को और से सुलतान ने रूस के प्रतिनिधित्व को स्वीकार किया था। इस विषय में व्यवस्था थी कि सुलतान परम्परा अथवा कानून द्वारा इस चर्च के विशेष अधिकारों का सम्मान करेगा किन्तु इस विषय में किसी भी देण ने विरोध प्रकट नहीं किया था। रूस के दाव की नवीनता यह थी कि उसने इस व्यवस्था को रूस के साथ एक संधि का विषय बना दिया था। रूस की भाग का महत्त्व इस बात से सिद्ध होता है कि मेन्शीकोफ ने तुर्कों के मंत्रियों का इस संधि की शर्तों को अल्प देशों पर प्रकट करने से मना कर दिया था। गिबल्स प्रथम ने ब्रिटिश सरकार का यह सूचना भिजवाई थी कि गिबल्सकेवल केवल तीर्थ स्थानों का मामला सुलमाने के लिए भेजा गया था। तुर्कों में रहने वाले ग्रीक ईसाइयों पर रूस के सरक्षण के दावे के विषय में जार्ज क्लरकटन ने लिखा कि कोई भी प्रभुत्वसम्पन्न राजा अपने सम्मान और स्वतंत्रता का ध्यान रखने हुए राजकुमार मेन्शीकोफ द्वारा अस्पष्ट प्रस्ताव का स्वीकार नहीं कर सकता था तथा संधि के द्वारा अल्प शक्तिशाली राजा को अपनी प्रजा के बहुत बड़े भाग की रक्षा का अधिकार नहीं

औप सक्ता था चाह इन अधिकारों की परिभाषा संधि में नहीं की गई थी। वास्तविक स्थिति यह थी कि प्रस्तावित सनद की अस्पष्ट भाषा में रूस का तुर्की के आन्तरिक मामला में हस्तक्षेप करने का अधिकार दे दिया गया था। पाटो की ग्रीक राजा हान व साय व लोग अपने धर्म की दृष्टि से पूणत रूस के मरम्मा में थे। उसके आशय यह था कि एक कराट चालीस लाख ग्रीक मुलतान के प्रति औपचारिक जामिनक्ति दिखाने हुए रूस व आर का हो अपना सर्वोपरि रक्षक मानने लगे और मुलतान की स्वतंत्रता श्रमण घट कर एक आश्रित राज्य जैसी हो गई।

पाटो रूस व दबाव का सहन नहीं कर सकता था किन्तु कुस्तुनतुनिया स्थित ब्रिटिश राजदूत लार्ड स्ट्रटफोर्ड डी रडक्लिफ (De Radcliffe) के वहाँ पहुँच जाने से स्थिति एक रूस बदल गई। रडक्लिफ कुस्तान व्यक्ति था और उसके सामने रूस को राजकुमार एक बालक व समान था। रडक्लिफ ने बलवान में कूटनीतिक सेवा में एक युग व्यतीत किया था और उसमें स्थिति का पूरी तरह नमूना लिया था। इंग्लैण्ड बलवान में दिलचस्पी रखता था। भारतवर्ष पर नियंत्रण रखने की चिन्ता के कारण उस रूस की निकट पूव में गतिविधि पर ध्यान रखना पड़ता था। कनिंग की अज्ञान मृत्यु के कारण रूस उन स्थिति से अकला ही लान उठा रहा था। १८२६ की एड्रियानोपल (Adrianople) की संधि ने बलवान में रूस का प्रभाव और सम्मान बढ़ा दिया था। अक्वार स्कलसी (Unkiar Skelesse) की संधि से उसकी शक्ति और भी बढ़ गई थी। पामस्टन (Palmerston) के प्रयत्न के कारण रूस का प्रभाव में कुछ कमी हुई और १८४१ में अक्वार स्कलसी की संधि रद्द हो सकी थी। १८४४ में निकलस न लंदन की यात्रा की और वहाँ यूरोप के बीमार का सम्पत्ति का बंटने के लिए ब्रिटेन के विदेश मंत्री एबर्डीन (Aberdeen) से परामर्श किया। किन्तु उस यहाँ प्रास्ताविक नहीं मिला। ब्रिटिश सरकार ने १८५३ में दूसरी बार रूस से पूव के प्रश्न पर बातचीत करने में इन्कार कर दिया। इससे स्पष्ट हो गया कि ब्रिटेन बलवान में रूस का प्रभाव को बटने देने के लिए तैयार नहीं था।

लार्ड स्ट्रटफोर्ड (Stratford) ने अपना काय कुस्ताना से किया। उसने मन्शीकोफ (Menschikoff) का पवित्र मन्दिरों के प्रश्न का ग्रीक ईसाइयों के साधारण संरक्षण के प्रश्न से अलग कर देने के लिए राजी कर लिया। यह महत्वपूर्ण परिवर्तन कराने के पदचान् उसने तुर्की का ईमार मन्दिरों व संरक्षण के विषय में रूस की सौ माल सन का प्रास्ताविक किया था। मन्शिरों की समस्या हल हो गई। किन्तु फिर भी स्थिति में सुधार नहीं हुआ। ज्यों-ज्यों पाटो ने सन्न हाता गया यान्वा भरी शोष का रूप उत्तरात्तर बढाता गया यद्यपि उसकी स्थिति कमजोर जानी जा रही थी। उन अनुभव हुआ कि स्ट्रटफोर्ड ने उसे धोखा दिया है। स्ट्रटफोर्ड ने पाटो का सलाह दा कि वह मन्शीकोफ के संरक्षण व दाव का सम्वाकार कर दे परिणामतः मन्शीकोफ मई १८५३ में कुस्तुनतुनिया में चला गया। उगल चन जान के एक सप्ताह पश्चात् पाटो ने मुख्य दक्षिणों का एक पत्र भेजा जिसमें उसने पवित्र स्थानों

विद्वत्स प्रथम १ तुर्की के दंग बाय का अग्रिम विरुद्ध अग्रमान समझा। उगो प्रतिगोध लेन की सान्नी। १८५३ म उमन ब्रिटिश राजदूत सर सम्भूर स पीटगबग म कहा 'वह समय आ गया है कि इंग्लण्ड और रूस म स्पष्ट रूप से समझौता हो जाता चाहिए। रूसी गतामा का कुस्तुनतुनिया पर अधिकार करना आवश्यक है। सभता है किन्तु जार इस पर स्थायी अधिकार नहीं रखेगा। वह बॉम्बेफारस पर अथ किमी देग का अधिकार नहीं हाने गेगा। वह अग्रमान साम्राज्य को नष्ट भ्रष्ट करके यूरोप क मेजिनी और बास्मुयों का गण म्यान नहीं बनन दगा। डेयूब की रियासतें रूस क सरक्षण म पहल ही स्वतंत्र हैं। बलकान क उत्तर म गुलतान क अधिभूत राज्य भी स्वतंत्र बिए जा सकन हैं। इंग्लंड मिय और ग्रीस पर अधिकार कर सकत, है। ब्रिटिश सरकार न जार क माय निभी भी प्रवार का समझौता करने स इन्कार कर गिया। इमक पदवान निक्लम प्रथम न राजकुमार मेसीकोफ को कुस्तुनतुनिया भेजा कि यह पाटें स बवल तीयस्थाना क मामतो का निणय करने के लिए हो नहो अपितु एक सचि की मांग करे। इम सचि न तुर्की स ग्रीक चच को उसक प्राचीन अधिवाग तथा पाटें द्वारा अय ईसाइया का दा गई सारी सुविधाए देन की भी मांग की गई थी।

इस सचि स सुलतान मदा क निण जार के अधिकार म हा जाता और सुलतान की ग्रीक गतावलम्बी सारी प्रजा के किसी भी व्यक्ति का सुबिधाधो पर आघात हान की स्थिति म रूस का इस विषय म हस्तक्षेप करने का अधिकार प्राप्त हो जाता। १७७४ की कुटचुक रैनाइजी सचि के अनुसार सुलतान न रमाइ धम और चर्चों की रक्षा की प्रतिज्ञा की थी। किन्तु यदि इम सचि के अनुमार रूस का ग्रीक चच की रक्षा के विषय म साधारणत हस्तक्षेप का अधिकार मिल गया था तो यही अधिकार रोमन कथोलिक और प्रोटस्टंट चर्चों क लिए गय शक्तियों को भी दिए गए थे। किन्तु जार ने - भी भी इस बात का जवा नहीं किया था कि उसे कुटचुक रैनाइजी की सचि स य अधिकार प्राप्त हो गए हैं। इम सचि म वेवन एक ही चच का नाम था जिसके पुजारिये की ओर स सुलतान ने रूस के प्रतिनिधित्व को स्वीकार किया था। इस विषय म व्यवस्था थी कि सुलतान परम्परा अथवा कानून द्वारा इस चच के विशेष अधिकारा का सम्मान करेगा किन्तु इस विषय म किसी भी देश ने विरोध प्रकट नहीं किया था। रूस क दाव की नवीनता यह थी कि उसने इस व्यवस्था को रूस के साथ एक सचि का विषय बना दिया था। रूस का मांग का महत्त्व इम बात से सिद्ध होता है कि मेसीकोफ ने तुर्की के मंत्रिया को इस सचि की शर्तों को अय देगो पर प्रगट करने से माग कर दिया था। निक्लस प्रथम ने ब्रिटिश सरकार का यह सूचना भिजवाई थी कि निष्कमण्डल केवल तीय स्थानो का मामला सुलतान के लिए भेजा गया था। तुर्की म रहन वाले ग्रीक ईसाइया पर रूस के सरक्षण क दावे के विषय म चाड क्लरफ्टन ने लिखा कि कोई भी प्रभुत्वसम्पन्न राजा अपने सम्मान और स्वतंत्रता का ध्यान रखते हुए राजकुमार मेसीकोफ द्वारा अस्पष्ट प्रस्ताव का स्वीकार नहीं कर सकता था तथा सचि के द्वारा अय शक्तिशाली राजा को अपनी प्रजा के बहुत बड़े भाग की रक्षा का अधिकार नहीं

सौंप सकता था चाहे इन अधिकारों का परिभाषा सधि में नहीं की गई थी। वास्तविक स्थिति यह थी कि प्रस्तावित 'सनद' की अस्पष्ट भाषा में रूस का तुर्की के अन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने का अधिकार दे दिया गया था। पाटों की ग्रीक प्रजा होना के साथ व लोग अपने धर्म की दृष्टि से पूज्य रूस के भक्षण में थे। इसका आशय यह था कि एक कराह चालीस लाख ग्रीक मुसलमानों के प्रति औपचारिक स्वामित्व दिखाने हुए रूस के जार का ही अपना सर्वोपरि रक्षक मानने लग और मुसलमानों की स्वतंत्रता प्रथम घट कर एक आश्रित राज्य जमीं हो गई।

पाटों रूस के दबाव का सहन नहीं कर सकता था किन्तु कुम्बुनतुनिया स्थित ब्रिटिश राजदूत लार्ड स्ट्रटफोर्ड डी रेडक्लिफ (De Radcliffe) के वहाँ पहुँच जाने से स्थिति एक दम बदल गई। रेडक्लिफ कुशल व्यक्ति था और उनके सामने रूस का राजकुमार एक बालक के समान था। रेडक्लिफ ने बलवान में कूटनीतिक भवा में एक युग व्यनात किया था और उमा स्थिति को पूरी तरह समझ लिया था। इंग्लैंड बलवान में दिलचस्पी रखना था। भारतवर्ष पर नियंत्रण रखने की चिन्ता के कारण उस रूस की निकट पूव में गतिविधि पर ध्यान रखना पड़ता था। कनिंगहम बलवान मृत्यु के कारण रूस उक्त स्थिति से अकेला ही लाभ उठा रहा था। १८२१ की एड्रियानोपल (Adrianople) की सधि ने बलवान में रूस का प्रभाव और सम्मान बढ़ा दिया था। अक्यार स्कैलसी (Unkiar Skelesse) की सधि से उसकी शक्ति और भी बढ़ गई थी। पामस्टन (Palmerston) के प्रयत्न के कारण रूस के प्रभाव में कुछ कमी हुई और १८४१ में अक्यार स्कैलसी की सधि रद्द हो सकी थी। १८४४ में निकलस ने लन्दन की यात्रा की और वहाँ यूरोप के बीमारों का सम्पत्ति का बाँटने के लिए ब्रिटेन के विदेश मंत्री एबर्टीन (Aberdeen) से परामर्श किया। किन्तु उस यहाँ प्रोत्साहन नहीं मिला। ब्रिटिश सरकार ने १८५३ में दूसरा बार रूस से पूव के प्रश्न पर बातचीत करने में इनकार कर दिया। इससे स्पष्ट हो गया कि ब्रिटेन बलवान में रूस के प्रभाव का बलवान देने के लिए तयार नहीं था।

लार्ड स्ट्रटफोर्ड (Stratford) ने अपना वाय कुम्बुनता में किया। उसने मेन्शाकोफ (Menschikoff) का पवित्र मन्त्रिण के प्रश्न का ग्रीक ईसाइयों के साधारण भक्षण के प्रश्न से अलग कर देने के लिए राजी कर लिया। यह महत्त्वपूर्ण परिवर्तन कराने के पदचात् उसने तुर्की का ईसाई मन्त्रियों के सम्पत्ति के विषय में रूस की माँग मान लेने का प्रस्तावित किया था। मन्त्रिण की सम्पत्ति हीन हो गई। किन्तु फिर भी स्थिति में सुधार न हुआ। ज्वा-ज्वा पाटों नज़र आता गया त्या-त्या मेन्शीकोफ का रूस उत्तरात्तर कठोर होता गया यद्यपि उसका स्थिति कमजोर जाती जा रही थी। उन अनुभव हुआ कि स्ट्रटफोर्ड ने उन धारणा किया है। स्ट्रटफोर्ड ने पाटों को सलाह दी कि यह मेन्शाकोफ के सरक्षण के दाव का धम्बीकरण कर के परिणाम में मेन्शीकोफ मई १८५३ में कुम्बुनतुनिया में चला गया। उनका धल जान के एक सप्ताह पश्चात् पाटों ने मुख्य शक्तियों को एक पत्र भेजा जिसमें उसने पवित्र स्पाको

के प्रान्त के समझीते तथा तुर्की के रुस के नियन्त्रण का राकन के विषय में अपनी दक्षता की सूचना दी ।

जुलाई, १८५३ में रुस की गनामा १ प्रुथ (Pruth) पार करके निकट की रियासतों पर अधिकार कर लिया । साधारण परिस्थितियाँ में इस प्रकार की कायवाही के परिणाम को युद्ध की घोषणा माना जाता । ज़ार ने घोषणा का कि इन रियासतों पर अधिकार करने से उनकी इच्छा शान्ति भंग करने की नहीं है । तुर्की का भी युद्ध न करने का परामर्श दिया गया । दिसम्बर १८५२ में नाप एबर्टीन इंग्लण्ड का प्रधान मंत्री था । फर्डिने (Fyffe) के नाम 'इंग्लण्ड में एबर्टीन से बतकर गान्त स्वभाव तथा रुस से मंत्री चाहने वाला अर्थ काई व्यक्ति नहीं था । ज़ार ने सहा रूप में एबर्टीन के स्वभाव पर भरोसा किया था । पामस्टन रुस के विरुद्ध कायवाही करने के लिए अत्यन्त उत्सुक था । उसका विश्वास था कि इंग्लण्ड की जागरूकता दिवान का एकमात्र भाग यही था कि इंग्लण्ड और फ्रान्स के संयुक्त जहाज़ी बंड का वासफोरस भेज दिया जाए और यदि आवश्यकता पड़े तो इस कालासागर भी जान दिया जाए । किन्तु फिर भी एबर्टीन ने सुलतान को यही सलाह दी कि वह रुस के आक्रमण का शान्ति से समझौता करने के बारे में साधनों को प्रयुक्त किए बिना शक्ति से मुकाबला न करे । पामस्टन को पूरा विश्वास था कि पहले ही बहुत दूर हाँ चुकी है और रुस इंग्लण्ड की प्रगट कामरता में लाभ उठाकर आगे बढ़ता जा रहा है ।

पामस्टन और एबर्टीन में मतभेद हान पर भी लाइ स्ट्रुटफोर्ड का आरम्भ से ही पूर्ण विश्वास था कि रुस और तुर्की के युद्ध में ब्रिटेन को ओटोमान साम्राज्य की ओर से ही युद्ध करना पड़ेगा । स्ट्रुटफोर्ड ने अपना विचार स्पष्ट रूप से प्रगट नहीं किया, किन्तु जो पत्र व्यवहार उसने सुलतान से किया उसका यही आशय समझा जा सकता था । यदि इंग्लण्ड का जहाज़ी बंडा सुलतान की रक्षा न करता तो उसे यह विश्वास दिवाना कि राजदूत की आज्ञानुसार बंडा यथास्थान पहुँच जाएगा और विश्वासघात और धाखा देना था । इस प्रकार का धाखा देना स्ट्रुटफोर्ड के स्वभाव के विपरीत था । जिस दिन स्ट्रुटफोर्ड सुलतान के महला में गया था उस दिन से ही इंग्लण्ड अपने प्रतिनिधि द्वारा दिए गए आश्वासनों को पूरा करने के लिए बच-बद्ध हो चुका था ।

केन्द्रीय शक्तियों ने युद्ध के भय से बचने का प्रयत्न किया था । इंग्लण्ड फ्रांस, आस्ट्रिया हंगरी और प्रुथिया के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन जुलाई में विन्ना में हुआ और सब को अनुमति से एक प्रस्ताव का मसविदा बनाया गया जो रुस और तुर्की दोनों को मान्य हो सकता था । रुस ने मसविदे को स्वीकार किया यद्यपि जिस धारणा से मध्यस्थ ने इस तयार किया था रुस ने उसे स्वीकार नहीं किया था । तुर्की ने इस विना सहायन के मानन में इकार कर दिया । तुर्की अपने आन्तरिक मामलों में रुस के हस्तक्षेप करने के अधिकार को मान्यता देने के लिए तयार नहीं था ।

तुर्की के मुख्य सेनापति उमरपाशा ने रूस को ललकारा कि रियासतो का खाली कर दे। किन्तु रूस ने इससे एकदम इन्कार कर दिया। परिणामस्वरूप युद्ध की घोषणा हुई। नवम्बर, १८५३ में तुर्की के जहाजी बड़े को मिनापे के स्थान पर नष्ट कर दिया गया। सिनाप का हत्याकाण्ड यूरोपीय युद्ध की भूमिका थी। ग्राहम लिखता है 'मैं रूस के साथ शांति बनाए रखने का अंतिम क्षण तक बड़ा कट्टर समर्थक था किन्तु सिनाप पर आक्रमण और अभी हाल की घटनाओं ने सारी स्थिति को मूलतः परिवर्तित कर दिया है। मुझे लगता है कि रूस से अब पृथक् होना अनिवार्य हो गया है।'

एबर्टिन मन्त्रिमण्डल की शांतिप्रियता और इसके सदस्यों का परस्पर मतभेद ब्रिटेन की अस्थिर और निबल नीति का उत्तरदायी था। मरियट का कथन है कि यदि मन्त्रिमण्डल वास्तव में एकमत होता और एबर्टिन अपने मन्त्रियों पर अपनी इच्छा का प्रभाव डाल सकता तो सम्भवतः युद्ध टल गया होता। स्टटफोर्ड कुन्तुननुनिया नहीं गया होता। तुर्की को इंग्लण्ड की सहायता पर निर्भर न रहना पड़ता और सम्भवतः जार ने भी अपनी मांग का कम भी कर दिया होता। फिर यदि पामस्टन प्रधानमंत्री के पद पर होता तो जार ने मेन्शीकोफ को भेजने और एक ऐसे विवाद को उकसाने पर पुनर्विचार किया होता जिसमें ब्रिटेन का बीच में आ जाना अवश्यभावी था। नेपोलियन तृतीय और स्टटफोर्ड के व्यवहार से दुखी होकर जार का एबर्टिन और इंग्लण्ड के शान्तिप्रिय दल पर अपने ही द्वारा पदा की हुई कठिनाइयों से निकालने के विषय में विश्वास करना पड़ा। युद्ध की घोषणा हो जाने के पश्चात् भी एबर्टिन को आशा थी कि वह शांति बनाए रखने के लिए कोई युक्ति निकालेगा। उसकी इच्छा के विरुद्ध उसका मन्त्रिमण्डल ने जहाजी बड़े का कालागार में भेजने का निर्णय किया। आदेश दिए जाने के बाद भी नेपोलियन को जार के नाम पत्र लिखने की अनुमति दी गई जिसमें उसने जार को अपनी मध्यस्थता का प्रस्ताव किया था। किन्तु इसका उत्तर अत्यन्त क्रुद्ध मिला। यद्यपि आस्ट्रिया और प्रणिया रूस पर कूटनीतिक दबाव डालने में काम और इंग्लण्ड के साथ सहयोग कर रहे थे तथापि जब इंग्लण्ड तुर्की की ओर से युद्ध में आ गया तो वे तटस्थ हो गए।

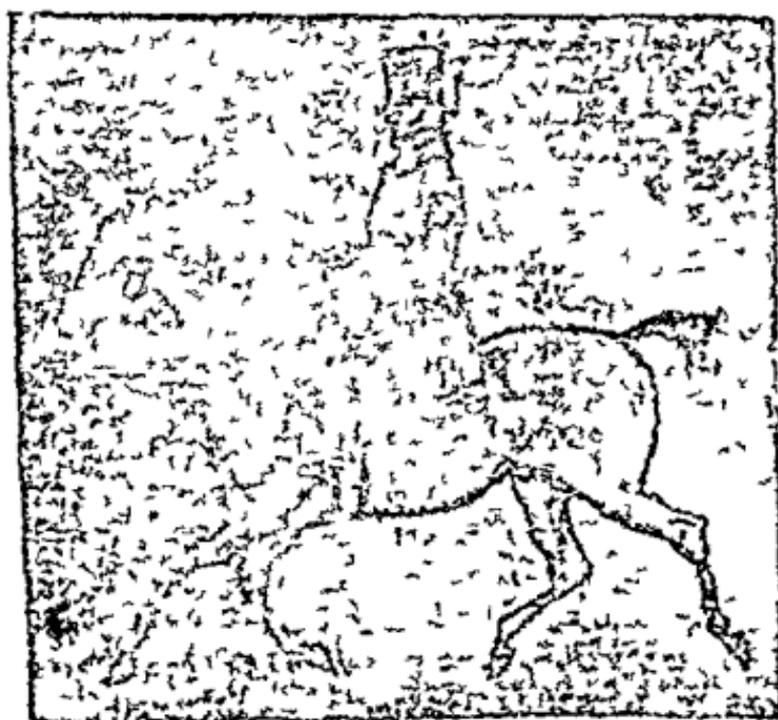
क्या क्रीमिया का युद्ध 'न्यायोचित' था? (Was the Crimean War Justified?)—मरियट (Marriott) लिखता है कि घटना के पश्चात् की आलोचना से प्रतीत होता है कि यह युद्ध यदि अपराध नहीं था तो एक महान् भ्रम अवश्य था। इसे नहीं होने देना चाहिए था तथा इस टाला जा सकता था। मोटान-वाटसन के शब्दों में 'यदि इतिहास में कभी भी अल्पमूचना के आधार पर 'न्यायोचित' युद्ध का छोड़कर कभी भी कोई युद्ध हुआ तो वह क्रीमिया का युद्ध था। यह घटना नवमाघातक की इस पारणा को प्रमत्त सिद्ध करती है कि जनता मन्त्रिमन्त्रियों की है और केवल राजनीतिज्ञ और धनवान व्यक्ति ही युद्ध प्रिय होते हैं। (Britain in Europe, p 359)

एक प्रसिद्ध मतानु कूटांगिका का दूर विचार है कि प्रायिका व युद्ध म
 ब्रिटेन । गणतन्त्र पर दाब लगा दिया । अन्ततः प्रायिका का विचार है कि एक
 कूटांगिका के कट्टा पर इंग्लैण्ड का समन और कुशासन व ईसा कुख्यात गति की
 सुरक्षा व निष्पत्ति म घसाट लिया गया था । इयूक भाषा धरणागत युद्ध को
 व्यापारिता बताया है । इंग्लैण्ड व विचार से इंग्लैण्ड एक मिडलान्डहान दुम्माहमी
 म्पय म बिना कारण व उरसाण हुए युद्ध व आधार पर अपना राजसिंहामन बनाए
 रगा व लिए व्यक्ति व हाथा म गिनीना बन गया था । यह मत्य है कि नेपोलियन
 तृतीय अपना सामन का सुई विधि व गामन से अच्छा गामन मिद्ध करन का
 उत्सुक था । ता भा भरियत का विचार है कि स्ट्रुटफाइ या एयर्डोन का उसकी
 महत्वाकांक्षा का पुनि का साधन बहना अनुचित है । सत्य यह है कि इंग्लैण्ड क
 विचारगाल नागरिका का पूरा विश्वास हा गया था कि जार की महत्वाकांक्षा का
 दराना आवश्यक है । रूस का पिछन १५० वय की नाति के आधार व विषय म
 कोई चुटि नहीं हा गकता । अजाव की मधि से बलप्रड की सधि तक, बनाडकी
 से जस्सी बुयारेस् से एड्रियानापल तक और वहाँ से अखवार-स्वानसा तक रूस की
 प्रगति धीमी किन्तु निरंतर हानी रही थी । क्या तुर्की का अत बवल उत्तराधिकारी
 व लाभ की शक्ति व लिए आवश्यक था ? क्या जार का कालाहागर को एक
 रूसी भील बना लन दिया जाना ? क्या उस अधमहामागर पर एकछत्र और
 खतरनाक आधिपत्य जमा लन दिया जाता ? यह तुर्की व सुगासन या कुशासन का
 प्रश्न नहीं था । वास्तव म प्रश्न था कि क्या साधारणतः सारा यूरोप और विभिन्न
 इंग्लैण्ड इस बात के लिए तयार थे कि व रूस का पाटों पर एक ऐसा बंधन लगान
 दें जिससे यह पाटों का सारी ईसाई प्रजा का संरक्षक और अतएव तुर्की क भाग्य
 का अवेला निर्णायक बन जाय ? इंग्लैण्ड के जनसाधारण का विचार था कि रूस
 के प्रभाव का किमी भी मूल्य पर रोकना चाहिए ।

युद्ध का घाणणा होने के पश्चात् मित्रराष्ट्रो ने अपनी सेनाए प्रायिका
 भेजी थी । इस युद्ध की महत्वपूर्ण लडाइयाँ एरमा (Alma), बलाक्लावा
 (Balaclava) और इन्कर्मन (Inkermann) की थी । १८५४ ५५ म बहुत
 सरदी पडी । कहा जाता है कि जार ने कहा था कि मेरे दो सनापति हैं जनरल
 जनवरी और जनरल फर्बरा जा मुझे कभी भी धाखा नहा द सकते । क्रीमिया की
 कडी सर्दी म बडी कठिनाइयाँ हुई । सवेस्टोपाल की छावना बलाक्लावा की बन्दर
 गाह से ६ ७ मील दूर थी । तूफान व बाद सड़की पर चलना असम्भव हो गया ।
 चारे की कमी से घाड़े कमजोर हा गए थे । वे कीचड म से गाडियो को नहीं खींच
 सकते थे । सनिक और पशु सर्दी से मर गये । यद्यपि गृह सरकार ने खूब रसद भेजी
 थी किन्तु उस छावना म सनिका तक नहीं पहुँचाया जा सका । खाइयाँ आधी जम
 गई थी । सनापनों के पास कपडो और खाने का कमी थी । परिणामतः हजारों सनिक
 बुखार, हैजे और कमजोरी से मर गए । लगभग ६,००० व्यक्ति मर गए और

१३००० को हम्मतारो म दाखिल कर दिया गया । स्कुटारी (Scutari) की छावनी के हस्पताल का प्रबंध बड़ा खराब था ।

श्रीमिया म ब्रिटिश सिपाहियों की दुदगा से जनमन जाग उठा । सहायता के लिए नेपाल की गई और जनना म मूर सहायता की । किंतु जनना सरकार की कायवाही और मूला मे बलुन नाराज था । १८५५ में मिस्टर रोबक ने एक विरोध प्रस्ताव रखा कि वह मेवम्टोपोल मे ब्रिटिश सेना की परिस्थिति तथा सेना की आवश्यकता की पूर्ति के लिए उत्तरदायी विभागा के कार्यों की जांच के लिए एक विशिष्ट समिति की नियुक्ति का प्रस्ताव रखने वाला है । परिणामत रस्मल (Russell) ने त्यागपत्र द दिया । पामस्टन म्नेडम्टोन और माम्मानी ने उसके काय की निंदा की । २६ जनवरी १८५५ को रोबक (Roebuck) के प्रस्ताव को १४८ के विरुद्ध ३०५ मता से ससद ने स्वीकार कर लिया और एवडॉल ने त्यागपत्र द दिया । लाइ डर्बी को नया मंत्रिमण्डल बनाने का निमन्त्रण दिया गया । उसका प्रयत्न असफल रहा और रस्मल (Russell) को भी सफलता नहीं मिली । बोर्ड भी उसके साथ काम करने को तैयार नहीं था । इन परिस्थितियों में पामस्टन को मंत्रिमण्डल बनाने



साइ पामस्टन

के लिए कहा गया और उसने यह काय सफलता से पूरा किया । श्रीमिया युद्ध की शेष अवधि में पामस्टन ने ही देश को सरकार बनाई । शक्तिशाली जनमत उसका समर्थक था ।

ही १८४६ में हंगरी के विद्रोह के घबराव पर रूस ने आस्ट्रिया की सहायता करके रूसी सना की सहायता से विद्रोह का कुचल लिया था। किन्तु प्रामिया के युद्ध में यह मैत्री समाप्त हो गई। रूस ने आस्ट्रिया की विरोधात्मक तटस्थता को बहुत बुरा माना और मंत्री के पुराने बंधन टूट गए। बिस्माक ने रूस और आस्ट्रिया के मनमुटाव से लाभ उठाकर रूस समिप्रता कर सी। १८६३ में विगेपत पोलण्ड के विद्रोह के समय बिस्माक ने पोलण्ड के विरुद्ध रूस की सशस्त्र सहायता करके रूस को पूज्य अपनी ओर कर लिया था। इसका परिणाम यह हुआ कि १८६६ में जब आस्ट्रिया और प्रशिया का युद्ध हुआ तो रूस तटस्थ रहा और आस्ट्रिया को अक्ले ही लड़ना पड़ा। जिससे यह प्रामिया युद्ध का परोक्ष परिणाम था।

सीमन (Seaman) के मतानुसार पेरिस संधि की सबसे महत्वपूर्ण धाराएँ एक प्रकार से गुप्त थीं जिनकी हस्ताक्षर करने वाली शक्तियों ने कल्पना भी नहीं की थी। यदि ये देश अक्सर का लाभ उठाने का प्रयत्न करते तो इनकी अवस्थाओं में जमनी और इटली में आस्ट्रिया की शक्ति को नष्ट करने का सुनहला अवसर प्रदान किया था। प्रामिया के युद्ध से बिस्माक और बेवूर को बड़ा लाभ हुआ अन्वयात् इटली राज्य ही बनता और न जमनी का साम्राज्य। १८४८ से नहीं अपितु पेरिस संधि के द्वारा मेटेरनिक की समाप्ति हुई। क्योंकि प्रामिया युद्ध के कारण ही ये महान राजनीतिक परिवर्तन सम्भव हो सके, जिनको मेटेरनिक दीर्घ काल से टालने की भाशा करता रहा था।

प्रामिया युद्ध का एक परोक्ष परिणाम यह भी हुआ कि जनता की सदभावना प्राप्त करने के लिए एलेग्जण्डर द्वितीय को रूस के शासन में अनेक सुधार करने के लिये विवश होना पड़ा था। इसमें मुजारेदारी प्रथा की समाप्ति हुई थी। अलावा इसके यूरोप की ओर रूस की प्रगति रुक जाने के कारण इसकी गति का प्रवाह मध्य एशिया की ओर हो गया और परिणामस्वरूप रूस के बढ़ते हुए प्रभाव के कारण भारतवर्ष की सरकार को बड़ी चिन्ता होने लगी थी।

यह ध्यान में रखना चाहिए कि १८५६ से १८७८ तक समय-समय पर १८५६ की संधि की व्यवस्था का निरन्तर उलघन होता रहा था। मोलडेविया और वालाचिया पेरिस संधि के द्वारा स्वशासित राज्य बना लिए गए थे किन्तु इनकी जनता उसी जाति का अंश थी और वही भाषा बोलती थी। दोनों ही अपने को रूमनिया देश के अंश मानते थे। दोनों राज्यों की जनता एक ही सरकार के शासन में संगठित होना चाहती थी। १८५६ में दोनों ही राज्यों ने एक ही व्यक्ति को अपना शासक चुना। इंग्लैंड, आस्ट्रिया और तुर्की ने रूमनिया के संगठन का विरोध किया क्योंकि यह पेरिस संधि के समझौते के विपरीत था। किन्तु नपॉलियन तृतीय रूमनिया की जनता की राष्ट्रीयता की भावना का समर्थक था और उसने अनेक शक्तियों में भी वालाचिया और मोलडेविया को संगठित हो जाने की अनुमति प्राप्त कर ली थी। इस प्रकार रूमनिया के राज्य का जन्म हुआ।

इंग्लैंड और आस्ट्रिया की सहायता से सर्बिया ने १८६७ में तुर्की से अपने युग ताली करवा लिये। इस प्रकार सर्बिया भी तुर्की से स्वतंत्र हो गया।

१८६५ में हम न शीट की जनता का तुर्की के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए उकसाया। १८७० में उसने बल्गारिया की जनता का धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त करने में सहायता दी थी। जब १८७० में प्रगिया और फ्रांस का युद्ध आरम्भ हुआ, रूस को प्रगिया में कालायागर सम्बन्धी धाराओं को भंग करने में प्रोत्साहन दिया। इस प्रकार उसे १८७० में सेवेस्टोपाल की मोर्चेबन्दी करने का तथा कालासागर में रूसी जहाज़ी बढ़ा रखने का अवसर प्राप्त हो गया।

घाट और टेम्परले (Grant & Temperley) का मत है कि "श्रीमिया के युद्ध का उन्नीसवीं शताब्दी के यूरोप के इतिहास में विलक्षण स्थान है। इस युद्ध में प्रयुक्त साधन, मोटवे और प्रगिया प्रणाली की अथवा नेपालियन युग की युद्ध प्रणाली से अधिक मिलते हैं। भाप से चलने वाले जहाज़ों का प्रयोग होने लगा था किन्तु उनके महत्व को पूरी तरह नहीं पहचाना गया था। विघ्नाना में तार प्रयोग आन लगा था किन्तु कुस्तनतुनिमा और श्रीमिया अग्नी भी पहुँच से बाहर थे। सनाओं का भोजन और सफाई की सारी प्रणाली मध्यकालीन थी। आधुनिक वैज्ञानिक साधनों की सहायता के बिना लड़ा गया, यही अन्तिम महायुद्ध था और यदि इसके तरीके और साधन आधुनिक विद्यार्थी के लिए अनाद्ये प्रतीत होते हैं तो इनके उद्देश्य और कूटनीति और भी धाम्य प्रतीत हानी है। धार्मिक प्रश्न भी जो धमयुद्धों के युग की बात थी, इस युद्ध के कारणों में से एक था। विजेताओं का इस युद्ध से कोई लाभ नहीं हुआ। वास्तविक रूप में तुर्की की असुगता की रक्षा भी नहीं हो सकी। रूस की प्रगति पर स्थायी रूप से रोक नहीं लगाई जा सकी। १६१४ के युद्ध में फ्रांस और इंग्लैंड ने सासा व्यक्तिता का तथा बरोहा के धन का व्यय इसलिए किया था कि वे श्रीमिया युद्ध के कुछ परिणामों के प्रभाव को समाप्त कर दें, जिन युद्ध को उन्होंने इतना सह और धन नष्ट करके जीता था। तथापि यह युद्ध कई प्रकार से बढ़ा दिलचस्प था। इसमें हमें एक ऐसा अद्वितीय शिक्षाप्रद उदाहरण मिलता है जिससे हमें यह पता लगता है कि युद्ध किस प्रकार आरम्भ किए जाते हैं और इसके प्रमुख भागों की प्रणाली का स्पष्ट रूप से पता लगता है। तथा साधारणतः जिन अत्यन्त उद्देश्यों की प्राप्ति में कूटनीति का सबसे धारण लिया जाता है वे हमारे सम्मुख नग्न रूप में उपस्थित हो जाते हैं।

Suggested Readings

Crawley C. W.	<i>The Question of Greek Independence 1930</i>
Davis W S	<i>A Short History of the Near East</i>
Fyfe	<i>History of Modern Europe</i>
Henderson G B.	<i>Crimian War Diplomacy and other Historical Essays 1947</i>
Marnott J A. R.	<i>The Eastern Question</i>
Müller W	<i>The Ottoman Empire and Its Successors 1934</i>

